# BREVIARIUM

# PARISIENSE.

## PARS VERNA.

## LIBRAIRES ASSOCIÉS

*Pour la vente des Livres de la Liturgie Parisienne.*

TH. BARROIS, Père, rue Hautefeuille, n° 28.
BRAJEUX, rue du Foin Saint-Jacques, n° 8.
DE BURE, Frères, Libraires de la Bibliothèque du Roi, rue Serpente, n° 7.
DEHANSY, rue de Sorbonne, n° 1.
ADRIEN LE CLERE et Cie, Imprimeurs de N. S. P. le Pape et de Mgr l'Archevêque de Paris, quai des Augustins, n° 35.

PARIS. — IMPRIMERIE D'ADRIEN LE CLERE ET Cie,
Quai des Augustins, n° 35.

# BREVIARIUM PARISIENSE

ILLUSTRISSIMI ET REVERENDISSIMI IN CHRISTO PATRIS ET DOMINI

## D. HYACINTHI-LUDOVICI DE QUELEN

PARISIENSIS ARCHIEPISCOPI

AUCTORITATE

AC VENERABILIS EJUSDEM ECCLESIÆ CAPITULI CONSENSU

DENUO EDITUM.

## PARS VERNA.



LUTETIÆ PARISIORUM.

SUMPTIBUS SOCIETATIS BIBLIOPOLARUM EDITORUM

LITURGIÆ PARISIENSIS.

M DCCC XXXVI.

# TABULA

**Romæ edita, et ad Horologium Gallicum accommodata,**

# DE HORA

*quâ potest inchoari pro die sequenti Officium Nocturnum à privatim recitantibus.*

| | |
|---|---|
| 20 Januarii, | Horâ secundâ cum quadrante. |
| 13 Februarii, | Horâ sesqui-secundâ. |
| 1 Martii, | Horâ secundâ cum tribus quadrantibus. |
| 18 Martii, | Horâ tertiâ. |
| 4 Aprilis, | Horâ tertiâ cum quadrante. |
| 20 Aprilis, | Horâ sesqui-tertiâ. |
| 10 Maii, | Horâ tertiâ cum tribus quadrantibus. |
| 8 Junii, | Horâ quartâ. |
| 30 Julii, | Horâ tertiâ cum tribus quadrantibus. |
| 28 Augusti, | Horâ sesqui-tertiâ. |
| 7 Septembris, | Horâ tertiâ cum quadrante. |
| 24 Septembris, | Horâ tertiâ. |
| 13 Octobris, | Horâ secundâ cum tribus quadrantibus. |
| 20 Octobris, | Horâ sesqui-secundâ. |
| 18 Novembris, | Horâ secundâ cum quadrante. |
| 15 Decembris, | Horâ secundâ. |

---

*Ubicumque reperitur notâ hæc †, juxta numerum Dominicarum quæ Epiphaniam inter et Septuagesimam occurrunt, in sequenti Tabella temporaria, designat Officium Dominicæ cujusdam anticipandum in Sabbatum, aut aliquam Feriam præcedentem, prout habetur fusiùs, Part. I, Cap. I, Rubricarum generalium.*

# TABULA TEMPORARIA

| *Anni Domini* | *Aureus num.* | *Epactæ.* | *Indictio.* | *Litt. Dominic.* | *Dom. post Epiph.* | *Septuagesima.* | *Dies Cinerum.* |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1836 | 13 | xij | 9 | c b | 3 † | 31 Janu. | 17 Febr. |
| 1837 | 14 | xxiij | 10 | A | 2 | 22 Janu. | 8 Febr. |
| 1838 | 15 | iv | 11 | g | 5 | 11 Febr. | 28 Febr. |
| 1839 | 16 | xv | 12 | f | 2 † | 27 Janu. | 13 Febr. |
| 1840 | 17 | xxvj | 13 | e d | 5 † | 16 Febr. | 4 Mart. |
| 1841 | 18 | vij | 14 | c | 4 † | 7 Febr. | 24 Febr. |
| 1842 | 19 | xviij | 15 | b | 2 † | 23 Janu. | 9 Febr. |
| 1843 | 1 | * | 1 | A | 5 | 12 Febr. | 1 Mart. |
| 1844 | 2 | xj | 2 | g f | 4 | 4 Febr. | 21 Febr. |
| 1845 | 3 | xxij | 3 | e | 1 † | 19 Janu. | 5 Febr. |
| 1846 | 4 | iij | 4 | d | 4 † | 8 Febr. | 25 Febr. |
| 1847 | 5 | xiv | 5 | c | 3 † | 31 Janu. | 17 Febr. |
| 1848 | 6 | xxv | 6 | b A | 6 | 20 Febr. | 8 Mart. |
| 1849 | 7 | vj | 7 | g | 4 | 4 Febr. | 21 Febr. |
| 1850 | 8 | xvij | 8 | f | 2 † | 27 Janu. | 13 Febr. |
| 1851 | 9 | xxviij | 9 | e | 5 † | 16 Febr. | 5 Mart. |
| 1852 | 10 | ix | 10 | d c | 4 † | 8 Febr. | 25 Febr. |
| 1853 | 11 | xx | 11 | b | 2 † | 23 Janu. | 9 Febr. |
| 1854 | 12 | j | 12 | A | 5 | 12 Febr. | 1 Mart. |
| 1855 | 13 | xij | 13 | g | 4 | 4 Febr. | 21 Febr. |
| 1856 | 14 | xxiij | 14 | f e | 1 † | 20 Janu. | 6 Febr. |
| 1857 | 15 | iv | 15 | d | 4 † | 8 Febr. | 25 Febr. |
| 1858 | 16 | xv | 1 | c | 3 † | 31 Janu. | 17 Febr. |
| 1859 | 17 | xxvj | 2 | b | 6 | 20 Febr. | 9 Mart. |
| 1860 | 18 | vij | 3 | A g | 4 | 5 Febr. | 22 Febr. |
| 1861 | 19 | xviij | 4 | f | 2 † | 27 Janu. | 13 Febr. |
| 1862 | 1 | * | 5 | e | 5 † | 16 Febr. | 5 Mart. |
| 1863 | 2 | xj | 6 | d | 3 † | 1 Febr. | 18 Febr. |
| 1864 | 3 | xxij | 7 | c b | 2 † | 24 Janu. | 10 Febr. |
| 1865 | 4 | iij | 8 | A | 5 | 12 Febr. | 1 Mart. |
| 1866 | 5 | xiv | 9 | g | 3 | 28 Janu. | 14 Febr. |
| 1867 | 6 | xxv | 10 | f | 5 † | 17 Febr. | 6 Mart. |
| 1868 | 7 | vj | 11 | e d | 4 † | 9 Febr. | 26 Febr. |
| 1869 | 8 | xvij | 12 | c | 2 † | 24 Janu. | 10 Febr. |
| 1870 | 9 | xxviij | 13 | b | 5 † | 13 Febr. | 2 Mart. |
| 1871 | 10 | ix | 14 | A | 4 | 5 Febr. | 22 Febr. |
| 1872 | 11 | xx | 15 | g f | 3 | 28 Janu. | 14 Febr. |
| 1873 | 12 | j | 1 | e | 4 † | 9 Febr. | 26 Febr. |
| 1874 | 13 | xij | 2 | d | 3 † | 1 Febr. | 18 Febr. |
| 1875 | 14 | xxiij | 3 | c | 2 † | 24 Janu. | 10 Febr. |
| 1876 | 15 | iv | 4 | b A | 5 | 13 Febr. | 1 Mart. |

## FESTORUM MOBILIUM.

| *Anni Domini* | PASCHA. | *Ascensio Domini.* | *Pentecostes.* | *Fest. Cor. Christi.* | *Dom. post Pen.* | *Dom. I Advent.* |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1836 | 3 April. | 12 Maii. | 22 Maii. | 2 Junii. | 26 | 27 Nov. |
| 1837 | 26 Mart. | 4 Maii. | 14 Maii. | 25 Maii. | 28 | 3 Dec. |
| 1838 | 15 April. | 24 Maii. | 3 Junii. | 14 Junii. | 25 | 2 Dec. |
| 1839 | 31 Mart. | 9 Maii. | 19 Maii. | 30 Maii. | 27 | 1 Dec. |
| 1840 | 19 April. | 28 Maii. | 7 Junii. | 18 Junii. | 24 | 29 Nov. |
| 1841 | 11 April. | 20 Maii. | 30 Maii. | 10 Junii. | 25 | 28 Nov. |
| 1842 | 27 Mart. | 5 Maii. | 15 Maii. | 26 Maii. | 27 | 27 Nov. |
| 1843 | 16 April. | 25 Maii. | 4 Junii. | 15 Junii. | 25 | 3 Dec. |
| 1844 | 7 April. | 16 Maii. | 26 Maii. | 6 Junii. | 26 | 1 Dec. |
| 1845 | 23 Mart. | 1 Maii. | 11 Maii. | 22 Maii. | 28 | 30 Nov. |
| 1846 | 12 April. | 21 Maii. | 31 Maii. | 11 Junii. | 25 | 29 Nov. |
| 1847 | 4 April. | 13 Maii. | 23 Maii. | 3 Junii. | 26 | 28 Nov. |
| 1848 | 23 April. | 1 Junii. | 11 Junii. | 22 Junii. | 24 | 3 Dec. |
| 1849 | 8 April. | 17 Maii. | 27 Maii. | 7 Junii. | 26 | 2 Dec. |
| 1850 | 31 Mart. | 9 Maii. | 19 Maii. | 30 Maii. | 27 | 1 Dec. |
| 1851 | 20 April. | 29 Maii. | 8 Junii. | 19 Junii. | 24 | 30 Nov. |
| 1852 | 11 April. | 20 Maii. | 30 Maii. | 10 Junii. | 25 | 28 Nov. |
| 1853 | 27 Mart. | 5 Maii. | 15 Maii. | 26 Maii. | 27 | 27 Nov. |
| 1854 | 16 April. | 25 Maii. | 4 Junii. | 15 Junii. | 25 | 3 Dec. |
| 1855 | 8 April. | 17 Maii. | 27 Maii. | 7 Junii. | 26 | 2 Dec. |
| 1856 | 23 Mart. | 1 Maii | 11 Maii. | 22 Maii. | 28 | 30 Nov. |
| 1857 | 12 April. | 21 Maii. | 31 Maii. | 11 Junii. | 25 | 29 Nov. |
| 1858 | 4 April. | 13 Maii. | 23 Maii. | 3 Junii. | 26 | 28 Nov. |
| 1859 | 24 April. | 2 Junii. | 12 Junii. | 23 Junii. | 23 | 27 Nov. |
| 1860 | 8 April. | 17 Maii. | 27 Maii. | 7 Junii. | 26 | 2 Dec. |
| 1861 | 31 Mart. | 9 Maii. | 19 Maii. | 30 Maii. | 27 | 1 Dec. |
| 1862 | 20 April. | 29 Maii. | 8 Junii. | 19 Junii. | 24 | 30 Nov. |
| 1863 | 5 April. | 14 Maii. | 24 Maii. | 4 Junii. | 26 | 29 Nov. |
| 1864 | 27 Mart. | 5 Maii. | 15 Maii. | 26 Maii. | 27 | 27 Nov. |
| 1865 | 16 April. | 25 Maii. | 4 Junii. | 15 Junii. | 25 | 3 Dec. |
| 1866 | 1 April. | 10 Maii. | 20 Maii. | 31 Maii. | 27 | 2 Dec. |
| 1867 | 21 April. | 30 Maii. | 9 Junii. | 20 Junii. | 24 | 1 Dec. |
| 1868 | 12 April. | 21 Maii. | 31 Maii. | 11 Junii. | 25 | 29 Nov. |
| 1869 | 28 Mart. | 6 Maii. | 16 Maii. | 27 Maii. | 27 | 28 Nov. |
| 1870 | 17 April. | 26 Maii. | 5 Junii. | 16 Junii. | 24 | 27 Nov. |
| 1871 | 9 April. | 18 Maii. | 28 Maii. | 8 Junii. | 26 | 3 Dec. |
| 1872 | 31 Mart. | 9 Maii. | 19 Maii. | 30 Maii. | 27 | 1 Dec. |
| 1873 | 13 April. | 22 Maii. | 1 Junii. | 12 Junii. | 25 | 30 Nov. |
| 1874 | 5 April. | 14 Maii. | 24 Maii. | 4 Junii. | 26 | 29 Nov. |
| 1875 | 28 Mart. | 6 Maii. | 16 Maii. | 27 Maii. | 27 | 28 Nov. |
| 1876 | 16 April. | 25 Maii. | 4 Junii. | 15 Junii. | 25 | 3 Dec. |

*In sequenti Calendario, numerus qui post nomen ac dignitatem Sanctorum legitur, designat annum quo quisque Sanctus obiit :* c. *significat, circa annum :* s. *seculo :* c. med. s. *circa medium seculi :* c. fin. s. *circa finem seculi. Quibus nihil apponitur, tempus eorum mortis planè incertum.*

*Numerus autem qui interdum parenthesi includitur, designat diem natalem vel proprium cujuslibet Sancti, quando diversus est ab illo die qui ejus Festo celebrando assignatur.*

---

| Cyclus Epactæ. | Litt. Dom. | Dies Mensis. | | JANUARIUS. |
|---|---|---|---|---|
| * | A | Cal. | 1 | CIRCUMCISIO DOMINI, et OCTAVA NATIVITATIS EJUS, *Solemne-minus.* |
| xxix | b | iv | 2 | Basilii Magni, Cæsariensis in Cappadocia Episc. et Eccl. Doct. (è 1.) *semid.* 379. |
| xxviij | c | iij | 3 | GENOVEFÆ, VIRGINIS, Parisiorum Patronæ, *Solemne-minus* : 512. |
| xxvij | d | Prid. | 4 | Rigoberti, Remensis Episc. *Comm.* 743. |
| xxvj | e | Non. | 5 | Vigilia Epiphaniæ, *sine jejun. Commem.* S. Simeonis Stylitæ, Anachoretæ, prope Antiochiam : *c.* 460. |
| 25. xxv. | f | viij | 6 | EPIPHANIA DOMINI, Annuale-minus; *cum Octava secundi ordinis.* |
| xxiv | g | vij | 7 | De Octava Epiphaniæ, *semiduplex.* |
| xxiij | A | vj | 8 | De Octava Epiph. *semidupl. Commem.* S. Luciani, Bellov. Apost. et Mart. 290. |
| xxij | b | v | 9 | De Octava Epiphaniæ, *semiduplex.* |
| xxj | c | iv | 10 | De Octava, *semid. Commem.* S. Pauli, primi Eremitæ Thebaidis : *c.* 341. |
| xx | d | iij | 11 | De Octava Epiphaniæ, *semiduplex.* |
| xix | e | Prid. | 12 | De Octava Epiphaniæ, *semiduplex.* |
| xviij | f | Idib. | 13 | OCTAVA EPIPHANIÆ et BAPTISMUS DOMINI, *Duplex-majus.* |
| xvij | g | xix | 14 | Hilarii, Pictav. Ep. et Eccl. Doct. (è 13.) *Duplex-min. c.* 368. *Commem.* S. Felicis, Presb. Nolani, et Conf. *c.* 265. |
| xvj | A | xviij | 15 | Mauri, Glannofoliensis Abbatis, *semid. c. fin.* VI. s. *Commem.* S. Boniti, Claromontani Episcopi. *c.* 710. |
| xv | b | xvij | 16 | Guillelmi, Bituricensis Episcopi. (è 10.) *semid.* [In Metropolitana, *Duplex-minus.*] 1209. *Commem.* S. Fursæi, Abbatis Latiniacensis : *c.* 650. |
| xiv | c | xvj | 17 | Antonii, Abbatis Ægyptii, *semid.* 356. *Commem.* SS. Speusippi, Eleosippi et Melasippi, Martyrum : III s. |

| Cyclus Epactæ. | Litt. Dom. | Dies Mensis. | | JANUARIUS. |
|---|---|---|---|---|
| xiij | d | xv | 18 | Pontificatus seu Cathedra sancti Petri Apostoli, quâ primùm Antiochiæ, tum Romæ, sedit, *Duplex-minus*. *Commem*. S. Priscæ, Virg. et Mart. *c*. 275. *Prima sedes* Septuagesimæ, *die* 18. |
| xij | e | xiv | 19 | Sulpitii, Bitur. Episc. (è 17.) *semiduplex* : 644. *Commem*. S. Launomari, in territ. Carnutensi Abbatis : 594. |
| xj | f | xiij | 20 | Sebastiani, Martyris, *Duplex-minus* : *c*. 288. *Commem*. S. Fabiani, Papæ et Martyris : 250. |
| x | g | xij | 21 | Agnetis, Virg. et Mart. *semid*. 303 *vel* 304. |
| ix | A | xj | 22 | Vincentii, Diaconi et Martyris, *Duplex-minus* : 303 *vel* 304. |
| viij | b | x | 23 | |
| vij | c | ix | 24 | Babylæ, Antiochiæ Episc. et sociorum Martyrum, *simplex* : *c*. 251. |
| vj | d | viij | 25 | Conversio S. Pauli, Apost. *Dupl. minus*. *Commem*. S. Præjecti, Cloromontani Episc. et Martyris. 673. |
| v | e | vij | 26 | Paulæ, Viduæ Romanæ, *simplex* : 404. |
| iv | f | vj | 27 | Juliani, Cenomanensis Episcopi, *simplex* : III *vel* IV s. |
| iij | g | v | 28 | |
| ij | A | iv | 29 | Francisci Salesii, Genev. Episcopi, (è 28 Dec.) *Duplex-minus* : 1622. |
| j | b | iij | 30 | Bathildis, Reginæ Francorum, Viduæ, *semiduplex* : *c*. 680. |
| * | c | Prid. | 31 | |

## FEBRUARIUS.

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| xxix | d | Cal. | 1 | Ignatii, Antiochiæ Episcopi, et Martyris, (è 20 Dec.) *semiduplex* : 107. |
| xxviij | e | iv | 2 | PRÆSENTATIO DOMINI, et PURIFICATIO B. MARIÆ VIRGINIS, Solemne-majus; *sine Octava*. |
| xxvij | f | iij | 3 | Blasii, Sebasteni Episcopi, et Martyris, *simplex*: *c*. 316. |
| 25. xxvj. | g | Prid. | 4 | Joannæ Valesiæ, Reginæ Franciæ, Monial. Annuntiationis Fundatricis, *semiduplex* : 1505. *Prima dies* Cinerum, *die* 4. |
| xxv. xxiv. | A | Non. | 5 | Agathæ Catanensis, Virginis et Martyris, *semiduplex* : 251. |
| xxiij | b | viij | 6 | Vedasti, Atrebatensis Episcopi, *simplex* : *c*. 539. *Commem*. S. Amandi, Trajectensis Episcopi : *c*. 679. |

| Cyclus Epactæ. | Litt. Dom. | Dies Mensis. | | FEBRUARIUS. |
|---|---|---|---|---|
| xxij | c | vij | 7 | |
| xxj | d | vj | 8 | Joannis de Matha, Presbyteri Paris. Ord. SS. Trinitatis Fundatoris, (è 21 Dec.) *semiduplex* : 1213. |
| xx | e | v | 9 | Apolloniæ Alexandrinæ, Virginis et Martyris, *simplex* : 249. |
| xix | f | iv | 10 | Scholasticæ Cassinensis, Virginis, *simplex* : *c.* 543. *Commem.* S. Guillelmi de Malavalle, Solitarii : 1157. |
| xviij | g | iij | 11 | Severini Nantonensis, Abbat. S. Mauricii Agaunensis, *semiduplex* : 507. |
| xvij | A | Prid. | 12 | |
| xvj | b | Idib. | 13 | |
| xv | c | xvj | 14 | |
| xiv | d | xv | 15 | |
| xiij | e | xiv | 16 | |
| xij | f | xiij | 17 | |
| xj | g | xij | 18 | Simeonis, Hieros. Ep. et Mart. *semid.* 107. |
| x | A | xj | 19 | |
| ix | b | x | 20 | |
| viij | c | ix | 21 | *Ultima sedes* Septuagesimæ, *die* 21. |
| vij | d | viij | 22 | |
| vj | e | vij | 23 | |
| * | * | * | * | *Dies intercalaris addendus in anno bissextili.* |
| v | f | vj | 24 | MATTHIÆ, APOST. *Duplex-maj.* 1 s. |
| iv | g | v | 25 | *In anno bissextili.* |
| iij | A | iv | 26 | |
| ij | b | iij | 27 | Honorinæ, Virg. et Mart. *simplex.* |
| j | c | Prid. | 28 | *In anno bissextili.* |

¶ *In anno bissextili Februarius est dierum 29, et Festum S. Matthiæ celebratur 25 Februarii, et bis dicitur* sexto Calendas, *id est 24 et 25; Festum verò S. Honorinæ fit die 28, et Littera Dominicalis quæ assumpta fuit in mense Januario, mutatur in præcedentem.*

*Feria sextâ post Cineres, fit Officium de* QUINQUE PLAGIS CHRISTI, *Duplex-majus.*

*Feriâ quartâ, sextâ, et Sabbato post Dominicam I Quadragesimæ,* Quatuor Tempora.

---

## MARTIUS.

| Cyclus Epactæ. | Litt. Dom. | Dies Mensis. | | |
|---|---|---|---|---|
| * | d | Cal. | 1 | Albini, Andegav. Episc. *simplex* : 550. |
| xxix | e | vj | 2 | |
| xxviij | f | v | 3 | |

| Cyclus Epactæ. | Litt. Dom. | Dies Mensis. | | MARTIUS. |
|---|---|---|---|---|
| xxvij | g | iv | 4 | |
| xxvj | A | iij | 5 | |
| 25. xxv. | b | Prid. | 6 | Coletæ, Virginis, Clarissarum Reformatricis, *simplex* : 1447. |
| xxiv | c | Non. | 7 | Perpetuæ, Felicitatis, et sociorum Martyrum, *simplex: c.* 204. |
| xxiij | d | viij | 8 | |
| xxij | e | vij | 9 | Quadraginta Mart. Sebast. *simpl. c.* 320. |
| xxj | f | vj | 10 | Droctovei, primi Abbatis S. Vincentii ad Parisios, *Commem. c.* 578. |
| | | | | *Ultima dies* Cinerum, *die* 10. |
| xx | g | v | 11 | |
| xix | A | iv | 12 | |
| xviij | b | iij | 13 | |
| xvij | c | Prid. | 14 | |
| xvj | d | Idib. | 15 | |
| xv | e | xvij | 16 | |
| xiv | f | xvj | 17 | Gertrudis, Virginis, *Commem.* 659. |
| xiij | g | xv | 18 | Alexandri, Episc. Hierosolym. et Martyris, *Commem.* 250. |
| xij | A | xiv | 19 | JOSEPH, SPONSI B. MARIÆ VIRGINIS, *Solemne-minus* : 1 s. |
| xj | b | xiij | 20 | |
| x | c | xij | 21 | |
| ix | d | xj | 22 | *Prima sedes* Paschæ, *die* 22. |
| viij | e | x | 23 | |
| vij | f | ix | 24 | |
| vj | g | viij | 25 | ANNUNTIATIO INCARNATIONIS DOMINI, Solemne-majus; *sine Octava.* |
| v | A | vij | 26 | |
| iv | b | vj | 27 | |
| iij | c | v | 28 | |
| ij | d | iv | 29 | |
| j | e | iij | 30 | Reguli, Silvanectensis Episc. *Commem. c.* 320. |
| * | f | Prid. | 31 | |

¶ *Feriâ sextâ post Dominicam Passionis fit Officium de* COMPASSIONE B. MARIÆ VIRG. *Duplex-majus.* Si occurrat die 19 vel 25 Martii, transfertur in diem sequentem.

---

## APRILIS.

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| xxix | g | Cal. | 1 | |
| xxviij | A | iv | 2 | Francisci de Paula, Institutoris Ordinis Minimorum, *semiduplex* : 1507. |

| Cyclus Epactæ. | Litt. Dom. | Dies Mensis. | | APRILIS. |
|---|---|---|---|---|
| xxvij | b | iij | 3 | |
| 25. xxvj | c | Prid. | 4 | Ambrosii, Mediolanensis Episcopi, et Eccles. Doctoris, *Duplex-minus* : 397. |
| xxv. xxiv | d | Non. | 5 | |
| xxiij | e | viij | 6 | |
| xxij | f | vij | 7 | |
| xxj | g | vj | 8 | |
| xx | A | v | 9 | |
| xix | b | iv | 10 | |
| xviij | c | iij | 11 | |
| xvij | d | Prid. | 12 | |
| xvj | e | Idib. | 13 | |
| xv | f | xviij | 14 | |
| xiv | g | xvij | 15 | |
| xiij | A | xvj | 16 | |
| xij | b | xv | 17 | |
| xj | c | xiv | 18 | B. Mariæ ab Incarnatione, Viduæ Parisinæ, et Monialis Carmelitæ, *semiduplex* : 1618. |
| x | d | xiij | 19 | |
| ix | e | xij | 20 | |
| viij | f | xj | 21 | Opportunæ, Virginis, (è 22.) *simplex* : c. 770. |
| vij | g | x | 22 | INVENTIO CORPORUM SS. DIONYSII, RUSTICI ET ELEUTHERII, MART. *Duplex-majus* : c. 630. |
| vj | A | ix | 23 | Georgii, Martyris, *simplex* : c. 303. |
| v | b | viij | 24 | |
| iv | c | vij | 25 | MARCI, EVANGELISTÆ, *Duplex-majus* : c. 68. |
| | | | | *Ultima sedes* Paschæ, *die* 25. |
| iij | d | vj | 26 | Cleti, Papæ et Mart. *semiduplex* : c. 91. |
| ij | e | v | 27 | Polycarpi, Smyrnensis Episcopi, et Martyris, (è 26 Mart.) *semiduplex* : 169. |
| j | f | iv | 28 | |
| * | g | iij | 29 | Mariæ Ægyptiæ, (è 1.) *semiduplex* : v vel VI s. |
| xxix | A | Prid. | 30 | Eutropii, Santonensis Episcopi et Martyris, *simplex* : III s. |

¶ *Prima sedes* ASCENSIONIS DOMINI, *die* 30. *Et celebratur hoc Festum Feriâ v Hebdomadis V post Pascha*, Annuale-minus; *cum Octava secundi ordinis*.

| Cyclus Epactæ. | Litt. Dom. | Dies Mensis. | | MAIUS. |
|---|---|---|---|---|
| xxviij | b | Cal. | 1 | PHILIPPI * et JACOBI ** (Alphæi) APOST. *Duplex-majus : * post* 81 : ** 62. |
| xxvij | c | vj | 2 | Athanasii, Alexandr. Episcopi, et Eccl. Doctoris, *semiduplex* : 373. |
| xxvj | d | v | 3 | INVENTIO SANCTÆ CRUCIS, *Duplex-majus*: 326. |
| 25. xxv | e | iv | 4 | Monicæ, Viduæ, *simplex* : 387. |
| xxiv | f | iij | 5 | Pii Papæ V, *semiduplex* : 1572. |
| xxiij | g | Prid. | 6 | Joannis, Apostoli. et Evang. ante Portam Latinam, *semiduplex* : 95. |
| xxij | A | Non. | 7 | |
| xxj | b | viij | 8 | |
| xx | c | vij | 9 | Gregorii Nazianzeni, Constantinop. Episc. et Eccl. Doctoris, *semiduplex* : 391. |
| xix | d | vj | 10 | *Prima sedes* Pentecostes, *die* 10. |
| xviij | e | v | 11 | Mamerti, Vienn. Episc. *simplex* : c. 475. |
| xvij | f | iv | 12 | |
| xvj | g | iij | 13 | |
| xv | A | Prid. | 14 | |
| xiv | b | Idib. | 15 | |
| xiij | c | xvij | 16 | Honorati, Ambian. Episc. *simpl. c.* 600. |
| xij | d | xvj | 17 | |
| xj | e | xv | 18 | |
| x | f | xiv | 19 | Yvonis, Presbyteri, *semiduplex* : 1303. *Commem.* S. Petri Cælestini Papæ V, |
| ix | g | xiij | 20 | Instit. Congreg. Cælestin. 1296. |
| viij | A | xij | 21 | |
| vij | b | xj | 22 | |
| vj | c | x | 23 | |
| v | d | ix | 24 | Donatiani et Rogatiani, Martyrum, *simplex* : c. 287. |
| iv | e | viij | 25 | Augustini, Cantuar. Episc. et Anglorum Apostoli, (è 26.) *simplex* : 604. |
| iij | f | vij | 26 | Philippi Nerii, Presb. Congr. Orat. Romæ Institutoris, *semiduplex* : 1595. |
| ij | g | vj | 27 | |
| j | A | v | 28 | Germani, Parisiensis Episcopi, *Duplex-minus* : 576. |
| * | b | iv | 29 | |
| xxix | c | iij | 30 | |
| xxviij | d | Prid. | 31 | |

¶ *Feriâ quartâ, sextâ, et Sabbato Hebdom. Pentecostes*, Quatuor Tempora.

*Dominicâ I post Pentec. fit Officium de* SS. TRINITATE, *Solemne-minus.*

*Feriâ v Hebd. post SS. Trinitatem*, Festum CORPORIS CHRISTI, Annuale-minus; *cum Octava secundi ordinis.*

| Cyclus Epactæ. | Litt. Dom. | Dies Mensis. | | JUNIUS. |
|---|---|---|---|---|
| xxvij | e | Cal. | 1 | |
| 25. xxvj | f | iv | 2 | Pothini, Lugd. Episc. Blandinæ Virginis, et quadraginta quinque Martyrum, *semiduplex* : 177. *Commem.* SS. Marcellini Presbyteri, et Petri Exorcistæ, Martyrum : 304. |
| xxv. xxiv | g | iij | 3 | Clotildis, Reginæ Francorum, *Duplex-minus* : *post* 537. |
| | | | | *Ultima sedes* Ascensionis, *die* 3. |
| xxiij | A | Prid. | 4 | |
| xxij | b | Non. | 5 | |
| xxj | c | viij | 6 | Norberti, Magdeburg. Episc. Instit. Ord. Præmonstrat. *semiduplex* : 1134. |
| xx | d | vij | 7 | |
| xix | e | vj | 8 | Medardi, Noviom. Episcopi, *simplex* : *c.* 545. *Commem.* S. Gildardi, Rotomag. Episcopi : *c.* 525. |
| xviij | f | v | 9 | |
| xvij | g | iv | 10 | Landerici, Parisiensis Episcopi, *semiduplex* : 660. |
| xvj | A | iij | 11 | Barnabæ, Gentium Apostoli, *Duplex-minus* : *c. fin.* I s. |
| xv | b | Prid. | 12 | |
| xiv | c | Idib. | 13 | *Ultima sedes* Pentecostes, *die* 13. |
| xiij | d | xviij | 14 | Rufini et Valerii, Martyrum, *simplex* : *c.* 287. |
| xij | e | xvij | 15 | Ferreoli, Presbyteri, et Ferrutionis, Diaconi, Mart. (è 16.) *simplex* : 211. |
| xj | f | xvj | 16 | Joannis Francisci Regis, Soc. Jesu Presb. (è 31 Dec.) *semid.* 1640. *Commem.* SS. Cyrici et Julittæ, Mart. 305. |
| x | g | xv | 17 | Aviti, Abbatis, *simplex* : *c.* 530. |
| ix | A | xiv | 18 | Marinæ, Virginis, *simplex* : *c.* 750. |
| viij | b | xiij | 19 | Gervasii et Protasii, Mart. *semiduplex* : I *vel* II s. *Comm.* S. Romualdi, Abbatis, Instit. Ord. Camaldul. *c.* 1027. |
| vij | c | xij | 20 | |
| vj | d | xj | 21 | Leufredi, Abbatis, *simplex* : 738. |
| v | e | x | 22 | Paulini, Nolani Episcopi, *semiduplex* : 431. |
| iv | f | ix | 23 | Vigilia *sine jejunio.* |
| iij | g | viij | 24 | NATIVITAS S. JOANNIS BAPTISTÆ, *Solemne-minus.* |
| ij | A | vij | 25 | Agoardi, Agliberti, et sociorum, Martyrum, (è 24.) *semiduplex* : V s. |
| j | b | vj | 26 | Joannis et Pauli, Martyrum, *simplex* : *c.* 363. *Commem.* S. Baboleni, Abbatis S. Petri Fossatensis : *c.* 671. |

## JUNIUS.

| Cyclus Epactæ. | Litt. Dom. | Dies Mensis. | | |
|---|---|---|---|---|
| * | c | v | 27 | |
| xxix | d | iv | 28 | Irenæi, Lugd. Episc. et Eccl. Doct. ac soc. Martyrum, *Duplex-minus* : c. 202. *Commem.* Vigiliæ SS. Apostolorum Petri et Pauli ; *cum jejunio.* |
| xxviij | e | iij | 29 | PETRI et PAULI, APOST. Solemne-maj. c. 66 ; *cum Octava tertii ordinis.* *Commem.* omnium SS. Apostolorum. |
| xxvij | f | Prid. | 30 | COMMEMORATIO S. PAULI, APOST. *Duplex-majus. Commem.* S. Petri, Apostoli, *ac* S. Theobaldi, Presbyteri et Solitarii : 1066. |

---

## JULIUS.

| Cyclus Epactæ. | Litt. Dom. | Dies Mensis. | | |
|---|---|---|---|---|
| xxvj | g | Cal. | 1 | Martialis, Lemovicensis Episcopi, (e 30 Junii, *semiduplex* : III s. *Commem.* Octavæ SS. Apostolorum. |
| 25. xxv | A | vj | 2 | VISITATIO B. MARIÆ VIRGINIS, *Duplex-majus. Commem.* Octavæ SS. Apostolorum. |
| xxiv | b | v | 3 | De Octava SS. Apostolorum, *semiduplex.* |
| xxiij | c | iv | 4 | Ordinatio * et ** Translatio S. Martini, Turon. Episcopi, *semiduplex* : * 372. ** 473. *Commem.* Oct. SS. Apostol. |
| xxij | d | iij | 5 | De Octava SS. Apostolorum, *semiduplex.* |
| xxj | e | Prid. | 6 | Octava SS. Apostolorum Petri et Pauli, *Duplex-minus.* |
| xx | f | Non. | 7 | Thomæ, Cantuar. Episcopi, et Martyris, (è 29 Decemb.) *semiduplex* : 1170. *Translatio hâc die* : 1222. |
| xix | g | viij | 8 | ¶ *Dominicâ secundâ hujus mensis, celebratur Festum* SS. CORDIS D. N. JESU CHRISTI, Solemne-majus, *sine Octava. Comm.* SS. Cordis B. Mariæ. |
| xviij | A | vij | 9 | |
| xvij | b | vj | 10 | Septem Fratrum filiorum sanctæ Felicitatis, Martyrum, *simplex* : c. 150. |
| xvj | c | v | 11 | Benedicti, Cassinen. Abbatis. (è 21 Mart.) *semid.* 543. *Transl. hâc die* : c. 653. |
| xv | d | iv | 12 | |
| xiv | e | iij | 13 | Turiavi, Dolensis Episcopi, *simplex* : 749. |
| xiij | f | Prid. | 14 | Bonaventuræ, Albanensis Episcopi, et Ecclesiæ Doctoris, *semiduplex* : 1274. |
| xij | g | Idib. | 15 | |
| xj | A | xvij | 16 | |

## JULIUS.

| Cyclus Epactæ. | Litt. Dom. | Dies Mensis. | | |
|---|---|---|---|---|
| x | b | xvj | 17 | Sperati et soc. Martyrum, *simplex:* 200. |
| ix | c | xv | 18 | Thomæ Aquinatis, Presb. et Eccl. Doct. (è 7 Mart.) *Duplex-minus :* 1274. *Canonizatio hâc die* : 1333. |
| viij | d | xiv | 19 | VINCENTII A PAULO, PRESB. Congreg. Miss. Inst. (è 27 Sept.) *Dupl. maj.* 1660. |
| vij | e | xiij | 20 | Margaretæ, Virg. et Martyris, *simplex.* |
| vj | f | xij | 21 | Victoris, Martyris, *semiduplex : c.*290. |
| v | g | xj | 22 | MARIÆ MAGDALENES, *Dupl.majus.* I s. |
| iv | A | x | 23 | Apollinaris, Ravennensis Episc. et Martyris, *simplex :* I *vel* II s. |
| iij | b | ix | 24 | |
| ij | c | viij | 25 | JACOBI (Zebedæi) APOSTOLI, *Duplex-majus:*44. *Commem.* S. Christophori, Martyris in Lycia : III s. |
| j | d | vij | 26 | Joachim et Annæ, Parentum B. Mariæ Virginis, *Duplex-minus. Commem.* Translationis S. Marcelli, Paris. Episcopi : IX *vel* X sec. |
| * | e | vj | 27 | Georgii, Aurelii, Felicis, Nataliæ, et Liliosæ, Martyrum, *simplex :* 852. |
| xxix | f | v | 28 | Samsonis, Dolensis Episcopi, *simplex :* 565. |
| xxviij | g | iv | 29 | Lupi, Trecens. Episc. *semidupl. c.* 478. |
| xxvij | A | iij | 30 | Ignatii Loyolæ, Presbyteri, Instit. Soc. Jesu, (è 31.) *semiduplex :* 1556. |
| 25. xxvj | b | Prid. | 31 | Germani, Autissiodorensis Episcopi, *Duplex-minus :* 448. |

## AUGUSTUS.

| Cyclus Epactæ. | Litt. Dom. | Dies Mensis. | | |
|---|---|---|---|---|
| xxv. xxiv | c | Cal. | 1 | Petri ad Vincula, *Duplex-minus :* 44 et 65. *Dedic. basilicæ ejusdem, hâc die :* 439 *vel* 451. *Commem.* SS. septem Fratrum Machabæorum, et eorum Matris, Mart. 167 *ante Christ. nat.* ¶ *Dominicâ primâ Augusti, celebratur* Festum SUSCEPTIONIS SANCTÆ CRUCIS, (è 1.) nisi occurrat Transfiguratio, *Duplex-minus :*[In Metropolitana,*Duplex-majus.*] 1109. |
| xxiij | d | iv | 2 | Stephani, Papæ et Mart. *simplex:* 257. |
| xxij | e | iij | 3 | Inventio corporis S. Stephani, Protomartyris, *Duplex-minus:* 415. |
| xxj | f | Prid. | 4 | Dominici, Presbyteri, Instit. Ord. Fratrum Prædicat. (è 6.) *semiduplex :* 1221. |
| xx | g | Non. | 5 | Ionii, Presb. et Martyris, *semiduplex :* 290. *Commem.* sancti Memmii, Catalaunensis Episcopi, *post* 306. |

| Cyclus Epactæ. | Litt. Dom. | Dies Mensis. | | AUGUSTUS. |
|---|---|---|---|---|
| xix | A | viij | 6 | TRANSFIGURATIO DOMINI, *Duplex-majus*: 28 *vel* 32. *Commem.* S. Xysti, Papæ et Martyris : 258. |
| xviij | b | vij | 7 | |
| xvij | c | vj | 8 | Justini, Mart. (è 1.) *semiduplex* : III s. |
| xvj | d | v | 9 | |
| xv | e | iv | 10 | LAURENTII, DIACONI et MARTYRIS, *Duplex-majus* : 258. |
| xiv | f | iij | 11 | SUSCEPTIO SANCTÆ CORONÆ SPINEÆ, (è 18.) *Duplex-majus* : [In Metropolitana, *Solemne-minus*.] 1239. |
| xiij | g | Prid. | 12 | Claræ, Virginis, Clarissarum Abbatissæ, *simplex* : 1253. |
| xij | A | Idib. | 13 | Radegundis, Reginæ Francorum, Viduæ, *semiduplex* : 587. *Commem.* SS. Hippolyti, Concordiæ, et sociorum Martyrum, 258. |
| xj | b | xix | 14 | Vigilia *cum jejunio*. |
| x | c | xviij | 15 | ASSUMPTIO B. MARIÆ VIRGINIS, Basilicæ Metropolitanæ, ac Diœcesis Patronæ, Annuale-minus ; *cum Octava secundi ordinis* : I s.<br><br>¶ *Dominicâ intra Oct.* COMMEMORATIO VOTI LUDOVICI XIII, Regis Franciæ, *Duplex-majus* : 1638. |
| ix | d | xvij | 16 | De Octava Assumptionis, *semiduplex*. *Commem.* sancti Rochi, Laici apud Montem Pessulanum : 1327. |
| viij | e | xvj | 17 | De Octava, *semiduplex*. *Commem.* S. Mamantis, Cæsareæ in Cappadocia Martyris : 274. |
| vij | f | xv | 18 | De Octava, *semiduplex*. [In Metropolitana, *Commem.* Victoriæ Philippi Pulcri, Regis Franciæ, *Duplex-minus* : 1304.] *Commem.* sanctæ Helenæ, Reginæ et Viduæ : 328. |
| vj | g | xiv | 19 | De Octava, *semidupl.* *Commem.* S. Ludovici, Episc. Tolosani : 1297. |
| v | A | xiij | 20 | Bernardi Claravall. Abbatis et Eccl. Doctoris, *Duplex-minus* : 1153. *Commem.* Octavæ. |
| iv | b | xij | 21 | De Octava, *semiduplex*. |
| iij | c | xj | 22 | OCTAVA ASSUMPTIONIS B. MARIÆ, *Duplex-maj.* *Commem.* S. Symphoriani, Martyris : *c.* 179. |
| ij | d | x | 23 | Joannæ Franciscæ Fremiot de Chantal, Viduæ, Instit. Monial. Visit. S. Mariæ, (è 13 Dec.) *semiduplex* : 1641. |

| Cyclus Epactæ. | Litt. Dom. | Dies Mensis. | | OCTOBER. |
|---|---|---|---|---|
| xix | d | iv | 4 | Francisci Assisiatis in Umbria, Inst. Ord. Fratr. Minorum, *semiduplex* : 1226. |
| xviij | e | iij | 5 | Aureæ, Virginis, primæ Abbatissæ sancti Martialis apud Parisios, (è 4.) *semiduplex* : 666. |
| xvij | f | Prid. | 6 | Brunonis, Monachi, Instit. Ordinis Carthusianorum, *semiduplex* : 1101. *Commem.* sanctæ Fidis, Virginis et Martyris : *c.* 290. |
| xvj | g | Non. | 7 | Sergii et Bacchi, Mart. *simplex*: *c.* 303. |
| xv | A | viij | 8 | Vigilia *sine jejunio*. *Commem.* sancti Demetrii, Martyris : 303. |
| xiv | b | vij | 9 | DIONYSII PRIMI PARISIORUM EPISCOPI, RUSTICI PRESBYT. ET ELEUTHERII DIACONI, MARTYRUM, Solemne-majus; *cum Octava tertii ordinis* : 275 *vel* 286. |
| xiij | c | vj | 10 | De Octava SS. Martyrum, *semiduplex*. |
| xij | d | v | 11 | De Octava, *semiduplex*. *Commemor.* SS. Nigasii, Presbyteri, et sociorum Martyrum : 275 *vel* 286. |
| xj | e | iv | 12 | De Octava, *semiduplex*. |
| x | f | iij | 13 | De Octava, *semiduplex*. |
| ix | g | Prid. | 14 | De Octava, *semiduplex*. |
| viij | A | Idib. | 15 | Theresiæ, Virginis, Instauratricis Ordinis Carmelitarum, *semiduplex* : 1582. *Commem.* Octavæ. |
| vij | b | xvij | 16 | Octava SS. Dionysii, et sociorum Martyrum, *Duplex-minus*. |
| vj | c | xvj | 17 | Cerbonii, Populoniensis Episc. *simplex* : 568. |
| v | d | xv | 18 | LUCÆ, EVANGELISTÆ, *Duplex-majus* : 1 s. *Commem.* S. Hermelandi Abbatis : (è 25 Mart.) 718. *Translatio hâc die*, 869. |
| iv | e | xiv | 19 | Saviniani, Senonensis Episcopi, Potentiani, et sociorum Martyrum, (è 31 Dec.) *semiduplex* : *c.* 186 *vel* 235. *Translatio hâc die* : 1029. |
| iij | f | xiij | 20 | |
| ij | g | xij | 21 | Ursulæ et sociarum, Virg. et Mart. *semiduplex* : *c.* 450. *Commem.* S. Hilarionis, Abb. 371; *ac* sanctæ Celiniæ, Virginis : *c.* 500. |
| j | A | xj | 22 | Melloni, primi Rotomagensis Episcopi, *simplex* : *c.* 312. |
| * | b | x | 23 | |
| xxix | c | ix | 24 | Maglorii, Episcopi, *semiduplex*: 575. |
| xxviij | d | viij | 25 | Crispini et Crispiniani fratrum, Martyrum, *simplex* : 288. |

| Cyclus Epactæ. | Litt. Dom. | Dies Mensis. | | OCTOBER. |
|---|---|---|---|---|
| xxvij | e | vij | 26 | |
| xxvj | f | vj | 27 | |
| 25. xxv | g | v | 28 | SIMONIS et JUDÆ, APOSTOLORUM, *Duplex-majus* : I s. *Commem.* S. Faronis, Meldensis Episcopi : 672. |
| xxiv | A | iv | 29 | |
| xxiij | b | iij | 30 | Lucani Martyris, *simplex.* |
| xxij | c | Prid. | 31 | Vigilia *cum jejunio. Commem* S. Quintini, Martyris : *c.* 287. |

## NOVEMBER.

| Cyclus Epactæ. | Litt. Dom. | Dies Mensis. | | |
|---|---|---|---|---|
| xxj | d | Cal. | 1 | OMNIUM SANCTORUM, Annuale-minus; *cum Octava secundi ordinis : institutum c.* 835. |
| xx | e | iv | 2 | COMMEMORATIO OMNIUM FIDELIUM DEFUNCTORUM, *Duplex-majus : instituta* 998. [ *Commemor.* Octavæ omnium Sanctorum, *si Dominica sit.* ] |
| xix | f | iij | 3 | MARCELLI, PARIS. EPISCOPI, (è 1.) *Duplex-majus : c.* 400. *Commem.* Octavæ omnium SS. *ac* SS. Eustachii et sociorum Martyrum, (è 1.) |
| xviij | g | Prid. | 4 | Caroli Borromæi, Mediolanensis Episcopi et Cardinalis, (è 3.) *Duplex-minus :* 1584. *Commem.* Octavæ omnium SS. *ac* S. Clari, Presb. et Mart. III s. |
| xvij | A | Non. | 5 | De Octava omnium SS. *semiduplex.* |
| xvj | b | viij | 6 | De Octava omnium SS. *semid. Commem.* S. Leonardi, Solitarii : *c.* 559. |
| xv | c | vij | 7 | De Octava omnium SS. *semiduplex.* |
| xiv | d | vj | 8 | OCTAVA OMNIUM SANCTORUM, et VENERATIO SS. RELIQUIARUM *, *Duplex-majus :* * *instituta* 1194. |
| | | | | ¶ *Dominicâ post Octavam omnium SS. celebratur* ANNIVERSARIUM DEDICATIONIS ECCLESIÆ, Solemne-majus; *cum Octava tertii Ordinis.* |
| xiij | e | v | 9 | Maturini, Presbyteri, (è 1.) *simplex : ante* 388. |
| xij | f | iv | 10 | Leonis Magni, Papæ, et Eccl. Doctoris, *Duplex-minus : c.* 462. |
| xj | g | iij | 11 | MARTINI, TURONENSIS EPISCOPI, *Duplex-majus :* 397. |
| x | A | Prid. | 12 | Martini, Papæ et Martyris, (è 16 Sept.) *simplex :* 655. *Commem.* S. Verani, Episcopi, (è 11.) *c.* 590. |

| Cyclus Epactæ. | Litt. Dom. | Dies Mensis. | | NOVEMBER. |
|---|---|---|---|---|
| ix | b | Idib. | 13 | Gendulfi, Episcopi, *semiduplex :* I s. *Commem.* S. Brictii, Turon. Ep. 444. |
| viij | c | xviij | 14 | |
| vij | d | xvij | 15 | Eugenii, Martyris, *semiduplex . c.* 275 *vel* 286. *Commem.* S. Maclovii, Aleth. Episcopi : *c.* 625. |
| vj | e | xvj | 16 | |
| v | f | xv | 17 | Aniani, Aurelianensis Episcopi, *semiduplex : c.* 453. |
| iv | g | xiv | 18 | Aldæ *vel* Audæ, Virginis, *simplex:* VI s. |
| iij | A | xiij | 19 | Elisabeth, Viduæ, *simplex :* 1231. |
| ij | b | xij | 20 | |
| j | c | xj | 21 | PRÆSENTATIO B. MARIÆ VIRGINIS, *Duplex-majus. Commem.* S. Columbani, Abbatis : 615. |
| * | d | x | 22 | Cæciliæ, Virg. et Mart. *semid.* II *vel* III s. |
| xxix | e | ix | 23 | Clementis, Papæ et Mart. *semidupl.* 100. |
| xxviij | f | viij | 24 | Severini, Monachi, (è 23.) *semiduplex :* 555. *Commem.* S. Chrysogoni, Martyris : 304. |
| xxvij | g | vij | 25 | Catharinæ, Virg. et Mart. *semidupl.* IV s. |
| 25. xxvj. | A | vj | 26 | Genovefæ de Miraculo Ardentium, *semiduplex :* 1131. *Commem.* S. Marcelli, Parisiensis Episcopi. |
| xxv. xxiv | b | v | 27 | Lini, Papæ et Martyris. *semiduplex : c.* 78. *Commem.* SS. Vitalis et Agricolæ, Martyrum : *c.* 304. |
| | | | | *Prima sedes* Adventûs, *die* 27. |
| xxiij | c | iv | 28 | |
| xxij | d | iij | 29 | Saturnini, Tolosani Episcopi, et Martyris, *semiduplex : c.* 258 *vel* 275. |
| xxj | e | Prid. | 30 | ANDREÆ, APOSTOLI, *Duplex-majus :* I s. |

## DECEMBER.

| Cyclus Epactæ. | Litt. Dom. | Dies Mensis. | | DECEMBER. |
|---|---|---|---|---|
| xx | f | Cal. | 1 | Eligii, Noviom. Episcopi, ( e 30 Nov. ) *semiduplex : c.* 659. |
| xix | g | iv | 2 | |
| xviij | A | iij | 3 | Francisci Xaverii, Presbyteri, Indiarum Apostoli, (è 2.) *Duplex-minus :* 1552. |
| | | | | *Ultima sedes* Adventûs, *die* 3. |
| xvij | b | Prid. | 4 | |
| xvj | c | Non. | 5 | |
| xv | d | viij | 6 | Nicolai, Myrensis in Lycia Episcopi, *semiduplex : c.* 341. |
| xiv | e | vij | 7 | Faræ, Virginis, *Commemor. c.* 655. |

| Cyclus Epactæ. | Litt. Dom. | Dies Mensis. | | DECEMBER. |
|---|---|---|---|---|
| xiij | f | vj | 8 | CONCEPTIO B. MARIÆ VIRGINIS, *Solemne-minus.* |
| xij | g | v | 9 | |
| xj | A | iv | 10 | Valeriæ, Virginis et Martyris, *Commem. post medium* III s. |
| x | b | iij | 11 | Fusciani et Victorici, Martyrum, 286· *ac* Damasi, Papæ, 384, *Commem.* |
| ix | c | Prid. | 12 | |
| viij | d | Idib. | 13 | Luciæ, Virginis et Martyris, *semiduplex :* 304. *Commem.* S. Judoci, Presbyteri et Solitarii *: c.* 669. |
| vij | e | xix | 14 | Nicasii, Remensis Episc. Eutropiæ Virg. et soc. Mart. 407 *vel* 450, *Commem.* |
| vj | f | xviij | 15 | Maximini, Abbatis, *c.* 520, *Commem.* |
| v | g | xvij | 16 | |
| iv | A | xvj | 17 | |
| iij | b | xv | 18 | |
| ij | c | xiv | 19 | |
| | | | | ¶ *Feriâ quartâ, sextâ, et Sabbato Hebd. III Adventûs*, Quatuor Tempora. |
| j | d | xiij | 20 | |
| * | e | xij | 21 | THOMÆ, APOSTOLI, *Duplex-majus*, I s. |
| xxix | f | xj | 22 | |
| xxviij | g | x | 23 | |
| xxvij | A | ix | 24 | Vigilia *cum jejunio.* |
| xxvj | b | viij | 25 | NATIVITAS DOMINI, Annuale-majus; *cum Octava primi ordinis.* |
| 25. xxv | c | vij | 26 | STEPHANI, PROTOMARTYRIS, *Sol. minus :* I s. *Commem.* omnium SS. Martyrum; *et* Octavæ Nativitatis Domini. |
| xxiv | d | vj | 27 | JOANNIS, APOSTOLI et EVANGELISTÆ, *Duplex-majus :* 100 *vel* 104. *Commem.* Octavæ Nativ. Domini. |
| xxiij | e | v | 28 | INNOCENTIUM, MARTYRUM, *Duplex-maj.* I s. *Commem.* Octavæ Nativ. Domini. |
| xxij | f | iv | 29 | } De Octava Nativ. Domini, *semiduplex.* |
| xxj | g | iij | 30 | } |
| * 19. xx | A | Prid. | 31 | De Octava Nativitatis Domini, *semid. Commem.* S. Silvestri, Papæ : 335 ✝ *ac* S. Columbæ, Virg. et Mart. 258 *vel* 273. |

* *Hæc Epacta* 19 *nunquam est in usu, nisi quando eodem anno concurrit cum aureo numero* xix.

# INDEX RUBRICARUM.



RUBRICÆ

# RUBRICÆ GENERALES.

Rubricæ vocantur leges quibus regitur Officium sive ordinandum sive recitandum.

Rubricæ in tres partes dividuntur. In prima, agitur de Officio in genere; in secunda, de Horis Officii; in tertia, de Horarum partibus.

## PARS PRIMA.

### DE OFFICIO IN GENERE.

Officium quotidie fit vel de *Dominica*, vel de *Feria*, vel de *Festo*; de quibus dicendum tribus prioribus Capitibus.

Cùm autem hæc Officia aliquando inter se concurrant, vel plura ex iis eodem die occurrant, unde sequitur unum aut aliud transferri, vel tantùm habere commemorationem, in hac prima parte agendum, tribus posterioribus Capitibus, de *concurrentia*, de *occurrentia et translatione Officii*, ac de *Commemorationibus*: quibus ultimum annectitur Caput, de *Officio ordinando*.

#### CAPUT PRIMUM.

#### *De Dominica.*

1. Officium Dominicæ incipit à Vesperis Sabbati præcedentis. Octo constat partibus, quæ generatim dicuntur *Horæ*, eo quod, ex institutione Ecclesiæ, definitis horis recitentur. Hæ sunt: *Officium Nocturnum, Laudes; Prima, Tertia, Sexta, Nona*, quæ quatuor vocantur *Horæ minores*, vel *Horæ* absolutè; demum *Vesperæ* et *Completorium*. Sic constituitur Officium Dominicæ, ceterorum typus et forma.

2. Dominicæ duplicis sunt generis; *privilegiatæ*, et *communes*.

*Privilegiatæ* in tres classes dividuntur. Prima classis earum est quæ in occurrentia excludunt Festa cujuscumque gradûs et dignitatis; et sunt octo Dominicæ sequentes: prima Adventûs, prima Quadragesimæ, Passionis, Palmarum, Paschæ, in Albis depositis, Pentecostes, et Trinitatis.

Secunda, earum est quæ sola Annualia admittunt, cetera verò excludunt; et sunt sex sequentes, Dominica secunda, tertia et quarta Adventûs; secunda, tertia et quarta Quadragesimæ.

Ad tertiam pertinent tres Dominicæ, videlicet, Septuagesima, Sexagesima et Quinquagesima, quæ cedunt Annualibus et Solemnibus-majoribus; cetera verò excludunt.

3. *Communes* dicuntur reliquæ anni Dominicæ, quæ cedunt omnibus Duplicibus-majoribus, Duplicibus-minoribus Domini et B. Mariæ, necnon diei Octavæ cujuslibet Festi, etiam ritu Duplici-minori celebrato; cetera verò Duplicia-minora excludunt.

4. Officium Dominicæ fit, ritu ipsi proprio, ut habetur in secunda Rubricarum parte, ubi de singulis Horis.

5. Dominicale Officium nec totum transfertur, nec omnino omittitur. Si verò in Dominicam inciderit Festum, cui, juxta Rubricas, Officium Dominicæ cedere debeat, fiet Commemoratio Dominicæ in utrisque Vesperis, in Officio Nocturno et Laudibus.

6. Circa Dominicas quæ intra Octavas alicujus Festi occurrunt, vide quæ de his statuuntur proximo Capite III, § VI, ubi *de Octavis*, n. 31 et seq.

7. Ita assignantur Officia sex Dominicarum inter Epiphaniam et Septuagesimam, ut si aliqua eorum suo loco celebrari nequeant, transponantur ultra Dominicam vigesimam-quartam post Pentecosten, eo ordine qui notatur *Parte Autumnali, pag.* 309. Contingit autem aliquando, unum ex his Officiis nec etiam post hanc Dominicam vigesimam-quartam locum habere posse; tuncque Sabbato, aut aliâ proximiore Feriâ ante Septuagesimam, non occupatâ Festo Semiduplici et suprà, fit Officium de Dominica omissa, ritu feriali; aut si Feriæ omnes Hebdomadis occupentur, fit Commemoratio hujus Dominicæ in Officio Nocturno et Laudibus cujuscumque Festi in Sabbato occurrentis, ut notatur in Breviario, *Parte Hiemali, p.* 321. Interdum etiam, propter occursum Adventûs, omittendum est Officium Dominicæ vigesimæ-secundæ post Pentecosten, cujus loco ponitur Officium Dominicæ vigesimæ-tertiæ. Sed Sabbato præcedenti fit Officium, aut saltèm Commemoratio hujus Dominicæ omissæ, ut fusiùs explicatur, *Parte Autumnali, p.* 276, 277.

## CAPUT II.

### *De Feriis et Vigiliis.*

8. Dies hebdomadæ, sermone ecclesiastico, vocantur *Feriæ*; et unicuique, tam in Psalterio quàm in Proprio de Tempore, aliquod Officium assignatum est, quod *Feriale* dicitur.

Officium Feriale incipit ubi desinit Officium præcedens, et terminatur ubi Officium sequentis diei incipit. Hoc Officium iisdem octo constat partibus ac Dominicale.

9. Inter Ferias, aliæ sunt *majores*, seu *privilegiatæ*; aliæ *minores*, seu *communes*.

Feriæ *majores* in tres classes dividuntur. Prima classis est earum quæ nullum Officium admittunt, cujuscumque sit ritûs et dignitatis; Feria scilicet quarta Cinerum, ac Feriæ omnes Hebdomadæ sanctæ.

Ad secundam classem pertinent Feriæ Adventûs à die 16 ad diem 23 Decembris, Feriæque omnes à Feria quinta post Cineres ad Sabbatum ante Palmas; et excludunt Officia quæ in Dominicis communibus fieri nequeunt. De his Feriis, quando prætermittuntur, semper fit Commemoratio (in Officio Nocturno, si adsit Evangelium cum Homilia) in Laudibus et Vesperis.

In tertia classe collocantur Feriæ Adventûs usque ad diem 15 Decembris, dies quarta Januarii, Feriæ II et III Rogationum, Feria sexta post Octavam Ascensionis, Feriæ Quatuor-Temporum, quæ admittunt Festa Semiduplicia et suprà. Quando autem Officio alicujus ex his Feriis locus non datur, ejus Commemoratio fit in Officio Nocturno, (modò hæc Feria ha-

beat Evangelium et Homiliam) et in Laudibus; si verò non habet Evangelium, fit tantùm in Laudibus.

10. Feriæ *minores, seu communes,* sunt ceteræ per annum suprà non memoratæ. Admittunt quodcumque Officium, et quando omittuntur, nullam habent Commemorationem.

11. Feriis affines sunt *Vigiliæ,* ac proinde de his eo loco dicendum.

*Vigiliæ* nomen inditum est Officio diei qui præcedit quædam Festa Solemnia. Privilegia Feriarum majorum primæ classis obtinent Vigiliæ Nativitatis Domini et Pentecostes, ideoque nullum Festum admittunt.

Vigiliæ Epiphaniæ Domini et Assumptionis beatæ Mariæ, quorum Officium, in occurrentia, præstat Dominicali Officio, admittunt tantùm Duplicia-majora et suprà: nunquam anticipantur, sed de his fit suo die saltèm Commemoratio.

Vigilia Ascensionis pariter nunquam anticipatur, et in occurrentia Duplicis et suprà, habet tantùm Commemorationem.

12. Vigiliæ ceterorum Annualium-minorum cedunt Duplicibus-minoribus et suprà; sed si occurrant in Dominica, vel in Festo Solemni-majori et suprà, anticipantur die præcedenti; et de his fit Officium, vel tantùm Commemoratio, prout Officium diei alterutrum fieri patitur.

Vigiliæ Festorum Solemnium Festa Simplicia duntaxat excludunt: occurrentes autem in Dominica vel in Festo Solemni-majori et suprà, anticipandæ sunt, ut præfertur.

13. Officium Vigiliarum incipit ab Officio Nocturno, et terminatur ad Nonam. Vigiliæ Festorum Annualium habent Officium proprium, ritu peculiari celebrandum, ut ordinatur propriis locis. In ceteris Vigiliis, Officium fit de Feria, additis Evangelio cum Homilia in Nocturno; et in Laudibus, ℣, cum Antiphona ad *Benedictus,* quæ sunt unicuique propria.

## CAPUT III.

### *De Festis.*

14. Festum nuncupatur dies vel Mysteriis Religionis, vel Sanctorum cultui consecratus.

In Festis duo sunt attendenda, *gradus* scilicet et *dignitas.* Gradum indicat enuntiatio solemnitatis, seu ritûs, posita in Calendario vel in Breviario. Dignitas verò attenditur à Mysterio, vel ab eminentia Sancti cujus fit Officium.

Ratione *dignitatis*, Festum SS. Trinitatis et Festa Domini, inter quæ numerantur Annuntiatio et Præsentatio Domini, Visitatio B. Mariæ, Festa Crucis, Coronæ Spineæ et similia, ac Dedicatio Ecclesiæ, æquali gradu, præstant ceteris quibusque Festis. Festa B. Mariæ præcedunt Festa SS. Angelorum: S. Joannes Baptista et S. Joseph cedunt Angelis: deinde collocantur Festa Apostolorum, et Evangelistarum, qui tamen Apostolis subsunt. Ceteri Sancti, Martyres, Pontifices, Doctores, etc. qui in Calendario habentur, censentur æqualis esse dignitatis.

15. Ratione *gradûs,* Officium *Annuale* primum locum obtinet; secundum *Solemne;* tertium *Duplex;* quartum *Semiduplex;* quintum et ultimum

*Simplex*; de quibus gradibus agendum totidem Sectionibus. Cùm autem pluribus Festis annexa sit *Octava*, ultima Sectio hujus Capitis erit de *Octavis*.

### § I. *De Festo Annuali.*

16. Annuale aliud est majus, aliud minus.

Annualia-majora sunt Pascha, Pentecostes, Nativitas Domini; ipse dies Dedicationis Ecclesiæ, dies scilicet quo nova ecclesia solemni ritu ab Episcopo consecratur.

17. Annualia-minora sunt Epiphania, Ascensio Domini, Festa Corporis Christi, Assumptionis B. Mariæ Virginis, et Omnium Sanctorum; Festum Patroni Primarii ac etiam Titularis (si à Primario differat) cujuscumque ecclesiæ. Festum etiam Trinitatis, Festa Domini quæcumque, in ecclesiis ubi sunt Titularia, his exceptis quæ suprà n. 16, ritu Annuali-minori duntaxat celebrantur; et sicubi, propter concursum populi, alia Festa supra ritum diœcesis generalem extollantur, ultra Solemne-majus ea attolli non licet.

Officium Annuale et sequentia, usque ad Duplex inclusivè, iisdem constant Horis ac Dominica; et de his fit à I Vesperis ad Completorium diei sequentis, nisi aliter faciendum sit propter concurrentiam alterius Officii, ritu et dignitate superioris aut æqualis, ut dicetur infrà, Cap. IV, n. 38.

### § II. *De Festo Solemni.*

18. Inter Solemnia, alia sunt majora, alia minora.

Solemne-majus fit in Annuntiatione, et in Præsentatione Domini; in Festo SS. Cordis ejus, in Anniversario Dedicationis Ecclesiæ, in Festo primario sancti Institutoris in proprio Ordine, vel qui in aliqua Congregatione instar ejus habetur; et in Festis quibus in Calendario apponitur hæc vox, *Solemne-majus*.

19. Solemne-minus fit in Dominica SS. Trinitatis, in Circumcisione Domini, (in Festis Nominis ejus, et Rosarii B. Mariæ, ubi fiunt) in Festo Patroni secundarii, et in Festis hoc ritu in Calendario designatis.

20. Officium Festi Solemnis, sive majoris, sive minoris, incipit à I Vesperis, et continuatur ut dictum est suprà de Annuali-minori. Hæc Festa nunquam omittuntur; sed si proprio die fieri nequeant, transferuntur in diem proximiorem, ut dicetur infrà, Cap. V.

### § III. *De Festo Duplici.*

21. Duplex aliud est majus, aliud minus.

Duplex-majus fit in Feriis secundis et tertiis Paschæ et Pentecostes, in die Octava Festorum Annualium; in Festis secundariis Patroni principalis ac Titularis; in Festo Sancti cujus habentur insignes reliquiæ cum concursu populi; et in diebus quæ in Calendario designantur hâc voce, *Duplex-majus*.

Ejus Officium, sicut Duplicis-minoris, incipit à I Vesperis, et perficitur Completorio diei sequentis, nisi propter aliquam concurrentiam secùs faciendum sit.

22. Duplex-minus fit in Feria quarta Paschæ et Pente-

costes, in die Octava Festorum Solemnium-majorum Octavam habentium, et in diebus in Calendario notatis hàc voce, *Duplex-minus*.

23. Festum Duplex, sive majus, sive minus, nunquam omittitur : ideo occurrens aliquà die impeditâ, transfertur in aliam diem vacantem. Secùs verò si sit dies Octava, quæ proprio die celebranda est : tunc enim de ea fiet saltèm Commemoratio, ut dicetur sequentibus Capitibus.

## § IV. *De Festo Semiduplici.*

24. Ritu Semiduplici celebrantur tres ultimi dies Octavarum Paschæ, Pentecostes et Nativitatis Domini; dies intra omnes alias Octavas, Festa secundaria Patroni minùs principalis, et dies quibus in Calendario apponitur hæc vox, *Semiduplex*.

25. Festum Semiduplex non transfertur, sed de eo fit ipso die quo cadit : vel si eodem die fieri debeat Officium de digniori, tunc de Semiduplici fit solùm Commemoratio, si solemnitas diei patitur fieri Commemorationem; alioquin, omnino omittitur, ut fusiùs dicetur Capite *de occurrentia Officii*.

Officium Festi Semiduplicis fit à Capitulo I Vesperarum, et continuatur usque ad Completorium sequentis diei, nisi adsit aliqua concurrentia.

## § V. *De Festo Simplici.*

26. Ritus Festi Simplicis adhibetur in Officio B. Mariæ in Sabbato, et in Festis in Calendario designatis hàc voce, *Simplex*.

27. De Simplicibus, uti de Semiduplicibus, generalis regula est ea nunquam transferri, sed fieri ipso die quo cadunt, uno tamen casu excepto, de quo infrà, n. 53. Quòd si dies occupetur Festo gradu vel dignitate superiori, de Simplici fit tantùm Commemoratio, vel omnino omittitur, ut dicitur infrà, eodem n. 53.

Festum Simplex habet I Vesperas à Capitulo, et terminatur ad Nonam.

28. Quando et quomodo fieri debeat Officium B. Mariæ in Sabbato, notatur suo loco, ad calcem Breviarii. Hujus ritus est Simplex, et propter dignitatem beatæ Virginis, cuilibet Simplici antecellit.

## § VI. *De Octavis.*

29. *Octava* nuncupatur series dierum quibus continuatur Officium alicujus Festi : sex dies Festum proximè sequentes vocantur *dies intra Octavam*; ultima dicitur *dies Octava*.

Octavæ omnes ad tres ordines revocantur. Ad primum pertinent Octavæ Festorum Annualium-majorum, scilicet, Paschæ, Pentecostes et Nativitatis Domini. Intra Octavas Paschæ et Pentecostes primum triduum est Duplex; ultimum Semiduplex. Utraque hæc Octava excludit quælibet Festa, cujuscumque sint ritûs et dignitatis : ultimum triduum Octavæ Pentecostes admittit tamen Commemorationes occurrentes.

30. Intra Octavam Nativitatis Domini, in primo triduo non fit de ullo Festo, nequidem Commemoratio, præterquam SS. Stephani, Joannis, et Innocentium; ultimum triduum admittit Duplicia-majora, et Commemorationes oc-

currentes, ita tamen ut Officium Dominicæ intra Octavam in aliquo ex his diebus fiat : Duplicia verò minora, si quæ alicubi occurrant, transferuntur post Octavam.

31. Officium Octavarum Paschæ et Pentecostes, cum ritu sibi proprio, terminatur ad Nonam in Sabbato Festum sequente. Officium intra Octavam Nativitatis Domini fit etiam ritu peculiari, ut ordinatur suo loco. De Dominica intra Octavam, si primo triduo occurrat, nihil fit, sed ejus Officium ponitur die trigesimâ Decembris; secùs si in ultimum triduum incidat. Dies quæ sequuntur Circumcisionem usque ad Vigiliam Epiphaniæ, eo quod ad Octavam Nativitatis censeantur pertinere, nonnullis privilegiis Octavarum gaudent, ut notatur in Breviario. Si Dominica occurrat his diebus, de ea fit Officium die secundâ et quartâ Januarii duntaxat; si nulla occurrat Dominica, Officium Dominicæ inter Circumcisionem et Epiphaniam ponitur die quartâ Januarii.

32. Officium dierum intra Octavam ipsius diei Dedicationis Ecclesiæ, fiet ritu Semiduplici, ideoque Officium Duplex occurrens fieri debet suo die. In Dominica, si intra hanc Octavam occurrat, fiet de Octava, ritu Dominicali; et dies Octava erit Duplex-majus.

33. Ad secundum ordinem pertinent Octavæ omnium Festorum Annualium-minorum.

Dominicæ intra Octavas Epiphaniæ, Ascensionis, Festi Corporis Christi, et Assumptionis B. Mariæ, suum habent Officium, de quo fit proprio die, nisi, propter occurrentiam superioris aliûs Officii, de his solummodo facienda sit Commemoratio. Intra ceteras Octavas, Officium Octavæ cedit Officio Dominicæ, etiam communis per annum, de quo fit à Vesperis Sabbati præcedentis, et Octava habet duntaxat Commemorationem.

Dies intra Octavam admittunt quodcumque Festum Duplex occurrens, non autem translatum, excepto uno casu, de quo infrà, n. 48. Diebus non impeditis Officium fit de Octava, sub ritu Semiduplici.

Sed hic agitur tantùm de Octavis quæ fiunt secundi ordinis in tota diœcesi, non verò de Octavis Patronorum cujusque ecclesiæ, de quibus speciales regulæ statuuntur infrà, in *Appendice* ad finem Rubricarum posita.

Dies Octava est Duplex-majus; et in concurrentia vel occurrentia alterius Officii, astringitur regulis infrà positis, Cap. IV et V.

34. Ad tertium ordinem revocantur Octavæ Solemnium-majorum Octavam habentium. Intra eas, Officium fit ritu Semiduplici; cedit tamen Semiduplicibus occurrentibus, de quibus fit etiam à Capitulo in I Vesperis ad Capitulum II Vesperarum exclusivè. Duplex verò, etiam translatum, integrum habet Officium, cum Commemoratione Octavæ. De Dominica item integrè fit Officium, ut solet fieri in Dominica. Dies Octava habet Officium Duplex-minus, ( nisi aliquando propter Festum annexum, ejus gradus attollatur) et quoniam ultrà transferri nequit, præstat etiam Officio Dominicæ communis. Ceterò sequitur regulas

infrà positas, proximis Cap. IV et V.

Hic annotandum, dies intra Octavas secundi et tertii Ordinis non omnino æquiparari Festis Semiduplicibus, à quibus reipsà differunt et in ordine Officii, et in prærogativis.

35. Si duæ Octavæ simul occurrant vel concurrant, et sint ordine æquales, fiet Officium de digniori, cum Commemoratione alterius. Ubi autem Octava peculiaris Festi alicujus ecclesiæ concurrit cum Octava paris ordinis et dignitatis in tota diœcesi celebrata, Officium fit de posteriori cum Commemoratione prioris.

36. De diebus intra Octavam, quæ occurreret in Adventu, cujuscumque sit gradûs, sola fit Commemoratio. Officio diei Octavæ locus tamen datur ante diem 16 Decembris. A Vesperis autem diei 15 hujus mensis ad Nativitatem Domini; et à Nocturno Feriæ quartæ Cinerum ad Dominicam in Albis, necnon à Vigilia Pentecostes ad Trinitatem, nihil fit de qualibet Octava, ideoque Octavæ ante memoratos dies nondum absolutæ, terminandæ erunt vel ad Nonam diei decimæ-quintæ Decembris, (nisi sit ipsa dies Octava, de qua dicentur Vesperæ, cum Commemoratione Adventûs per Antiphonam *O*) vel ad Completorium Feriæ tertiæ post Quinquagesimam, aut Feriæ sextæ post Octavam Ascensionis, eodem ritu ac ceteris diebus intra Octavam, et nihil ampliùs fiet de ea.

37. Cùm transfertur Festum habens Octavam, non transfertur Octava, ita ut si Festum transferatur ad diem sextam Octavæ, postridie fieri debeat de die septima; sequenti verò die, de die Octava; et si ultra Octavam transferatur, Octavà prorsus vacat hoc anno.

Excipiendum tamen Festum Patroni vel Titularis, quod statuitur in aliqua Dominica, ut sit proprius ejus dies. Tunc enim Octava hujus Festi absolvitur Dominicà sequente.

## CAPUT IV.

### *De concurrentia Officii.*

38. Concurrere dicuntur Officia, quoties secundæ Vesperæ Officii desinentis, cum primis Vesperis alterius Officii incipientis simul forent recitandæ. Sed, quia id fieri non potest, unum alteri cedat necesse est.

In concurrentia Officiorum hæc duo consideranda sunt, gradus et dignitas. Quodnam inter utrumque sit discrimen jam dictum est suprà, n. 14 et 15.

Festa concurrentia quæ sunt inter se æqualis gradûs et dignitatis, dimidiant Vesperas; id est, Vesperæ dicuntur de præcedenti usque ad Capitulum exclusivè, et de sequenti à Capitulo usque ad finem, cum Commemoratione præcedentis.

Si verò sunt inæqualis gradûs, Vesperæ integræ dicuntur de Festo superiori; et Festi gradûs inferioris fit sola Commemoratio, dummodo pro solemnitate liceat.

39. Sed imprimis notandum est quod Festa Domini, beatæ Mariæ, Omnium Sanctorum, SS. Angelorum, S. Joannis-Baptistæ, S. Joseph, SS. Apostolorum et Evangelistarum, propter eorum dignitatem, nun-

quam dimidiant Vesperas, et si quando duo ex his Festis inter se concurrunt, Officium, æquali gradu, fit integrum de digniori, et sola Commemoratio de minùs digno. Hæc autem dicta sunto de Festis duntaxat, non verò de diebus intra Octavas, de quibus regulæ præscribuntur suprà, n. 33 et seq.

Insuper observandum, quod si Festum in tota diœcesi celebratum concurrat cum Festo peculiari alicujus ecclesiæ, æqualis gradûs et dignitatis, Vesperæ sint de priori cum Commemoratione alterius.

40. Dominica pariter nunquam dimidiat Vesperas. Si Festum Duplex ex iis quæ in Dominica celebrari licet, concurrat cum Dominica communi, Vesperæ sunt de Festo, et fit sola Commemoratio Dominicæ. In Dominicis autem privilegiatis, Vesperæ cedunt duntaxat Solemnibus-minoribus et suprà.

41. Si concurrat Dominica in Albis cum Inventione Crucis, et dies Octava Festi Corporis Christi cum Visitatione B. Mariæ; Vesperæ erunt integræ vel de Dominica, vel de die Octava prædicta, eo quod utraque fiat quasi ritu solemni.

42. In concurrentia Officiorum quæ ad idem pertinent, v. g. Compassionis B. Mariæ, et Annuntiationis, non fit Commemoratio Officii gradûs inferioris.

43. In Feriis privilegiatis, Vesperæ non sunt earum privilegii participes, ideoque admittunt I Vesperas, etiam Festi Simplicis, modò postridie de eo fiat Officium. Si enim ejus Officio locus non detur, tunc Vesperæ erunt Feriales, quia nunquam incipiendum est Officium quod persequi non licet.

## CAPUT V.

### *De occurrentia et translatione Officii.*

44. Occurrere dicuntur Officia quæ in eamdem diem incidunt. Ex his unum aut alterum transfertur, vel habet Commemorationem, vel omnino omittitur. Sequentia rem enucleabunt.

45. Si duo Officia eodem die occurrentia, sint diversi gradûs, Officium fit de eo quod est superioris gradûs, transfertur verò Festum gradûs inferioris, modò sit Duplex et suprà. Si sint ejusdem gradûs, Officium fit de digniori, et transfertur minùs dignum. Quod si sint gradu et dignitate paria, Officium quod fit in tota diœcesi, præstet, necesse est, Officio quod esset alicujus ecclesiæ proprium.

Annualia et Solemnia per totam diœcesim celebrata hoc gaudent privilegio, ut Festum peculiare alicujus ecclesiæ in eis occurrens, cujuscumque sit gradûs et dignitatis, transferatur.

46. Officium Dominicæ non transfertur : aliquando tamen anticipatur una Dominica superabundans, ut dictum est suprà, Cap. I, n. 7.

47. Festa Annualia, et Solemnia etiam minora, quæ suo die celebrari non possunt, transferuntur in proximiorem diem sequentem non impeditum Festo Solemni et suprà, aut Feriâ majori primæ classis. Annuntiatio et Incarnatio Domini, translata post Pascha, celebratur Feriâ secundâ post

Dominicam in Albis, quocumque Festo in ea Feria occurrente.

48. Duplex-majus occurrens in Dominica privilegiata, aut in Festo superioris gradûs, transfertur in proximum diem non impeditum Festo Semiduplici et suprà : transferri potest in diem intra Octavam tertii ordinis; aut etiam secundi, si propter occurrentiam Festi cujus Octava decurrit, suo die fieri non potuit. Si quæ commodè transferri nequeunt, anticipanda sunt. Pariter Festum Duplex quod in aliqua Dominica, tanquam in proprio ejus die figitur, si propter Festi superioris occurrentiam, in hac Dominica non possit celebrari, transfertur in Dominicam sequentem, aut etiam anticipatur quando vel necessitas vel utilitas id postulat.

49. Officia diei Octavæ Epiphaniæ, Ascensionis, Omnium Sanctorum, et alia quæ diversa essent à Festorum ipsorum Officio, anticipanda erunt ubicumque Festum Annuale vel Solemne ipsis diebus occurrens, à Clero vel à populo celebrari solet; non verò propter Festa privatæ devotionis, aut fundationis quarumdam sodalitatum, quæ in alium diem transferenda sunt, nec debent publico et regulari Officio totius diœceseos anteferri.

50. De die Octava secundi vel tertii ordinis, quæ n° præcedente non designatur, si incidat in Dominicam privilegiatam, vel in Festum superioris gradûs, fit sola Commemoratio. Si verò occurrat in Dominicam communem, Officium fit de ea, et Dominica habet tantùm Commemorationem.

51. Festum Duplex-minus, (nisi sit de Domino, vel de beata Maria, aut dies Octava) quando occurrit in Dominica quacumque, vel in Festo superioris gradûs, transfertur in diem proximum non occupatum Festo Semiduplici et suprà, vel etiam in diem intra Octavam tertii ordinis.

52. Semiduplex, ut dictum est, n. 25, nunquam transfertur, sed occurrens in Festo Annuali prætermittitur; idem dicendum de diebus intra Octavam tertii Ordinis. In Solemnibus-majoribus et infrà, de iis fit Commemoratio.

53. Pariter, non transfertur Festum Simplex, sed occurrens in Annuali aut Solemni-majore prorsus omittitur; habet autem Commemorationem quando incidit in Solemne-minus et infrà.

Notandum verò quod Festum Semiduplex aut Simplex, si propter occurrentiam aliûs Festi Solemnis vel Annualis alicubi perpetuò omitteretur; ejus Officio assignandus foret, auctoritate Dom. Archiepiscopi, alius dies, in quo de eo facienda esset saltèm Commemoratio.

De occurrentia Vigiliarum dictum est suprà n. 11, 12.

54. A Dominica Palmarum ad Dominicam in Albis, et à Vigilia Pentecostes ad Dominicam SS. Trinitatis inclusivè non fit de ullo Festo cujuscumque sit ritûs; sed Duplicia et suprà transferuntur : de Semiduplicibus et Simplicibus fit Commemoratio primo triduo Majoris Hebdomadæ, Dominicâ in Albis, et ultimo triduo Octavæ Pentecostes : in aliis diebus ex supradictis, nulla fit Commemoratio.

55. Si Festum S. Marci in-

...

cidat in Dominicam communem, ejus Officium fit in ea Dominica, Litaniæ verò transferuntur in Feriam secundam sequentem. Si verò inciderit intra Hebdomadam Paschæ, Litaniæ fient Feriâ secundâ post Dominicam in Albis, quocumque Festo in ea occurrente, et Officium S. Marci transferetur in primum [illegible] vacantem, juxta generalem Rubricam.

56. Quando secunda dies Novembris occurrit in Dominicâ, eo die fit de S. Marcello, et Commemoratio Defunctorum in Feriam secundam transfertur, ut notatur in Breviario. Omittitur autem hoc anno Commemoratio SS. Eustachii et sociorum.

57. Si plura Festa transferantur, priùs fit de superiori vel gradu vel dignitate; si sint inter se æquales, de iis fiet eo ordine quo occurrunt in Calendario.

## CAPUT VI.

### *De Commemorationibus.*

58. Quando aliquod Officium, propter concurrentiam vel occurrentiam, alteri cedit, plerumque, ut dictum est, non omnino omittitur, sed quemdam in Officio ei præposito servat locum, qui vulgò vocatur *Memoria* seu *Commemoratio.*

Hæc Commemoratio fieri potest in utrisque Vesperis, in Officio Nocturno, et in Laudibus simul; vel tantùm in aliqua ex his Horis, prout patitur ritus, dignitas aut privilegium uniuscujusque Officii concurrentis vel occurrentis.

59. Inter Commemorationes, aliæ sunt privilegiatæ, quæ semper fiunt, saltèm ex parte; aliæ quandoque prætermittuntur, ut jam dictum est, n. 52 et seq.

Privilegiatæ sunt Commemorationes Annualium, Solemnium, et Duplicium-majorum, omnium Dominicarum, et Feriarum majorum: semper etiam facienda est Commemoratio cujusque diei intra Octavas secundi ordinis, dummodo non incidant in dies suprà exceptos, n. 36 et 54.

60. In Annualibus, ad utrasque Vesperas fit Commemoratio de Duplici-majore concurrente et suprà, de quacumque Dominica, de Feria majore secundæ classis, (*Vide* Cap. II, n. 9 et 11.) et de qualibet die intra Octavam primi ordinis. Ad Officium Nocturnum, fit Commemoratio cujuslibet Dominicæ, et Feriæ majoris Homiliam habentis; de die Octava secundi aut tertii ordinis, modò ejus Evangelium diversum sit ab Evangelio Festi. In Laudibus, præter Commemorationes quæ factæ sunt in Officio Nocturno et in Vesperis, quæ nunquam ad Laudes omittuntur, fiet etiam Commemoratio Feriæ majoris tertiæ classis, (*Vide* Cap. II, n. 9.) diei Octavæ secundi aut tertii ordinis, et cujusque diei intra Octavam secundi ordinis. Secundæ Vesperæ admittunt Commemorationem de Duplici-minore de quo postridie fiet Officium.

61. Solemnia-majora, præter eas quæ fiunt in Annualibus, in utrisque Vesperis admittunt Commemorationes de Duplici-minore, et de quaque die intra Octavam secundi ordinis; in Laudibus, de Semiduplici, et de qualibet die intra Octavam tertii ordinis. Ad secundas Vesperas eorumdem fit Comme-

moratio, si in crastino fiat Officium de alterutro.

62. Solemnia-minora admittunt in primis Vesperis Commemorationem Semiduplicis concurrentis. Item Simplicis in Officio Nocturno et Laudibus, et etiam in secundis Vesperis, quando postridie de eo fit Officium.

63. In Dominicis, in Duplicibus quibuslibet et infrà, fiunt Commemorationes tam occurrentes quàm concurrentes: sed annotandum est, de Semiduplicibus et Simplicibus, quorum Officium, propter occurrentiam, cedit Officio Dominicæ, aut alicujus Festi, vel diei intra Octavam, eorum Commemorationem fieri in Officio Nocturno, si locus detur, et in Laudibus tantùm, non autem in Vesperis.

64. Semiduplex, de quo factum est Officium, vel postridie faciendum erit, si propter concurrentiam careat alterutris Vesperis, habet tamen Commemorationem in Vesperis Officii concurrentis, dummodo Solemnitas eam admittat. Idem dicendum de Festo Simplici in primis ejus Vesperis.

65. In Simplicibus et in Feriis, (præterquam ab initio Adventûs usque ad Præsentationem Domini, in Feriis Passionis, ac Tempore Paschali) ad Laudes et ad Vesperas fiunt *Commemorationes communes*, seu *Suffragia*, quorum loco, in Adventu et ab Octava Epiphaniæ ad Præsentationem Domini, quotidie fit Commemoratio de B. Maria, ut fusiùs explicatur propriis locis, et infrà n. 218 et seq.

66. Tempore Paschali, non fiunt Suffragia, sed pro eis habetur Commemoratio de Cruce et Resurrectione Domini.

67. Singulis Sabbatis, quando non fit Officium de Beata, de ipsa tamen fit Commemoratio ad Laudes, in Duplicibus-minoribus et infrà; quæ omittitur intra Octavas B. Mariæ ac Festorum Annualium Domini, et in diebus quibus fiunt Suffragia.

Quomodo autem faciendæ sint Commemorationes tam in Vesperis, quàm in Officio Nocturno et Laudibus, dicetur in secunda Rubricarum parte, n. 82, 83; 92 et seq. ac 111.

## CAPUT VII.

### *De Officio ordinando.*

68. Perceptis superioribus Rubricis, ad dignoscendum de quo fieri debeat Officium, priùs inspicienda sunt *Tabula Festorum mobilium*, et *Calendarium*, in capite Breviarii posita; et ut quisque currentis diei Officium faciliùs ordinare possit, illum scire interest, quatuor inesse Breviario præcipuas divisiones: scilicet, 1. *Psalterium*; 2. *Proprium de Tempore*; 3. *Proprium Sanctorum*; 4. *Commune* eorumdem, in quibus requirenda sunt ea quæ ad Officium pertinent.

69. Singulis partibus præmittitur *Psalterium*, pro unaquaque die hebdomadæ dispositum; huicque subnectitur *Ordinarium Breviarii*, in quo omnia collocata sunt, quæ ad inchoandum et terminandum Officium usu quotidiano teruntur.

70. *Proprium de Tempore* complectitur Officia quæ in diversis partibus anni Ecclesiastici succedunt, ab Adventu

ad ultimam usque Dominicam post Pentecosten, nimirum :

1° Adventus Domini, usque ad Vigiliam Nativitatis ejus.

2° Nativitas Domini, deinde ejus Epiphania, cum sua quæque Octava; necnon tempus ejusdem Nativitatis, quod protrahitur usque ad Præsentationem Domini. Hâc utrâque parte, omnia sunt in Proprio requirenda.

3° Dominicæ et Feriæ à Septuagesima ad Quadragesimam, in quibus Officium sumitur partim de Psalterio, partim de Proprio.

4° Tempus Quadragesimale, id est, à Feria quarta Cinerum ad Sabbatum sanctum, in quo proprium est totum Officium.

5° Dies sanctus Paschæ cum sua hebdomada, et tempus Paschale, usque ad completam Octavam Pentecostes, habent etiam omnia propria.

6° Dominicæ et Feriæ, quæ aliquando Præsentationem Domini et Septuagesimam intercidunt : item Dominicæ et Feriæ communes, quæ succedunt à Trinitate ad Adventum, nihil habent proprium, nisi Lectiones, Responsoria, Orationes, atque etiam, in Dominicis tantùm, Antiphonas ad *Benedictus* et ad *Magnificat*; ceteræ Officii partes desumuntur è Psalterio.

71. Officia Festorum mobilium pariter habentur in *Proprio de Tempore*. Ceterorum verò Festorum Officia, tam de Domino, quàm de B. Maria et aliis Sanctis, jacent in *Proprio Sanctorum*.

72. Cùm autem multa Sanctorum Festa nihil habent proprium, præter Lectiones, et interdum Orationem; aliæ Officii partes requirendæ sunt in *Communi Sanctorum*, quod ultimò reponitur.

73. Si ordinandum sit Officium de Dominica vel de Feria, Psalmi semper dicentur ut in Psalterio dispositi sunt; reliquæ verò partes sumentur vel in Proprio de Tempore, vel in Psalterio, ut mox dictum est.

74. Si de Festo agitur, scire oportet Festa Domini et beatæ Mariæ habere suum Officium proprium, in quo etiam selecti Psalmi, dicendi in Solemnibus et suprà, indicantur suis locis.

In Festis quoque Sanctorum Solemnibus, Officium in Proprio plerumque habetur : quæ verò deessent sumuntur de Communi, præsertim in Festis Patronorum de quibus nihil extaret in Proprio.

Sed ut hæc omnia in promptu habeantur, positæ sunt, de singulis Horis earumque partibus dignoscendis, regulæ sequentes, quæ secundâ et tertiâ Rubricarum parte concluduntur.

## PARS SECUNDA.

### DE HORIS OFFICII.

75. Officium est Nocturnum, vel Diurnum.

Officium Nocturnum, quod etiam *Vigiliarum* nomine nuncupatur, institutum est ut celebretur noctu ad exemplum Davidis, qui mediâ nocte surgebat ad confitendum nomini Domini : nunc quia in plerisque locis, ex consensu Ecclesiæ, mane persolvitur, dicitur vulgato nomine *Matutinum*.

Officium Diurnum (sic nuncupatum eo quod per diem ce-

lebrari soleat, ad exemplum ejusdem Davidis qui septies in die laudem dicebat Domino) in septem Horas dividitur, quæ sunt : *Laudes,* sic dictæ à Psalmis laudum qui hàc horâ Deo canuntur, olim *Matutinæ,* quòd mane persolverentur, appellatæ : *Prima,* quæ orto sole : *Tertia,* quæ inter ortum solis et meridiem : *Sexta,* quæ meridie ante prandium : *Nona,* quæ inter meridiem et occasum solis : *Vesperæ,* quæ occidente sole, sive advesperascente die, ante cœnam : *Completorium* denique, quod completo die, ante cubitum Deo persolvitur ; sicque omne Officium consummatur.

De his octo Horis sigillatim agendum.

## CAPUT I.

### *De Officio Nocturno.*

76. Ad Officium Noctis hæc per ordinem regulariter dicuntur, *Pater.... Ave.... Credo,* secretò : deinde, nisi aliter quibusdam diebus notetur, *Domine labia,* etc. *Deus in adjutorium,* etc. eo modo qui habetur in Ordinario Breviarii. Dicto *Alleluia,* vel *Laus tibi Domine,* etc. dicitur Invitatorium conveniens, cum Psalmo *Venite,* modo infrà præscripto, n. 118 et seq. Postea dicitur Hymnus.

77. Hymnum sequuntur Psalmi et Lectiones, sed diversâ ratione, pro diversitate Officii. Nam in Dominicis, in Duplicibus-minoribus et suprà, (extra Tempus Paschale) dicuntur novem Psalmi vel de Dominica, vel proprii, vel de Feria ; (in Solemnibus scilicet et suprà, dicuntur Psalmi proprii, vel, si desint, sumuntur de Dominica : in Duplicibus et infrà, Psalmi sunt semper de Feria ;) cum totidem Antiphonis, tribus Versiculis, novem Lectionibus ac Responsoriis, per tres Nocturnos distinctis hoc modo :

78. In I Nocturno dicuntur tres Psalmi, cum tribus Antiphonis, scilicet post singulos Psalmos Antiphona una ; Antiphonam tertiam sequitur Versiculus, post quem dicitur secretò, *Pater noster,* usque ad *Et ne nos,* etc. quod clarâ voce pronuntiatur : ( idem in aliis Horis observatur in Choro, quando in ipsis dicitur Oratio Dominica) sequitur Absolutio, deinde tres Lectiones : quamlibet præcedit Benedictio ; et post singulas conclusas, ut habetur infrà n. 166, dicitur Responsorium, diverso modo pro Solemnitatibus, ut notatur infrà, n. 172 et seq. Lectiones desumuntur ex sacra Scriptura quæ per ordinem in Officio de Tempore occurrunt, nisi aliæ propriæ de Scriptura assignentur, quod fit in Festis Solemnibus. Responsoria verò dicuntur ut in Proprio de Tempore, si Officium fiat de Tempore ; si verò de Sancto, ut in Proprio vel in Communi Sanctorum, etiamsi Lectiones fuerint de Tempore.

79. In II Nocturno dicuntur alii tres Psalmi, cum totidem Antiphonis, Versiculus alius, *Pater noster ;* Absolutio, et Benedictiones de Dominica in Officio de Tempore, et in Festis Domini ; de beata Virgine, quando de ea fit Officium ; de Sanctis verò in omni Officio de Sanctis et de Angelis : Lectiones de aliquo Sermone aut Tractatu alicujus Sancti, aut de

Vita illius Sancti de quo fit Officium; et post quamlibet Lectionem, unum Responsorium, eo ritu quo in I Nocturno.

80. In III Nocturno alii tres Psalmi, cum suis Antiphonis, Versiculo, *Pater noster*, etc. ut suprà; leguntur tres Lectiones de Homilia in Evangelium de Tempore, vel de Festo, secundùm qualitatem Officii, ultimâ interdum exceptâ, ut videbitur infrà n. 83; et primæ Lectioni de Homilia semper præponitur principium Evangelii de quo est Homilia. Post singulas Lectiones unum dicitur Responsorium, ut suprà; et post ultimum dicitur *Te Deum*, nisi aliter notetur: post *Te Deum*, vel quando non dicitur, post ultimum Responsorium, dicitur Versus Sacerdotalis, (si sit dicendus) quo dicto, inchoantur Laudes, ut infrà; vel terminatur Officium Nocturnum, ut dicitur infrà, n. 84. Excipienda triduum ante Pascha, et Commemoratio Defunctorum, quæ diversum sequuntur ordinem, ut notatur propriis locis.

81. In Festis Semiduplicibus, et Simplicibus, post Invitatorium et Hymnum, dicuntur (extra Tempus Paschale) novem Psalmi sub tribus Antiphonis, cum Versiculo ex Proprio, vel ex Nocturno de Communi, secundùm Feriam; tres videlicet Psalmi sub unaquaque Antiphona; postea *Pater noster*, deinde Absolutio, et tres Lectiones sub tribus Benedictionibus. Scilicet in Festis Semiduplicibus, Lectio j erit de Scriptura occurrente, tribus in unam junctis; tum ij et iij de Festo. In Simplicibus verò, j et ij Lectio de Scriptura occurrente; prima videlicet sola, secunda ex duabus aliis in unam junctis, tertia de Festo. Post unamquamque Lectionem dicitur unum Responsorium ex Proprio, vel ex eodem Nocturno de Communi, secundùm Feriam, ut habetur infrà n. 170. Deinde dicitur *Te Deum*; demum Versus Sacerdotalis.

82. In Officio Feriæ, Invitatorium et Hymnus, si non sint in Proprio de Tempore, de Psalterio sumentur; deinde (extra Tempus Paschale) novem Psalmi sub tribus Antiphonis, cum Versiculo, ut in Proprio vel in Psalterio. Post Versiculum, *Pater noster*, Absolutio, et tres Lectiones, quæ erunt de Scriptura occurrente in Proprio de Tempore, nisi pro ultima Lectione legatur Evangelium cum sua Homilia, vel Commemoratio facienda sit de Sancto per Lectionem de Vita illius; tunc enim tres Lectiones de Scriptura in duas rediguntur. Post singulas Lectiones dicitur Responsorium, ut notatur in Proprio de Tempore. Si verò ultima Lectio sit de Homilia Dominicæ, quæ ex suprà dictis, Part. I, Cap. 1, n. 7, aliquando anticipanda est, eam sequitur ℟ septimum Officii Nocturni ejusdem Dominicæ, cui additur *Gloria Patri*. Demum Versus Sacerdotalis.

83. Quando autem aliqua facienda est Commemoratio, ponitur pro ultima Lectione. Si sit de Dominica, aut de Feria majore Evangelium habente, legitur hoc Evangelium cum prima Lectione ejus Homiliæ: et si duæ sint Commemorationes faciendæ, quod in aliqua die Octava accidere potest, pro Lectione viij ponitur

Evangelium et Homilia diei Octavæ, dummodo Evangelium diversum sit ab Evangelio Festi; aliàs omittititur, ut dictum est suprà, n. 60: sed Evangelium Dominicæ occurrentis in Proprio de Tempore, semper legitur ultimo loco. Si verò Commemoratio sit de aliquo Sancto, Lectio est de ejus Vita, una tantùm, aut duabus in unam coactis, modò de eadem historia texantur: quæ omittitur quotiescumque pro ultima Lectione legenda est aliqua Homilia in Evangelium.

84. Versum Sacerdotalem communiter sequuntur Laudes. Si verò non sequantur continuò, dicitur cum integra conclusione Oratio, et antè et pòst dicitur *Dominus vobiscum*; deinde in fine, *Benedicamus Domino, Fidelium animæ*, et *Pater noster*. In Feriis autem Quadragesimæ, et ceteris in quibus Preces dicendæ sunt ad Laudes, post Versum Sacerdotalem, si Laudes non sequantur, dicuntur flexis genibus Preces positæ ad Tertiam; deinde Oratio, etc. ut suprà.

85. Tempore Paschali, id est, à die sancto Paschæ ad Sabbatum post Pentecosten inclusivè, in Officio tam de Tempore, quàm de Sanctis, unicum dicitur Nocturnum, constans tribus Psalmis, totidem Lectionibus, et Responsoriis. Psalmi variantur, ut notatur in Proprio de Tempore; et in Duplicibus et infrà, dicuntur ut in Officio de Feria sub unica Antiphona. In Annualibus autem et Solemnibus, Psalmi dicuntur sub tribus Antiphonis, ipso die Festo; non verò diebus intra Octavam, in quibus una tantùm dicitur.

## CAPUT II.

### *De Laudibus.*

86. Ad Laudes (præmissis *Pater* et *Ave*, si separentur ab Officio præcedenti; alioquin, post Versum Sacerdotalem) dicitur *Deus in adjutorium*, deinde Psalmi et Canticum cum Antiphonis Officio convenientibus, ut habetur in Psalterio pro unoquoque hebdomadæ die, vel sicut notatur in Proprio de Tempore, aut in Proprio vel in Communi Sanctorum.

87. In Solemnibus-minoribus et suprà, Psalmi semper dicuntur de Dominica; in Duplicibus et infrà, Psalmi sunt de Feria, nisi aliter notetur; sed in quolibet Festo Canticum vel est proprium, vel sumitur de Communi Sanctorum.

88. Intra Octavas Annualium-majorum, in Festis Semiduplicibus et suprà, dicuntur quinque Antiphonæ; quæ, si non adsint propriæ, sumuntur de Communi. At in Festis Simplicibus, Psalmi dicuntur sub quarta Antiphona de Laudibus illius Communis de quo fit Officium: intra Octavas secundi et tertii Ordinis, sub quarta Antiphona de Laudibus Festi, nisi propria assignetur.

89. In Feriis in quibus unaquæque Antiphona depromitur è Psalmo præcedente, ut habetur in Psalterio, quinque Antiphonæ dicuntur. In ceteris Feriis, Laudes dicuntur sub unica Antiphona, paucis diebus exceptis, ut notatur suis locis, in decursu Breviarii.

90. Post Psalmos (nisi aliter notetur) dicitur Capitulum, Hymnus, Versiculus, Canticum *Benedictus*, cum Antipho-

na et Oratione; omnia pro qualitate Officii.

91. Preces, quando dicendæ sunt, dicuntur post Antiphonam ad *Benedictus*. Orationi præmittitur *Dominus vobiscum*, vel *Domine exaudi*, et *Oremus*. Post Orationem repetitur *Dominus vobiscum*, deinde dicitur *Benedicamus*, et submissè Versiculus *Fidelium animæ*; tandem *Pater noster*, secretò.

92. Commemorationes, si quæ sint faciendæ, fiunt hoc modo : Post Orationem diei, præmissis *Dominus vobiscum*, vel *Domine exaudi orationem*, et *Benedicamus Domino*, dicitur Antiphona quæ posita est ad *Benedictus*, in Officio de quo fit Commemoratio, sive in Proprio extet, sive de Communi sumatur; post Antiphonam dicitur Versiculus, inde sumendus unde sumpta est Antiphona, scilicet post Hymnum Laudum; deinde Oratio.

93. Si de Dominica, Vigilia, aut Feria fiat Commemoratio, Antiphona et Oratio, nisi aliter notetur, sumuntur è Proprio de Tempore. Versiculus sumitur de Psalterio, quando non adest proprius.

94. Si Sanctus de quo fit Commemoratio, sit ejusdem conditionis ac ille de quo fit Officium : putà, si in Festo Martyris proprium Officium non habentis, occurrat Commemoratio facienda de alio Martyre; tunc sumitur Antiphona quæ in Communi assignatur ad *Magnificat* in secundis Vesperis, cum Versiculo de iisdem Vesperis, et Oratio de Communi, nisi adsit propria.

95. Quando contingit plures fieri Commemorationes, Commemoratio illius de quo fieret Officium, regulariter præcedit Commemorationem ejus de quo facienda tantùm esset Memoria.

96. Commemorationes communes, seu Suffragia, semper fiunt ultimo loco, ut habentur in Ordinario Breviarii.

## CAPUT III.

### *De Horis minoribus, Prima, Tertia, Sexta, et Nona.*

97. Ad Primam (dictis *Pater* et *Ave* secretò, si separetur ab Officio præcedenti). dicitur *Deus in adjutorium*, et Hymnus *Jam lucis*. Post Hymnum imponitur Antiphona conveniens: quod fit etiam ad ceteras Horas, in Choro tantùm, ante intonationem Psalmorum, ut habetur infrà, n. 137. In Dominicali ac Feriali Officio, ad Horas minores, sumuntur Antiphonæ quæ notantur in Psalterio, vel in Proprio de Tempore, pro unaquaque Hora. In Festis verò, Antiphonæ depromuntur ex Laudibus per ordinem; ad Primam scilicet, sumitur prima Antiphona, ad Tertiam secunda, ad Sextam tertia, ad Nonam quinta : quarta autem prætermittitur. Psalmi tres de Dominica vel de Feria dicuntur, prout de alterutra dicti sunt ad Laudes. In Officio Dominicali additur ad Primam post Psalmos Symbolum *Quicumque*, de quo infrà, n. 197.

98. Post Psalmos, dictâ ad longum Antiphonâ, sequitur Capitulum de Dominica vel de Feria, prout Psalmi usurpati sunt de alterutra; excepto toto Tempore Paschali, in quo legitur quotidie Capitulum de Dominica : deinde ℟ br. *Christe Fili*, cujus Versus variatur pro

diversitate Temporis ac Festorum. Post ℟ br. ℣ *Exurge*, quem sequitur *Dominus vobiscum*, vel *Domine exaudi*; postea Oratio *Domine Deus*, ac rursus *Dominus vobiscum*; ultimò *Benedicamus*.

99. In Feriis vero, Preces, quando dicendæ sunt, inseruntur post ℣ *Exurge*; cetera fiunt ut notatur in Ordinario Breviarii. Quando autem Preces dictæ sunt ad Laudes, in Precibus ad Primam adjiciuntur Versiculi *Eripe me*, et qui sequuntur, ante Confessionem. Post Versus qui sequuntur Confessionem, dicitur *Domine exaudi*, deinde *Dominus vobiscum*, Oratio, ac rursus *Dominus vobiscum*; ultimò *Benedicamus*.

100. Primæ adjungitur Officium Capituli, quod quatuor constat partibus : 1. Lectione Martyrologii, quæ Lectio extra Chorum fit ad libitum; deinde dicitur ℣ *Pretiosa*, et Oratio *Sancta Maria*; 2. in Choro tantùm, lectione Necrologii, vel si non legitur, recitatione ℣ *Domine*, cum Psalmo *De profundis*, et Oratione *Absolve*; 3. Precibus ad opera diurna, scilicet *Deus in adjutorium* ter, etc. 4. Lectione Canonis, qui quâlibet die diversus est : demum dicitur ℣ *Adjutorium* et Benedictio, ut in Ordinario Breviarii. Ad has autem Preces tenentur qui extra Chorum recitant.

101. Ad Tertiam, Sextam et Nonam (dictis secretò, *Pater* et *Ave*, si separentur ab Officio præcedenti) dicitur *Deus in adjutorium*, et Hymnus; deinde Psalmi Dominicales vel Feriales, prout dicti sunt ad Primam; postea Antiphona, Capitulum, et Responsorium breve, pro qualitate Officii. Post Responsorium breve et Versiculum, (nisi dicendæ sint Preces) dicitur *Dominus vobiscum*, vel *Domine exaudi*, et Oratio, quæ habetur in Proprio de Tempore; aut, si fiat de Sancto, in Proprio vel in Communi Sanctorum. Finitâ Oratione, repetitur *Dominus vobiscum*, deinde *Benedicamus*, et, si non sequatur aliud Officium, submissè, *Fidelium animæ*, demum *Pater* secretò.

102. Excipiuntur ab hoc Ordinario Prima et ceteræ minores Horæ Feriæ quintæ in Cœna Domini, tum novem sequentium dierum, necnon Commemorationis Fidelium Defunctorum, in quibus dicuntur ut notatur propriis locis.

## CAPUT IV.

### *De Vesperis.*

103. Ad Vesperas, (præmissis *Pater* et *Ave*, si separentur ab Officio præcedenti) dicitur *Deus in adjutorium*, deinde quinque Psalmi, vel sub una, vel sub quinque Antiphonis.

104. In primis Vesperis Festorum quorumcumque, dicuntur Psalmi de Feria. Excipiuntur tamen primæ Vesperæ Pentecostes, quibus assignantur Psalmi proprii; necnon primæ Vesperæ quæ in concursu prævalère aliquando possunt secundis Vesperis alterius Officii in quo ad Laudes et ad Horas dicti fuerunt Psalmi Dominicales; tunc enim in iis primis Vesperis pariter dicendi sunt Psalmi de Dominica, nisi aliter in Breviario notetur.

105. Ad secundas Vesperas, Psalmi Dominicales vel proprii usurpantur, quoties in Laudi-

bus Psalmi dicti fuerunt de Dominica : alioquin sumuntur de Feria. Excipiendæ sunt Vesperæ dierum intra Octavam Nativitatis Domini, ac tridui ante Pascha, quæ dicuntur ut habetur propriis locis.

106. Post singulos Psalmos singulæ dicuntur Antiphonæ. in Dominicis, in utrisque Vesperis Festorum Duplicium et suprà, in secundis Vesperis Semiduplicium, et in diebus intra Octavas Annualium-majorum.

107. In Sabbatis, Psalmi dicuntur sub quinque Antiphonis, quando unaquæque Antiphona è suo Psalmo depromitur, et quoties sequitur Responsorium post Capitulum; alioquin unica dicitur Antiphona. Eadem ratione, id est sub una duntaxat Antiphona ordinantur Vesperæ dierum intra Octavas secundi et tertii Ordinis; et hæc est prima de Vesperis Festi, nisi propria assignetur. Unica etiam dicitur Antiphona in Vesperis Feriarum in quibus singulæ Antiphonæ è Psalmo præcedenti non desumuntur. Nonnulli dies in Adventu et in Majori Hebdomada diversam sequuntur rationem, ut notatur suis locis.

108. Dicto ultimo Psalmo cum Antiphona, legitur Capitulum, (quod sequitur, in primis Vesperis omnium Duplicium et suprà, Responsorium) deinde Hymnus, Canticum *Magnificat,* cum sua Antiphona; postea Oratio cum *Dominus vobiscum,* vel *Domine exaudi,* antè et pòst, et in fine *Benedicamus.*

109. Hymnus non dicitur à Feria quarta Majoris Hebdomadæ ad Feriam sextam in Albis inclusivè, et in Officio Defunctorum.

110. Preces, quando dicendæ sunt, interponuntur post Antiphonam ad *Magnificat.*

111. Quando autem aliquæ faciendæ sunt Commemorationes, sive propriæ, sive communes quæ Suffragia nuncupantur, fiunt post *Benedicamus,* eo prorsus modo, qui suprà, n. 92 et seq. describitur : præterquam quod in Vesperis desumenda sit Antiphona assignata ad *Magnificat,* in eo Officio de quo fit Commemoratio, cum Versiculo desumendo unde deprompta est Antiphona, et Oratione congruente, vel de Proprio, vel de Communi.

## CAPUT V.

### *De Completorio.*

112. Ad Completorium, absolutè dicitur *Converte nos,* signando pollice pectus, tum *Deus in adjutorium,* faciendo signum crucis : deinde Psalmi, qui sunt de Dominica, si Dominicales vel proprii dicti fuerint in Vesperis; Feriales autem, quando ad Vesperas dicti sunt de Feria : sequitur Antiphona, vulgò communis, de Psalterio : propria verò in Festis Solemnibus et suprà, et intra eorum Octavam, etiam quando Psalmi de Feria dicuntur; postea Hymnus, Capitulum, ℟. *In manus,* Versiculus, Canticum *Nunc dimittis* cum sua Antiphona, quæ habetur in Ordinario Breviarii vel in Proprio, tum Oratio *Visita* cum *Dominus vobiscum,* vel *Domine exaudi,* antè et pòst; et in fine, *Benedicamus.*

113. Antiphona ad Completorium cuique Feriæ in Psalterio apposita quotidie dicitur,

etiam in quocumque Festo Duplici et infrà, nisi occurrat intra aliquam Octavam; tunc enim in eo Festo dicenda est Antiphona de Octava. Ab hoc ordine excipiuntur cùm Dominicæ in quibus non fit de Octava, tum Festa Duplicia Domini et B. Mariæ; in iis retinenda est Antiphona de Psalterio. Tempore Paschali, Antiphona propria habetur in Communi hujus temporis.

114. Antiphona ad Canticum *Nunc dimittis* inde depromitur unde desumpta est Antiphona super Psalmos. In Officio autem de Tempore, Antiphona variatur pro Temporum diversitate, ut in Ordinario habetur.

115. Preces, si dicendæ sint, ante Orationem *Visita* dicuntur; et quidem flexis genibus, quando dictæ fuerint ad Vesperas.

116. Finito Completorio, dicitur submissè *Gratia Domini*, etc. ac *Fidelium animæ*; tum una ex Antiphonis beatæ Mariæ; tandem secretò, *Pater... Ave... Credo.*

117. Excipitur ab hoc Ordinario Completorium Feriæ quartæ Majoris Hebdomadæ, et sequentium dierum, usque ad Sabbatum in Albis exclusivè, in quibus dicitur prout notatur propriis locis.

## PARS TERTIA.

### DE HORARUM PARTIBUS.

Singulæ Horæ (nisi aliter notetur) inchoantur per *Deus in adjutorium*, præmisso ad Officium Nocturnum, *Domine labia*, et ad Completorium, *Converte nos*, ut jam dictum est.

### CAPUT I.

#### *De Invitatorio.*

118. Invitatorium dicitur regulariter in omni Officio Nocturno, cum Psalmo *Venite*; sed variatur pro Officii qualitate, ut habetur in Psalterio, in Proprio de Tempore, ac in Proprio et in Communi Sanctorum. Variatur quoque pro modo et ordine quo dicitur, tam ante quàm post Psalmum, et post singulos versus Psalmi.

119. In Duplicibus et suprà, Invitatorium bis dicitur ante Psalmum *Venite*; et post quemque Psalmi versum, integrum repetitur: post *Gloria Patri* cum *Sicut erut*, repetitur à reclamatione, quæ designatur per asteriscum *, et postea denuo integrum dicitur.

120. In Officio Dominicali, nisi aliter notetur, in Semiduplicibus et infrà, Invitatorium semel dicitur integrum ante Psalmum *Venite*, et semel post primum versum, semelque post *Gloria Patri*: post alios versus, à reclamatione tantùm resumitur.

121. Tempore Paschali, in fine Invitatorii additur unicum *Alleluia*.

122. Non dicitur Invitatorium in Epiphania Domini, nec triduo ante Pascha, nec in Officio Defunctorum, excepto die Commemorationis omnium Fidelium Defunctorum.

### CAPUT II.

#### *De Hymnis.*

123. Hymnus dicitur in qualibet Hora; præterquam in Nativitate Domini ad Laudes, ad Officium Nocturnum Epiphaniæ, in omnibus Horis Officii à Vesperis Feriæ quartæ

Majoris Hebdomadæ usque ad Nonam Sabbati in Albis inclusivè, et in Officio Defunctorum.

124. Ad Officium Noctis, Hymnus dicitur post Psalmum *Venite*; ad Laudes post Capitulum; ad Horas minores, post *Deus in adjutorium*; ad Vesperas post Responsorium, si dicatur, alioquin post Capitulum; ad Completorium, sequitur Antiphonam Psalmorum.

125. Dicuntur autem Hymni ad Nocturnum, Laudes et Vesperas, in Officio de Tempore ut in Psalterio, quando proprii Hymni in Proprio de Tempore non adsunt: in Officio de Sanctis, dicuntur ut in Communi, nisi proprii habeantur in Proprio Sanctorum.

126. Doxologia, quæ reperitur in decursu Breviarii, in propriam mutatur ad Horas et ad Completorium, quoties Officium habet propriam; et intra Octavas Doxologia propria de Octava dicitur etiam in omni Officio concurrente vel occurrente, nisi propriam habeat Doxologiam. Intra Octavam Nativitatis Domini, Doxologia *Qui natus es* nunquam mutatur.

127. Hymnus, *Virgo Dei genitrix*, intra Octavas Festorum beatæ Mariæ, dicitur ad Completorium, in Festis occurrentibus quæ carent propriâ Doxologiâ: Hymnus verò de Tempore dicitur in Festis Doxologiam propriam habentibus; item in Dominicis, sed cum Doxologia *Qui natus es*.

## CAPUT III.

### *De Psalmis et Canticis.*

128. Psalmi, eo modo et ordine quo sunt in Psalterio distributi, dicuntur singulis diebus ad omnes Horas, tam diurnas quàm nocturnas, non solùm in Officio de Tempore, sed etiam in Officio de Sanctis, iis exceptis pro quibus suo loco assignantur proprii.

129. Canticum, quod post tres Psalmos priores dicitur in Laudibus, variatur secundùm diversitatem Officii. In Adventu, ab Epiphania ad Præsentationem Domini, in Quadragesima, et Tempore Paschali, omnibus Dominicis assignatum est Canticum proprium. In ceteris autem per annum Dominicis, dicitur Canticum *Benedicite*, ut in Psalterio.

130. In omni Officio Feriali, dicitur Canticum Feriale ut in Psalterio. Tempore Paschali, assignantur etiam in Psalterio Cantica cuique Feriæ propria.

131. Festa omnia habent suum Canticum, sive in Proprio, sive in Communi assignatum. Intra Octavas quascumque, dicitur Canticum de die, quando fit de Octava.

132. Suum etiam habent Canticum Officium tridui ante Pascha, et Officium Defunctorum, atque Officium parvum beatæ Mariæ Virginis.

133. Cantica Evangelica dicuntur in omni Officio, tam de Tempore quàm de Sanctis, ad Laudes, Vesperas et Completorium, ut in Ordinario Breviarii habentur.

134. In fine Psalmorum, et ad quamlibet Psalmorum divisionem, dicitur *Gloria Patri*, etc. cum *Sicut erat*, etc. quæ pariter dicenda sunt in fine Canticorum, si excipias Canticum *Benedicite*, in cujus fine, loco *Gloria Patri* et *Sicut erat*, dicitur *Benedicamus Patrem*, et *Benedictus es*, ut ibi-

dem ponitur. In Officio autem tridui ante Pascha, post Psalmos et Cantica, nihil dicitur. Sed in Officio Defunctorum loco *Gloria Patri,* in fine cujusque Psalmi et Cantici, dicitur *Requiem æternam.*

## CAPUT IV.

### *De Antiphonis.*

135. Ad omnes Horas, nocturnas et diurnas, semper cum Psalmis dicuntur Antiphonæ, una vel plures, pro diversitate Officii et Horarum.

136. In Officio Nocturno trium Lectionum, cujus Antiphonæ ex Officio novem Lectionum desumenda sunt, hoc sumuntur Ordine : Feriâ secundâ et quintâ, è I Nocturno; Feriâ tertiâ et sextâ, è II Nocturno; Feriâ quartâ et Sabbato, è III Nocturno. In Feriis autem Adventûs, etc. quando et quo ordine è Dominica depromendæ sunt, notatur suis locis.

137. Antiphonæ in quocumcumque Officio eodem semper modo dicuntur; videlicet in Choro inchoantur tantùm ante Psalmos et Cantica, et post Psalmos et Cantica dicuntur integræ.

138. Excipiuntur ab hac regula Antiphonæ majores in Adventu, quæ *O* vocantur. Hæ enim ter repetuntur integræ; primò scilicet, ante *Magnificat;* secundò, ante *Gloria Patri;* tertiò, post *Sicut erat.* Vel si pro sola Commemoratione dicantur, ter etiam hoc modo; primò, ante *Gloria Patri;* secundò, inter *Gloria Patri* et *Sicut erat;* tertiò, post *Sicut erat.*

139. In Officio quod absque cantu recitatur, Psalmi et Cantica inchoantur absque Antiphonarum impositione.

140. Sabbato ante Septuagesimam additur *Alleluia* in fine illius Antiphonæ quæ immediatè præcedit vel Capitulum, vel Commemorationem Septuagesimæ in Vesperis illius Sabbati, et deinceps usque ad Pascha dimittitur.

141. Tempore Paschali, in fine uniuscujusque Antiphonæ additur *Alleluia.*

## CAPUT V.

### *De Versiculis.*

142. Versiculus semper dicitur post Antiphonam quæ sequitur ultimum Psalmum cujusque Nocturni : ad Laudes et Vesperas, dicitur post Hymnum, vel post Antiphonam ejus de quo fit Commemoratio : ad Primam, et ad reliquas Horas, post Responsorium breve.

143. Versiculi, ad Nocturnum, Laudes, et Vesperas, inde desumuntur, paucis exceptis, unde desumptæ fuerunt Antiphonæ præcedentes.

144. Quando Versiculus cantatur cum Neumate in fine, ut observatur semper in medio Nocturnorum, ad illud non respondetur altâ voce; sed tantùm secretò, dum protrahitur Neuma.

145. A Vesperis Feriæ quartæ Majoris Hebdomadæ, ad Nonam Sabbati in Albis inclusivè, non dicuntur Versiculi, nisi in Nocturnis.

146. Nullis Versiculis, Tempore Paschali, additur *Alleluia.*

## CAPUT VI.

### *De Absolutionibus et Benedictionibus ante Lectiones.*

147. Absolutiones et Benedictiones dicuntur ut in Ordinario Breviarii disponuntur :

scilicet, post Versiculum, dicto *Pater noster,* fit Absolutio, et dantur Benedictiones, præterquam triduo ante Pascha, et in Officio Defunctorum.

148. Variantur hæ Benedictiones pro diversitate Officiorum, id est, sive novem, sive trium Lectionum, sive de Tempore, sive de B. Maria, sive de Sanctis; et pro varietate Temporum, ut ibidem notatur.

149. In Festo Præsentationis Domini et Purificationis B. Mariæ, dicuntur Benedictiones de Dominicis. In Annuntiatione et Visitatione, ac in ceteris Festis B. Virginis, dicuntur Benedictiones de B. Maria propriæ. In Officio trium Lectionum sive de Domino, sive de Beata, quando ultima Lectio est de Evangelio aut de aliquo Sancto, ultima Benedictio est *Fulgeat,* vel *Digni,* pro ratione Lectionis quæ sequitur.

150. Lector petens Benedictionem in Choro, dicit *Jube, Domne;* (apud Moniales Lectrix dicit *Domna*) qui verò solus recitat, dicit absolutè Benedictionem.

151. Quando D. Archiepiscopus, aut Episcopus, Lectionem lecturus est, postquam ipse præmisit ex more *Jube, Domne,* dignior post ipsum dicit illi: *Ora pro nobis, Pater,* ipse autem Archiepiscopus, aut Episcopus, dicit pro Benedictione, *Oro ut caritas,* etc. et dicit Lectionem. Idem observatur ubi unicus est Presbyter, et cùm privatim Officium recitat Sacerdos cum aliis Clericis, inter quos non est alius ab ipso Sacerdos.

152. Ad Absolutiones et Benedictiones semper respondetur, *Amen.*

## CAPUT VII.

### *De Lectionibus.*

153. Lectiones leguntur in quolibet Nocturno post Psalmos, præmisso semper *Pater noster,* etc.

154. In Dominicis, in Duplicibus-minoribus et suprà, (extra Tempus Paschale) leguntur novem Lectiones, tres scilicet in quolibet Nocturno: in Festis autem Semiduplicibus ac Simplicibus, in Feriis, ac intra Octavas, et toto Tempore Paschali, in quo Nocturnum unicum dicitur, tres tantùm Lectiones leguntur.

155. In Officio novem Lectionum, in primo Nocturno leguntur tres Lectiones ex sacra Scriptura, quæ per ordinem et suo quoque die in Officio de Tempore occurrunt legendæ, nisi aliæ suis locis assignentur. In secundo Nocturno leguntur, ut designantur in Proprio. In tertio Nocturno leguntur de Homilia in Evangelium, ut in Proprio assignantur, et primæ Lectioni de Homilia præponitur principium Evangelii quod eo die legitur in Missa. Excipiuntur ab hoc Lectionum ordinario Officium tridui ante Pascha, et Officium Defunctorum, in quibus Homiliæ non leguntur.

156. Si loco ultimæ Lectionis Officii poni debeat Lectio de aliquo Sancto, vel de Evangelio Dominicæ aut Feriæ majoris, cùm occurrunt, observetur quod dictum est suprà, n. 83.

157. In Officio trium Lectionum ordinabuntur Lectiones ut sequitur. Si Festum duas habet Lectiones proprias, prima Lectio erit de Scriptura occurrente, tribus in unam coactis;

secunda et tertia de Festo. Si unam tantùm habuerit Lectionem propriam, prima et secunda erunt de Scriptura, tribus in duas redactis; tertia de Festo. In Feriali verò Officio tres Lectiones erunt de Scriptura, nisi legenda sit Homilia pro tertia Lectione, aut alia pro Sancto qui solam habet Commemorationem; tunc enim tres Lectiones de Scriptura contrahentur in duas.

158. Quando duæ tantùm leguntur Lectiones de Scriptura, quæ prima assignatur eo die, legitur sola; secunda verò et tertia junguntur in unam. Duæ Lectiones de Historia ejusdem Sancti vel Sanctæ in unam pariter contrahendæ sunt, ubi pro tertia legendum venit Evangelium cum sua Homilia. Sermones verò sanctorum Patrum non contrahuntur, sed in occurrentia omittuntur. In Officio B. Mariæ in Sabbato, Lectio Festi Simplicis occurrentis etiam prætermittenda est.

159. Tempore Paschali, in Festis Sanctorum Solemnibus et suprà, prima Lectio erit de Scriptura propria; secunda, de Historia Sancti, vel de aliquo Sermone super Festo; tertia, de Evangelio illius Officii, cum ejus Homilia. In aliis Festis Lectio prima est de Scriptura occurrente, in Semiduplicibus et Duplicibus; secunda et tertia, de Sancto. In Simplicibus, duæ priores sumuntur de Scriptura occurrente, tertia verò de Sancto, ut fit in ceteris anni temporibus.

160. Si Tempore Paschali, in Festo non habente Evangelium cum Homilia ad Officium Nocturnum, facienda sit Commemoratio de Officio occurrente quod habeat Evangelium cum Homilia, prima Lectio erit de Scriptura, tribus in unam junctis; secunda de Festo, duabus pariter in unam coactis; tertia, de Evangelio et Homilia Officii occurrentis, de quo facienda est Commemoratio. Si verò Festum habeat Evangelium et Homiliam, hæc legentur pro secunda Lectione, et Lectio tertia erit de Evangelio occurrente : altera autem Lectio de Historia Sancti, vel transfertur in alium diem intra Octavam, vel omittitur eo anno.

161. Nulla prorsus esse debet dies in anno, in quo ad Officium Nocturnum non legatur de Scriptura sacra, sive propria, sive occurrente. Si sit Officium novem Lectionum, tres Lectiones primi Nocturni erunt de Scriptura; si sit Officium trium Lectionum, prima et secunda Lectio, aut saltèm prima, erunt de Scriptura, juxta regulam suprà positam.

162. In legenda Scriptura, Initium cujusque libri regulariter omitti non debet : ideo quoties Initium alicujus libri Scripturæ legi non potest suo die, propter occursum alterius Officii propriam habentis Scripturam, tunc die sequenti non impeditâ, loco Scripturæ hujusce diei, ponitur dictum Initium. Si tamen de eodem libro nihil legendum fuisset illo die, Initium omitteretur hoc anno.

163. Interdum anticipantur Lectiones Initii alicujus libri Scripturæ, nimirum quando anticipandum est Officium Dominicæ superabundantis, de quo dictum est, Parte primâ, n. 7 : tunc enim, si in Officio hujus Dominicæ ponitur Ini-

tium libri alicujus, Lectiones de eo assumuntur, et postridie continuatur Scriptura incœpta, nisi incipiendus sit alius Scripturæ liber : reliquæ autem Lectiones libri præcedentis deseruntur.

164. Omnia Festa Annualia et Solemnia habent proprias de Scriptura selectas Lectiones; in Duplicibus verò et infrà, paucis exceptis, legitur de Scriptura occurrente. Sed in Festis Solemnibus et suprà, quæ non habent Lectiones de Scriptura proprias, desumendæ sunt Lectiones I Nocturni è Communi Patronorum.

165. Lectiones primi Nocturni leguntur cum titulo libri de quo sumuntur, nisi aliter in propriis locis notetur. Lectiones etiam secundi Nocturni, quando sunt ex aliquo Sermone, Tractatu, Epistola, aut alio quovis libro sanctorum Patrum, leguntur cum titulo et nomine auctoris, aliàs minimè; et similiter in tertio Nocturno præponitur titulus, et nomen auctoris cujus est Homilia quæ legitur.

166. Ante quamlibet Lectionem, nisi aliter notetur, Lector stans petit Benedictionem per verba solemnia *Jube, Domne*, de quibus dictum est n. 150; et ita concludit quamlibet, dicens : *Tu autem, Domine, miserere nostri*, et respondetur, *Deo gratias*. Ab hac regula dissident, in Adventu, Lectiones de Isaia, in quarum fine, etiam in Officio de Sanctis, loco *Tu autem*, dicitur, *Hæc dicit Dominus Deus : Convertimini ad me, et salvi eritis*; et sic terminantur, nihil respondendo. Omnes verò Lectiones de Jeremia et de Baruch, à Dominica Passionis usque ad Sabbatum sanctum inclusivè, hác clausulà terminantur : *Jerusalem, Jerusalem, convertere ad Dominum Deum tuum*, et nihil respondetur. Sed aliæ Lectiones de Prophetis terminantur more solito. In II et III Nocturno tridui ante Pascha, et in cunctis Lectionibus Officii Defunctorum, non dicitur *Tu autem*, nec quidquam aliud.

## CAPUT VIII.

### *De Responsoriis post Lectiones.*

167. Post quamlibet Officii Nocturni Lectionem, ac etiam post Capitulum in primis Vesperis Duplicium et suprà, dicitur Responsorium.

168. Responsoria, in Officio Nocturno de Tempore, sumuntur ex eo loco ubi primò sunt posita, scilicet die quo inchoatur unus ex sacræ Scripturæ libris; et tamdiu repetuntur, quamdiu de illo libro legitur.

169. In Officio autem de Sanctis, sumuntur ex Proprio aut ex Communi Sanctorum.

170. In Officio Festi trium Lectionum, cujus Responsoria ex Officio novem Lectionum sumenda sunt, sumuntur hoc ordine : Feriâ secundâ et quintâ, è I Nocturno; Feriâ tertia et sextâ, è II Nocturno; Feriâ quartâ et Sabbato, è III Nocturno.

171. In Feriali Officio Responsoria sumuntur ex Dominica præcedenti, nisi aliter notetur, aut nisi propria Responsoria alicui Feriæ assignentur. Sumuntur autem alternatim ex primo et secundo Nocturno, hoc ordine : Feriâ secundâ, quartâ et sextâ, è I Nocturno; Feriâ tertiâ, quintâ, et Sabbato

(si

(si fiat de Feria) è II Nocturno. Sed quoties anticipatur Lectio aliqua vel de Scriptura, vel de Evangelio et Homilia, ut dictum est suprà, n. 82 et 163, anticipanda sunt etiam Responsoria quæ has Lectiones sequuntur. Cùm autem Responsoria propria cuidam Feriæ assignata, dici non possunt, propter Festum occurrens de quo eâ die fit Officium, hæc Responsoria omittuntur illo anno.

172. In Responsoriis tres partes distingui solent, quarum prima Initium, secunda Reclamatio, tertia Versus dicitur. Reclamatio distinguitur ab Initio per asteriscum *, et semper post Versum integra repetitur.

173. Præterea post Versum et Reclamationem additur *Gloria Patri*, ad ultimum cujusque Nocturni Responsorium, et ad Responsorium primarum Vesperarum in Duplicibus, (præterquam in Officio Defunctorum, in Compassione beatæ Mariæ Virginis, et in omni Officio de Tempore à Dominica Passionis ad Pascha) et post *Gloria Patri*, iterum repetitur Reclamatio; vel, si divisionem habeat, ejus ultima pars quæ hâc notulâ † signatur.

174. In Annualibus-majoribus, *Gloria Patri* cum Reclamatione ad omnia Responsoria dicitur; sed præterea, ad ultimum cujusque Nocturni, post Reclamationem quæ sequitur *Gloria Patri* fit resumptio integra Responsorii, id est, repetitio ab initio usque ad Versum exclusivè.

In Annualibus-minoribus, *Gloria Patri* non dicitur nisi in ultimo cujusque Nocturni Responsorio: sed resumptio ejusdem Responsorii fit ut in Annualibus-majoribus.

175. In Dominicis, et Festis Duplicibus in quibus *Te Deum* non dicitur, statim in ultimo Responsorio, post *Gloria Patri*, omissâ, quæ sequi deberet, Reclamatione, resumitur Responsorium usque ad Versum exclusivè.

176. At in Dominicis Passionis et Palmarum, ac in Officio Compassionis, et tridui ante Pascha, in nono Responsorio fit statim resumptio post Reclamationem quæ Versum sequitur: eo enim tempore non dicitur *Gloria Patri*. In Officio quoque Defunctorum, propter eamdem rationem, Responsorium ultimum *Libera* repetitur ab initio post ultimum Versum et ejus Reclamationem.

177. In Feriis in quibus *Te Deum* non dicitur, Reclamatio tantùm resumitur post Versum *Gloria Patri*; non verò ipsum Responsorium.

## CAPUT IX.

### *De Cantico* Te Deum.

178. In omni Festo Simplici et suprà, et intra quamcumque Octavam per annum, ac in Officio de beata Maria in Sabbato, et per omne Tempus Paschale, post ultimum Responsorium dicto *Gloria Patri* cum ejus Reclamatione, vel post resumptionem in Annualibus, dicitur immediatè *Te Deum*: exceptis Dominicis Adventûs, et à Dominica in Septuagesima usque ad Pascha; necnon Festis quinque Plagarum Christi, et Compassionis beatæ Mariæ, quorum Officia pro Quadragesimalibus habentur; ac, ipso

Tempore Paschali, Feriâ secundâ Rogationum.

179. In Choro, dum cantatur Versus *Te ergo, quæsumus, famulis tuis subveni*, etc. omnes se convertunt ad altare.

CAPUT X.

*De Versu Sacerdotali.*

180. Versus Sacerdotalis dicitur à Celebrante post ultimum Responsorium, vel post *Te Deum*, quando dicitur; et sic Officium Noctis terminatur per hunc Versum, si continuò sequantur Laudes. Si autem Laudes non sequantur, post hunc Versum, dicitur Oratio diei, etc. ut præfertur n. 84.

181. Excipitur ab Ordinario supradicto, Festum Nativitatis Domini, et si quod sit aliud Festum in aliqua ecclesia, in quo statim post ultimum Nocturnum Missa major consueverit celebrari : eo enim casu Versus Sacerdotalis omittitur.

182. Non dicitur etiam in Officio tridui ante Pascha, nec in Officio Defunctorum.

CAPUT XI.

*De Collecta, seu Oratione.*

183. Oratio in Nocturnis, si Laudes iis non jungantur, dicitur post Versum Sacerdotalem; in Laudibus et Vesperis, post Antiphonas ad *Benedictus*, et ad *Magnificat :* ad Horas minores, post Versiculum qui Responsorium breve sequitur : ad Completorium, post Antiphonam ad *Nunc dimittis*, nisi dicantur Preces; nam in singulis Horis, quando Preces dicendæ sunt, Oratio dicitur in fine illarum, post ultimum Versiculum.

184. Ad Primam et Completorium, non mutatur Oratio quæ habetur in Ordinario, præterquam in triduo ante Pascha, et in die Commemorationis omnium Fidelium Defunctorum. In aliis Horis dicitur Oratio quæ assignatur in Proprio.

185. Oratio præcedentis Dominicæ semper dicitur in Feriali Officio per hebdomadam, præterquam in Quadragesima, et quando propria assignatur.

186. In Quadragesima, in Feriis Quatuor Temporum, et Rogationum, Oratio quæ dicta est in Laudibus, dicitur tantùm ad Tertiam, Sextam et Nonam. In Vesperis autem sequentibus, si fiat de Feria, dicitur, vel alia propria, ut in Quadragesima, vel Dominicæ præcedentis, ut in ceteris Feriis.

187. Ante Orationem dicitur, *Dominus vobiscum,* non tamen ab eo qui solus recitat, nec ab eo qui non est saltèm in ordine Diaconatûs, nec à Diacono, præsente Sacerdote, nisi de illius licentia, nec à Monialibus, etiam consecratis; sed ab iis omnibus ejus loco dicitur, *Domine exaudi*, deinde *Oremus*. In fine Orationis, postquam responsum fuerit, *Amen*, repetitur *Dominus vobiscum*, vel *Domine exaudi*, postea *Benedicamus*, et respondetur *Deo gratias :* quod semper servatur in fine primæ Orationis, sive unica, sive plures dicantur. Quod si plures Orationes dicendæ sint, (ratione Commemorationum) ante quamlibet Orationem dicitur Antiphona et Versiculus, deinde *Oremus*, et post ultimam Orationem iterum repetitur *Domine exaudi*, vel *Dominus vobiscum*, additurque *Benedicamus*, et submissè Versus *Fidelium animæ*, præ-

misso ad Completorium *Gratia Domini*, etc. In ceteris Horis, si sequatur aliud Officium, non dicitur *Fidelium animæ*; nec unquam in Choro ad Primam, eo quod recitatus sit in Officio Capituli Psalmus *De profundis*, etc. pro Defunctis: similiter nec post aliam Horam quamcumque cui subjiciuntur, vel Officium parvum beatæ Mariæ, vel Officium Defunctorum, vel Psalmi Pœnitentiales, aut Statio, aut Processio, aut Missa, aut Concio, aut Psalmus, sive Canticum pro Rege, aut pro aliqua necessitate, aut aliud ejusmodi.

188. Quando Oratio dirigitur ad Patrem, sic concluditur: *Per Dominum nostrum Jesum Christum Filium tuum, qui tecum vivit et regnat in unitate Spiritûs sancti Deus, per omnia secula seculorum.* ℟. *Amen.* Si ad Filium, per *Qui vivis et regnas cum Deo Patre in unitate Spiritûs sancti Deus, per omnia secula*, etc. Si in principio vel serie Orationis fiat mentio Filii, dicitur: *Per eumdem Dominum nostrum*, etc. Si in fine Orationis, dicitur: *Qui tecum vivit et regnat in unitate*, etc. Si fiat mentio Spiritûs sancti, dicitur: *in unitate ejusdem Spiritûs sancti Deus*, etc. Pro concludendis Orationibus in triduo ante Pascha, et in Officio Defunctorum, servanda sunt quæ propriis locis notantur in Breviario.

189. Quando plures Orationes dicendæ sunt, prima tantùm et ultima dicuntur cum magna clausula, *Per Dominum nostrum*, etc. vel aliter, ut suprà. Intermediæ autem sic concluduntur: *Per Christum Dominum nostrum.* ℟. *Amen.* vel: *Per eumdem Christum*, etc. vel: *Qui vivis et regnas Deus.* ℟. *Amen.* vel: *Qui tecum vivit et regnat Deus.* ℟. *Amen.*

190. Notandum autem quod unicuique Orationi præmittitur *Oremus*, et levis pausa, præterquam in Officio Defunctorum, et in Litaniis, cùm plures Orationes dicuntur conjunctim sub uno *Oremus*.

191. In Orationibus et Versiculis in quibus notatur *N.* pronuntiatur nomen baptismale ejus de quo fit mentio.

## CAPUT XII.

### *De Oratione Dominica, et Salutatione Angelica.*

192. Oratio Dominica *Pater*, et Salutatio Angelica *Ave*, dicuntur secretò ante Horas quaslibet, excepto Completorio, post cujus finem dicuntur. Si Hora jungatur præcedenti Officio, non dicuntur ante ejus initium.

193. Quando Oratio Dominica dicitur cum Precibus, dicitur secretò usque ad *Et ne nos*, quod altâ voce profertur. Id quoque observatur in medio cujusque Nocturni, præterquam triduo ante Pascha, quo tempore *Pater* dicitur totum secretò.

194. In fine uniuscujusque Horæ, nisi aliud Officium sequatur, dicto submissiori voce, *Fidelium animæ*, dicitur secretò *Pater noster*.

195. Salutatio Angelica sola dicitur ante Officium parvum beatæ Mariæ Virginis, quando non jungitur Officio Canonico.

## CAPUT XIII.

### *De Symbolo Apostolorum, et Symbolo* Quicumque.

196. Symbolum Apostolorum, *Credo in Deum*, dicitur

integrum secretò post *Ave*, ante Officium Nocturnum, et post finem Completorii. Dicitur etiam secretò post *Pater*, ad Preces Primæ et Completorii: sed in fine altà voce profertur, *Carnis resurrectionem*, etc.

197. Symbolum *Quicumque* dicitur ad Primam post Psalmos omnibus Dominicis in quibus Officium fit de Dominica, etiam Tempore Paschali, et in Festo sanctissimæ Trinitatis. Omittitur autem in Dominicis intra Octavas, quando fit Officium de Octava; et in Dominica inter Circumcisionem et Epiphaniam, quæ censetur pertinere ad Octavam Nativitatis Domini. In fine illius Symboli dicitur *Gloria Patri*, ut in fine Psalmorum.

### CAPUT XIV.

### *De Capitulis et Canone.*

198. Capitula dicuntur ad Vesperas, Laudes, et alias Horas post Psalmos et Antiphonas; ad Completorium verò, post Hymnum.

199. Nullum legitur Capitulum ad Laudes Nativitatis Domini; neque in toto Officio à Vesperis Feriæ quartæ Majoris Hebdomadæ inclusivè ad Nonam Sabbati in Albis inclusivè, neque in Officio Defunctorum.

200. Capitula Primæ et Completorii quæ habentur in Ordinario Breviarii nunquam mutantur, et dicuntur de Dominica vel de Feria, prout Psalmi dicti fuerint de alterutra, excepto Tempore Paschali, in quo legitur quotidie Capitulum de Dominica.

201. In Horis omnibus ad Capitulum, quodcumque sit, respondetur *Deo gratias*.

202. Ad Primam, Canon, de quo dictum suprà n. 100, legitur singulis diebus, ut habetur ad calcem Breviarii, nisi alius assignetur pro quibusdam Festis: tunc enim Canon qui eà die occurrit in serie Canonum, omittitur. Non dicitur Canon in triduo ante Pascha, nec in Commemoratione omnium Fidelium Defunctorum. Aliquando dimittuntur etiam Canones nonnulli intra Octavam Epiphaniæ, ut notatur in Breviario. (*Part. Hiem.* p. 295, *et* cxxx.)

203. Ante Lectionem Canonis, Lector petit Benedictionem, ut habetur in Ordinario, per verba, *Jube, Domne*, etc. Qui solus recitat, dicit absolutè Benedictionem.

### CAPUT XV.

### *De Responsoriis brevibus.*

204. Responsoria brevia dicuntur post Capitulum ad Horas minores tantùm, id est, ad Primam, Tertiam, Sextam et Nonam, necnon ad Completorium, præterquam à Feria quinta in Cœna Domini usque ad Dominicam in Albis exclusivè, et in die Commemorationis Fidelium Defunctorum, quibus diebus non dicuntur.

205. Responsoria brevia Primæ et Completorii, in quolibet Officio, semper dicuntur ut in Ordinario Breviarii habentur. In ceteris Horis, Responsorium breve sumitur unde sumpta est Antiphona, de Psalterio scilicet, vel de Proprio, vel de Communi, nisi aliter notetur.

206. A Dominica Passionis inclusivè usque ad Pascha, in Responsoriis brevibus Officii cujuscumque de Tempore, *Gloria Patri* non dicitur; sed post Versum et ejus Reclamationem repetitur ab initio Responso-

rium breve usque ad Versum.

207. In Responsorio brevi ad Primam, *Christe, ℣ Qui sedes,* qui dicitur per annum, mutatur aliquando in Officio, sive de Tempore, sive de Sanctis, ut in propriis locis notatur. Versus autem proprius, qui intra aliquam Octavam dicitur, etiam dicendus est in Festis occurrentibus, quando in eis usurpatur Doxologia hujus Octavæ.

208. In omnibus Festis Solemnibus et Annualibus, (præterquam à Septuagesima ad Pascha) in diebus à Nativitate Domini ad Octavam Epiphaniæ, et toto Tempore Paschali, ac intra Octavas primi et secundi Ordinis, etiam in Festis occurentibus, necnon in Festis Transfigurationis et Visitationis, in fine Responsoriorum brevium Tertiæ, Sextæ et Nonæ, ante Versum dicuntur duo *Alleluia;* quæ etiam post dictum Versum pro Reclamatione repetuntur. Sed ad Responsoria brevia Primæ et Completorii non additur *Alleluia,* nisi Tempore Paschali.

## CAPUT XVI.
### *De Precibus.*

209. Preces constant aliquot Versiculis, sive pluribus, sive paucioribus, pro dierum diversitate, qui dicuntur ante Orationem, præmisso *Kyrie, eleison,* et *Pater noster,* cui additur *Credo* ad Primam et ad Completorium, ut habetur in Ordinario Breviarii.

210. Preces hæ dicuntur in Officio Feriali tantùm, præterquam in Feriis à Circumcisione ad Præsentationem Domini, et toto Tempore Paschali, in quibus omittuntur.

211. Dicuntur autem flexis genibus ad omnes Horas, etiam in Vesperis, à Feria quarta Cinerum usque ad Nonam Feriæ quartæ Majoris Hebdomadæ inclusivè, in Officio Feriali tantùm. Item in Feriis Quatuor Temporum, (præterquam intra Octavam Pentecostes) et in Vigiliis Simplicibus, quotiescumque Officium fit de iis.

212. In ceteris Feriis, etiam Adventûs, Preces dicuntur ad Primam duntaxat, et ad Completorium. Sed à die 15 Decembris, propter majores Antiphonas *O,* ritus Semiduplex adhibetur in Vesperis, ideoque Preces omittuntur ad Vesperas in Feriis Quatuor Temporum, (in quibus aliàs dicendæ forent) et quotidie ad Completorium.

213. Quotiescumque autem ad Laudes et ad Vesperas Preces dictæ sunt, tunc Preces ad Primam et ad Completorium dicuntur flexis genibus; aliàs flexis genibus non dicuntur.

214. Quando dicuntur Preces flexis genibus, ceteris genua flectentibus, et conversis ad altare, Celebrans solus conversus ad Chorum, genua flectit et incipit *Kyrie,* ac in eodem ritu cetera prosequitur usque ad *Dominus vobiscum.*

215. In Precibus Laudum et Vesperarum, ad Versiculos *Oremus pro Papa nostro,.... pro Antistite nostro,... pro Rege nostro N.* additur nomen Papæ, Archiepiscopi, et Regis.

216. Quotiescumque dicitur *Confiteor,* ad Primam aut ad Completorium, observanda sunt quæ notantur in Ordinario Breviarii, circa varietatem vocum: *vobis, fratres*; et *vos, fratres.*

217. Ad ℣ *Dominus vobis-*

*cum*, surgit Celebrans, et elevans vocem recitat Orationem, ceteris usque ad finem Orationis Officii remanentibus genuflexis, et ad altare conversis.

### CAPUT XVII.

### *De Suffragiis et Commemorationibus communibus.*

218. Suffragia, seu Commemorationes communes, quæ extant in Ordinario Breviarii, dicuntur in Fériis à Præsentatione Domini ad Dominicam Passionis, et à Trinitate ad Adventum, in fine Laudum et Vesperarum, post Commemorationes occurrentes. Primùm fit Commemoratio de Cruce. Commemoratio de Patrono et Titulari ac de omnibus Sanctis, fit post Commemorationem vel Officium de Beata, per unicam Antiphonam, ℣, et Orationem *Propitiare,* in qua insertur nomen Patroni, ac etiam Titularis si à Patrono differat.

Si autem Ecclesia dedicata sit sub titulo SS. Trinitatis, aut S. Spiritûs, ejusmodi Commemoratio fit ante Suffragium de Cruce. Quod si titulus sit unum ex Mysteriis Christi, hujus Commemoratio fit loco Commemorationis de Cruce, quæ tunc omittitur. Si verò sub invocatione B. Mariæ, non fit alia Commemoratio de ea, quàm illa quæ habetur in Ordinariò; et tunc in Oratione *Propitiare*, nullum insertur nomen, sed tantùm dicitur : *per Sanctorum quorum*, etc.

Hæ Commemorationes communes fiunt etiam in Festis Simplicibus, demptâ Commemoratione de Cruce, ut in Ordinario notatur.

219. Sed inter Suffragia non est annumeranda Commemoratio de beata Virgine, quæ habetur in Feriis Adventûs; et fit quotidie ad Laudes, exceptis Festis Solemnibus et suprà, usque ad Vigiliam Nativitatis Domini. Ad Vesperas autem fit tantùm in Feriis, donec incipiantur Antiphonæ majores *O*.

220. Item Commemoratio de Virgine Deipara, quæ posita est in Proprio Sanctorum die 14 Januarii, quotidie fit ad Laudes, ab eo die usque ad Præsentationem Domini exclusivè, etiam in Duplicibus-majoribus, non autem in Solemnibus et suprà.

221. A Dominica in Albis ad Ascensionem, in Feriis, ac etiam in Festis Simplicibus, fit Commemoratio de Cruce et Resurrectione Domini, prout habetur in Communi Temporis Paschalis, post Dominicam in Albis.

222. Commemoratio de Beata posita in Ordinario, non fit Sabbatis in quibus fit Officium de ea, nec ubi ejus Officium parvum dicitur.

223. Si dicatur Officium parvum beatæ Mariæ, post Laudes et Vesperas diei fit tantùm Commemoratio de Cruce: aliæ Commemorationes communes fiunt post Laudes et Vesperas Officii parvi, nisi Commemoratio fieri debeat de sancta Trinitate aut Mysteriis Christi; tunc enim fit in Officio diei secundùm ordinem suprà enuntiatum.

### CAPUT XVIII.

### *De Antiphonis beatæ Mariæ in fine Officii, et de ejusdem Officio parvo.*

224. Antiphonæ de beata

Maria positæ in fine Psalterii post Completorium, variantur pro Temporis diversitate, ut ibidem annotatur.

Dicuntur autem quotidie ex præcepto, tam in Choro quàm extra Chorum, post Completorium; et quidem flexis genibus, præterquam in Dominicis, Sabbatis, et Festis Domini ad utrumque Completorium, ac toto Tempore Paschali, in quibus non genuflectitur. Sed ad uniuscujusque devotionem dicuntur post ceteras Horas.

Nulla autem dicitur in triduo ante Pascha.

225. De Officio parvo beatæ Mariæ, et quomodo dici debeat, habentur Rubricæ propriæ suo loco, in fine Breviarii.

### CAPUT XIX.

*De Psalmis Pœnitentialibus, et aliis usque ad finem Breviarii.*

226. Psalmi Pœnitentiales dicuntur in Choro Feriâ quartâ Cinerum post Sextam, ac Feriâ quintâ in Cœna Domini post Nonam, ut habetur in Missali; et ad Processionem Litaniarum minorum die vigesimâ-quintâ Aprilis, ut in Processionali.

227. De Commendatione animæ, de Officio Defunctorum, et Benedictione in articulo mortis; item de Benedictione mensæ, ac Itinerario, et ceteris quæ circa finem Breviarii apposita sunt, habentur suis locis propriæ Rubricæ.

# DE FESTIS SS. PATRONORUM

## APPENDIX.

Cùm, auctoritate Apostolicâ, Festum Patroni cujusque Ecclesiæ debeat, per totam Galliam, transferri in proximiorem Dominicam; de hujusmodi translatione præscribuntur sequentes regulæ.

1. Festum Patroni, ac etiam Titularis si à Patrono differat, celebrandum est, sub ritu Annuali-minori, Dominicâ proximè sequente diem illum qui in Calendario ipsi assignatur; non modò in eo quod attinet ad solemnitatem et Officium publicum, sed etiam quod ad Breviarium privatim recitandum: ita ut hæc Dominica habeatur tanquam proprius dies Festi, et Octava currat per hebdomadam usque ad Dominicam sequentem. Si verò ea Dominica, in qua transferendum foret hujusmodi Festum, privilegiata sit, aut impedita Festo Solemni et suprà, Festum Patroni reponi debet in proximiorem Dominicam non impeditam; vel etiam anticipari, si commodè transferri nequeat. Quod si sæpe sæpius incideret in aliquod tempus quo difficillimè Dominica vacans occurrit, v. g. à Passione ad Dominicam in Albis, vel à Pentecoste ad Octavam Corporis Christi; tunc ei præstituenda est à D. Archiepiscopo una Dominica in qua deinceps perpetuo celebretur.

A supradictis regulis excipiuntur Festa quæ Solemni ritu et suprà per Diœcesim celebrantur, et ea quæ proprias habent

Lectiones pro diebus intra Octavam sive in Breviario sive in Octavario; tunc enim Solemnitas tantùm, si locus sit, transfertur in Dominicam proximè sequentem, Officium autem et Octava fit ab eo die qui in Calendario ipsi assignatur.

2. Ubi S. Joannes-Baptista, vel SS. Petrus et Paulus, sunt Patroni primarii, horum Vigilia eo fiet ritu, qui notatur in Octavario. Si occurrat in Dominica, anticipatur; si verò intra Octavam Corporis Christi, de Vigilia fit sola Commemoratio. Eamdem sequitur regulam Vigilia SS. Dionysii et sociorum.

3. In Adventu, fit sola Commemoratio dierum intra Octavam Patronorum, ut statuitur in Rubricis generalibus, n. 36. Nullæ fiunt Octavæ Patronorum, nec ulla de his Commemoratio, à Feria quarta Cinerum ad Dominicam in Albis, et à Vesperis diei 15 Decembris ad diem Nativitatis Domini; item à Vigilia Pentecostes ad Dominicam SS. Trinitatis.

Octava autem SS. Trinitatis, ubi est Titularis, terminatur, nullo speciali adhibito ritu, ad Nonam Feriæ quartæ sequentis. Annuntiatio, et Præsentatio Domini, ac Festum SS. Cordis Jesu, non habent Octavam, etiam ubi hæc Festa essent Titularia.

Octava Festi Patronalis alicui Ecclesiæ peculiaris in eo differt ab Octavis ceterorum Annualium-minorum toti diœcesi communibus, quod dies intra Octavam Patroni admittant Duplicia etiam translata, quæ habent Officium à I Vesperis; necnon Festum quodcumque Semiduplex occurrens, de quo fit à Capitulo in I Vesperis ad Capitulum II Vesperarum exclusivè. Insuper cedit, nullà dignitatis habità ratione, cuilibet Octavæ secundi ordinis in Calendario præscriptæ. Diebus autem non impeditis fit Officium de Octava, ritu Semiduplici.

De Octava quoque illud notandum est, quod Festum Patroni, si propter quamlibet occurrentiam ultra Dominicam ei assignatam transferatur, eo anno Octavà careat, ex Rubricis n. 37.

4. Festa secundaria Patroni vel Titularis, ut sunt v. g. Festa Cathedræ S. Petri, S. Joannis ante Portam Latinam, et similia, in ecclesiis sub titulo horum Sanctorum dicatis, fiunt ritu Duplici-majori.

5. Festum Patroni secundarii, (et talis habendus est v. g. Sanctus ille olim Titularis Parochiæ extinctæ, quæ deinceps unita est Parochiæ nunc stanti) ultra Solemne-minus non assurgit, nec habet Octavam.

6. Ubi intra alicujus Parochiæ limites extant ecclesiæ seu capellæ monasteriorum, nosocomiorum, collegiorum et similium; in his celebrandum est Festum Patroni titularis ecclesiæ parochialis, et Officium ejus à Clero prædictarum capellarum recitari debet, eo ipso die quo in parochiali ecclesia; sed ritu duntaxat Solemni-majori, et sine Octava. Nihil tamen in ritu erit immutandum, si Festum sit Annuale aut Solemne-majus in diœcesi. Verùm si contingat Festum istius Patroni occurrere vel transferri in aliquam Dominicam quæ Solemnia-majora excludat, tunc in prædictis ecclesiis seu capellis eo-

dem fiet ritu, quo in parochiali ecclesia, sed absque Octava.

Hæc autem dicta sunto de illis tantùm Festis, quorum Officium à Clero ecclesiarum recitatur, non verò de Patrono alicujus Confraternitatis, de quo fit tantùm in Choro, juxta regulas in Missali positas, Rubricarum generalium part. 1, cap. 1, art. 5, § 2, n. 14 et seq.

Præterea de Officiis Patronorum eæ observentur regulæ, quæ iisdem in Rubricis, cap. III, n. 7 et 8, positæ sunt, de Missis illorum propriis; videlicet, in ecclesiis ubi *Officia* Patroni titularis, vel primarii, vel etiam secundarii, habentur *propria*, à D. Archiepiscopo approbata, atque iisdem ecclesiis tradita; illa in Choro decantentur, et à Clero cujusque ecclesiæ recitentur, sicut antea factum est. Sed de ejusmodi Officiis, quod dudum præceptum fuit, D. Archiepiscopus vult semper custodiri; id est, si Breviarium habeat aliquid iisdem Festis proprium, v. g. Antiphonas, Lectiones, Hymnos, Orationem, illud omnino servetur, nec immutari liceat in propriis Officiis. Quá quidem præsenti præceptione revocatæ censeantur, si quæ hactenus concessæ sunt, Officiorum propriorum approbationes, quæ cum hac regula non concordent. Imò nullæ jam declarantur ac irritæ, si quæ in posterum subripiantur ab hac regula recedentes; eæque pro subreptitiis omnes habebuntur, in quibus regula hæc violabitur absque speciali et expressa ejus mentione et exceptione.

7. Dicitur in *Octavario* quomodo ordinandum sit Officium Patroni, sive die Festi, sive diebus intra Octavam.

# TABULA

## EXHIBENS OFFICIORUM GRADUS ET DIVERSITATEM.

### ANNUALIA MAJORA.

Nativitas Domini.
Pascha.
Pentecostes.
Ipse dies Consecrationis alicujus Ecclesiæ.

### ANNUALIA MINORA.

Epiphania Domini.
Ascensio Domini.
Festum Corporis Christi.
Assumptio B. Mariæ Virginis, Basilicæ Metropolitanæ ac totius Diœcesis Patronæ.
Festum Omnium Sanctorum.
Festum Patroni primarii, ac etiam Titularis (si à primario differat) cujusque Ecclesiæ.

### SOLEMNIA MAJORA.

Præsentatio Domini, et Purificatio B. Mariæ Virginis.
Annuntiatio et Incarnatio Domini.
Festum SS. Cordis D. N. J. C.
Nativitas B. Mariæ Virginis.
Festum SS. Apostolorum Petri et Pauli.
—— SS. Dionysii et sociorum ejus, Martyrum.
Anniversarius dies Dedicationis Ecclesiarum.

### SOLEMNIA MINORA.

Dominica SS. Trinitatis.
Circumcisio Domini.
Festa sanctæ Genovefæ Virg.
—— S. Joseph, Sponsi beatæ Mariæ.
Nativitatis S. Joannis Baptistæ.
S. Ludovici, Regis Franciæ.
S. Michaelis et omnium Angelorum.
Conceptionis B. Mariæ.
S. Stephani, Protomartyris.

### DUPLICIA MAJORA.

Dominica Palmarum.
Feriæ II et III intra Octavam Paschæ et Pentecostes.
Dominica in Albis depositis.
Dies Octava Annualium.
Dominica intra Octava Assumptionis B. Mariæ, in qua fit Commemoratio Voti Ludovici XIII.
Octava Nativitatis B. Mariæ et Festum SS. Nominis ejus.
Festum Plagarum Christi.
Compassio B. Mariæ Virginis.
Cetera, in Calendario majoribus caracteribus impressa, notantur hàc voce : *Duplex-majus.*

### DUPLICIA MINORA.

Fer. IV Paschæ et Pentecostes.
Susceptio sanctæ Crucis.
Dies Octava Solemnium-majorum.
Reliqua in Calendario designantur hàc voce : *Duplex-minus.*

Semiduplicia et Simplicia in Calendario habentur, cum indicatione ritûs cuique proprii.

### DOMINICÆ PRIMÆ CLASSIS, *quæ nulli cedunt Officio.*

Prima Adventûs.
Prima Quadragesimæ.
Passionis.
Palmarum.
Paschæ.
In Albis depositis.
Pentecostes.
SS. Trinitatis.

### DOMINICÆ II CLASSIS, *quæ cedunt Officio Annuali tantum.*

Secunda, Tertia, Quarta } Adventûs et Quadragesimæ.

**DOMINICÆ III CLASSIS,**

*quæ cedunt Solemnibus-majoribus et suprà.*

Septuagesima.
Sexagesima.
Quinquagesima.

**DOMINICÆ COMMUNES.**

Sunt reliquæ Dominicæ per annum, quæ cedunt omni Officio Duplici-majori et suprà, necnon Duplici-minori de Domino, et diebus Octavis quibuscumque.

**FERIÆ MAJORES**

**PRIMÆ CLASSIS,**

*quæ nulli cedunt Officio.*

Vigilia Natalis Domini.
Feria IV Cinerum.
Feriæ omnes Majoris Hebdomadæ.
Vigilia Pentecostes.

**FERIÆ MAJORES**

**SECUNDÆ CLASSIS,**

*quæ excludunt Officia quæ in Dominicis communibus fieri non possunt.*

Vigilia Epiphaniæ.
——— Assumptionis B. Mariæ.
Feriæ omnes à Feria V post Cineres ad Sabbatum ante Palmas.
Feriæ Adventùs à die 16 Decembris ad Vigiliam Natalis Domini.

¶ *Vigiliæ ceterorum Annualium-minorum cedunt etiam cuilibet Festo Duplici-minori.*

**FERIÆ MAJORES**

**TERTIÆ CLASSIS,**

*quæ cedunt Semiduplici et suprà.*

Feriæ Adventûs usque ad diem 15 Decembris.
Dies 4 Januarii.
Feriæ II et III Rogationum.
Feria VI post Octavam Ascensionis.
Feriæ Quatuor Temporum Septembris.
Feria illa, in qua interdum anticipandum est Officium alicujus Dominicæ.
Vigilia Festi Solemnis cujuslibet.

**FERIÆ MINORES**

**SEU COMMUNES.**

Sunt ceteræ Feriæ non suprà memoratæ, *et cedunt etiam Simplici.*

## DE OCTAVIS.

INTRA OCTAVAS PASCHÆ ET PENTECOSTES, nullum omnino Festum admittitur.

INTRA OCTAVAM NATIVITATIS DOMINI, nullum fit Festum, nisi sit Duplex-majus aut suprà.

INTRA OCTAVAM IPSIUS DIEI DEDICATIONIS ECCLESIÆ, fit de Duplici occurrente et suprà.

---

DIES INTRA OCTAVAM ANNUALIUM MINORUM, quæ fiunt in tota Diœcesi, videlicet :
Epiphaniæ Domini,
Ascensionis Domini,
Corporis Christi,
Assumptionis B. Mariæ,
Omnium Sanctorum,
admittunt Duplicia-minora et suprà.

Dies autem intra Octavam alicujus Ecclesiæ peculiarem, v. g.. Festi Patronalis cujuscumque ; item dies intra Octavam cujuslibet Festi Solemnis-majoris, cedunt Duplicibus etiam translatis, necnon Semiduplicibus.

# SERIES TITULORUM
## SUB QUIBUS ORDINANTUR CANONES CONCILIORUM
### AD CALCEM BREVIARII DISTRIBUTI.

1. De Adventûs tempore. De reverentia sacris Scripturis debita, et de sacrorum Canonum auctoritate atque observantia; *à Dominica I Adventûs, ad finem ejusdem Hebdomadæ.*

2. De tirocinio clericali, Tonsura et minoribus Ordinibus : *à Dominica II Adventûs, ad tertiam.*

3. De Jejuniis Quatuor Temporum, et de Ordinationibus : *à Dominica III Adventûs, ad quartam;* item *et in Quatuor Temporibus Septembris.*

4. De functionibus et officiis sex Ordinum inferiorum : *à Dominica IV Adventûs, usque ad Vigiliam Natalis Domini.*

5. De solemni Presbyterorum officio, et partibus muneris eorum ordinarii, ac operis : *à die 26 Decembris, ad Epiphaniam Domini.*

6. De hierarchicis Presbyterorum functionibus Episcoporum auctoritati specialiter subordinatis : *à die 7 Januarii ad Octavam Epiphaniæ.*

7. De virtutibus Clero necessariis, ac primùm de obedientia erga Superiores præscripta; et unitate in ministerio servanda et insinuanda : *à Dominica I post Epiphaniam, ad Dominicam tertiam.*

8. De spiritu paupertatis et modestia ecclesiastica in possessione, usu, vel acquisitione rerum temporalium : *à Dominica III post Epiphaniam, ad Dominicam sextam.*

9. De castitate, verecundia, et temperantia clericali : *à Dominica VI post Epiphaniam, ad Dominicam Quinquagesimæ.*

10. De præparatione ad Quadragesimalem pœnitentiam : *Dominica Quinquagesimæ, et Feria II et III sequentibus.*

11. De Jejunio et observantia Quadragesimali : *à Feria IV Cinerum, ad Feriam sextam Hebdom. I Quadragesimæ.*

12. De Sacramento Pœnitentiæ in genere : *Feria VI, et Sabbato Quatuor Temporum Quadragesimæ.*

13. De Contritione, et Confessione; item de Confessariorum officio : *à Dominica II Quadragesimæ, ad Dominicam quartam.*

14. De Satisfactione et Indulgentiis : *à Dominica IV Quadragesimæ, ad Dominicam Palmarum.*

15. De annua peccatorum Confessione et Paschali Communione unicuique adulto præscriptis. De prima Communione, et requisitis ad sacræ Eucharistiæ perceptionem dispositionibus : *à Dominica Palmarum, ad Sabbatum in Albis inclusivè.*

16. De Sacrificio Missæ à Sacerdotibus ritè celebrando, et de pietate quâ Fideles huic astare debent : *à Dominica in Albis, ad Dominicam quartam post Pascha.*

17. De verbi divini prædicatione : *à Dominica IV post Pascha, ad Dominicam quintam.*

18. De Rogationibus, aliisque Supplicationibus *Processionis* nomine designatis : *à Dominica V post Pascha, ad Ascensionem Domini.*

19. De Baptismo, ejusque cæremoniis : *à Feria VI intra Octavam Ascensionis, ad Pentecosten.*

20. De Sacramento Confirma-

tionis: *die sancto Pentecostes, et per totam Hebdomadam.*

21. De Festo SS. Trinitatis, et pueris in ejus et ceterorum mysteriorum fide instituendis: *ab ipso die SS. Trinitatis, ad Feriam quartam sequentem inclusivè*

22. De Solemnitate Corporis Christi, et latriæ cultu interno et externo ei debito: *die Festo Corporis Christi et per Octavam.*

23. De Sacramentis Viatici et Extremæ-Unctionis, et reliquo sacerdotali ministerio erga infirmos: *à Feria VI post Octavam Corporis Christi, ad Dominicam quartam post Pentecosten.*

24. De Sacramento Matrimonii: *à Dominica IV post Pentecosten, ad Dominicam sextam.*

25. De nominatione et institutione canonica ad beneficia et dignitates ecclesiasticas: *à Dominica VI post Pentecosten, ad Dominicam septimam.*

26. De Prælatorum residentia, et pastorali sollicitudine: *à Dominica VII post Pentecosten, ad Dominicam octavam.*

27. De Visitatione episcopali: *à Dominica VIII post Pentecosten, ad Dominicam nonam.*

28. De Conciliis, et de Synodis diœcesanis: *à Dominica IX post Pentecosten, ad Dominicam decimam.*

29. De Pontificum vita domestica, et de viris ecclesiasticis quorum operâ utuntur in diœceseon regimine: *Dominica et Hebdomada X post Pentecosten.*

30. De moribus et officiis Canonicorum: *Dominica et Hebdomada XI post Pentecosten.*

31. De Officii divini publica celebratione, et privata recitatione: *à Dominica XII post Pentecosten, ad usque Dominicam XV.*

32. De Precibus pro Defunctis; de Exequiis et Cœmeteriis: *Dominica et Hebdomada XV post Pentecosten.*

33. De ambitione à Clericis fugienda: *Dominica et Hebdomada XVI post Pentecosten.*

34. De Scholis, Seminariis, et Collationibus ecclesiasticis: *Dominica et Hebdomada XVII post Pentecosten.*

35. De iis qui pœnitentiam tantùm in extremis vitæ postulant: *Dominica et Hebdomada XVIII post Pentecosten.*

36. De Excommunicatione: *Dominica et Hebdomada XIX post Pentecosten.*

37. De Ecclesiasticorum conversatione cum laicis et mulieribus: *Dominica et Hebdomada XX post Pentecosten.*

38. De fugienda à Clero avaritia: *Dominica et Hebdomada XXI post Pentecosten.*

39. De Potestate civili et ecclesiastica, et obsequio ipsis debito: *Dominica et Hebdomada XXII post Pentecosten.*

40. De Miraculis; de Sanctorum Reliquiis et Imaginibus: *Dominica et Hebdomada XXIII post Pentecosten.*

41. De Hæreticis: *Dominica et Hebdomada XXIV post Pentecosten.*

42. De reverentia Ecclesiis aliisque locis sacris debita: *Dominica et Hebdomada XXV post Pentecosten.*

43. De sanctificatione diei Dominicæ, aliarumque Festivitatum: *à Dominica XXVI post Pentecosten, ad Dominicam XXVIII.*

44. De operibus caritatis et misericordiæ erga Proximum, et domos hospitales pauperum et infirmorum: *Dominica XXVIII post Pentecosten.*

¶ *In hac serie non comprehenduntur Festa et Solemnitates quæ proprios habent Canones, ratione peculiaris ritûs, aut disciplinæ, prædictis Solemnitatibus congruentis.* ]

# AUCTORES HYMNORUM.

*B.*—BESNAULT, (Sebastianus) Parochus Ecclesiæ S. Mauricii, in suburbio civitatis Senonensis. Obiit die 29 Aprilis 1724.

*C.*—COFFIN, (Carolus) patriâ Remensis, Universitatis Parisiensis Rector. Obiit die 20 Junii 1749, ætatis 73.

*Commir.*—COMMIRE, (Joannes) Societatis Jesu Presbyter, Turonis oriundus, Lutetiæ in Collegio Ludovici Magni à vita cessit, anno ætatis 67, die 25 Decembris 1702.

*Fortunat.* — FORTUNATUS, (Venantius-Honorius-Clementianus) prope Tarvisiam in Italia natus, Galliam petiit, et Pictavorum Episcopus, ætate jam provectâ, creatus est. Seculo septimo ineunte obiit.

*Guiet.*—GUYET, (Carolus) è Societate Jesu, scripsit de rebus liturgicis, præsertim de Festis propriis locorum. Obiit anno 1684.

*G. Ep. S.*—Guillelmus DE LA BRUNETIÈRE du Plessis-Gesté, patriâ Andegavensis, Vicarius generalis Parisiensis, deinde Episcopus Santonensis, cujus sedem tenuit annos 26, boni pastoris partes adimplens. Obiit anno 1702.

*G. Vict.*—GOURDAN, (Simon) Presbyter Parisinus, et Canonicus regularis, sanctissimè vixit in Abbatia S. Victoris, in qua obiit anno 1729, ætatis 93.

*H. Vabr. Ep.*—HABERT, (Isaac) Doctor Sorbonicus, Ecclesiæ Parisiensis Canonicus Theologalis, Episcopus Vabrensis renuntiatus est anno 1645; vitâ decessit die 11 Januarii 1668.

*J.*—JANNET, (Joannes-Philippus) Clericus Parisinus, plurimos composuit hymnos, qui in Breviario Viennensi et aliis inserti sunt. Annos natus 75, obiit anno 1817.

*Muret.*—MURET, (Marcus-Antonius) in agro Lemovicensi natus anno 1526, in omni litterarum genere peritus, multa opera, præsertim critica et poetica, edidit. Romæ sacris Ordinibus initiatus, philosophiam et theologiam docuit; eaque in urbe obiit die 4 Junii 1585.

*N. T.*—LE TOURNEUX, (Nicolaus) Presbyter Rotomagensis, Brevia-

rio Cluniacensi operam dedit, multosque libros de theologia et pietate vulgavit, quorum alii damnati sunt, alii cautè legendi. Obiit Parisiis anno 1686.

*Petav.* — PETAU, (Dionysius) Aurelianensis, Societatis Jesu Presbyter, eruditione clarissimus. Annos natus 69, Parisiis obiit die 11 Decembris 1652.

*Prud.*—Aurelius PRUDENTIUS Clemens, Cæsaraugustæ in Hispania natus, floruit temporibus Theodosii Magni, et filiorum ejus. Ætate provectus decessit circa annum 412.

*S. M.* —SANTEUL, (Claudius) Presbyter Parisinus, cognomento Maglorianus, nonnullos hymnos composuit. Natus anno 1628, vità decessit anno 1684.

*S. V.*—SANTEUL, (Joannes) Claudii frater, Subdiaconus, et Canonicus regularis S. Victoris, carminibus ac præsertim hymnis clarissimus. Divione obiit, die 3 Augusti 1697, annos natus 67.

*S. Th. Aq.*—S. THOMAS Aquinas. Obiit anno 1274. Vide in Breviario ad diem 18 Julii.

*Viv.*—VIVANT (Franciscus), Lutetiæ oriundus, Canonicus et Cantor Ecclesiæ Parisiensis, atque Universitatis Cancellarius, in rebus liturgicis peritus, pietatis laude conspicuus; obiit anno 1739, ætatis 77.

ROBINET (Urbanus), Doctor Sorbonicus, Canonicus et Vicarius generalis Parisiensis, Breviarium Rotomagense digessit. Natus in Armorica anno 1683, obiit Parisiis die 29 Septembris 1758. Ipsi tribuuntur hymni Communis Presbyterorum *Jam satis fluxit*, et *O Sacerdotum*; necnon Præsentationis B. Mariæ, *Quàm pulcrè*, et *Infans*.

# INDEX PSALMORUM.

## INDEX CANTICORUM PSALTERII.

# PRÆFATIO ASCETICA
## IN PSALTERIUM.

Quidquid in ceteris Scripturæ libris utile est, unus Psalmorum liber complectitur. Psalmus tranquillitas est animarum : pacis arbiter, tumultuosas turbulentasque cogitationes compescit..... Dæmones Psalmus fugat, accersit Angelorum patrocinium, ministrat arma contra nocturnos timores; diurnorum laborum est requies, infantium securitas, ornamentum juvenum, senum consolatio, convenientissimum mulierum decus..... Psalmus incipientibus initium est, incrementum proficientibus, perfectis firmamentum... Psalmus Angelorum opus est, cœlestis conversatio, spirituale thymiama..... Quid inde discere non queas? Nonne fortitudinis claritudinem? nonne justitiæ integritatem, gravitatem temperantiæ, prudentiæ perfectionem? Nonne pœnitentiæ modum, aut patientiæ mensuram? nonne tandem omnia quæcumque proferri possunt bona? Hìc perfecta theologia; hìc de Christi in carnem adventu vaticinium; hìc comminatio judicii, resurrectionis spes, timor supplicii, gloriæ promissiones, mysteriorum revelatio : omnia in Psalmorum libro, velut in magno et communi promptuario, reconduntur. S. Basil. *Homil. in Ps.* 1.

Quid Psalmo gratius? Psalmus benedictio populi est, Dei laus, plebis laudatio, plausus omnium, sermo universorum, vox Ecclesiæ, fidei canora confessio, aùctoritatis plena devotio, libertatis lætitia, clamor jucunditatis, lætitiæ resultatio. Ab iracundia mitigat, à sollicitudine abdicat, à mœrore allevat..... Diei ortus Psalmum resultat, Psalmum resonat occasus..... Psalmus cantatur ab Imperatoribus, jubilatur à populis. Certant clamare singuli quod omnibus proficit. Domi Psalmus canitur, forìs recensetur. Sine labore percipitur, cum voluptate servatur. Psalmus dissidentes copulat, discordes sociat, offensos reconciliat. Magnum planè unitatis vinculum, in unum chorum totius nume-

rum plebis coire..... Certat in Psalmo doctrina cum gratia Cantatur ad delectationem, discitur ad eruditionem. S. A *Præf. in Ps.* I.

Multa membra, sub uno capite ipso Salvatore nostro, c et pacis vinculo colligata, unus homo sunt : et ipsorum, u hominis, vox in Psalmis auditur..... Homo ille ubique d est, cujus caput sursum est, membra deorsum. Ejus vo omnibus Psalmis, vel psallentem vel gementem, vel læ in spe, vel suspirantem in re, notissimam et familiaris habere debemus tanquam nostram. S. Aug. *in Ps.* LXIX *et*



PSAL1

# PSALTERIUM

## DISPOSITUM PER HEBDOMADAM.

## PARS VERNA.

# DOMINICA

## *AD OFFICIUM NOCTURNUM.*

*Quomodo inchoandum et ordinandum sit Officium Nocturnum, sicut et ceteræ Horæ, habetur in Ordinario Breviarii, ad calcem Psalterii.*

*Invitatorium, Hymnum, Antiphonas, et ℣℣℣, ubi desunt, require in Proprio.*

*IN I NOCTURNO.*

*Asteriscus hic * notat mediationem et pausam.*

Psalmus 1.

Beatus vir qui non ábiit in consílio impiórum, et in via peccatórum non stetit, * et in cáthedra pestiléntiæ non sedit;

Sed in lege Dómini volúntas ejus, * et in lege ejus meditábitur die ac nocte.

Et erit tanquam lignum quod plantátum est secus decursus aquárum, * quod fructum suum dabit in témpore suo.

Et fólium ejus non défluet; * et ómnia quæcumque fáciet, prosperabuntur.

Non sic ímpii, non sic; * sed tanquam pulvis quem projicit ventus á fácie terræ.

Ideo non resurgent ímpii in judício, * neque peccatóres in concílio justórum;

Quóniam novit Dóminus viam justórum, * et iter impiórum períbit.

Glória Patri, et Fílio, * et Spirítui sancto:

Sicut erat in princípio, et nunc, et semper, * et in sécula seculórum. Amen.

*Hi versus* Gloria *et* Sicut erat *dicuntur in fine Psalmorum, Divisionum, et Canticorum, nisi aliter notetur.*

*In Quadragesima.*

*Ant.* 4. d. Convertímini ad me, ait Dóminus exercítuum; et convertar ad vos. *Zach.* 1.

*Tempore Passionis.*

*Ant.* 8. G. Impossíbile est sánguine taurórum et hircórum auferri peccáta. *Hebr.* 10.

Psalmus 2.

Quare fremuérunt gentes, * et pópuli meditáti sunt inánia?

Astitérunt reges terræ, et et príncipes convenérunt in unum * adversùs Dóminum, et adversùs Christum ejus.

Dirumpámus víncula eó-

rum, * et projiciámus à nobis jugum ipsórum.

Qui hábitat in cœlis irridébit eos, * et Dóminus subsannábit eos.

Tunc loquétur ad eos in ira sua, * et in furóre suo conturbábit eos.

Ego autem constitútus sum rex ab eo super Sion montem sanctum ejus, * prædicans præceptum ejus.

Dóminus dixit ad me : * Fílius meus es tu, ego hódie génui te.

Póstula à me, et dabo tibi gentes hæreditátem tuam, * et possessiónem tuam términos terræ.

Reges eos in virga férrea,* et tanquam vas fíguli confringes eos.

Et nunc, reges, intellígite : * erudímini, qui judicátis terram.

Servíte Dómino in timóre, * et exultáte ei cum tremóre :

Apprehéndite disciplínam, nequando irascátur Dóminus, * et pereátis de via justa.

Cùm exárserit in brevi ira ejus, * beáti omnes qui confídunt in eo.

*In Quadragesima.*

*Ant.* 1. a. Revertátur unusquisque à via sua mala, et dírigite vias vestras et stúdia vestra. *Jerem.* 18.

*Tempore Passionis.*

*Ant.* 2. D. Christus ingrédiens mundum dicit : Corpus aptasti mihi; tunc dixi : Ecce vénio. *Hebr.* 10.

PSALMUS 3.

DOMINE, quid multiplicáti sunt qui tríbulant me? * multi insurgunt adversùm me.

Multi dicunt ánimæ meæ : * Non est salus ipsi in Deo ejus.

Tu autem, Dómine, susceptor meus es, * glória mea, et exaltans caput meum.

Voce meâ ad Dóminum clamávi, * et exaudívit me de monte sancto suo.

Ego dormívi, et soporátus sum ; * et exurrexi, quia Dóminus suscépit me.

Non timébo míllia pópuli circumdantis me : * exurge, Dómine ; salvum me fac, Deus meus.

Quóniam tu percussisti omnes adversantes mihi sine causa, * dentes peccatórum contrivisti.

Dómini est salus ; * et super pópulum tuum benedíctio tua.

*In Quadragesima.*

*Ant.* 6. F. Convertímini, convertímini à viis vestris péssimis : et quare moriémini, domus Israel. *Ezechiel.* 33.

℣. Ut quid, Dómine, recessisti longè? ℟. Déspicis in opportunitátibus, in tribulatióne. *Ps.* 9.

*Tempore Passionis.*

*Ant.* 3. à. In cápite libri scriptum est de me, ut fáciam, Deus, voluntátem tuam. *Hebr.* 10.

℣. Deus meus, vólui; ℟. Et legem tuam in médio cordis mei. *Ps.* 39.

### IN II NOCTURNO.

PSALMUS 17.

DILIGAM te, Dómine, fortitúdo mea : * Dóminus firmamentum meum, et refúgium meum, et liberátor meus.

Deus meus adjútor meus, * et sperábo in eum.

Protector meus, et cornu salútis meæ, * et susceptor meus.

Laudans invocábo Dóminum; * et ab inimícis meis salvus ero.

Circumdedérunt me dolóres mortis, * et torrentes iniquitátis conturbavérunt me.

Dolóres inferni circumdedérunt me : * præoccupavérunt me láquei mortis.

In tribulatióne mea invocávi Dóminum, * et ad Deum meum clamávi;

Et exaudívit de templo sancto suo vocem meam; * et clamor meus in conspectu ejus, introívit in aures ejus.

Commóta est et contrémuit terra : fundamenta móntium conturbáta sunt et commóta sunt; * quóniam irátus est eis.

Ascendit fumus in ira ejus, et ignis à fácie ejus exarsit : * carbónes succensi sunt ab eo.

Inclinávit cœlos, et descendit : * et calígo sub pédibus ejus.

Et ascendit super Chérubim, et volávit : * volávit super pennas ventórum.

Et pósuit ténebras latíbulum suum : in circúitu ejus tabernáculum ejus; * tenebrósa aqua in núbibus áeris.

Præ fulgóre in conspectu ejus nubes transiérunt, * grando, et carbónes ignis.

Et intónuit de cœlo Dóminus, et Altíssimus dedit vocem suam : * grando et carbónes ignis.

Et misit sagittas suas, et dissipávit eos : * fúlgura multiplicávit, et conturbávit eos.

Et apparuérunt fontes aquárum, * et reveláta sunt fundamenta orbis terrárum,

Ab increpatióne tua, Dómine, * ab inspiratióne spíritûs iræ tuæ.

*In Quadragesima.*

*Ant.* 4. A. Expectat Dóminus ut misereátur vestri, et ídeo exaltábitur parcens vobis. *Is.* 30.

*Tempore Passionis.*

*Ant.* 1. D. Cœpit Jesus osténdere discípulis suis, quia oportéret eum ire Jerosólymam, et multa pati, et occídi, et tértiâ die resúrgere. *Matth.* 16.

*Divisio* PSALMI 17.

MISIT de summo [Dóminus,] et accépit me, * et assumpsit me de aquis multis.

Erípuit me de inimícis meis fortíssimis, et ab his qui odérunt me; * quóniam confortáti sunt super me.

Prævenérunt me in die afflictiónis meæ; * et factus est Dóminus protector meus.

Et eduxit me in latitúdinem : * salvum me fecit, quóniam vóluit me.

Et retribuet mihi Dóminus secundùm justítiam me-

am, * et secundùm puritátem mánuum meárum retríbuet mihi.

Quia custodívi vias Dómini, * nec ímpiè gessi à Deo meo;

Quóniam ómnia judícia ejus in conspectu meo, * et justítias ejus non répuli à me.

Et ero immaculátus cum eo, * et observábo me ab iniquitáte mea.

Et retríbuet mihi Dóminus secundùm justítiam meam, * et secundùm puritátem mánuum meárum in conspectu oculórum ejus.

Cum sancto sanctus eris, * et cum viro innocente ínnocens eris:

Et cum electo electus eris, * et cum perverso pervertéris.

Quoniam tu pópulum húmilem salvum fácies, * et óculos superbórum humiliábis.

Quóniam tu illúminas lucernam meam, Dómine: * Deus meus, illúmina ténebras meas.

Quóniam in te erípiar à tentatióne, * et in Deo meo transgrédiar murum.

*In Quadragesima.*

*Ant.* 7. c. Pius et miséricors est Deus, et remittet in die tribulatiónis peccáta. *Eccli.* 2.

*Tempore Passionis.*

*Ant.* 7. a. Ignorábant discípuli verbum; et erat velátum ante eos, ut non sentírent illud. *Luc.* 9.

*Altera divisio* PSALMI 17.

DEUS meus, impollúta via ejus; elóquia Dómini igne examináta: * protector est ómnium sperántium in se.

Quóniam quis Deus præter Dóminum? * aut quis Deus præter Deum nostrum?

Deus qui præcinxit me virtúte, * et pósuit immaculátam viam meam;

Qui perfécit pedes meos tanquam cervórum, * et super excelsa státuens me;

Qui docet manus meas ad prælium: * et posuisti ut arcum æreum bráchia mea;

Et dedisti mihi protectiónem salútis tuæ; * et déxtera tua suscépit me.

Et disciplína tua correxit me in finem, * et disciplína tua ipsa me docébit.

Dilatasti gressus meos subtus me, * et non sunt infirmáta vestígia mea.

Pérsequar inimícos meos, et comprehendam illos, * et non convertar donec defíciant.

Confringam illos, nec póterunt stare: * cadent subtus pedes meos.

Et præcinxisti me virtúte ad bellum; * et supplantasti insurgentes in me subtus me.

Et inimícos meos dedisti mihi dorsum, * et odientes me disperdidisti.

Clamavérunt, nec erat qui salvos fáceret: * ad Dóminum, nec exaudívit eos.

Et commínuam eos ut púlverem ante fáciem venti: * ut lutum plateárum delébo eos.

Erípies me de contradictiónibus pópuli: * constítues me in caput géntium.

Pópulus quem non cognóvi, servívit mihi : * in audítu auris obedívit mihi.

Fílii aliéni mentíti sunt mihi : * fílii aliéni inveteráti sunt, et claudicavérunt à sémitis suis.

Vivit Dóminus, et benedictus Deus meus ; * et exaltétur Deus salútis meæ.

Deus, qui das vindictas mihi, et subdis pópulos sub me,* liberátor meus de inimícis meis iracundis.

Et ab insurgéntibus in me exaltábis me : * à viro iníquo erípies me.

Proptérea confitébor tibi in natiónibus, Dómine ; * et nómini tuo psalmum dicam.

Magníficans salútes regis ejus, * et fáciens misericórdiam christo suo David, et sémini ejus usque in séculum.

*In Quadragesima.*

*Ant.* 2. D. Convertímini, et ágite pœniténtiam, et non erit vobis in ruínam iníquitas. *Ezech.* 18.

℣. Juxta est Dóminus iis qui tribuláto sunt corde : ℟. Et húmiles spíritu salvábit. *Ps.* 33.

*Tempore Passionis.*

*Ant.* 4. E. Timébant discípuli interrogáre Jesum, et contristáti sunt vehementer. *Matth.* 17. *Marc.* 9.

℣. In conspectu tuo sunt omnes qui tríbulant me : ℟. Impropérium expectávit cor meum, et misériam. *Ps.* 68.

## IN III NOCTURNO.

PSALMUS 27.

Ad te, Dómine, clamábo : Deus meus, ne síleas à me, * nequando táceas à me, et assimilábor descendéntibus in lacum.

Exaudi, Dómine, vocem deprecatiónis meæ, dum oro ad te, * dum extollo manus meas ad templum sanctum tuum.

Ne simul trahas me cum peccatóribus ; * et cum operántibus iniquitátem ne perdas me :

Qui loquuntur pacem cum próximo suo ; * mala autem in córdibus eórum.

Da illis secundùm ópera eórum,* et secundùm nequítiam adinventiónum ipsórum.

Secundùm ópera mánuum eórum tríbue illis : * redde retributiónem eórum ipsis.

Quóniam non intellexérunt ópera Dómini, et in ópera mánuum ejus ; * déstrues illos, et non ædificábis eos.

Benedictus Dóminus, * quóniam exaudívit vocem deprecatiónis meæ.

Dóminus adjútor meus, et protector meus : * in ipso sperávit cor meum, et adjútus sum.

Et reflóruit caro mea ; * et ex voluntáte mea confitébor ei.

Dóminus fortitúdo plebis suæ, * et protector salvatiónum christi sui est.

Salvum fac pópulum tuum, Dómine, et bénedic hæredi-

táti tuæ; * et rege eos, et extolle illos usque in æternum.

*In Quadragesima.*

*Ant.* 3. à. Mundémus nos ab omni inquinamento carnis et spíritûs. 2 *Cor.* 7.

*Tempore Passionis.*

*Ant.* 3. c. Convenérunt, Dómine, adversùs sanctum púerum tuum Jesum, quem unxisti. *Act.* 4.

PSALMUS 29.

EXALTABO te, Dómine, quóniam suscepisti me, * nec delectasti inimícos meos super me.

Dómine Deus meus, clamávi ad te, * et sanasti me.

Dómine, eduxisti ab inferno ánimam meam: * salvasti me à descendéntibus in lacum.

Psállite Dómino, sancti ejus, * et confitémini memóriæ sanctitátis ejus.

Quóniam ira in indignatióne ejus, * et vita in voluntáte ejus.

Ad vésperum demorábitur fletus, * et ad matutínum lætítia.

Ego autem dixi in abundántia mea: * Non movébor in æternum.

Dómine, in voluntáte tua * præstitisti decóri meo virtútem;

Avertisti fáciem tuam à me; * et factus sum conturbátus.

Ad te, Dómine, clamábo, * et ad Deum meum deprecábor.

Quæ utílitas in sánguine meo, * dum descendo in corruptiónem?

Numquid confitébitu pulvis, * aut annuntiábi tátem tuam?

Audívit Dóminus, serτus est meî: * Dó factus est adjútor meu

Convertisti planctur um in gáudium mihi: scidisti saccum meum, cumdedisti me lætítiâ;

Ut cantet tibi glória et non compungar: * ne Deus meus, in æt confitébor tibi.

*In Quadragesima*

*Ant.* 8. G. Non est viáta manus Dómini, váre néqueat; neque váta est auris ejus, u exáudiat. *Is.* 59.

*Tempore Passioni*

*Ant.* 7. c. Dixérunt: tur patrem se habére I videámus ergo si ser illíus veri sint. *Sap.* 2.

PSALMUS 65.

JUBILATE Deo, omnis psalmum dícite nómini date glóriam laudi eju

Dícite Deo: Quàm bília sunt ópera tua, ne! * in multitúdine tuæ mentientur tibi tui.

Omnis terra adóret psallat tibi: * psalmu nómini tuo.

Veníte, et vidéte Dei; * terríbilis in c super fílios hóminum

Qui convertit mare dam; in flúmine pe ibunt pede: * ibi læt in ipso.

Qui dominátur in

sua in æternum; óculi ejus super gentes respíciunt: * qui exásperant, non exaltentur in semetipsis.

Benedícite, gentes, Deum nostrum; * et audítam fácite vocem laudis ejus.

Qui pósuit ánimam meam ad vitam, * et non dedit in commotiónem pedes meos.

Quóniam probasti nos, Deus: * igne nos examinasti, sicut examinátur argentum:

Induxisti nos in láqueum, posuisti tribulatiónes in dorso nostro: * imposuisti hómines super cápita nostra.

Transívimus per ignem et aquam; * et eduxisti nos in refrigérium.

Introíbo in domum tuam in holocaustis: * reddam tibi vota mea,

Quæ distinxérunt lábia mea, et locútum est os meum * in tribulatióne mea.

Holocausta medulláta ófferam tibi cum incenso aríetum: * ófferam tibi boves cum hircis.

Veníte, audíte, et narrábo, omnes qui timétis Deum, * quanta fecit ánimæ meæ.

Ad ipsum ore meo clamávi, * et exaltávi sub lingua mea.

Iniquitátem si aspexi in corde meo, * non exáudiet Dóminus.

Proptérea exaudívit Deus, * et attendit voci deprecatiónis meæ.

Benedictus Deus, * qui non amóvit oratiónem meam, et misericórdiam suam à me.

*In Quadragesima.*

*Ant.* 5. a. Adeámus ergo cum fidúcia ad thronum grátiæ, ut misericórdiam consequámur. *Hebr.* 4.

℣. Non repellet Dóminus plebem suam, ℟. Et hæreditátem suam non derelinquet. *Ps.* 93.

*Tempore Passionis.*

*Ant.* 8. c. Morte turpíssimâ condemnémus eum: si enim est verus Fílius Dei, liberábit eum. *Sap.* 2.

℣. Eripe me de manu inimicórum meórum, ℟. Et à persequéntibus me. *Ps.* 30.

## AD LAUDES.

PSALMUS 62.

Deus, Deus meus, * ad te de luce vígilo.

Sitívit in te ánima mea, quàm multiplíciter tibi caro mea * in terra deserta, et ínvia, et inaquósa.

Sic in sancto appárui tibi, * ut vidérem virtútem tuam et glóriam tuam.

Quóniam mélior est misericórdia tua super vitas, * lábia mea laudábunt te.

Sic benedícam te in vita mea, * et in nómine tuo levábo manus meas.

Sicut ádipe et pinguédine repleátur ánima mea, * et lábiis exultatiónis laudábit os meum.

Si memor fui tuî super stratum meum, * in matutínis meditábor in te.

Quia fuisti adjútor meus, * et in velamento alárum tuárum exultábo.

Adhæsit ánima mea post te; * me suscépit déxtera tua.

Ipsi verò in vanum quæsiérunt ánimam meam, * introíbunt in inferióra terræ:

Tradentur in manus gládii, * partes vúlpium erunt.

Rex verò lætábitur in Deo, laudabuntur omnes qui jurant in eo; * quia obstructum est os loquéntium iníqua.

PSALMUS 69.

DEUS, in adjutórium meum intende: * Dómine, ad adjuvandum me festína.

Confundantur, et revereantur, * qui quærunt ánimam meam.

Avertantur retrorsum, et erubescant, * qui volunt mihi mala.

Avertantur statim erubescentes, * qui dicunt mihi: Euge, euge.

Exultent et læteniur in te omnes, qui quærunt te; * et dicant semper: Magnificétur Dóminus, qui díligunt salutáre tuum.

Ego verò egénus et pauper sum: * Deus, ádjuva me.

Adjútor meus et liberátor meus es tu: * Dómine, ne moréris.

PSALMUS 99.

JUBILATE Deo, omnis terra, * servíte Dómino in lætítia.

Introíte in conspectu ejus, * in exultatióne.

Scitóte quóniam Dóminus ipse est Deus: * ipse fecit nos, et non ipsi nos.

Pópulus ejus, et oves páscuæ ejus, introíte portas ejus in confessióne, átria eju[s] hymnis: * confitémini il[li]

Laudáte nomen ejus quóniam suávis est Dómi[nus]

In æternum misericó[rdia] ejus, * et usque in gen[era]tiónem et generatiónem [ve]ritas ejus.

*In Dominicis Quadrages[imæ,] Passionis et Palmarum*

CANTICUM TRIUM PUERO[RUM]

*Dan.* 3.

BENEDICTUS es, Dómine [Deus] patrum nostrórum, * et [lau]dábile et gloriósum no[men] tuum in sécula:

Quia justus es in ómn[ibus] quæ fecisti nobis, et uni[versa] ópera tua vera, * et viæ [tuæ] rectæ, et ómnia judícia [tua] vera.

Peccávimus enim, et [ini]què égimus, recedentes à [te:] et delíquimus in ómnib[us.]

Et præcepta tua non [audí]vimus, nec observávim[us,] nec fécimus sicut præcé[pisti] nobis, ut bene nobis es[set.]

Et nunc non póssumu[s ape]rire os: * confúsio et op[pro]brium facti sumus servis [tuis,] et his qui colunt te.

Ne, quæsumus, trada[s nos] in perpétuum; et ne dís[sipes] testamentum tuum: * n[eque] áuferas misericórdiam [tuam] à nobis.

Nunc séquimur te in [toto] corde; * et timémus t[e, et] quærimus fáciem tuam.

Ne confundas nos; se[d fac] nobiscum juxta mansue[tudi]nem tuam, * et secun[dum] multitúdinem misericó[rdiæ] tuæ.

Et érue nos in mirabílibus tuis; * et da glóriam nómini tuo, Dómine.

Et confundantur omnes, qui ostendunt servis tuis mala; * confundantur in omnipoténtia tua, et robur eórum conterátur.

Et sciant quia tu es Dóminus solus, * et gloriósus super orbem terrárum.

¶ *Tempore Paschali, Canticum ut in Proprio.*]

PSALMUS 148.

LAUDATE Dóminum de cœlis: * laudáte eum in excelsis.

Laudáte eum, omnes Angeli ejus: * laudáte eum, omnes Virtútes ejus.

Laudáte eum, sol et luna: * laudáte eum, omnes stellæ et lumen.

Laudáte eum, cœli cœlórum; * et aquæ omnes quæ super cœlos sunt, laudent nomen Dómini;

Quia ipse dixit, et facta sunt; * ipse mandávit, et creáta sunt.

Státuit ea in æternum, et in séculum séculi: * præceptum pósuit, et non præteríbit.

Laudáte Dóminum de terra, * dracónes, et omnes abyssi;

Ignis, grando, nix, glácies, spíritus procellárum, * quæ fáciunt verbum ejus;

Montes, et omnes colles; * ligna fructífera, et omnes cedri;

Béstiæ, et universa pécora; * serpentes, et vólucres pennátæ;

Reges terræ, et omnes pópuli; * príncipes, et omnes júdices terræ;

Júvenes et vírgines, senes cum junióribus laudent nomen Dómini, * quia exaltátum est nomen ejus solíus.

Conféssio ejus super cœlum et terram; * et exaltávit cornu pópuli sui.

Hymnus ómnibus sanctis ejus, * fíliis Israel, pópulo appropinquanti sibi.

## AD PRIMAM.

PSALMUS 117.

CONFITEMINI Dómino quóniam bonus, * quóniam in séculum misericórdia ejus.

Dicat nunc Israel, quóniam bonus, * quóniam in séculum misericórdia ejus.

Dicat nunc domus Aaron, * quóniam in séculum misericórdia ejus.

Dicant nunc qui timent Dóminum, * quoniam in séculum misericórdia ejus.

De tribulatióne invocávi Dóminum, * et exaudívit me in latitúdine Dóminus.

Dóminus mihi adjútor; * non timébo quid fáciat mihi homo.

Dóminus mihi adjútor; * et ego despíciam inimícos meos.

Bonum est confídere in Dómino, * quàm confídere in hómine.

Bonum est speráre in Dómino, * quàm speráre in princípibus.

Omnes gentes circuiérunt

me; * et in nómine Dómini quia ultus sum in eos.

Circumdantes circumdedérunt me; * et in nómine Dómini quia ultus sum in eos.

Circumdedérunt me sicut apes, et exarsérunt sicut ignis in spinis; * et in nómine Dómini quia ultus sum in eos.

Impulsus, eversus sum ut cáderem; * et Dóminus suscépit me.

Fortitúdo mea et laus mea Dóminus, * et factus est mihi in salútem.

Vox exultatiónis et salútis * in tabernáculis justórum.

Déxtera Dómini fecit virtútem, déxtera Dómini exaltávit me; * déxtera Dómini fecit virtútem.

Non móriar, sed vivam, * et narrábo ópera Dómini.

Castígans castigávit me Dóminus, * et morti non trádidit me.

Aperíte mihi portas justítiæ: * ingressus in eas, confitébor Dómino.

Hæc porta Dómini; * justi intrábunt in eam.

Confitébor tibi, quóniam exaudisti me; * et factus es mihi in salútem.

Lápidem quem reprobavérunt ædificantes, * hic factus est in caput ánguli.

A Dómino factum est istud, * et est mirábile in óculis nostris.

Hæc est dies quam fecit Dóminus: * exultémus et lætémur in ea.

O Dómine, salvum me fac; ô Dómine, bene prosperáre: * benedictus qui venit in nómine Dómini.

Benedíximus vobis de domo Dómini: * Deus Dóminus, et illuxit nobis.

Constitúite diem solemnem in condensis, * usque ad cornu altáris.

Deus meus es tu, et confitébor tibi: * Deus meus es tu, et exaltábo te.

Confitébor tibi, quóniam exaudisti me; * et factus es mihi in salútem.

Confitémini Dómino, quóniam bonus, * quóniam in séculum misericórdia ejus.

PSALMUS 118.

Beati immaculáti in via,* qui ámbulant in lege Dómini.

Beáti qui scrutantur testimónia ejus, * in toto corde exquírunt eum.

Non enim qui operantur iniquitátem, * in viis ejus ambulavérunt.

Tu mandasti * mandáta tua custodíri nimis.

Utinam dirigantur viæ meæ * ad custodiendas justificatiónes tuas!

Tunc non confundar, * cùm perspéxero in ómnibus mandátis tuis.

Confitébor tibi in directióne cordis; * in eo quod dídici judícia justítiæ tuæ.

Justificatiónes tuas custódiam; * non me derelinquas usquequáque.

In quo córrigit adolescéntior viam suam? * in custodiendo sermónes tuos.

In toto corde meo exqui-

sivi te; * ne repellas me à mandátis tuis.

In corde meo abscondi elóquia tua; * ut non peccem tibi.

Benedictus es, Dómine: * doce me justificatiónes tuas.

In lábiis meis * pronuntiávi ómnia judícia oris tui.

In via testimoniórum tuórum delectátus sum, * sicut in ómnibus divítiis.

In mandátis tuis exercébor,* et considerábo vias tuas.

In justificatiónibus tuis meditábor, * non obliviscar sermónes tuos.

*Divisio* Psalmi 118.

Retribue servo tuo, vivífica me; * et custódiam sermónes tuos.

Revéla óculos meos, * et considerábo mirabília de lege tua.

Incola ego sum in terra, * non abscondas à me mandáta tua.

Concupívit ánima mea desideráre justificatiónes tuas * in omni témpore.

Increpasti superbos: * maledicti qui declínant à mandátis tuis.

Aufer à me oppróbrium et contemptum; * quia testimónia tua exquisívi.

Etenim sedérunt príncipes, et adversùm me loquebantur; * servus autem tuus exercebátur in justificatiónibus tuis.

Nam et testimónia tua meditátio mea est, * et consílium meum justificatiónes tuæ.

Adhæsit pavimento ánima mea: * vivífica me secundùm verbum tuum.

Vias meas enuntiávi, et exaudisti me; * doce me justificatiónes tuas.

Viam justificatiónum tuárum ínstrue me; * et exercébor in mirabílibus tuis.

Dormitávit ánima mea præ tædio, * confirma me in verbis tuis.

Viam iniquitátis ámove à me, * et de lege tua miserére mei.

Viam veritátis elégi, * judícia tua non sum oblítus.

Adhæsi testimóniis tuis, Dómine: * noli me confúndere.

Viam mandatórum tuórum cucurri, * cùm dilatasti cor meum.

*Quoties fit Officium de Dominica, sequens dicitur*

Symbolum.

Quicumque vult salvus esse, * ante ómnia opus est ut téneat cathólicam fidem:

Quam nisi quisque íntegram inviolatamque serváverit, * absque dúbio in æternum períbit.

Fides autem cathólica hæc est. * ut unum Deum in Trinitáte, et Trinitátem in Unitáte venerémur;

Neque confundentes persónas, * neque substántiam separantes.

Alia est enim persóna Patris, ália Filii, * ália Spíritûs sancti.

Sed Patris, et Fílii, et Spíritûs sancti una est divínitas, * æquális glória, coætérna majestas.

Qualis Pater, talis Fílius, * talis Spíritus sanctus.

Increátus Pater, increátus Fílius, * increátus Spíritus sanctus.

Immensus Pater, immensus Fílius, * immensus Spíritus sanctus.

Æternus Pater, æternus Fílius, * æternus Spíritus sanctus;

Et tamen non tres æterni, * sed unus æternus.

Sicut non tres increáti, nec tres immensi, * sed unus increátus, et unus immensus.

Simíliter omnípotens Pater, omnípotens Fílius, * omnípotens Spíritus sanctus;

Et tamen non tres omnipotentes, * sed unus omnípotens.

Ita Deus Pater, Deus Fílius, * Deus Spíritus sanctus;

Et tamen non tres dii, * sed unus est Deus.

Ita Dóminus Pater, Dóminus Fílius, * Dóminus Spíritus sanctus;

Et tamen non tres dómini, * sed unus est Dóminus.

Quia sicut singillátim unamquamque persónam, Deum ac Dóminum confitéri christiánâ veritáte compéllimur, * ita tres deos aut dóminos dícere cathólicâ religióne prohibémur.

Pater à nullo est factus, * nec creátus, nec génitus.

Fílius à Patre solo est, * non factus, nec creátus, sed génitus.

Spíritus sanctus à Patre et Fílio, * non factus, nec creátus, nec génitus, sed procédens.

Unus ergo Pater, non tres patres: unus Fílius, non tres filii: * unus Spíritus sanctus, non tres spíritus sancti.

Et in hac Trinitáte nihil prius aut postérius, nihil majus aut minus; * sed totæ tres persónæ coæternæ sibi sunt et coæquáles.

Ita ut per ómnia, sicut jam suprà dictum est, * et Unitas in Trinitáte, et Trínitas in Unitáte veneranda sit.

Qui vult ergo salvus esse, * ita de Trinitáte séntiat.

Sed necessárium est ad æternam salútem, * ut Incarnatiónem quoque Dómini nostri Jesu Christi fidéliter credat.

Est ergo fides recta, ut credámus et confiteámur * quia Dóminus noster Jesus Christus Dei Fílius, Deus et homo est.

Deus est ex substántia Patris ante sécula génitus, * et homo est ex substántia matris in século natus.

Perfectus Deus, perfectus homo; * ex ánima rationáli, et humána carne subsistens.

Æquális Patri secundùm divinitátem, * minor Patre secundùm humanitátem.

Qui licèt Deus sit et homo, * non duo tamen, sed unus est Christus.

Unus autem non conversióne divinitátis in carnem, * sed assumptióne humanitátis in Deum.

Unus omníno, non con-

fusióne substántiæ, * sed unitáte persónæ.

Nam sicut ánima rationális et caro unus est homo, * ita Deus et homo unus est Christus :

Qui passus est pro salúte nostra, descendit ad ínferos, * tértiâ die resurrexit à mórtuis :

Ascendit ad cœlos, sedet ad déxteram Dei Patris omnipotentis, * inde ventúrus est judicáre vivos et mórtuos :

Ad cujus adventum omnes hómines resúrgere habent cum corpóribus suis, * et redditúri sunt de factis própriis ratiónem.

Et qui bona egérunt, ibunt in vitam æternam ; * qui verò mala, in ignem æternum.

Hæc est fides cathólica ; * quam nisi quisque fidéliter firmiterque credíderit, salvus esse non póterit.

## AD TERTIAM.

*Ex* Psalmo 118.

Legem pone mihi, Dómine, viam justificatiónum tuárum ; * et exquíram eam semper.

Da mihi intellectum, et scrutábor legem tuam ; * et custódiam illam in toto corde meo.

Deduc me in sémitam mandatórum tuórum, * quia ipsam vólui.

Inclína cor meum in testimónia tua, * et non in avarítiam.

Averte óculos meos ne vídeant vanitátem : * in via tua vivífica me.

Státue servo tuo elóquium tuum * in timóre tuo.

Amputa oppróbrium meum quod suspicátus sum, * quia judícia tua jucunda.

Ecce concupívi mandáta túa : * in æquitáte tua vivífica me.

Et véniat super me misericórdia tua, Dómine, * salutáre tuum secundùm elóquium tuum.

Et respondébo exprobrántibus mihi verbum, * quia sperávi in sermónibus tuis.

Et ne áuferas de ore meo verbum veritátis usquequáque ; * quia in judíciis tuis supersperávi.

Et custódiam legem tuam semper, * in séculum, et in séculum séculi.

Et ambulábam in latitúdine, * quia mandáta tua exquisívi.

Et loquébar de testimóniis tuis in conspectu regum, * et non confundébar.

Et meditábar in mandátis tuis, * quæ dilexi.

Et levávi manus meas ad mandáta tua quæ dilexi, * et exercébar in justificatiónibus tuis.

*Divisio* Psalmi 118.

Memor esto verbi tui servo tuo, * in quo mihi spem dedisti.

Hæc me consoláta est in humilitáte mea, * quia elóquium tuum vivificávit me.

Superbi iníquè agébant us-

quequáque : * à lege autem tua non declinávi.

Memor fui judiciórum tuórum à século, Dómine, * et consolátus sum.

Deféctio ténuit me * pro peccatóribus derelinquéntibus legem tuam.

Cantábiles mihi erant justificatiónes tuæ * in loco peregrinatiónis meæ.

Memor fui nocte nóminis tui, Dómine; * et custodívi legem tuam.

Hæc facta est mihi, * quia justificatiónes tuas exquisívi.

Pórtio mea, Dómine, * dixi, custodíre legem tuam.

Deprecátus sum fáciem tuam in toto corde meo : * miserére meî secundùm elóquium tuum.

Cogitávi vias meas, * et converti pedes meos in testimónia tua.

Parátus sum, et non sum turbátus, * ut custódiam mandáta tua.

Funes peccatórum circumplexi sunt me; * et legem tuam non sum oblítus.

Médiâ nocte surgébam ad confitendum tibi, * super judícia justificatiónis tuæ.

Párticeps ego sum ómnium timéntium te, * et custodiéntium mandáta tua.

Misericórdiâ tuâ, Dómine, plena est terra : * justificatiónes tuas doce me.

*Divisio* Psalmi 118.

Bonitatem fecisti cum servo tuo, Dómine, * secundùm verbum tuum.

Bonitátem, et disciplínam, et sciéntiam doce me; * quia mandátis tuis crédidi.

Priusquam humiliárer, ego delíqui : * proptérea elóquium tuum custodívi.

Bonus es tu; * et in bonitáte tua doce me justificatiónes tuas.

Multiplicáta est super me iníquitas superbórum; * ego autem in toto corde meo scrutábor mandáta tua.

Coagulátum est sicut lac cor eórum : * ego verò legem tuam meditátus sum.

Bonum mihi quia humiliasti me, * ut discam justificatiónes tuas.

Bonum mihi lex oris tui * super míllia auri et argenti.

Manus tuæ fecérunt me, et plasmavérunt me : * da mihi intellectum, et discam mandáta tua.

Qui timent te, vidébunt me, et lætabuntur; * quia in verba tua supersperávi.

Cognóvi, Dómine, quia æquitas judícia tua, * et in veritáte tua humiliasti me.

Fiat misericórdia tua, ut consolétur me, * secundùm elóquium tuum servo tuo.

Véniant mihi miseratiónes tuæ, et vivam; * quia lex tua meditátio mea est.

Confundantur superbi, quia injustè iniquitátem fecérunt in me; * ego autem exercébor in mandátis tuis.

Convertantur mihi timentes te, * et qui novérunt testimónia tua.

Fiat cor meum immaculá-

tum in justificatiónibus tuis,* ut non confundar.

## AD SEXTAM.

*Ex* Psalmo 118.

Defecit in salutáre tuum ánima mea, * et in verbum tuum supersperávi.

Defecérunt óculi mei in elóquium tuum, * dicentes: Quando consoláberis me?

Quia factus sum sicut uter in pruína; * justificatiónes tuas non sum oblítus.

Quot sunt dies servi tui? * quando fácies de persequéntibus me judícium?

Narravérunt mihi iníqui fabulatiónes: * sed non ut lex tua.

Omnia mandáta tua, véritas: * iníquè persecúti sunt me, ádjuva me.

Paulò minùs consummavérunt me in terra; * ego autem non derelíquí mandáta tua.

Secundùm misericórdiam tuam vivífica me, * et custódiam testimónia oris tui.

In æternum, Dómine, * verbum tuum pérmanet in cœlo.

In generatiónem et generatiónem véritas tua: * fundasti terram, et pérmanet.

Ordinatióne tuâ persevérat dies; * quóniam ómnia sérviunt tibi.

Nisi quòd lex tua meditátio mea est, * tunc fortè periissem in humilitáte mea.

In æternum non obliviscar justificatiónes tuas;* quia in ipsis vivificasti me.

Tuus sum ego, salvum me fac;* quóniam justificatiónes tuas exquisívi.

Me expectavérunt peccatóres ut pérderent me: * testimónia tua intellexi.

Omnis consummatiónis vidi finem: * latum mandátum tuum nimis.

*Divisio* Psalmi 118.

Quomodo dilexi legem tuam, Dómine! * totâ die meditátio mea est.

Super inimícos meos prudentem me fecisti mandáto tuo, * quia in æternum mihi est.

Super omnes docentes me intellexi, * quia testimónia tua meditátio mea est.

Super senes intellexi, * quia mandáta tua quæsívi.

Ab omni via mala prohíbui pedes meos, * ut custódiam verba tua.

A judíciis tuis non declinávi, * quia tu legem posuisti mihi.

Quàm dúlcia fáucibus meis elóquia tua! * super mel ori meo.

A mandátis tuis intellexi; * proptérea odívi omnem viam iniquitátis.

Lucerna pédibus meis verbum tuum, * et lumen sémitis meis.

Jurávi et státui * custodíre judícia justítiæ tuæ.

Humiliátus sum usquequáque, Dómine; * vivífica me secundùm verbum tuum.

Voluntária oris mei beneplácita fac, Domine, * et judícia tua doce me.

Anima mea in mánibus meis semper; * et legem tuam non sum oblítus.

Posuérunt peccatóres láqueum mihi; * et de mandátis tuis non errávi.

Hæreditáte acquisívi testimónia tua in æternum, * quia exultátio cordis mei sunt.

Inclinávi cor meum ad faciendas justificatiónes tuas in æternum, * propter retributiónem.

*Divisio* PSALMI 118.

INIQUOS ódio hábui, * et legem tuam dilexi.

Adjútor et susceptor meus es tu; * et in verbum tuum supersperávi.

Declináte à me, maligni; * et scrutábor mandáta Dei mei.

Súscipe me secundùm elóquium tuum, et vivam; * et non confundas me ab expectatióne mea.

Adjuva me, et salvus ero; * et meditábor in justificatiónibus tuis semper.

Sprevisti omnes discedentes à judíciis tuis, * quia injusta cogitátio eórum.

Prævaricantes reputávi omnes peccatóres terræ; * ídeo dilexi testimónia tua.

Confíge timóre tuo carnes meas; * à judíciis enim tuis tímui.

Feci judícium et justítiam: * non tradas me calumniántibus me.

Súscipe servum tuum in bonum; * non calumnientur me superbi.

Oculi mei defecérunt in salutáre tuum, * et in elóquium justítiæ tuæ.

Fac cum servo tuo secundùm misericórdiam tuam, * et justificatiónes tuas doce me.

Servus tuus sum ego; * da mihi intellectum, ut sciam testimónia tua.

Tempus faciendi, Dómine: * dissipavérunt legem tuam.

Ideo dilexi mandáta tua * super aurum et topázion.

Proptérea ad ómnia mandáta tua dirigébar: * omnem viam iníquam ódio hábui.

## AD NONAM.

*Ex* PSALMO 118.

MIRABILIA testimónia tua: * ídeo scrutáta est ea ánima mea.

Declarátio sermónum tuórum illúminat, * et intellectum dat párvulis.

Os meum apérui, et attraxi spíritum; * quia mandáta tua desiderábam.

Aspice in me, et miserére mei, * secundùm judícium diligéntium nomen tuum.

Gressus meos dírige secundùm elóquium tuum; * et non dominétur mei omnis injustítia.

Rédime me à calúmniis hóminum, * ut custódiam mandáta tua.

Fáciem tuam illúmina super servum tuum, * et doce me justificatiónes tuas.

Exitus aquárum deduxérunt óculi mei; * quia non custodiérunt legem tuam.

Justus es, Dómine, * et rectum judícium tuum.

Mandasti justítiam testimónia tua, * et veritátem tuam nimis.

Tabéscere me fecit zelus meus, * quia obliti sunt verba tua inimíci mei.

Ignítum elóquium tuum vehementer; * et servus tuus dilexit illud.

Adolescéntulus sum ego, et contemptus; * justificatiónes tuas non sum oblítus.

Justítia tua, justítia in æternum; * et lex tua veritas.

Tribulátio et angústia invenérunt me: * mandáta tua meditátio mea est.

Æquitas testimónia tua in æternum: * intellectum da mihi, et vivam.

*Divisio* PSALMI 118.

CLAMAVI in toto corde meo, exaudi me, Dómine: * justificatiónes tuas requíram.

Clamávi ad te, salvum me fac; * ut custódiam mandáta tua.

Prævéni in maturitáte, et clamávi, * quia in verba tua supersperávi.

Prævenérunt óculi mei ad te dilúculo, * ut meditárer elóquia tua.

Vocem meam audi secundùm misericórdiam tuam, Dómine, * et secundùm judícium tuum vivífica me.

Appropinquavérunt persequentes me iniquitáti; * à lege autem tua longè facti sunt.

Prope es tu, Dómine; * et omnes viæ tuæ véritas.

Inítio cognóvi de testimóniis tuis, * quia in æternum fundasti ea.

*Verba.*

Vide humilitátem meam, et éripe me; * quia legem tuam non sum oblítus.

Júdica judícium meum, et rédime me: * propter elóquium tuum vivífica me.

Longè à peccatóribus salus, * quia justificatiónes tuas non exquisiérunt.

Misericórdiæ tuæ multæ, Dómine, * secundùm judícium tuum vivífica me.

Multi qui persequuntur me, et tríbulant me; * à testimóniis tuis non declinávi.

Vidi prævaricantes, et tabescébam; * quia elóquia tua non custodiérunt.

Vide quóniam mandáta tua dilexi, Dómine: * in misericórdia tua vivífica me.

Princípium verbórum tuórum, véritas: * in æternum ómnia judícia justítiæ tuæ.

*Divisio* PSALMI 118.

PRINCIPES persecúti sunt me gratis, * et à verbis tuis formidávit cor meum.

Lætábor ego super elóquia tua, * sicut qui invénit spólia multa.

Iniquitátem ódio hábui, et abominátus sum; * legem autem tuam dilexi.

Sépties in die laudem dixi tibi, * super judícia justítiæ tuæ.

Pax multa diligéntibus legem tuam; * et non est illis scándalum.

Expectábam salutáre tuum, Dómine, * et mandáta tua dilexi.

Custodívit ánima mea testimónia tua, * et dilexit ea vehementer.

Servávi mandáta tua et testimónia tua; * quia omnes viæ meæ in conspectu tuo.

Appropinquet deprecátio mea in conspectu tuo, Dómine : * juxta elóquium tuum da mihi intellectum.

Intret postulátio mea in conspectu tuo : * secundùm elóquium tuum éripe me.

Eructábunt lábia mea hymnum, * cùm docuéris me justificatiónes tuas.

Pronuntiábit lingua mea elóquium tuum; * quia ómnia mandáta tua æquitas.

Fiat manus tua ut salvet me : * quóniam mandáta tua elégi.

Concupívi salutáre tuum, Dómine; * et lex tua meditátio mea est.

Vivet ánima mea, et laudábit te; * et judícia tua adjuvábunt me.

Errávi sicut ovis quæ périit : * quære servum tuum, quia mandáta tua non sum oblítus.

## AD VESPERAS.

### Psalmus 109.

Dixit Dóminus Dómino meo : * Sede à dextris meis;

Donec ponam inimícos tuos * scabellum pedum tuórum.

Virgam virtútis tuæ emittet Dóminus ex Sion; * domináre in médio inimicórum tuórum.

Tecum princípium in die virtútis tuæ in splendóribus sanctórum : * ex útero ante lucíferum génui te.

Jurávit Dóminus, et non pœnitébit eum : * Tu es Sacerdos in æternum secundùm órdinem Melchísedech.

Dóminus à dextris tuis, * confrégit in die iræ suæ reges.

Judicábit in natiónibus, implébit ruínas; * conquassábit cápita in terra multórum.

De torrente in via bibet; * proptérea exaltábit caput.

### Psalmus 110.

Confitebor tibi, Dómine, in toto corde meo, * in concílio justórum et congregatióne.

Magna ópera Dómini, * exquisíta in omnes voluntátes ejus.

Conféssio et magnificéntia opus ejus, * et justítia ejus manet in séculum séculi.

Memóriam fecit mirabílium suórum miséricors et miserátor Dóminus : * escam dedit timéntibus se.

Memor erit in séculum testamenti sui : * virtútem óperum suórum annuntiábit pópulo suo;

Ut det illis hæreditátem géntium : * opéra mánuum ejus, véritas et judícium.

Fidélia ómnia mandáta ejus, confirmáta in séculum séculi, * facta in veritáte et æquitáte.

Redemptiónem misit pópulo suo; * mandávit in æternum testamentum suum.

Sanctum et terríbile nomen ejus : * inítium sapiéntiæ timor Dómini.

Intellectus bonus ómnibus faciéntibus eum : * laudátio ejus manet in séculum séculi.

PSALMUS 111.

BEATUS vir qui timet Dóminum, * in mandátis ejus volet nimis.

Potens in terra erit semen ejus: * generátio rectórum benedicétur.

Glória et divítiæ in domo ejus; * et justítia ejus manet in séculum séculi.

Exortum est in ténebris lumen rectis; * miséricors, et miserátor, et justus.

Jucundus homo, qui miserétur et cómmodat, dispónet sermónes suos in judício; * quia in æternum non commovébitur.

In memória æterna erit justus; * ab auditióne mala non timébit.

Parátum cor ejus speráre in Dómino; confirmátum est cor ejus: * non commovébitur, donec despíciat inimícos suos.

Dispersit, dedit paupéribus; * justítia ejus manet in séculum séculi: cornu ejus exaltábitur in glória.

Peccátor vidébit, et irascétur, déntibus suis fremet, et tabescet: * desidérium peccatórum períbit.

PSALMUS 112.

LAUDATE, púeri, Dóminum; * laudáte nomen Dómini.

Sit nomen Dómini benedictum, * ex hoc nunc, et usque in séculum.

A solis ortu usque ad occásum, * laudábile nomen Dómini.

Excelsus super omnes gentes Dóminus, * et super cœlos glória ejus.

Quis sicut Dóminus Deus noster, qui in altis hábitat, * et humília réspicit in cœlo et in terra?

Súscitans à terra ínopem, * et de stércore érigens páuperem.

Ut cóllocet eum cum princípibus, * cum princípibus pópuli sui.

Qui habitáre facit stérilem in domo, * matrem filiórum lætantem.

PSALMUS 113.

IN éxitu Israel de Ægypto, * domûs Jacob de pópulo bárbaro:

Facta est Judæa sanctificátio ejus, * Israel potestas ejus.

Mare vidit, et fugit: * Jordánis conversus est retrorsum.

Montes exultavérunt ut aríetes, * et colles sicut agni óvium.

Quid est tibi, mare, quòd fugisti? * et tu, Jordánis, quia conversus es retrorsum?

Montes, exultastis sicut aríetes? * et colles sicut agni óvium?

A fácie Dómini mota est terra, * à fácie Dei Jacob,

Qui convertit petram in stagna aquárum, * et rupem in fontes aquárum.

Non nobis, Dómine, non nobis, * sed nómini tuo da glóriam super misericórdia tua et veritáte tua:

Nequando dicant gentes: * Ubi est Deus eórum?

Deus autem noster in cœ-

lo; * ómnia quæcumque vóluit, fecit.

Simulácra géntium argentum et aurum, * ópera mánuum hóminum.

Os habent, et non loquentur: * óculos habent, et non vidébunt.

Aures habent, et non áudient; * nares habent, et non odorábunt.

Manus habent, et non palpábunt; pedes habent, et non ambulábunt: * non clamábunt in gútture suo.

Símiles illis fiant qui fáciunt ea, * et omnes qui confídunt in eis.

Domus Israel sperávit in Dómino; * adjútor eórum et protector eórum est.

Domus Aaron sperávit in Dómino; * adjútor eórum et protector eórum est.

Qui timent Dóminum, speravérunt in Dómino; * adjútor eórum et protector eórum est.

Dóminus memor fuit nostrî, * et benedixit nobis.

Benedixit dómui Israel, * benedixit dómui Aaron.

Benedixit ómnibus qui timent Dóminum, * pusillis cum majóribus.

Adjíciat Dóminus super vos, * super vos, et super fílios vestros.

Benedicti vos à Dómino, * qui fecit cœlum et terram.

Cœlum cœli Dómino; * terram autem dedit fíliis hóminum.

Non mórtui laudábunt te, Dómine, * neque omnes qui descendunt in infernum.

Sed nos qui vívimus, benedícimus Dómino, * ex hoc nunc, et usque in séculum.

## AD COMPLETORIUM.

### Psalmus 4.

Cum invocárem, exaudívit me Deus justítiæ meæ: * in tribulatióne dilatasti mihi.

Miserére meî, * et exaudi oratiónem meam.

Fílii hóminum, úsquequo gravi corde? * ut quid dilígitis vanitátem, et quæritis mendácium?

Et scitóte quóniam mirificávit Dóminus sanctum suum: * Dóminus exáudiet me, cùm clamávero ad eum.

Irascímini, et nolíte peccáre: * quæ dícitis in córdibus vestris, in cubílibus vestris compungímini.

Sacrificáte sacrifícium justítiæ, et speráte in Dómino; * multi dicunt: Quis ostendit nobis bona?

Signátum est super nos lumen vultûs tui, Dómine: * dedisti lætítiam in corde meo.

A fructu frumenti, vini, et ólei sui, * multiplicáti sunt.

In pace in idipsum dórmiam, * et requiescam.

Quóniam tu, Dómine, * singuláriter in spe constituisti me.

### Psalmus 90.

Qui hábitat in adjutório Altíssimi, * in protectióne Dei cœli commorábitur.

Dicet Dómino: Susceptor

meus es tu, et refúgium meum: * Deus meus, sperábo in eum;

Quóniam ipse liberávit me de láqueo venántium, * et à verbo áspero.

Scápulis suis obumbrábit tibi, * et sub pennis ejus sperábis.

Scuto circúmdabit te véritas ejus; * non timébis à timóre nocturno,

A sagitta volante in die, à negótio perambulante in ténebris, * ab incursu, et dæmónio meridiáno.

Cadent à látere tuo mille, et decem míllia à dextris tuis; * ad te autem non appropinquábit.

Verúmtamen óculis tuis considerábis, * et retributiónem peccatórum vidébis.

Quóniam tu es, Dómine, spes mea: * Altíssimum posuisti refúgium tuum;

Non accédet ad te malum,* et flagellum non appropinquábit tabernáculo tuo.

Quóniam Angelis suis mandávit de te, * ut custódiant te in ómnibus viis tuis.

In mánibus portábunt te, * ne fortè offendas ad lápidem pedem tuum.

Super áspidem et basiliscum ambulábis, * et conculcábis leónem et dracónem.

Quóniam in me sperávit, liberábo eum: * prótegam eum, quóniam cognóvit nomen meum.

Clamábit ad me, * et ego exáudiam eum.

Cum ipso sum in tribulatióne; * erípiam eum, et glorificábo eum.

Longitúdine diérum replébo eum, * et ostendam illi salutáre meum.

PSALMUS 133.

Ecce nunc benedícite Dóminum, * omnes servi Dómini.

Qui statis in domo Dómini, * in átriis domûs Dei nostri;

In nóctibus extóllite manus vestras in sancta, * et benedícite Dóminum.

Benedícat te Dóminus ex Sion, * qui fecit cœlum et terram.

*In Quadragesima.*

*Ant.* 8. G. Scuto circúmdabit te véritas ejus; non timébis à timóre nocturno. *Ps.* 90.

*Hymnus, etc. ut in Ordinario Breviarii.*

## FERIA SECUNDA.

### AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*In Feriis Quadragesimæ et Passionis, dicuntur, pro unico Nocturno, novem Psalmi ad unamquamque Feriam positi, sub una duntaxat Antiphona, ut in Proprio, post singulos tres Psalmos. In Festis verò novem Lectionum, in Quadragesima occurrentibus, post quemlibet Psalmum, unaquæque dicitur Antiphona ut in Proprio.*

*Tempore verò Paschali, tres tantùm dicuntur Psalmi, eo ordine qui descriptus est in Proprio pro unaquaque die.*

## PRO I NOCTURNO.

### Psalmus 103.

Benedic, ánima mea, Dómino : * Dómine Deus meus, magnificátus es vehementer.

Confessiónem et decórem induisti, * amictus lúmine sicut vestimento;

Extendens cœlum sicut pellem, * qui tegis aquis superióra ejus;

Qui ponis nubem ascensum tuum, * qui ámbulas super pennas ventórum;

Qui facis ángelos tuos spíritus, * et ministros tuos ignem urentem;

Qui fundasti terram super stabilitátem suam : * non inclinábitur in séculum séculi.

Abyssus, sicut vestimentum, amictus ejus; * super montes stabunt aquæ.

Ab increpatióne tua fúgient; * à voce tonítrui tui formidábunt.

Ascendunt montes, et descendunt campi, * in locum quem fundasti eis.

Términum posuisti, quem non transgredientur; * neque convertentur operíre terram.

Qui emittis fontes in convállibus :* inter médium móntium pertransibunt aquæ.

Potábunt omnes béstiæ agri; * expectábunt ónagri in siti sua.

Super ea vólucres cœli habitábunt; * de médio petrárum dabunt voces.

Rigans montes de superióribus suis; * de fructu óperum tuórum satiábitur terra:

Prodúcens fœnum jumentis, * et herbam servit[...] minum.

Ut edúcas panem [...]ra, * et vinum lætific[...] hóminis;

Ut exhílaret fácie[...] óleo, * et panis cor h[...] confirmet.

Saturabuntur ligna [...]pi, * et cedri Líban[...] plantávit.

Illìc pásseres nidificá[...] heródii domus dux e[...]rum.

Montes excelsi cervi[...]tra refúgium herinácii[...]

Fecit lunam in témp[...] sol cognóvit occásum [...]

Posuisti ténebras, e[...] est nox; * in ipsa pe[...] íbunt omnes béstiæ sil[...]

Cátuli leónum rugie[...] ut rápiant, et quærant escam sibi.

Ortus est sol; et cong[...]sunt, * et in cubílibu[...] collocabuntur.

Exíbit homo ad opus s[...] et ad operatiónem sua[...]que ad vésperum.

*Divisio* Psalmi 103

Quam magnificáta sunt [...] tua, Dómine! * ómn[...] sapiéntia fecisti; implé[...] terra possessióne tuâ.

Hoc mare magnum [...] spatiósum mánibus : [...] reptília, quorum non e[...]merus, animália pusill[...] magnis.

Illìc naves pertransíb[...] draco iste quem forma[...] illudendum ei.

Omnia à te expectan[...]des illis escam in témp[...]

Dante te illis, cólligent: * aperiente te manum tuam, ómnia implebuntur bonitáte.

Avertente autem te fáciem, turbabuntur: * áuferes spíritum eórum, et defícient, et in púlverem suum revertentur.

Emittes spíritum tuum, et creabuntur; * et renovábis fáciem terræ.

*Altera divisio* PSALMI 103.

SIT glória Dómini in séculum: * lætábitur Dóminus in opéribus suis:

Qui réspicit terram, et facit eam trémere; * qui tangit montes, et fúmigant.

Cantábo Dómino in vita mea: * psallam Deo meo quámdiu sum.

Jucundum sit ei elóquium meum: * ego verò delectábor in Dómino.

Defíciant peccatóres à terra, et iníqui, ita ut non sint: * bénedic, ánima mea, Dómino.

PRO II NOCTURNO.

PSALMUS 104.

CONFITEMINI Dómino, et invocáte nomen ejus: * annuntiáte inter gentes ópera ejus.

Cantáte ei, et psállite ei: * narráte ómnia mirabília ejus.

Laudámini in nómine sancto ejus: * lætétur cor quæréntium Dóminum.

Quærite Dóminum, et confirmámini; * quærite fáciem ejus semper.

Mementóte mirabílium ejus quæ fecit, * prodígia ejus, et judícia oris ejus,

Semen Abraham servi ejus, * fílii Jacob electi ejus.

Ipse Dóminus Deus noster; * in universa terra judícia ejus.

Memor fuit in séculum testamenti sui; * verbi quod mandávit in mille generatiónes,

Quod dispósuit ad Abraham; * et juramenti sui ad Isaac.

Et státuit illud Jacob in præceptum, * et Israel in testamentum æternum;

Dicens: Tibi dabo terram Chánaan * funículum hæreditátis vestræ;

Cúm essent número brevi, paucíssimi, * et íncolæ ejus.

Et pertransiérunt de gente in gentem, * et de regno ad pópulum álterum.

Non relíquit hóminem nocére eis, * et corrípuit pro eis reges.

Nolíte tángere christos meos, * et in prophétis meis nolíte malignári.

*Divisio* PSALMI 104. Et

VOCAVIT [Dóminus] famem super terram, * et omne firmamentum panis contrívit.

Misit ante eos virum; * in servum venúmdatus est Joseph,

Humiliavérunt in compédibus pedes ejus; * ferrum pertránsiit ánimam ejus:

Donec veníret verbum ejus, * elóquium Dómini inflammávit eum.

Misit rex, et solvit eum: * princeps populórum, et dimísit eum.

Constítuit eum dóminum

domûs suæ, * et príncipem omnis possessiónis suæ;

Ut erudíret príncipes ejus sicut semetipsum, * et senes ejus prudéntiam docéret.

Et intrávit Israel in Ægyptum; * et Jacob áccola fuit in terra Cham.

Et auxit pópulum suum vehementer, * et firmávit eum super inimícos ejus.

Convertit cor eórum, ut odírent pópulum ejus, * et dolum fácerent in servos ejus.

*Altera divisio* Psalmi 104.

Misit [Dóminus] Móysen servum suum, * Aaron quem elégit ipsum.

Pósuit in eis verba signórum suórum, * et prodigiórum in terra Cham.

Misit ténebras, et obscurávit; * et non exacerbávit sermónes suos.

Convertit aquas eórum in sánguinem, * et occídit pisces eórum.

Edidit terra eórum ranas, * in penetrálibus regum ipsórum.

Dixit; et venit cœnomyía, et cínifes * in ómnibus fínibus eórum.

Pósuit plúvias eórum grándinem, * ignem comburentem in terra ipsórum;

Et percussit víneas eórum, et ficúlneas eórum; * et contrívit lignum fínium eórum.

Dixit; et venit locusta et bruchus, * cujus non erat númerus:

Et comédit omne fœnum in terra eórum, * et comédit omnem fructum terræ eórum.

Et percussit omne primogénitum in terra eórum, * primítias omnis labóris eórum.

Et eduxit eos cum argento et auro; * et non erat in tríbubus eórum infirmus.

Lætáta est Ægyptus in profectióne eórum, * quia incúbuit timor eórum super eos.

Expandit nubem in protectiónem eórum, * et ignem ut lucéret eis per noctem.

Petiérunt, et venit coturnix; * et pane cœli saturávit eos.

Dirúpit petram, et fluxérunt aquæ: * abiérunt in sicco flúmina;

Quóniam memor fuit verbi sancti sui, * quod hábuit ad Abraham púerum suum.

Et eduxit pópulum suum in exultatióne, * et electos suos in lætítia.

Et dedit illis regiónes géntium: * et labóres populórum possedérunt;

Ut custódiant justificatiónes ejus, * et legem ejus requírant.

## PRO III NOCTURNO.

Psalmus 105.

Confitemini Dómino, quóniam bonus, * quóniam in séculum misericórdia ejus.

Quis loquétur poténtias Dómini, * audítas fáciet omnes laudes ejus?

Beáti qui custódiunt judícium, * et fáciunt justítiam in omni témpore.

Memento nostrî, Dómine, in beneplácito pópuli tui: * vísita nos in salutári tuo,

Ad

Ad videndum in bonitáte electórum tuórum, ad lætandum in lætítia gentis tuæ; * ut laudéris cum hæreditáte tua.

*Divisio* PSALMI 105.

PECCAVIMUS cum pátribus nostris; * injustè égimus, iniquitátem fécimus.

Patres nostri in Ægypto non intellexérunt mirabília tua: * non fuérunt mémores multitúdinis misericórdiæ tuæ.

Et irritavérunt ascendentes in mare, * mare Rubrum.

Et salvávit eos propter nomen suum, * ut notam fáceret poténtiam suam.

Et incrépuit mare Rubrum, et exsiccátum est; * et deduxit eos in abyssis, sicut in deserto.

Et salvávit eos de manu odiéntium, * et redémit eos de manu inimíci.

Et opéruit aqua tribulantes eos: * unus ex eis non remansit.

Et credidérunt verbis ejus, * et laudavérunt laudem ejus.

Citò fecérunt, oblíti sunt óperum ejus, * et non sustinuérunt consílium ejus;

Et concupiérunt concupiscéntiam in deserto, * et tentavérunt Deum in inaquóso.

Et dedit eis petitiónem ipsórum, * et misit saturitátem in ánimas eórum.

Et irritavérunt Móysen in castris, * Aaron sanctum Dómini.

Aperta est terra, et deglutívit Dathan, * et opéruit super congregatiónem Abiron.

Et exarsit ignis in synagóga eórum; * flamma combussit peccatóres.

Et fecérunt vítulum in Horeb, * et adoravérunt scúlptile;

Et mutavérunt glóriam suam * in similitúdinem vítuli comedentis fœnum.

Oblíti sunt Deum qui salvávit eos; * qui fecit magnália in Ægypto, mirabília in terra Cham, terribília in mari Rubro.

Et dixit ut dispérderet eos, si non Móyses electus ejus stetisset in confractióne, in conspectu ejus, * ut avérteret iram ejus, ne dispérderet eos.

Et pro níhilo habuérunt terram desiderábilem; * non credidérunt verbo ejus.

Et murmuravérunt in tabernáculis suis; * non exaudiérunt vocem Dómini.

Et elevávit manum suam super eos, * ut prostérneret eos in deserto;

Et ut dejíceret semen eórum in natiónibus, * et dispérgeret eos in regiónibus.

Et initiáti sunt Beélphegor, * et comedérunt sacrifícia mortuórum.

Et irritavérunt eum in adinventiónibus suis; * et multiplicáta est in eis ruína.

Et stetit Phínees, et placávit; * et cessávit quassátio.

Et reputátum est ei in justítiam, * in generatiónem et generatiónem usque in sempiternum.

Et irritavérunt eum ad aquas contradictiónis; * et vexátus est Móyses propter eos;

Quia exacerbavérunt spíritum ejus; * et distinxit in lábiis suis.

*Altera divisio* PSALMI 105.

NON disperdidérunt gentes,* quas dixit Dóminus illis.

Et commixti sunt inter gentes, * et didicérunt ópera eórum.

Et serviérunt sculptílibus eórum; * et factum est illis in scándalum.

Et immolavérunt fílios suos * et fílias suas dæmóniis.

Et effudérunt sánguinem innocentem, * sánguinem filiórum suórum, et filiárum suárum, quas sacrificavérunt sculptílibus Chánaan.

Et infecta est terra in sanguínibus, et contamináta est in opéribus eórum; * et fornicáti sunt in adinventiónibus suis.

Et irátus est furóre Dóminus in pópulum suum, * et abominátus est hæreditátem suam.

Et trádidit eos in manus géntium; * et domináti sunt eórum qui odérunt eos.

Et tribulavérunt eos inimíci eórum; * et humiliáti sunt sub mánibus eórum.

Sæpe liberávit eos; * ipsi autem exacerbavérunt eum in consílio suo, et humiliáti sunt in iniquitátibus suis.

Et vidit, cùm tribularentur; * et audívit oratiónem eórum;

Et memor fuit tes[illegible] sui, * et pœnítuit e[illegible] cundùm multitúdine[illegible] sericórdiæ suæ.

Et dedit eos in mi[illegible] dias, * in conspectu ó[illegible] qui céperant eos.

Salvos nos fac, [illegible] Deus noster; * et có[illegible] nos de natiónibus:

Ut confiteámur [illegible] sancto tuo, * et glorié[illegible] laude tua.

Benedictus Dómin[illegible] Israel à século, et us[illegible] séculum; * et dicet pópulus: Fiat, fiat.

## AD LAUDES.

PSALMUS 91.

BONUM est confitéri [illegible]no, * et psállere nómi[illegible] Altíssime,

Ad annuntiandum misericórdiam tuam, [illegible] ritátem tuam per noct[illegible]

In decachordo psalt[illegible] cum cántico in cíthar[illegible]

Quia delectasti me [illegible]mine, in factúra tua in opéribus mánuum t[illegible] exultábo.

Quàm magnificáta ópera tua, Dómine! * profundæ factæ sunt [illegible]tiónes tuæ.

Vir insípiens non c[illegible]cet, * et stultus non i[illegible]get hæc;

Cùm exorti fúerint [illegible]tóres sicut fœnum, et [illegible] rúerint omnes qui ope[illegible] iniquitátem,* ut intére[illegible] séculum séculi.

Tu autem Altíssimus * in æternum, Dómine.

Quóniam ecce inimíci tui, Dómine, quóniam ecce inimíci tui períbunt, * et dispergentur omnes qui operantur iniquitátem.

Et exaltábitur sicut unicornis cornu meum, * et senectus mea in misericórdia úberi.

Et despexit óculus meus inimícos meos, * et in insurgéntibus in me malignántibus áudiet auris mea.

Justus ut palma florébit, * sicut cedrus Líbani multiplicábitur.

Plantáti in domo Dómini, * in átriis domûs Dei nostri florébunt.

Adhuc multiplicabuntur in senecta úberi, * et bene patientes erunt;

Ut annúntient quóniam rectus Dóminus Deus noster, * et non est iníquitas in eo.

PSALMUS 135.

CONFITEMINI Dómino, quóniam bonus, * quóniam in æternum misericórdia ejus.

Confitémini Deo deórum, * quóniam in æternum misericórdia ejus.

Confitémini Dómino dominórum, * quóniam in æternum misericórdia ejus;

Qui facit mirabília magna solus, * quóniam in æternum misericórdia ejus;

Qui fecit cœlos in intellectu, * quóniam in æternum misericórdia ejus.

Qui firmávit terram super aquas, * quóniam in æternum misericórdia ejus;

Qui fecit luminária magna, * quóniam in æternum misericórdia ejus;

Solem in potestátem diéi, * quóniam in æternum misericórdia ejus;

Lunam et stellas in potestátem noctis, * quóniam in æternum misericórdia ejus.

[*Divisio* PSALMI 135.

CONFITEMINI Dómino, quóniam bonus, * quóniam in æternum misericórdia ejus;]

Qui percussit Ægyptum cum primogénitis eórum, * quóniam in æternum misericórdia ejus;

Qui eduxit Israel de médio eórum, * quóniam in æternum misericórdia ejus;

In manu potenti, et bráchio excelso, * quóniam in æternum misericórdia ejus;

Qui divísit mare Rubrum in divisiónes, * quóniam in æternum misericórdia ejus;

Et eduxit Israel per médium ejus, * quóniam in æternum misericórdia ejus;

Et excussit Pharaónem et virtútem ejus in mari Rubro, * quóniam in æternum misericórdia ejus;

Qui traduxit pópulum suum per desertum, * quóniam in æternum misericórdia ejus;

Qui percussit reges magnos, * quóniam in æternum misericórdia ejus;

Et occídit reges fortes, * quóniam in æternum misericórdia ejus;

Sehon regem Amorrhæórum, * quóniam in æternum misericórdia ejus;

Et Og regem Basan, * quóniam in æternum misericórdia ejus;

. Et dedit terram eórum hæreditátem, * quóniam in æternum misericórdia ejus;

Hæreditátem Israel servo suo, * quóniam in æternum misericórdia ejus;

Quia in humilitáte nostra memor fuit nostri, * quóniam in æternum misericórdia ejus;

Et redémit nos ab inimícis nostris, * quóniam in æternum misericórdia ejus;

Qui dat escam omni carni,* quóniam in æternum misericórdia ejus.

Confitémini Deo cœli, * quóniam in æternum misericórdia ejus.

Confitémini Dómino dominórum, * quóniam in æternum misericórdia ejus.

*In Quadragesima.*

CANTICUM MOYSI. *Exod.* 15.

CANTEMUS Dómino; gloriósè enim magnificátus est: * equum et ascensórem dejécit in mare.

Fortitúdo mea et laus mea Dóminus, * et factus est mihi in salútem.

Iste Deus meus, et glorificábo eum: * Deus patris mei, et exaltábo eum.

Dóminus quasi vir pugnátor; * Omnípotens, nomen ejus.

Currus Pharaónis et exércitum ejus projécit in mare: * electi príncipes ejus submersi sunt in mari Rubro.

Abyssi operuérunt eos; * descendérunt in prof quasi lapis.

Déxtera tua, Dómi gnificáta est in fortitú déxtera tua, Dómine cussit inimícum.

Et in multitúdine tuæ deposuisti adve tuos; * misisti iram tu devorávit eos sicut sti

Et in spíritu furó congregátæ sunt aquæ tit unda fluens; cong sunt abyssi in médio r

Dixit inimícus: Pérs et comprehendam; dam spólia, implébitur mea:

Evaginábo gládium m interfíciet eos manus r

Flavit spíritus tuus, ruit eos mare; * submer quasi plumbum in aq heméntibus.

Quis símilis tuî in fó Dómine? * quis símili magníficus in sanctitát ríbilis atque laudábili ciens mirabília?

Extendisti manum t et devorávit eos terra.

Dux fuisti in miseri tua pópulo quem reden et portasti eum in forti tua ad habitáculum sa tuum.

Ascendérunt pópul iráti sunt: * dolóres nuérunt habitatóres I thiim.

Tunc conturbáti sunt cipes Edom; robustos obtínuit tremor: * ob runt omnes habitatóres naan.

Irruat super eos formído et pavor : * in magnitúdine bráchii tui fiant immóbiles quasi lapis;

Donec pertránseat pópulus tuus, Dómine, * donec pertránseat pópulus tuus iste quem possedisti.

Introdúces eos, et plantábis in monte hæreditátis tuæ, * firmíssimo habitáculo tuo quod operátus es, Dómine,

Sanctuárium tuum, Dómine, * quod firmavérunt manus tuæ.

Dóminus regnábit * in ætérnum et ultrà.

*Tempore Paschali.*

CANTICUM. *Eccli.* 39.

COLLAUDATE cánticum, * et benedícite Dóminum in opéribus suis.

Date nómini ejus magnificéntiam, * et confitémini illi in voce labiórum vestrórum, et in cánticis labiórum, et cítharis;

Et sic dicétis in confessióne : * Opera Dómini universa bona valde.

In verbo ejus stetit aqua sicut congéries : * et in sermóne oris illíus sicut exceptória aquárum :

Quóniam in præcepto ipsíus placor fit, * et non est minorátio in salúte ipsíus.

Opera omnis carnis coram illo, * et non est quidquam abscónditum ab óculis ejus.

A século usque in séculum réspicit, * et nihil est mirábile in conspectu ejus.

PSALMUS 134.

LAUDATE nomen Dómini; * laudáte, servi, Dóminum :

Qui statis in domo Dómini, * in átriis domûs Dei nostri.

Laudáte Dóminum, quia bonus Dóminus : * psállite nómini ejus, quóniam suáve;

Quóniam Jacob elégit sibi Dóminus, * Israel in possessiónem sibi.

Quia ego cognóvi quòd magnus est Dóminus, * et Deus noster præ ómnibus diis.

Omnia quæcumque vóluit, Dóminus fecit, * in cœlo, in terra, in mari, et in ómnibus abyssis.

Edúcens nubes ab extrémo terræ; * fúlgura in plúviam fecit :

Qui prodúcit ventos de thesauris suis; * qui percussit primogénita Ægypti ab hómine usque ad pecus :

Et misit signa et prodígia in médio tuî, Ægypte, * in Pharaónem, et in omnes servos ejus;

Qui percussit gentes multas, * et occídit reges fortes :

Sehon regem Amorrhæórum, et Og regem Basan, * et ómnia regna Chánaan.

Et dedit terram eórum hæreditátem, * hæreditátem Israel pópulo suo.

Dómine, nomen tuum in ætérnum : * Dómine, memoriále tuum in generatiónem et generatiónem.

Quia judicábit Dóminus pópulum suum, * et in servis suis deprecábitur.

Simulácra géntium argentum et aurum, * ópera mánuum hóminum.

Os habent, et non loquentur; * óculos habent, et non vidébunt :

Aures habent, et non áudient; * neque enim est spíritus in ore ipsórum.

Símiles illis fiant qui fáciunt ea, * et omnes qui confídunt in eis.

Domus Israel, benedícite Dómino : * domus Aaron, benedícite Dómino.

Domus Levi, benedícite Dómino : * qui timétis Dóminum, benedícite Dómino.

Benedictus Dóminus ex Sion, * qui hábitat in Jérusalem.

## AD PRIMAM.

### Psalmus 8.

Domine Dóminus noster, * quàm admirábile est nomen tuum in universa terra!

Quóniam eleváta est magnificéntia tua * super cœlos.

Ex ore infántium et lacténtium perfecisti laudem propter inimícos tuos, * ut déstruas inimícum et ultórem.

Quóniam vidébo cœlos tuos, ópera digitórum tuórum; * lunam et stellas, quæ tu fundasti :

Quid est homo, quod memor es ejus? * aut fílius hóminis, quóniam vísitas eum?

Minuisti eum paulò minùs ab Angelis, glóriâ et honóre coronasti eum, * et constituisti eum super ópera mánuum tuárum.

Omnia subjecisti sub pédibus ejus, * oves et boves universas, ínsuper et pécora campi,

Vólucres cœli, * et pisces maris qui perámbulant sémitas maris.

Dómine Dóminus noster, * quàm admirábile est nomen tuum in universa terra!

### Psalmus 76.

Voce meâ ad Dóminum clamávi; * voce meâ ad Deum, et intendit mihi.

In die tribulatiónis meæ Deum exquisívi : mánibus meis nocte contra eum; * et non sum deceptus.

Rénuit consolári ánima mea : * memor fui Dei, et delectátus sum, et exercitátus sum; et defécit spíritus meus.

Anticipavérunt vigílias óculi mei; * turbátus sum, et non sum locútus.

Cogitávi dies antíquos; * et annos ætérnos in mente hábui.

Et meditátus sum nocte cum corde meo; * et exercitábar, et scopébam spíritum meum.

Numquid in æternum projíciet Deus? * aut non appónet ut complacítior sit adhuc?

Aut in finem misericórdiam suam abscindet, * à generatióne in generatiónem?

Aut obliviscétur miseréri Deus? * aut continébit in ira sua misericórdias suas?

Et dixi : Nunc cœpi : * hæc mutátio déxteræ Excelsi.

### *Divisio* Psalmi 76.

Memor fui óperum Dómini; * quia memor ero ab inítio mirabílium tuórum;

Et meditábor in ómnibus opéribus tuis, * et in adinventiónibus tuis exercébor.

Deus, in sancto via tua; * quis Deus magnus sicut Deus noster?

Tu es Deus qui facis mirabília; * notam fecisti in pópulis virtútem tuam.

Redemisti in bráchio tuo pópulum tuum, * filios Jacob et Joseph.

Vidérunt te aquæ, Deus, vidérunt te aquæ, et timuérunt; * et turbátæ sunt abyssi.

Multitúdo sónitûs aquárum; * vocem dedérunt nubes.

Etenim sagittæ tuæ tránseunt; * vox tonítrui tui in rota.

Illuxérunt coruscatiónes tuæ orbi terræ; * commóta est et contrémuit terra.

In mari via tua, et sémitæ tuæ in aquis multis; * et vestígia tua non cognoscentur.

Deduxisti sicut oves pópulum tuum * in manu Móysi et Aaron.

## AD TERTIAM.

### Psalmus 24.

Ad te, Dómine, levávi ánimam meam; * Deus meus, in te confído, non erubescam.

Neque irrídeant me inimíci mei; * étenim universi qui sústinent te, non confundentur.

Confundantur omnes iníqua agentes * supervácuè.

Vias tuas, Dómine, demonstra mihi; * et sémitas tuas édoce me.

Dírige me in veritáte tua, et doce me; * quia tu es Deus salvátor meus, et te sustínui totâ die.

Reminíscere miseratiónum tuárum, Dómine, * et misericordiárum tuárum quæ à século sunt.

Delicta juventútis meæ * et ignorántias meas ne memíneris.

Secundùm misericórdiam tuam memento meî tu, * propter bonitátem tuam, Dómine.

Dulcis et rectus Dóminus; * propter hoc legem dabit delinquéntibus in via:

Díriget mansuétos in judício; * docébit mites vias suas.

Universæ viæ Dómini, misericórdia et véritas, * requiréntibus testamentum ejus et testimónia ejus.

Propter nomen tuum, Dómine, propitiáberis peccáto meo; * multum est enim.

### *Divisio* Psalmi 24.

Quis est homo qui timet Dóminum? * legem státuit ei in via quam elégit.

Anima ejus in bonis demorábitur, * et semen ejus hæreditábit terram.

Firmamentum est Dóminus timéntibus eum; * et testamentum ipsíus, ut manifestétur illis.

Oculi mei semper ad Dóminum, * quóniam ipse evellet de láqueo pedes meos.

Réspice in me, et miserére meî, * quia únicus et pauper sum ego.

Tribulatiónes cordis mei

multiplicátæ sunt: * de necessitátibus meis érue me.

Vide humilitátem meam, et labórem meum, * et dimitte universa delicta mea:

Réspice inimícos meos, quóniam multiplicáti sunt, * et ódio iníquo odérunt me.

Custódi ánimam meam, et érue me; * non erubescam, quóniam sperávi in te.

Innocentes et recti adhæsérunt mihi,* quia sustínui te.

Líbera, Deus, Israel * ex ómnibus tribulatiónibus suis.

PSALMUS 95.

CANTATE Dómino cánticum novum; * cantáte Dómino, omnis terra.

Cantáte Dómino, et benedícite nómini ejus: * annuntiáte de die in diem salutáre ejus.

Annuntiáte inter gentes glóriam ejus, * in ómnibus pópulis mirabília ejus;

Quóniam magnus Dóminus, et laudábilis nimis; * terríbilis est super omnes deos.

Quóniam omnes dii géntium dæmónia; * Dóminus autem cœlos fecit.

Conféssio et pulcritúdo in conspectu ejus; * sanctimónia et magnificéntia in sanctificatióne ejus.

Afferte Dómino, pátriæ géntium, afferte Dómino glóriam et honórem: * afferte Dómino glóriam nómini ejus.

Tóllite hóstias, et introíte in átria ejus: * adoráte Dóminum in átrio sancto ejus.

Commoveátur à fácie ejus universa terra; * dícite in géntibus quia Dóminus regnávit.

Etenim correxit orbem terræ, qui non commovébitur:* judicábit pópulos in æquitáte.

Lætentur cœli, et exultet terra; commoveátur mare et plenitúdo ejus; * gaudébunt campi, et ómnia quæ in eis sunt.

Tunc exultábunt ómnia ligna silvárum à fácie Dómini, quia venit; * quóniam venit judicáre terram.

Judicábit orbem terræ in æquitáte, * et pópulos in veritáte sua.

## AD SEXTAM.

PSALMUS 46.

OMNES gentes, pláudite mánibus: * jubiláte Deo in voce exultatiónis;

Quóniam Dóminus excelsus, terríbilis: * Rex magnus super omnem terram.

Subjécit pópulos nobis, * et gentes sub pédibus nostris.

Elégit nobis hæreditátem suam, * spéciem Jacob quam diléxit.

Ascendit Deus in júbilo, * et Dóminus in voce tubæ.

Psállite Deo nostro, psállite; * psállite Regi nostro, psállite.

Quóniam rex omnis terræ Deus, * psállite sapienter.

Regnábit Deus super gentes: * Deus sedet super sedem sanctam suam.

Príncipes populórum congregáti sunt cum Deo Abraham; * quóniam dii fortes terræ vehementer eleváti sunt.

Psalmus 97.

Cantate Dómino cánticum novum,* quia mirabília fecit.

Salvávit sibi déxtera ejus,* et bráchium sanctum ejus.

Notum fecit Dóminus salutáre suum; * in conspectu géntium revelávit justítiam suam.

Recordátus est misericórdiæ suæ, * et veritátis suæ dómui Israel.

Vidérunt omnes términi terræ * salutáre Dei nostri.

Jubiláte Deo, omnis terra :* cantáte, et exultáte, et psállite.

Psállite Dómino in cíthara,* in cíthara, et voce psalmi;

In tubis ductílibus, et voce tubæ córneæ : * jubiláte in conspectu regis Dómini.

Moveátur mare, et plenitúdo ejus; * orbis terrárum, et qui hábitant in eo.

Flúmina plaudent manu; simul montes exultábunt à conspectu Dómini, * quóniam venit judicáre terram.

Judicábit orbem terrárum in justítia, * et pópulos in æquitáte.

Psalmus 98.

Dominus regnávit, irascantur pópuli; * qui sedet super Chérubim, moveátur terra.

Dóminus in Sion magnus,* et excelsus super omnes pópulos.

Confiteantur nómini tuo magno, quóniam terríbile et sanctum est; * et honor regis judícium díligit.

Tu parasti directiónes : * judícium et justítiam in Jacob tu fecisti.

Exaltáte Dóminum Deum nostrum, et adoráte scabellum pedum ejus; * quóniam sanctum est.

Móyses et Aaron in sacerdótibus ejus;* et Sámuel inter eos qui ínvocant nomen ejus.

Invocábant Dóminum, et ipse exaudiébat eos :* in columna nubis loquebátur ad eos.

Custodiébant testimónia ejus, * et præceptum quod dedit illis.

Dómine Deus noster, tu exaudiébas eos : * Deus, tu propítius fuisti eis, et ulciscens in omnes adinventiónes eórum.

Exaltáte Dóminum Deum nostrum, et adoráte in monte sancto ejus; * quóniam sanctus Dóminus Deus noster.

## AD NONAM.

Psalmus 52.

Dixit insípiens in corde suo : * Non est Deus.

Corrupti sunt et abominábiles facti sunt in iniquitátibus : * non est qui fáciat bonum.

Deus de cœlo prospexit super fílios hóminum, * ut vídeat si est intélligens, aut requírens Deum.

Omnes declinavérunt, simul inútiles facti sunt :* non est qui fáciat bonum; non est usque ad unum.

Nonne scient omnes qui operantur iniquitátem, * qui dévorant plebem meam ut cibum panis?

Deum non invocavérunt : *

illic trepidavérunt timóre, ubi non erat timor.

Quóniam Deus dissipávit ossa eórum qui homínibus placent: * confúsi sunt, quóniam Deus sprevit eos.

Quis dabit ex Sion salutáre Israel? * cùm convérterit Deus captivitátem plebis suæ, exultábit Jacob, et lætábitur Israel.

PSALMUS 72.

QUAM bonus Israel Deus * his qui recto sunt corde!

Mei autem penè moti sunt pedes, * penè effúsi sunt gressus mei;

Quia zelávi super iníquos, * pacem peccatórum videns.

Quia non est respectus morti eórum, * et firmamentum in plaga eórum.

In labóre hóminum non sunt, * et cum homínibus non flagellabuntur.

Ideo ténuit eos supérbia; * operti sunt iniquitáte et impietáte suâ.

Pródiit quasi ex ádipe iníquitas eórum; * transiérunt in affectum cordis.

Cogitavérunt et locúti sunt nequítiam; * iniquitátem in excelso locúti sunt.

Posuérunt in cœlum os suum, * et lingua eórum transívit in terra.

Ideo convertétur pópulus meus hic; * et dies pleni invenientur in eis.

Et dixérunt: Quómodo scit Deus? * et, Si est sciéntia in Excélso?

Ecce ipsi peccatóres, et abundantes in século, * obtinuérunt divítias.

Et dixi: Ergo sine causa justificávi cor meum, * et lavi inter innocentes manus meas;

Et fui flagellátus totâ die, * et castigátio mea in matutínis.

Si dicébam: Narrábo sic, * ecce natiónem filiórum tuórum reprobávi.

Existimábam ut cognóscerem hoc: * labor est ante me;

Donec intrem in sanctuárium Dei, * et intélligam in novíssimis eórum.

Verúmtamen propter dolos posuisti eis; * dejecisti eos, dum allevarentur.

Quómodo facti sunt in desolatiónem, * súbitò defecérunt; periérunt propter iniquitátem suam.

Velut sómnium surgéntium, Dómine, * in civitáte tua imáginem ipsórum ad níhilum rédiges;

Quia inflammátum est cor meum, et renes mei commutáti sunt; * et ego ad níhilum redactus sum, et nescívi.

Ut jumentum factus sum apud te, * et ego semper tecum.

*Divisio* PSALMI 72.

TENUISTI [Dómine] manum déxteram meam, et in voluntáte tua deduxisti me, * et cum glória suscepisti me.

Quid enim mihi est in cœlo? * et à te quid vólui super terram?

Defécit caro mea, et cor meum; * Deus cordis mei, et pars mea Deus in æternum.

Quia ecce qui elongant se à te, períbunt; * perdidisti omnes qui fornicantur abs te.

Mihi autem adhærére Deo bonum est; * pónere in Dómino Deo spem meam :

Ut annúntiem omnes prædicatiónes tuas, * in portis fíliæ Sion.

## AD VESPERAS.

### Psalmus 114.

Dilexi; * quóniam exáudiet Dóminus vocem oratiónis meæ.

Quia inclinávit aurem suam mihi, * et in diébus meis invocábo.

Circumdedérunt me dolóres mortis, * et perícula inferni invenérunt me.

Tribulatiónem et dolórem invéni, et nomen Dómini invocávi.

O Dómine, líbera ánimam meam : * miséricors Dóminus, et justus, et Deus noster miserétur.

Custódiens párvulos Dóminus; * humiliátus sum, et liberávit me.

Convértere, ánima mea, in réquiem tuam; * quia Dóminus benefécit tibi;

Quia erípuit ánimam meam de morte, * óculos meos à lácrymis, pedes meos à lapsu.

Placébo Dómino * in regióne vivórum.

### Psalmus 120.

Levavi óculos meos in montes, * unde véniet auxílium mihi.

Auxílium meum à Dómino, * qui fecit cœlum et terram.

Non det in commotiónem pedem tuum, * neque dormítet qui custódit te.

Ecce non dormitábit neque dórmiet, * qui custódit Israel.

Dóminus custódit te; Dóminus protéctio tua, * super manum déxteram tuam.

Per diem sol non uret te, * neque luna per noctem.

Dóminus custódit te ab omni malo : * custódiat ánimam tuam Dóminus.

Dóminus custódiat intróitum tuum et éxitum tuum, * ex hoc nunc, et usque in séculum.

### Psalmus 123.

Nisi quia Dóminus erat in nobis, dicat nunc Israel; * nisi quia Dóminus erat in nobis,

Cùm exúrgerent hómines in nos, * fortè vivos deglutissent nos;

Cùm irascerétur furor eórum in nos, * fórsitan aqua absorbuisset nos.

Torrentem pertransívit ánima nostra, * fórsitan pertransisset ánima nostra aquam intolerábilem.

Benedictus Dóminus, * qui non dedit nos in captiónem déntibus eórum.

Anima nostra sicut passer erepta est * de láqueo venántium.

Láqueus contrítus est; * et nos liberáti sumus.

Adjutórium nostrum in nómine Dómini, * qui fecit cœlum et terram.

Psalmus 125.

In convertendo Dóminus captivitátem Sion, * facti sumus sicut consoláti.

Tunc replétum est gáudio os nostrum, * et lingua nostra exultatióne.

Tunc dicent inter gentes: * Magnificávit Dóminus fácere cum eis.

Magnificávit Dóminus fácere nobiscum: * facti sumus lætantes.

Converte, Dómine, captivitátem nostram, * sicut torrens in austro.

Qui séminant in lácrymis, * in exultatióne metent.

Euntes ibant et flebant, * mittentes sémina sua,

Venientes autem vénient cum exultatióne, * portantes manípulos suos.

Psalmus 136.

Super flúmina Babylónis illìc sédimus, * et flévimus cùm recordarémur Sion.

In salícibus in médio ejus, * suspéndimus órgana nostra;

Quia illìc interrogavérunt nos, qui captívos duxérunt nos, * verba cantiónum;

Et qui abduxérunt nos: * Hymnum cantáte nobis de cánticis Sion.

Quómodo cantábimus cánticum Dómini * in terra aliéna?

Si oblítus fúero tuî, Jerúsalem, * oblivióni detur déxtera mea.

Adhæreat lingua mea fáucibus meis, * si non meminero tuî;

Si non proposúero Jerúsalem * in princípio lætítiæ meæ.

Memor esto, Dómine, filiórum Edom, * in die Jerúsalem;

Qui dicunt: Exinaníte, exinaníte * usque ad fundamentum in ea.

Fília Babylónis mísera, * beátus qui retríbuet tibi retributiónem tuam, quam retribuisti nobis.

Beátus qui tenébit, * et allídet párvulos tuos ad petram.

## AD COMPLETORIUM.

Psalmus 6.

Dómine, ne in furóre tuo árguas me, * neque in ira tua corrípias me.

Miserére meî, Dómine, quóniam infirmus sum: * sana me, Dómine, quóniam conturbáta sunt ossa mea.

Et ánima mea turbáta est valde; * sed tu, Dómine, úsquequo?

Convértere, Dómine, et éripe ánimam meam: * salvum me fac propter misericórdiam tuam.

Quóniam non est in morte, qui memor sit tuî: * in inferno autem quis confitébitur tibi?

Laborávi in gémitu meo; lavábo per síngulas noctes lectum meum: * lácrymis meis stratum meum rigábo.

Turbátus est à furóre óculus meus; * inveterávi inter omnes inimícos meos.

Discédite à me, omnes qui operámini iniquitátem; * quóniam exaudívit Dóminus vocem fletûs mei.

Exaudívit Dóminus deprecatiónem meam :* Dóminus oratiónem meam suscépit.

Erubescant et conturbentur vehementer omnes inimíci mei :* convertantur et erubescant valde velóciter.

PSALMUS 7.

DOMINE Deus meus, in te sperávi :* salvum me fac ex ómnibus persequéntibus me, et líbera me.

Nequando rápiat ut leo ánimam meam ;* dum non est qui rédimat, neque qui salvum fáciat.

Dómine Deus meus, si feci istud ;* si est iníquitas in mánibus meis ;

Si réddidi retribuéntibus mihi mala ;* décidam méritò ab inimícis meis inánis :

Persequátur inimícus ánimam meam, et comprehendat, et conculcet in terra vitam meam, *et glóriam meam in púlverem dedúcat.

Exurge, Dómine, in ira tua,* et exaltáre in fínibus inimícorum meórum.

Et exurge, Dómine Deus meus, * in præcepto quod mandasti.

Et synagóga populórum circúmdabit te ;* et propter hanc in altum regrédere.

Dóminus júdicat pópulos :* júdica me, Dómine, secundùm justítiam meam, et secundùm innocéntiam meam super me.

Consumétur nequítia peccatórum ;* et díriges justum, scrutans corda et renes, Deus.

Justum adjutórium meum à Dómino, * qui salvos facit rectos corde.

*Divisio* PSALMI 7.

DEUS judex justus, fortis et pátiens ;* numquid iráscitur per síngulos dies?

Nisi conversi fuéritis, gládium suum vibrábit :* arcum suum tetendit, et parávit illum.

Et in eo parávit vasa mortis;* sagittas suas ardéntibus effécit.

Ecce partúriit injustítiam ; concépit dolórem,* et péperit iniquitátem.

Lacum apéruit, et effódit eum ;* et íncidit in fóveam quam fecit.

Convertétur dolor ejus in caput ejus ;* et in vérticem ipsíus iníquitas ejus descendet.

Confitébor Dómino secundùm justítiam ejus,* et psallam nómini Dómini altíssimi.

*In Quadragesima.*

*Ant.* 2. D. Justum adjutórium meum à Domino, qui salvos facit rectos corde. *Ps.* 7.

## FERIA TERTIA.

### AD OFFICIUM NOCTURNUM.

### PRO I NOCTURNO.

PSALMUS 14.

DOMINE, quis habitábit in tabernáculo tuo?* aut quis requiescet in monte sancto tuo?

Qui ingréditur sine mácula,* et operátur justítiam ;

Qui lóquitur veritátem in corde suo ;* qui non egit dolum in lingua sua :

Nec fecit próximo suo malum,* et oppróbrium non ac-

cépit adversùs próximos suos:

Ad níhilum deductus est in conspectu ejus malignus; * timentes autem Dóminum glorificat:

Qui jurat próximo suo, et non décipit; * qui pecúniam suam non dedit ad usúram, et múnera super innocentem non accépit.

Qui facit hæc, * non movébitur in æternum.

PSALMUS 18.

CŒLI enarrant glóriam Dei,* et ópera mánuum ejus annúntiat firmamentum.

Dies diéi eructat verbum,* et nox nocti índicat sciéntiam.

Non sunt loquélæ, neque sermónes, * quorum non audiantur voces eórum.

In omnem terram exívit sonus eórum, et in fines orbis terræ verba eórum: * in sole pósuit tabernáculum suum.

Et ipse tanquam sponsus procédens de thálamo suo; * exultávit ut gigas ad currendam viam.

A summo cœlo egréssio ejus, et occursus ejus usque ad summum ejus; * nec est qui se abscondat à calóre ejus.

*Divisio* PSALMI 18.

LEX Dómini immaculáta, convertens ánimas: * testimónium Dómini fidéle, sapiéntiam præstans párvulis.

Justítiæ Dómini rectæ, lætificantes corda: * præceptum Dómini lúcidum, illúminans óculos.

Timor Dómini sanctus, pérmanens in séculum séculi: * judícia Dómini vera, justificáta in semetipsa.

Desiderabília super aurum et lápidem pretiósum multum, * et dulcióra super mel et favum.

Etenim servus tuus custódit ea: * in custodiendis illis retribútio multa.

Delicta quis intélligit? * ab occultis meis munda me, et ab aliénis parce servo tuo.

Si meî non fúerint domináti, * tunc immaculátus ero, et emundábor à delicto máximo.

Et erunt ut compláceant elóquia oris mei, * et meditátio cordis mei in conspectu tuo semper.

Dómine, adjútor meus, * et redemptor meus.

PRO II NOCTURNO.

PSALMUS 71.

DEUS, judícium tuum regi da, * et justítiam tuam fílio regis;

Judicáre pópulum tuum in justítia, * et páuperes tuos in judício.

Suscípiant montes pacem pópulo, * et colles justítiam.

Judicábit páuperes pópuli, et salvos fáciet fílios páuperum, * et humiliábit calumniatórem.

Et permanébit cum sole et ante lunam, * in generatióne et generatiónem.

Descendet sicut plúvia in vellus, * et sicut stillicídia stillántia super terram.

Oriétur in diébus ejus justítia, et abundántia pacis, * donec auferátur luna.

Et dominábitur à mari usque ad mare, * et à flúmine usque ad términos orbis terrárum.

Coram illo prócident Æthíopes, * et inimíci ejus terram lingent.

*Divisio* Psalmi 71.

Reges Tharsis et ínsulæ múnera ófferent; * reges Arabum et Saba dona addúcent.

Et adorábunt eum omnes reges terræ: * omnes gentes sérvient ei;

Quia liberábit páuperem à potente, * et páuperem cui non erat adjútor.

Parcet páuperi et ínopi, * et ánimas páuperum salvas fáciet.

Ex usúris et iniquitáte rédimet ánimas eórum; * et honorábile nomen eórum coram illo.

Et vivet, et dábitur ei de auro Arábiæ, et adorábunt de ipso semper: * totâ die benedícent ei.

Et erit firmamentum in terra in summis móntium, superextollétur super Líbanum fructus ejus; * et florébunt de civitáte sicut fœnum terræ.

Sit nomen ejus benedictum in sécula: * ante solem pérmanet nomen ejus.

Et benedicentur in ipso omnes tribus terræ: * omnes gentes magnificábunt eum.

Benedictus Dóminus Deus Israel, * qui facit mirabília solus:

Et benedictum nomen majestátis ejus in æternum; * et replébitur majestáte ejus omnis terra: fiat, fiat.

Psalmus 100.

Misericordiam et judícium * cantábo tibi, Dómine.

Psallam, et intélligam in via immaculáta, * quando vénies ad me.

Perambulábam in innocéntia cordis mei, * in médio domûs meæ.

Non proponébam ante óculos meos rem injustam: * faciéntes prævaricatiónes odívi.

Non adhæsit mihi cor pravum: * declinantem à me malignum non cognoscébam.

Detrahentem secrétò próximo suo, * hunc persequébar.

Superbo óculo et insatiábili corde, * cum hoc non edébam.

Oculi mei ad fidéles terræ, ut sédeant mecum: * ámbulans in via immaculáta, hic mihi ministrábat.

Non habitábit in médio domûs meæ, qui facit supérbiam: * qui lóquitur iníqua, non direxit in conspectu oculórum meórum.

In matutíno interficiébam omnes peccatóres terræ, * ut dispérderem de civitáte Dómini omnes operantes iniquitátem.

PRO III NOCTURNO.

Psalmus 106.

Confitemini Dómino, quóniam bonus, * quóniam in séculum misericórdia ejus.

Dicant qui redempti sunt à Dómino, * quos redémit de manu inimíci;

Et de regiónibus congregávit eos, * à solis ortu et occásu, ab aquilóne et mari.

Erravérunt in solitúdine, in inaquóso: * viam civitátis habitáculi non invenérunt.

Esurientes, et sitientes; * ánima eórum in ipsis defécit.

Et clamavérunt ad Dóminum, cùm tribularentur; * et de necessitátibus eórum erípuit eos:

Et deduxit eos in viam rectam, * ut irent in civitátem habitatiónis.

Confiteantur Dómino misericórdiæ ejus, * et mirabília ejus fíliis hóminum;

Quia satiávit ánimam inánem, * et ánimam esurientem satiávit bonis.

Sedentes in ténebris et umbra mortis, * vinctos in mendicitáte et ferro;

Quia exacerbavérunt elóquia Dei, * et consílium Altíssimi irritavérunt:

Et humiliátum est in labóribus cor eórum: * infirmáti sunt, nec fuit qui adjuváret.

Et clamavérunt ad Dóminum, cùm tribularentur; * et de necessitátibus eórum liberávit eos.

Et eduxit eos de ténebris et umbra mortis, * et víncula eórum disrúpit.

*Divisio* Psalmi 106.

Confiteantur Dómino misericórdiæ ejus, * et mirabília ejus fíliis hóminum.

Quia contrívit portas æreas, * et vectes férreos confrégit.

Suscépit eos de via iniquitátis eórum: * propter injustítias enim suas humiliáti sunt.

Omnem escam abomináta est ánima eórum; * et appropinquavérunt usque ad portas mortis.

Et clamavérunt ad Dóminum, cùm tribularentur; * et de necessitátibus eórum liberávit eos.

Misit verbum suum, et sanávit eos; * et erípuit eos de interitiónibus eórum.

Confiteantur Dómino misericórdiæ ejus, * et mirabília ejus fíliis hóminum.

Et sacríficent sacrifícium laudis, * et annúntient ópera ejus in exultatióne.

Qui descendunt mare in návibus, * facientes operatiónem in aquis multis;

Ipsi vidérunt ópera Dómini, * et mirabília ejus in profundo.

Dixit: et stetit spíritus procellæ; * et exaltáti sunt fluctus ejus.

Ascendunt usque ad cœlos, et descendunt usque ad abyssos; * ánima eórum in malis tabescébat.

Turbáti sunt, et moti sunt sicut ébrius; * et omnis sapiéntia eórum devoráta est.

Et clamavérunt ad Dóminum, cùm tribularentur; * et de necessitátibus eórum eduxit eos:

Et státuit procellam ejus in auram, * et siluérunt fluctus ejus:

Et lætáti sunt quia siluérunt: * et deduxit eos in portum voluntátis eórum.

*Altera divisio* Psalmi 106.

Confiteantur Dómino misericórdiæ ejus, * et mirabília ejus fíliis hóminum;

Et exaltent eum in ecclésia plebis, * et in cáthedra seniórum laudent eum.

Pósuit flúmina in desertum, * et éxitus aquárum in sitim:

Terram fructíferam in salsúginem, * à malítia inhabitántium in ea.

Pósuit desertum in stagna aquárum, * et terram sine aqua in éxitus aquárum:

Et collocávit illic esurientes; * et constituérunt civitátem habitatiónis;

Et seminavérunt agros, et plantavérunt víneas; * et fecérunt fructum nativitátis:

Et benedixit eis, et multiplicáti sunt nimis; * et jumenta eórum non minorávit.

Et pauci facti sunt, * et vexáti sunt à tribulatióne malórum, et dolóre:

Effúsa est contémptio super príncipes; * et erráre fecit eos in ínvio, et non in via:

Et adjúvit páuperem de inópia, * et pósuit sicut oves famílias.

Vidébunt recti, et lætabuntur; * et omnis iníquitas oppilábit os suum.

Quis sápiens, et custódiet hæc? * et intélliget misericórdias Dómini?

## AD LAUDES.

Psalmus 23.

Domini est terra, et plenitúdo ejus; * orbis terrárum, et universi qui hábitant in eo;

Quia ipse super mária fundávit eum; * et super flúmina præparávit eum.

Quis ascendet in montem Dómini? * aut quis stabit in loco sancto ejus?

Innocens mánibus et mundo corde; * qui non accépit in vano ánimam suam, nec jurávit in dolo próximo suo.

Hic accípiet benedictiónem à Dómino, * et misericórdiam à Deo salutári suo.

Hæc est generátio quæréntium eum, * quæréntium fáciem Dei Jacob.

Attóllite portas, príncipes, vestras; et elevámini, portæ æternáles: * et introíbit Rex glóriæ.

Quis est iste Rex glóriæ? * Dóminus fortis et potens, Dóminus potens in prælio.

Attóllite portas, príncipes, vestras; et elevámini, portæ æternáles: * et introíbit Rex glóriæ.

Quis est iste Rex glóriæ? * Dóminus virtútum ipse est Rex glóriæ.

Psalmus 84.

Benedixisti, Dómine, terram tuam, * avertisti captivitátem Jacob.

Remisisti iniquitátem plebis tuæ, * operuisti ómnia peccáta eórum.

Mitigasti omnem iram tuam, * avertisti ab ira indignatiónis tuæ.

Converte nos, Deus salutáris noster, * et averte iram tuam à nobis.

Numquid in æternum iras-

céris nobis? * aut extendes iram tuam à generatióne in generatiónem?

Deus, tu conversus vivificábis nos; * et plebs tua lætábitur in te.

Ostende nobis, Dómine, misericórdiam tuam, * et salutáre tuum da nobis.

Audiam quid loquátur in me Dóminus Deus; * quóniam loquétur pacem in plebem suam;

Et super sanctos suos; * et in eos qui convertuntur ad cor.

Verúmtamen prope timentes eum salutáre ipsíus: * ut inhábitet glória in terra nostra.

Misericórdia et véritas obviavérunt sibi: * justítia et pax osculátæ sunt.

Véritas de terra orta est, * et justítia de cœlo prospexit.

Etenim Dóminus dabit benignitátem; * et terra nostra dabit fructum suum.

Justítia ante eum ambulábit, * et ponet in via gressus suos.

PSALMUS 96.

Dominus regnávit; exultet terra; * lætentur ínsulæ multæ.

Nubes et calígo in circúitu ejus; * justítia et judícium corréctio sedis ejus.

Ignis ante ipsum præcédet, * et inflammábit in circúitu inimícos ejus.

Illuxérunt fúlgura ejus orbi terræ: * vidit, et commóta est terra.

Montes sicut cera fluxérunt à fácie Dómini; * à fácie Dómini omnis terra.

Annuntiavérunt cœli justítiam ejus: * et vidérunt omnes pópuli glóriam ejus.

Confundantur omnes qui adórant sculptília, * et qui gloriantur in simulácris suis.

Adoráte eum, * omnes Angeli ejus.

Audívit, et lætáta est Sion; * et exultavérunt fíliæ Judæ propter judícia tua, Dómine.

Quóniam tu Dóminus altíssimus super omnem terram; * nimis exaltátus es super omnes deos.

Qui dilígitis Dóminum, odíte malum: * custódit Dóminus ánimas sanctórum suórum: de manu peccatóris liberábit eos.

Lux orta est justo, * et rectis corde lætítia.

Lætámini, justi, in Dómino, * et confitémini memóriæ sanctificatiónis ejus.

*In Quadragesima.*

CANTICUM EZECHIÆ. *Is.* 38.

Ego dixi: In dimídio diérum meórum vadam ad portas ínferi: * quæsívi resíduum annórum meórum.

Dixi: Non vidébo Dóminum Deum in terra vivéntium: * non aspíciam hóminem ultrà, et habitatórem quiétis.

Generátio mea abláta est, et convolúta est à me, * quasi tabernáculum pastórum.

Præcísa est, velut à texente, vita mea: dum adhuc ordírer, succídit me: * de mane usque ad vésperam fínies me.

Sperábam usque ad mane; quasi leo sic contrívit ómnia ossa mea : * de mane usque ad vésperam fínies me.

Sicut pullus hirúndinis, sic clamábo; * meditábor ut columba.

Attenuáti sunt óculi mei, suspicientes in excelsum : * Dómine, vim pátior; responde pro me.

Quid dicam, aut quid respondébit mihi, * cùm ipse fécerit?

Recogitábo tibi omnes annos meos * in amaritúdine ánimæ meæ.

Dómine, si sic vívitur, et in tálibus vita spíritûs mei,* corrípies me, et vivificábis me.

Ecce in pace amaritúdo mea amaríssima : * tu autem eruisti ánimam meam, ut non periret.

Projecisti post tergum tuum * ómnia peccáta mea.

Quia non infernus confitébitur tibi, neque mors laudábit te : * non expectábunt, qui descendunt in lacum, veritátem tuam.

Vivens, vivens ipse confitébitur tibi, sicut et ego hódie :* pater fíliis notam fáciet veritátem tuam.

Dómine, salvum me fac,* et psalmos nostros cantábimus cunctis diébus vitæ nostræ in domo Dómini.

*Tempore Paschali.*

CANTICUM. *Eccli.* 36.

MISERERE nostri, Deus ómnium, et réspice nos, * et ostende nobis lucem miseratiónum tuárum.

Et immitte timórem tuum super gentes quæ non exquisiérunt te; * ut cognoscant quia non est Deus, nisi tu, et enarrent magnália tua.

Alleva manum tuam super gentes aliénas, * ut vídeant poténtiam tuam.

Sicut enim in conspectu eórum sanctificátus es in nobis,* sic in conspectu nostro magnificáberis in eis;

Ut cognoscant te, * sicut et nos cognóvimus quóniam non est Deus præter te, Dómine.

Innova signa, et immúta mirabília :* glorífica manum, et bráchium dextrum.

Excita furórem, et effunde iram : * tolle adversárium, et afflíge inimícum.

Festína tempus, et memento finis, * ut enarrent mirabília tua.

In ira flammæ devorétur qui salvátur; * et qui péssimant plebem tuam, invéniant perditiónem.

Cóntere caput príncipum inimicórum, * dicéntium : Non est álius præter nos.

Cóngrega omnes tribus Jacob, * ut cognoscant quia non est Deus, nisi tu, et enarrent magnália tua;

Et hæreditábis eos, * sicut ab inítio.

Miserére plebi tuæ super quam invocátum est nomen tuum, * et Israel quem coæquasti primogénito tuo.

Miserére civitáti sanctificatiónis tuæ, Jerúsalem, * civitáti requiéi tuæ.

Reple Sion inenarrabílibus verbis tuis, * et glóriâ tuâ pópulum tuum.

Psalmus 150.

Laudate Dóminum in sanctis ejus: * laudáte eum in firmamento virtútis ejus.

Laudáte eum in virtútibus ejus: * laudáte eum secundùm multitúdinem magnitúdinis ejus.

Laudáte eum in sono tubæ: * laudáte eum in psaltério et cíthara.

Laudáte eum in tympano et choro: * laudáte eum in chordis et órgano.

Laudáte eum in cymbalis benesonántibus; laudáte eum in cymbalis jubilatiónis: * omnis spíritus laudet Dóminum.

## AD PRIMAM.

Psalmus 34.

Judica, Dómine, nocentes me: * expugna impugnantes me.

Apprehende arma et scutum, * et exurge in adjutórium mihi.

Effunde frámeam, et conclúde adversùs eos qui persequuntur me; * dic ánimæ meæ: Salus tua ego sum.

Confundantur et revereantur * quærentes ánimam meam.

Avertantur retrorsum, * et confundantur cogitantes mihi mala.

Fiant tanquam pulvis ante fáciem venti, * et ángelus Dómini coarctans eos.

Fiat via illórum ténebræ et lúbricum, * et ángelus Dómini pérsequens eos;

Quóniam gratis abscondérunt mihi intéritum láquei sui; * supervácuè exprobravérunt ánimam meam.

Véniat illi láqueus quem ignórat; et cáptio quam abscondit, apprehendat eum; * et in láqueum cadat in ipsum.

Anima autem mea exultábit in Dómino, * et delectábitur super salutári suo.

Omnia ossa mea dicent: * Dómine, quis símilis tibi?

Erípiens ínopem de manu fortiórum ejus, * egénum et páuperem à diripiéntibus eum.

*Divisio* Psalmi 34.

Surgentes testes iníqui, * quæ ignorábam, interrogábant me.

Retribuébant mihi mala pro bonis, * sterilitátem ánimæ meæ.

Ego autem, cùm mihi molesti essent, * induébar cilício.

Humiliábam in jejúnio ánimam meam, * et orátio mea in sinu meo convertétur.

Quasi próximum, et quasi fratrem nostrum, sic complacébam: * quasi lugens et contristátus, sic humiliábar.

Et adversùm me lætáti sunt, et convenérunt: * congregáta sunt super me flagella, et ignorávi.

Dissipáti sunt, nec compuncti; tentavérunt me, subsannavérunt me subsannatióne: * frenduérunt super me déntibus suis.

Dómine, quando respícies? * restítue ánimam meam à malignitáte eórum, à leónibus únicam meam.

Confitébor tibi in ecclésia magna: * in pópulo gravi laudábo te.

Non supergáudeant mihi qui adversantur mihi iníquè, * qui odérunt me gratìs, et ánnuunt óculis.

Quóniam mihi quidem pacíficè loquebantur; * et in iracúndia terræ loquentes, dolos cogitábant.

Et dilatavérunt super me os suum; * dixérunt: Euge, euge, vidérunt óculi nostri.

Vidisti, Dómine, ne síleas: * Dómine, ne discédas à me.

*Altera divisio* Psalmi 34.

Exurge, et intende judício meo, * Deus meus et Dóminus meus, in causam meam.

Júdica me secundùm justítiam tuam, Dómine Deus meus; * et non supergáudeant mihi.

Non dicant in córdibus suis: Euge, euge, ánimæ nostræ; * nec dicant: Devorávimus eum.

Erubescant et revereantur simul * qui gratulantur malis meis.

Induantur confusióne et reveréntiâ, * qui magna loquuntur super me.

Exultent et lætêntur qui volunt justítiam meam; * et dicant semper, Magnificétur Dóminus, qui volunt pacem servi ejus.

Et lingua mea meditábitur justítiam tuam, * totâ die laudem tuam.

## AD TERTIAM.

Psalmus 25.

Judica me, Dómine, quóniam ego in innocéntia mea ingressus sum; * et in Dómino sperans, non infirmábor.

Proba me, Dómine, et tenta me: * ure renes meos et cor meum;

Quóniam misericórdia tua ante óculos meos est, * et complácui in veritáte tua.

Non sedi cum concílio vanitátis, * et cum iníqua geréntibus non introíbo.

Odívi ecclésiam malignántium, * et cum ímpiis non sedébo.

Lavábo inter innocentes manus meas, * et circúmdabo altáre tuum, Dómine;

Ut áudiam vocem laudis, * et enarrem universa mirabília tua.

Dómine, dilexi decórem domûs tuæ, * et locum habitatiónis glóriæ tuæ.

Ne perdas cum ímpiis, Deus, ánimam meam, * et cum viris sánguinum vitam meam;

In quorum mánibus iniquitátes sunt; * déxtera eórum repléta est munéribus.

Ego autem in innocéntia mea ingressus sum; * rédime me, et miserére meî.

Pes meus stetit in directo: * in ecclésiis benedícam te, Dómine.

Psalmus 49.

Deus deórum Dóminus locútus est: * et vocávit terram à solis ortu usque ad occásum.

Ex Sion * spécies decóris ejus.

Deus manifestè véniet; * Deus noster, et non silébit.

Ignis in conspectu ejus exardescet; * et in circúitu ejus tempestas válida.

Advocábit cœlum desursum, et terram, * discérnere pópulum suum.

Congregáte illi sanctos ejus, * qui órdinant testamentum ejus super sacrifícia.

Et annuntiábunt cœli justítiam ejus; * quóniam Deus judex est.

Audi, pópulus meus, et loquar; Israel, et testificábor tibi : * Deus, Deus tuus ego sum.

Non in sacrifíciis tuis árguam te ; * holocausta autem tua in conspectu meo sunt semper.

Non accípiam de domo tua vítulos, * neque de grégibus tuis hircos;

Quóniam meæ sunt omnes feræ silvárum, * jumenta in móntibus et boves.

Cognóvi ómnia volatília cœli; * et pulcritúdo agri mecum est.

Si esuríero, non dicam tibi; * meus est enim orbis terræ, et plenitúdo ejus.

Numquid manducábo carnes taurórum? * aut sánguinem hircórum potábo?

Immola Deo sacrifícium laudis; * et redde Altíssimo vota tua.

Et ínvoca me in die tribulatiónis; * éruam te, et honorificábis me.

*Divisio* Psalmi 49.

Peccatori autem dixit Deus:* Quare tu enarras justítias meas, et assúmis testamentum meum per os tuum?

Tu verò odisti disciplínam, * et projecisti sermónes meos retrorsum.

Si vidébas furem, currébas cum eo; * et cum adúlteris portiónem tuam ponébas.

Os tuum abundávit malítià, * et lingua tua concinnábat dolos.

Sedens adversùs fratrem tuum loquebáris, et adversùs fílium matris tuæ ponébas scándalum; * hæc fecisti, et tácui.

Existimasti iníquè quòd ero tuî símilis : * árguam te, et státuam contra fáciem tuam.

Intellígite hæc, qui obliviscímini Deum; * nequando rápiat, et non sit qui erípiat.

Sacrifícium laudis honorificábit me; * et illic iter, quo ostendam illi salutáre Dei.

## AD SEXTAM.

Psalmus 36.

Noli æmulári in malignántibus, * neque zeláveris facientes iniquitátem.

Quóniam tanquam fœnum velóciter arescent, et quem-

ádmodum ólera herbárum citò décident.

Spera in Dómino, et fac bonitátem; * et inhábita terram, et pascéris in divítiis ejus.

Delectáre in Dómino, * et dabit tibi petitiónes cordis tui.

Revéla Dómino viam tuam, et spera in eo; * et ipse fáciet.

Et edúcet quasi lumen justítiam tuam, et judícium tuum tanquam merídiem: * súbditus esto Dómino, et ora eum.

Noli æmulári in eo qui prosperátur in via sua, * in hómine faciente injustítias.

Désine ab ira, et derelinque furórem: * noli æmulári, ut malignéris.

Quóniam qui malignantur, exterminabuntur; * sustinentes autem Dóminum, ipsi hæreditábunt terram.

Et adhuc pusillùm, et non erit peccátor; * et quæres locum ejus, et non invénies.

Mansuéti autem hæreditábunt terram, * et delectabuntur in multitúdine pacis.

Observábit peccátor justum, * et stridébit super eum déntibus suis.

Dóminus autem irridébit eum: * quóniam próspicit quòd véniet dies ejus.

Gládium evaginavérunt peccatóres; * intendérunt arcum suum;

Ut dejíciant páuperem et inopem, * ut trucídent rectos corde.

Gládius eórum intret in corda ipsórum; * et arcus eórum confringátur.

Mélius est módicum justo, * super divítias peccatórum multas.

Quóniam bráchia peccatórum conterentur; * confírmat autem justos Dóminus.

*Divisio* Psalmi 36.

Novit Dóminus dies immaculatórum; * et hæréditas eórum in æternum erit.

Non confundentur in témpore malo, et in diébus famis saturabuntur; * quia peccatóres períbunt.

Inimíci verò Dómini, mox ut honorificáti fúerint et exaltáti, * deficientes, quemádmodum fumus, defícient.

Mutuábitur peccátor, et non solvet; * justus autem miserétur, et tríbuet.

Quia benedicentes ei hæreditábunt terram; * maledicentes autem ei disperíbunt.

Apud Dóminum gressus hóminis dirigentur, * et viam ejus volet.

Cùm cecíderit, non collidétur; * quia Dóminus suppónit manum suam.

Júnior fui, étenim sénui; * et non vidi justum derelictum, nec semen ejus quærens panem.

Totâ die miserétur et cómmodat; * et semen illíus in benedictióne erit.

Declína à malo, et fac bonum; * et inhábita in séculum séculi.

Quia Dóminus amat judícium, et non derelinquet

sanctos suos : * in æternum conservabuntur.

Injusti punientur ; * et semen impiórum períbit.

Justi autem hæreditábunt terram, * et inhabitábunt in séculum séculi super eam.

*Altera divisio* Psalmi 36.

Os justi meditábitur sapiéntiam, * et lingua ejus loquétur judícium.

Lex Dei ejus in corde ipsíus ; * et non supplantabuntur gressus ejus.

Consíderat peccátor justum, * et quærit mortificáre eum.

Dóminus autem non derelinquet eum in mánibus ejus, * nec damnábit eum, cùm judicábitur illi.

Expecta Dóminum, et custódi viam ejus ; et exaltábit te, ut hæreditáte cápias terram : * cùm períerint peccatóres, vidébis.

Vidi ímpium superexaltátum, * et elevátum sicut cedros Líbani.

Et transívi, et ecce non erat ; * et quæsívi eum, et non est inventus locus ejus.

Custódi innocéntiam, et vide æquitátem ; * quóniam sunt relíquiæ hómini pacífico.

Injusti autem disperíbunt simul ; * relíquiæ impiórum interíbunt.

Salus autem justórum à Dómino ; * et protector eórum in témpore tribulatiónis.

Et adjuvábit eos Dóminus, et liberábit eos ; * et éruet eos à peccatóribus, et salvábit eos, quia speravérunt in eo.

## AD NONAM.

Psalmus 108.

Deus, laudem meam ne tacúeris ; * quia os peccatóris, et os dolósi super me apertum est.

Locúti sunt adversùm me linguâ dolósâ, et sermónibus ódii circumdedérunt me ; * et expugnavérunt me gratìs.

Pro eo ut me dilígerent, detrahébant mihi ; * ego autem orábam.

Et posuérunt adversùm me mala pro bonis, * et ódium pro dilectióne mea.

*Divisio* Psalmi 108.

Constitue [Dómine] super eum peccatórem ; * et diábolus stet à dextris ejus.

Cùm judicátur, éxeat condemnátus ; * et orátio ejus fiat in peccátum.

Fiant dies ejus pauci ; * et episcopátum ejus accípiat alter.

Fiant fílii ejus órphani, * et uxor ejus vídua.

Nutantes transferantur fílii ejus, et mendícent, * et ejiciantur de habitatiónibus suis.

Scrutétur fœnerátor omnem substántiam ejus ; * et dirípiant aliéni labóres ejus.

Non sit illi adjútor, * nec sit qui misereátur pupillis ejus.

Fiant nati ejus in intéritum : * in generatióne una deleátur nomen ejus.

In memóriam rédeat iníquitas patrum ejus in conspectu Dómini ; * et peccátum matris ejus non deleátur.

Fiant contra Dóminum semper

semper: * et dispéreat de terra memória eórum;

Pro eo quod non est recordátus fácere misericórdiam,* et persecútus est hóminem ínopem et mendícum, et compunctum corde mortificáre.

Et dilexit maledictiónem, et véniet ei; * et nóluit benedictiónem, et elongábitur ab eo.

Et induit maledictiónem sicut vestimentum; * et intrávit sicut aqua in interióra ejus, et sicut óleum in óssibus ejus.

Fiat ei sicut vestimentum quo operítur,* et sicut zona quâ semper præcíngitur.

Hoc opus eórum qui détrahunt mihi apud Dóminum,* et qui loquuntur mala adversùs ánimam meam.

Et tu, Dómine, Dómine, fac mecum propter nomen tuum; * quia suávis est misericórdia tua.

*Altera divisio* PSALMI 108.

LIBERA me, quia egénus et pauper ego sum, * et cor meum conturbátum est intra me.

Sicut umbra, cùm declínat, ablátus sum; * et excussus sum sicut locustæ.

Génua mea infirmáta sunt à jejúnio; * et caro mea immutáta est propter óleum.

Et ego factus sum oppróbrium illis: * vidérunt me, et movérunt cápita sua.

Adjuva me, Dómine Deus meus: * salvum me fac secundùm misericórdiam tuam.

Et sciant quia manus tua hæc; * et tu, Dómine, fecisti eam.

Maledícent illi, et tu benedíces: * qui insurgunt in me, confundantur; servus autem tuus lætábitur.

Induantur, qui détrahunt mihi, pudóre; * et operiantur sicut diplóide confusióne suâ.

Confitébor Dómino nimis in ore meo: * et in médio multórum laudábo eum:

Quia ástitit à dextris páuperis, * ut salvam fáceret à persequéntibus ánimam meam.

## AD VESPERAS.

PSALMUS 119.

AD Dóminum, cùm tribulárer, clamávi;* et exaudívit me.

Dómine, líbera ánimam meam à lábiis iníquis, * et à lingua dolósa.

Quid detur tibi, aut quid apponátur tibi, * ad linguam dolósam?

Sagittæ potentis acútæ, * cum carbónibus desolatóriis.

Heu mihi, quia incolátus meus prolongátus est! habitávi cum habitántibus Cedar; * multùm íncola fuit ánima mea.

Cum his qui odérunt pacem, eram pacíficus: * cùm loquébar illis, impugnábant me gratìs.

PSALMUS 121.

LÆTATUS sum in his quæ dicta sunt mihi: * In domum Dómini íbimus.

Stantes erant pedes nostri * in átriis tuis, Jerúsalem.

Jerúsalem quæ ædificátur ut cívitas, * cujus participátio ejus in idipsum.

Illuc enim ascendérunt tri-

bus, tribus Dómini; * testimónium Israel, ad confiténdum nómini Dómini.

Quia illìc sedérunt sedes in judício, * sedes super domum David.

Rogáte quæ ad pacem sunt Jerúsalem; * et abundántia diligéntibus te.

Fiat pax in virtúte tua, * et abundántia in túrribus tuis.

Propter fratres meos et próximos meos, * loquébar pacem de te.

Propter domum Dómini Dei nostri, * quæsívi bona tibi.

PSALMUS 132.

Ecce quàm bonum, et quàm jucundum, * habitáre fratres in unum!

Sicut unguentum in cápite, * quod descendit in barbam, barbam Aaron;

Quod descendit in oram vestimenti ejus: * sicut ros Hermon, qui descendit in montem Sion:

Quóniam illìc mandávit Dóminus benedictiónem, * et vitam usque in séculum.

PSALMUS 140.

Domine, clamávi ad te, exaudi me; * intende voci meæ, cùm clamávero ad te.

Dirigátur orátio mea sicut incensum in conspectu tuo: * elevátio mánuum meárum, sacrifícium vespertínum.

Pone, Dómine, custódiam ori meo, * et óstium circumstántiæ lábiis meis.

Non declínes cor meum in verba malítiæ, * ad excusandas excusatiónes in peccátis,

Cum homínibus operántibus iniquitátem; * et non communicábo cum electis eórum.

Corrípiet me justus in misericórdia, et increpábit me: * óleum autem peccatóris non impinguet caput meum:

Quóniam adhuc et orátio mea * in beneplácitis eórum.

Absorpti sunt juncti petræ júdices eórum: * áudient verba mea, quóniam potuérunt.

Sicut crassitúdo terræ erupta est super terram, * dissipáta sunt ossa nostra secus infernum.

Quia ad te, Dómine, Dómine, óculi mei: * in te sperávi; non áuferas ánimam meam.

Custódi me à láqueo quem statuérunt mihi, * et à scándalis operántium iniquitátem.

Cadent in retiáculo ejus peccatóres: * singuláriter sum ego, donec tránseam.

PSALMUS 141.

Voce meâ ad Dóminum clamávi; * voce meâ ad Dóminum deprecátus sum.

Effundo in conspectu ejus oratiónem meam; * et tribulatiónem meam ante ipsum pronúntio,

In deficiendo ex me spíritum meum; * et tu cognovisti sémitas meas.

In via hac, quâ ambulábam, * abscondérunt láqueum mihi.

Considerábam ad dénteram, et vidébam: * et non erat qui cognósceret me.

Périit fuga à me, * et non est qui requírat ánimam meam.

Clamávi ad te, Dómine: * dixi: Tu es spes mea, pórtio mea in terra vivéntium.

Intende ad deprecatiónem meam; * quia humiliátus sum nimis.

Líbera me à persequéntibus me; * quia confortáti sunt super me.

Educ de custódia ánimam meam, ad confitendum nómini tuo: * me expectant justi, donec retríbuas mihi.

## AD COMPLETORIUM.

### Psalmus 12.

Usquequo, Dómine, obliviscéris me in finem? * úsquequo avertis fáciem tuam à me?

Quámdiù ponam consília in ánima mea, * dolórem in corde meo per diem?

Usquequo exaltábitur inimícus meus super me? * réspice, et exaudi me, Dómine Deus meus.

Illúmina óculos meos, ne unquam obdórmiam in morte; * nequando dicat inimícus meus: Præválui adversùs eum.

Qui tríbulant me, exultábunt si motus fúero; * ego autem in misericórdia tua sperávi.

Exultábit cor meum in salutári tuo: * cantábo Dómino qui bona tríbuit mihi, et psallam nómini Dómini altíssimi.

### Psalmus 31.

Beati quorum remissæ sunt iniquitátes, * et quorum tecta sunt peccáta.

Beátus vir cui non imputávit Dóminus peccátum, * nec est in spíritu ejus dolus.

Quóniam tácui, inveteravérunt ossa mea; * dum clamárem totà die.

Quóniam die ac nocte graváta est super me manus tua: * conversus sum in ærumna mea, dum configitur spina.

Delictum meum cógnitum tibi feci; * et injustítiam meam non abscondi.

Dixi: Confitébor adversùm me injustítiam meam Dómino; * et tu remisisti impietátem peccáti mei.

Pro hac orábit ad te omnis sanctus * in témpore opportúno.

Verúmtamen in dilúvio aquárum multárum, * ad eum non approximábunt.

Tu es refúgium meum à tribulatióne quæ circúmdedit me: * exultátio mea, érue me à circumdántibus me.

Intellectum tibi dabo, et ínstruam te in via hac quâ gradiéris: * firmábo super te óculos meos.

Nolíte fieri sicut equus et mulus, * quibus non est intellectus.

In camo et fræno maxillas eórum constringe, * qui non appróximant ad te.

Multa flágella peccatóris; * sperantem autem in Dómino misericórdia circúmdabit.

Lætámini in Dómino, et exultáte, justi; * et gloriámini, omnes recti corde.

### Psalmus 78.

Deus, venérunt gentes in hæreditátem tuam; polluérunt

templum sanctum tuum; * posuérunt Jerúsalem in pomórum custódiam.

Posuérunt morticína servórum tuórum escas volatílibus cœli, * carnes sanctórum tuórum béstiis terræ.

Effudérunt sánguinem eórum tanquam aquam in circúitu Jerúsalem; * et non erat qui sepelíret.

Facti sumus oppróbrium vicínis nostris; * subsannátio et illúsio his qui in circúitu nostro sunt.

Usquequo, Dómine, irascéris in finem; * accendétur velut ignis zelus tuus?

Effunde iram tuam in gentes quæ te non novérunt, * et in regna quæ nomen tuum non invocavérunt.

Quia comedérunt Jacob, * et locum ejus desolavérunt.

Ne memíneris iniquitátum nostrárum antiquárum: * citò antícipent nos misericórdiæ tuæ, quia páuperes facti sumus nimis.

Adjuva nos, Deus salutáris noster; * et propter glóriam nóminis tui, Dómine, líbera nos;

Et propítius esto peccátis nostris * propter nomen tuum:

Ne fortè dicant in géntibus: * Ubi est Deus eórum?

Et innotescat in natiónibus coram óculis nostris, * últio sánguinis servórum tuórum, qui effúsus est.

Intróeat in conspectu tuo * gémitus compeditórum.

Secundùm magnitúdinem bráchii tui, * pósside fílios mortificatórum;

Et redde vicínis nostris séptuplum in sinu eórum impropérium ipsórum, * quod exprobravérunt tibi, Dómine.

Nos autem pópulus tuus, et oves páscuæ tuæ, * confitébimur tibi in séculum.

In generatiónem et generatiónem, * annuntiábimus laudem tuam.

*In Quadragesima.*

*Ant.* 7. ç. Tu remisisti impietátem peccáti mei: pro hac orábit ad te omnis sanctus. *Ps.* 31.

# FERIA QUARTA.

## AD OFFICIUM NOCTURNUM.
## PRO I NOCTURNO.

### Psalmus 9.

Confitebor tibi, Dómine, in toto corde meo; * narrábo ómnia mirabília tua.

Lætábor et exultábo in te: * psallam nómini tuo, Altíssime.

In convertendo inimícum meum retrorsum: * infirmabuntur, et períbunt à fácie tua.

Quóniam fecisti judícium meum et causam meam; * sedisti super thronum, qui júdicas justítiam.

Increpasti gentes, et périit ímpius: * nomen eórum delesti in æternum, et in séculum séculi.

Inimíci defecérunt frámeæ in finem, * et civitátes eórum destruxisti.

Périit memória eórum cum sónitu; * et Dóminus in ætérnum pérmanet.

Parávit in judício thronum suum : * et ipse judicábit orbem terræ in æquitáte, judicábit pópulos in justítia.

Et factus est Dóminus refúgium páuperi; * adjútor in opportunitátibus, in tribulatióne.

Et sperent in te, qui novérunt nomen tuum; * quóniam non dereliquisti quærentes te, Dómine.

Psállite Dómino qui hábitat in Sion : * annuntiáte inter gentes stúdia ejus;

Quóniam requírens sánguinem eórum recordátus est; * non est oblítus clamórem páuperum.

*Divisio* PSALMI 9.

Miserere mei, Dómine : * vide humilitátem meam de inimícis meis,

Qui exaltas me de portis mortis; * ut annúntiem omnes laudatiónes tuas in portis fíliæ Sion.

Exultábo in salutári tuo : * infixæ sunt gentes in intéritu quem fecérunt.

In láqueo isto quem abscondérunt, * comprehensus est pes eórum.

Cognoscétur Dóminus judícia fáciens : * in opéribus mánuum suárum comprehensus est peccátor.

Convertantur peccatóres in infernum, * omnes gentes quæ obliviscuntur Deum.

Quóniam non in finem oblívio erit páuperis : * patiéntia páuperum non peribit in finem.

Exurge, Dómine; non confortétur homo : * judicentur gentes in conspectu tuo.

Constítue, Dómine, legislatórem super eos; * ut sciant gentes quóniam hómines sunt.

*Altera divisio* PSALMI 9.

Ut quid, Dómine, recessisti longè? * déspicis in opportunitátibus, in tribulatióne?

Dum superbit ímpius, incénditur pauper : * comprehenduntur in consíliis quibus cógitant.

Quóniam laudátur peccátor in desidériis ánimæ suæ, * et iníquus benedícitur.

Exacerbávit Dóminum peccátor; * secundùm multitúdinem iræ suæ non quæret.

Non est Deus in conspectu ejus, * inquinátæ sunt viæ illíus in omni témpore.

Auferuntur judícia tua à fácie ejus; * ómnium inimicórum suórum dominábitur.

Dixit enim in corde suo : * Non movébor à generatióne in generatiónem sine malo.

Cujus maledictióne os plenum est, et amaritúdine, et dolo : * sub lingua ejus labor et dolor.

Sedet in insídiis cum divítibus in occultis, * ut interfíciat innocentem.

Oculi ejus in páuperem respíciunt :* insidiátur in abscóndito quasi leo in spelunca sua.

Insidiátur ut rápiat páu-

perem; * rápere páuperem, dum áttrahit eum.

In láqueo suo humiliábit eum : * inclinábit se, et cadet, cùm dominátus fúerit páuperum.

Dixit enim in corde suo : Oblítus est Deus; * avertit fáciem suam, ne vídeat in finem.

Exurge, Dómine Deus; exaltétur manus tua : * ne obliviscáris páuperum.

Propter quid irritávit ímpius Deum? * dixit enim in corde suo : Non requíret.

Vides, quóniam tu labórem et dolórem consíderas, * ut tradas eos in manus tuas.

Tibi derelictus est pauper:* órphano tu eris adjútor.

Cóntere bráchium peccatóris et maligni : * quærétur peccátum illíus, et non inveniétur.

Dóminus regnábit in ætérnum, et in séculum séculi : * períbitis, gentes, de terra illíus.

Desidérium páuperum exaudívit Dóminus : * præparatiónem cordis eórum audívit auris tua;

Judicáre pupillo et húmili, * ut non appónat ultrà magnificáre se homo super terram.

PRO II NOCTURNO.

Psalmus 77.

Attendite, pópule meus, legem meam; * inclináte aurem vestram in verba oris mei.

Apériam in parábolis os meum; * loquar propositiónes ab inítio.

Quanta audívimus, et cognóvimus ea; * et patres nostri narravérunt nobis.

Non sunt occultáta à filiis eórum * in generatióne áltera;

Narrantes laudes Dómini, et virtútes ejus, * et mirabília ejus quæ fecit.

Et suscitávit testimónium in Jacob, * et legem pósuit in Israel.

Quanta mandávit pátribus nostris, nota fácere ea filiis suis, * ut cognoscat generátio áltera,

Filii qui nascentur, et exurgent, * et narrábunt filiis suis;

Ut ponant in Deo spem suam, et non obliviscantur óperum Dei, * et mandáta ejus exquírant;

Ne fiant sicut patres eórum, * generátio prava et exásperans :

Generátio quæ non direxit cor suum, * et non est créditus cum Deo spíritus ejus.

*Divisio* Psalmi 77.

Filii Ephrem intendentes et mittentes arcum, * conversi sunt in die belli.

Non custodiérunt testamentum Dei, * et in lege ejus noluérunt ambuláre.

Et oblíti sunt benefactórum ejus, * et mirabílium ejus quæ ostendit eis.

Coram pátribus eórum fecit mirabília in terra Ægypti, * in campo Táneos.

Interrúpit mare, et perduxit eos, * et státuit aquas quasi in utre.

Et deduxit eos in nube

diéi, * et totâ nocte in illuminatióne ignis.

Interrúpit petram in erémo, * et adaquávit eos velut in abysso multa.

Et eduxit aquam de petra, * et deduxit tanquam flúmina aquas.

Et apposuérunt adhuc peccáre ei: * in iram excitavérunt Excelsum in inaquóso.

Et tentavérunt Deum in córdibus suis, * ut péterent escas animábus suis.

Et malè locúti sunt de Deo; * dixérunt: Numquid póterit Deus paráre mensam in deserto?

Quóniam percussit petram, et fluxérunt aquæ, * et torrentes inundavérunt;

Numquid et panem póterit dare, * aut paráre mensam pópulo suo?

Ideo audívit Dóminus, et distulit: * et ignis accensus est in Jacob, et ira ascendit in Israel;

Quia non credidérunt in Deo, * nec speravérunt in salutári ejus.

Et mandávit núbibus désuper, * et jánuas cœli apéruit.

Et pluit illis manna ad manducandum, * et panem cœli dedit eis.

Panem Angelórum manducávit homo: * cibária misit eis in abundántia.

*Altera divisio* Psalmi 77. Transtulit [Dóminus] Austrum de cœlo; * et induxit in virtúte sua Africum.

Et pluit super eos sicut púlverem carnes, * et sicut arénam maris volatília pennáta.

Et cecidérunt in médio castrórum eórum, * circa tabernácula eórum.

Et manducavérunt, et saturáti sunt nimis; et desidérium eórum áttulit eis: * non sunt fraudáti à desidério suo.

Adhuc escæ eórum erant in ore ipsórum; * et ira Dei ascendit super eos.

Et occídit pingues eórum, * et electos Israel impedívit.

In ómnibus his peccavérunt adhuc, * et non credidérunt in mirabílibus ejus.

Et defecérunt in vanitáte dies eórum, * et anni eórum cum festinatióne.

Cùm occideret eos, quærébant eum; * et revertebantur, et dilúculo veniébant ad eum.

Et rememoráti sunt quia Deus adjútor est eórum, * et Deus excelsus redemptor eórum est.

Et dilexérunt eum in ore suo, * et linguâ suâ mentíti sunt ei.

Cor autem eórum non erat rectum cum eo, * nec fidéles hábiti sunt in testamento ejus.

Ipse autem est miséricors, et propítius fiet peccátis eórum; * et non disperdet eos.

PRO III NOCTURNO.

*Ex* Psalmo 77. Et Abundavit [Dóminus] ut avérteret iram suam, * et non accendit omnem iram suam.

Et recordátus est, quia caro sunt, * spíritus vadens, et non rédiens.

Quóties exacerbavérunt

eum in deserto? * in iram concitavérunt eum in inaquóso?

Et conversi sunt, et tentavérunt Deum, * et sanctum Israel exacerbavérunt.

Non sunt recordáti manûs ejus, * die quâ redémit eos de manu tribulantis :

Sicut pósuit in Ægypto signa sua, * et prodígia sua in campo Táneos.

Et convertit in sánguinem flúmina eórum, * et imbres eórum, ne bíberent.

Misit in eos cœnomyíam, et comédit eos; * et ranam, et dispérdidit eos.

Et dedit ærúgini fructus eórum, * et labóres eórum locustæ.

Et occídit in grándine víneas eórum, * et moros eórum in pruína.

Et trádidit grándini jumenta eórum, * et possessiónem eórum igni.

Misit in eos iram indignatiónis suæ; * indignatiónem, et iram, et tribulatiónem, immissiónes per ángelos malos.

Viam fecit sémitæ iræ suæ, non pepercit à morte animábus eórum, * et jumenta eórum in morte conclúsit;

Et percussit omne primogénitum in terra Ægypti, * primítias omnis labóris eórum in tabernáculis Cham.

ABSTULIT *Divisio* PSALMI 77. Et ABSTULIT [Dóminus] sicut oves pópulum suum, * et perduxit eos tanquam gregem in deserto.

Et deduxit eos in spe, et non timuérunt; * et inimícos eórum opéruit mare.

Et induxit eos in montem sanctificatiónis suæ, * montem quem acquisívit déxtera ejus.

Et ejécit à fácie eórum gentes; * et sorte divísit eis terram in funículo distributiónis,

Et habitáre fecit in tabernáculis eórum * tribus Israel.

Et tentavérunt, et exacerbavérunt Deum excelsum; * et testimónia ejus non custodiérunt.

Et avertérunt se, et non servavérunt pactum : * quemádmodum patres eórum, conversi sunt in arcum pravum.

In iram concitavérunt eum in cóllibus suis, * et in sculptílibus suis ad æmulatiónem eum provocavérunt.

Audívit Deus, et sprevit; * et ad níhilum redégit valde Israel.

Et répulit tabernáculum Silo, * tabernáculum suum, ubi habitávit in homínibus.

Et trádidit in captivitátem virtútem eórum, * et pulcritúdinem eórum in manus inimíci.

Et conclúsit in gládio pópulum suum, * et hæreditátem suam sprevit.

Júvenes eórum comédit ignis, * et vírgines eórum non sunt lamentátæ.

Sacerdótes eórum in gládio cecidérunt, * et víduæ eórum non plorabantur.

*Altera divisio* PSALMI 77. Et EXCITATUS est tanquam dórmiens Dóminus, * tan-

quam potens crapulátus à vino.

Et percussit inimícos suos in posterióra: * oppróbrium sempiternum dedit illis.

Et répulit tabernáculum Joseph, * et tribum Ephraim non elégit;

Sed elégit tribum Juda, * montem Sion quem diléxit.

Et ædificávit sicut unicórnium sanctifícium suum * in terra quam fundávit in sécula:

Et elégit David servum suum, * et sústulit eum de grégibus óvium.

De post fœtantes accépit eum, * páscere Jacob servum suum, et Israel hæreditátem suam.

Et pavit eos in innocéntia cordis sui, * et in intelléctibus mánuum suárum deduxit eos.

## AD LAUDES.

### Psalmus 5.

Verba mea áuribus pércipe, Dómine; * intéllige clamórem meum.

Intende voci orationis meæ, * Rex meus et Deus meus.

Quóniam ad te orábo, Dómine; * mane exáudies vocem meam.

Mane astábo tibi, et vidébo; * quóniam non Deus volens iniquitátem tu es.

Neque habitábit juxta te malignus, * neque permanébunt injusti ante óculos tuos.

Odisti omnes qui operantur iniquitátem: * perdes omnes qui loquuntur mendácium.

Virum sánguinum et dolósum * abominábitur Dóminus.

Ego autem in multitúdine misericórdiæ tuæ introíbo in domum tuam, * adorábo ad templum sanctum tuum in timóre tuo.

Dómine, deduc me in justítia tua: * propter inimícos meos dírige in conspectu tuo viam meam;

Quóniam non est in ore eórum véritas; * cor eórum vanum est.

Sepulcrum patens est guttur eórum; linguis suis dolósè agébant: * júdica illos, Deus.

Décidant à cogitatiónibus suis; secundùm multitúdinem impietátum eórum expelle eos; * quóniam irritavérunt te, Dómine.

Et lætentur omnes qui sperant in te: * in æternum exultábunt, et habitábis in eis.

Et gloriabuntur in te omnes, qui díligunt nomen tuum; * quóniam tu benedíces justo.

Dómine, ut scuto bonæ voluntátis tuæ * coronasti nos.

### Psalmus 35.

Dixit injustus, ut delinquat in semetipso: * non est timor Dei ante óculos ejus;

Quóniam dolósè egit in conspectu ejus, * ut inveniátur iníquitas ejus ad ódium.

Verba oris ejus iníquitas et dolus: * nóluit intellígere, ut bene ágeret.

Iniquitátem meditátus est in cubíli suo : ástitit omni viæ non bonæ; * malítiam autem non odívit.

Dómine, in cœlo misericórdia tua; * et véritas tua usque ad nubes.

Justítia tua sicut montes Dei : * judícia tua abyssus multa.

Hómines et jumenta salvábis, Dómine; * quemádmodum multiplicasti misericórdiam tuam, Deus.

Fílii autem hóminum * in tégmine alárum tuárum sperábunt.

Inebriabuntur ab ubertáte domûs tuæ; * et torrente voluptátis tuæ potábis eos.

Quóniam apud te est fons vitæ, * et in lúmine tuo vidébimus lumen.

Prætende misericórdiam tuam sciéntibus te, * et justítiam tuam his qui recto sunt corde.

Non véniat mihi pes supérbiæ, * et manus peccatóris non móveat me.

Ibi cecidérunt qui operantur iniquitátem : * expulsi sunt, nec potuérunt stare.

Psalmus 64.

Te decet hymnus, Deus, in Sion; * et tibi reddétur votum in Jerúsalem.

Exaudi oratiónem meam :* ad te omnis caro véniet.

Verba iniquórum prævaluérunt super nos; * et impietátibus nostris tu propitiáberis.

Beátus quem elegisti, et assumpsisti : * inhabitábit in átriis tuis.

Replébimur in bonis domûs tuæ : * sanctum est templum tuum, mirábile in æquitáte.

Exaudi nos, Deus salutáris noster, * spes ómnium fínium terræ, et in mari longè;

Præparans montes in virtúte tua, accinctus poténtiâ : * qui conturbas profundum maris, sonum flúctuum ejus.

Turbabuntur gentes, et timébunt qui hábitant términos, à signis tuis : * éxitus matutíni et véspere delectábis.

Visitasti terram, et inebriasti eam : * multiplicasti locupletáre eam.

Flumen Dei replétum est aquis; * parasti cibum illórum, quóniam ita est præparátio ejus.

Rivos ejus inébria, multíplica genímina ejus; * in stillicídiis ejus lætábitur gérminans.

Benedíces corónæ anni benignitátis tuæ; * et campi tui replebuntur ubertáte.

Pinguescent speciósa deserti, * et exultatióne colles accingentur.

Indúti sunt aríetes óvium, et valles abundábunt frumento; * clamábunt, étenim hymnum dicent.

*In Quadragesima.*

Canticum. *Isaiæ* 12.

Confitebor tibi, Dómine, quóniam irátus es mihi : * conversus est furor tuus, et consolátus es me.

Ecce Deus salvátor meus; * fiduciáliter agam, et non timébo.

Quia fortitúdo mea, et laus mea Dóminus, * et factus est mihi in salútem.

Hauriétis aquas in gáudio de fóntibus Salvatóris; * et dicétis in die illa : Confitémini Dómino, et invocáte nomen ejus.

Notas fácite in pópulis adinventiónes ejus : * mementóte quóniam excelsum est nomen ejus.

Cantáte Dómino, quóniam magníficè fecit : * annuntiáte hoc in universa terra.

Exulta et lauda, habitátio Sion; * quia magnus in médio tui Sanctus Israel.

*Tempore Paschali.*

CANTICUM. *Tob.* 13.

MAGNUS es, Dómine, in ætérnum, * et in ómnia sécula regnum tuum.

Quóniam tu flagellas, et salvas: dedúcis ad ínferos, et redúcis; * et non est qui effúgiat manum tuam.

Confitémini Dómino, fílii Israel, * et in conspectu géntium laudáte eum;

Quóniam ídeo dispersit vos inter gentes quæ ignórant eum, * ut vos enarrétis mirabília ejus,

Et faciátis scire eos, * quia non est álius Deus omnípotens præter eum.

Ipse castigávit nos propter iniquitátes nostras; * et ipse salvábit nos propter misericórdiam suam.

Aspícite ergo quæ fecit nobiscum, et cum timóre et tremóre confitémini illi; * Regemque seculórum exaltáte in opéribus vestris.

Ego autem in terra captivitátis meæ confitébor illi; * quóniam ostendit majestátem suam in gentem peccatrícem.

Convertímini ítaque, peccatóres, et fácite justítiam coram Deo, * credentes quòd fáciat vobiscum misericórdiam suam.

Ego autem, et ánima mea, * in eo lætábimur.

Benedícite Dóminum, omnes electi ejus: * ágite dies lætítiæ, et confitémini illi.

PSALMUS 146.

LAUDATE Dóminum, quóniam bonus est psalmus : * Deo nostro sit jucunda decóraque laudátio.

Ædíficans Jerúsalem Dóminus; * dispersiónes Israélis congregábit;

Qui sanat contrítos corde, * et álligat contritiónes eórum;

Qui númerat multitúdinem stellárum, * et ómnibus eis nómina vocat.

Magnus Dóminus noster. et magna virtus ejus; * et sapiéntiæ ejus non est númerus.

Suscípiens mansuétos Dóminus; * humílians autem peccatóres usque ad terram.

Præcínite Dómino in confessióne : * psállite Deo nostro in cíthara;

Qui óperit cœlum núbibus, * et parat terræ plúviam;

Qui prodúcit in móntibus fœnum, * et herbam servitúti hóminum;

Qui dat jumentis escam ipsórum, * et pullis corvórum invocántibus eum.

Non in fortitúdine equi voluntátem habébit; * nec in tíbiis viri beneplácitum erit ei.

Beneplácitum est Dómino super timentes eum, * et in eis qui sperant super misericórdia ejus.

## AD PRIMAM.

### Psalmus 30.

In te, Dómine, sperávi; non confundar in æternum: * in justítia tua líbera me.

Inclína ad me aurem tuam: * accélera ut éruas me.

Esto mihi in Deum protectórem, et in domum refúgii, * ut salvum me fácias.

Quóniam fortitúdo mea, et refúgium meum es tu; * et propter nomen tuum dedúces me, et enútries me.

Edúces me de láqueo hoc quem abscondérunt mihi; * quóniam tu es protector meus.

In manus tuas commendo spíritum meum: * redemisti me, Dómine Deus veritátis.

Odisti observantes vanitátes supervácuè; * ego autem in Dómino sperávi.

Exultábo, et lætábor in misericórdia tua; * quóniam respexisti humilitátem meam, salvasti de necessitátibus ánimam meam.

Nec conclusisti me in mánibus inimíci; * statuisti in loco spatióso pedes meos.

### *Divisio* Psalmi 30.

Miserere mei, Dómine, quóniam tríbulor: * conturbátus est in ira óculus meus, ánima mea, et venter meus.

Quóniam defécit in dolóre vita mea, * et anni mei in gemítibus.

Infirmáta est in paupertáte virtus mea, * et ossa mea conturbáta sunt.

Super omnes inimícos meos factus sum oppróbrium, et vicínis meis valde; * et timor notis meis.

Qui vidébant me, * foràs fugérunt à me.

Oblivióni datus sum tanquam mórtuus à corde: * factus sum tanquam vas pérditum;

Quóniam audívi vituperatiónem multórum commorántium in circúitu: * in eo dum convenírent simul adversùm me, accípere ánimam meam consiliáti sunt.

Ego autem in te sperávi, Dómine; * dixi: Deus meus es tu; in mánibus tuis sortes meæ.

Eripe me de manu inimicórum meórum, * et à persequéntibus me.

Illustra fáciem tuam super servum tuum: * salvum me fac in misericórdia tua.

Dómine, non confundar, quóniam invocávi te, * erubescant ímpii, et deducantur in infernum.

Muta fiant lábia dolósa, * quæ loquuntur adversùs jus-

tum iniquitátem, in supérbia, et in abusióne.

*Altera divisio* Psalmi 30.

Quam magna multitúdo dulcédinis tuæ, Dómine, * quam abscondisti timéntibus te!

Perfecisti eis qui sperant in te, * in conspectu filiórum hóminum.

Abscondes eos in abscóndito faciéi tuæ, * à conturbatióne hóminum.

Próteges eos in tabernáculo tuo, * à contradictióne linguárum.

Benedictus Dóminus; * quóniam mirificávit misericórdiam suam mihi in civitáte munita.

Ego autem dixi in excessu mentis meæ: * Projectus sum à fácie oculórum tuórum.

Ideo exaudisti vocem oratiónis meæ, * dum clamárem ad te.

Dilígite Dóminum, omnes sancti ejus; quóniam veritátem requíret Dóminus, * et retríbuet abundanter faciéntibus supérbiam.

Viríliter ágite, et confortétur cor vestrum, * omnes qui sperátis in Dómino.

## AD TERTIAM.

Psalmus 41.

Quemadmodum desíderat cervus ad fontes aquárum; * ita desíderat ánima mea ad te, Deus.

Sitívit ánima mea ad Deum fortem, vivum: * quando véniam, et apparébo ante fáciem Dei?

Fuérunt mihi lácrymæ meæ panes die ac nocte, * dum dícitur mihi quotídie: Ubi est Deus tuus?

Hæc recordátus sum, et effúdi in me ánimam meam; * quóniam transíbo in locum tabernáculi admirábilis, usque ad domum Dei,

In voce exultatiónis et confessiónis, * sonûs epulantis.

Quare tristis es, ánima mea, * et quare conturbas me?

Spera in Deo, quóniam adhuc confitébor illi: * salutáre vultûs mei, et Deus meus.

*Divisio* Psalmi 41.

Ad meipsum ánima mea conturbáta est; * proptérea memor ero tui de terra Jordánis, et Hermóniim à monte módico.

Abyssus abyssum ínvocat, * in voce cataractárum tuárum.

Omnia excelsa tua, et fluctus tui * super me transiérunt.

In die mandávit Dóminus misericórdiam suam, * et nocte cánticum ejus.

Apud me orátio Deo vitæ meæ; * dicam Deo, Susceptor meus es.

Quare oblítus es mei, et quare contristátus incédo, * dum afflígit me inimícus?

Dum confringuntur ossa mea: * exprobravérunt mihi qui tríbulant me inimíci mei;

Dum dicunt mihi per síngulos dies: * Ubi est Deus tuus?

Quare tristis es, ánima mea? * et quare conturbas me?

Spera in Deo, quóniam adhuc confitébor illi : * salutáre vultûs mei, et Deus meus.

Psalmus 42.

Judica me, Deus, et discerne causam meam de gente non sancta : * ab hómine iníquo et dolóso érue me;

Quia tu es, Deus, fortitúdo mea : * quare me repulisti? et quare tristis incédo dum afflígit me inimícus?

Emitte lucem tuam et veritátem tuam : * ipsa me deduxérunt, et adduxérunt in montem sanctum tuum, et in tabernácula tua.

Et introíbo ad altáre Dei,* ad Deum qui lætíficat juventútem meam.

Confitébor tibi in cíthara, Deus, Deus meus: * quare tristis es, ánima mea? et quare conturbas me?

Spera in Deo, quóniam adhuc confitébor illi : * salutáre vultûs mei, et Deus meus.

## AD SEXTAM.

Psalmus 20.

Domine, in virtúte tua lætábitur rex, * et super salutáre tuum exultábit vehementer.

Desidérium cordis ejus tribuisti ei, * et voluntáte labiórum ejus non fraudasti eum;

Quóniam prævenisti eum in benedictiónibus dulcédinis; * posuisti in cápite ejus corónam de lápide pretióso.

Vitam pétiit à te; * et tribuisti ei longitúdinem diérum in séculum, et in séculum séculi.

Magna est glória ejus in salutári tuo : * glóriam et magnum decórem impónes super eum.

Quóniam dabis eum in benedictiónem in séculum séculi : * lætificábis eum in gáudio cum vultu tuo.

Quóniam rex sperat in Dómino; * et in misericórdia Altíssimi non commovébitur.

Inveniátur manus tua ómnibus inimícis tuis : * déxtera tua invéniat omnes qui te odérunt.

Pones eos ut clíbanum ignis in témpore vultûs tui : * Dóminus in ira sua conturbábit eos, et devorábit eos ignis.

Fructum eórum de terra perdes, * et semen eórum à fíliis hóminum;

Quóniam declinavérunt in te mala : * cogitavérunt consília, quæ non potuérunt stabilíre.

Quóniam pones eos dorsum : * in relíquiis tuis præparábis vultum eórum.

Exaltáre, Dómine, in virtúte tua : * cantábimus et psallémus virtútes tuas.

Psalmus 102.

Benedic, ánima mea, Dómino, * et ómnia quæ intra me sunt, nómini sancto ejus.

Bénedic, ánima mea, Dómino, * et noli oblivisci omnes retributiónes ejus :

Qui propitiátur ómnibus

iniquitátibus tuis ;* qui sanat omnes infirmitátes tuas :

Qui rédimit de intéritu vitam tuam ; * qui corónat te in misericórdia et miseratiónibus :

Qui replet in bonis desidérium tuum ; * renovábitur ut áquilæ juventus tua.

Fáciens misericórdias Dóminus, * et judícium ómnibus injúriam patiéntibus.

Notas fecit vias suas Móysi,* fíliis Israel voluntátes suas.

*Divisio* Psalmi 102.

Miserator et miséricors Dóminus : * longánimis, et multùm miséricors.

Non in perpétuum irascétur, * neque in æternum comminábitur.

Non secundùm peccáta nostra fecit nobis, * neque secundùm iniquitátes nostras retríbuit nobis.

Quóniam secundùm altitúdinem cœli à terra, * corroborávit misericórdiam suam super timentes se.

Quantùm distat órtus ab occidente, * longè fecit à nobis iniquitátes nostras.

Quómodo miserétur pater filiórum, * misertus est Dóminus timéntibus se;

Quóniam ipse cognóvit figmentum nostrum : * recordátus est quóniam pulvis sumus.

Homo, sicut fœnum dies ejus : * tanquam flos agri sic efflorébit;

Quóniam spíritus pertransíbit in illo, et non subsistet, * et non cognoscet ámpliùs locum suum.

Misericórdia autem Dómini ab æterno, * et usque in æternum super timentes eum:

Et justítia illíus in fílios filiórum, * his qui servant testamentum ejus,

Et mémores sunt mandatórum ipsíus, * ad faciendum ea.

Dóminus in cœlo parávit sedem suam ; * et regnum ipsíus ómnibus dominábitur.

Benedícite Dómino, omnes Angeli ejus, potentes virtúte, facientes verbum illíus,* ad audiendam vocem sermónum ejus.

Benedícite Domino, omnes virtútes ejus, * ministri ejus, qui fácitis voluntátem ejus.

Benedícite Dómino, ómnia ópera ejus : * in omni loco dominatiónis ejus, bénedic, ánima mea, Dómino.

## AD NONAM.

Psalmus 81.

Deus stetit in synagóga deórum ; * in médio autem deos dijúdicat.

Usquequo judicátis iniquitátem, * et fácies peccatórum súmitis?

Judicáte egéno et pupillo : * húmilem et páuperem justificáte.

Erípite páuperem ; * et egénum de manu peccatóris liberáte.

Nesciérunt, neque intellexérunt, in ténebris ámbulant : * movebuntur ómnia fundamenta terræ.

Ego dixi : Dii estis, * et filii Excelsi omnes.

Vos autem sicut hómines moriémini; * et sicut unus de princípibus cadétis.

Surge, Deus, júdica terram, * quóniam tu hæreditábis in ómnibus géntibus.

Psalmus 93.

Deus ultiónum Dóminus, * Deus ultiónum líberè egit.

Exaltáre, qui júdicas terram : * redde retributiónem supérbis.

Usquequo peccatóres, Dómine, * úsquequo peccatóres gloriabuntur?

Effabuntur et loquentur iniquitátem; * loquentur omnes qui operantur injustítiam?

Pópulum tuum, Dómine, humiliavérunt, * et hæreditátem tuam vexavérunt.

Víduam et ádvenam interfecérunt, * et pupillos occidérunt.

Et dixérunt : Non vidébit Dóminus, * nec intélliget Deus Jacob.

Intellígite, insipientes in pópulo; * et stulti, aliquando sápite.

Qui plantávit aurem, non áudiet? * aut qui finxit óculum, non consíderat?

Qui córripit gentes, non árguet? * qui docet hóminem sciéntiam?

Dóminus scit cogitatiónes hóminum; quóniam vanæ sunt.

*Divisio* Psalmi 93.

Beatus homo, quem tu erudíeris, Dómine, * et de lege tua docúeris eum;

Ut mítiges ei à diébus malis, * donec fodiátur peccatóri fóvea.

Quia non repellet Dóminus plebem suam, * et hæreditátem suam non derelinquet;

Quoadusque justítia convertátur in judícium, * et qui juxta illam, omnes qui recto sunt corde.

Quis consurget mihi adversùs malignantes? * aut quis stabit mecum adversùs operantes iniquitátem?

Nisi quia Dóminus adjúvit me, * paulò minùs habitasset in inferno ánima mea.

Si dicébam, Motus est pes meus; * misericórdia tua, Dómine, adjuvábat me.

Secundùm multitúdinem dolórum meórum in corde meo, * consolatiónes tuæ lætificavérunt ánimam meam.

Numquid adhæret tibi sedes iniquitátis, * qui fingis labórem in præcepto?

Captábunt in ánimam justi, * et sánguinem innocentem condemnábunt.

Et factus est mihi Dóminus in refúgium, * et Deus meus in adjutórium spei meæ.

Et reddet illis iniquitátem ipsórum; et in malítia eórum disperdet eos : * disperdet illos Dóminus Deus noster.

## AD VESPERAS.

Psalmus 122.

Ad te levávi óculos meos, * qui hábitas in cœlis.

Ecce, sicut óculi servórum * in mánibus dominórum suórum,

Sicut óculi ancillæ in mánibus dóminæ suæ; * ita óculi nostri ad Dóminum Deum nostrum, donec misereátur nostrî.

Miserére nostrî, Dómine, miserére nostrî; * quia multùm repléti sumus despectióne;

Quia multùm repléta est ánima nostra: * oppróbrium abundántibus, et despéctio supérbis.

PSALMUS 124.

Qui confídunt in Dómino, sicut mons Sion: * non commovébitur in æternum, qui hábitat in Jerúsalem.

Montes in circúitu ejus, et Dóminus in circúitu pópuli sui, * ex hoc nunc, et usque in séculum.

Quia non relinquet Dóminus virgam peccatórum super sortem justórum; * ut non extendant justi ad iniquitátem manus suas.

Bénefac, Dómine, bonis, * et rectis corde.

Declinantes autem in obligatiónes addúcet Dóminus cum operántibus iniquitátem: * pax super Israel.

PSALMUS 126.

Nisi Dóminus ædificáverit domum, * in vanum laboravérunt qui ædíficant eam.

Nisi Dóminus custodíerit civitátem, * frustra vígilat qui custódit eam.

Vanum est vobis ante lucem súrgere: * súrgite postquam sedéritis, qui manducátis panem dolóris, cùm déderit dilectis suis somnum.

Ecce hæréditas Dómini, fílii; * merces, fructus ventris.

Sicut sagittæ in manu potentis, * ita fílii excussórum.

Beátus vir qui implévit desidérium suum ex ipsis; * non confundétur, cùm loquétur inimícis suis in porta.

PSALMUS 129.

De profundis clamávi ad te, Dómine: * Dómine, exaudi vocem meam.

Fiant aures tuæ intendentes * in vocem deprecatiónis meæ.

Si iniquitátes observáveris, Dómine; * Dómine, quis sustinébit?

Quia apud te propitiátio est, * et propter legem tuam sustínui te, Dómine.

Sustínuit ánima mea in verbo ejus; * sperávit ánima mea in Dómino.

A custódia matutína usque ad noctem, * speret Israel in Dómino.

Quia apud Dóminum misericórdia, * et copiósa apud eum redémptio;

Et ipse rédimet Israel * ex ómnibus iniquitátibus ejus.

PSALMUS 130.

Domine, non est exaltátum cor meum, * neque eláti sunt óculi mei;

Neque ambulávi in magnis, * neque in mirabílibus super me,

Si non humíliter sentiébam, * sed exaltávi ánimam meam;

Sicut ablactátus est super matre sua, * ita retribútio in ánima mea.

Speret Israel in Dómino; * ex hoc nunc, et usque in séculum.

## AD COMPLETORIUM.

PSALMUS 10.

In Dómino confído: * quómodo dícitis ánimæ meæ: Tránsmigra in montem sicut passer?

Quóniam ecce peccatóres intendérunt arcum, paravérunt sagittas suas in pháretra; * ut sagittent in obscúro rectos corde.

Quóniam quæ perfecisti, destruxérunt; * justus autem quid fecit?

Dóminus in templo sancto suo: * Dóminus in cœlo sedes ejus.

Oculi ejus in páuperem respíciunt; * pálpebræ ejus intérrogant fílios hóminum.

Dóminus intérrogat justum et ímpium; * qui autem díligit iniquitátem, odit ánimam suam.

Pluet super peccatóres láqueos: * ignis, et sulphur, et spíritus procellárum, pars cálicis eórum.

Quóniam justus Dóminus, et justítias dilexit: * æquitátem vidit vultus ejus.

PSALMUS 13.

Dixit insípiens in corde suo: * Non est Deus.

Corrupti sunt et abominábiles facti sunt in stúdiis suis: * non est qui fáciat bonum, non est usque ad unum.

Dóminus de cœlo prospexit super fílios hóminum; * ut vídeat si est intélligens, aut requírens Deum.

Omnes declinavérunt, simul inútiles facti sunt: * non est qui fáciat bonum, non est usque ad unum.

Sepulcrum patens est guttur eórum; linguis suis dolósè agébant: * venénum áspidum sub lábiis eórum.

Quorum os maledictióne et amaritúdine plenum est: * velóces pedes eórum ad effundendum sánguinem.

Contrítio et infelícitas in viis eórum, et viam pacis non cognovérunt; * non est timor Dei ante óculos eórum.

Nonne cognoscent omnes qui operantur iniquitátem, * qui dévorant plebem meam sicut escam panis?

Dóminum non invocavérunt: illic trepidavérunt timóre, ubi non erat timor; * quóniam Dóminus in generatióne justa est.

Consílium ínopis confudistis, * quóniam Dóminus spes ejus est.

Quis dabit ex Sion salutáre Israel? * cùm avérterit Dóminus captivitátem plebis suæ, exultábit Jacob, et lætábitur Israel.

PSALMUS 15.

Conserva me, Dómine, * quóniam sperávi in te.

Dixi Dómino : Deus meus es tu, * quóniam bonórum meórum non eges.

Sanctis qui sunt in terra ejus, * mirificávit omnes voluntátes meas in eis.

Multiplicátæ sunt infirmitátes eórum ; * póstea acceleravérunt.

Non congregábo conventícula eórum de sanguínibus ; * nec memor ero nóminum eórum per lábia mea.

Dóminus pars hæreditátis meæ et cálicis mei : * tu es qui restítues hæreditátem meam mihi.

Funes cecidérunt mihi in præcláris ; * étenim hæréditas mea præclára est mihi.

Benedícam Dóminum qui tríbuit mihi intellectum : * ínsuper et usque ad noctem increpuérunt me renes mei.

Providébam Dóminum in conspectu meo semper ; * quóniam à dextris est mihi, ne commóvear.

Propter hoc lætátum est cor meum, et exultávit lingua mea : * ínsuper et caro mea requiescet in spe ;

Quóniam non derelinques ánimam meam in inferno, * nec dabis sanctum tuum vidére corruptiónem.

Notas mihi fecisti vias vitæ ; adimplébis me lætítiâ cum vultu tuo ; * delectatiónes in déxtera tua usque in finem.

*In Quadragesima.*

*Ant.* 4. E. Conserva me, Dómine, quóniam sperávi in te. *Ps.* 15.

# FERIA QUINTA.

## AD OFFICIUM NOCTURNUM.

## PRO I NOCTURNO.

Psalmus 19.

Exaudiat te Dóminus in die tribulatiónis : * prótegat te nomen Dei Jacob.

Mittat tibi auxílium de sancto ; * et de Sion tueátur te.

Memor sit omnis sacrifícii tui ; * et holocaustum tuum pingue fiat.

Tríbuat tibi secundùm cor tuum ; * et omne consílium tuum confirmet.

Lætábimur in salutári tuo ; * et in nómine Dei nostri magnificábimur.

Impleat Dóminus omnes petitiónes tuas : * nunc cognóvi quóniam salvum fecit Dóminus Christum suum.

Exáudiet illum de cœlo sancto suo : * in potentátibus salus déxteræ ejus.

Hi in cúrribus, et hi in equis ; * nos autem in nómine Dómini Dei nostri invocábimus.

Ipsi obligáti sunt, et cecidérunt ; * nos autem surréximus, et erecti sumus.

Dómine, salvum fac regem ; * et exaudi nos in die quâ invocavérimus te.

Psalmus 32.

Exultate, justi, in Dómino ; * rectos decet collaudátio.

Confitémini Dómino in cithara : * in psaltério decem chordárum psállite illi.

Cantáte ei cánticum no-

vum : * bene psállite ei in vociferatióne.

Quia rectum est verbum Dómini; * et ómnia ópera ejus in fide.

Díligit misericórdiam et judícium : * misericórdiâ Dómini plena est terra.

Verbo Dómini cœli firmáti sunt; * et spíritu oris ejus omnis virtus eórum.

Cóngregans sicut in utre aquas maris : * ponens in thesauris abyssos.

Tímeat Dóminum omnis terra : * ab eo autem commoveantur omnes inhabitantes orbem.

Quóniam ipse dixit, et facta sunt; * ipse mandávit, et creáta sunt.

Dóminus díssipat consília géntium ; * réprobat autem cogitatiónes populórum, et réprobat consília príncipum.

Consílium autem Dómini in æternum manet : * cogitatiónes cordis ejus in generatióne et generatiónem.

*Divisio* PSALMI 32.

BEATA gens, cujus est Dóminus Deus ejus : * pópulus quem elégit in hæreditátem sibi.

De cœlo respexit Dóminus; * vidit omnes fílios hóminum.

De præparáto habitáculo suo, * respexit super omnes qui hábitant terram ;

Qui finxit singillátim corda eórum ; * qui intélligit ómnia ópera eórum.

Non salvátur rex per multam virtútem; * et gigas non salvábitur in multitúdine virtútis suæ.

Fallax equus ad salútem; * in abundántia autem virtútis suæ non salvábitur.

Ecce óculi Dómini super metuentes eum, * et in eis qui sperant super misericórdia ejus;

Ut éruat à morte ánimas eórum; * et alat eos in fame.

Anima nostra sústinet Dóminum ; * quóniam adjútor et protector noster est.

Quia in eo lætábitur cor nostrum, * et in nómine sancto ejus sperávimus.

Fiat misericórdia tua, Dómine, super nos, * quemádmodum sperávimus in te.

PRO II NOCTURNO.

PSALMUS 67.

EXURGAT Deus, et dissipentur inimíci ejus; * et fúgiant, qui odérunt eum, à fácie ejus.

Sicut déficit fumus, defíciant : * sicut fluit cera à fácie ignis, sic péreant peccatóres à fácie Dei.

Et justi epulentur, et exultent in conspectu Dei, * et delectentur in lætítia.

Cantáte Deo, psalmum dícite nómini ejus : * iter fácite ei qui ascendit super occásum.

Dóminus nomen illi;* exultáte in conspectu ejus.

Turbabuntur à fácie ejus; * patris orphanórum, et júdicis viduárum.

Deus in loco sancto suo; * Deus qui inhabitáre facit uníus moris in domo :

Qui edúcit vinctos in fortitúdine, * simíliter eos qui

exásperant, qui hábitant in sepulcris.

Deus, cùm egrederéris in conspectu pópuli tui, * cùm pertransíres in deserto,

Terra mota est; * étenim cœli distillavérunt à fácie Dei Sínaï, à fácie Dei Israel.

Plúviam voluntáriam segregábis, Deus, hæreditáti tuæ; * et infirmáta est: tu verò perfecisti eam.

Animália tua habitábunt in ea; * parasti in dulcédine tua páuperi, Deus.

*Divisio* PSALMI 67.

DOMINUS dabit verbum evangelizántibus, * virtúte multâ.

Rex virtútum dilecti dilecti; * et speciéi domûs divídere spólia.

Si dormiátis inter médios cleros; pennæ columbæ deargentátæ, * et posterióra dorsi ejus in pallóre auri.

Dum discernit cœlestis reges super eam, * nive dealbabuntur in Selmon.

Mons Dei, mons pinguis; * mons coagulátus, mons pinguis.

Ut quid suspicámini montes coagulátos? * mons in quo beneplácitum est Deo habitáre in eo; étenim Dóminus habitábit in finem.

Currus Dei decem míllibus múltiplex, míllia lætántium: * Dóminus in eis in Sina, in sancto.

Ascendisti in altum, cepisti captivitátem; * accepisti dona in homínibus:

Etenim non credentes, * inhabitáre Dóminum Deum.

Benedictus Dóminus die quotídie, * prósperum iter fáciet nobis Deus salutárium nostrórum.

Deus noster, Deus salvos faciendi; * et Dómini Dómini éxitus mortis.

Verùmtamen Deus confringet cápita inimicórum suórum, * vérticem capilli perambulántium in delictis suis.

Dixit Dóminus: Ex Basan convertam, * convertam in profundum maris:

Ut intingátur pes tuus in sánguine, * lingua canum tuórum ex inimícis ab ipso.

Vidérunt ingressus tuos, Deus, * ingressus Dei mei, Regis mei qui est in sancto.

Prævenérunt príncipes conjuncti psalléntibus, * in médio juvenculárum tympanistriárum.

*Altera divisio* PSALMI 67.

IN ecclésiis benedícite Deo Dómino, * de fóntibus Israel.

Ibi Bénjamin adolescéntulus, * in mentis excessu.

Príncipes Juda, duces eórum: * príncipes Zabúlon, príncipes Néphthali.

Manda, Deus, virtúti tuæ, * confirma hoc, Deus, quod operátus es in nobis.

A templo tuo in Jerúsalem, * tibi ófferent reges múnera.

Increpa feras arúndinis; congregátio taurórum in vaccis populórum; * ut exclúdant eos qui probáti sunt argento.

Díssipa gentes quæ bella volunt: * vénient legáti ex

Ægypto; Æthiópia prævéniet manus ejus Deo.

Regna terræ, cantáte Deo;* psállite Dómino.

Psállite Deo qui ascendit super cœlum cœli* ad orientem.

Ecce dabit voci suæ vocem virtútis: * date glóriam Deo.

Super Israel magnificéntia ejus, * et virtus ejus in núbibus.

Mirábilis Deus in sanctis suis; Deus Israel ipse dabit virtútem et fortitúdinem plebi suæ: * benedictus Deus.

PRO III NOCTURNO.

PSALMUS 88.

MISERICORDIAS Dómini * in æternum cantábo.

In generatiónem et generatiónem * annuntiábo veritátem tuam in ore meo:

Quóniam dixisti: In æternum misericórdia ædificábitur in cœlis, * præparábitur véritas tua in eis.

Dispósui testamentum eléctis meis; * jurávi David servo meo:

Usque in æternum præparábo semen tuum; * et ædificábo in generatiónem et generatiónem sedem tuam.

Confitebuntur cœli mirabília tua, Dómine; * étenim veritátem tuam in ecclésia sanctórum.

Quóniam quis in núbibus æquábitur Dómino? * símilis erit Deo in fíliis Dei?

Deus, qui glorificátur in concílio sanctórum;* magnus et terríbilis super omnes qui in circúitu ejus sunt.

Dómine Deus virtútum, quis símilis tibi? * potens es, Dómine; et véritas tua in circúitu tuo.

Tu domináris potestáti maris; * motum autem flúctuum ejus tu mítigas.

Tu humiliasti sicut vulnerátum, superbum: * in bráchio virtútis tuæ dispersísti inimícos tuos.

Tui sunt cœli, et tua est terra: * orbem terræ et plenitúdinem ejus tu fundasti;

Aquilónem et mare tu creasti: * Thabor et Hermon in nómine tuo exultábunt.

Tuum bráchium cum poténtia: * firmétur manus tua, et exaltétur déxtera tua.

Justítia et judícium præparátio sedis tuæ; * misericórdia et véritas præcédent fáciem tuam.

*Divisio* PSALMI 88.

BEATUS pópulus qui scit jubilatiónem: * Dómine, in lúmine vultûs tui ambulábunt.

Et in nómine tuo exultábunt totâ die, * et in justítia tua exaltabuntur;

Quóniam glória virtútis eórum tu es, * et in beneplácito tuo exaltábitur cornu nostrum.

Quia Dómini est assúmptio nostra, * et Sancti Israel regis nostri.

Tunc locútus es in visióne sanctis tuis, et dixisti: * Pósui adjutórium in potente, et exaltávi electum de plebe mea.

Invéni David servum meum, * óleo sancto meo unxi eum.

Manus enim mea auxiliábitur ei, * et bráchium meum confortábit eum.

Nihil profíciet inimícus in eo, * et fílius iniquitátis non appónet nocére ei.

Et concídam à fácie ipsíus inimícos ejus, * et odientes eum in fugam convertam.

Et véritas mea et misericórdia mea cum ipso; * et in nómine meo exaltábitur cornu ejus.

Et ponam in mari manum ejus: * et in flumínibus déxteram ejus.

Ipse invocábit me: Pater meus es tu; * Deus meus, et susceptor salútis meæ.

Et ego primogénitum ponam illum, * excelsum præ régibus terræ.

In æternum servábo illi misericórdiam meam; * et testamentum meum fidéle ipsi.

Et ponam in séculum séculi semen ejus, * et thronum ejus sicut dies cœli.

Si autem derelíquerint fílii ejus legem meam, * et in judíciis meis non ambuláverint;

Si justítias meas profanáverint, * et mandáta mea non custodíerint:

Visitábo in virga iniquitátes eórum, * et in verbéribus peccáta eórum.

Misericórdiam autem meam non dispergam ab eo, * neque nocébo in veritáte mea.

Neque profanábo testamentum meum; * et quæ procédunt de lábiis meis, non fáciam írrita.

*Altera divisio* PSALMI 88.

SEMEL jurávi in sancto meo, * si David méntiar:

Semen ejus in æternum manébit; * et thronus ejus sicut sol in conspectu meo;

Et sicut luna perfecta in æternum, * et testis in cœlo fidélis.

Tu verò repulisti et despexisti; * distulisti Christum tuum.

Evertisti testamentum servi tui, * profanasti in terra sanctuárium ejus.

Destruxisti omnes sepes ejus; * posuisti firmamentum ejus formídinem.

Diripuérunt eum omnes transeuntes viam: * factus est oppróbrium vicínis suis.

Exaltasti déxteram depriméntium eum: * lætificasti omnes inimícos ejus.

Avertisti adjutórium gládii ejus; * et non es auxiliátus ei in bello.

Destruxisti eum ab emundatióne; * et sedem ejus in terram collisisti.

Minorasti dies témporis ejus: * perfudisti eum confusióne.

Usquequo, Dómine, avertis in finem? * exardescet sicut ignis ira tua?

Memoráre quæ mea substántia: * numquid enim vanè constituisti omnes fílios hóminum?

Quis est homo qui vivet, et non vidébit mortem? * éruet ánimam suam de manu ínferi?

Ubi sunt misericórdiæ tuæ

antíquæ, Dómine, * sicut jurasti David in veritáte tua?

Memor esto, Dómine, oppróbrii servórum tuórum, * quod contínui in sinu meo, multárum géntium;

Quod exprobravérunt inimíci tui, Dómine, * quod exprobravérunt commutatiónem Christi tui.

Benedictus Dóminus in æternum: * fiat, fiat.

## AD LAUDES.

### Psalmus 80.

Exultate Deo adjutóri nostro: * jubiláte Deo Jacob.

Súmite psalmum, et date tympanum, * psaltérium jucundum cum cíthara.

Buccináte in Neoménia tuba, * in insigni die solemnitátis vestræ;

Quia præceptum in Israel est, * et judícium Deo Jacob.

Testimónium in Joseph pósuit illud, cùm exíret de terra Ægypti: * linguam quam non nóverat, audívit.

Divertit ab onéribus dorsum ejus: * manus ejus in cóphino serviérunt.

In tribulatióne invocasti me, et liberávi te: * exaudívi te in abscóndito tempestátis; probávi te apud aquam contradictiónis.

Audi, pópulus meus, et contestábor te: * Israel, si audíeris me, non erit in te deus recens, neque adorábis deum aliénum.

Ego enim sum Dóminus Deus tuus, qui eduxi te de terra Ægypti: * dilátaos tuum, et implébo illud.

Et non audívit pópulus meus vocem meam; * et Israel non intendit mihi.

Et dimísi eos secundùm desidéria cordis eórum: * ibunt in adinventiónibus suis.

Si pópulus meus audisset me; * Israel si in viis meis ambulasset;

Pro níhilo fórsitan inimícos eórum humiliassem, * et super tribulantes eos misissem manum meam.

Inimíci Dómini mentíti sunt ei; * et erit tempus eórum in sécula.

Et cibávit eos ex ádipe frumenti; * et de petra, melle saturávit eos.

### Psalmus 107.

Paratum cor meum, Deus, parátum cor meum: * cantábo et psallam in glória mea.

Exurge, glória mea; exurge, psaltérium et cíthara: * exurgam dilúculo.

Confitébor tibi in pópulis, Dómine, * et psallam tibi in natiónibus;

Quia magna est super cœlos misericórdia tua, * et usque ad nubes véritas tua.

Exaltáre super cœlos, Deus, * et super omnem terram glória tua;

Ut liberentur dilecti tui: * salvum fac déxterâ tuâ, et exaudi me.

### *Divisio* Psalmi 107.

Deus locútus est in sancto suo: * exultábo, et dívidam Síchimam, et convallem tabernaculórum dimétiar.

Meus est Gálaad, et meus est Manasses; * et Ephraim suscéptio cápitis mei.

Juda rex meus: * Moab lebes spei meæ.

In Idumæam extendam calceamentum meum: * mihi Alienígenæ amíci facti sunt.

Quis dedúcet me in civitátem munítam? * quis dedúcet me usque in Idumæam?

Nonne tu, Deus, qui repulisti nos? * et non exíbis, Deus, in virtútibus nostris?

Da nobis auxílium de tribulatióne, * quia vana salus hóminis.

In Deo faciémus virtútem, * et ipse ad níhilum dedúcet inimícos nostros.

*In Quadragesima.*

CANTICUM ANNÆ. 1 *Reg.* 2.

EXULTAVIT cor meum in Dómino, * et exaltátum est cornu meum in Deo meo.

Dilatátum est os meum super inimícos meos, * quia lætáta sum in salutári tuo.

Non est sanctus, ut est Dóminus; neque enim est álius extra te: * et non est fortis sicut Deus noster.

Nolíte multiplicáre loqui sublímia, gloriantes: * recédant vétera de ore vestro;

Quia Deus scientiárum Dóminus est, * et ipsi præparantur cogitatiónes.

Arcus fórtium superátus est; * et infirmi accincti sunt róbore.

Repléti priùs pro pánibus se locavérunt; * et famélici saturáti sunt;

Donec stérilis péperit plúrimos; * et quæ multos habébat filios, infirmáta est.

Dóminus mortíficat, et vivíficat; * dedúcit ad ínferos, et redúcit.

Dóminus páuperem facit, et ditat, * humíliat et súblevat.

Súscitat de púlvere egénum, * et de stércore élevat páuperem;

Ut sédeat cum princípibus, * et sólium glóriæ téneat.

Dómini enim sunt cárdines terræ, * et pósuit super eos orbem.

Pedes sanctórum suórum servábit, et ímpii in ténebris conticescent; * quia non in fortitúdine sua roborábitur vir.

Dóminum formidábunt adversárii ejus; * et super ipsos in cœlis tonábit.

Dóminus judicábit fines terræ, et dabit impérium Regi suo, * et sublimábit cornu Christi sui.

*Tempore Paschali.*

CANTICUM. 1 *Paral.* 29.

BENEDICTUS es, Dómine, Deus Israel patris nostri, * ab æterno in æternum.

Tua est, Dómine, magnificéntia, et poténtia, et glória, atque victória, * et tibi laus.

Cuncta enim quæ in cœlo sunt et in terra, * tua sunt;

Tuum, Dómine, regnum; * et tu es super omnes príncipes.

Tuæ divítiæ, et tua est glória: * tu domináris ómnium.

In manu tua virtus et po-

téntia : * in manu tua magnitúdo, et impérium ómnium.

Nunc ígitur, Deus noster, confitémur tibi,* et laudámus nomen tuum ínclytum.

Psalmus 147.

Lauda, Jerúsalem, Dóminum : * lauda Deum tuum, Sion;

Quóniam confortávit seras portárum tuárum, * benedixit filiis tuis in te;

Qui pósuit fines tuos pacem, * et ádipe frumenti sátiat te;

Qui emittit elóquium suum terræ, * velóciter currit sermo ejus;

Qui dat nivem sicut lanam, * nébulam sicut cínerem spargit;

Mittit crystallum suam sicut buccellas: * ante fáciem frígoris ejus quis sustinébit?

Emittet verbum suum, et liquefáciet ea : * flabit spíritus ejus, et fluent aquæ.

Qui annúntiat verbum suum Jacob, * justítias et judícia sua Israel.

Non fecit táliter omni natióni; * et judícia sua non manifestávit eis.

## AD PRIMAM.

Psalmus 66.

Deus misereátur nostri, et benedícat nobis : * illúminet vultum suum super nos, et misereátur nostri;

Ut cognoscámus in terra viam tuam, * in ómnibus géntibus salutáre tuum.

Confiteántur tibi pópuli, Deus, * confiteántur tibi pópuli omnes.

Læténtur et exúltent gentes, quóniam júdicas pópulos in æquitáte, * et gentes in terra dírigis.

Confiteántur tibi pópuli, Deus, confiteántur tibi pópuli omnes : * terra dedit fructum suum.

Benedícat nos Deus, Deus noster, benedícat nos Deus : * et métuant eum omnes fines terræ.

Psalmus 89.

Domine, refúgium factus es nobis, * à generatióne in generatiónem.

Priusquam montes fíerent, aut formarétur terra et orbis; * à século et usque in séculum tu es Deus.

Ne avertas hóminem in humilitátem; * et dixisti : Convertímini, filii hóminum.

Quóniam mille anni ante óculos tuos, * tanquam dies hesterna quæ prætériit, et custódia in nocte :

Quæ pro nihilo habentur, * eórum anni erunt.

Mane sicut herba tránseat, mane flóreat et tránseat : * véspere décidat, indúret et aréscat;

Quia defécimus in ira tua, * et in furóre tuo turbáti sumus.

Posuisti iniquitátes nostras in conspectu tuo, * séculum nostrum in illuminatióne vultûs tui;

Quóniam omnes dies nostri defecérunt, et in ira tua

defécimus : * anni nostri sicut aránea meditabúntur.

Dies annórum nostrórum in ipsis septuaginta anni : * si autem in potentátibus, octogínta anni,

Et ámpliùs eórum * labor et dolor.

Quóniam supervénit mansuetúdo, * et corripiémur.

*Divisio* PSALMI 89.

QUIS novit potestátem iræ tuæ, * et præ timóre tuo iram tuam dinumeráre?

Déxteram tuam sic notam fac, * et erudítos corde in sapiéntia.

Convértere, Dómine, úsquequo? * et deprecábilis esto super servos tuos.

Repléti sumus mane misericórdiâ tuâ; * et exultávimus, et delectáti sumus ómnibus diébus nostris.

Lætáti sumus pro diébus quibus nos humiliasti, * annis quibus vídimus mala.

Réspice in servos tuos, et in ópera tua; * et dírige fílios eórum.

Et sit splendor Dómini Dei nostri super nos : et ópera mánuum nostrárum dírige super nos; * et opus mánuum nostrárum dírige.

## AD TERTIAM.

PSALMUS 26.

DOMINUS illuminátio mea, et salus mea; * quem timébo?

Dóminus protector vitæ meæ; * à quo trepidábo?

Dum appróprìant super me nocentes, * ut edant carnes meas.

Qui tribulant me inimíci mei, * ipsi infirmáti sunt et cecidérunt.

Si consistant adversùm me castra, * non timébit cor meum.

Si exurgat adversùm me prælium, * in hoc ego sperábo.

Unam pétii à Dóminò, hanc requíram, * ut inhábitem in domo Dómini ómnibus diébus vitæ meæ;

Ut vídeam voluptátem Dómini, * et vísitem templum ejus;

Quóniam abscondit me in tabernáculo suo : * in die malórum protexit me in abscóndito tabernáculi sui.

In petra exaltávit me, * et nunc exaltávit caput meum super inimícos meos.

Circuívi et immolávi in tabernáculo ejus hóstiam vociferatiónis : * cantábo, et psalmum dicam Dómino.

*Divisio* PSALMI 26.

EXAUDI, Dómine, vocem meam quâ clamávi ad te : * miserére meî, et exaudi me.

Tibi dixit cor meum : Exquisívit te fácies mea : * fáciem tuam, Dómine, requíram.

Ne avertas fáciem tuam à me : * ne declínes in ira à servo tuo.

Adjútor meus esto; ne derelínquas me, * neque despícias me, Deus salutáris meus.

Quóniam pater meus et mater mea dereliquérunt me : * Dóminus autem assúmpsit me.

Legem pone mihi, Dómine, in via tua; * et dírige me in sémitam rectam propter inimícos meos.

Ne tradíderis me in ánimas tribulántium me; * quóniam insurrexérunt in me testes iníqui, et mentíta est iníquitas sibi.

Credo vidére bona Dómini * in terra vivéntium.

Expecta Dóminum, viríliter age; * et confortétur cor tuum, et sústine Dóminum.

Psalmus 83.

Quam dilecta tabernácula tua, Dómine virtútum! * concupiscit et déficit ánima mea in átria Dómini.

Cor meum et caro mea * exultavérunt in Deum vivum.

Etenim passer invénit sibi domum, * et turtur nidum sibi, ubi ponat pullos suos.

Altária tua, Dómine virtútum, * Rex meus et Deus meus.

Beáti qui hábitant in domo tua, Dómine! * in sécula seculórum laudábunt te.

Beátus vir cujus est auxílium abs te: * ascensiónes in corde suo dispósuit, in valle lacrymárum, in loco quem pósuit.

Etenim benedictiónem dabit legislátor, ibunt de virtúte in virtútem: * vidébitur Deus deórum in Sion.

Dómine Deus virtútum, exaudi oratiónem meam; * áuribus pércipe, Deus Jacob.

Protector noster, áspice, Deus, * et réspice in fáciem christi tui;

Quia mélior est dies una in átriis tuis * super míllia.

Elégi abjectus esse in domo Dei mei, * magis quàm habitáre in tabernáculis peccatórum;

Quia misericórdiam et veritátem díligit Deus; * grátiam et glóriam dabit Dóminus.

Non privábit bonis eos qui ámbulant in innocéntia: * Dómine virtútum, beátus homo qui sperat in te.

## AD SEXTAM.

Psalmus 22.

Dominus regit me, et nihil mihi déerit: * in loco páscuæ ibi me collocávit.

Super aquam refectiónis educávit me: * ánimam meam convertit.

Deduxit me super sémitas justítiæ, * propter nomen suum.

Nam et si ambulávero in médio umbræ mortis, non timébo mala; * quóniam tu mecum es.

Virga tua, et báculus tuus, * ipsa me consoláta sunt.

Parasti in conspectu meo mensam, * advérsùs eos qui tríbulant me.

Impinguasti in óleo caput meum: * et calix meus inébrians quàm præclárus est!

Et misericórdia tua subsequétur me * ómnibus diébus vitæ meæ;

Et ut inhábitem in domo Dómini, * in longitúdinem diérum.

PSALMUS 33.

BENEDICAM Dóminum in omni témpore : * semper laus ejus in ore meo.

In Dómino laudábitur ánima mea : * áudiant mansuéti, et lætentur.

Magnificáte Dóminum mecum ; * et exaltémus nomen ejus in idipsum.

Exquisívi Dóminum, et exaudívit me, * et ex ómnibus tribulatiónibus meis erípuit me.

Accédite ad eum, et illuminámini ; * et fácies vestræ non confundentur.

Iste pauper clamávit ; et Dóminus exaudívit eum, * et de ómnibus tribulatiónibus ejus salvávit eum.

Immittet ángelus Dómini in circúitu timéntium eum ; * et erípiet eos.

Gustáte, et vidéte quóniam suávis est Dóminus : * beátus vir qui sperat in eo.

Timéte Dóminum, omnes sancti ejus, * quóniam non est inópia timéntibus eum.

Dívites eguérunt et esuriérunt ; * inquirentes autem Dóminum non minuentur omni bono.

*Divisio* PSALMI 33.

VENITE, fílii, audíte me ; * timórem Dómini docébo vos.

Quis est homo qui vult vitam, * díligit dies vidére bonos?

Próhibe linguam tuam à malo ; * et lábia tua ne loquantur dolum.

Diverte à malo, et fac bonum : * inquíre pacem, et perséquere eam.

Oculi Dómini super justos, * et aures ejus in preces eórum.

Vultus autem Dómini super faciéntes mala, * ut perdat de terra memóriam eórum.

Clamavérunt justi ; et Dóminus exaudívit eos ; * et ex ómnibus tribulatiónibus eórum liberávit eos.

Juxta est Dóminus iis qui tribuláto sunt corde, * et húmiles spíritu salvábit.

Multæ tribulatiónes justórum ; * et de ómnibus his liberábit eos Dóminus.

Custódit Dóminus ómnia ossa eórum : * unum ex his non conterétur.

Mors peccatórum péssima ; * et qui odérunt justum, delinquent.

Rédimet Dóminus ánimas servórum suórum ; * et non delinquent omnes qui sperant in eo.

## AD NONAM.

PSALMUS 79.

QUI regis Israel, intende ; * qui dedúcis velut ovem Joseph.

Qui sedes super Chérubim, * manifestáre coram Ephraim, Bénjamin, et Manasse.

Excita poténtiam tuam ; * et veni, ut salvos fácias nos.

Deus, converte nos, et ostende fáciem tuam ; * et salvi érimus.

Dómine Deus virtútum, *

quousque irascéris super oratiónem servi tui?

Cibábis nos pane lácrymárum, * et potum dabis nobis in lácrymis in mensúra?

Posuisti nos in contradictiónem vicínis nostris; * et inimíci nostri subsannavérunt nos.

Deus virtútum, converte nos, et ostende fáciem tuam; * et salvi érimus.

*Divisio* PSALMI 79.

[DOMINE,] víneam de Ægypto transtulisti: * ejecisti gentes, et plantasti eam.

Dux itíneris fuisti in conspectu ejus: * plantasti radíces ejus, et implévit terram.

Opéruit montes umbra ejus, * et arbusta ejus cedros Dei.

Extendit pálmites suos usque ad mare, * et usque ad flumen propágines ejus.

Ut quid destruxisti macériam ejus, * et vindémiant eam omnes qui prætergrediuntur viam?

Exterminávit eam aper de silva, * et singuláris ferus depastus est eam.

Deus virtútum, convértere: * réspice de cœlo, et vide, et vísita víneam istam.

Et pérfice eam quam plantávit déxtera tua, * et super fílium hóminis quem confirmasti tibi.

Incensa igni, et suffossa; * ab increpatióne vultûs tui períbunt.

Fiat manus tua super virum déxteræ tuæ, * et super fílium hóminis quem confirmasti tibi.

Et non discédimus à te; * vivificábis nos, et nomen tuum invocábimus.

Dómine Deus virtútum: converte nos, et ostende fáciem tuam; * et salvi érimus.

PSALMUS 92.

DOMINUS regnávit, decórem indútus est: * indútus est Dóminus fortitúdinem, et præcinxit se.

Etenim firmávit orbem terræ, * qui non commovébitur.

Paráta sedes tua ex tunc: * à século tu es.

Elevavérunt flúmina, Dómine: * elevavérunt flúmina vocem suam.

Elevavérunt flúmina fluctus suos, * à vócibus aquárum multárum.

Mirábiles elatiónes maris: * mirábilis in altis Dóminus.

Testimónia tua credibília facta sunt nimis: * domum tuam decet sanctitúdo, Dómine, in longitúdinem diérum.

## AD VESPERAS.

PSALMUS 115.

CREDIDI, propter quod locútus sum; * ego autem humiliátus sum nimis.

Ego dixi in excessu meo: * Omnis homo mendax.

Quid retríbuam Dómino, * pro ómnibus quæ retríbuit mihi?

Cálicem salutáris accípiam, * et nomen Dómini invocábo.

Vota mea Dómino reddam coram omni pópulo ejus: * pretiósa in conspectu Dómini mors Sanctórum ejus.

O Dómine, quia ego servus tuus, * ego servus tuus et fílius ancillæ tuæ.

Dirupisti víncula mea; * tibi sacrificábo hóstiam laudis, et nomen Dómini invocábo.

Vota mea Dómino reddam in conspectu omnis pópuli ejus, * in átriis domûs Dómini, in médio tuî, Jerúsalem.

PSALMUS 137.

CONFITEBOR tibi, Dómine, in toto corde meo, * quóniam audisti verba oris mei.

In conspectu Angelórum psallam tibi: * adorábo ad templum sanctum tuum;

Et confitébor nómini tuo super misericórdia tua et veritáte tua; * quóniam magnificasti super omne, nomen sanctum tuum.

In quacumque die invocavero te, exaudi me: * multiplicábis in ánima mea virtútem.

Confiteantur tibi, Dómine, omnes reges terræ, * quia audiérunt ómnia verba oris tui.

Et cantent in viis Dómini,* quóniam magna est glória Dómini:

Quóniam excelsus Dóminus, et humília réspicit, * et alta à longè cognoscit.

Si ambulávero in médio tribulatiónis, vivificábis me: * et super iram inimicórum meórum extendisti manum tuam, et salvum me fecit déxtera tua.

Dóminus retríbuet pro me: * Dómine, misericórdia tua in séculum: ópera mánuum tuárum ne despícias.

PSALMUS 144.

EXALTABO te, Deus meus rex; * et benedícam nómini tuo in séculum, et in séculum séculi.

Per síngulos dies benedícam tibi; * et laudábo nomen tuum in séculum, et in séculum séculi.

Magnus Dóminus, et laudábilis nimis; * et magnitúdinis ejus non est finis.

Generátio et generátio laudábit ópera tua, * et poténtiam tuam pronuntiábunt.

Magnificéntiam glóriæ sanctitátis tuæ loquentur,* et mirabília tua narrábunt:

Et virtútem terribílium tuórum dicent, * et magnitúdinem tuam narrábunt.

Memóriam abundántiæ suavitátis tuæ eructábunt, * et justítiâ tuâ exultábunt.

*Divisio* PSALMI 144.

MISERATOR et miséricors Dóminus; * pátiens, et multùm miséricors.

Suávis Dóminus universis.* et miseratiónes ejus super ómnia ópera ejus.

Confiteantur tibi, Dómine, ómnia ópera tua; * et sancti tui benedícant tibi.

Glóriam regni tui dicent, * et poténtiam tuam loquentur;

Ut notam fáciant fíliis hóminum poténtiam tuam, * et

glóriam magnificéntiæ regni tui.

Regnum tuum, regnum ómnium seculórum; * et dominátio tua in omni generatióne et generatiónem.

Fidélis Dóminus in ómnibus verbis suis, * et sanctus in ómnibus opéribus suis.

Allevat Dóminus omnes qui córruunt, * et érigit omnes elísos.

Oculi ómnium in te sperant, Dómine; * et tu das escam illórum in témpore opportúno.

Aperis tu manum tuam, * et imples omne ánimal benedictióne.

*Altera divisio* PSALMI 144.

JUSTUS Dóminus in ómnibus viis suis, * et sanctus in ómnibus opéribus suis.

Prope est Dóminus ómnibus invocántibus eum, * ómnibus invocántibus eum in veritáte.

Voluntátem timéntium se fáciet, et deprecatiónem eórum exáudiet, * et salvos fáciet eos.

Custódit Dóminus omnes diligentes se, * et omnes peccatóres disperdet.

Laudatiónem Dómini loquétur os meum; * et benedícat omnis caro nómini sancto ejus in séculum, et in séculum séculi.

## AD COMPLETORIUM.

PSALMUS 11.

SALVUM me fac, Dómine, quóniam defécit sanctus; * quóniam diminútæ sunt veritátes à fíliis hóminum.

Vana locúti sunt unusquisque ad próximum suum: * lábia dolósa, in corde et corde locúti sunt.

Disperdat Dóminus universa lábia dolósa, * et linguam magníloquam;

Qui dixérunt: Linguam nostram magnificábimus, lábia nostra à nobis sunt: * quis noster Dóminus est?

Propter misériam ínopum et gémitum páuperum, * nunc exurgam, dicit Dóminus.

Ponam in salutári: * fiduciáliter agam in eo.

Elóquia Dómini, elóquia casta: * argentum igne examinátum, probátum terræ, purgátum séptuplum.

Tu, Dómine, servábis nos; * et custódies nos à generatióne hac in ætérnum.

In circúitu ímpii ámbulant: * secundùm altitúdinem tuam multiplicasti fílios hóminum.

PSALMUS 38.

DIXI: Custódiam vias meas, * ut non delínquam in lingua mea.

Pósui ori meo custódiam, * cùm consísteret peccátor adversùm me.

Obmútui, et humiliátus sum, et sílui à bonis; * et dolor meus renovátus est.

Concáluit cor meum intra me, et in meditatióne mea exardéscet ignis: * locútus sum in lingua mea.

Notum fac mihi, Dómine,

finem meum, et númerum diérum meórum, quis est; * ut sciam quid desit mihi.

Ecce mensurábiles posuisti dies meos; * et substántia mea tanquam níhilum ante te.

Verúmtamen universa vánitas, * omnis homo vivens.

Verúmtamen in imágine pertransit homo; * sed et frustra conturbátur.

Thesaurízat, * et ignórat cui congregábit ea.

Et nunc quæ est expectátio mea? nonne Dóminus? * et substántia mea apud te est.

*Divisio* PSALMI 38.

Ab ómnibus iniquitátibus meis érue me: * oppróbrium insipienti dedisti me.

Obmútui, et non apérui os meum; * quóniam tu fecisti.

Amove à me plagas tuas: * à fortitúdine manûs tuæ ego deféci.

In increpatiónibus propter iniquitátem corripuisti hóminem, et tabéscere fecisti sicut aráneam ánimam ejus: * verúmtamen vanè conturbátur omnis homo.

Exaudi oratiónem meam, Dómine, et deprecatiónem meam: * áuribus pércipe lácrymas meas.

Ne síleas, quóniam ádvena ego sum apud te, et peregrinus, * sicut omnes patres mei.

Remitte mihi ut refrígerer, priusquam ábeam; * et ámpliùs non ero.

*In Quadragesima.*

*Ant.* 1. f. Salvum me fac, Dómine, quóniam diminútæ sunt veritátes à filiis hóminum. *Ps.* 11.

# FERIA SEXTA.

## AD OFFICIUM NOCTURNUM.

## PRO I NOCTURNO.

PSALMUS 51.

Quid gloriáris in malítia, * qui potens es in iniquitáte?

Totâ die injustítiam cogitávit lingua tua: * sicut novácula acúta fecisti dolum.

Dilexisti malítiam super benignitátem, * iniquitátem magis quàm loqui æquitátem.

Dilexisti ómnia verba præcipitatiónis, * lingua dolósa.

Proptérea Deus déstruet te in finem: * evellet te, et emigrábit te de tabernáculo tuo, et radícem tuam de terra vivéntium.

Vidébunt justi, et timébunt, et super eum ridébunt; * et dicent: Ecce homo qui non pósuit Deum adjutórem suum;

Sed sperávit in multitúdine divitiárum suárum, * et præváluit in vanitáte sua.

Ego autem sicut olíva fructífera in domo Dei: * sperávi in misericórdia Dei in ætérnum, et in séculum séculi.

Confitébor tibi in séculum, quia fecisti; * et expectábo nomen tuum, quóniam bonum est in conspectu sanctórum tuórum.

PSALMUS 54.

Exaudi, Deus, oratiónem meam, et ne despéxeris de-

precatiónem meam : * inténde mihi, et exaudi me.

Contristátus sum in exercitatióne mea, * et conturbátus sum à voce inimíci, et à tribulatióne peccatóris;

Quóniam declinavérunt in me iniquitátes, * et in ira molesti erant mihi.

Cor meum conturbátum est in me, * et formído mortis cécidit super me.

Timor et tremor venérunt super me, * et contexérunt me ténebræ.

Et dixi : Quis dabit mihi pennas sicut columbæ? * et volábo, et requiescam.

Ecce elongávi fúgiens, * et mansi in solitúdine.

Expectábam eum qui salvum me fecit à pusillanimitáte spíritûs, * et tempestáte.

Præcípita, Dómine, dívide linguas eórum; * quóniam vidi iniquitátem et contradictiónem in civitáte.

Die ac nocte circúmdabit eam super muros ejus iníquitas; * et labor in médio ejus, et injustítia.

Et non defécit de platéis ejus * usúra et dolus.

Quóniam si inimícus meus maledixisset mihi, * sustinuissem útique.

Et si is qui óderat me, super me magna locútus fuisset, * abscondissem me fórsitan ab eo.

Tu verò homo unánimis, * dux meus et notus meus;

Qui simul mecum dulces capiébas cibos; * in domo Dei ambulávimus cum consensu.

Véniat mors super illos, * et descendant in infernum viventes;

Quóniam nequítiæ in habitáculis eórum, * in médio eórum.

Ego autem ad Deum clamávi; * et Dóminus salvábit me.

*Divisio* Psalmi 54.

Vespere, et mane, et merídie, narrábo et annuntiábo, * et exáudiet vocem meam.

Rédimet in pace ánimam meam ab his qui appropinquant mihi; * quóniam inter multos erant mecum.

Exáudiet Deus, et humiliábit illos; * qui est ante sécula.

Non enim est illis commutátio, et non timuérunt Deum : * extendit manum suam in retribuendo.

Contaminavérunt testamentum ejus, divísi sunt ab ira vultûs ejus; * et appropinquávit cor illíus.

Mollíti sunt sermónes ejus super óleum, * et ipsi sunt jácula.

Jacta super Dóminum curam tuam, et ipse te enútriet : * non dabit in æternum fluctuatiónem justo.

Tu verò, Deus, * dedúces eos in púteum intéritûs.

Viri sánguinum et dolósi non dimidiábunt dies suos, * ego autem sperábo in te, Dómine.

PRO II NOCTURNO.

Psalmus 58.

Eripe me de inimícis meis, Deus meus, * et ab insurgéntibus in me líbera me.

Eripe me de operántibus

iniquitátem, * et de viris sánguinum salva me.

Quia ecce cepérunt ánimam meam: * irruérunt in me fortes.

Neque iníquitas mea, neque peccátum meum, Dómine; * sine iniquitáte cucurri, et direxi.

Exurge in occursum meum, et vide: * et tu, Dómine Deus virtútum, Deus Israel,

Intende ad visitandas omnes gentes: * non misereáris ómnibus qui operantur iniquitátem.

Convertentur ad vésperam; * et famem patientur ut canes, et circuíbunt civitátem.

Ecce loquentur in ore suo, et gládius in lábiis eórum; * quóniam quis audívit?

Et tu, Dómine, deridébis eos: * ad níhilum dedúces omnes gentes.

Fortitúdinem meam ad te custódiam, quia Deus susceptor meus es: * Deus meus, misericórdia ejus prævéniet me.

*Divisio* PSALMI 58.

Deus ostendet mihi super inimícos meos: * ne occídas eos, nequando obliviscantur pópuli mei.

Disperge illos in virtúte tua; * et depóne eos, protector meus, Dómine.

Delictum oris eórum, sermónem labiórum ipsórum; * et comprehendantur in supérbia sua.

Et de execratióne et mendácio annuntiabuntur in consummatióne; * in ira consummatiónis, et non erunt.

Et scient quia Deus dominábitur Jacob, * et fínium terræ.

Convertentur ad vésperam; * et famem patientur ut canes, et circuíbunt civitátem.

Ipsi dispergentur ad manducandum; * si verò non fúerint saturáti, et murmurábunt.

Ego autem cantábo fortitúdinem tuam, * et exultábo mane misericórdiam tuam;

Quia factus es susceptor meus et refúgium meum, * in die tribulatiónis meæ.

Adjútor meus, tibi psallam, quia Deus susceptor meus es: * Deus meus, misericórdia mea.

PSALMUS 60.

Exaudi, Deus, deprecatiónem meam: * intende oratióni meæ.

A fínibus terræ ad te clamávi, dum anxiarétur cor meum: * in petra exaltasti me.

Deduxisti me, quia factus es spes mea, * turris fortitúdinis à fácie inimíci.

Inhabitábo in tabernáculo tuo in sécula: * prótegar in velamento alárum tuárum;

Quóniam tu, Deus meus, exaudisti oratiónem meam; * dedisti hæreditátem timéntibus nomen tuum.

Dies super dies regis adjícies, * annos ejus usque in diem generatiónis et generatiónis.

Pérmanet in æternum in conspectu Dei: * misericór-

diam et veritátem ejus quis requíret?

Sic psalmum dicam nómini tuo in séculum séculi; * ut reddam vota mea de die in diem.

PRO III NOCTURNO.

Psalmus 68.

Salvum me fac, Deus, * quóniam intravérunt aquæ usque ad ánimam meam.

Infixus sum in limo profundi, * et non est substántia.

Veni in altitúdinem maris, * et tempestas demersit me.

Laborávi clamans, raucæ factæ sunt fauces meæ: * defecérunt óculi mei, dum spero in Deum meum.

Multiplicáti sunt super capillos cápitis mei, * qui odérunt me gratis.

Confortáti sunt qui persecúti sunt me inimíci mei injustè: * quæ non rápui, tunc exolvébam.

Deus, tu scis insipiéntiam meam; * et delicta mea à te non sunt abscóndita.

Non erubescant in me qui expectant te, Dómine, * Dómine virtútum.

Non confundantur super me, * qui quærunt te, Deus Israel.

Quóniam propter te sustínui oppróbrium, * opéruit confúsio fáciem meam.

Extráneus factus sum frátribus meis, * et peregrínus fíliis matris meæ;

Quóniam zelus domûs tuæ comédit me, * et oppróbria exprobrántium tibi cecidérunt super me.

Et opérui in jejúnio ánimam meam; * et factum est in oppróbrium mihi.

Et pósui vestimentum meum cilícium: * et factus sum illis in parábolam.

Adversùm me loquebantur qui sedébant in porta; * et in me psallébant qui bibébant vinum.

Ego verò oratiónem meam ad te, Dómine: * tempus benepláciti, Deus.

In multitúdine misericórdiæ tuæ exaudi me, * in veritáte salútis tuæ.

Eripe me de luto, ut non infígar: * líbera me ab iis qui odérunt me, et de profundis aquárum.

Non me demergat tempestas aquæ, neque absórbeat me profundum, * neque úrgeat super me púteus os suum.

*Divisio* Psalmi 68.

Exaudi me, Dómine, quóniam benigna est misericórdia tua: * secundùm multitúdinem miseratiónum tuárum réspice in me.

Et ne avertas fáciem tuam à púero tuo: * quóniam tríbulor, velóciter exáudi me.

Intende ánimæ meæ, et líbera eam: * propter inimícos meos éripe me.

Tu scis impropérium meum, et confusiónem meam, * et reveréntiam meam.

In conspectu tuo sunt omnes qui tríbulant me: * impropérium expectávit cor meum, et misériam.

Et sustínui qui simul contristarétur, et non fuit; * et

qui consolarétur, et non invéni.

Et dedérunt in escam meam fel; * et in siti mea potavérunt me acéto.

Fiat mensa eórum coram ipsis in láqueum, * et in retributiónes, et in scándalum.

Obscurentur óculi eórum, ne videant; * et dorsum eórum semper incurva.

Effunde super eos iram tuam; * et furor iræ tuæ comprehendat eos.

Fiat habitátio eórum deserta; * et in tabernáculis eórum non sit qui inhábitet.

Quóniam quem tu percussisti, persecúti sunt; * et super dolórem vúlnerum meórum addidérunt.

Appóne iniquitátem super iniquitátem eórum; * et non intrent in justítiam tuam.

Deleantur de libro vivéntium; * et cum justis non scribantur.

*Altera divisio* PSALMI 68.

Ego sum pauper et dolens :* salus tua, Deus, suscépit me.

Laudábo nomen Dei cum cántico, * et magnificábo eum in laude.

Et placébit Deo super vítulum novellum, * córnua producentem et úngulas.

Videant páuperes, et lætentur : * quærite Deum, et vivet ánima vestra;

Quóniam exaudívit páuperes Dóminus, * et vinctos suos non despexit.

Laudent illum cœli et terra, * mare, et ómnia reptília in eis.

Quóniam Deus salvam fáciet Sion, * et ædificabuntur civitátes Juda.

Et inhabitábunt ibi, * et hæreditáte acquírent eam.

Et semen servórum ejus possidébit eam; * et qui díligunt nomen ejus, habitábunt in ea.

## AD LAUDES.

PSALMUS 53.

Deus, in nómine tuo salvum me fac, * et in virtúte tua júdica me.

Deus, exaudi oratiónem meam : * áuribus pércipe verba oris mei :

Quóniam aliéni insurrexérunt adversùm me, et fortes quæsiérunt ánimam meam; * et non proposuérunt Deum ante conspectum suum.

Ecce enim Deus ádjuvat me; * et Dóminus susceptor est ánimæ meæ.

Averte mala inimícis meis;* et in veritáte tua disperde illos.

Voluntáriè sacrificábo tibi :* et confitébor nómini tuo, Dómine, quóniam bonum est :

Quóniam ex omni tribulatióne eripuisti me; * et super inimícos meos despexit óculus meus.

PSALMUS 70.

In te, Dómine, sperávi, non confundar in æternum : * in justítia tua líbera me, et éripe me.

Inclína ad me aurem tuam, * et salva me.

Esto mihi in Deum protectórem, et in locum muní-

tum, * ut salvum me fácias;

Quóniam firmamentum meum * et refúgium meum es tu.

Deus meus, éripe me de manu peccatóris, * et de manu contra legem agentis, et iníqui;

Quóniam tu es patiéntia mea, Dómine: * Dómine, spes mea à juventúte mea.

In te confirmátus sum ex útero: de ventre matris meæ tu es protector meus; * in te cantátio mea semper.

Tanquam prodígium factus sum multis, * et tu adjútor fortis.

Repleátur os meum laude, ut cantem glóriam tuam; * totâ die magnitúdinem tuam.

Ne projícias me in témpore senectútis: * cùm defécerit virtus mea, ne derelinquas me.

Quia dixérunt inimíci mei mihi; * et qui custodiébant ánimam meam, consílium fecérunt in unum,

Dicentes: Deus derelíquit eum; persequímini, et comprehéndite eum, * quia non est qui erípiat.

Deus, ne elongéris à me: * Deus meus, in auxílium meum réspice.

Confundantur et defíciant detrahentes ánimæ meæ: * operiantur confusióne et pudóre qui quærunt mala mihi.

Ego autem semper sperábo, * et adjíciam super omnem laudem tuam.

*Divisio* Psalmi 70.

Os meum annuntiábit justítiam tuam, * totâ die salutáre tuum.

Quóniam non cognóvi litteratúram, introíbo in poténtias Dómini: * Dómine, memorábor justítiæ tuæ solíus.

Deus, docuisti me à juventúte mea; * et usque nunc pronuntiábo mirabília tua,

Et usque in senectam et sénium: * Deus, ne derelinquas me;

Donec annúntiem bráchium tuum * generatióni omni quæ ventúra est,

Poténtiam tuam et justítiam tuam, Deus, usque in altíssima quæ fecisti magnália: * Deus, quis símilis tibi?

Quantas ostendisti mihi tribulatiónes multas, et malas? * et conversus, vivificasti me, et de abyssis terræ íterum reduxisti me.

Multiplicasti magnificéntiam tuam; * et conversus, consolátus es me.

Nam et ego confitébor tibi in vasis psalmi veritátem tuam, Deus: * psallam tibi in cíthara, Sanctus Israel.

Exultábunt lábia mea cùm cantávero tibi: * et ánima mea, quam redemisti.

Sed et lingua mea totâ die meditábitur justítiam tuam, * cùm confúsi et revériti fúerint qui quærunt mala mihi.

*In Quadragesima.*

Canticum Habacuc. *Cap.* 3.

Dómine, audívi auditiónem tuam, * et tímui.

Dómine, opus tuum, * in médio annórum vivífica illud.

In médio annórum notum fácies: * cùm irátus fúeris, misericórdiæ recordáberis.

Deus ab Austro véniet, * et Sanctus de monte Pharan.

Opéruit cœlos glória ejus, * et laudis ejus plena est terra.

Splendor ejus ut lux erit, córnua in mánibus ejus: * ibi abscóndita est fortitúdo ejus.

Ante fáciem ejus ibit mors; * et egrediétur diábolus ante pedes ejus.

Stetit, et mensus est terram: * aspexit, et dissolvit gentes; et contríti sunt montes séculi.

Incurváti sunt colles mundi * ab itinéribus æternitátis ejus.

Pro iniquitáte vidi tentória Æthiópiæ: * turbabuntur pelles terræ Mádian.

Numquid in flumínibus irátus es, Dómine? * aut in flumínibus furor tuus? vel in mari indignátio tua?

Qui ascendes super equos tuos, * et quadrígæ tuæ salvátio;

Súscitans suscitábis arcum tuum: * juramenta tríbubus quæ locútus es.

Flúvios scindes terræ: vidérunt te, et doluérunt montes; * gurges aquárum tránsiit.

Dedit abyssus vocem suam: * altitúdo manus suas levávit.

Sol et luna stetérunt in habitáculo suo: * in luce sagittárum tuárum ibunt, in splendóre fulgurantis hastæ tuæ.

In frémitu conculcábis terram: * et in furóre obstupefácies gentes.

Egressus es in salútem pópuli tui, * in salútem cum Christo tuo.

Percussisti caput de domo ímpii; * denudasti fundamentum ejus usque ad collum.

Maledixisti sceptris ejus, cápiti bellatórum ejus, * veniéntibus ut turbo ad dispergendum me.

Exultátio eórum, * sicut ejus qui dévorat páuperem in abscóndito.

Viam fecisti in mari equis tuis, * in luto aquárum multárum.

Audívi, et conturbátus est venter meus: * à voce contremuérunt lábia mea.

Ingrediátur putrédo in óssibus meis, * et subter me scáteat;

Ut requiescam in die tribulatiónis, * ut ascendam ad pópulum accinctum nostrum.

Ficus enim non florébit; * et non erit germen in víneis.

Mentiétur opus olívæ; * et arva non áfferent cibum.

Abscindétur de ovíli pecus; * et non erit armentum in præsépibus.

Ego autem in Dómino gaudébo, * et exultábo in Deo Jesu meo.

Deus Dóminus fortitúdo mea, * et ponet pedes meos quasi cervórum.

Et super excelsa mea dedúcet me victor * in psalmis canentem.

*Tempore Paschali.*

Canticum. *Is.* 26.

Urbs fortitúdinis nostræ Sion : * Salvátor ponétur in ea murus et antemurále.

Aperíte portas, * et ingrediátur gens justa, custódiens veritátem.

Vetus error ábiit : servábis pacem ; * pacem, quia in te sperávimus.

Sperastis in Dómino in séculis æternis, * in Dómino Deo forti in perpétuum.

Quia incurvábit habitantes in excelso, * civitátem sublímem humiliábit.

Humiliábit eam usque ad terram, * détrahet eam usque ad púlverem.

Conculcábit eam pes, * pedes páuperis, gressus egenórum.

Sémita justi recta est, * rectus callis justi ad ambulandum.

Et in sémita judiciórum tuórum, Dómine, sustinúimus te : * nomen tuum, et memoriále tuum in desidério ánimæ.

Anima mea desiderávit te in nocte; * sed et spíritu meo in præcórdiis meis de mane vigilábo ad te.

Cùm féceris judícia tua in terra, * justitiam discent habitatóres orbis.

Misereámur ímpio, et non discet justítiam : * in terra sanctórum iníqua gessit, et non vidébit glóriam Dómini.

Dómine, exaltétur manus tua ; * et non vídeant :

Vídeant, et confundantur zelantes pópuli ; * et ignis hostes tuos dévoret.

Dómine, dabis pacem nobis; * ómnia enim ópera nostra operátus es nobis.

Psalmus 145.

Lauda, ánima mea, Dóminum : * laudábo Dóminum in vita mea; psallam Deo meo quámdiu fúero.

Nolíte confídere in príncipibus ; * in filiis hóminum, in quibus non est salus.

Exíbit spíritus ejus, et revertétur in terram suam : * in illa die períbunt omnes cogitatiónes eórum.

Beátus cujus Deus Jacob adjútor ejus, spes ejus in Dómino Deo ipsíus, * qui fecit cœlum et terram, mare, et ómnia quæ in eis sunt.

Qui custódit veritátem in séculum, facit judícium injúriam patiéntibus, * dat escam esuriéntibus.

Dóminus solvit compedítos : * Dóminus illúminat cæcos.

Dóminus érigit elísos : * Dóminus díligit justos.

Dóminus custódit ádvenas : pupillum et víduam suscípiet; * et vias peccatórum disperdet.

Regnábit Dóminus in sécula : * Deus tuus, Sion, in generatiónem et generatiónem.

## AD PRIMAM.

Psalmus 43.

Deus, áuribus nostris audívimus, patres nostri annuntiavérunt nobis opus, * quod

operátus es in diébus eórum, et in diébus antíquis.

Manus tua gentes dispérdidit, et plantasti eos: * afflixisti pópulos, et expulisti eos.

Nec enim in gládio suo possedérunt terram; * et bráchium eórum non salvávit eos:

Sed déxtera tua, et bráchium tuum, et illuminátio vultûs tui; * quóniam complacuisti in eis.

Tu es ipse rex meus, et Deus meus, * qui mandas salútes Jacob.

In te inimícos nostros ventilábimus cornu; * et in nómine tuo spernémus insurgentes in nobis.

Non enim in arcu meo sperábo; * et gládius meus non salvábit me.

Salvasti enim nos de affligéntibus nos; * et odientes nos confudisti.

*Divisio* Psalmi 43.

In Deo laudábimur totâ die;* et in nómine tuo confitébimur in séculum.

Nunc autem repulisti, et confudisti nos; * et non egrediéris, Deus, in virtútibus nostris.

Avertisti nos retrorsum post inimícos nostros; * et qui odérunt nos, diripiébant sibi.

Dedisti nos tanquam oves escárum; * et in géntibus dispersisti nos.

Vendidisti pópulum tuum sine prétio; * et non fuit multitúdo in commutatiónibus eórum.

Posuisti nos oppróbrium vicínis nostris, * subsannatiónem et derísum his qui sunt in circúitu nostro.

Posuisti nos in similitúdinem géntibus, * commotiónem cápitis in pópulis.

Totâ die verecúndia mea contra me est; * et confúsio faciéi meæ coopéruit me:

A voce exprobrantis et obloquentis, * à fácie inimíci et persequentis.

Hæc ómnia venérunt super nos; nec oblíti sumus te; * et iníquè non égimus in testamento tuo.

Et non recessit retrò cor nostrum; * et declinasti sémitas nostras à via tua;.

Quóniam humiliasti nos in loco afflictiónis, * et coopéruit nos umbra mortis.

*Altera divisio* Psalmi 43.

Si oblíti sumus nomen Dei nostri, * et si expándimus manus nostras ad deum aliénum:

Nonne Deus requíret ista? * ipse enim novit abscóndita cordis.

Quóniam propter te mortificámur totâ die; * æstimáti sumus sicut oves occisiónis.

Exurge; quare obdormis, Dómine? * exurge, et ne repellas in finem.

Quare fáciem tuam avertis? * oblivísceris inópiæ nostræ et tribulatiónis nostræ?

Quóniam humiliáta est in púlvere ánima nostra, * conglutinátus est in terra venter noster.

Exurge, Dómine; ádjuva

nos ; * et rédime nos propter nomen tuum.

## AD TERTIAM.

Psalmus 39.

Expectans expectávi Dominum, * et intendit mihi.

Et exaudívit preces meas ; * et eduxit me de lacu misériæ, et de luto fæcis.

Et státuit super petram pedes meos, * et direxit gressus meos.

Et immísit in os meum cánticum novum, * carmen Deo nostro.

Vidébunt multi, et timébunt ; * et sperábunt in Dómino.

Beátus vir cujus est nomen Dómini spes ejus, * et non respexit in vanitátes et insánias falsas.

Multa fecisti tu, Dómine Deus meus, mirabília tua ; * et cogitatiónibus tuis non est qui símilis sit tibi.

Annuntiávi et locútus sum :* multiplicáti sunt super númerum.

Sacrifícium et oblatiónem noluisti ; * aures autem perfecisti mihi.

Holocaustum et pro peccáto non postulasti : * tunc dixi : Ecce vénio.

In cápite libri scriptum est de me, ut fácerem voluntátem tuam : * Deus meus, vólui, et legem tuam in médio cordis mei.

*Divisio* Psalmi 39.

Annuntiavi justítiam tuam in ecclésia magna ; * ecce lábia mea non prohibébo : Dómine, tu scisti.

Justítiam tuam non abscondi in corde meo : * veritátem tuam et salutáre tuum dixi.

Non abscondi misericórdiam tuam et veritátem tuam* à concílio multo.

Tu autem, Dómine, ne longè fácias miseratiónes tuas à me : * misericórdia tua et véritas tua semper suscepérunt me.

Quóniam circumdedérunt me mala, quorum non est númerus ; * comprehendérunt me iniquitátes meæ, et non pótui ut vidérem.

Multiplicátæ sunt super capillos cápitis mei ; * et cor meum derelíquit me.

Compláceat tibi, Dómine, ut éruas me : * Dómine, ad adjuvandum me réspice.

Confundantur et revereantur simul, qui quærunt ánimam meam, * ut áuferant eam.

Convertantur retrorsum, et revereantur, * qui volunt mihi mala.

Ferant confestim confusiónem suam, * qui dicunt mihi : Euge, euge.

Exultent et lætentur super te omnes quærentes te : * et dicant semper, Magnificétur Dóminus, qui díligunt salutáre tuum.

Ego autem mendícus sum et pauper : * Dóminus sollícitus est mei.

Adjútor meus, et protector

meus tu es : * Deus meus, ne tardáveris.

Psalmus 57.

Si verè útique justítiam loquímini, * recta judicáte, fílii hóminum.

Etenim in corde iniquitátes operámini; * in terra injustítias manus vestræ concinnant.

Alienáti sunt peccatóres à vulva, erravérunt ab útero :* locúti sunt falsa.

Furor illis secundùm similitúdinem serpentis : * sicut áspidis surdæ, et obturantis aures suas;

Quæ non exáudiet vocem incantántium, * et venéfici incantantis sapienter.

Deus cónteret dentes eórum in ore ipsórum : * molas leónum confringet Dóminus.

Ad níhilum devénient tanquam aqua decurrens : * intendit arcum suum donec infirmentur.

Sicut cera quæ fluit auferentur : * supercécidit ignis, et non vidérunt solem.

Priusquam intellígerent spinæ vestræ rhamnum; * sicut viventes, sic in ira absorbet eos.

Lætábitur justus cùm víderit vindictam : * manus suas lavábit in sánguine peccatóris.

Et dicet homo : Si útique est fructus justo; * útique est Deus júdicans eos in terra.

AD SEXTAM.

Psalmus 101.

Domine, exaudi oratiónem meam; * et clamor meus ad te véniat.

Non avertas fáciem tuam à me : * in quacúmque die tríbulor, inclína ad me aurem tuam.

In quacúmque die invocávero te, * velóciter exaudi me;

Quia defecérunt sicut fumus dies mei, * et ossa mea sicut crémium aruérunt.

Percussus sum ut fœnum, et áruit cor meum; * quia oblítus sum comédere panem meum.

A voce gémitûs mei, * adhæsit os meum carni meæ.

Símilis factus sum pellicáno solitúdinis : * factus sum sicut nycticórax in domicílio.

Vigilávi, * et factus sum sicut passer solitárius in tecto.

Totâ die exprobrábant mihi inimíci mei, * et qui laudábant me, adversùm me jurábant.

Quia cínerem tanquam panem manducábam, * et potum meum cum fletu miscébam,

A fácie iræ et indignatiónis tuæ; * quia élevans allisisti me.

Dies mei sicut umbra declinavérunt; * et ego sicut fœnum árui.

Tu autem, Dómine, in æternum pérmanes : * et memoriále tuum in generatiónem et generatiónem.

*Divisio* Psalmi 101.

Tu exúrgens miseréberis Sion, * quia tempus miserendi ejus, quia venit tempus.

Quóniam placuérunt servis tuis lápides ejus, * et terræ ejus miserebuntur.

Et timébunt gentes nomen tuum, Dómine, * et omnes reges terræ glóriam tuam;

Quia ædificávit Dóminus Sion, * et vidébitur in glória sua.

Respexit in oratiónem humílium, * et non sprevit précem eórum.

Scribantur hæc in generatióne áltera: * et pópulus qui creábitur, laudábit Dóminum;

Quia prospexit de excelso sancto suo: * Dóminus de cœlo in terram aspexit;

Ut audíret gémitus compeditórum, * ut sólveret fílios interemptórum;

Ut annúntient in Sion nomen Dómini, * et laudem ejus in Jerúsalem,

In conveniendo pópulos in unum, et reges, * ut sérviant Dómino.

Respondit ei in via virtútis suæ: * Paucitátem diérum meórum núntia mihi.

Ne révoces me in dimídio diérum meórum: * in generatiónem et generatiónem anni tui.

*Altera divisio* Psalmi 101.

Initio tu, Dómine, terram fundasti: * et ópera mánuum tuárum sunt cœli.

Ipsi períbunt; * tu autem pérmanes:

Et omnes sicut vestimentum veterascent; * et sicut opertórium mutábis eos, et mutabuntur.

Tu autem idem ipse es, * et anni tui non deficient.

Fílii servórum tuórum habitábunt; * et semen eórum in séculum dirigétur.

## AD NONAM.

Psalmus 21.

Deus, Deus meus, réspice in me: quare me dereliquisti? * longè à salúte mea verba delictórum meórum.

Deus meus, clamábo per diem, et non exáudies; * et nocte, et non ad insipiéntiam mihi.

Tu autem in sancto hábitas, * laus Israel.

In te speravérunt patres nostri: * speravérunt, et liberasti eos.

Ad te clamavérunt, et salvi facti sunt: * in te speravérunt, et non sunt confúsi.

Ego autem sum vermis, et non homo; * oppróbrium hóminum, et abjéctio plebis.

Omnes videntes me, derisérunt me: * locúti sunt lábiis, et movérunt caput.

Sperávit in Dómino, erípiat eum; * salvum fáciat eum, quóniam vult eum.

Quóniam tu es qui extraxisti me de ventre; * spes mea ab ubéribus matris meæ.

In te projectus sum ex útero: * de ventre matris meæ Deus meus es tu.

Divisio Psalmi 21.

[Deus meus] ne discésseris à me; * quóniam tribulátio próxima est, quóniam non est qui ádjuvet.

Circumdedérunt me vítuli multi: * tauri pingues obsedérunt me.

Aperuérunt super me os suum, * sicut leo rápiens et rúgiens.

Sicut aqua effúsus sum, * et dispersa sunt ómnia ossa mea.

Factum est cor meum tanquam cera liquescens, * in médio ventris mei.

Aruit tanquam testa virtus mea, et lingua mea adhæsit fáucibus meis; * et in púlverem mortis deduxisti me.

Quóniam circumdedérunt me canes multi; * concílium malignántium obsédit me.

Fodérunt manus meas et pedes meos: * dinumeravérunt ómnia ossa mea.

Ipsi verò consideravérunt et inspexérunt me: * divisérunt sibi vestimenta mea, et super vestem meam misérunt sortem.

Tu autem, Dómine, ne elongáveris auxílium tuum à me: * ad defensiónem meam cónspice.

Erue à frámea, Deus, ánimam meam, * et de manu canis únicam meam.

Salva me ex ore leónis, * et à córnibus unicórnium humilitátem meam.

Narrábo nomen tuum frátribus meis: * in médio ecclésiæ laudábo te.

Altera divisio Psalmi 21.

Qui timétis Dóminum, laudáte eum: * universum semen Jacob, glorificáte eum.

Tímeat eum omne semen Israel, * quóniam non sprevit neque despexit deprecatiónem páuperis.

Nec avertit fáciem suam à me; * et cùm clamárem ad eum, exaudívit me.

Apud te laus mea in ecclésia magna: * vota mea reddam in conspectu timéntium eum.

Edent páuperes, et saturabuntur; et laudábunt Dóminum qui requírunt eum: * vivent corda eórum in sæculum séculi.

Reminiscentur et convertentur ad Dóminum * universi fines terræ.

Et adorábunt in conspectu ejus * universæ famíliæ géntium;

Quóniam Dómini est regnum, * et ipse dominábitur géntium.

Manducavérunt et adoravérunt omnes pingues terræ: * in conspectu ejus cadent omnes qui descendunt in terram.

Et ánima mea illi vivet; * et semen meum sérviet ipsi.

Annuntiábitur Dómino generátio ventúra; * et annuntiábunt cœli justítiam ejus pópulo qui nascétur, quem fecit Dóminus.

## AD VESPERAS.

### Psalmus 128.

Sæpe expugnavérunt me à juventúte mea, * dicat nunc Israel:

Sæpe expugnavérunt me à juventúte mea; * étenim non potuérunt mihi.

Supra dorsum meum fabricavérunt peccatóres: * prolongavérunt iniquitátem suam.

Dóminus justus * concídit cervíces peccatórum.

Confundantur et convertantur retrorsum, * omnes qui odérunt Sion.

Fiant sicut fœnum tectórum, * quod, priusquam evellátur, exáruit:

De quo non implévit manum suam, qui metit; * et sinum suum, qui manípulos cólligit.

Et non dixérunt qui præteríbant: Benedíctio Dómini super vos: * benedíximus vobis in nómine Dómini.

### Psalmus 138.

Domine, probasti me, et cognovisti me: * tu cognovisti sessiónem meam, et resurrectiónem meam.

Intellexisti cogitatiónes meas de longè: * sémitam meam, et funículum meum investigasti.

Et omnes vias meas prævidisti, * quia non est sermo in lingua mea.

Ecce, Dómine, tu cognovisti ómnia, novíssima et antíqua: * tu formasti me, et posuisti super me manum tuam.

Mirábilis facta est sciéntia tua ex me: * confortáta est, et non pótero ad eam.

Quò ibo à spíritu tuo? * et quò à fácie tua fúgiam?

Si ascéndero in cœlum, tu illic es: * si descéndero in infernum, ades:

Si súmpsero pennas meas dilúculo, * et habitávero in extrémis maris;

Etenim illuc manus tua dedúcet me, * et tenébit me déxtera tua.

Et dixi: Fórsitan ténebræ conculcábunt me; * et nox illuminátio mea in delíciis meis.

Quia ténebræ non obscurabuntur à te; et nox sicut dies illuminábitur: * sicut ténebræ ejus, ita et lumen ejus.

Quia tu possedisti renes meos: * suscepisti me de útero matris meæ.

### *Divisio* Psalmi 138.

Confitebor tibi, [Dómine] quia terribíliter magnificátus es: * mirabília ópera tua, et ánima mea cognoscit nimis.

Non est occultátum os meum à te, quod fecisti in occulto; * et substántia mea in inferióribus terræ.

Imperfectum meum vidérunt óculi tui; et in libro tuo omnes scribentur: * dies formabuntur, et nemo in eis.

Mihi autem nimis honorificáti sunt amíci tui, Deus: * nimis confortátus est principátus eórum.

Dinumerábo eos, et super arénam multiplicabuntur: *

exurrexi, et adhuc sum tecum.

Si occíderis, Deus, peccatóres: * viri sánguinum, declináte à me.

Quia dícitis in cogitatióne: * Accípient in vanitáte civitátes tuas.

Nonne qui odérunt te, Dómine, óderam? * et super inimícos tuos tabescébam?

Perfecto ódio óderam illos;* et inimíci facti sunt mihi.

Proba me, Deus, et scito cor meum: * intérroga me, et cognosce sémitas meas;

Et vide si via iniquitátis in me est, * et deduc me in via æterna.

Psalmus 139.

Eripe me, Dómine, ab hómine malo: * à viro iníquo éripe me.

Qui cogitavérunt iniquitátes in corde: * totà die constituébant prælia.

Acuérunt linguas suas sicut serpentis: * venénum áspidum sub lábiis eórum.

Custódi me, Dómine, de manu peccatóris; * et ab homínibus iníquis éripe me.

Qui cogitavérunt supplantáre gressus meos: * abscondérunt superbi láqueum mihi,

Et funes extendérunt in láqueum: * juxta iter scándalum posuérunt mihi.

Dixi Dómino: Deus meus es tu; * exaudi, Dómine, vocem deprecatiónis meæ.

*Divisio* Psalmi 139.

Dómine, Dómine, virtus salútis meæ, * obumbrasti super caput meum in die belli.

Ne tradas me, Dómine, à desidério meo peccatóri: * cogitavérunt contra me; ne derelinquas me, ne fortè exaltentur.

Caput circúitûs eórum, * labor labiórum ipsórum opériet eos.

Cadent super eos carbónes: in ignem dejícies eos; * in misériis non subsistent.

Vir linguósus non dirigétur in terra: * virum injustum mala cápient in intéritu.

Cognóvi quia fáciet Dóminus judícium inopis, * et vindictam páuperum.

Verúmtamen justi confitebuntur nómini tuo; * et habitábunt recti cum vultu tuo.

## AD COMPLETORIUM.

Psalmus 37.

Dómine, ne in furóre tuo árguas me, * neque in ira tua corrípias me:

Quóniam sagittæ tuæ infixæ sunt mihi; * et confirmasti super me manum tuam.

Non est sánitas in carne meà à fácie iræ tuæ: * non est pax óssibus meis à fácie peccatórum meórum.

Quóniam iniquitátes meæ supergressæ sunt caput meum; * et sicut onus grave graváte sunt super me.

Putruérunt et corruptæ sunt cicatríces meæ, * à fácie insipiéntiæ meæ.

Miser factus sum et curvátus sum usque in finem: * totà die contristátus ingrediébar.

Quóniam lumbi mei impléti sunt illusiónibus; * et non est sánitas in carne mea.

Afflictus sum et humiliátus sum nimis: * rugiébam à gémitu cordis mei.

Dómine, ante te omne desidérium meum; * et gémitus meus à te non est abscónditus.

Cor meum conturbátum est, derelíquit me virtus mea; * et lumen oculórum meórum, et ipsum non est mecum.

*Divisio* Psalmi 37.

Amici mei et próximi mei * adversùm me appropinquavérunt, et stetérunt.

Et qui juxta me erant, de longè stetérunt; * et vim faciébant qui quærébant ánimam meam.

Et qui inquirébant mala mihi, locúti sunt vanitátes, * et dolos totâ die meditabantur.

Ego autem tanquam surdus non audiébam, * et sicut mutus non apériens os suum.

Et factus sum sicut homo non áudiens, * et non habens in ore suo redargutiónes.

Quóniam in te, Dómine, sperávi: * tu exáudies me, Dómine Deus meus.

Quia dixi: Nequando supergáudeant mihi inimíci mei; * et, dum commoventur pedes mei, super me magna locúti sunt.

Quóniam ego in flagella parátus sum; * et dolor meus in conspectu meo semper.

Quóniam iniquitátem meam annuntiábo; * et cogitábo pro peccáto meo.

Inimíci autem mei vivunt, et confirmáti sunt super me; * et multiplicáti sunt qui odérunt me iniquè.

Qui retríbuunt mala pro bonis, detrahébant mihi; * quóniam sequébar bonitátem.

Ne derelínquas me, Dómine Deus meus, * ne discésseris à me.

Intende in adjutórium meum, * Dómine Deus salútis meæ.

Psalmus 55.

Miserere meî, Déus, quóniam conculcávit me homo: * totâ die impugnans tribulávit me.

Conculcavérunt me inimíci mei totâ die, * quóniam multi bellantes adversùm me.

Ab altitúdine diéi timébo; * ego verò in te sperábo.

In Deo laudábo sermónes meos; in Deo sperávi: * non timébo quid fáciat mihi caro.

Totâ die verba mea execrabantur: * adversùm me omnes cogitatiónes eórum in malum.

Inhabitábunt, et abscondent: * ipsi calcáneum meum observábunt.

Sicut sustinuérunt ánimam meam, pro níhilo salvos fácies illos: * in ira pópulos confringes.

Deus, vitam meam annuntiávi tibi: * posuisti lácrymas meas in conspectu tuo, sicut et in promissióne tua.

Tunc convertèntur inimíci mei

mei retrorsum, * in quacumque die invocávero te.

Ecce cognóvi, * quóniam Deus meus es.

In Deo laudábo verbum : * in Dómino laudábo sermónem.

In Deo sperávi : * non timébo quid fáciat mihi homo.

In me sunt, Deus, vota tua, * quæ reddam laudatiónes tibi;

Quóniam eripuisti ánimam meam de morte, et pedes meos de lapsu; * ut pláceam coram Deo in lúmine vivéntium.

*In Quadragesima.*

*Ant.* 2. D. Dómine Deus meus, ne discésseris à me. *Ps.* 37.

# SABBATO.

## AD OFFICIUM NOCTURNUM.

### PRO I NOCTURNO.

PSALMUS 40.

BEATUS qui intélligit super egénum et páuperem; * in die mala liberábit eum Dóminus.

Dóminus consérvet eum, et vivíficet eum, et beátum fáciat eum in terra, * et non tradat eum in ánimam inimicórum ejus.

Dóminus opem ferat illi super lectum dolóris ejus : * universum stratum ejus versasti in infirmitáte ejus.

Ego dixi : Dómine, miserére meî; * sana ánimam meam, quia peccávi tibi.

Inimíci mei dixérunt mala mihi : * Quando moriétur, et períbit nomen ejus?

Et si ingrediebátur ut vidéret, vana loquebátur : * cor ejus congregávit iniquitátem sibi.

Egrediebátur foras, * et loquebátur in idipsum.

Adversùm me susurrábant omnes inimíci mei : * adversùm me cogitábant mala mihi.

Verbum iníquum constituérunt adversùm me :* numquid qui dormit, non adjíciet ut resurgat?

Etenim homo pacis meæ, in quo sperávi, qui edébat panes meos, * magnificávit super me supplantatiónem.

Tu autem, Dómine, miserére meî, et resúscita me; * et retríbuam eis.

In hoc cognóvi quóniam voluisti me, * quóniam non gaudébit inimícus meus super me.

Me autem propter innocéntiam suscepisti, * et confirmasti me in conspectu tuo in æternum.

Benedictus Dóminus Deus Israel à século, et usque in séculum : * fiat, fiat.

PSALMUS 48.

AUDITE hæc, omnes gentes :* áuribus percípite, omnes qui habitátis orbem;

Quique terrígenæ, et filii hóminum, * simul in unum dives et pauper.

Os meum loquétur sapiéntiam, * et meditátio cordis mei prudéntiam.

Inclinábo in parábolam aurem meam : * apériam in psaltério propositiónem meam.

Cur timébo in die mala? *

iníquitas calcánei mei circúmdabit me.

Qui confídunt in virtúte sua, * et in multitúdine divitiárum suárum gloriantur.

Frater non rédimit, rédimet homo: * non dabit Deo placatiónem suam,

Et prétium redemptiónis ánimæ suæ: * et laborábit in ætérnum, et vivet adhuc in finem.

Non vidébit intéritum, * cùm víderit sapientes morientes.

Simul insípiens et stultus períbunt, * et relinquent aliénis divítias suas.

Et sepulcra eórum domus illórum in æternum; tabernácula eórum in progénie et progénie: * vocavérunt nómina sua in terris suis.

Et homo, cùm in honóre esset, non intellexit: * comparátus est jumentis insipiéntibus, et símilis factus est illis.

Hæc via illórum scándalum ipsis; * et póstea in ore suo complacébunt.

Sicut oves in inferno pósiti sunt: * mors depascet eos.

Et dominabuntur eórum justi in matutíno; * et auxílium eórum veterascet in inferno à glória eórum.

Verúmtamen Deus rédimet ánimam meam de manu inferi, * cùm accéperit me.

*Divisio* Psalmi 48.

Ne timúeris, cùm dives factus fúerit homo, * et cùm multiplicáta fúerit glória domûs ejus.

Quóniam, cùm interíerit, non sumet ómnia; * neque descendet cum eo glória ejus.

Quia ánima ejus in vita ipsíus benedicétur: * confitébitur tibi, cùm benefécerís ei.

Introíbit usque in progénies patrum suórum; * et usque in æternum non vidébit lumen.

Homo, cùm in honóre esset, non intellexit: * comparátus est jumentis insipiéntibus, et símilis factus est illis.

## PRO II NOCTURNO.

Psalmus 61.

Nonne Deo subjecta erit ánima mea? * ab ipso enim salutáre meum.

Nam et ipse Deus meus, et salutáris meus: * susceptor meus, non movébor ámpliùs.

Quousque irrúitis in hóminem? * interfícitis universi vos tanquam paríeti inclináto, et macériæ depulsæ?

Verúmtamen prétium meum cogitavérunt repéllere; cucurri in siti: * ore suo benedicébant, et corde suo maledicébant.

Verúmtamen Deo subjecta esto, ánima mea; * quóniam ab ipso patiéntia mea.

Quia ipse Deus meus, et Salvátor meus; * adjútor meus, non emigrábo.

In Deo salutáre meum, et glória mea; * Deus auxílii mei, et spes mea in Deo est.

Speráte in eo, omnis congregátio pópuli; effúndite coram illo corda vestra: * Deus adjútor noster in æternum.

Verúmtamen vani fílii hóminum, mendáces fílii hómi-

num in statéris,* ut decípiant ipsi de vanitáte in idipsum.

Nolíte speráre in iniquitáte, et rapínas nolíte concupíscere :* divítiæ si áffluant, nolíte cor appónere.

Semel locútus est Deus, duo hæc audívi; quia potestas Dei est, et tibi, Dómine, misericórdia;* quia tu reddes unicuíque juxta ópera sua.

PSALMUS 63.

Exaudi, Deus, oratiónem meam, cùm déprecor: * à timóre inimíci éripe ánimam meam.

Protexisti me à conventu malignántium, * à multitúdine operántium iniquitátem;

Quia exacuérunt ut gládium linguas suas: * intendérunt arcum, rem amáram, ut sagittent in occultis immaculátum.

Súbitò sagittábunt eum, et non timébunt: * firmavérunt sibi sermónem nequam.

Narravérunt ut abscónderent láqueos :* dixérunt: Quis vidébit eos?

Scrutáti sunt iniquitátes :* defecérunt scrutantes scrutínio.

Accédet homo ad cor altum; * et exaltábitur Deus.

Sagittæ parvulórum factæ sunt plagæ eórum; * et infirmátæ sunt contra eos linguæ eórum.

Conturbáti sunt omnes qui vidébant eos; * et tímuit omnis homo.

Et annuntiavérunt ópera Dei; * et facta ejus intellexérunt.

Lætábitur justus in Dómino, et sperábit in eo; * et laudabuntur omnes recti corde.

PSALMUS 74.

Confitebimur tibi, Deus, * confitébimur, et invocábimus nomen tuum: narrábimus mirabília tua.

Cùm accépero tempus, * ego justítias judicábo.

Liquefacta est terra, et omnes qui hábitant in ea: * ego confirmávi columnas ejus.

Dixi iníquis: Nolíte iníquè ágere; * et delinquéntibus: Nolíte exaltáre cornu.

Nolíte extóllere in altum cornu vestrum: * nolíte loqui adversùs Deum iniquitátem;

Quia neque ab oriente, neque ab occidente, * neque à desertis móntibus.

Quóniam Deus judex est: * hunc humíliat, et hunc exaltat.

Quia calix in manu Dómini vini meri plenus mixto; * et inclinávit ex hoc in hoc.

Verúmtamen fæx ejus non est exinaníta: * bibent omnes peccatóres terræ.

Ego autem annuntiábo in séculum: * cantábo Deo Jacob.

Et ómnia córnua peccatórum confringam; * et exaltabuntur córnua justi.

PRO III NOCTURNO.

PSALMUS 75.

Notus in Judæa Deus: * in Israel magnum nomen ejus.

Et factus est in pace locus ejus, * et habitátio ejus in Sion.

Ibi confrégit poténtias árcuum, * scutum, gládium et bellum.

Illúminans tu mirabíliter à móntibus æternis : * turbáti sunt omnes insipientes corde.

Dormiérunt somnum suum; * et nihil invenérunt omnes viri divitiárum in mánibus suis.

Ab increpatióne tua, Deus Jacob, * dormitavérunt qui ascendérunt equos.

Tu terríbilis es, et quis resistet tibi? * ex tunc ira tua.

De cœlo audítum fecisti judícium : * terra trémuit, et quiévit,

Cùm exúrgeret in judícium Deus; * ut salvos fáceret omnes mansuétos terræ.

Quóniam cogitátio hóminis confitébitur tibi; * et relíquiæ cogitatiónis diem festum agent tibi.

Vovéte, et réddite Dómino Deo vestro, * omnes qui in circúitu ejus affertis múnera.

Terríbili, et ei qui aufert spíritum príncipum: * terríbili apud reges terræ.

Psalmus 82.

Deus, quis símilis erit tibi? * ne táceas, neque compescáris, Deus.

Quóniam ecce inimíci tui sonuérunt : * et qui odérunt te, extulérunt caput.

Super pópulum tuum malignavérunt consílium, * et cogitavérunt adversùs sanctos tuos.

Dixérunt : Veníte, et disperdámus eos de gente; * et non memorétur nomen Israel ultrà.

Quóniam cogitavérunt unanímiter : * simul adversùm te testamentum disposuérunt tabernácula Idumæórum et Ismahelítæ;

Moab, et Agaréni, Gebal, et Ammon, et Amalec; * Alienígenæ cum habitántibus Tyrum.

Etenim Assur venit cum illis; * facti sunt in adjutórium fíliis Lot.

Fac illis sicut Mádian et Sísaræ, * sicut Jabin in torrente Cisson.

Disperiérunt in Endor; * facti sunt ut stercus terræ.

Pone príncipes eórum sicut Oreb et Zeb, * et Zébee et Sálmana;

Omnes príncipes eórum, * qui dixérunt : Hæreditáte possideámus sanctuárium Dei.

*Divisio* Psalmi 82.

Deus meus, pone illos ut rotam, * et sicut stípulam ante fáciem venti.

Sicut ignis qui combúrit silvam, * et sicut flamma combúrens montes;

Ita persequéris illos in tempestáte tua, * et in ira tua turbábis eos.

Imple fácies eórum ignomíniâ; * et quærent nomen tuum, Dómine.

Erubescant et conturbentur in séculum séculi; * et confundantur, et péreant :

Et cognoscant quia nomen tibi, Dóminus; * tu solus Altíssimus in omni terra.

## AD LAUDES.

PSALMUS 16.

Exaudi, Dómine, justítiam meam: * intende deprecatiónem meam.

Auribus pércipe oratiónem meam, * non in lábiis dolósis.

De vultu tuo judícium meum pródeat: * óculi tui vídeant æquitátes.

Probasti cor meum, et visitasti nocte: * igne me examinasti; et non est inventa in me iníquitas.

Ut non loquátur os meum ópera hóminum, * propter verba labiórum tuórum ego custodívi vias duras.

Pérfice gressus meos in sémitis tuis, * ut non moveantur vestígia mea.

Ego clamávi, quóniam exaudisti me, Deus: * inclína aurem tuam mihi, et exaudi verba mea.

Mirífica misericórdias tuas, * qui salvos facis sperantes in te.

A resisténtibus déxteræ tuæ custódi me, * ut pupillam óculi.

Sub umbra alárum tuárum prótege me * à fácie impiórum qui me afflixérunt.

*Divisio* PSALMI 16.

Inimici mei ánimam meam circumdedérunt; ádipem suum conclusérunt: * os eórum locútum est supérbiam.

Projicientes me nunc circumdedérunt me: * óculos suos statuérunt declináre in terram.

Susceperunt me sicut leo parátus ad prædam, * et sicut cátulus leónis hábitans in ábditis.

Exurge, Dómine, præveni eum, et supplanta eum: * éripe ánimam meam ab ímpio, frámeam tuam ab inimícis manûs tuæ.

Dómine, à paucis de terra dívide eos in vita eórum: * de abscónditis tuis adimplétus est venter eórum.

Saturáti sunt fíliis; * et dimisérunt relíquias suas párvulis suis.

Ego autem in justítia apparébo conspéctui tuo: * satiábor, cùm apparúerit glória tua.

PSALMUS 56.

Miserere meî, Deus, miserére meî; * quóniam in te confídit ánima mea.

Et in umbra alárum tuárum sperábo, * donec tránseat iníquitas.

Clamábo ad Deum altíssimum, * Deum qui benefécit mihi.

Misit de cœlo, et liberávit me: * dedit in oppróbrium conculcantes me.

Misit Deus misericórdiam suam et veritátem suam; * et erípuit ánimam meam de médio catulórum leónum: dormívi conturbátus.

Fílii hóminum, dentes eórum arma et sagittæ; * et lingua eórum gládius acútus.

Exaltáre super cœlos, Deus; * et in omnem terram glória tua.

Láqueum paravérunt pédibus meis; * et incurvavérunt ánimam meam.

Fodérunt ante fáciem meam fóveam ; * et incidérunt in eam.

Parátum cor meum, Deus, parátum cor meum : * cantábo et psalmum dicam.

Exurge, glória mea ; exurge, psaltérium et cíthara : * exurgam dilúculo.

Confitébor tibi in pópulis, Dómine ; * et psalmum dicam tibi in géntibus ;

Quóniam magnificáta est usque ad cœlos misericórdia tua, * et usque ad nubes véritas tua.

Exaltáre super cœlos Deus, * et super omnem terram glória tua.

*In Quadragesima.*

Canticum Moysi. *Deut.* 32.

Audite, cœli, quæ loquor : * áudiat terra verba oris mei.

Concrescat ut plúvia doctrína mea : * fluat ut ros elóquium meum.

Quasi imber super herbam ; * et quasi stillæ super grámina.

Quia nomen Dómini invocábo : * date magnificéntiam Deo nostro.

Dei perfecta sunt ópera, et omnes viæ ejus judícia : * Deus fidélis, et absque ulla iniquitáte, justus et rectus.

Peccavérunt ei, et non filii ejus in sórdibus, * generátio prava atque perversa.

Hæccine reddis Dómino, * pópule stulte et insípiens ?

Numquid non ipse est pater tuus, * qui possédit te, et fecit, et creávit te ?

Memento diérum antiquórum : * cógita generatiónes síngulas.

Intérroga patrem tuum, et annuntiábit tibi : * majóres tuos, et dicent tibi.

Quando dividébat Altíssimus gentes, * quando separábat filios Adam.

Constítuit términos populórum * juxta númerum filiórum Israel.

Pars autem Dómini pópulus ejus : * Jacob funículus hæreditátis ejus.

Invénit eum in terra deserta, * in loco horróris, et vastæ solitúdinis.

Circumduxit eum, et dócuit, * et custodívit quasi pupillam óculi sui.

Sicut áquila próvocans ad volandum pullos suos, * et super eos vólitans,

Expandit alas suas, et assumpsit eum, * atque portávit in húmeris suis.

Dóminus solus dux ejus fuit ; * et non erat cum eo deus aliénus.

Constítuit eum super excelsam terram, * ut coméderet fructus agrórum,

Ut súgeret mel de petra, * oleumque de saxo duríssimo ;

Bútyrum de armento, et lac de óvibus, * cum ádipe agnórum et arietum filiórum Basan,

Et hircos cum medulla tritici, * et sánguinem uvæ biberet meracíssimum.

Incrassátus est dilectus, et recalcitrávit ; * incrassátus, impinguátus, dilatátus.

Derelíquit Deum factórem

suum, * et recessit à Deo salutári suo.

Provocavérunt eum in diis aliénis; * et in abominatiónibus ad iracúndiam concitavérunt.

Immolavérunt dæmóniis, et non Deo; * diis quos ignorábant.

Novi recentesque venérunt, * quos non coluérunt patres eórum.

Deum qui te génuit dereliquisti; * et oblítus es Dómini creatóris tui.

Vidit Dóminus, et ad iracúndiam concitátus est; * quia provocavérunt eum fílii sui, et filiæ.

Et ait: Abscondam fáciem meam ab eis, * et considerábo novíssima eórum;

Generátio enim perversa est, * et infidéles fílii.

Ipsi me provocavérunt in eo qui non erat deus, * et irritavérunt in vanitátibus suis;

Et ego provocábo eos in eo qui non est pópulus, * et in gente stulta irritábo illos.

Ignis succensus est in furóre meo, * et ardébit usque ad inferni novíssima;

Devorabitque terram cum gérmine suo, * et móntium fundamenta combúret.

Congregábo super eos mala; * et sagittas meas complébo in eis.

Consumentur fame, * et devorábunt eos aves morsu amaríssimo.

Dentes bestiárum immittam in eos, * cum furóre trahéntium super terram, atque serpéntium.

Foris vastábit eos gládius, et intus pavor, * júvenem simul ac vírginem, lactentem cum hómine sene.

Dixi: Ubinam sunt? * cessáre fáciam ex homínibus memóriam eórum.

Sed propter iram inimicórum dístuli, * ne fortè superbírent hostes eórum;

Et dícerent: Manus nostra excelsa, et non Dóminus. * fecit hæc ómnia.

Gens absque consílio est, et sine prudéntia: * útinam sáperent, et intellígerent, ac novíssima providérent!

Quómodo persequátur unus mille, * et duo fugent decem míllia?

Nonne ídeo quia Deus suus véndidit eos, * et Dóminus conclúsit illos?

Non enim est Deus noster ut dii eórum; * et inimíci nostri sunt júdices.

De vínea Sodomórum, vínea eórum, * et de suburbánis Gomorrhæ.

Uva eórum, uva fellis; * et botri amaríssimi.

Fel dracónum vinum eórum, * et venénum áspidum insanábile.

Nonne hæc cóndita sunt apud me, * et signáta in thesauris meis?

Mea est últio, et ego retríbuam in témpore, * ut labátur pes eórum.

Juxta est dies perditiónis; * et adesse festínant témpora.

Judicábit Dóminus pópu-

lum suum, * et in servis suis miserébitur.

Vidébit quòd infirmáta sit manus, * et clausi quoque defecérunt, residuíque consumpti sunt.

Et dicet : Ubi sunt dii eórum, * in quibus habébant fidúciam ;

De quorum víctimis comedébant ádipes, * et bibébant vinum libáminum?

Surgant, et opitulentur vobis, * et in necessitáte vos prótegant.

Vidéte quòd ego sim solus, * et non sit álius Deus præter me.

Ego occídam, et ego vívere fáciam; percútiam, et ego sanábo : * et non est qui de manu mea possit erúere.

Levábo ad cœlum manum meam : et dicam : * Vivo ego in æternum.

Si acúero ut fulgur gládium meum, * et arripúerit judícium manus mea,

Reddam ultiónem hóstibus meis; * et his qui odérunt me retríbuam :

Inebriábo sagittas meas sánguine, * et gládius meus devorábit carnes,

De cruóre occisórum, * et de captivitáte, nudáti inimicórum cápitis.

Laudáte, gentes, pópulum ejus; * quia sánguinem servórum suórum ulciscétur :

Et vindictam retríbuet in hostes eórum, * et propítius erit terræ pópuli sui.

¶ *Tempore Paschali, Canticum ut in Proprio, vel Communi.*

PSALMUS 116.

LAUDATE Dóminum, omnes gentes : * laudáte eum, omnes pópuli ;

Quóniam confirmáta est super nos misericórdia ejus, * et véritas Dómini manet in æternum.

## AD PRIMAM.

PSALMUS 87.

DOMINE Deus salútis meæ, * in die clamávi et nocte coram te.

Intret in conspectu tuo orátio mea : * inclína aurem tuam ad precem meam.

Quia repléta est malis ánima mea, * et vita mea inferno appropinquávit.

Æstimátus sum cum descendéntibus in lacum : * factus sum sicut homo sine adjutório, inter mórtuos liber :

Sicut vulneráti dormientes in sepulcris, quorum non es memor ámpliùs ; * et ipsi de manu tua repulsi sunt.

Posuérunt me in lacu inferióri, * in tenebrósis, et in umbra mortis.

Super me confirmátus est furor tuus; * et omnes fluctus tuos induxisti super me.

Longè fecisti notos meos à me : * posuérunt me abominátionem sibi.

Tráditus sum, et non egrediébar : * óculi mei languérunt præ inópia.

Clamávi ad te, Dómine, totâ die : * expandi ad te manus meas.

Numquid mórtuis fácies mirabília? * aut médici suscitábunt et confitebuntur tibi?

Numquid narrábit áliquis in sepulcro misericórdiam tuam, * et veritátem tuam in perditióne?

Numquid cognoscentur in ténebris mirabília tua, * et justítia tua in terra obliviónis?

Et ego ad te, Dómine, clamávi;* et mane orátio mea prævéniet te.

Ut quid, Dómine, repellis oratiónem meam? * avertis fáciem tuam à me?

Pauper sum ego, et in labóribus à juventúte mea: * exaltátus autem, humiliátus sum et conturbátus.

In me transiérunt iræ tuæ;* et terróres tui conturbavérunt me.

Circumdedérunt me sicut aqua totâ die, * circumdedérunt me simul.

Elongasti à me amícum et próximum,* et notos meos à miséria.

PSALMUS 142.

DOMINE, exaudi oratiónem meam: * áuribus pércipe obsecratiónem meam in veritáte tua; exaudi me in tua justítia.

Et non intres in judícium cum servo tuo; * quia non justificábitur in conspectu tuo omnis vivens.

Quia persecútus est inimícus ánimam meam: * humiliávit in terra vitam meam.

Collocávit me in obscúris sicut mórtuos séculi; * et anxiátus est super me spíritus meus: in me turbátum est cor meum.

Memor fui diérum antiquórum: meditátus sum in ómnibus opéribus tuis; * in factis mánuum tuárum meditábar.

Expandi manus meas ad te: * ánima mea sicut terra sine aqua tibi.

Velóciter exaudi me, Dómine; * defécit spíritus meus.

Non avertas fáciem tuam à me; * et símilis ero descendéntibus in lacum.

Audítam fac mihi mane misericórdiam tuam; * quia in te sperávi.

Notam fac mihi viam in qua ámbulem; * quia ad te levávi ánimam meam.

*Divisio* PSALMI 142.

ERIPE me de inimícis meis, Dómine; ad te confúgi: * doce me fácere voluntátem tuam, quia Deus meus es tu.

Spíritus tuus bonus dedúcet me in terram rectam: * propter nomen tuum, Dómine, vivificábis me in æquitáte tua.

Edúces de tribulatióne ánimam meam; * et in misericórdia tua disperdes inimícos meos.

Et perdes omnes qui tríbulant ánimam meam; * quóniam ego servus tuus sum.

## AD TERTIAM.

PSALMUS 28.

AFFERTE Dómino, fílii Dei: * afferte Dómino fílios aríetum.

Afferte Dómino glóriam et

honórem; afferte Dómino glóriam nómini ejus: * adoráte Dóminum in átrio sancto ejus.

Vox Dómini super aquas; Deus majestátis intónuit: * Dóminus super aquas multas.

Vox Dómini in virtúte: * vox Dómini in magnificéntia.

Vox Dómini confringentis cedros; * et confringet Dóminus cedros Líbani;

Et comminuet eas tanquam vítulum Líbani: * et dilectus quemádmodum fílius unicórnium.

Vox Dómini intercidentis flammam ignis: vox Dómini concutientis desertum; * et commovébit Dóminus desertum Cades.

Vox Dómini præparantis cervos, et revelábit condensa; * et in templo ejus omnes dicent glóriam.

Dóminus dilúvium inhabitáre facit; * et sedébit Dóminus rex in æternum.

Dóminus virtútem pópulo suo dabit: * Dóminus benedicet pópulo suo in pace.

PSALMUS 44.

ERUCTAVIT cor meum verbum bonum: * dico ego ópera mea regi.

Lingua mea * cálamus scribæ velóciter scribentis.

Speciósus formâ præ fíliis hóminum: diffúsa est grátia in lábiis tuis; * proptérea benedixit te Deus in æternum.

Accíngere gládio tuo super femur tuum, * Potentíssime.

Spécie tuâ et pulcritúdine tuâ intende, * prósperè procéde,

Et regna propter veritátem, et mansuetúdinem, et justítiam; * et dedúcet te mirabíliter déxtera tua.

Sagittæ tuæ acútæ, pópuli sub te cadent, * in corda inimicórum regis.

Sedes tua, Deus, in séculum séculi: * virga directiónis, virga regni tui.

Dilexisti justítiam, et odisti iniquitátem; * proptérea unxit te, Deus, Deus tuus, óleo lætítiæ præ consórtibus tuis.

Myrrha, et gutta, et cásia à vestimentis tuis, à dómibus ebúrneis; * ex quibus delectavérunt te fíliæ regum in honóre tuo.

Astitit regína à dextris tuis in vestítu deauráto, * circúmdata varietáte.

Audi, fília, et vide, et inclína aurem tuam; * et oblivíscere pópulum tuum, et domum patris tui:

Et concupiscet rex decórem tuum; * quóniam ipse est Dóminus Deus tuus; et adorábunt eum.

Et fíliæ Tyri in munéribus: * vultum tuum deprecabuntur omnes dívites plebis.

Omnis glória ejus fíliæ regis ab intus: * in fímbriis áureis, circumamicta varietátibus.

Adducentur regi vírgines post eam: * próximæ ejus afferentur tibi.

Afferentur in lætítia et exultatióne; * adducentur in templum regis.

Pro pátribus tuis nati sunt tibi filii : * constítues eos príncipes super omnem terram.

Mémores erunt nóminis tui * in omni generatióne et generatiónem.

Proptérea pópuli confitebuntur tibi in ætérnum, * et in séculum séculi.

PSALMUS 149.

CANTATE Dómino cánticum novum : * laus ejus in ecclésia sanctórum.

Lætétur Israel in eo qui fecit eum ; * et filii Sion exultent in rege suo.

Laudent nomen ejus in choro : * in tympano et psaltério psallant ei ;

Quia beneplácitum est Dómino in pópulo suo, * et exaltábit mansuétos in salútem.

Exultábunt sancti in glória : * lætabuntur in cubílibus suis.

Exaltatiónes Dei in gútture eórum ; * et gládii ancípites in mánibus eórum ;

Ad faciendam vindictam in natiónibus, * increpatiónes in pópulis :

Ad alligandos reges eórum in compédibus, * et nóbiles eórum in mánicis férreis ;

Ut fáciant in eis judícium conscriptum : * glória hæc est ómnibus sanctis ejus.

## AD SEXTAM.

PSALMUS 45.

DEUS noster refúgium et virtus ; * adjútor in tribulatiónibus quæ invenérunt nos nimis.

Proptérea non timébimus, dum turbábitur terra, * et transferentur montes in cor maris.

Sonuérunt et turbátæ sunt aquæ eórum : * conturbáti sunt montes in fortitúdine ejus.

Flúminis ímpetus lætíficat civitátem Dei : * sanctificávit tabernáculum suum Altíssimus.

Deus in médio ejus ; non commovébitur : * adjuvábit eam Deus mane dilúculo.

Conturbátæ sunt gentes, et inclináta sunt regna : * dedit vocem suam, mota est terra.

Dóminus virtútum nobíscum ; * susceptor noster Deus Jacob.

Veníte, et vidéte ópera Dómini, quæ pósuit prodígia super terram, * áuferens bella usque ad finem terræ.

Arcum cónteret, et confringet arma ; * et scuta combúret igni.

Vacáte, et vidéte quóniam ego sum Deus : * exaltábor in géntibus, et exaltábor in terra.

Dóminus virtútum nobíscum ; * susceptor noster Deus Jacob.

PSALMUS 47.

MAGNUS Dóminus, et laudábilis nimis, * in civitáte Dei nostri, in monte sancto ejus.

Fundátur exultatióne univérsæ terræ mons Sion ; * látera aquilónis, cívitas Regis magni.

Deus in dómibus ejus cognoscétur, * cùm suscípiet eam.

Quóniam ecce reges terræ congregáti sunt : * convenérunt in unum.

Ipsi videntes sic admiráti sunt, * conturbáti sunt, commóti sunt.

Tremor apprehendit eos : * ibi dolóres ut parturientis.

In spíritu vehementi * cónteres naves Tharsis.

Sicut audívimus, sic vídimus in civitáte Dómini virtútum, in civitáte Dei nostri : * Deus fundávit eam in æternum.

Suscépimus, Deus, misericórdiam tuam * in médio templi tui.

Secundùm nomen tuum, Deus, sic et laus tua in fines terræ : * justítiâ plena est déxtera tua.

Lætétur mons Sion, et exultent fíliæ Judæ, * propter judícia tua, Dómine.

Circúmdate Sion, et complectímini eam : * narráte in túrribus ejus.

Pónite corda vestra in virtúte ejus, et distribúite domos ejus; * ut enarrétis in progénie áltera;

Quóniam hic est Deus, Deus noster in æternum, et in séculum séculi : * ipse reget nos in sécula.

PSALMUS 86.

FUNDAMENTA ejus in móntibus sanctis : * díligit Dóminus portas Sion super ómnia tabernácula Jacob.

Gloriósa dicta sunt de te, * cívitas Dei.

Memor ero Rahab et Babylónis, * sciéntium me.

Ecce Alienígenæ et Tyrus, et pópulus Æthíopum, * hi fuérunt illic.

Numquid Sion dicet : Homo, et homo natus est in ea; * et ipse fundávit eam Altíssimus?

Dóminus narrábit, in scriptúris populórum et príncipum, * horum qui fuérunt in ea.

Sicut lætántium ómnium * habitátio est in te.

## AD NONAM.

PSALMUS 59.

DEUS, repulisti nos, et destruxisti nos : * irátus es, et misertus es nobis.

Commovisti terram, et conturbasti eam : * sana contritiónes ejus, quia commóta est.

Ostendisti pópulo tuo dura : * potasti nos vino compunctiónis.

Dedisti metuéntibus te significatiónem, * ut fúgiant à fácie arcûs;

Ut liberentur dilecti tui : * salvum fac déxterâ tuâ, et exaudi me.

Deus locútus est in sancto suo : * lætábor, et partíbor Síchimam, et convallem Tabernaculórum metíbor;

Meus est Gálaad, et meus est Manasses; * et Ephraim fortitúdo cápitis mei;

Juda rex meus; * Moab olla spei meæ.

In Idumæam extendam calceamentum meum : * mihi Alienígenæ súbditi sunt.

Quis dedúcet me in civi-

tátem munítam? * quis dedúcet me usque in Idumæam?

Nonne tu, Deus, qui repulisti nos? * et non egrediéris, Deus; in virtútibus nostris.

Da nobis auxílium de tribulatióne, * quia vana salus hóminis.

In Deo faciémus virtútem; * et ipse ad níhilum dedúcet tribulantes nos.

PSALMUS 73.

Ut quid, Deus, repulisti in finem? * irátus est furor tuus super oves páscuæ tuæ?

Memor esto congregatiónis tuæ, * quam possedisti ab inítio.

Redemisti virgam hæreditátis tuæ: * mons Sion, in quo habitasti in eo.

Leva manus tuas in supérbias eórum in finem: * quanta malignátus est inimícus in sancto!

Et gloriáti sunt, qui odérunt te, * in médio solemnitatis tuæ.

Posuérunt signa sua, signa; * et non cognovérunt, sicut in éxitu super summum.

Quasi in silva lignórum, secúribus excidérunt jánuas ejus in idipsum: * in secúri et áscia dejecérunt eam.

Incendérunt igni sanctuárium tuum: * in terra polluérunt tabernáculum nóminis tui.

Dixérunt in corde suo cognátio eórum simul: * Quiéscere faciámus omnes dies festos Dei à terra.

Signa nostra non vídimus: jam non est prophéta; * et nos non cognoscet ámpliùs.

*Divisio* PSALMI 73.

Usquequo, Deus, improperábit inimícus? * irrítat adversárius nomen tuum in finem?

Ut quid avertis manum tuam et déxteram tuam * de médio sinu tuo in finem?

Deus autem rex noster ante sécula, * operátus est salútem in médio terræ.

Tu confirmasti in virtúte tua mare; * contribulasti cápita dracónum in aquis.

Tu confregisti cápita dracónis: * dedisti eum escam pópulis Æthíopum.

Tu dirupisti fontes et torrentes: * tu siccasti flúvios Ethan.

Tuus est dies, et tua est nox: * tu fabricátus es auróram et solem.

Tu fecisti omnes términos terræ: * æstátem et ver, tu plasmasti ea.

Memor esto hujus, inimícus improperávit Dómino; * et pópulus insípiens incitávit nomen tuum.

Ne tradas béstiis ánimas confitentes tibi; * et ánimas páuperum tuórum ne obliviscáris in finem.

Réspice in testamentum tuum; * quia repléti sunt, qui obscuráti sunt terræ, dómibus iniquitátum.

Ne avertátur húmilis factus confúsus: * pauper et inops laudábunt nomen tuum.

Exurge, Deus; júdica causam tuam: * memor esto im-

properiórum tuórum, eórum quæ ab insipiente sunt totâ die.

Ne obliviscáris voces inimicórum tuórum : * supérbia eórum qui te odérunt, ascendit semper.

## AD VESPERAS.

### Psalmus 127.

Beati omnes qui timent Dóminum, * qui ámbulant in viis ejus.

Labóres mánuum tuárum quia manducábis, * beátus es, et bene tibi erit.

Uxor tua sicut vitis abundans * in latéribus domûs tuæ.

Fílii tui sicut novellæ olivárum * in circúitu mensæ tuæ.

Ecce sic benedicétur homo, * qui timet Dóminum.

Benedícat tibi Dóminus ex Sion ; * et vídeas bona Jerúsalem ómnibus diébus vitæ tuæ.

Et vídeas filios filiórum tuórum, * pacem super Israel.

### Psalmus 131.

Memento, Dómine, David, * et omnis mansuetúdinis ejus:

Sicut jurávit Dómino, * votum vovit Deo Jacob :

Si introíero in tabernáculum domûs meæ, * si ascéndero in lectum strati mei:

Si dédero somnum óculis meis, * et pálpebris meis dormitatiónem,

Et réquiem tempóribus meis, donec invéniam locum Dómino, * tabernáculum Deo Jacob.

Ecce audívimus eam in Ephrata : * invénimus eam in campis silvæ.

Introíbimus in tabernáculum ejus : * adorábimus in loco ubi stetérunt pedes ejus.

Surge, Dómine, in réquiem tuam; * tu et arca sanctificatiónis tuæ.

Sacerdótes tui induantur justítiam, * et sancti tui exultent.

Propter David servum tuum, * non avertas fáciem Christi tui.

### *Divisio* Psalmi 131.

Juravit Dóminus David veritátem, et non frustrábitur eam : * De fructu ventris tui ponam super sedem tuam.

Si custodíerint fílii tui testamentum meum, * et testimónia mea hæc quæ docébo eos;

Et fílii eórum usque in séculum, * sedébunt super sedem tuam.

Quóniam elégit Dóminus Sion : * elégit eam in habitatiónem sibi.

Hæc réquies mea in séculum séculi : * hic habitábo, quóniam elégi eam.

Víduam ejus benedícens benedícam : * páuperes ejus saturábo pánibus.

Sacerdótes ejus índuam salutári ; * et sancti ejus exultatióne exultábunt.

Illuc prodúcam cornu David :* parávi lucernam Christo meo.

Inimícos ejus índuam confusióne : * super ipsum autem efflorébit sanctificátio mea.

PSALMUS 143.

Benedictus Dóminus Deus meus, qui docet manus meas ad prælium, * et dígitos meos ad bellum.

Misericórdia mea, et refúgium meum; * susceptor meus, et liberátor meus.

Protector meus, et in ipso sperávi: * qui subdit pópulum meum sub me.

Dómine, quid est homo, quia innotuisti ei? * aut filius hóminis, quia réputas eum?

Homo vanitáti símilis factus est: * dies ejus sicut umbra prætéreunt.

Dómine, inclína cœlos tuos, et descende: * tange montes, et fumigábunt.

Fúlgura coruscatiónem, et dissipábis eos: * emitte sagittas tuas, et conturbábis eos.

Emitte manum tuam de alto: éripe me, et líbera me de aquis multis, * de manu filiórum alienórum;

Quorum os locútum est vanitátem; * et déxtera eórum, déxtera iniquitátis.

*Divisio* PSALMI 143.

Deus, cánticum novum cantábo tibi: * in psaltério decachordo psallam tibi:

Qui das salútem régibus; * qui redemisti David servum tuum de gládio maligno, éripe me;

Et érue me de manu filiórum alienórum, quorum os locútum est vanitátem; * et déxtera eórum, déxtera iniquitátis:

Quorum filii sicut novellæ plantatiónes * in juventúte sua:

Fíliæ eórum compósitæ, * circumornátæ ut similitúdo templi.

Promptuária eórum plena, * eructántia ex hoc in illud.

Oves eórum fœtósæ, abundantes in egréssibus suis; * boves eórum crassæ.

Non est ruína macériæ, neque tránsitus, * neque clamor in platéis eórum.

Beátum dixérunt pópulum cui hæc sunt: * beátus pópulus, cujus Dóminus Deus ejus.

## AD COMPLETORIUM.

PSALMUS 50.

Miserere meî, Deus, * secundùm magnam misericórdiam tuam;

Et secundùm multitúdinem miseratiónum tuárum * dele iniquitátem meam.

Ampliùs lava me ab iniquitáte mea: * et à peccáto meo munda me:

Quóniam iniquitátem meam ego cognosco, * et peccátum meum contra me est semper.

Tibi soli peccávi, et malum coram te feci; * ut justificéris in sermónibus tuis, et vincas cùm judicáris.

Ecce enim in iniquitátibus conceptus sum, * et in peccátis concépit me mater mea.

Ecce enim veritátem dilexisti: * incerta et occulta sapiéntiæ tuæ manifestasti mihi.

Asperges me hyssópo, et mundábor: * lavábis me, et super nivem dealbábor.

Audítui meo dabis gáudium et lætítiam; * et exultábunt ossa humiliáta.

Averte fáciem tuam à peccátis meis; * et omnes iniquitátes meas dele.

Cor mundum crea in me, Deus; * et spíritum rectum ínnova in viscéribus meis.

Ne projícias me à fácie tua; * et Spíritum sanctum tuum ne áuferas à me.

Redde mihi lætítiam salutáris tui; * et spíritu principáli confírma me.

Docébo iníquos vias tuas: * et ímpii ad te convertentur.

Líbera me de sanguínibus, Deus, Deus salútis meæ; * et exultábit lingua mea justítiam tuam.

Dómine, lábia mea apéries; * et os meum annuntiábit laudem tuam.

Quóniam si voluisses sacrifícium, dedissem útique; * holocaustis non delectáberis.

Sacrifícium Deo spíritus contribulátus: * cor contrítum et humiliátum, Deus, non despícies.

Benignè fac, Dómine, in bona voluntáte tua Sion, * ut ædificentur muri Jerúsalem.

Tunc acceptábis sacrifícium justítiæ, oblatiónes et holocausta; * tunc impónent super altáre tuum vítulos.

PSALMUS 85.

INCLINA, Dómine, aurem tuam, et exaudi me; * quóniam inops et pauper sum ego.

Custódi ánimam meam, quóniam sanctus sum: * salvum fac servum tuum, Deus meus, sperantem in te.

Miserére meî, Dómine, quóniam ad te clamávi totâ die: * lætífica ánimam servi tui, quóniam ad te, Dómine, ánimam meam levávi.

Quóniam tu, Dómine, suávis et mitis; * et multæ misericórdiæ ómnibus invocántibus te.

Auribus pércipe, Dómine, oratiónem meam; * et intende voci deprecatiónis meæ.

In die tribulatiónis meæ clamávi ad te, * quia exaudisti me.

Non est símilis tuî in diis, Dómine; * et non est secundùm ópera tua.

Omnes gentes, quascumque fecisti, vénient et adorábunt coram te, Dómine, * et glorificábunt nomen tuum;

Quóniam magnus es tu, et fáciens mirabília: * tu es Deus solus.

*Divisio* PSALMI 85.

DEDUC me, Dómine, in via tua, et ingrédiar in veritáte tua: * lætétur cor meum, ut tímeat nomen tuum.

Confitébor tibi, Dómine Deus meus, in toto corde meo, * et glorificábo nomen tuum in æternum;

Quia misericórdia tua magna est super me, * et eruisti ánimam meam ex inferno inferióri.

Deus, iníqui insurrexérunt super me, et synagóga poténtium quæsiérunt ánimam meam; * et non proposuérunt te in conspectu suo.

Et tu, Dómine, Deus miserátor et misericors, * pátiens, et multæ misericórdiæ, et verax;

Réspice in me, et miserére meî : * da impérium tuum púero tuo, et salvum fac filium ancillæ tuæ.

Fac mecum signum in bonum, ut vídeant qui odérunt me, et confundantur; * quóniam tu, Dómine, adjuvisti me, et consolátus es me.

*In Quadragesima.*

*Ant.* 8. G. Miserére meî, Dómine; quóniam ad te clamávi totâ die. *Ps.* 85.

# ORDINARIUM BREVIARII.

*Ante Orationem, præpara animam tuam; et noli esse quasi homo qui tentat Deum.* Eccli. 18.

Domine, doce nos orare. *Luc.* 11.

ORATIO ANTE OFFICIUM, *ad devotionem dicenda.*

APERI, Dómine, os meum ad benedicendum nomen sanctum tuum: munda quoque cor meum ab ómnibus vanis, perversis et aliénis cogitatiónibus; intellectum illúmina, affectum inflamma; ut dignè, attentè, ac devótè hoc Officium recitáre váleam, et exaudíri mérear ante conspectum divínæ majestátis tuæ; Per Christum Dóminum nostrum. Amen.

Dómine Jesu, in unióne illíus divínæ intentiónis quâ ipse in terris laudes Deo persolvisti, has tibi Horas persolvo.

## AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Dicitur secretò:*

PATER noster, qui es in cœlis; sanctificétur nomen tuum: advéniat regnum tuum: fiat voluntas tua sicut in cœlo et in terra: panem nostrum quotidiánum da nobis hódie: et dimitte nobis débita nostra, sicut et nos dimíttimus debitóribus nostris: et ne nos indúcas in tentatiónem; sed líbera nos à malo. Amen.

AVE, María, grátiâ plena; Dóminus tecum: benedicta tu in muliéribus, et benedictus fructus ventris tui, Jesus.

Sancta María, mater Dei, ora pro nobis peccatóribus, nunc, et in hora mortis nostræ. Amen.

CREDO in Deum, Patrem omnipotentem, Creatórem cœli et terræ: Et in Jesum Christum, Fílium ejus únicum, Dóminum nostrum: qui conceptus est de Spíritu sancto, natus ex María Vírgine; passus sub Póntio Piláto, crucifixus, mórtuus, et sepultus; descendit ad ínferos; tértiâ die resurrexit à mórtuis; ascendit ad cœlos; sedet ad déxteram Dei Patris omnipotentis, inde ventúrus est judicáre vivos et mórtuos. Credo in Spíritum sanctum, sanctam Ecclésiam cathólicam, Sanctórum communiónem, remissiónem peccatórum, carnis resurrectiónem, vitam æternam. Amen.

*Deinde altâ voce dicitur, pollice signando sibi os signo crucis.*

℣. Dómine †, lábia mea apéries; ℟. Et os meum annuntiábit laudem tuam.

*Tum signando se à fronte ad*

*pectus, et à sinistro humero ad dextrum.*

℣. Deus †, in adjutórium meum intende: ℟. Dómine, ad adjuvandum me festína.

Glória Patri, et Fílio, et Spirítui sancto: Sicut erat in princípio, et nunc, et semper, et in sécula seculórum. Amen.

¶ *In Quadragesima,* Laus tibi, Dómine, Rex ætérnæ glóriæ.]

¶*Temp. Paschali,* Allelúia.]

*Sequitur Invitatorium, quod, sicut et ceteræ partes Officii infrà designandæ, reperitur vel in Psalterio, vel in Proprio de Tempore, vel denique in Proprio aut in Communi Sanctorum.*

*Invitatorium autem, in Duplicibus et suprà, bis dicitur ante Psalmum* Veníte; *et post quemlibet Psalmi versum, integrum repetitur; post* Glória Patri *verò cum* Sicut erat, *repetitur à reclamatione, quæ designatur per asteriscum* *, *et postea rursum integrè dicitur. In Semiduplicibus et infrà, semel dicitur integrum ante Ps.* Veníte, *et semel post primum versum, semelque post* Glória Patri; *post alios autem versus, à reclamatione tantùm resumitur.*

PSALMUS 94.

VENITE, exultémus Dómino; jubilémus Deo salutári nostro: præoccupémus fáciem ejus in confessióne, et in psalmis jubilémus ei.

Quóniam Deus magnus Dóminus, et Rex magnus super omnes deos; quóniam non repellet Dóminus plebem suam: quia in manu ejus sunt omnes fines terræ, et altitúdines móntium ipse cónspicit.

Quóniam ipsíus est mare, et ipse fecit illud, et áridam fundavérunt manus ejus: veníte, adorémus, et procidámus ante Deum: plorémus coram Dómino qui fecit nos, quia ipse est Dóminus Deus noster; nos autem pópulus ejus, et oves páscuæ ejus.

Hódie si vocem ejus audiéritis, nolíte obduráre corda vestra; sicut in exacerbatióne secundùm diem tentatiónis in deserto, ubi tentavérunt me patres vestri, probavérunt, et vidérunt ópera mea.

Quadraginta annis próximus fui generatióni huic; et dixi: Semper hi errant corde; ipsi verò non cognovérunt vias meas: quibus jurávi in ira mea: Si introíbunt in réquiem meam.

Glória Patri, et Fílio, et Spirítui sancto: Sicut erat in princípio, et nunc, et semper, et in sécula seculórum. Amen.

*Hymnus, Antiphonæ, Versiculi habentur in propriis locis; Psalmi autem in Quadragesima dicuntur prout distribuuntur in Psalterio pro singulis Hebdomadæ diebus, nisi aliter in quibusdam Festis notetur. Tempore verò Paschali, unicum dicitur Nocturnum, pro quo Psalmi indicantur in Proprio.*

*Dominicâ, (extra Tempus*

*Paschale) et in Officiis novem Lectionum, post singulos tres Psalmos cum suis Antiphonis et Versiculo, dicitur secretò,* Pater noster.

*Altâ voce,* ℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem;

℟. Sed líbera nos à malo.

*Deinde Absolutio et Benedictiones, ut sequitur.*

## IN I NOCTURNO.

Absolutio. 2 *Mach.* 1.

Adaperiat Deus cor nostrum in lege sua, et in præceptis suis; et det nobis cor ómnibus, ut colámus eum.

℟. Amen.

*Ante quamlibet Lectionem, Lector petit Benedictionem, dicens:* Jube, Domne, benedícere; *quod omittitur ab eo qui solus recitat.*

Benedictiones.

1. Deus Dómini nostri Jesu Christi, Pater glóriæ, det nobis spíritum sapiéntiæ. *Ephes.* 1.

℟. Amen. *Sic respondetur post singulas Absolutiones et Benedictiones.*

2. Fílius Dei det nobis sensum, ut cognoscámus verum Deum. 1 *Joan.* 5.

3. Spíritus veritátis dóceat nos omnem veritátem. *Joan.* 16.

## IN II NOCTURNO.

Absolutio. 3 *Reg.* 8.

Deus noster inclínet corda nostra ad se, ut custodiámus mandáta ejus.

Benedictiones.

In Dominicis ac Festis Domini.

4. Pater Dómini nostri Jesu Christi benedícat nos in omni benedictióne spirituáli. *Ephes.* 1.

5. Sciámus supereminentem sciéntiæ caritátem Christi, ut impleámur in omnem plenitúdinem Dei. *Ephes.* 3.

6. Unctio quam accépimus à Deo, máneat in nobis et dóceat nos de ómnibus. 1 *Joan.* 2.

In Festis B. Mariæ Virginis.

4. Deus, à quo missus est Angelus Gábriel ad Vírginem Maríam, mittat nobis de cœlis sapiéntiam. *Luc.* 1. *Sap.* 9.

5. Fílius Altíssimi, quem Virgo concépit et péperit, det nobis fílios Dei fieri. *Luc.* 1. *Joan.* 1.

6. Spíritus sanctus, qui supervénit in Maríam, hábitet in nobis. *Luc.* 1.

In Festis Sanctorum.

4. Deus det nobis illumináto s óculos cordis, ut sciámus quæ sit spes vocatiónis ejus in Sanctis. *Ephes.* 1.

5. Dignos nos fáciat in partem sortis Sanctórum, qui erípuit nos de potestáte tenebrárum. *Coloss.* 1.

6. Aperiantur óculi nostri, ut convertámur à ténebris ad lucem, et accipiámus sortem inter Sanctos. *Act.* 26.

## IN III NOCTURNO.

Absolutio. 2 *Mach.* 1.

Deus memínerit testamenti sui quod locútus est, et exáudiat oratiónes nostras.

Benedictiones.

7. Detur nobis sermo in apertióne oris nostri cum fidúcia, notum fácere mystérium Evangélii. *Ephes.* 6.

8. Occurrámus omnes in

unitátem fídei, et agnitiónis Fílii Dei; ut non circumferámur omni vento doctrínæ. *Ephes.* 4.

9. Deus spei répleat nos omni gáudio et pace in credendo; ut abundémus in spe et virtúte Spíritûs sancti. *Rom.* 15.

*Si Lectio nona sit de alio Evangelio cum Homilia, tunc nona Benedictio erit :*

Fúlgeat nobis illuminátio Evangélii glóriæ Christi, qui est imágo Dei. 2 *Cor.* 4.

*Si Lectio nona sit de Sancto, Benedictio erit :*

Digni habeámur regno Dei, cùm vénerit in Sanctis suis admirábilis fieri. 2 *Thess.* 1.

¶ *Quando D. Archiepiscopus Lectionem lecturus est, postquam ipse præmisit, ex more,* Jube, Domne, benedícere, *dignior post ipsum dicit illi:* Ora pro nobis, Pater. *Ipse autem Pontifex respondet :* Oro ut cáritas vestra magis ac magis abundet in sciéntia et omni sensu. *Phil.* 1. *Chor.* ℟. Amen.

*Idem observatur ubi unicus est Presbyter.*

---

IN FERIIS QUADRAGESIMÆ, *post novem Psalmos cum tribus Antiphonis et Versiculo, dicto* Pater noster, *ut suprà, dicuntur Absolutiones et Benedictiones ut sequitur.*

*Feriâ II et V.*

ABSOLUTIO.

ADAPERIAT Deus cor nostrum in lege sua, et in præceptis suis; et det nobis cor ómnibus, ut colámus eum.

BENEDICTIONES.

1. Deus Dómini nostri Jesu Christi, Pater glóriæ, det nobis spíritum sapiéntiæ.

2. Fílius Dei det nobis sensum, ut cognoscámus verum Deum.

3. Fúlgeat nobis illuminátio Evangélii glóriæ Christi, qui est imágo Dei.

*Feriâ III et VI.*

ABSOLUTIO.

DEUS noster inclínet corda nostra ad se, ut custodiámus mandáta ejus.

BENEDICTIONES.

1. Pater Dómini nostri Jesu Christi benedícat nos in omni benedictióne spirituáli.

2. Sciámus supereminentem sciéntiæ caritátem Christi, ut impleámur in omnem plenitúdinem Dei.

3. Fúlgeat, *ut suprà.*

*Feriâ IV et Sabbato.*

ABSOLUTIO.

DEUS memínerit testamenti sui quod locútus est, et exáudiat oratiónes nostras.

BENEDICTIONES.

1. Pater Dómini nostri Jesu Christi det nobis Christum habitáre per fidem in córdibus nostris. *Ephes.* 3.

2. Occurrámus omnes in unitátem fídei, et agnitiónis Fílii Dei; ut non circumferámur omni vento doctrínæ.

3. Fúlgeat, *ut suprà.*

---

¶ *Absolutio et Benedictiones*

*pro Tempore Paschali, repe-riuntur in Communi de hoc Tempore.*

---

*Lectiones et Responsoria habentur in Proprio de Tempore et de Sanctis.*

*Post ultimum Responsorium, toto Tempore Paschali, ac in omni Officio de B. Maria et de Sanctis, nisi aliter notetur, dicitur sequens*

CANTICUM.

Te Deum laudámus: * te Dóminum confitémur.

Te æternum Patrem * omnis terra venerátur.

Tibi omnes Angeli, * tibi Cœli, et universæ potestátes,

Tibi Chérubim et Séraphim* incessábili voce proclámant:

Sanctus,

Sanctus,

Sanctus, * Dóminus Deus Sábaoth.

Pleni sunt cœli et terra * majestátis glóriæ tuæ.

Te gloriósus * Apostolórum chorus,

Te Prophetárum * laudábilis númerus,

Te Mártyrum candidátus * laudat exércitus.

Te per orbem terrárum * sancta confitétur Ecclésia,

Patrem * immensæ majestátis;

Venerandum tuum verum * et únicum Fílium;

Sanctum quoque * Paraclétum Spíritum.

Tu Rex glóriæ, * Christe.

Tu Patris * sempiternus es Fílius.

Tu, ad liberandum susceptúrus hóminem, * non horruisti Vírginis úterum.

Tu, devicto mortis acúleo, * aperuisti credéntibus regna cœlórum.

Tu ad déxteram Dei sedes * in glória Patris.

Judex créderis * esse ventúrus.

Te ergo, quæsumus, fámulis tuis súbveni, * quos pretióso sánguine redemisti.

Æterna fac * cum Sanctis tuis in glória numerári.

Salvum fac pópulum tuum, Dómine, * et bénedic hæreditáti tuæ;

Et rege eos, * et extolle illos usque in æternum.

Per síngulos dies * benedícimus te;

Et laudámus nomen tuum in séculum, * et in séculum séculi.

Dignáre, Dómine, die isto * sine peccáto nos custodíre.

Miserére nostri, Dómine, * miserére nostri.

Fiat misericórdia tua, Dómine, super nos, * quemádmodum sperávimus in te.

In te, Dómine, sperávi, * non confundar in æternum.

*Dícto* Te Deum, *aut, si non dicatur, post ultimum Responsorium, dicitur* ℣ *Sacerdotalis; et, si non continuò sequantur Laudes, hìc dicitur*

Dóminus vobiscum,

℟. Et cum spíritu tuo.

¶ *Qui solus recitat, vel qui non est Diaconus, loco* Dóminus vobiscum, *dicit:* Dómine, exaudi oratiónem meam;

℟. Et clamor meus ad te véniat.]

*Deinde Oratio propria cum integra conclusione; et iterum :*

Dóminus vobiscum.

Benedicámus Dómino.

℟. Deo grátias.

*Submissiori voce :* Fidélium ánimæ per misericórdiam Dei requiescant in pace. ℟. Amen.

Pater noster, *secretò.*

*Sic terminantur Laudes, Tertia, Sexta, Nona, et Vesperæ, quando unam ex his Horis aliud Officium non sequitur.*

*In eo autem casu, ante Laudes, aut aliam ex supradictis Horam, Officium præcedens continuò non sequentem, dicuntur secretò* Pater *et* Ave.

## AD LAUDES.

℣. Deus †, in adjutórium meum intende : ℟. Dómine, ad adjuvandum me festína.

Glória Patri, et Fílio, et Spirítui sancto : * Sicut erat in princípio, et nunc, et semper, et in sécula seculórum. Amen.

¶ *In Quadragesima,* Laus tibi, Dómine, Rex ætérnæ glóriæ.]

¶ *Tempore Paschali,* Allelúia.]

*Psalmi, Antiphonæ, Capitulum, etc. ut notantur in Psalterio, vel in Proprio.*

CANT. ZACHARIÆ. *Luc.* 1.

BENEDICTUS Dóminus Deus Israel; * quia visitávit, et fecit redemptiónem plebis suæ.

Et erexit cornu salútis nobis * in domo David púeri sui :

Sicut locútus est per os sanctórum, * qui à século sunt, Prophetárum ejus,

Salútem ex inimícis nostris, * et de manu ómnium qui odérunt nos;

Ad faciendam misericórdiam cum pátribus nostris, * et memorári testamenti sui sancti :

Jusjurandum quod jurávit ad Abraham patrem nostrum, * datúrum se nobis;

Ut sine timóre, de manu inimicórum nostrórum liberáti, * serviámus illi,

In sanctitáte et justítia coram ipso, * ómnibus diébus nostris.

Et tu, puer, Prophéta Altíssimi vocáberis; * præíbis enim ante fáciem Dómini paráre vias ejus,

Ad dandam sciéntiam salútis plebi ejus, * in remissiónem peccatórum eórum,

Per víscera misericórdiæ Dei nostri, * in quibus visitávit nos óriens ex alto,

Illumináre his, qui in ténebris et in umbra mortis sedent, * ad dirigendos pedes nostros in viam pacis.

Glória Patri, et Fílio, * et Spirítui sancto :

Sicut erat in princípio, et nunc, et semper, * et in sécula seculórum. Amen.

*Post Antiphonam, dicitur* Dóminus vobiscum.

*Oratio propria, et cetera, ut suprà.*

*Si facienda sit aliqua Commemoratio, fit eo loco per Ant. quæ posita est ad* Bene-

dictus *in Officio de quo fit Commemoratio, et Versiculum qui habetur post Hymnum Laudum; deinde dicitur Oratio ut notatur in Proprio; quæ, si non sequatur alia Commemoratio, terminatur per integram conclusionem. Si autem plures sint, factâ priorum brevi conclusione, ultima tantùm integrâ conclusione finitur, et iterum dicitur:*

Dóminus vobiscum.

Benedicámus Dómino.

¶ Preces *habentur in Feriis Quadragesimæ, infrà* 129.

AD PRIMAM.

Pater *et* Ave, *si separetur à Laudibus.*

℣. Deus †, in adjutórium.

Hymnus. *C.*

Jam lucis orto sídere,
Deum precémur súpplices,
Nostras ut ipse dírigat,
Lux increáta, sémitas.

Nil lingua, nil peccet manus,
Nil mens ináne cógitet:
In ore simplex véritas,
In corde regnet cáritas.

Incœpta dum fluet dies,
O Christe, custos pérvigil,
Quas sævus hostis óbsidet,
Portas tuére sénsuum.

Præsta diurnus ut tuæ
Subsérviat laudi labor:
Auctóre quæ te cœpimus,
Da te favente prósequi.

Superba ne nimis caro
Menti licenter ímperet,
Carnis domet supérbiam
Potûs cibíque párcitas.

*In Quadragesima.*

¶ Æterna laus et glória
Tibi sit, ô clemens Deus,
Qui nostra per jejúnium
Das expiáre crímina. Amen.

*Tempore Passionis.*

¶ Qui Fílium tradit, Patri,
Natóque sit laus víctimæ:
Par sit tibi laus, qui sacram
Succendis aram, Spíritus.
Amen.

¶ *Hæc utraque Doxologia omittitur in Festis, quando propria assignatur.*

*Tempore Quadragesimæ, Psalmi dicuntur ut in Psalterio assignantur pro diebus singulis: Antiphona verò, sive in Dominicis, sive in Feriis, habetur propriis locis, et sic ad alias Horas.*

*In Festis verò, Antiphona sumitur de Proprio, vel de Communi, et est prima de Laudibus, nisi propria assignetur: Psalmi autem dicuntur ut in Psalterio.*

¶ *Quoties dicti sunt Psalmi de Dominica, dicitur sequens*

Capitulum. *Ephes.* 5.

Eratis aliquando ténebræ; nunc autem lux in Dómino. Ut fílii lucis ambuláte: fructus enim lucis est in omni bonitáte, et justítia, et veritáte: probantes quid sit beneplácitum Deo.

℟. Deo grátias.

*Aliis diebus, dicitur sequens*

Capitulum. *Ephes.* 5.

Videte, fratres, quómodo cautè ambulétis, non quasi insipientes, sed ut sapientes, redimentes tempus, quóniam dies mali sunt.

℟. Deo grátias.

℟ *br.* Christe, Fili Dei vivi, * Miserére nobis. *Repet.* Christe,

Christe, Fili Dei vivi, * Miserére nobis. *In Quadragesima*, ℣. Qui venisti * peccatóres salvos fácere, * Miserére nobis. Glória Patri, et Fílio, * et Spirítui sancto. *Repetitur* Christe, Fili Dei vivi, * Miserére nobis. *Matth.* 16. *Tob.* 8. 1 *Tim.* 1.

¶ *Tempore Passionis*, ℣. Qui passus es * pro nobis. 1 *Petr.* 2. * Miserére nobis. *Non dicitur* Glória, *in Officio de Tempore, sed repetitur* Christe.]

℣. Exurge, Dómine, ádjuva nos; ℟. Et rédime nos propter nomen tuum. *Ps.* 43.

¶ *Preces Feriales habentur in Feriis Quadragesimæ, infrà* 132.]

*In Dominicis et in Festis hic dicitur:*

℣. Dóminus vobiscum, ℟. Et cum spíritu tuo.

Orémus.

Dómine Deus omnípotens, qui ad princípium hujus diéi nos pervenire fecisti: tuâ nos hódie salva virtúte; ut ad nullum declinémus peccátum, sed semper ad tuam justítiam faciendam, nostra procédant elóquia, dirigantur cogitatiónes et ópera; Per Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum.

℣. Dóminus vobiscum, ℟. Et cum spíritu tuo.

℣. Benedicámus Dómino. ℟. Deo grátias.

## Ad Officium Capituli.

*Post lectionem Martyrologii, in cujus fine nihil respondetur, Hebdomadarius dicit:*

℣. Pretiósa in conspectu Dómini ℟. Mors Sanctórum ejus. *Ps.* 115.

Sancta María, et omnes Sancti ádjuvent nos in oratiónibus suis pro nobis ad Deum; ut secundùm eum qui vocávit nos, Sanctum, et ipsi in omni conversatióne sancti simus. ℟. Amen. *Rom.* 15. 1 *Petr.* 1.

¶ In Choro, *post Lectionem Necrologii, vel, si non legitur, ejus loco, dicitur:*

℣. Dómine omnípotens Deus Israel, ℟. Audi nunc oratiónem mortuórum Israel.

*Deinde Psalm.* De profundis, *suprà* 65.

℣. Réquiem æternam dona eis, Dómine; ℟. Et lux perpétua lúceat eis.

℣. Requiescant in pace. ℟. Amen.

℣. Dómine, exaudi oratiónem meam; ℟. Et clamor meus ad te véniat.

℣. Dóminus vobiscum, ℟. Et cum spíritu tuo.

Orémus.

Absolve, quæsumus Dómine, ánimas ómnium Fidélium defunctórum, ab omni vínculo delictórum; ut in resurrectiónis glória, inter sanctos et electos tuos resuscitáti respírent; Per eum qui ventúrus est judicáre vivos et mórtuos, et séculum per ignem. ℟. Amen.

℣. Requiescant in pace. ℟. Amen.]

*Postea dicitur:* ℣. Deus, in adjutórium meum intende;

℟. Dómine, ad adjuvandum me festína.

℣. Deus, in adjutórium meum intende: ℟. Dómine, ad adjuvandum me festína.

℣. Deus, in adjutórium meum intende: ℟. Dómine, ad adjuvandum me festína. Glória Patri, et Fílio, et Spirítui sancto: Sicut erat in princípio, et nunc, et semper, et in sǽcula seculórum. Amen.

Kyrie, eléison. Christe, eléison. Kyrie, eléison. *Secretò*, Pater. *Altâ voce*, ℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem; ℟. Sed líbera nos à malo.

℣. Réspice in servos tuos, Dómine, et in ópera tua; et dírige fílios eórum. ℟. Et sit splendor Dómini Dei nostri super nos; et ópera mánuum nostrárum dírige super nos, et opus mánuum nostrárum dírige. *Ps.* 89.

Glória Patri, *et* Sicut erat.

Orémus.

Dirigere et sanctificáre, régere et gubernáre dignáre, Dómine Deus, Rex cœli et terræ, hódie corda et córpora nostra, sensus, sermónes et actus nostros, in lege tua et in opéribus mandatórum tuórum; ut hìc, et in æternum, te auxiliante, salvi et líberi esse mereámur, Salvátor mundi; Qui vivis et regnas in sǽcula seculórum. ℟. Amen.

*Lector,* Jube, Domne, benedícere. [ *Lectrix dicit,* Domna: *solus vel sola recitans dicit absolutè* ] *Bened.* Det Dóminus leges suas in mentem nostram, et in corde nostro superscríbat eas. *Hebr.* 8. ℟. Amen.

*Tum fit lectio* Canonis, *qui pro singulis diebus habetur ad calcem Breviarii; in cujus fine dicitur:* Tu autem, Dómine, miserére nostri. ℟. Deo grátias.

*Post Lectionem, Hebdomadarius dicit:* Adjutórium nostrum † in nómine Dómini, ℟. Qui fecit cœlum et terram. *Ps.* 123.

*Submissiori voce, dicit:* Benedícite. *Lector versus ad eum,* Deus. *Hebdom.* Deus pacis aptet nos in omni bono, ut faciámus ejus voluntátem, fáciens in nobis quod pláceat coram se per Jesum Christum, cui est glória in sǽcula seculórum. *Hebr.* 13. *Lector,* Amen.

*Post quamlibet Horam, si aliud Officium non sequatur, dicitur secretò:* Fidélium ánimæ per misericórdiam Dei requiescant in pace. ℟. Amen.

*(In Choro autem non dicitur ad Primam, quia dictus est Psalmus* De profundis.*)*

*Deinde* Pater noster, *si separetur à Tertia; et sic in cæteris Horis.*

## AD TERTIAM.

Pater *et* Ave, *si separetur à Prima.*

℣. Deus †, in adjutórium.

Hymnus. *C.*

O fons amóris, Spíritus,
O sancte donórum parens,
Tuas refúsus íntimis
Accende flammas córdibus.

Qui caritátis vínculo
Cum Patre nectis Fílium,
Et nos amóris mútui
Arctis coapta néxibus.

*In Quadragesima.*

¶ Ætema laus et glória
Tibi sit, ô clemens Deus,
Qui nostra per jejúnium
Das expiáre crímina. Amen.

*Tempore Passionis.*

¶ Qui Fílium tradit, Patri,
Natóque sit laus víctimæ;
Par sit tibi laus, qui sacram
Succendis aram, Spíritus.
Amen.

*In Dominicis ac in Feriis Quadragesimæ Antiphona habetur propriis locis.*

*In Festis verò, Ant. semper sumitur de Proprio, vel de Communi, et est secunda de Laudibus, nisi propria assignetur. Psalmi autem dicuntur ut in Psalterio.*

*Capitulum et ℟ br. sumuntur ubi sumitur Antiph. super Psalmos; et sic ad alias Horas.*

¶ *Preces Feriales habentur in Feriis Quadragesimæ, infrà 134.*

℣. Dóminus vobiscum,
℟. Et cum spíritu tuo.

*Oratio conveniens.*

℣. Dóminus vobiscum,
℟. Et cum spíritu tuo.
℣. Benedicámus Dómino.
℟. Deo grátias.

## AD SEXTAM.

Pater *et* Ave, *si separetur à Tertia.*

℣. Deus †, in adjutórium.

HYMNUS. *C.*

Nunc solis excelsum jubar
Pleno coruscat lúmine;
Sic, Christe, tu mundum novâ,
Sol verus, accendis face.
Fac pura nostris fúlgeat
Lux veritátis méntibus:
Fac nostra plenam cáritas
Crescendo surgat ad diem.

*Doxologia,* ¶ *ut suprà ad Tertiam.*

*Ant. Psalmi, Capit.* ℟ *br. in Proprio vel Communi, ubi Ant. est tertia de Laudibus, nisi propria assignetur.*

*Oratio conveniens.*

## AD NONAM.

Pater *et* Ave, *si separetur à Sexta.*

℣. Deus †, in adjutórium.

HYMNUS. *C.*

Prono volútus ímpetu,
Inclínat in noctem dies;
Sic vita suprémam cito
Festínat ad metam gradu.
O Christe, dum fixus cruci
Expandis orbi bráchia,
Amáre da crucem; tuo
Da nos in amplexu mori.

*In Quadragesima.*

¶ Ætema laus et glória
Tibi sit, ô clemens Deus,
Qui nostra per jejúnium
Das expiáre crímina. Amen.

*Tempore Passionis.*

¶ Qui Fílium tradit, Patri,
Natóque sit laus víctimæ;
Par sit tibi laus, qui sacram
Succendis aram, Spíritus.
Amen.

*Ant. Ps. Capit.* ℟ *br. ut in Proprio, vel Communi, ubi Ant. est quinta de Laudibus, nisi propria assignetur.*

*Oratio conveniens.*

## AD VESPERAS.

Pater et Ave, *si separentur à Nona.*

℣. Deus †, in adjutórium.

*Psalmi ut in Psalterio. Ant. Capit. Hymn.* ℣, *et Ant. ad* Magníficat, *sumentur de Proprio.*

CANTICUM B. MARIÆ VIRGINIS. *Luc.* 1.

MAGNIFICAT * ánima mea Dóminum,

Et exultávit spíritus meus * in Deo salutári meo;

Quia respexit humilitátem ancillæ suæ: * ecce enim ex hoc beátam me dicent omnes generatiónes.

Quia fecit mihi magna qui potens est; * et sanctum nomen ejus.

Et misericórdia ejus à progénie in progénies * timéntibus eum.

Fecit poténtiam in bráchio suo: * dispersit superbos mente cordis sui.

Depósuit potentes de sede, * et exaltávit húmiles.

Esurientes implévit bonis, * et dívites dimísit inánes.

Suscépit Israel púerum suum, * recordátus misericórdiæ suæ,

Sicut locútus est ad patres nostros, * Abraham, et sémini ejus in sécula.

Glória Patri, et Fílio, * et Spirítui sancto:

Sicut erat in princípio, et nunc, et semper, * et in sécula seculórum. Amen.

*Post Antiphonam, dicitur:* Dóminus vobiscum.

*Oratio conveniens.*

Dóminus vobiscum.

Benedicámus Dómino.

*Si quæ faciendæ sint Commemorationes, fiunt eo loco.*

¶ PRECES, *si dicendæ sint, habentur infrà in Feriis Quadragesimæ, sicut et Suffragia.*]

## AD COMPLETORIUM.

*Pollice signando pectus,*

℣. Converte † nos, Deus salutáris noster; ℟. Et averte iram tuam à nobis. *Ps.* 84.

℣. Deus †, in adjutórium.

*Psal. et Antiph. convenientes.*

*A Feria IV Cinerum ad Feriam III Majoris Hebdomadæ, dicitur Hymnus* O Splendor, *infrà in Feriis Quadragesimæ,* 136.

*In omni Officio de B. Maria Virgine, dicitur sequens*

HYMNUS. *C.*

VIRGO Dei genitrix, quem totus non capit orbis,
In tua se clausit víscera, factus homo.

Hinc meritò dicent te sécula cuncta beátam:
Hinc populi matrem te dominamque colunt.

SUSCIPE, quos pia plebs tibi péndere certat, honóres:
Annue, sollicitâ quam prece poscit, opem.

Glória magna Patri; compar sit glória Nato;
Ambórum tibi par, Spíritus alme, decus. Amen.

¶ *Quoties dicti sunt Psalmi de Dominica, dicitur sequens*

CAPITULUM. 1 *Petr.* 5.

OMNES vos fílii lucis estis, et fílii diéi: non sumus noctis,

neque tenebrárum; ígitur non dormiámus sicut et céteri, sed vigilémus et sóbrii simus. ]

*Aliis diebus, dicitur sequens*

CAPITULUM. 1 *Petr.* 5.

SOBRII estóte, et vigiláte; quia adversárius vester diábolus, tanquam leo rúgiens, círcuit quærens quem dévoret: cui resístite fortes in fide.

℟ *br.* In manus tuas, Dómine, * Commendo spíritum meum. In manus tuas. ℣. Redemisti me, Dómine, * Deus veritátis: * Commendo. Glória Patri. In manus tuas. *Ps.* 30.

¶ *Tempore Passionis, non dicitur* Glória Patri *in Officio de Tempore, sed post reclamationem repetitur* In manus.]

℣. Custódi me, Dómine, ut pupillam óculi: ℟. Sub umbra alárum tuárum prótege me. *Ps.* 16.

CANTICUM SIMEONIS. *Luc.* 2.

NUNC dimittis servum tuum, Dómine, * secundùm verbum tuum, in pace;

Quia vidérunt óculi mei * salutáre tuum,

Quod parasti * ante fáciem ómnium populórum,

Lumen ad revelatiónem géntium, * et glóriam plebis tuæ Israel.

*Tempore Quadragesimæ et Passionis.*

*Ant.* 2. D. Recogitábo tibi, Dómine, omnes annos meos in amaritúdine ánimæ meæ. *Is.* 38.

¶ *Preces Feriales habentur infrà* 137. ]

*In Dominicis et in Festis, hìc dicitur:*

℣. Dóminus vobiscum,

℟. Et cum spíritu tuo.

Orémus.

VISITA, quæsumus Dómine, habitatiónem nostram, et omnes insídias inimíci ab ea longè repelle: Angeli tui sancti hábitent in ea, qui nos in pace custódiant; et benedíctio tua sit super nos semper; Per Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum, qui tecum vivit et regnat in unitáte Spíritûs sancti Deus, per ómnia sécula seculórum. ℟. Amen.

℣. Dóminus vobiscum.

℣. Benedicámus Dómino.

*Finito Completorio, submissâ voce dicitur:* Grátia Dómini nostri Jesu Christi, et cáritas Dei, et communicátio sancti Spíritûs sit cum ómnibus vobis. 2 *Cor.* 13.

[*Solus recitans,* nobis.]

℟. Amen.

Fidélium ánimæ, etc.

*Tandem dicitur, et quidem flexis genibus, (exceptis Dominicis et Festis Domini) usque ad Feriam IV Majoris Hebdomadæ, sequens*

ANTIPHONA DE BEATA.

AVE, Regína cœlórum,
Ave, dómina Angelórum:
Salve, radix; salve, porta
Ex qua mundo lux est orta:
Gaude, Virgo gloriósa,
Super omnes speciósa:
Vale, ô valde decóra,
Et pro nobis Christum exóra.

℣. Elégit eam Dóminus ℟. In habitatiónem sibi. *Psal.* 131.

Orémus.

CONCEDE, miséricors Deus, fragilitáti nostræ præsídium; ut qui sanctæ Dei genitrícis memóriam ágimus, intercessiónis ejus auxílio à nostris iniquitátibus resurgámus: Per eumdem Christum Dóminum nostrum. ℟. Amen.

*Post completum Officium, dicitur secretò,* Pater, Ave, Credo.

*Orationem sequentem devotè post Officium recitantibus, Leo Papa X, defectus et culpas in eo persolvendo ex humana fragilitate contractas indulsit.*

SACROSANCTÆ et indivíduæ Trinitáti, Crucifixi Dómini nostri Jesu Christi humanitáti, beatíssimæ et gloriosíssimæ semperque vírginis Maríæ fœcundæ integritáti, et ómnium Sanctórum universitáti, sit sempiterna laus, honor, virtus et glória, ab omni creatúra, nobisque remíssio ómnium peccatórum, per infiníta sécula seculórum. ℟. Amen.

℣. Beáta víscera Maríæ Vírginis, quæ portavérunt æterni Patris Fílium; ℟. Et beáta úbera quæ lactavérunt Christum Dóminum.

Pater noster. Ave, María.



# PROPRIUM DE TEMPORE

## *PARS VERNA.*

# IN QUADRAGESIMA.

*Officium Dominicæ fit à primis Vesperis, ut habetur infrà in qualibet Dominica.*

*In Feriis autem usque ad Dominicam Passionis, Officium fit ut sequitur.*

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invit.* Veníte, procidámus ante Deum; * Plorémus coram Dómino qui fecit nos. *Ps.* 94.

*Ps.* Veníte, exultémus, 115.

HYMNUS. *C.*

Quod lex adumbrávit vetus,
Quod ipse sacrávit novi
Christus minister fœderis,
Decúrrimus jejúnium.

Utámur ergo párciùs
Verbis, cibis et pótibus,
Somno, jocis; et árctiùs
Perstémus in custódia.

Intenta mens cupídinis
Frænet rebelles ímpetus;
Ne cordis arcem, jánua
Quà se dat, hostis óccupet.

Omnes ad aram cérnuo
Vultu precémur súpplices:
Plorémus, atque víndicem
Flectámus iram Júdicis.

Judex tremende, nos premit
Immensa moles críminum:
Immensa sed, clemens Pater,
Parcendo vinces crímina.

Nos, testa quanquam fictilis,
Opus tuum sumus tamen;
Períre ne plebem sinas
Christi redemptam sánguine.

Quod fécimus sana malum,
Auge bonum quod póscimus;
Da corde contríto, Deus,
Tuam meréri grátiam.

Æterna laus et glória
Tibi sit, ô clemens Deus,
Qui nostra per jejúnium
Das expiáre crímina. Amen.

*Psalmi ut in Psalterio; et sic ad omnes Horas.*

*Feria II et V.*

*Ant.* 4. d. Convertímini ad me, ait Dóminus exercítuum; et convertar ad vos. *Zach.* 1.

*Ant.* 1. a. Revertátur unusquisque à via sua mala, et dirígite vias vestras et stúdia vestra. *Jerem.* 18.

*Ant.* 6. F. Convertímini, convertímini à viis vestris péssimis: et quare moriémini, domus Israel. *Ezech.* 33.

℣. Ut quid, Dómine, recessisti longè? ℟. Déspicis in opportunitátibus, in tribulatióne? *Ps.* 9.

*Absolutio et Benedictiones, ut in Ordinario Breviarii,* 117.

*Post j Lect.* ℟. Projícite à vobis omnes prævaricatiónes vestras, et fácite vobis cor novum, et spíritum novum; quia * Nolo mortem morien-

tis, dicit Dóminus: revertímini, et vívite. ℣. Patienter agit Dóminus propter vos, nolens áliquos períre, sed omnes ad pœniténtiam reverti. * Nolo. *Ezech.* 18. 2 *Petr.* 3.

*Post ij Lect.* ℟. Quasi columbæ meditantes gemémus; multiplicátæ sunt enim iniquitátes nostræ, et * Peccáta nostra respondérunt nobis; quia scélera nostra nobiscum, et iniquitátes nostras cognóvimus. ℣. Si dixérimus quóniam peccátum non habémus, ipsi nos sedúcimus, et véritas in nobis non est. * Peccáta. *Is.* 59. 1 *Joan.* 1.

*℟ iij Evangelicum, ut in qualibet Feria.*

---

*Feriâ III et VI.*

*Ant.* 4. A. Expectat Dóminus ut misereátur vestrî, et ídeo exaltábitur parcens vobis. *Is.* 30.

*Ant.* 7. c. Pius et misericors est Deus, et remittet in die tribulatiónis peccáta. *Eccli.* 2.

*Ant.* 2. D. Convertímini, et ágite pœniténtiam, et non erit vobis in ruínam iníquitas. *Ezech.* 18.

℣. Juxta est Dóminus iis qui tribuláto sunt corde: ℟. Et húmiles spíritu salvábit. *Ps.* 33.

*Post j Lect.* ℟. Scimus qui dixit: Mihi vindicta, et ego retríbuam. * Horrendum est incídere in manus Dei viventis. ℣. Si pœniténtiam non egérimus, incidémus in manus Dómini, et non in manus hóminum. * Horrendum est. *Hebr.* 10. *Eccli.* 2.

*Post ij Lect.* ℟. Tu, Dómine, in æternum permanébis, * Quare in perpétuum obliviscéris nostrî? Converte nos, Dómine, ad te, et convertémur. ℣. Dómine, salva nos, perímus. * Quare. *Thren.* 5. *Matth.* 8.

*℟ iij Evangelicum, ut in qualibet Feria.*

---

*Feriâ IV et Sabbato.*

*Ant.* 3. à. Mundémus nos ab omni inquinamento carnis et spíritûs. 2 *Cor.* 7.

*Ant.* 8. G. Non est abbreviáta manus Dómini, ut salváre néqueat; neque aggraváta est auris ejus, ut non exáudiat. *Is.* 59.

*Ant.* 5. a. Adeámus ergo cum fidúcia ad thronum grátiæ, ut misericórdiam consequámur. *Hebr.* 4.

℣. Non repellet Dóminus plebem suam; ℟. Et hæreditátem suam non derelinquet. *Ps.* 93.

*Post j Lect.* ℟. Jurávi, et státui custodíre judícia justítiæ tuæ. * Humiliátus sum usquequáque, Dómine: vivífica me secundùm verbum tuum. ℣. Deus, propítius esto mihi peccatóri. * Humiliátus sum. *Ps.* 118. *Luc.* 18.

*Post ij Lect.* ℟. Pósui fáciem meam ad Dóminum Deum meum rogáre, et deprecári * In jejúniis, sacco, et cínere. ℣. Memor esto unde excíderis, et age pœniténtiam, * In jejúniis. *Dan.* 9. *Apoc.* 2.

℟. iij *Evangelicum, ut in qualibet Feria.*

*Non dicitur* Te Deum.

℣. *Sacerdot.* Orábit ad te, Dómine, omnis sanctus, ℟. In témpore opportúno. *Ps.* 31.

¶*Si continuò Laudes non sequantur, dicendæ sunt, flexis genibus, Preces positæ infrà ad Tertiam,* 134.]

## AD LAUDES.

*Psalmi sub sola Ant.* 4. d. Non audívimus vocem Dómini, et abívimus in sensum cordis nostri maligni; faciéntes mala ante conspectum Dómini Dei nostri. *Bar.* 1.

CAPITULUM. *Joel* 2.

CONVERTIMINI ad Dóminum Deum vestrum; quia benignus et misericors est, pátiens, et multæ misericórdiæ, et præstábilis super malítia.

HYMNUS. *C.*

SOLEMNE nos jejúnii
Nunc tempus ad planctum vocat;
Plorat sacerdos; flébili
Clamóre templa pérsonant.

Lugúbris at frustra sonus
Ad Numen irátum venit,
Ni corde pulsus íntimo
Sensum dolóris índicet.

NIL fróntibus sparsus cinis,
Nil scissa vestis próderit,
Ni fracta scindantur simul
Vivo dolóre péctora.

Vultum rigantes flétibus
Flectámus iram Núminis,
Quæ críminis nostri memor,
Intentat ultríces minas.

O JUSTE Judex! ô Deus!
Sis lentus ad pœnam, Pater:
Das pœnitendi témpora,
Et cor simul da pœnitens.

Ætema laus et glória
Tibi sit, ô clemens Deus,
Qui nostra per jejúnium
Das expiáre crímina. Amen.

℣. Si iniquitátes observáveris, Dómine; ℟. Dómine, quis sustinébit? *Ps.* 129.

*Ad* Benedictus, *Antiphona ut in qualibet Feria.*

*Deinde dicuntur, flexis genibus, sequentes*

PRECES.

KYRIE, eléison. Christe, eléison. Kyrie, eléison.

Pater noster, *secretò.*

℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem; ℟. Sed líbera nos à malo.

℣. Ego dixi: Dómine, miserére meî, ℟. Sana ánimam meam, quia peccávi tibi.

℣. Convértere, Dómine, úsquequo? ℟. Et deprecábilis esto super servos tuos.

℣. Fiat misericórdia tua, Dómine, super nos; ℟. Quemádmodum sperávimus in te.

℣. Sacerdótes tui induantur justítiam, ℟. Et sancti tui exultent.

℣. Orémus pro Papa nostro *N.* ℟. Pascat hæreditátem Dómini in innocéntia cordis sui.

℣. Pro Antístite nostro *N.* ℟. Dóminus conservet eum, et vivíficet eum.

℣. Pro universa Ecclésia. ℟. Memor esto congregatiónis tuæ, quam possedisti ab inítio.

℣. Pro Rege nostro *N.* ℟. Dómine, salvum fac Re-

gem, et exaudi nos in die quâ invocavérimus te.

℣. Pro cuncto pópulo. ℟. Salvum fac pópulum tuum, Dómine, et bénedic hæreditáti tuæ.

℣. Pro pace. ℟. Fiat pax in virtúte tua, Jerúsalem, et abundántia in túrribus tuis.

℣. Pro frátribus nostris abséntibus. ℟. Bénefac, Dómine, bonis et rectis corde.

℣. Pro infirmis, afflictis et captívis. ℟. Líbera, Deus, Israel ex ómnibus tribulatiónibus suis.

℣. Pro cunctis Fidélibus defunctis. ℟. Edúcat eos Dóminus in lucem, et vídeant justítiam ejus.

*Deinde dicitur Ps.* De profundis, *pag.* 65; *et in fine* Glória Patri. *Postea,*

℣. Dómine Deus virtútum, converte nos: ℟. Et ostende fáciem tuam, et salvi érimus.

℣. Exurge, Dómine, ádjuva nos: ℟. Et rédime nos propter nomen tuum.

℣. Dómine, exaudi oratiónem meam; ℟. Et clamor meus ad te véniat.

℣. Dóminus vobiscum, ℟. Et cum spíritu tuo.

*Postea dicitur Oratio propria, ut in qualibet Feria.*

*Dicto* Benedicámus, *si facienda sit Commemoratio de aliquo Sancto, fit eo loco.*

*Tandem usque ad Dominicam Passionis, fiunt Suffragia seu Commemorationes communes, ut sequitur.*

DE SANCTA CRUCE.

*Ant.* Peccáta nostra Christus pértulit in córpore suo super lignum; ut peccátis mórtui, justítiæ vivámus. 1 *Petr.* 2.

℣. Ipse rédimet Israel ℟. Ex ómnibus iniquitátibus ejus. *Ps.* 129.

Orémus.

Perpetua nos, quæsumus Dómine, pace custódi, quos per lignum sanctæ Crucis redímere dignátus es; Qui vivis et regnas, Deus. ℟. Amen.

DE B. MARIA VIRGINE.

*Ant.* Benedicentur in te et in sémine tuo cunctæ tribus terræ. *Gen.* 28.

℣. Pópuli confitebuntur tibi in æternum: ℟. Mémores erunt nóminis tui. *Ps.* 44.

Orémus.

Concede nos fámulos tuos, quæsumus, Dómine Deus, perpétuâ mentis et córporis sanitáte gaudére; et gloriósâ beátæ Maríæ semper vírginis intercessióne, à præsenti liberári tristítiâ, et æternâ pérfrui lætítiâ; Per Christum Dóminum nostrum. ℟. Amen.

*Deinde fit Commemoratio* DE PATRONO *vel Patronis Ecclesiæ, necnon* DE OMNIBUS SANCTIS, *speciatim de iis, quorum Reliquiæ habentur.*

*Si autem Ecclesia dedicata sit sub titulo SS. Trinitatis, aut S. Spiritûs, ejusmodi Commemoratio fit ante Suffragium de Cruce. Quod si titulus sit unum ex Mysteriis Christi, hujus Commemoratio fit loco*

*Commem. de Cruce, quæ tunc omittitur. Si verò sub invocatione B. Mariæ, non fit alia Commemoratio de ea, quàm quæ habetur suprà.*

DE PATRONO ECCLESIÆ

ET OMNIBUS SANCTIS.

*Ant.* Hi sunt ante thronum Dei, et sérviunt ei die ac nocte in templo ejus; et qui sedet in throno, habitábit super illos. *Apoc.* 7.

℣. In æternum exultábunt, et habitábis in eis; ℟. Et gloriabuntur in te, Dómine. *Ps.* 5.

*In Oratione sequenti, ad litteram N. N. nominatur Patronus, ac etiam Titularis, si à Patrono differat. Extra Ecclesiam omittitur* [hac].

Orémus.

Propitiare, quæsumus Dómine, fámulis tuis, per beáti *N.* (*vel* beatórum *N.* et *N.*) et Sanctórum quorum Relíquiæ in [hac] Ecclésia tua requiescunt, atque ómnium Sanctórum mérita gloriósa; ut eórum intercessióne ab ómnibus semper protegámur adversis; Per Christum Dóminum nostrum. ℟. Amen.

*Ultimò*, PRO PACE.

*Ant.* Deus qui fecit nobiscum secundùm suam misericórdiam, det nobis jucunditátem cordis, et fieri pacem in diébus nostris. *Eccli.* 50.

℣. Dóminus virtútem pópulo suo dabit: ℟. Dóminus benedícet pópulo suo in pace. *Ps.* 28.

Orémus.

Deus, à quo sancta desidéria, recta consília, et justa sunt ópera: da servis tuis illam quam mundus dare non potest pacem; ut, et corda nostra mandátis tuis dédita, et hóstium sublátâ formídine, témpora sint tuâ protectióne tranquilla; Per Dóminum nostrum, etc.

℣. Dóminus vobiscum.

℣. Benedicámus Dómino.

## AD PRIMAM.

*Hymnus,* Jam lucis, 120.

*Ant.* 2. D. Dómino Deo nostro justítia: nobis autem confúsio faciéi nostræ: peccávimus ante Dóminum Deum nostrum. *Baruch* 1.

CAPITULUM. *Ephes.* 5.

Videte, fratres, quómodo cautè ambulétis, non quasi insipientes, sed ut sapientes, redimentes tempus, quóniam dies mali sunt.

℟. Deo grátias.

℟ *br.* Christe, Fili Dei vivi, * Miserére nobis. *Repetitur* Christe, Fili Dei vivi, * Miserére nobis. *In Quadragesima,* ℣. Qui venisti * peccatóres salvos fácere, * Miserére nobis. Glória Patri, et Fílio, * et Spirítui sancto. *Repet.* Christe, Fili Dei vivi, * Miserére nobis. *Matth.* 16. *Tob.* 8. 1 *Tim.* 1.

[*Tempore Passionis,* ℣. Qui passus es * pro nobis. 1 *Petr.* 2. * Miserére nobis. *Non dicitur* Glória, *sed repetitur* Christe.]

℣. Exurge, Dómine, ád-

juva nos; ℟. Et rédime nos propter nomen tuum. *Ps.* 43.

*Deinde dicuntur, flexis genibus, sequentes*

Preces.

Kyrie, eléison. Christe, eléison. Kyrie, eléison.

Pater noster, *secretò.*

℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem; ℟. Sed líbera nos à malo.

Credo in Deum, *secretò.*

℣. Carnis resurrectiónem, ℟. Vitam ætemam. Amen.

℣. Et ego ad te, Dómine, clamávi; ℟. Et mane orátio mea prævéniet te.

℣. Repleátur os meum laude, ℟. Ut cantem glóriam tuam, totâ die magnitúdinem tuam.

℣. Averte fáciem tuam à peccátis meis, ℟. Et omnes iniquitátes meas dele.

℣. Cor mundum crea in me, Deus, ℟. Et spíritum rectum ínnova in viscéribus meis.

℣. Ne projícias me à fácie tua, ℟. Et Spíritum sanctum tuum ne áuferas à me.

℣. Redde mihi lætítiam salutáris tui, ℟. Et spíritu principáli confirma me.

℣. Eripe me, Dómine, ab hómine malo: ℟. A viro iníquo éripe me.

℣. Eripe me de inimícis meis, Deus meus; ℟. Et ab insurgéntibus in me líbera me.

℣. Eripe me de operántibus iniquitátem; ℟. Et de viris sánguinum salva me.

℣. Sic psalmum dicam nómini tuo in séculum séculi, ℟. Ut reddam vota mea de die in diem.

℣. Dírige me, Dómine, in veritáte tua, et doce me: ℟. Quia tu es Deus salvátor meus.

℣. Reminíscere miseratiónum tuárum, Dómine, ℟. Et misericordiárum tuárum quæ à século sunt.

℣. Bénedic, ánima mea, Dómino; ℟. Et ómnia, quæ intra me sunt, nómini sancto ejus.

℣. Bénedic, ánima mea, Dómino; ℟. Et noli oblivisci omnes retributiónes ejus.

℣. Qui propitiátur ómnibus iniquitátibus tuis; ℟. Qui sanat omnes infirmitátes tuas.

℣. Qui rédimit de intéritu vitam tuam: ℟. Qui corónat te in misericórdia et miseratiónibus.

℣. Qui replet in bonis desidérium tuum: ℟. Renovábitur ut áquilæ juventus tua.

*Deinde signando se,*

℣. Adjutórium nostrum † in nómine Dómini; ℟. Qui fecit cœlum et terram.

*Hebdomadarius facit Confessionem, mediocri voce dicens:*

Confiteor Deo omnipotenti, beátæ Maríæ semper vírgini, beáto Michaéli Archángelo, beáto Joanni Baptistæ, sanctis Apóstolis Petro et Paulo, ómnibus Sanctis, (et vobis, fratres;) quia peccávi nimis cogitatióne, verbo, et ópere; [*Ad hæc verba, ter percutitur pectus.*] meâ culpâ, meâ culpâ, meâ máximâ culpâ. Ideo pre-

cor beátam Maríam semper vírginem, beátum Michaélem Archángelum, beátum Joannem Baptistam, sanctos Apóstolos Petrum et Paulum, omnes Sanctos, (et vos, fratres,) oráre pro me ad Dóminum Deum nostrum.

*Chorus dicit:*

Misereátur tuî omnípotens Deus; et dimissis peccátis tuis, perdúcat te ad vitam ætérnam. *Hebdomad. respondet,* Amen.

*Deinde Chorus facit Confessionem; et ubi dictum est:* vobis, fratres, *et* vos, fratres, *dicit:* tibi, pater, *et* te, pater.

¶ *Mulieres in suis Conventibus, loco* fratres, *et* pater, *dicunt,* soróres, *et* mater. ]

*Factâ Confessione à Choro, Hebdomadarius dicit:*

Misereatur vestrî omnípotens Deus; et, dimissis peccátis vestris, perdúcat vos ad vitam ætérnam. ℟. Amen.

¶ *Qui solus recitat, semel dicit,* Confíteor, *omissis vocibus quæ clauduntur parenthesi, et additâ particulâ* et, *ante voces* ómnibus *et* omnes. *Deinde* Misereátur, *semel, ad quod dicit,* nostrî, nostris, nos. ]

*Deinde signando se,*

Indulgentiam, † absolutiónem, et remissiónem peccatórum nostrórum tríbuat nobis omnípotens et miséricors Dóminus. ℟. Amen.

*Elevans vocem, dicit:*

℣. Exaudi nos, Deus salutáris noster, ℟. Spes ómnium fínium terræ.

℣. Miserére nostrî, Dómine, ℟. Miserére nostrî.

℣. Fiat misericórdia tua, Dómine, super nos, ℟. Quemádmodum sperávimus in te.

℣. Dómine, exaudi oratiónem meam; ℟. Et clamor meus ad te véniat. ]

℣. Dóminus vobiscum.

℟. Et cum spíritu tuo.

Orémus.

Domine Deus omnípotens, qui ad princípium hujus diéi nos pervenire fecisti: tuâ nos hódie salva virtúte; ut ad nullum declinémus peccátum, sed semper ad tuam justítiam faciendam nostra procédant elóquia, dirigantur cogitatiónes et ópera; Per Dóminum nostrum Jesum Christum, etc.

*Cetera ut in Ordinario,* 121.

## AD TERTIAM.

*Hymnus,* O fons, 122.

*Ant.* 7. b. Operiantur saccis hómines, et clament ad Dóminum in fortitúdine, et convertátur vir à via sua mala. *Jon.* 3.

Capitulum. *Joel* 2.

Nunc, dicit Dóminus, convertímini ad me in toto corde vestro, in jejúnio, et in fletu, et in planctu; et scíndite corda vestra, et non vestimenta vestra.

℟ *br.* Converte nos, * Deus salutáris noster. Converte. ℣. Et averte iram tuam * à nobis, * Deus. Glória Patri. Converte. *Ps.* 84.

℣. Oculi nostri ad Dóminum Deum nostrum, ℟. Donec misereátur nostrî. *Ps.* 122.

*Deinde dicuntur, flexis genibus, sequentes*

PRECES.

KYRIE, eléison. Christe, eléison. Kyrie, eléison.

Pater noster, *secretò*.

℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem ; ℟. Sed líbera nos à malo.

℣. Dómine Deus virtútum, converte nos ; ℟. Et ostende fáciem tuam, et salvi érimus.

℣. Exurge, Dómine, ádjuva nos ; ℟. Et rédime nos propter nomen tuum.

℣. Dómine, exaudi oratiónem meam ; ℟. Et clamor meus ad te véniat.]

℣. Dóminus vobiscum, ℟. Et cum spíritu tuo.

*Oratio conveniens.*

℣. Dóminus vobiscum, ℟. Et cum spíritu tuo.

℣. Benedicámus Dómino. ℟. Deo grátias.

AD SEXTAM.

*Hymnus*, Nunc solis, 123.

*Ant.* 3. b. Quiéscite ágere perversè, díscite benefácere : quærite judícium. Si fúerint peccáta vestra ut cóccinum, quasi nix dealbabuntur. *Is.* 1.

CAPITULUM. *Isai.* 55.

DERELINQUAT ímpius viam suam, et vir iníquus cogitatiónes suas, et revertátur ad Dóminum, et miserébitur ejus ; et ad Deum nostrum, quóniam multus est ad ignoscendum.

℟ *br.* Miserére nostrì, Dómine, * Miserére nostrì. Miserére. ℣. Quia multùm repléti sumus despectióne, * Miserére. Glória. Miserére. *Ps.* 122.

℣. Multa flagella peccatóris ; ℟. Sperantem autem in Dómino misericórdia circúmdabit. *Ps.* 31.

*Preces ut suprà ad Tertiam.*

AD NONAM.

*Hymn.* Prono volútus, 123.

*Ant.* 6. *C.* Purificáte corda, peccatóres : lugéte, et ploráte ; humiliámini in conspectu Dómini. *Jacob.* 4.

CAPITULUM. *Joel* 2.

INTER vestíbulum et altáre plorábunt sacerdótes, minístri Dómini ; et dicent : Parce, Dómine, parce pópulo tuo ; et ne des hæreditátem tuam in oppróbrium.

℟ *br.* Propter glóriam nóminis tui, * Dómine, líbera nos. Propter. ℣. Et propítius esto peccátis nostris * propter nomen tuum : * Dómine. Glória. Propter. *Ps.* 78.

℣. Sacrifícium Deo spíritus contribulátus : ℟. Cor contrítum et humiliátum, Deus, non despícies. *Ps.* 50.

*Preces ut suprà ad Tertiam.*

AD VESPERAS.

*Psalmi secundùm Feriam, sub sola Ant.* 1. a. Peccávimus, recedentes à te, Dómine, sed in ánimo contríto et spíritu humilitátis suscipiámur. *Dan.* 3.

CAPITULUM. *Ezech.* 33.

SI ímpius in mandátis vitæ ambuláverit, nec féceritquidquam injustum, vitâ vivet, et non moriétur. Omnia pec-

cáta ejus, quæ peccávit, non imputabuntur ei.

HYMNUS. *S. Greg.*

AUDI, benigne Cónditor,
Nostras preces cum flétibus,
In hoc sacro jejúnio
Fusas quadragenário.

Scrutátor alme córdium,
Infirma tu scis vírium;
Ad te reversis éxhibe
Remissiónis grátiam.

MULTUM quidem peccávimus;
Sed parce confiténtibus:
Ad nóminis laudem tui
Confer medélam lánguidis.

Sic corpus extrà cónteri
Dona per abstinéntiam,
Jejúnet ut mens sóbria
A labe prorsus críminum.

PRÆSTA, beáta Trínitas,
Concéde, simplex únitas,
Ut fructuósa sint tuis
Jejuniórum múnera. Amen.

℣. Tempus beneplácíti, Deus, ℟. In multitúdine misericórdiæ tuæ exaudi me. *Ps.* 68.

*Ad* Magníficat, *Antiphona ut in qualibet Feria.*

*Deinde dicuntur Preces, ut suprà ad Laudes,* 129. *In iis, loco Psalmi* De profundis, *dicitur Ps.* Miserére meî, Deus, 111.

*Oratio ut in qualibet Feria.*

*Post Antiph. ad* Magníficat, *dicto* Benedicámus, *si facienda sit Commemoratio de aliquo Sancto, fit eo loco. Deinde usque ad Dominicam Passionis, fiunt Suffragia ut sequitur.*

DE SANCTA CRUCE.

*Ant.* Mihi absit gloriári, nisi in cruce Dómini nostri Jesu Christi. *Gal.* 6.

℣. In Deo salutáre meum ℟. Et glória mea. *Ps.* 61.

Orémus.

PERPETUA nos, quæsumus Dómine, pace custódi, quos per lignum sanctæ Crucis redímere dignátus es; Qui vivis et regnas Deus. ℟. Amen.

DE B. MARIA VIRGINE.

*Ant.* Benedicta tu inter mulíeres, et benedictus fructus ventris tui. *Luc.* 1.

℣. Ipse est Dóminus Deus tuus, et adorábunt eum: ℟. Vultum tuum deprecabuntur omnes dívites plebis. *Ps.* 44.

Orémus.

CONCEDE nos fámulos tuos, quæsumus, Dómine Deus, perpétuâ mentis et córporis sanitáte gaudére, et gloriósâ beátæ Maríæ semper vírginis intercessióne, à præsenti liberári tristítia, et æternâ pérfrui lætítiâ: Per Christum.

DE PATRONO ECCLESIÆ, *ac* DE OMNIBUS SANCTIS, *ut dictum est suprà ad Laudes.*

*Ant.* Fulgébunt justi sicut sol in regno Patris eórum. *Matth.* 13.

℣. Justi confitebuntur nómini tuo, Dómine; ℟. Et habitábunt recti cum vultu tuo. *Ps.* 139.

Orémus.

PROPITIARE, quæsumus, Dómine, fámulis tuis, per beáti *N.* (*vel* beatórum *N.* et *N.*) et Sanctórum quorum Relíquiæ in [hac] Ecclésia tua requiescunt, atque ómnium

Sanctórum mérita gloriósa; ut eórum intercessióne ab ómnibus semper protegámur adversis: Per Christum.

*Ultimò,* PRO PACE.

*Ant.* Deus memínerit testamenti sui, et fáciat pacem; nec déserat in témpore malo. 2 *Mach.* 1.

℣. Dóminus Deus loquétur pacem, ℟. In plebem suam. *Ps.* 84.

Orémus.

DEUS, à quo sancta desidéria, recta consília et justa sunt ópera: da servis tuis illam quam mundus dare non potest pacem; ut, et corda nostra mandátis tuis dédita, et hóstium sublátâ formídine, témpora sint tuâ protectióne tranquilla; Per Dóminum nostrum, etc. ℟. Amen.

℣. Dóminus vobiscum.

℣. Benedicámus Dómino.

## AD COMPLETORIUM.

*Psalmi et Antiph. de Psalterio secundùm Feriam.*

HYMNUS. *C.*

O SPLENDOR æterni Patris,
Tu, Christe, qui verus dies,
Et vera lux de lúmine,
Mentis fugas calíginem:

En solis abscessit jubar,
Noctisque succédunt vices:
Qui prósperum donas diem,
Da tuta noctis ótia.

SI clausa torpent lúmina,
Suspíret ad te mens vigil:
Potente, qui te díligunt,
Servos tuére déxtera.

Tu quos molesti córporis
Gravis retardat sárcina,
Fac mentis alis líbero
Sursum volátu téndere.

O SPES salútis única,
Votis adesto súpplicum:
Defende quos mercátus es
Mercéde fusi sánguinis.

*In Quadragesima.*

¶ Æterna laus et glória
Tibi sit, ô clemens Deus,
Qui nostra per jejúnium
Das expiáre crímina. Amen.

*Tempore Passionis.*

¶ Qui Fílium tradit, Patri,
Natóque sit laus víctimæ;
Par sit tibi laus, qui sacram
Succendis aram, Spíritus.
Amen.

CAPITULUM. 1 *Petr.* 5.

SOBRII estóte, et vigiláte; quia adversárius vester diábolus, tanquam leo rúgiens, círcuit quærens quem dévoret: cui resístite fortes in fide.

℟. Deo grátias.

℟ *br.* In manus tuas, Dómine, * Commendo spíritum meum. In manus tuas. ℣. Redemisti me, Dómine, * Deus veritátis: * Commendo. Glória. In manus tuas. *Ps.* 30.

¶ *Tempore Passionis, omisso* Glória Patri, *post reclamationem repetitur* In manus.]

℣. Custódi me, Dómine, ut pupillam óculi: ℟. Sub umbra alárum tuárum prótege me. *Ps.* 16.

CANTICUM SIMEONIS.

*Luc.* 2.

NUNC dimittis servum tuum, Dómine, * secundùm verbum tuum, in pace;

Quia vidérunt óculi mei * salutáre tuum,

Quod parasti * ante fáciem ómnium populórum,

Lumen ad revelatiónem géntium, * et glóriam plebis tuæ Israel.

*Ant.* 2. D. Recogitábo tibi, Dómine, omnes annos meos in amaritúdine ánimæ meæ. *Is.* 38.

*Deinde dicuntur, flexis genibus, sequentes*

Preces.

Kyrie, eléison. Christe, eléison. Kyrie, eléison.

Pater noster, *secretò.*

℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem; ℣. Sed líbera nos à malo.

Credo in Deum, *secretò.*

℣. Carnis resurrectiónem, ℟. Vitam ætérnam. Amen.

℣. Benedictus es, Dómine, Deus patrum nostrórum; ℟. Et laudábilis, et glorióśus, et superexaltátus in sécula.

℣. Benedictum nomen glóriæ tuæ sanctum; ℟. Et laudábile, et superexaltátum in ómnibus séculis.

℣. Benedictus es in firmamento cœli; ℟. Et laudábilis et gloriósus in sécula.

℣. Benedícat nos Deus, Deus noster, ℟. Benedícat nos Deus.

*Postea fit Confessio, ut suprà ad Primam,* 132.

℣. Exaudi nos, Deus salutáris noster, ℟. Spes ómnium finium terræ.

℣. Miserére nostrì, Dómine: ℟. Miserére nostrì.

℣. Fiat misericórdia tua, Dómine, super nos, ℟. Quemádmodum sperávimus in te.

℣. Dómine, exaudi oratiónem meam; ℟. Et clamor meus ad te véniat.

℣. Dóminus vobiscùm,

℟. Et cum spíritu tuo.

Orémus.

Visita, quæsumus Dómine, habitatiónem nostram, et omnes insídias inimíci ab eà longè repelle: Angeli tui sancti hábitent in ea, qui nos in pace custódiant, et benedíctio tua sit super nos semper: Per Dóminum nostrum JesumChristum Fílium tuum.

℣. Dóminus vobiscum.

℣. Benedicámus Dómino.

*Finito Completorio, submissâ voce dicitur:* Grátia Dómini nostri Jesu Christi, et cáritas Dei, et communicátio sancti Spíritûs sit cum ómnibus vobis. 2 *Cor.* 13.

[*Solus recitans,* nobis.]

℟. Amen.

Fidélium ánimæ, etc.

*Antiph. de Beata Maria, ut suprà,* 125.

## FERIA IV CINERUM

IN CAPITE JEJUNII.

### AD OFFICIUM NOCTURNUM.

Lectio I.

De libro Génesis.

*Cap.* 37.

Joseph, cùm sédecim esset annórum, pascébat gregem cum frátribus suis adhuc puer: et erat cum fíliis Balæ et Zelphæ uxórum patris sui; accusavitque fratres suos apud patrem crímine péssimo. Israel autem diligébat Joseph

super omnes filios suos, eo quod in senectúte genuisset eum, fecitque ei túnicam polymitam. Videntes autem fratres ejus quod à patre plus cunctis filiis amarétur, óderant eum; nec póterant ei quidquam pacíficè loqui. Accidit quoque ut visum sómnium referret frátribus suis, quæ causa majóris ódii seminárium fuit. Dixitque ad eos: Audíte sómnium meum quod vidi: Putábam nos ligáre manípulos in agro, et quasi consúrgere manípulum meum, et stare; vestrosque manípulos circumstantes adoráre manípulum meum. Respondérunt fratres ejus: Numquid rex noster eris? aut subjiciémur ditióni tuæ? Hæc ergo causa somniórum atque sermónum, invídiæ et ódii fómitem ministrávit.

LECTIO II.

CUMQUE fratres illíus in pascendis grégibus patris moraréntur in Sichem, dixit ad eum Israel: Fratres tui pascunt oves in Síchimis: veni, mittam te ad eos. Quo respondente, Præsto sum, ait ei: Vade, et vide si cuncta próspera sint erga fratres tuos et pécora; et renúntia mihi quid agátur. Missus de valle Hebron, venit in Sichem: invenitque eum vir errantem in agro, et interrogávit quid quæreret. At ille respondit: Fratres meos quæro, índica mihi ubi pascant greges. Dixitque ei vir: Recessérunt de loco isto; audívi autem eos dicentes: Eámus in Dóthain. Perrexit ergo Joseph post fratres suos, et invénit eos in Dóthain. Qui cùm vidissent eum procul, ántequam accéderet ad eos, cogitavérunt illum occídere, et mútuò lòquebantur: Ecce somniátor venit; veníte, occidámus eum, et mittámus in cisternam véterem; dicemusque: Fera péssima devorávit eum; et tunc apparébit quid illi prosint sómnia sua.

LECTIO III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Matthæum. *C.* 6.

IN illo témpore; Dixit Jesus discípulis suis: Cùm jejunátis, nolíte fíeri sicut hypócritæ, tristes. Et réliqua.

Homília sancti Augustíni Epíscopi. *Serm.* 207.

JEJUNEMUS humiliantes ánimas nostras, appropinquante die quo magister humilitátis humiliávit semetipsum, factus súbditus usque ad mortem crucis. Imitémur ejus crucem, abstinéntiæ clavis edómitas concupiscéntias configentes. Castigémus corpus nostrum, et servitúti subjiciámus; et ne per indómitam carnem ad illícita prolabámur, in ea domanda aliquantum et lícita subtrahámus. Crápula et ebríetas étiam per dies céteros devitanda; per hos autem dies étiam concessa prándia removenda. Fácilè tibi obtemperábit caro, ne inhæreat aliénis, quæ refrænári consuéverit et à suis. Cavendum est ne mutes, non

minuas voluptátes. Parcimónia jejúniis conjungátur. Sicut ventris castiganda satúritas, ita gulæ irritamenta cavenda sunt.

℟. Convertímini ad me, dicit Dóminus, in toto corde vestro, in jejúnio, et in fletu, et in planctu; et * Scíndite corda vestra, et non vestimenta vestra. ℣. Cùm jejunátis, nolíte fíeri sicut hypócritæ, tristes: extérminant enim fácies suas, ut appáreant homínibus jejunantes. * Scíndite. Glória. * Scíndite. *Joel* 2. *Matth.* 6.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 2. D. Cùm jejúnas, unge caput tuum, et fáciem tuam lava, ne videáris homínibus jejúnans. *Matth.* 6.

Orémus. Oratio.

Præsta, Dómine, fidélibus tuis ut jejuniórum veneranda solémnia, et cóngruâ pietáte suscípiant, et secúrâ devotióne percurrant; Per Dóminum.

¶ *Hodie, et deinceps usque ad Pascha, prӕterquam diebus Dominicis, Vesperӕ dicuntur in Ecclesiis ante comestionem.* ]

*Ad* Magníficat. *Ant.* 4. A. Thesaurizáte vobis thesauros in cœlo, ubi neque ærúgo, neque tínea demolítur. *Matth.* 6.

Orémus. Oratio.

Deus, misericórdiæ dator, et totíus bonitátis auctor, qui jejúniis, oratiónibus et eleemósynis peccatórum remédia, et virtútum ómnium tríbuis incrementa: te húmili devotióne precámur, ut qui ad hæc agenda salubérrimam dedisti doctrínam, ad complendum indefessam tríbuas efficáciam; Per Dóminum.

## FERIA QUINTA
### POST CINERES.

Lectio i.

De libro Génesis. *C.* 37.

Dixit Judas frátribus suis: Quid nobis prodest, si occidérimus fratrem nostrum, et celavérimus sánguinem ipsíus? Mélius est ut venumdétur Ismaelítis, et manus nostræ non polluantur; frater enim et caro nostra est. Acquievérunt fratres sermónibus illíus. Et prætereúntibus Madianítis negotiatóribus, extrahentes eum de cisterna, vendidérunt eum Ismaelítis viginti argénteis: qui duxérunt eum in Ægyptum. Reversusque Ruben ad cisternàm, non invénit púerum. Et scissis véstibus, pergens ad fratres suos, ait: Puer non compáret, et ego quò ibo? * Tulérunt autem túnicam ejus, et in sánguine hœdi quem occíderant, tinxérunt, mittentes qui ferrent ad patrem, et dícerent: Hanc invénimus; vide utrùm túnica fílii tui sit, an non. Quam cùm agnovisset pater, ait: Túnica fílii mei est; fera péssima comédit eum, béstia devorávit Joseph. Scissisque véstibus, indútus est cilício, lugens fílium suum multo témpore.

Lectio ii. *Cap.* 39.

Igitur Joseph ductus est in Ægyptum, emitque eum Pú-

tiphar eunúchus Pharaónis, princeps exércitûs, vir Ægyptius, de manu Ismaelitárum à quibus perductus erat. Fuitque Dóminus cum eo, et erat vir in cunctis prósperè agens: habitavitque in domo dómini sui, qui óptimè nóverat Dóminum esse cum eo; et ómnia quæ géreret, ab eo dírigi in manu illíus. Invenitque Joseph grátiam coram dómino suo, et ministrábat ei, à quo præpósitus ómnibus, gubernábat créditam sibi domum, et universa quæ ei trádita fúerant: benedixitque Dóminus dómui Ægyptii propter Joseph, et multiplicávit tam in ædibus quàm in agris cunctam ejus substántiam; nec quidquam áliud nóverat, nisi panem quo vescebátur. Erat autem Joseph pulcrâ fácie, et decórus aspectu.

¶ *Si Festum Duplex-majus hâc Feriâ vel sequentibus inciderit; tunc duæ Lectiones de Scriptura in tres Lectiones I Nocturni dividentur ad asteriscos * cuique diei sparsos.* ]

LECTIO III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Matthæum. *C.* 8.

In illo témpore; Cùm introisset Jesus Caphárnaum, accessit ad eum Centúrio, rogans eum, et dicens: Dómine, puer meus jacet in domo paralyticus, et malè torquétur. Et réliqua.

Homília sancti Augustíni Epíscopi. *Serm.* 62.

Audivimus, cùm Evangélium legerétur, fidem nostram in humilitáte laudári. Ad domum quippe Centuriónis cùm se promítteret Dóminus Jesus itúrum, ut púerum ejus sanáret, ille respondit: Non sum dignus ut sub tectum meum intres, sed tantùm dic verbum, et sanábitur. Dicendo se indignum, præstitit dignum, non in cujus paríetes, sed in cujus cor Christus intráret. Neqùe hoc díceret cum tanta fide et humilitáte, nisi illum quem timébat intráre in domum suam, corde gestáret. Nam non erat magna felícitas, si Dóminus Jesus intráret in paríetes ejus, et non esset in péctore ejus.

℟. Centúrio ait: Dómine, non sum dignus ut intres sub tectum meum; sed * Tantùm dic verbo, et † Sanábitur puer meus. ℣. Dómine Deus, ecce tu fecisti cœlum et terram in fortitúdine tua magna: non erit tibi diffícile omne verbum: * Tantùm. Glória Patri. † Sanábitur. *Matth.* 8. *Jerem.* 32.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 2. D. Audiens Centuriónem Jesus, mirátus est, et sequéntibus se dixit: Amen dico vobis, non invéni tantam fidem in Israel. *Matth.* 8.

Orémus. ORATIO.

Deus, qui culpâ offénderis, pœniténtiâ placáris: preces pópuli tui supplicantis propítius réspice, et flagella tuæ iracúndiæ, quæ pro peccátis nostris merémur, averte; Per Dóminum.

VESPERÆ *de sequenti.*

# FERIA SEXTA
FIT OFFICIUM
# DE QUINQUE PLAGIS CHRISTI.

*Duplex - majus.*

## IN I VESPERIS.

*Ant.* 4. f. Quid sunt plagæ istæ in médio mánuum tuárum. *Zach.* 13.

*Ant.* 7. b. His plagátus sum in domo eórum qui diligébant me. *Zach.* 13.

*Ant.* 3. a. Quare rubrum est indumentum tuum, et vestimenta tua sicut calcántium in torculári? *Is.* 63.

*Ant.* 2. D. Torcúlar calcávi solus, et aspersus est sanguis eórum super vestimenta mea: annus redemptiónis meæ venit. *Is.* 63.

*Ant.* 1. a. Ego sum, ego sum ipse qui déleo iniquitátes tuas propter me; et peccatórum tuórum non recordábor. *Is.* 43.

CAPITULUM. *Zach.* 12.

Effundam super domum David, et super habitatóres Jerúsalem spíritum grátiæ et precum; et aspícient ad me, quem confixérunt.

℟. Aspiciámus in auctórem fídei, et consummatórem Jesum,* Qui propósito sibi gáudio, sustínuit crucem, † Confusióne contemptâ. ℣. Omnes nos quasi oves errávimus, unusquisque in viam suam declinávit: et pósuit Dóminus in eo iniquitátem ómnium nostrûm; * Qui. Glória Patri. † Confusióne. *Hebr.* 12. *Is.* 53.

HYMNUS. *S. M.*

Prome vocem, mens, canóram,
Plange tristi cármine;
Dic Crucifíxi dolóres,
Mórtui dic vúlnera,
Innocens quæ sponte Christus
Pro reis fert víctima.

Cæsus immíti furóre
Nostra propter crímina,
Nos suo livóre sanat,
Nos jacentes érigit;
Et fovet plagas tumentes,
Et cruentas ślligat.

Trans manus, pedesque fixus,
Nostra rumpit víncula:
Totque fontes sunt salútis,
Quot fluit plagis cruor;
Et quibus clavís tenétur,
Nos tenet fixos cruci.

Mórtui pectus sacrátum
Vulnerátur lánceâ;
Inde sanguis mixtus undâ
Férvidus prolábitur:
Ad lavácrum præbet undam,
Ad corónas sánguinem.

Fac, Redemptor, hauriámus
His aquas de fóntibus;
Póculum sint ac medéla,
Sint et olim præmium;
Ut redemptus te per omne
Laudet orbis séculum.
Amen.

℣. Supra dorsum meum fabricavérunt peccatóres: ℟. Prolongavérunt iniquitátem suam. *Ps.* 128.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 8. G. Propter scelus pópuli mei percussi eum; et Dóminus vóluit contérere eum in infirmitáte;

si posúerit pro peccáto ánimam suam, vidébit semen longævum. *Is.* 53.

*Oratio ut infrà ad Laudes.*

*Pro Commemor. Feriæ.*

*Ant.* Multi ab oriente et occidente vénient, et recumbent cum Abraham, et Isaac, et Jacob, in regno cœlórum; fílii autem regni ejicientur in ténebras exterióres. *Matth.* 8.

℣. Tempus beneplácitì, Deus: ℟. In multitúdine misericórdiæ tuæ exaudi me. *Ps.* 68.

Orémus. ORATIO.

DEUS, nostrum refúgium in labóribus, virtus in infirmitátibus, adjutórium in tribulatiónibus, solámen in flétibus: parce pópulo tuo, ut dignis flagellatiónibus castigátus in tua miseratióne respíret; Per Dóminum.

COMPLETORIUM, *ut suprà*, 124, *cum Doxologia*, ¶ Qui Fílium, *ut infrà.*

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invitat.* Christum propter iniquitátes nostras vulnerátum, * Veníte adorémus. *Is.* 53.

HYMNUS. *C. et S. V.*

LUGETE, pacis Angeli:
Mortális en ultro Deus,
Culpæ gerens imáginem,
Pœnam nocentum sústinet.

Ah! parce corpus ínnocens,
Lictor, flagellis scíndere:
Quid vulnus addis vúlnéri?
Jam penè totum vulnus est.

NUDANTUR ossa cárnibus,
Scissos per artus it cruor;
Non sanguis uvæ sic fluit
Quam dura vis preli domat.

Clavis manus, clavis pedes
Confossus hæret stípiti:
Sed quàm sui tenáciùs
Amóris hæret vínculis!

AMORIS ô miráculum!
O cordis humáni stupor!
Insons Deus neci datur;
Pigébit et sontes pati!

Nos sempiternis crux tua,
O Christe, flammis éruit:
Hic ure vindex, hic seca,
Parcas in æternum modò.

CARO reclámat; sed Patris
Urget voluntas: nos tuâ
Virtúte da fortes sequi,
Jesu, quod exemplo doces.

Livóre sanátos tuo,
Tuóque lotos sánguine,
Peccando ne novam sinas
Paráre nos tibi crucem.

¶ QUI Fílium tradit, Patri,
Natóque sit laus víctimæ;
Par sit tibi laus, qui sacram
Succendis aram, Spíritus.
Amen.

*IN I NOCTURNO.*

*Ant.* 3. à. Conclúsit me Deus apud iníquum, et mánibus impiórum me trádidit. *Job* 16.

*Ant.* 2. D. Circúmdedit me lánceis suis, convulnerávit lumbos meos, et non pepercit. *Job* 16.

*Ant.* 5. a. Concídit me vúlnere super vulnus, írruit in me quasi gigas. *Job* 16.

℣. Sagittæ tuæ infixæ sunt mihi; ℟. Et confirmasti super me manum tuam. *Ps.* 37.

LECTIO I.

De libro Génesis.

*Cap.* 42.

ERAT fames in terra Chánaan; et Joseph erat princeps

in terra Ægypti, atque ad ejus nutum frumenta pópulis vendebantur. Cùmque adorassent eum fratres sui, et agnovisset eos, quasi ad aliénos dúriùs loquebátur, intérrogans eos : Unde venistis? Qui respondérunt : De terra Chánaan, ut emámus victui necessária. Et tamen fratres ipse cognoscens, non est cógnítus ab eis. Recordatusque somniórum quæ aliquando víderat, ait ad eos : Exploratóres estis; ut videátis infirmióra terræ, venistis. Qui dixérunt : Non est ita, dómine; sed servi tui venérunt ut émerent cibos. Omnes filii uníus viri sumus : pacífici vénimus, nec quidquam fámuli tui machinantur mali.

℟. In conspectu tuo, Dómine, sunt omnes qui tribulant me : * Et sustínui qui simul contristarétur, et non fuit; quóniam quem tu percussisti, persecúti sunt, et super dolórem vúlnerum meórum addidérunt. ℣. Christus non sibi plácuit; sed, sicut scriptum est : Impropéria improperántium tibi cecidérunt super me : * Et. *Ps.* 68. *Rom.* 15.

Lectio ii. *Cap.* 45.

Elevavit Joseph vocem cum fletu : quam audiérunt Ægyptii, omnisque domus Pharaónis. Et dixit frátribus suis : Ego sum Joseph : adhuc pater meus vivit? Non póterant respondére fratres nímio terróre pertérriti. Ad quos ille clementer : Accédite, inquit, ad me. Et cùm accessissent propè : Ego sum, ait, Joseph frater vester, quem vendidistis in Ægyptum. Nolíte pavére, neque vobis durum esse videátur quod vendidistis me in his regiónibus; pro salúte enim vestra misit me Deus ante vos in Ægyptum. Biénnium est enim quod cœpit fames esse in terra; et adhuc quinque anni restant, quibus nec arári póterit, nec meti. Præmisitque me Deus ut reservémini super terram, et escas ad vivendum habére possítis. Non vestro consílio, sed Dei voluntáte huc missus sum : qui fecit me quasi patrem Pharaónis, et dóminum universæ domûs ejus, ac príncipem in omni terra Ægypti. Festináte et ascéndite ad patrem meum, et dicétis ei : Hæc mandat fílius tuus Joseph : Deus fecit me dóminum universæ terræ Ægypti : descende ad me, ne moréris, et habitábis in terra Gessen.

℟. Dóminus Deus apéruit mihi aurem, ego autem non contradíco : * Retrorsum non ábii; corpus meum dedi percutiéntibus. ℣. Baptismo hábeo baptizári; et quómodo coarctor usque dum perficiátur? * Retrorsum. *Is.* 50. *Luc.* 12.

Lectio iii.

Dimisit ergo Joseph fratres suos, et proficiscéntibus ait : Ne irascámini in via. Qui ascendentes ex Ægypto, venérunt in terram Chánaan ad

patrem suum Jacob. Et nuntiavérunt ei, dicentes: Joseph fílius tuus vivit, et ipse dominátur in omni terra Ægypti. Quo audíto Jacob, quasi de gravi somno evígilans, tamen non credébat eis. Illi è contrà referébant omnem órdinem rei. Cùmque vidisset plaustra, et universa quæ míserat, revixit spíritus ejus, et ait: Súfficit mihi si adhuc Joseph fílius meus vivit: vadam, et vidébo illum ántequam móriar.

℟. Fodérunt manus meas et pedes meos: dinumeravérunt ómnia ossa mea; ipsi verò * Consideravérunt et inspexérunt me: † Tu autem, Dómine, ne elongáveris auxílium tuum à me. ℣. Facta sunt hæc, ut implerétur et ália Scriptúra: Vidébunt in quem transfixérunt: * Consideravérunt. Glória. † Tu. *Ps.* 21. *Joan.* 19.

## *IN II NOCTURNO.*

*Ant.* 1. *a.* Sagittæ Dómini in me sunt, et terróres Dómini mílitant contra me. *Job* 6.

*Ant.* 7. b. Non concédit requiéscere spíritum meum, et implet me amaritudínibus. *Job* 9.

*Ant.* 6. F. Instauras testes tuos contra me, et multíplicas iram tuam adversùm me. *Job.* 10.

℣. Amove à me plagas tuas, Dómine: ℟. A fortitúdine manûs tuæ ego defécì. *Ps.* 38.

### Lectio iv.

Sermo sancti Bernardi Abbátis. *In Cant.* 61.

Ubi tuta fírmaque infírmis secúritas et réquies, nisi in vulnéribus Salvatóris? Tantò illic secúrior hábito, quantò ille poténtior est ad salvandum. Peccávi peccátum grande: turbábitur consciéntia, sed non perturbábitur; quóniam vúlnerum Dómini recordábor: nempe vulnerátus est propter iniquitátes nostras. Quid tam ad mortem, quod non Christi morte solvátur? Si ergo in mentem vénerit tam potens tamque éfficax medicamentum, nullâ jam possum morbi malignitáte terréri.

℟. Ut vidérunt Jesum jam mórtuum, non fregérunt ejus crura; sed * Unus mílitum lánceâ latus ejus apéruit, et contínuò exívit sanguis et aqua. ℣. Humiliavérunt pedes ejus, ferrum pertránsiit ánimam ejus: * Unus mílitum. *Joan.* 19. *Ps.* 104.

### Lectio v.

Ego fidenter quod ex me mihi deest, usurpo mihi ex viscéribus Dómini: quóniam misericórdiâ áffluunt, nec desunt forámina per quæ éffluant. Fodérunt manus ejus et pedes, latusque lánceâ foravérunt; et per has rimas licet mihi súgere mel de petra, oleumque de saxo duríssimo; id est, gustáre et vidére quóniam suávis est Dóminus. Cogitábat cogitatiónes pacis, et ego nesciébam. Quis enim cognóvit sensum Dómini, aut quis

quis consiliárius ejus fuit? At clavus réserans, clavus pénetrans factus est mihi, ut videam voluptátem Dómini. Quidni vídeam per forámen? Clamat clavus, clamat vulnus, quod verè Deus sit in Christo mundum reconcílians sibi.

℟. Quid turbáti estis, et cogitatiónes ascendunt in corda vestra? * Vidéte manus meas et pedes, quia ego ipse sum. ℣. Nolíte pavére; pro salúte vestra misit me Deus: * Vidéte manus meas. *Luc.* 24. *Gen.* 45.

LECTIO VI.

Ferrum pertránsiit ánimam ejus, et appropinquávit cor illíus, ut non jam non sciat cómpati infirmitátibus meis. Patet arcánum cordis per forámina córporis: patet magnum illud pietátis sacramentum: patent víscera misericórdiæ Dei nostri in quibus visitávit nos óriens ex alto. Quidni víscera per vúlnera páteant? In quo enim clárius quàm in vulnéribus tuis eluxisset, quod tu, Dómine, suávis et mitis, et multæ misericórdiæ? Majórem enim miseratiónem nemo habet, quàm ut ánimam suam ponat quis pro addictis morti, et damnátis.

℟. Infer dígitum tuum huc, et vide manus meas, et affer manum tuam, et mitte in latus meum; * Et † Noli esse incrédulus, sed fidélis. ℣. Delévi iniquitátes tuas: revértere ad me, quóniam redémi te; * Et noli. Glória. † Noli. *Joan.* 20. *Is.* 44.

*IN III NOCTURNO.*

*Ant.* 8. c. Quid clamas super contritióne tua, Israel? Obdúcam enim cicatrícem tibi, et à vulnéribus tuis sanábo te, dicit Dóminus. *Jerem.* 30.

*Ant.* 4. A. Dóminus ipse vúlnerat, et medétur; pércutit, et manus ejus sanábunt. *Job.* 5.

*Ant.* 3. b. Sanábit plagam, et revertentur ad Dóminum; et placábitur eis, et sanábit eos. *Is.* 19.

℣. Sanat Dóminus contrítos corde, ℟. Et álligat contritiónes eórum. *Ps.* 146.

LECTIO VII.

Léctio sancti Evangélii secundùm Joannem. *Cap.* 19.

In illo témpore; Sciens Jesus quia ómnia consummáta sunt; ut consummarétur Scriptúra, dixit: Sítio. Et réliqua.

Homília sancti Augustíni Epíscopi.

*In Joan. tract.* 120.

Vigilanti verbo Evangelista usus est, ut non díceret: Latus ejus percussit, aut vulnerávit, aut quid áliud; sed, Apéruit: ut illic quodámmodo vitæ óstium panderétur, unde sacramenta Ecclésiæ manavérunt, sine quibus ad vitam quæ vera vita est, non intrátur. Ille sanguis in remissiónem fusus est peccatórum: aqua illa salutáre témperat póculum; hæc et lavácrum præstat et potum.

℟. Hic est qui venit per aquam et sánguinem. Jesus Christus: * Non in aqua solùm, sed in aqua et sánguine: et Spíritus est qui testificátur quóniam Christus est véritas. ℣. In die illa erit fons patens dómui David, et habitántibus Jerúsalem, in ablutiónem peccatóris. * Non. 1 *Joan.* 5. *Zach.* 13.

LECTIO VIII.

Hoc pro nuntiábat quod Noe in látere arcæ óstium fácere jussus est, quà intrárent animália quæ non erant dilúvio peritúra, quibus præfigurabátur Ecclésia. Propter hoc prima múlier facta est de látere viri dormientis, et appelláta est vita, materque vivórum. Magnum quippe significávit bonum ante magnum prævaricatiónis malum. Hic secundus Adam, inclináto cápite, in cruce dormívit; ut inde formarétur ei conjux, quod de látere dormientis effluxit. O mors unde mórtui reviviscunt! Quid isto sánguine múndius? quid vúlnere isto salúbrius?

℟. Gratificávit nos Deus in dilecto Fílio suo, * In quo habémus redemptiónem per sánguinem ejus, remissiónem peccatórum. ℣. Iste asperget gentes multas, * In. *Ephes.* 1. *Is.* 52.

LECTIO IX.

Léctio sancti Evangélii secundùm Matthæum. *Cap.* 5.

In illo témpore; Dixit Jesus discípulis suis: Audistis quia dictum est: Díliges próximum tuum, et ódio habébis inimícum tuum; ego autem dico vobis: Dilígite inimícos vestros: benefácite his qui odérunt vos. Et réliqua.

Homília sancti Hierónymi Presbyteri. *l.* 1 *in Matth.*

Multi præcepta Dei, imbecillitáte suâ, non Sanctórum víribus, æstimantes, putant esse impossibília quæ præcepta sunt; et dicunt sufficere virtútibus, non odisse inimícos: cæterùm dilígere plus præcipi quàm humána natúra patiátur. Sciendum est ergo Christum non impossibília præcípere, sed perfecta: quæ fecit David in Saül et in Absalom. Stéphanus quoque Martyr pro inimícis lapidántibus deprecátus est, et Paulus anáthema cupit esse pro persecutóribus suis. Hæc autem Jesus et dócuit et fecit, dicens: Pater, ignosce illis.

℟. Commendat Deus caritátem suam in nobis; * Quóniam cùm adhuc peccatóres essémus, secundùm tempus Christus pro nobis mórtuus est. ℣. Non óderis fratrem tuum in corde tuo, non quæras ultiónem, nec memor eris injúriæ; * Quóniam. Glória. *Rom.* 5. *Levit.* 19.

*Repetitur* ℟ Commendat, *usque ad* ℣.

*Non dicitur* Te Deum.

℣ *Sacerdot.* Ipse rédimet Israel ℟. Ex ómnibus iniquitátibus ejus. *Ps.* 129.

AD LAUDES.

*Ant.* 1. *f.* Quis est iste qui venit tinctis véstibus? Iste

formósus in stola sua, grádiens in multitúdine fortitúdinis suæ. *Is.* 63.

*Ant.* 6. F. Vestítus erat veste aspersâ sánguine; et vocátur nomen ejus, Verbum Dei. *Apoc.* 19.

*Ant.* 2. D. Ipse autem vulnerátus est propter iniquitátes nostras; attrítus est propter scélera nostra. *Is.* 53.

CANTICUM. *Is.* 53.

DOMINUS vóluit contérere eum * in infirmitáte.

Si posúerit pro peccáto ánimam suam, vidébit semen longævum, * et voluntas Dómini in manu ejus dirigétur.

Pro eo quod laborávit ánima ejus, * vidébit et saturábitur.

In sciéntia sua justificábit ipse justus servus meus multos, * et iniquitátes eórum ipse portábit.

Ideo dispértiam ei plúrimos: * et fórtium dívidet spólia;

Pro eo quod trádidit in mortem ánimam suam; * et cum scelerátis reputátus est:

Et ipse peccáta multórum tulit, * et pro transgressóribus rogávit.

*Ant.* 3. b. Verè languóres nostros ipse tulit, et dolóres nostros ipse portávit. *Is.* 53.

*Ant.* 4. a. Disciplína pacis nostræ super eum; et livóre ejus sanáti sumus. *Is.* 53.

CAPITULUM. 1 *Petr.* 1.

NON corruptibílibus auro vel argento redempti estis; sed pretióso sánguine quasi Agni immaculáti Christi, et incontamináti.

HYMNUS. *S. M.*

QUÆ te pro populi crimínibus nova
Insontem properat pérdere cáritas?
Quid non pro misera gente luis volens,
Factus víctima Póntifex!

Clavi qui geminum transadigunt pedem,
Captívos laqueo dæmonis éruunt;
Transfixæque manus excutiunt vetus,
Quo mundus premitur, jugum.

OBSTETRIX penitus láncea pérforat,
Quo nos parturiat, pectus amábile:
Hoc quæ fonte fluit, nos aqua, nos cruor
Sanat, líberat, ábluit.

O vitæ látices, vívida flúmina!
O sacros áditus péctoris íntimi!
O petræ solidæ tuta forámina!
O cordis penetrália!

TE si nostra, Pater, crímina próvocant,
Nati sacra lubens vúlnera réspice,
Cùm noster láceras objiciet tuis
Judex fulmínibus manus.

Fac per sæva, Pater, vúlnera, per cruces,
Sic æterna tuos quærere gáudia;
Ut cum Prole tibi júgiter ac tuo

Reddant Spiritui decus.
Amen.

℣. Protector noster, áspice, Deus; ℟. Et réspice in fáciem Christi tui. *Ps.* 83.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 7. G. Dixit Jesus discípulis suis: Pax vobis. Et cùm hoc dixisset, ostendit eis manus et latus. *Joan.* 20.

Orémus. Oratio.

Concede, quæsumus miséricors Deus, ut sacræ Unigéniti tui plagæ sint nobis medéla vúlnerum, et fontes salútis ætérnæ; Per eumdem.

*Pro Commemor. Feriæ:*

*Ant.* Dilígite inimícos vestros, benefácite his qui odérunt vos, et oráte pro persequéntibus et calumniántibus vos. *Matth.* 5.

℣. Si iniquitátes observáveris, Dómine; ℟. Dómine, quis sustinébit. *Ps.* 129.

Orémus. Oratio.

Inchoata jejúnia, quæsumus, Dómine, benigno favóre proséquere; ut observántiam, quam corporáliter exhibémus, méntibus étiam sincéris exercére valeámus; Per Dóminum.

Ad Horas, *Doxologia:*

Qui Fílium tradit, Patri,
Natóque sit laus víctimæ;
Par sit tibi laus, qui sacram
Succendis aram, Spíritus.
Amen.

AD PRIMAM.

*Ant.* 1. *f.* Quis est iste.

*In* ℟ *br.* ℣. Qui passus es * pro nobis.

AD TERTIAM.

*Ant.* 6. F. Vestítus erat.

Capitulum. *Isai.* 63.

Circumspexi, et non erat auxiliátor: quæsívi, et non fuit qui adjuváret; et salvávit mihi bráchium meum, et indignátio mea ipsa auxiliáta est mihi.

℟ *br.* Deus confringet cápita * Inimicórum suórum. Deus. ℣. Ut intingátur pes tuus * in sánguine * Inimicórum suórum. Glória. Deus. *Ps.* 67.

℣. Salvávit sibi déxtera ejus. ℟. Et bráchium sanctum ejus. *Ps.* 97.

AD SEXTAM.

*Ant.* 2. D. Ipse.

Capitulum. *Ephes.* 1.

In Christo habémus redemptiónem per sánguinem ejus, remissiónem peccatórum, secúndùm divítias grátiæ ejus, quæ superabundávit in nobis.

℟ *brev.* Protector noster, * Aspice, Deus. Protector. ℣. Et réspice * in fáciem Christi tui. * Aspice. Glória. Protector. *Ps.* 83.

℣. Egressus es in salútem pópuli tui; ℟. In salútem cum Christo tuo. *Hab.* 3.

AD NONAM.

*Ant.* 4. a. Disciplína.

Capitulum. 1 *Petr.* 2.

Peccata nostra ipse pértulit in córpore suo super lignum; ut peccátis mórtui, justítiæ vivámus: cujus livóre sanáti estis.

℟ *br.* Sacrifícium noluísti: * Corpus autem aptasti mihi. Sacrifícium. ℣. Holocaustum et pro peccáto * non postu-

lasti; * Corpus. Glória. Sacrifícium. *Hebr.* 10. *Ps.* 39.

℣. Deus excelsus est miséricors, ℟. Et propítius fiet peccátis eórum. *Ps.* 77.

AD II VESPERAS.

*Ant.* 2. D. Deus, quæ prænuntiávit per os ómnium Prophetárum, pati Christum suum, sic implévit. *Act.* 3.

*Ant.* 1. g. Certíssimè sciat omnis domus Israel, quia et Dóminum eum et Christum fecit Deus hunc Jesum quem vos crucifixistis. *Act.* 2.

*Ant.* 8. G. Hunc príncipem et salvatórem Deus exaltávit ad dandam pœniténtiam Israéli, et remissiónem peccatórum. *Act.* 5.

*Ant.* 4. *D.* Erípuit nos de potestáte tenebrárum, et tránstulit in regnum Fílii dilectiónis suæ; in quo habémus redemptiónem per sánguinem ejus. *Coloss.* 1.

*Ant.* 6. F. Si sanguis hircórum inquinátos sanctíficat ad emundatiónem carnis; quantò magis sanguis Christi emundábit consciéntiam nostram? *Hebr.* 9.

Capitulum. *Ephes.* 5.

Christus dilexit nos, et trádidit semetipsum pro nobis oblatiónem et hóstiam Deo in odórem suavitátis.

*Hymn.* Prome vocem, 141.

℣. Orátio mea sicut incensum in conspectu tuo: ℟. Elevátio mánuum meárum sacrifícium vespertínum. *Ps.* 140.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 5. C. Grátia et pax à Jesu Christo qui dilexit nos, et lavit nos à peccátis nostris in sánguine suo: Ecce venit cum núbibus; et vidébit eum omnis óculus, et qui eum pupugérunt. *Apoc.* 1.

*Oratio ut suprà ad Laudes.*

*Pro Commemorat. Feriæ:*

*Ant.* Estóte perfecti, sicut et Pater vester cœlestis perfectus est. *Matth.* 5.

℣. Tempus benepláciti, Deus: ℟. In multitúdine misericórdiæ tuæ exaudi me. *Ps.* 68.

Orémus. Oratio.

Deus, qui nos, cùm inimíci essémus, per mortem Unigéniti tui tecum reconciliári voluisti: tríbue, quæsumus, ut tantæ misericórdiæ mémores, et ipsi propter te inimícos nostros in veritáte diligámus; Per eumdem.

## SABBATO
### POST CINERES.

Lectio i.

De libro Génesis. *C.* 46.

Profectus Israel cum ómnibus quæ habébat, venit ad púteum Juramenti; et mactátis ibi víctimis Deo patris sui Isaac, audívit eum per visiónem noctis vocantem se, et dicentem sibi: Jacob, Jacob. Cui respondit: Ecce adsum. Ait illi Deus: Ego sum fortíssimus Deus patris tui; noli timére: descende in Ægyptum, quia in gentem magnam fáciam te ibi. Ego descendam tecum illuc, et ego inde addúcam te revertentem:

Joseph quoque ponet manus suas super óculos tuos. Surrexit autem Jacob à púteo Juramenti; tuleruntque eum filii cum párvulis et uxóribus suis in plaustris quæ míserat Phárao ad portandum senem, et ómnia quæ posséderat in terra Chánaan: venitque in Ægyptum cum omni sémine suo, fílii ejus, et nepótes, fíliæ, et cuncta simul progénies.

Lectio ii. *Cap.* 47.

Ingressus ergo Joseph nuntiávit Pharaóni, dicens: Pater meus et fratres, oves eórum et armenta, et cuncta quæ póssident, venérunt de terra Chánaan; et ecce consistunt in terra Gessen. Extrémos quoque fratrum suórum quinque viros constítuit coram rege: quos ille interrogávit: Quid habétis óperis? Respondérunt: Pastóres óvium sumus servi tui, et nos, et patres nostri. Ad peregrinandum in terra tua vénimus; quóniam non est herba grégibus servórum tuórum, ingravescente fame in terra Chánaan: petimusque ut esse nos júbeas servos tuos in terra Gessen. * Dixit ítaque rex ad Joseph: Pater tuus et fratres tui venérunt ad te; terra Ægypti in conspectu tuo est: in óptimo loco fac eos habitáre, et trade eis terram Gessen. Quod si nosti in eis esse viros indústrios, constítue illos magistros pécorum meórum. Post hæc introduxit Joseph patrem suum ad regem, et státuit eum coram eo; qui benedícens illi, et interrogátus ab eo: Quot sunt dies annórum vitæ tuæ? respondit: Dies peregrinatiónis meæ centum triginta annórum sunt, parvi et mali; et non pervenérunt usque ad dies patrum meórum, quibus peregrináti sunt. Et benedicto rege, egressus est foràs.

Lectio iii.

Léctio sancti Evangélii secundùm Marcum.

*Cap.* 6.

In illo témpore; Cùm serò esset, erat navis in médio mari, et Jesus solus in terra. Et réliqua.

Homília venerábilis Bedæ Presbyteri.

*In Marc. l.* 2. *c.* 28.

Labor discipulórum in remigando, et contrárius eis ventus, labóres sanctæ Ecclésiæ vários designat; quæ inter undas séculi adversantis, et immundórum flatus spirítuum, ad quiétem pátriæ cœlestis, quasi ad fidam líttoris statiónem pervenire conátur. Ubi bene dícitur quia navis erat in médio mari, et ipse solus in terra; quia nonnunquam Ecclésia tantis Gentílium pressúris non solùm afflicta, sed et fœdáta est; ut, si fieri posset, Redemptor ipsíus eam prorsus deseruisse ad tempus viderétur.

℞. Videns Jesus discípulos laborantes in remigando, * Venit ad eos, ámbulans supra mare; et † Ascendit

ad illos in navim, et cessávit ventus. ℣. Gráditur super fluctus maris, facit magna, et incomprehensibília, et mirabília. * Venit. Glória. † Ascendit. *Marc.* 6. *Job* 9.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 8. G. In platéis ponébant infírmos, ut vel fímbriam vestimenti Jesu tángerent: et quotquot tangébant eum, salvi fiébant. *Marc.* 6.

Orémus. Oratio.

Adesto, Dómine, supplicatiónibus nostris; et concéde, ut hoc solemne jejúnium, quod animábus corporibusque curandis salúbriter institútum est, devóto servítio celebrémus; Per Dóminum.

AD VESPERAS.

*Psalmi de Sabbato.*

*Ant.* 2. D. Pœniténtiam ágite: appropinquávit enim regnum cœlórum. *Matth.* 3.

*Ant.* 4. A. Si pœniténtiam non egéritis, omnes simíliter períbitis. *Luc.* 13.

*Ant.* 6. F. Si revertámini et quiescátis, salvi éritis. *Is.* 30.

*Ant.* 7. d. Auferte deos aliénos de médio vestrî: et præparáte corda vestra Dómino. 1 *Reg.* 7.

*Ant.* 5. a. Exáudiet Dóminus preces vestras, si permanséritis in jejúniis, et oratiónibus. *Judith* 4.

Capitulum. *Levit.* 16.

In hac die expiátio erit vestrî, atque mundátio ab ómnibus peccátis vestris: coram Dómino mundabímini; sábbatum enim requietiónis est: et affligétis ánimas vestras religióne perpétuâ.

℟. Numquid voluntátis meæ est mors ímpii, et non ut convertátur à viis suis, et vivat? * Quare moriémini, domus Israel? Nolo mortem morientis; revertímini, et vívite. ℣. Implétum est tempus, et appropinquávit regnum Dei: pœnitémini, et crédite. * Quare. Glória. * Quare. *Ezech.* 18. *Marc.* 1.

*Hymnus,* Audi, benigne; ℣. Tempus, 135.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 4. E. Quia pátiens Dóminus est, in hoc ipso pœniteámus; et indulgéntiam ejus fusis lácrymis postulémus. *Judith* 8.

*Oratio ut infrà ad Laudes.*

¶ *In Sabbato, à Vesperis non dicuntur Preces.*]

Completorium, *ut suprà* 124.

## DOMINICA PRIMA QUADRAGESIMÆ.

*Duplex-minus.*

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invit.* Veníte, * Revertámur ad Dóminum, et sanábit nos. *Os.* 6. *Repetitur* Veníte, revertámur.

*Hymnus* Quod lex, 127.

*Psalmi et Antiphonæ ut in Psalterio.*

IN I NOCTURNO.

Lectio i.

De Epístola secunda beáti Pauli Apóstoli ad Corínthios. *Cap.* 6.

Adjuvantes exhortámur, ne in vácuum grátiam Dei reci-

piátis. Ait enim : Tempore accepto exaudívi te, et in die salútis adjúvi te. Ecce nunc tempus acceptábile, ecce nunc dies salútis. Némini dantes ullam offensiónem, ut non vituperétur ministérium nostrum; sed in ómnibus exhibeámus nosmetipsos sicut Dei ministros, in multa patiéntia, in tribulatiónibus, in necessitátibus, in angústiis, in plagis, in carcéribus, in seditiónibus, in labóribus, in vigíliis, in jejúniis, in castitáte, in sciéntia, in longanimitáte, in suavitáte, in Spíritu sancto, in caritáte non ficta, in verbo veritátis, in virtúte Dei; per arma justítiæ à dextris et à sinistris, per glóriam et ignobilitátem, per infámiam et bonam famam ; ut seductóres, et veráces : sicut qui ignóti, et cógniti : quasi morientes, et ecce vívimus : ut castigáti, et non mortificáti : quasi tristes, semper autem gaudentes : quasi egentes, multos autem locupletantes : tanquam nihil habentes, et ómnia possidentes.

℟. Ecce nunc tempus acceptábile, ecce nunc dies salútis : * In ómnibus exhibeámus nosmetipsos sicut Dei ministros, in labóribus, in vigíliis, in jejúniis, in caritáte non ficta. ℣. Dies propitiatiónis est, ut propitiétur vobis Dóminus. * In ómnibus. 2 *Cor.* 6. *Levit.* 23.

Lectio II. *Cap.* 6 *et* 7.

Nolite jugum dúcere cum infidélibus. Quæ enim participátio justítiæ cum iniquitáte? aut quæ societas luci ad ténebras? Quæ autem convéntio Christi ad Bélial? aut quæ pars fidéli cum infidéli? Qui autem consensus templo Dei cum idólis? Vos enim estis templum Dei vivi, sicut dicit Deus : Quóniam inhabitábo in illis, et ero illórum Deus, et ipsi erunt mihi pópulus. Propter quod exíte de médio eórum, et separámini, dicit Dóminus, et immundum ne tetigéritis; et ego recípiam vos : et ero vobis in patrem, et vos éritis mihi in fílios et fílias, dicit Dóminus omnípotens. Has ergo habentes promissiónes, caríssimi, mundémus nos ab omni inquinaménto carnis et spíritûs, perficientes sanctificatiónem in timóre Dei.

℟. Deus lux est, et ténebræ in eo non sunt ullæ. * Si dixérimus quóniam societátem habémus cum eo, et in ténebris ambulámus; mentímur, et veritátem non fácimus. ℣. Elongátum est judícium à nobis, et non apprehendet nos justítia : expectávimus lucem, et in ténebris ambulávimus. * Si dixérimus. 1 *Joan.* 1. *Is.* 59.

Lectio III.

Qui consolátur húmiles, consolátus est nos Deus in adventu Titi. Non solùm autem in adventu ejus, sed étiam in consolatióne, quà consolátus est in vobis, réferens nobis vestrum desidérium, vestrum fletum,

vestram æmulatiónem pro me, ita ut magis gaudérem. Quóniam etsi contristávi vos in epístola, non me pœnitet: etsi pœnitéret, videns quod epístola illa (etsi ad horam) vos contristávit, nunc gáudeo, non quia contristáti estis, sed quia contristáti estis ad pœniténtiam. Contristáti enim estis secundùm Deum, ut in nullo detrimentum patiámini ex nobis. Quæ enim secundùm Deum tristítia est, pœniténtiam in salútem stábilem operátur; séculi autem tristítia mortem operátur.

℟. Defécit gáudium cordis nostri; versus est in luctum chorus noster: cécidit coróna cápitis nostri. * Væ nobis, quia peccávimus. ℣. Emundáte manus, peccatóres: míseri estóte, et lugéte, risus vester in luctum convertátur. * Væ. Glória. * Væ. *Thren.* 5. *Jac.* 4.

## *IN II NOCTURNO.*

### Lectio iv.

Sermo sancti Leónis Papæ. 41. *de Quadrages.* 4.

Prædicaturus vobis, dilectíssimi, sacratíssimum maximumque jejúnium, quo áptiùs utar exórdio, quàm ut verbis Apóstoli, in quo Christus loquebátur, incípiam? dicamque quod lectum est: Ecce nunc tempus acceptábile, ecce nunc dies salútis. Quamvis enim nulla sint témpora quæ divínis non sint plena munéribus, et semper nobis ad misericórdiam Dei per ipsíus grátiam præstétur accessus, nunc tamen ómnium mentes majóri stúdio ad spirituáles profectus movéri, et amplióri fidúciâ oportet animári, quando ad universa pietátis offícia, illíus nos diéi in quo redempti sumus, recursus invítat; ut excellens super ómnia passiónis Domínicæ sacramentum, purificátis et corpóribus et ánimis, celebrémus.

℟. Ministri Dei mei, sanctificáte jejúnium, vocáte cœtum: * Congregáte omnes habitatóres terræ in domum Dei vestri, et clamáte ad Dóminum. ℣. Omnes ubíque pœniténtiam agant, eo quod Deus státuit diem in quo judicatúrus est orbem in æquitáte. * Congregáte. *Joel* 1. *Act.* 17.

### Lectio v.

Debebatur quidem tantis mystériis ita incessábilis devótio et continuáta reveréntia, ut tales permanerémus in conspectu Dei, quales nos in ipso paschâli festo dignum est inveníri. Sed quia hæc fortitúdo paucórum est, et dum carnis fragilitáte austérior observántia relaxátur, dumque per várias actiónes vitæ hujus sollicitúdo disténditur, necesse est de mundáno púlvere étiam religiósa corda sordéscere; magnâ divínæ institutiónis salubritáte provísum est, ut ad reparandam méntium puritátem, quadraginta nobis diérum exercitátio mederétur, in quibus

...

aliórum témporum culpas, et pia ópera redímerent, et jejúnia casta decóquerent.

℟. Nolíte jejunáre sicut usque ad hanc diem, ut audiátur in excelso clamor vester. * Nonne hoc est magìs jejúnium quod elégi? Dissolve colligatiónes impietátis, et omne onus dirumpe. ℣. Ne videáris homínibus jejúnans, sed Patri tuo qui est in abscóndito; et Pater tuus, qui videt in abscóndito, reddet tibi.* Nonne. *Is.* 58. *Matth.* 6.

Lectio vi.

Ingressuri ígitur, dilectíssimi, dies mysticos, et jejuniórum remédiis consecrátos, præceptis apostólicis obedíre curémus, emundantes nos ab omni inquinamento carnis ac spíritûs; ut castigátis colluctatiónibus quæ sunt inter utramque substántiam, ánimus, quem sub Dei gubernáculis constitútum córporis sui decet esse rectórem, dominatiónis suæ obtíneat dignitátem; ut némini dantes ullam offensiónem, vituperatiónibus obloquéntium non simus obnóxii. Dignâ enim ab infidélibus reprehensióne carpémur, et nostro vítio linguæ ímpiæ in injúriam se religiónis armábunt, si jejunántium mores à puritáte perfectæ continéntiæ discrepárint. Non enim in sola abstinéntia cibi stat nostri summa jejúnii; aut fructuósè córpori esca subtráhitur, nisi mens ab iniquitáte revocétur.

℟. Bona est orátio cum jejúnio; et eleemósyna, magìs quàm thesauros auri recóndere; * Quóniam eleemósyna à morte líberat. † Ipsa est quæ purgat peccáta, et fácit inveníre misericórdiam et vitam æternam. ℣. Date eleemósynam, et ecce ómnia munda sunt vobis. * Quóniam. Glória. † Ipsa. *Tob.* 12. *Luc.* 11.

*IN III NOCTURNO.*

Lectio vii.

Léctio sancti Evangélii secùndùm Matthæum. *Cap.* 4.

In illo témpore; Jesus ductus est in desertum à Spíritu, ut tentarétur à diábolo, et cùm jejunasset quadraginta diébus et quadraginta nóctibus, póstea esúriit. Et réliqua.

Homília sancti Gregórii Papæ. 16 *in Evang.*

Dubitari à quibusdam solet, à quo spíritu sit Jesus ductus in desertum, propter hoc quod súbditur: Assumpsit eum diábolus in sanctam civitátem; et rursum: Assumpsit eum in montem excelsum valde. Sed verè et absque ulla quæstióne convenienter accípitur, ut à sancto Spíritu in desertum ductus credátur, ut illuc eum suus Spíritus dúceret, ubi hunc ad tentandum malignus spíritus inveníret. Sed ecce, cùm dícitur Deus homo, vel in excelsum montem, vel in sanctam civitátem à diábolo assumptus, mens réfugit, humánæ hoc audíre aures ex-

pavescunt. Qui tamen non esse incredibília ista cognóscimus, si in illo et ália facta pensámus.

℟. Jesus plenus Spíritu sancto regressus est à Jordáne, et agebátur à Spíritu in desertum diébus quadraginta.* Et tentabátur à diábolo. ℣. Ostendit mihi Dóminus Jesum, et satan stabat à dextris ejus ut adversarétur ei; * Et. *Luc.* 4. *Zach.* 3.

Lectio viii.

Certè iniquórum ómnium caput diábolus est; et hujus cápitis membra sunt omnes iníqui. An non diáboli membrum fuit Pilátus? an non diáboli membra Judæi persequentes, et mílites crucifigentes Christum fuérunt? Quid ergo mirum, si se ab illo permísit in montem duci, qui se pértulit étiam à membris illíus crucifigi? Non est ergo indignum Redemptóri nostro, quod tentári vóluit, qui vénerat occídi. Justum quippe erat, ut sic tentatiónes nostras suis tentatiónibus vínceret, sicut mortem nostram vénerat suâ morte superáre.

℟. Erat Jesus in deserto quadraginta diébus et quadraginta nóctibus, et tentabátur à sátana, eratque cum béstiis; * Et nihil manducávit Jesus in diébus illis. ℣. Fuit Móyses in monte, quadraginta dies et quadraginta noctes : panem non comédit, et aquam non bibit; * Et. *Marc.* 1. *Luc.* 4. *Exod.* 34.

Lectio ix.

Sed sciendum nobis est quia tentátio tribus modis ágitur, suggestióne, delectatióne, et consensu. Et nos cùm tentámur, plerumque in delectatiónem, aut étiam in consensum lábimur; quia de carnis peccáto propagáti, in nobis ipsis étiam gérimus unde certámina tolerémus. Deus verò, qui in útero Vírginis incarnátus in mundum sine peccáto vénerat, nihil contradictiónis in semetipso tolerábat. Tentári ergo per suggestiónem pótuit; sed ejus mentem peccáti delectátio non momordit. Atque ídeo omnis diabólica illa tentátio foris, non intus, fuit.

℟. Débuit Jesus per ómnia frátribus similári, * Ut miséricors fíeret, et fidélis Póntifex; in eo enim in quo est ipse tentátus, potens est et eis qui tentantur, auxiliári. ℣. Perféctio tua et doctrína tua sancto tuo, Dómine, quem probasti in tentatióne; *Ut. Glória. *Hebr.* 2. *Deut.* 35.

*Repetitur* ℟. Débuit, *usque ad* ℣.

*Non dicitur* Te Deum *in Dominicis usque ad Pascha.*

℣ *Sacerd.* Susceptor meus es tu, et refúgium meum : ℟. Deus meus, sperábo in eum. *Ps.* 90.

AD LAUDES.

*Ant.* 1. a. Fili, accédens ad servitútem Dei, sta in justítia et timóre, et præpara ánimam tuam ad tentatiónem. *Eccli.* 2.

*Ant.* 2. D. Nemo cùm tentátur, dicat quóniam à Deo tentátur: Deus enim intentátor malórum est; ipse autem néminem tentat. *Jac.* 1.

*Ant.* 3. a. Unusquisque tentátur, à concupiscéntia sua abstractus et illectus. *Jac.* 1.

*Ant.* 4. E. Mortificáte concupiscéntiam malam, expoliantes vos véterem hóminem cum áctibus suis, et induentes novum. *Coloss.* 3.

*Ant.* 5. a. Fidélis Deus est, qui non patiétur vos tentári supra id quod potestis; sed fáciet étiam cum tentatióne proventum. 1 *Cor.* 10.

CAPITULUM. *Jac.* 4.

DEUS superbis resistit, humílibus autem dat grátiam. Súbditi ergo estóte Deo: resístite autem diábolo, et fúgiet à vobis.

*Hymnus*, Solemne, 129.

℣. Cùm mihi molesti essent, induébar cilício: ℟. Humiliábam in jejúnio ánimam meam. *Ps.* 34.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 3. a. Cùm jejunasset Jesus quadraginta diébus et quadraginta nóctibus, póstea esúriit. *Matthæi* 4.

Oremus. ORATIO.

DEUS, qui Ecclésiam tuam ánnuâ Quadragesimáli observatióne puríficas: præsta famíliæ tuæ, ut quod à te obtinére abstinendo nítitur, hoc bonis opéribus exequátur; Per Dóminum.

AD PRIMAM.

*Ant.* 4. E. Accédens tentátor dixit ei: Si Fílius Dei es, dic ut lápides isti panes fiant. *Matth.* 4.

AD TERTIAM.

*Ant.* 5. a. Respondit Jesus: Scriptum est: Non in solo pane vivit homo, sed in omni verbo quod procédit de ore Dei. *Matth.* 4.

CAPITULUM. *Deut.* 8.

DOMINUS Deus tuus afflixit te penúriâ, et dedit tibi cibum manna, quod ignorábas tu, et patres tui; ut osténderet tibi, quod non in solo pane vivat homo, sed in omni verbo quod egréditur de ore Dei.

℟ *br.* Quàm dúlcia fáucibus meis * Elóquia tua, Dómine! Quàm. ℣. Super mel* ori meo, * Elóquia. Glória. Quàm. *Ps.* 118.

℣. Judícia Dómini desiderabília super aurum, ℟. Et dulcióra super mel et favum. *Ps.* 18.

AD SEXTAM.

*Ant.* 1. a. Rursum scriptum est: Non tentábis Dóminum Deum tuum. *Matth.* 4.

CAPITULUM. *Sap.* 1.

SENTITE de Dómino in bonitáte, et in simplicitáte cordis quærite illum; quóniam invenítur ab his qui non tentant illum: appáret autem eis qui fidem habent in illum.

℟ *br.* Si vocem ejus audiéritis, * Nolíte obduráre corda vestra. Si vocem. ℣. Sicut in exacerbatióne secundùm diem tentatiónis in deserto, * Nolíte. Glória. Si. *Ps.* 94.

℣. Tentavérunt et exacerbavérunt Deum excelsum : ℟. Et testimónia ejus non custodiérunt. *Ps.* 77.

AD NONAM.

*Ant.* 6. F. Dóminum Deum tuum adorábis, et illi soli sérvies. *Matth.* 4.

CAPITULUM. *Deut.* 6.

Cave diligenter, ne obliviscáris Dómini qui eduxit te de terra Ægypti, de domo servitútis. Dóminum Deum tuum timébis, et illi soli sérvies, ac per nomen illíus jurábis.

℟ *br.* Omnis terra adóret te, * Et psallat tibi. Omnis. ℣. Psalmum dicat * nómini tuo, * Et psallat. Glória Patri. Omnis terra adóret te. *Ps.* 65.

℣. Servíte Dómino in timóre, ℟. Et exultáte ei cum tremóre. *Ps.* 2.

AD VESPERAS.

*Ant.* 3. a. Cùm jejunasset Jesus quadraginta diébus et quadraginta nóctibus, póstea esúriit. *Matth.* 4.

*Ant.* 4. E. Accédens tentátor, dixit ei : Si Fílius Dei es, dic ut lápides isti panes fiant. *Matth.* 4.

*Ant.* 5. a. Respondit Jesus : Scriptum est : Non in solo pane vivit homo, sed in omni verbo quod procédit de ore Dei. *Matth.* 4.

*Ant.* 1. a. Rursum scriptum est : Non tentábis Dóminum Deum tuum. *Matth.* 4.

*Ant.* 6. F. Dóminum Deum tuum adorábis, et illi soli sérvies. *Matth.* 4.

CAPITULUM. *Hebr.* 4.

Non habémus Pontíficem qui non possit cómpati infirmitátibus nostris; tentátum autem per ómnia pro similitúdine absque peccáto. Adeámus ergo cum fidúcia ad thronum grátiæ, ut misericórdiam consequámur, et grátiam inveniámus in auxílio opportúno.

*Hym.* Audi, benigne, 135.

℣. Impulsus eversus sum ut cáderem ; ℟. Et Dóminus suscépit me. *Ps.* 117.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 1. *f.* Consummátâ omni tentatióne, diábolus recessit ab illo usque ad tempus; et ecce Angeli accessérunt, et ministrábant ei. *Luc.* 4. *Matth.* 4.

---

## FERIA SECUNDA.

LECTIO I.

Incipit liber Exodi.

*Cap.* 1.

Hæc sunt nómina filiórum Israel qui ingressi sunt in Ægyptum cum Jacob. Singuli cum dómibus suis introiérunt; Ruben, Símeon, Levi, Judas, Issachar, Zabúlon, et Bénjamin; Dan et Néphthali, Gad et Aser. Erant ígitur omnes ánimæ eórum qui egressi sunt de fémore Jacob, septuaginta : Joseph autem in Ægypto erat. Quo mórtuo, et universis frátribus ejus, omníque cognatióne illâ, filii Israel crevérunt, et quasi germinantes multiplicáti sunt; ac roboráti nimis, implevérunt terram. Surrexit intérea

rex novus super Ægyptum, qui ignorábat Joseph; et ait ad pópulum suum: Ecce, pópulus filiórum Israel multus, et fórtior nobis est. Veníte; sapienter opprimámus eum, ne fortè multiplicétur; et si ingrúerit contra nos bellum, addátur inimícis nostris, expugnatisque nobis egrediátur de terra.

Lectio II. *Cap.* 1 *et* 2.

Præcepit ergo Phárao omni pópulo suo, dicens: Quidquid masculíni sexûs natum fúerit, in flumen projícite: quidquid feminíni, reserváte. Egressus est post hæc vir de domo Levi, et accépit uxórem stirpis suæ: quæ concépit, et péperit fílium; et videns eum elegantem, abscondit tribus ménsibus. Cùmque jam celáre non posset, sumpsit fiscellam scirpeam, et linívit eam bitúmine ac pice; posuitque intus infántulum, et expósuit eum in carecto ripæ flúminis, stante procul soróre ejus, et considerante eventum rei. * Ecce autem descendébat fília Pharaónis, ut lavarétur in flúmine, et puellæ ejus gradiebantur per crepídinem álvei. Quæ cùm vidisset fiscellam in papyrióne, misit unam è famulábus suis; et allátam apériens, cernensque in ea párvulum vagientem, miserta ejus, ait: De infántibus Hebræórum est hic. Cui soror púeri: Vis, inquit, ut vadam, et vocem tibi mulíerem Hebræam, quæ nutríre possit infántulum? Respondit: Vade. Perrexit puella, et vocávit matrem suam. Ad quam locúta fília Pharaónis: Accipe, ait, púerum istum, et nutri mihi; ego dabo tibi mercédem tuam. Suscépit múlier, et nutrívit púerum; adultumque trádidit fíliæ Pharaónis. Quem illa adoptávit in locum fílii, vocavitque nomen ejus, Móyses, dicens: Quia de aqua tuli eum.

Lectio III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Matthæum.

*Cap.* 25.

In illo témpore: Dixit Jesus discípulis suis: Cùm vénerit Fílius hóminis in majestáte sua, et omnes Angeli cum eo; tunc sedébit super sedem majestátis suæ: et congregabuntur ante eum omnes gentes. Et réliqua.

Homília sancti Augustíni Epíscopi.

*De fide et oper. n.* 26.

Si, mandátis non servátis, ad vitam veníri potest per solam fidem, quæ sine opéribus mórtua est; illud quómodo verum erit, quod eis quos ad sinistram positúrus est, dicet: Ite in ignem æternum, qui parátus est diábolo et ángelis ejus? quos non íncrepat quia in eum non credidérunt, sed quia bona ópera non fecérunt. Nam profectò ne sibi quisquam de fide, quæ sine opéribus mórtua est, vitam promittat æternam; proptérea omnes gentes segregatúrum se dixit, quæ permistæ eisdem páscuis ute-

bantur, ut appáreat eos illi dictúros: Dómine, quando te vídimus illa et illa patientem, et non ministrávimus tibi? qui in eum crediderant, sed bona operári non curáverant, tanquam de ipsa fide mórtua ad vitam perveniré-tur æternam. Neque illud dici hic póterit ignem æternum dictum, non ipsam pœnam æternam; cùm et hoc prævidens Dóminus senténtiam suam ita conclúserit, dicens: Sic ibunt illi in combustiónem æternam, justi autem in vitam æternam. Erit ergo æterna combústio, sicut ignis; et eos in illam itúros Véritas dixit, quorum non fidem, sed bona ópera defuisse declarávit.

℟. Congregabuntur ante Fílium hóminis omnes gentes; et separábit eos, sicut pastor ségregat oves ab hædis: * Et † Státuet oves à dextris suis. ℣. Omnis misericórdia fáciet locum unicuíque secundùm méritum óperum suórum: * Et. Glória Patri. † Státuet. *Matth.* 25. *Eccli.* 16.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 8. G. Dicet Rex his qui à dextris ejus erunt: Veníte, benedicti Patris mei, possidéte parátum vobis regnum à constitutióne mundi. *Matth.* 25.

Orémus. Oratio.

Nostra tibi, Dómine quæsumus, sint accepta jejúnia, quæ nos expiando grátiâ tuâ dignos effíciant, et ad regna perdúcant æterna; Per Dóminum.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 7. c. Dicet Rex his qui à sinistris erunt: Discédite à me, maledicti, in ignem æternum. Et ibunt hi in supplícium æternum; justi autem in vitam æternam. *Matth.* 25.

Orémus. Oratio.

Omnium nostrûm, Dómine quæsumus, ad te corda converte; ut ab his quibus offénderis abstinentes, non iram tuam, sed misericórdiam sentiámus; Per Dóminum.

## FERIA TERTIA.

### Lectio I.

De libro Exodi. *Cap.* 3.

Moyses pascébat oves Jethro sóceri sui sacerdótis Mádian: cùmque minasset gregem ad interióra deserti, venit ad montem Dei Horeb. Apparuitque ei Dóminus in flamma ignis de médio rubi; et vidébat quod rubus ardéret, et non comburerétur. Dixit ergo Móyses: Vadam, et vidébo visiónem hanc magnam, quare non comburátur rubus. * Cernens autem Dóminus quod pérgeret ad videndum, vocávit eum de médio rubi, et ait: Móyses, Móyses. Qui respondit: Adsum. At ille: Ne appróपies, inquit, huc: solve calceamentum de pédibus tuis; locus enim in quo stas terra sancta est. Et ait: Ego sum Deus patris tui, Deus Abraham, Deus Isaac, et Deus Jacob. Abscondit Móyses fáciem suam; non enim audébat aspícere contra Deum. Cui ait

Dóminus : Vidi afflictiónem pópuli mei in Ægypto, et clamórem ejus audívi propter durítiam eórum qui præsunt opéribus : et sciens dolórem ejus, descendi, ut líberem eum de mánibus Ægyptiórum, et edúcam de terra illa in terram bonam et spatiósam, in terram quæ fluit lacte et melle.

LECTIO II.

Veni, et mittam te ad Pharaónem, ut edúcas pópulum meum, fílios Israel de Ægypto. Dixitque Móyses ad Deum : Quis sum ego, ut vadam ad Pharaónem, et edúcam fílios Israel de Ægypto? Qui dixit ei : Ego ero tecum; et hoc habébis signum, quod míserim te : Cùm edúxeris pópulum meum de Ægypto, immolábis Deo super montem istum. Ait Móyses ad Deum : Ecce ego vadam ad fílios Israel, et dicam eis : Deus patrum vestrórum misit me ad vos. Si díxerint mihi : Quod est nomen ejus? quid dicam eis? Dixit Deus ad Móysen : Ego sum qui sum. Ait : Sic dices fíliis Israel : Qui est, misit me ad vos.

LECTIO III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Matthæum.

*Cap.* 21.

In illo témpore; Cùm intrasset Jesus Jerosólymam, commóta est universa cívitas, dicens : Quis est hic? Pópuli autem dicébant : Hic est Jesus Prophéta à Názareth Galilææ. Et intrávit Jesus in templum Dei, et ejiciébat omnes vendentes. Et réliqua.

Homília venerábilis Bedæ Presbyteri. 7 *in Quadr.*

Ejecit Christus commércia rerum humanárum de domo illa, in qua divínas tantùm res agi, hóstias et oratiónes Deo offerri, verbum Dei legi, audíri et decantári præceptum erat. Si ergo Dóminus nec ea volébat venúmdari in templo, quæ in templo volébat offerri, vidélicet propter stúdium avarítiæ sive fraudis, quod próprium solet esse negotiántium fácinus; quantà putas animadversióne puníret, si invenisset ibi áliquos rísui vel vanilóquio vacantes, aut álii cuílibet vítio mancipátos? Si enim illa, quæ álibi líberè agi póterant, Dóminus in domo suâ temporália negótia geri non pátitur; quantò magìs ea quæ nusquam fieri licet, plus cœlestis iræ merentúr, si in ædibus Deo sacrátis agantur?

℟. Cùm introisset Jesus in templum, docébat, dicens : * Nonne scriptum est, quia †Domus mea, domus oratiónis vocábitur ómnibus géntibus? Vos autem fecistis eam speluncam latrónum. ℣. Ponam fáciem meam contra illum qui contamináverit sanctuárium meum, ac pollúerit nomen sanctum meum. * Nonne. Glória. †Domus. *Marc.* 11. *Lev.* 20.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 1. *g.* Ejiciébat Jesus omnes vendentes et ementes in templo; et mensas numulariórum et cáthedras vendéntium columbas evertit. *Matth.* 21.

Orémus. Oratio.

Ascendant ad te, Dómine, jejunántium preces; et ab Ecclésia tua cunctam repelle nequítiam; Per Dóminum.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 1. a. Accessérunt ad Jesum cæci et claudi in templo, et sanávit eos. *Matth.* 21.

Orémus. Oratio.

Conserva, Dómine, famíliam tuam bonis semper opéribus erudítam: et de præséntibus consoláre subsídiis, ut ad supérna perdúcas dona propítius; Per Dóminum.

## FERIA QUARTA
### QUATUOR TEMPORUM.

Lectio i.

De libro Exodi. *Cap.* 13.

Dixit Dóminus ad Móysen et Aaron in terra Ægypti: Mensis iste vobis princípium ménsium; primus erit in ménsibus anni. Loquímini ad univérsum cœtum filiórum Israel, et dícite eis: Décimâ die mensis hujus tollat unusquisque agnum per famílias et domos suas. Sin autem minor est númerus ut sufficere possit ad vescendum agnum, assúmet vicínum suum qui junctus est dómui suæ, juxta númerum animárum quæ sufficere possunt ad esum agni. Erit autem agnus absque mácula, másculus, anníoulus; juxta quem ritum tollétis et hædum. Et servábitis eum usque ad quartam-décimam diem mensis hujus; immolabitque eum universa multitúdo filiórum Israel ad vésperam. Et sument de sánguine ejus, ac ponent super utrumque postem, et in superlimináribus domórum in quibus cómedent illum.

Lectio ii.

Sic autem comedétis illum: Renes vestros accingétis, et calceamenta habébitis in pédibus, tenentes báculos in mánibus, et comedétis festinanter: est enim Phase (id est, tránsitus) Dómini. Et transíbo per terram Ægypti nocte illâ, percutiamque omne primogénitum in terra Ægypti, ab hómine usque ad pecus; et in cunctis diis Ægypti fáciam judícia, ego Dóminus. Erit autem sanguis vobis in signum in ædibus in quibus éritis; et vidébo sánguinem, et transíbo vos: nec erit in vobis plaga disperdens, quando percússero terram Ægypti.

Lectio iii.

Léctio sancti Evangélii secundùm Matthæum. *Cap.* 12.

In illo témpore; Respondérunt Jesu quidam de Scribis et Pharisæis, dicentes: Magister, vólumus à te signum vidére. Qui respondens, ait illis: Generátio mala et adúltera signum quærit; et signum non dábitur ei, nisi signum Jonæ prophétæ. Et réliqua.

Homília sancti Joannis Chrysóstomi. 44 *in Matth.*

Viri Ninivítæ surgent, et condemnábunt generatiónem hanc. Sicut Ninivítæ Judæos condemnábunt; sic multi qui nunc inferióres nobis viden-

tur, nos condemnábunt. Véniat in mentem quanta erit illa condemnátio, ut incipiámus aliquando ad veram accédere pœniténtiæ jánuam. Mihi hæc ipsi dico, me ipsum primò exhortor. Capiámus iter angustum. Usquequo deliciábimur? Usquequo degémus otiósè, ridentes ac oscitantes? Non sumus adhuc satiáti desídiâ et procrastinatióne? Eademne semper erunt? éadem mensa, idem sumptus, eædem pecúniæ, possessiónes, constructiónes ædium? Et horum ómnium quis finis? Mors. Quis, inquam, términus? Cinis, sepulcrum, vermes. Aliam ergo vivámus vitam, faciámus de terra cœlum, melióra capessámus; ut, rectè vivendo, futúra bona consequámur, grátiâ et misericórdiâ Dómini nostri Jesu Christi, cui cum Patre et Spíritu sancto sit glória et impérium in sécula seculórum. Amen. Tu autem.

℟. Prædicavérunt Ninivítæ jejúnium, et vestíti sunt saccis à majóre usque ad minórem, * Et † Conversi sunt à via sua mala. ℣. Viri Ninivítæ surgent in judício cum generatióne ista; quia pœniténtiam egérunt in prædicatióne Jonæ; * Et. Glória. † Conversi. *Jonæ* 3. *Matth.* 12.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 2. D. Sicut fuit Jonas signum Ninivítis; ita erit et Fílius hóminis generatióni isti. *Luc.* 11.

Orémus. Oratio.

Suscipe, quæsumus Dómine, preces nostras; et ad aures misericórdiæ tuæ postulatiónes sacrátæ tibi plebis admitte; Per Dóminum.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 1. *D.* Quicumque fécerit voluntátem Patris mei, qui in cœlis est, ipse meus frater, et soror, et mater est. *Matth.* 12.

Orémus. Oratio.

Memento, Dómine, miseratiónum tuárum; et præsta, ut à cibis et peccátis abstinentes, grato tibi jejúnio placeámus; Per Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum.

## FERIA QUINTA.

### Lectio I.

De libro Exodi. *Cap.* 14.

Dixit Dóminus ad Móysen: Quid clamas ad me? Lóquere fíliis Israel, ut proficiscantur. Tu autem éleva virgam tuam, et extende manum tuam super mare, et dívide illud; ut gradiantur fílii Israel in médio mari per siccum. Ego autem indurábo cor Ægyptiórum, ut persequantur vos: et glorificábor in Pharaóne, et in omni exércitu ejus, et in cúrribus, et in equítibus illíus. Et scient Ægyptii quia ego sum Dóminus, cùm glorificátus fúero in Pharaóne, et in cúrribus atque in equítibus ejus. * Tollensque se Angelus Dei, qui præcedébat castra Israel, ábiit post eos: et cum eo páriter columna nubis, prióra dimittens, post tergum stetit inter castra Ægyptiórum et castra Israel; et erat nubes tenebrósa, et illúminans no-

ciem, ita ut ad se invicem toto noctis témpore accédere non valérent. Cùmque extendisset Móyses manum super mare, ábstulit illud Dóminus, flante vento vehementi et urente totâ nocte, et vertit in siccum; divísaque est aqua.

Lectio II.

Et ingressi sunt filii Israel per médium sicci maris; erat enim aqua quasi murus à dextra eórum et læva. Persequentesque Ægyptii, ingressi sunt post eos, et omnis equitátus Pharaónis, currus ejus et équites per médium maris. Jamque advénerat vigília matutína, et ecce respíciens Dóminus super castra Ægyptiórum per columnam ignis et nubis, interfécit exércitum eórum, et subvertit rotas cúrruum; ferebanturque in profundum. Dixérunt ergo Ægyptii : Fugiámus Israélem; Dóminus enim pugnat pro eis contra nos. Et ait Dóminus ad Móysen : Extende manum tuam super mare, ut revertantur aquæ ad Ægyptios super currus et équites eórum. Cùmque extendisset Móyses manum contra mare, reversum est primo dilúculo ad priórem locum : fugientibusque Ægyptiis occurrérunt aquæ, et involvit eos Dóminus in médiis flúctibus. Reversæque sunt aquæ, et operuérunt currus et équites cuncti exércitûs Pharaónis, qui sequentes ingressi fúerant mare; nec unus quidem supérfuit ex eis.

Lectio III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Matthæum. *Cap.* 15.

In illo témpore; Jesus secessit in partes Tyri et Sidónis. Et ecce múlier Chananæa à fínibus illis egressa, clamávit, dicens ei : Miserére meî, Dómine, fili David; fília mea malè à dæmónio vexátur. Et réliqua.

Homília sancti Hierónymi Presbyteri.

*L. 2 in Matth.*

Mira, sub persóna mulíeris Chananítidis, Ecclésiæ fides, patiéntia et humílitas prædicátur : fides, quâ crédidit sanári posse fíliam suam; patiéntia, quâ tóties contempta, in précibus persevérat; humílitas, quâ se non cánibus sed cátulis cómparat. Canes autem éthnici propter idololátriam dicuntur, qui ésui sánguinis déditi et cadavéribus mortuórum, feruntur in rábiem. Nota quod ista Chananítis perseveranter primùm fílium David, deinde Dóminum vocet, et ad extrémum adóret ut Deum.

℟. Múlier Chananæa clamávit, dicens Jesu : Miserére meî, Dómine, fili David; fília mea malè à dæmónio vexátur. Qui non respondit ei verbum. At illa venit, et adorávit eum, dicens : * Dómine, † Adjuva me. ℣. Adjuva me, cujus præter te nullus est auxiliátor : * Dómine, adjuva me. Glória Patri. † Adjuva me. *Matth.* 15. *Esth.* 14.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 7. *d.* O múlier, magna est fides tua: fiat tibi sicut vis. *Matth.* 15.

Orémus. Oratio.

Deus, qui in húmili perseverantes oratióne benignus exaudis: da nobis constantem fídei ac devotiónis affectum; ut quæ pro salúte nostra supplíciter expóscimus, hæc te largiente consequámur; Per.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 5. a. Múlier cùm abiisset in domum suam, invénit puellam jacentem supra lectum, et dæmónium exiisse. *Marc.* 7.

Orémus. Oratio.

Familiam tuam, Dómine, toto corde tibi prostrátam ab hóstium tuére formídine; nec suæ petitiónis frustrentur effectu, qui non in justificatiónibus suis, sed in miseratiónibus tuis multis fáciem tuam deprecantur; Per Dóminum.

## FERIA SEXTA
### QUATUOR TEMPORUM.

Lectio i.

De libro Exodi. *Cap.* 16.

Murmuravit omnis congregátio filiórum Israel contra Móysen et Aaron in solitúdine. Dixeruntque fílii Israel ad eos: Utinam mórtui essémus per manum Dómini in terra Ægypti, quando sedebámus super ollas cárnium, et comedebámus panem in saturitáte! Cur eduxistis nos in desertum istud, ut occiderétis omnem multitúdinem fame? Dixit autem Dóminus ad Móysen: Ecce, ego pluam vobis panes de cœlo: egrediátur pópulus, et cólligat quæ sufficiunt per síngulos dies; ut tentem eum utrùm ámbulet in lege mea, an non. Die autem sexto parent quod ínferant; et sit duplum quàm collígere solébant per síngulos dies.

Lectio ii.

Factum est ergo véspere; et ascendens coturnix, coopéruit castra: mane quoque ros jácuit per circúitum castrórum. Cùmque operuisset superfíciem terræ, appáruit in solitúdine minútum, et quasi pilo tusum, in similitúdinem pruínæ super terram. Appellavitque domus Israel nomen ejus, Man: quod erat quasi semen coriandri album, gustusque ejus quasi símilæ cum melle. * Dixit autem Móyses: Iste est sermo quem præcépit Dóminus: Imple gomor ex eo, et custodiátur in futúras retrò generatiónes; ut nóverint panem quo álui vos in solitúdine, quando educti estis de terra Ægypti. Dixitque Móyses ad Aaron: Sume vas unum, et mitte ibi Man, quantùm potest cápere gomor, et repóne coram Dómino ad servandum in generatiónes vestras, sicut præcépit Dóminus Móysi. Posuitque illud Aaron in tabernáculo reservandum. Fílii autem Israel comedérunt Man quadraginta annis, donec venírent in terram habitábilem: hoc cibo áliti sunt ús-

quequo tángerent fines terræ Chánaan.

LECTIO III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Joannem. *Cap.* 5.

In illo témpore; Erat dies festus Judæórum, et ascendit Jesus Jerosólymam. Est autem Jerosólymis Probática piscína. Et réliqua.

Homília sancti Ambrósii Epíscopi.

*De Myst. c.* 4. *n.* 21.

Tu baptizátus es in nómine Trinitátis, confessus es Patrem: recordáre quid féceris: confessus es Fílium, confessus es Spíritum sanctum. Tene órdinem rerum in hac fide: mundo mórtuus es; et Deo resurrexisti. Et quasi in illo mundi consepultus elemento, peccáto mórtuus, ad vitam es resuscitátus ætérnam. Crede ergo quia non sunt vácuæ aquæ. Ideo tibi dictum est, quia Angelus Dómini descendébat secundùm tempus in natatóriam, et movebátur aqua; et qui prior descendisset in natatóriam post commotiónem aquæ, sanus fiébat à languóre quocumque tenebátur. Hæc piscina in Jerosólymis erat, in qua unus ánnuus sanabátur; sed nemo antè sanabátur, quàm descendisset Angelus. Ut esset indícium quia descénderat Angelus, movebátur aqua propter incrédulos. Illis signum, tibi fides: illis Angelus descendébat, tibi Spíritus sanctus: illis creatúra movebátur, tibi Christus operátur ipse Dóminus creatúræ. Tunc curabátur unus, nunc omnes sanantur; aut certè unus solus pópulus christiánus.

℟. Erat homo triginta et octo annos habens in infirmitáte sua. Dicit ei Jesus: Vis sanus fieri? Respondit: * Dómine, hóminem non hábeo. Dicit ei Jesus: Tolle grabátum tuum, et ámbula; et † Statim sanus factus est. ℣. Respiciens eram ad adjutórium hóminum, et non erat. * Dómine. Glória Patri. † Statim. *Joan.* 5. *Eccli.* 51.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 1. f. Qui me sanum fecit, ille mihi dixit: Tolle grabátum tuum, et ámbula. *Joan.* 5.

Orémus. ORATIO.

Propitiare, Dómine, supplicatiónibus nostris, et animárum nostrárum medére languóribus; ut peccatórum remissióne perceptâ, in tua semper benedictióne lætémur; Per Dóminum.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 5. F. Ecce sanus factus es: jam noli peccáre, ne detérius tibi áliquid contingat. *Joan.* 5.

Orémus. ORATIO.

Præsta, quæsumus Dómine, ut sancto nos purificante jejúnio, et tibi toto corde simus subjecti, et inter mundánæ pravitátis insídias, te miserante, perseverémus illæsi; Per Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum, qui tecum vivit et regnat in unitáte Spíritûs sancti Deus.

# SABBATO
## QUATUOR TEMPORUM.

Lectio I.

De libro Exodi. *Cap.* 20.

Locutus est Dóminus cunctos sermónes hos : Ego sum Dóminus Deus tuus, qui eduxi te de terra Ægypti, de domo servitútis. Non habébis deos aliénos coram me. Non fácies tibi scúlptile, neque omnem similitúdinem quæ est in cœlo désuper, et quæ in terra deorsum, nec eórum quæ sunt in aquis sub terra. Non adorábis ea, neque coles : ego sum Dóminus Deus tuus fortis, zelótes, vísitans iniquitátem patrum in fílios, in tértiam et quartam generatiónem eórum qui odérunt me, et fáciens misericórdiam in míllia his qui díligunt me, et custódiunt præcepta mea. Non assúmes nomen Dómini Dei tui in vanum; nec enim habébit insontem Dóminus eum, qui assúmpserit nomen Dómini Dei sui frustra.

Lectio II.

Memento ut diem sábbati sanctífices. Sex diébus operáberis, et fácies ómnia ópera tua. Séptimo autem die sábbatum Dómini Dei tui est : non fácies omne opus in eo, tu, et fílius tuus et fília tua, servus tuus et ancilla tua, jumentum tuum, et ádvena qui est intra portas tuas. Sex enim diébus fecit Dóminus cœlum et terram, et mare, et ómnia quæ in eis sunt, et requiévit in die séptimo; idcirco benedixit Dóminus diéi sábbati, et sanctificávit eum. * Honóra patrem tuum, et matrem tuam, ut sis longævus super terram quam Dóminus Deus tuus dabit tibi. Non occídes. Non mœcháberis. Non furtum fácies. Non loquéris contra próximum tuum falsum testimónium. Non concupisces domum próximi tui, nec desiderábis uxórem ejus, non servum, non ancillam, non bovem, non ásinum, nec ómnia quæ illíus sunt.

Lectio III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Joannem. *Cap.* 8.

In illo témpore; Dicébat Jesus ad eos, qui crediderunt ei, Judæos : Si vos manséritis in sermóne meo, verè discípuli mei éritis; et cognoscétis veritátem, et véritas liberábit vos. Et réliqua.

Homília sancti Augustíni Epíscopi.

*In Joan. tract.* 41.

Amen, amen dico vobis. quia omnis qui facit peccátum, servus est peccáti. O miserábilis sérvitus! Plerumque hómines, cùm dóminos malos patiuntur, venáles se petunt; non quærentes dóminum non habére, sed saltèm mutáre. Servus peccáti quid fáciat? quem interpellet? apud quem interpellet? apud quem se venálem petat? Deinde servus hóminis aliquando sui dómini duris impériis fatigátus, fugiendo requiescit : servus peccáti quò

fugit? secum se trahit quòcumque fúgerit. Non fugit seipsam mala consciéntia, non est quò eat, séquitur se, imò non recédit à se; peccátum enim quod facit, intus est. Fecit peccátum, ut áliquam corporálem cáperet voluptátem: voluptas transit, peccátum manet: prætériit quod delectábat, remansit quod pungat.

℟. Omnis qui facit peccátum, servus est peccáti: servus autem non manet in domo in æternum, fílius autem manet in æternum. * Si ergo vos Fílius liberáverit, verè líberi éritis. ℣. Spíritus Dómini misit me, ut prædicárem captívis indulgéntiam, et clausis apertiónem. * Si. Glória. * Si ergo. *Joan.* 8. *Is.* 61.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 7. a. Si vos mansséritis in sermóne meo, verè discípuli mei éritis; et cognoscétis veritátem, et véritas liberábit vos.

Orémus. Oratio.

Protector noster, áspice, Deus; ut qui malórum nostrórum póndere prémimur, perceptâ misericórdiâ, líberâ tibi mente famulémur; Per Dóminum.

AD VESPERAS.

*Ant. sola.* 1. a. Peccávimus, recedentes à te, Dómine: sed in ánimo contríto et spíritu humilitátis suscipiámur. *Dan.* 3.

Capitulum. *Isai.* 1.

Quærite judícium, subveníte oppresso, judicáte pupillo, defféndite víduam. Et veníte, et argúite me, dicit Dóminus: si fúerint peccáta vestra ut cóccinum, quasi nix dealbabuntur; et si fúerint rubra quasi vermículus, velut lana alba erunt.

*Hymnus*, Audi, benigne. ℣. Tempus, 135.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 2. D. Cùm sanctificasset Móyses Aaron et fílios ejus, præcépit eis, dicens: De óstio tabernáculi non exíbitis septem diébus, die ac nocte observantes custódias Dómini. *Levit.* 8.

*Oratio ut infrà ad Laudes.*

## DOMINICA SECUNDA QUADRAGESIMÆ.

### AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invit.* Veníte, * Revertámur ad Dóminum, et sanábit nos. *Os.* 6.

*Hymnus.* Quod lex, 127.

*IN I NOCTURNO.*

Lectio I.

Incipit liber Levítici.

*Cap.* 1.

Vocavit Móysen, et locútus est Dóminus de tabernáculo testimónii, dicens: Lóquere fíliis Israel, et dices ad eos: Homo qui obtúlerit ex vobis hóstiam Dómino de pecóribus, id est, de bobus et óvibus, ófferens víctimas, si holocaustum fúerit ejus oblátio, ac de armento; másculum immaculátum ófferet ad óstium tabernáculi testimónii, ad placandum sibi Dóminum; ponetque manum super caput hóstiæ, et acce-

ptábilis erit, atque in expiatiónem ejus profíciens. Immolabitque vítulum coram Dómino, et ófferent filii Aaron sacerdótes sánguinem ejus, fundentes per altáris circúitum quod est ante óstium tabernáculi.

℟. Ignis in altári semper ardébit, quem nútriet sacerdos subjíciens ligna mane per síngulos dies: * Ignis est iste perpétuus qui nunquam defíciet. ℣. Dixit Dóminus: Ignem veni míttere in terram; et quid volo, nisi ut accendátur? * Ignis est. *Lev.* 6. *Luc.* 12.

Lectio ii. *Cap.* 10.

Arreptisque Nadab et Abiu filii Aaron thuríbulis, posuérunt ignem et incensum désuper, offerentes coram Dómino ignem aliénum; quod eis præceptum non erat. Egressusque ignis à Dómino, devorávit eos, et mórtui sunt coram Dómino. Dixitque Móyses ad Aaron: Hoc est quod locútus est Dóminus: Sanctificábor in iis qui appropinquant mihi, et in conspectu omnis pópuli glorificábor. Quod áudiens tácuit Aaron. Vocátis autem Móyses Misaéle et Elísaphan fíliis Oziel pátrui Aaron, ait ad eos: Ite et tóllite fratres vestros de conspectu sanctuárii, et asportáte extra castra. Confestimque pergentes, tulérunt eos sicut jacébant, vestítos líneis túnicis, ei ejecérunt foràs, ut sibi fúerat imperátum.

℟. Irritam quis fáciens legem Móysi, sine ulla miseratióne móritur;* Quantò magis putátis deterióra meréri supplícia, qui spirítui grátiæ contuméliam fécerit? ℣. Mórtui sunt Nadab et Abiu, cùm offerrent ignem aliénum in conspectu Dómini.* Quantò. *Hebr.* 10. *Num.* 1.

Lectio iii. *Cap.* 16.

Locutusque est Dóminus ad Móysen post mortem duórum filiórum Aaron, quando offerentes ignem aliénum interfecti sunt; et præcépit ei, dicens: Lóquere ad Aaron fratrem tuum, ne omni témpore ingrediátur sanctuárium, quod est intra velum coram propitiatório quo tégitur arca, ut non moriátur, (quia in nube apparébo super oráculum) nisi hæc antè fécerit: Vítulum pro peccáto ófferet, et aríetem in holocaustum. Túnicâ líneâ vestiétur, feminálibus líneis verenda celábit: accingétur zonâ líneâ, cídarim líneam impónet cápiti; hæc enim vestimenta sunt sancta: quibus cunctis, cùm lotus fúerit, induétur. Suscipietque ab universa multitúdine filiórum Israel duos hircos pro peccáto, et unum aríetem in holocaustum.

℟. Si voluisses sacrifícium, dedissem útique; holocaustis non delectáberis. * Sacrifícium Deo spíritus contribulátus: † Cor contrítum et humiliátum, Deus, non despícies. ℣. Impossíbile est sánguine taurórum et hircórum auferri peccáta

peccáta.* Sacrifícium. Glória Patri.† Cor. *Ps.* 50. *Hebr.* 10.

*IN II NOCTURNO.*

LECTIO IV.

Sermo sancti Augustíni Epíscopi.

*In Joan. tract.* 17, *n.* 4.

QUADRAGENARIUS númerus sacrátus nobis in quadam perfectióne commendátur. Notum esse árbitror caritáti vestræ: testantur sæpíssime divínæ Scriptúræ. Jejúnium hoc numéro consecrátum esse bene nostis. Nam et Móyses quadraginta diébus jejunávit, et Elías tótidem; et ipse Dóminus noster, et Salvátor Jesus Christus hunc jejúnii númerum implévit. Per Móysen significátur Lex, per Elíam significantur Prophétæ, per Dóminum significátur Evangélium. Ideo in illo monte tres apparuérunt, ubi se discípulis ostendit in claritáte vultûs et vestis suæ; appáruit enim médius inter Móysen et Elíam, tanquam Evangélium testimónium habéret à Lege et Prophétis.

℟. Ex opéribus Legis non justificábitur omnis caro coram Deo; * Nunc autem sine lege justítia Dei manifestáta est, testificáta à Lege et Prophétis. ℣. Multórum nobis et magnórum, per Legem et Prophétas, sapiéntia demonstráta est. * Nunc. *Rom.* 3. *Eccli. prol.*

LECTIO V.

SIVE ergo in Lege, sive in Prophétis, sive in Evangélio, quadragenárius númerus nobis in jejúnio commendátur. Jejúnium autem magnum et generále, est abstinére ab iniquitátibus et illícitis voluptátibus séculi, quod est perfectum jejúnium; ut abnegantes impietátem et seculáres cupiditátes, temperanter et justè et piè vivámus in hoc século. Huic jejúnio quam mercédem addit Apóstolus? Séquitur, et dicit: Expectantes illam beátam spem, et manifestatiónem glóriæ beáti Dei, et Salvatóris nostri Jesu Christi. In hoc ergo século quasi quadragésimam abstinéntiæ celebrámus, cùm bene vívimus, cùm ab iniquitátibus et ab illícitis voluptátibus abstinémus. Sed quia hæc abstinéntia sine mercéde non erit, expectámus beátam illam spem et revelatiónem glóriæ magni Dei, et Salvatóris nostri Jesu Christi.

℟. Humiliémus Deo ánimas nostras; * Et in spíritu constitúti humiliáto, servientes illi, expectémus húmiles consolatiónem. ℣. Abnegantes impietátem et seculária desidéria, sobriè et justè et piè vivámus in hoc século. * Et. *Judith* 8. *Tit.* 2.

LECTIO VI. *In Ps.* 148. *n.* 1.

QUIA verax est qui promísit, in spe gaudémus: quia tamen nondum habémus, in desidério gémimus. Bonum est nobis perseveráre in desidério, donec véniat quod promissum est, et tránseat gémitus, et succédat sola laudátio. Propter hæc duo témpora,

unum quod nunc est in tentatiónibus et tribulatiónibus hujus vitæ, álterum quod tunc erit in securitáte et exultatióne perpétua, institúta est nobis étiam celebrátio duórum témporum, ante Pascha et post Pascha. Illud quod est ante Pascha, signíficat tribulatiónem in qua modò sumus; quod verò ágimus post Pascha signíficat beatitúdinem in qua póstea érimus. Ante Pascha ergo quod celebrámus, hoc et ágimus: post Pascha autem quod celebrámus, significámus quod nondum tenémus. Proptérea illud tempus in jejúniis et oratiónibus exercémus: hoc verò relaxátis jejúniis in láudibus ágimus. Et ídeo illud tempus ante resurrectiónem, hoc post resurrectiónem Dómini est. Quo tempore significátur vita futúra, quam nondum tenémus; quia quod significámus post resurrectiónem Dómini, tenébimus post resurrectiónem nostram.

℟. Usque in tempus sustinébit pátiens; * Et † Póstea reddítio jucunditátis. ℣. Omnis disciplína in præsenti quidem vidétur non esse gáudii, sed mœróris; * Et. Glória. † Póstea. *Eccli.* 1. *Hebr.* 12.

## IN III NOCTURNO.

### Lectio VII.

Léctio sancti Evangélii secundùm Matthæum. *Cap.* 17.

In illo témpore; Assúmit Jesus Petrum et Jacóbum, et Joannem fratrem ejus, et ducit illos in montem excelsum seorsum; et transfigurátus est ante eos. Et réliqua.

Homília sancti Leónis Papæ.

*De Transfig. cap.* 3.

Aperit Dóminus coram electis téstibus glóriam suam, et commúnem illam cum céteris córporis formam tanto splendóre claríficat, ut et fácies ejus solis fulgóri símilis, et vestítus candóri nívium esset æquális. In qua transfiguratióne illud quidem principáliter agebátur, ut de córdibus discipulórum crucis scándalum tollerétur; nec conturbáret eórum fidem voluntáriæ humílitas passiónis, quibus reveláta esset abscónditæ excelléntia dignitátis. Sed non minóre providéntiâ spes sanctæ Ecclésiæ fundabátur, ut totum corpus Christi agnósceret quali esset commutatióne donandum; ut ejus sibi honóris consórtium membra promítterent, qui in cápite præfulsisset.

℟. Ascendit Jesus in montem ut oráret: * Et facta est, dum oráret Jesus, spécies vultûs ejus áltera. ℣. Cùm descénderet Móyses de monte, clarificátus est aspectus ejus, ex consórtio sermónis Dómini. * Et. *Luc.* 9. *Exod.* 34.

### Lectio VIII. *Cap.* 4.

Confirmandis verò Apóstolis, et ad omnem sciéntiam provehendis, ália quoque in illo miráculo accessit instrúctio. Móyses enim et Elías, Lex scílicet et Prophétæ, apparuérunt cum Dómino loquentes, ut veríssimè in illa

quinque virórum præséntia complerétur quod dictum est: In duóbus vel tribus téstibus stat omne verbum. Quid hoc stabílius, quid fírmius verbo, in cujus prædicatióne véteris et novi Testamenti cóncinit tuba, et cum evangélica doctrína antiquárum protestatiónum instrumenta concurrunt. Astipulantur enim sibi invicem utriusque fœderis páginæ; et quem sub velámine mysteriórum præcedéntia signa promíserant, manifestum atque perspícuum præsentis glóriæ splendor ostendit.

℟. Ecce duo viri loquebantur cum Jesu.* Erant Moyses et Elías visi in majestáte, et dicébant excessum ejus, quem completúrus erat in Jerúsalem. ℣. Præcláritas in communicatióne sermónum ipsíus.* Erant. *Luc.* 9. *Sap:* 8.

Lectio ix. *Cap.* 5.

His ergo sacramentórum revelatiónibus Petrus Apóstolus incitátus, mundána spernens, et terréna fastídiens, in æternórum desidérium quodam mentis rapiebátur excessu; et gáudio totíus visiónis implétus, ibi cum Jesu optábat habitáre, ubi manifestátâ ejus glóriâ lætabátur. Unde et ait: Dómine, bonum est nos hìc esse: si vis, faciámus hìc tria tabernácula, tibi unum, Móysi unum, et Elíæ unum. Sed huic suggestióni Dóminus non respondit; signíficans non quidem ímprobum, sed inordinátum esse quod cúperet: cùm salvári mundus, nisi Christi morte, non posset, et exemplo Dómini in hoc vocarétur credéntium fides, ut licèt non oportéret de beatitúdinis promissiónibus dubitári, intelligerémus tamen inter tentatiónes hujus vitæ priùs nobis toleántiam postulandam esse quàm glóriam: quia témpora patiendi non potest felícitas præveníre regnandi.

℟. Beáti qui hábitant in domo tua, Dómine.* Mélior est dies una in átriis tuis super míllia. ℣. Si vis, faciámus hìc tria tabernácula, tibi unum, Móysi unum, et Elíæ unum:* Mélior est dies una in átriis tuis super míllia. Glória. *Ps.* 83. *Matth.* 17.

*Repetitur* ℟. Beáti, *usque ad* ℣.

℣. *Sacerd.* Fílii hóminum, úsquequo gravi corde? ℟. Scitóte quóniam mirificávit Dóminus Sanctum suum. *Ps.* 4.

AD LAUDES.

*Ant.* 4. f. Miserére nostrí, Deus ómnium, et réspice nos, et ostende nobis lucem miseratiónum tuárum. *Eccli.* 36.

*Ant.* 7. ç. Quare jejunávimus, et non aspexisti; humiliávimus ánimas nostras, et nescisti? *Is.* 58.

*Ant.* 8. G. Loquímini veritátem unusquisque cum próximo suo, et malum contra amícum ne cogitétis in córdibus vestris; et jejúnium erit dómui Juda in gáudium. *Zach.* 8.

*Ant.* 6. F. Frange esurien-

ti panem tuum, et egénos vagosque induc in domum tuam: cùm víderis nudum, óperi eum. *Is*. 58.

*Ant*. 1. a. Erumpet quasi mane lumen tuum, et sánitas tua citiùs oriétur; et antelbit fáciem tuam justítia tua, et glória Dómini cólliget te. *Is*. 58.

CAPITULUM. *Eccli*. 17.

STA in sorte propositiónis et oratiónis altíssimi Dei. In partes vade séculi sancti, cum vivis et dántibus confessiónem Deo. Non demoréris in erróre impiórum.

*Hymnus*, Solemne, 129.

℣. Deus misereátur nostri, et benedícat nobis: ℟. Illúminet vultum suum super nos. *Ps*. 66.

*Ad* Benedictus. *Ant*. 2. D. Assúmit Jesus Petrum, et Jacóbum, et Joannem fratrem ejus, et ducit illos in montem excelsum seorsum; et transfigurátus est ante eos. *Matth*. 17.

Orémus. ORATIO.

DEUS, qui nos inter mundi perícula et adversa, cœlestis beatitúdinis expectatióne sustentas: præsta, quæsumus, ut terréna fastidientes, in supernórum desidérium toto cordis affectu rapiámur; Per Dóminum.

AD PRIMAM.

*Ant*. 3. a. Resplénduit fácies ejus sicut sol; vestimenta autem ejus facta sunt alba sicut nix. *Matth*. 17.

AD TERTIAM.

*Ant*. 7. d. Apparuérunt Móyses et Elías cum Jesu loquentes; et cùm discéderent ab illo, ait Petrus ad Jesum: Dómine, bonum est nos hìc esse. *Matth*. 17. *Luc*. 9.

CAPITULUM. *Hebr*. 3.

MOYSES fidélis erat in tota domo Dei tanquam fámulus, in testimónium eórum quæ dicenda erant: Christus verò tanquam fílius in domo sua; quæ domus sumus nos, si fidúciam et glóriam spei, usque ad finem, firmam retineámus.

℟ *br*. Fílii hóminum * In tégmine alárum tuárum sperábunt. Fílii. ℣. Inebriabuntur * ab ubertáte domûs tuæ. * In. Glória. Fílii. *Ps*. 35.

℣. Beátus quem elegisti et assumpsisti: ℟. Inhabitábit in átriis tuis. *Ps*. 64.

AD SEXTAM.

*Ant*. 5. a. Ecce vox de nube, dicens: Hic est Fílius meus dilectus in quo mihi bene complácui; ipsum audíte. *Matth*. 17.

CAPITULUM. *Jerem*. 7.

HÆC dicit Dóminus Deus: Audíte vocem meam, et ero vobis Deus, et vos éritis mihi pópulus: et ambuláte in omni via quam mandávi vobis, ut bene sit vobis.

℟ *br*. Audi, pópulus meus, * Et testificábor tibi. Audi. ℣. Deus, Deus tuus * ego sum, * Et. Glória. Audi. *Ps*. 49.

℣. Loquétur Dóminus pacem in plebem suam, ℟. Et super sanctos suos, et in eos qui convertuntur ad cor. *Ps*. 84.

## AD NONAM.

*Ant.* 1. f. Audientes discípuli cecidérunt in fáciem suam, et timuérunt valde. Et accessit Jesus, et tétigit eos, dixitque eis : Súrgite, et nolíte timére. *Matth.* 17.

CAPITULUM. *Exod.* 20.

NOLITE timére : ut enim probáret vos venit Deus, et ut terror illíus esset in vobis, et non peccarétis.

℟ *br.* Excelsus Dóminus, * Et humília réspicit. Excelsus. ℣. Et alta * à longè cognoscit; * Et. Glória Patri. Excelsus. *Ps.* 137.

℣. Suscípiens mansuétos Dóminus; ℟. Humílians autem peccatóres usque ad terram. *Ps.* 146.

## AD VESPERAS.

*Ant.* 2. D. Assúmit Jesus Petrum, et Jacóbum, et Joannem fratrem ejus, et ducit illos in montem excelsum seorsum; et transfigurátus est ante eos. *Matth.* 17.

*Ant.* 3. a. Resplénduit fácies ejus sicut sol; vestimenta autem ejus facta sunt alba sicut nix. *Matth.* 17.

*Ant.* 7. d. Apparuérunt Móyses et Elías cum Jesu loquentes; et cùm discéderent ab illo, ait Petrus ad Jesum : Dómine, bonum est nos hic esse. *Matth.* 17. *Luc.* 9.

*Ant.* 5. a. Ecce vox de nube, dicens : Hic est Fílius meus dilectus, in quo mihi bene complácui; ipsum audíte. *Matth.* 17.

*Ant.* 1. f. Audientes discípuli cecidérunt in fáciem suam, et timuérunt valde. Et accessit Jesus, et tétigit eos, dixitque eis : Súrgite, et nolíte timére. *Matth.* 17.

CAPITULUM. *Eccli.* 24.

QUI audit me, non confundétur; et qui operantur in me, non peccábunt. Qui elúcidant me, vitam æternam habébunt.

*Hymn.* Audi benigne, 135.

℣. Adoráte Dóminum in monte sancto ejus; ℟. Quóniam sanctus Dóminus Deus noster. *Ps.* 98.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 1. D. Descendéntibus discípulis de monte, præcépit eis Jesus, dicens: Némini dixéritis visiónem, donec Fílius hóminis à mórtuis resurgat. *Matthæi* 17.

*Oratio ut suprà ad Laudes.*

## FERIA SECUNDA.

LECTIO I.

De libro Levítici.

*Cap.* 19.

CUM messúeris ségetes terræ tuæ, non tondébis usque ad solum superfíciem terræ, nec remanentes spicas cólliges. Neque in vínea tua racémos et grana decidéntia congregábis; sed paupéribus et peregrínis carpenda dimittes. Ego Dóminus Deus vester. Non faciétis furtum. Non mentiémini; nec decípiet unusquisque próximum suum. Non perjurábis in nómine meo, nec póllues nomen Dei

calúmniam próximo tuo, nec vi ópprimes eum. * Non morábitur opus mercenárii tui apud te usque mane. Non maledíces surdo, nec coram cæco pones offendículum; sed timébis Dóminum Deum tuum, quia ego sum Dóminus. Non fácies quod iníquum est, nec injustè judicábis. Non consíderes persónam páuperis, nec honóres vultum potentis. Justè júdica próximo tuo. Non eris criminátor, nec susurro in pópulo. Non stabis contra sánguinem próximi tui. Ego Dóminus. Non óderis fratrem tuum in corde tuo; sed públicè árgue eum, ne hábeas super illo peccátum.

Lectio II. *Cap.* 26.

Custodite sábbata mea, et pavéte ad sanctuárium meum. Ego Dóminus. Si in præceptis meis ambulavéritis, et mandáta mea custodiéritis, et fecéritis ea, dabo vobis plúvias tempóribus suis, et terra gignet germen suum, et pomis árbores replebuntur. Apprehendet méssium tritúra vindémiam, et vindémia occupábit sementem: et comedétis panem vestrum in saturitáte, et absque pavóre habitábitis in terra vestra. Dabo pacem in fínibus vestris: dormiétis, et non erit qui extérreat. Auferam malas béstias, et gládius non transíbit términos vestros. Persequémini inimícos vestros, et córruent coram

Lectio III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Joannem.

*Cap.* 8.

In illo témpore; Dixit Jesus turbis Judæórum: Ego vado, et quærétis me, et in peccáto vestro moriémini. Et réliqua.

Homília sancti Augustíni Episcopi.

*In Joan. tr.* 38. *n.* 6, 7.

Tota infelícitas Judæórum ipsa erat, non peccátum habére, sed in peccátis mori. Hoc est quod debet fúgere omnis Christiánus: propter hoc ad baptismum cúrritur; propter hoc qui ægritúdine vel aliunde periclitantur, sibi desíderant subveníri; propter hoc étiam sugens párvulus à matre piis mánibus ad Ecclésiam fertur, ne sine baptismo éxeat, et in peccáto quo natus est moriátur. Infelicíssima condítio, mísera sors istórum qui de ore verídico audiérunt: In peccátis vestris moriémini. Unde tamen hoc eis contingat, expónit: Si enim non credidéritis quia ego sum, moriémini in peccátis vestris. Credo, fratres, in illa multitúdine quæ Dóminum audiébat, et eos fuisse qui creditúri erant. Quasi autem in omnes processerat severíssima illa senténtia: In peccáto vestro moriémini; ac per hoc et illis qui creditúri erant spes erat abláta: revocávit eos in spem. Adjunxit enim: Si non credidéritis quia ego sum, moriémini in peccátis vestris.

Ergo, Si crediidéritis quia ego sum, non moriémini in peccátis vestris. Réddita est spes desperántibus : excitátio facta est dormiéntibus : córdibus evigilavérunt. Inde plúrimi credidérunt.

℟. Quia vocávi, et renuístis; ego quoque * In intéritu vestro ridébo, et subsannábo: † Qui autem me audíerit, absque terróre requiéscet. ℣. Ego vado, et quærétis me: et in peccáto vestro moriémini: * In. Glória. † Qui. *Prov.* 1. *Joan.* 8.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 3. b. Si non credidéritis quia ego sum, moriémini in peccáto vestro. *Joan.* 8.

Orémus. Oratio.

Exaudi nos, miséricors Deus; et ad expianda peccáta nostra, pœniténtiæ salutáris tempus et fructum nobis largíre propítius; Per Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 1. *f.* Qui me misit mecum est, et non relíquit me solum ; quia ego quæ plácita sunt ei fácio semper. *Joan.* 8.

Orémus. Oratio.

Exaudi, quæsumus Dómine, gémitum pópuli supplicantis ; ut qui de meritórum qualitáte diffídimus, non judícium, sed misericórdiam cónsequi mereámur ; Per Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum, qui tecum vivit et regnat in unitáte Spíritûs sancti Deus, per ómnia sécula seculórum.

## FERIA TERTIA.

Lectio i.

Incipit liber Númeri.

*Cap.* 1.

Locutus est Dóminus ad Móysen in deserto Sínai in tabernáculo fœderis, primâ die mensis secundi, anno áltero egressiónis eórum ex Ægypto, dicens: Tóllite summam universæ congregatiónis filiórum Israel per cognatiónes et domos suas, et nómina singulórum, quidquid sexûs est masculíni à vigésimo anno et suprà, ómnium virórum fórtium ex Israel; et numerábitis eos per turmas suas, tu et Aaron. Eruntque vobiscum príncipes tríbuum ac domórum in cognatiónibus suis.

Lectio ii.

Locutusque est Dóminus ad Móysen, dicens : Tribum Levi noli numeráre, neque pones summam eórum cum fíliis Israel; sed constítue eos super tabernáculum testimónii, et cuncta vasa ejus, et quidquid ad cæremónias pértinet. Ipsi portábunt tabernáculum, et ómnia utensília ejus; et erunt in ministério, ac per gyrum tabernáculi metabuntur. * Cùm proficiscendum fúerit, depónent Levítæ tabernáculum : cùm castrametandum, érigent : quisquis externórum accésserit, occidétur. Metabuntur autem castra fílii Israel unusquisque per turmas et cúneos

atque exércitum suum. Porrò Levítæ per gyrum tabernáculi figent tentória, ne fiat indignátio super multitúdinem filiórum Israel; et excubábunt in custódiis tabernáculi testimónii.

LECTIO III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Matthæum.

*Cap.* 23.

In illo témpore; Jesus locútus est ad turbas et ad discípulos suos, dicens: Super cáthedram Móysi sedérunt Scribæ et Pharisæi. Omnia ergo quæcumque díxerint vobis, serváte et fácite: secundùm ópera verò eórum nolíte fácere. Et réliqua.

Homília sancti Hierónymi Presbyteri.

*Lib.* 4 *in Matth.*

Quid mansuétius, quid benígnius Dómino? Tentátur à Pharisæis, et nihilóminus propter sacerdótii et nóminis dignitátem hortátur pópulos ut subjiciantur eis; non ópera, sed doctrínam considerantes. Alligant ónera grávia et importabília, et impónunt in húmeros hóminum; dígito autem suo nolunt ea movére. Hoc generáliter adversùs omnes magistros dictum est, qui grávia jubent, et minóra non fáciunt. Omnia verò ópera sua fáciunt, ut videantur ab homínibus. Quicumque ígitur ita facit quódlibet, ut videátur ab homínibus, Scriba et Pharisæus est. Væ nobis míseris, ad quos Pharisæórum vítia transiérunt.

℟. Nolíte vocári Rabbi: * Omnes vos fratres estis; unus est enim Pater vester, qui in cœlis est: † Magister vester unus est, Christus. ℣. Odíbilis coram Deo est et homínibus supérbia: quid superbit terra et cinis? * Omnes vos. Glória Patri. † Magister. *Matth.* 23. *Eccli.* 10.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 2. D. Cavéte à Scribis, qui volunt in stolis ambuláre, et salutári in foro; qui dévorant domos viduárum sub obtentu prolixæ oratiónis: hi accípient prolíxius judícium. *Marc.* 12.

Orémus. ORATIO.

Da plebi tuæ, Dómine, quæ jejunando carnem humíliat, spíritum aversári supérbiæ; ut non indignatiónem tuam provocémus eláti, sed miseratiónis tuæ dona subjecti capiámus; Per.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 8. G. Qui major est vestrûm, erit minister vester: qui autem se exaltáverit, humiliábitur; et qui se humiliáverit, exaltábitur. *Matth.* 23.

Orémus. ORATIO.

Adesto, quæsumus Dómine, supplicatiónibus nostris; ut esse, te largiente, mereámur, et inter próspera húmiles, et inter adversa secúri; Per Dóminum.

## FERIA QUARTA.

LECTIO I.

De libro Númeri.

*Cap.* 14.

Dixerunt fílii Israel alter ad álterum: Constituámus

nobis ducem, et revertámur in Ægyptum. Quo audíto, Móyses et Aaron cecidérunt proni in terram coram omni multitúdine filiórum Israel. At verò Jósue fílius Nun, et Caleb fílius Jéphone, qui et ipsi lustráverant terram, scidérunt vestimenta sua, et ad omnem multitúdinem filiórum Israel locúti sunt: Terra quam circuívimus, valde bona est. Si propítius fúerit Dóminus, indúcet nos in eam, et tradet humum lacte et melle manantem. Nolíte rebelles esse contra Dóminum, neque timeátis pópulum terræ hujus; quia sicut panem ita eos póssumus devoráre: recessit ab eis omne præsídium: Dóminus nobiscum est, nolíte metúere. Cùmque clamáret omnis multitúdo, et lapídibus eos vellet opprímere, appáruit glória Dómini super tectum fœderis cunctis fíliis Israel.

LECTIO II.

Locutusque est Dóminus ad Móysen et Aaron, dicens: Usquequo multitúdo hæc péssima múrmurat contra me? Querélas filiórum Israel audívi. Dic ergo eis: Vivo ego, ait Dóminus; sicut locúti estis, audiente me, sic fáciam vobis. In solitúdine hac jacébunt cadávera vestra. Omnes qui numeráti estis à viginti annis et suprà, et murmurastis contra me, non intrábitis terram super quam levávi manum meam, ut habitáre vos fácerem, præter Caleb fílium Jéphone, et Jósue fílium Nun. * Párvulos autem vestros, de quibus dixistis quod prædæ hóstibus forent, introdúcam, ut vídeant terram quæ vobis displícuit. Vestra cadávera jacébunt in solitúdine. Fílii vestri erunt vagi in deserto annis quadraginta, et portábunt fornicatiónem vestram, donec consumantur cadávera patrum in deserto, juxta númerum quadraginta diérum, quibus considerastis terram: annus pro die imputábitur.

LECTIO III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Matthæum. *C.* 20.

In illo témpore; Ascendens Jesus Jerosólymam, assumpsit duódecim discípulos secrétò, et ait illis: Ecce ascéndimus Jerosólymam, et Fílius hóminis tradétur princípibus Sacerdótum, et Scribis; et condemnábunt eum morte. Et réliqua.

Homília sancti Augustíni Epíscopi.

*In Psalm.* 126. *n.* 4, 5.

Filii Zebedæi ántequam humiliarentur secundùm passiónem Dómini, jam sibi loca eligébant, ubi sedérent, unus ad déxteram, alter ad sinistram. Revocávit illos Dóminus ad humilitátem, cùm hoc audíret, et ait illis: Potestis bíbere cálicem quem ego bibitúrus sum? Exaltári vultis, ántequam humiliémini? Dóminus ipse vester, qui est lux vestra, humiliátus est

ut exaltarétur. Potestis bíbere, inquit, cálicem quem ego bibitúrus sum? Et illi : Póssumus. Et ille : Cálicem, inquit, meum bibétis; sedére autem ad déxteram, vel ad sinistram meam, ait, non est meum dare vobis; áliis parátum est à Patre meo. Quid est, Non est meum dare vobis? Non est meum dare superbis : hoc enim adhuc erant. Sed si vultis illud accípere, nolíte esse quod estis. Aliis parátum est : et vos álii estóte, et vobis parátum est. Quid est, Alii estóte? Priùs humiliámini, qui jam vultis exaltári. Intellexérunt ergo humilitátem profutúram sibi, et correcti sunt. Ergo et nos hoc audiámus.

℟. Jesus dixit : Nescítis quid petátis : * Sedére ad déxteram meam vel sinistram, non est meum dare vobis, sed quibus parátum est à Patre meo. ℣. Vidit præsumptiónem cordis eórum, et ostendit eis viam æquitátis. * Sedére. Glória. * Sedére. *Matth.* 20. *Eccli.* 18.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 7. *d.* Scitis quia príncipes géntium dominantur eórum; et qui majóres sunt, potestátem exercent in eos : non ita erit inter vos. *Matth.* 20.

Orémus. ORATIO.

DEUS, totíus bonitátis fons et orígo, réspice propítius confiténtis tibi plebis humilitátem; ut quos peccatórum consciéntia déjicit, tua semper misericórdia érigat; Per.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 1. *f.* Qui volúerit inter vos primus esse, erit vester servus; sicut Fílius hóminis non venit ministrári, sed ministráre, et dare ánimam suam redemptiónem pro multis. *Matth.* 20.

Orémus. ORATIO.

FAC, quæsumus Dómine, fámulos tuos semper ad te toto corde confúgere, tibi súbditâ mente servíre, tuam misericórdiam supplíciter imploráre, et tuis júgiter benefíciis gratulári; Per.

## FERIA QUINTA.

LECTIO I.

Incipit liber Deuteronómii. *Cap.* 1.

HÆC sunt verba quæ locútus est Móyses ad omnem Israel trans Jordánem in solitúdine campestri contra mare Rubrum, inter Pharan, et Thophel, et Laban, et Háseroth ubi auri est plúrimum, úndecim diébus de Horeb per viam montis Seir usque ad Cadesbárne. Quadragésimo anno, undécimo mense, primâ die mensis, locútus est Móyses ad fílios Israel ómnia quæ præcéperat illi Dóminus, ut díceret eis ; postquam percussit Sehon regem Amorrhæórum, qui habitábat in Hésebon ; et Og regem Basan, qui mansit in Astaroth, et in Edrai, trans Jordánem in terra Moab. Cœpitque Móyses explanáre legem.

Lectio ii. *Cap.* 6.

Hæc sunt præcepta, et cæremóniæ, atque judícia quæ mandávit Dóminus Deus vester. ut docérem vos, ut faciátis ea in terra ad quam transgredímini possidendam; ut tímeas Dóminum Deum tuum, et custódias ómnia mandáta et præcepta ejus, quæ ego præcípio tibi, et fíliis, ac nepótibus tuis, cunctis diébus vitæ tuæ, ut prolongentur dies tui. Audi, Israel, et observa, ut fácias quæ præcépit tibi Dóminus, et bene sit tibi, et multiplicéris ámpliùs sicut pollícitus est Dóminus Deus patrum tuórum tibi terram lacte et melle manantem. * Audi, Israel: Dóminus Deus noster, Dóminus unus est. Díliges Dóminum Deum tuum ex toto corde tuo, et ex tota ánima tua, et ex tota fortitúdine tua. Eruntque verba hæc, quæ ego præcípio tibi hódie, in corde tuo: et narrábis ea fíliis tuis, et meditáberis in eis sedens in domo tua, et ámbulans in itínere, dórmiens, atque consurgens. Et ligábis ea quasi signum in manu tua, eruntque et movebuntur inter óculos tuos; scribesque ea in límine et óstiis domûs tuæ.

Lectio iii.

Léctio sancti Evangélii secundùm Lucam.

*Cap.* 16.

In illo témpore; Ait Jesus Pharisæis: Homo quidam erat dives, qui induebátur púrpurâ et bysso, et epulabátur quotídie spléndidè. Et réliqua.

Homília sancti Gregórii Papæ. *In Ev.* 40. *n.* 3.

Dives iste non abstulisse aliéna reprehénditur, sed própria non dedisse. Nec dícitur quia vi quemquam oppressit, sed quia in acceptis rebus se éxtulit. Hinc ergo summópere colligendum est quâ pœnâ mulctandus sit qui aliéna diripit, si inferni damnatióne percútitur, qui própria non largítur. Nemo ergo secúrum se æstimet, dicens: Ecce aliéna non rápio, sed concessis lícitè rebus fruor; quia dives iste non idcirco punítus est, quóniam aliéna ábstulit, sed quia acceptis rebus semetipsum malè derelíquit. Hoc quoque fuit quod hunc in inferno trádidit; quia in sua felicitáte tímidus non fuit; quia percepta dona ad usum arrogántiæ inflexit; quia víscera pietátis ignorávit; quia peccáta sua redímere, étiam cùm sibi abundáret prétium, nóluit. Et sunt nonnulli qui cultum subtílium pretiosarumque véstium non putant esse peccátum. Quod si vidélicet culpa non esset, nequáquam sermo Dei tam vigilanter exprímeret, quod dives qui torquétur apud ínferos, bysso et púrpurâ indútus fuisset. Nemo quippe vestimenta pretiósa, nisi ad inánem glóriam, quærit: vidélicet ut honorabílior céteris esse videátur.

Nam quia pro sola ináni glória vestimentum pretiósius quæritur, res ipsa testátur, quòd nemo vult ibi pretiósis véstibus índui, ubi ab áliis non possit vidéri.

℟. Qui obtúrat aurem suam ad clamórem páuperis, et ipse * Clamábit, et non exaudiétur. † Qui séquitur misericórdiam, invéniet vitam, justítiam et glóriam. ℣. Dives, cùm esset in tormentis, vidit Abraham à longè, et Lázarum in sinu ejus; et clamans, dixit : Pater Abraham, miserére meî, quia crúcior in hac flamma. * Clamábit. Glória. † Qui. *Proverb.* 21. *Luc.* 16.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 8. *G.* Fili, recordáre quia recepisti bona in vita tua, et Lázarus simíliter mala; nunc autem hic consolátur, tu verò cruciáris. *Luc.* 16.

Orémus. Oratio.

Omnipotens sempiterne Deus, qui jejúnia et eleemósynas nostrórum posuisti remédia peccatórum : fac nos ópere mentis et corpóris semper tibi esse devótos; Per Dóminum.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 3. c. Si Móysen et Prophétas non áudiunt; neque si quis ex mórtuis resurréxerit, credent. *Luc.* 16.

Orémus. Oratio.

Cordibus nostris, quæsumus Dómine, grátiam tuam benignus infunde; ut peccáta nostra castigatióne voluntária cohibentes, temporáliter pótiùs macerémur, quàm supplíciis deputémur ætérnis; Per Dóminum.

## FERIA SEXTA.

### Lectio i.

De libro Deuteronómii. *Cap.* 16.

Tribus vícibus per annum apparébit omne masculínum tuum in conspectu Dómini Dei tui in loco quem elégerit, in solemnitáte azymórum, in solemnitáte hebdomadárum, et in solemnitáte tabernaculórum. Non apparébit ante Dóminum vácuus; sed ófferet unusquisque secundùm quod habúerit juxta benedictiónem Dómini Dei sui, quam déderit ei. * Júdices et magistros constítues in ómnibus portis tuis, quas Dóminus Deus tuus déderit tibi, per síngulas tribus tuas; ut júdicent pópulum justo judício, nec in álteram partem declínent. Non accípies persónam, nec múnera; quia múnera excæcant óculos sapientum, et mutant verba justórum. Justè quod justum est persequéris; ut vivas et possídeas terram quam Dóminus Deus tuus déderit tibi. Non plantábis lucum et omnem árborem juxta altáre Dómini Dei tui : nec fácies tibi neque constítues státuam; quæ odit Dóminus Deus tuus.

### Lectio ii. *Cap.* 17.

Si difficile et ambíguum apud te judícium esse per-

spéxeris inter sánguinem et sánguinem, causam et causam, lepram et lepram; et judícium intra portas tuas víderis verba variári; surge, et ascende ad locum quem elégerit Dóminus Deus tuus. Veniesque ad sacerdótes Levítici géneris, et ad júdicem qui fúerit illo témpore; quæresque ab eis, qui indicábunt tibi judícii veritátem: et fácies quodcumque díxerint qui præsunt loco quem elégerit Dóminus, et docúerint te juxta legem ejus; sequerisque senténtiam eórum; nec declinábis ad déxteram, neque ad sinistram. Qui autem superbíerit, nolens obedíre sacerdótis império, qui eo témpore ministrat Dómino Deo tuo, et decréto júdicis, moriétur homo ille, et áuferes malum de Israel; cunctusque pópulus áudiens timébit, ut nullus deinceps intumescat supérbia.

LECTIO III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Matthæum.

*Cap.* 21.

In illo témpore; Dixit Jesus princípibus Sacerdótum et senióribus pópuli: Parábolam audíte: Homo erat paterfamílias, qui plantávit víneam, et sepem circúmdedit ei. Et réliqua.

Homília sancti Augustíni Epíscopi. *Serm.* 87. *c.* 2.

PLANTATA est vínea, lege datâ in córdibus Judæórum. Missi sunt Prophétæ quærentes fructum, bonam vitam eórum: Prophétæ ab eis contuméliis affecti, et occísi sunt. Missus est et Christus, únicus fílius patrisfamílias; et ipsum occidérunt hærédem, et ídeo perdidérunt hæreditátem. In contrárium eis vertit malum consílium. Ut possidérent, occidérunt; et quia occidérunt, perdidérunt. Nos servi de família ipsíus sumus. Inter Judæos visus est húmilis, contemptus est. Occultábat enim majestátem; promptam habébat infirmitátem. Contemptum est in illo quod promptum erat; nec cógnitum quod occultum erat. Si enim cognovissent, nunquam Dóminum glóriæ crucifixissent. Numquid adhuc contemnendus est sedens in cœlo, si contemptus est cùm pendéret in ligno? Ecce indulgéntiæ dator áperit tibi óstium: quid moráris? Gaudére debéres, si aperíret aliquando pulsanti. Non pulsasti, et áperit, et foris rémanes? Ne ergo dífferas, Miserére ánimæ tuæ placens Deo. Exhibe ánimæ tuæ eleemósynam. Non dícimus, ut tu ei des; sed ne repellas manum dantis.

℟. Agrícolæ videntes fílium patrisfamílias, dixérunt intra se: Hic est hæres; veníte, occidámus eum. Cùm vénerit Dóminus, quid fáciet agrícolis? Malos malè perdet; et * Víneam suam locábit áliis agrícolis qui reddant ei fructum. ℣. Vidit Dóminus, et ad iracúndiam concitátus est; quia provocavérunt eum fílii

sui. * Víneam. Glória. * Víneam. *Matth.* 21. *Deut.* 32.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 4. A. Auferétur à vobis regnum Dei, et dábitur genti facienti fructus ejus. *Matth.* 21.

Orémus. Oratio.

Deus, qui non vis mortem peccatóris, sed ut convertátur à via sua, et vivat : te súpplices exorámus, ut, quiescente irâ tuâ, spíritum pœniténtiæ, et delictórum véniam largiáris; Per.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 3. a. Quærentes Jesum tenére, timuérunt turbas; quóniam sicut Prophétam eum habébant. *Matth.* 21.

Orémus. Oratio.

Da, quæsumus Dómine, pópulo tuo salútem mentis et córporis; ut bonis opéribus inhærendo, tuæ semper virtútis mereátur protectióne defendi; Per.

## SABBATO.

Lectio I.

De libro Deuteronómii.

*Cap.* 34.

Ascendit Móyses de campéstribus Moab super montem Nebo in vérticem Phasga contra Jéricho : ostenditque ei Dóminus omnem terram Gálaad usque Dan, et universum Néphtali, terramque Ephraim et Manasse, et omnem terram Juda usque ad mare novíssimum, et austrálem partem, et latitúdinem campi Jéricho civitátis palmárum usque Segor. Dixitque Dóminus ad eum : Hæc est terra, pro qua jurávi Abraham, Isaac, et Jacob, dicens : Sémini tuo dabo eam. Vidisti eam óculis tuis, et non transíbis ad illam. Mortuusque est ibi Móyses servus Dómini, in terra Moab, jubente Dómino; et sepelívit eum in valle terræ Moab contra Phogor ; et non cognóvit homo sepulcrum ejus usque in præsentem diem.

Lectio II.

Moyses centum et viginti annórum erat, quando mórtuus est : non caligávit óculus ejus, nec dentes illíus moti sunt. Fleveruntque eum filii Israel in campéstribus Moab triginta diébus : et compléti sunt dies planctûs lugéntium Móysen. * Jósue verò fílius Nun replétus est spíritu sapiéntiæ, quia Móyses pósuit super eum manus suas. Et obediérunt ei filii Israel, feceruntque sicut præcépit Dóminus Móysi. Et non surrexit ultrà Prophéta in Israel sicut Móyses, quem nosset Dóminus fácie ad fáciem, in ómnibus signis atque portentis quæ misit per eum, ut fáceret in terra Ægypti, Pharaóni et ómnibus servis ejus, universæque terræ illíus, et cunctam manum robustam, mágnaque mirabília quæ fecit Móyses coram universo Israel.

Lectio III.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Lucam.

*Cap.* 15.

In illo témpore; Ait Jesus ad Pharisæos et Scribas : Homo

quidam hábuit duos filios; et dixit adolescéntior ex illis patri : Pater, da mihi portiónem substántiæ quæ me contingit. Et divísit illis substántiam. Et réliqua.

Homília sancti Ambrósii Epíscopi. *In Luc. l.* 7. *n.* 214.

Qui se à Christo séparat, exul est pátriæ, civis est mundi. Bene autem in se revértitur, qui à se recessit. Etenim quia ad Dóminum regréditur, se sibi reddit; et qui recédit à Christo, se sibi ábdicat. Jam redeámus ad Patrem, ne nos ei reconciliatiónis faciámus moram, quam non fecit Pater. Fácilè reconciliátur, quando impensè rogátur. Sed etsi Deus novit ómnia, vocem tamen tuæ confessiónis expectat. Confitére magìs, ut roget pro te Ecclésia, et illácrymet pópulus. Exurge ergo, curre ad Ecclésiam : hic est Pater, hic est Fílius, hìc est Spíritus sanctus. Occurrit tibi; quia audit te intra mentis secréta *tractantem*. Et cùm adhuc longè sis, videt et accurrit, ne quis impédiat; compléctitur quoque; supra collum cadit, ut jacentem érigat, et onerátum peccátis, atque in terréna deflexum, reflectat ad cœlum, in quo suum quærat auctórem. Qui lapsus fúerit, per pœniténtiam revivíscit.

℟. Surgam, et ibo ad patrem meum, et dicam ei : Pater, peccávi in cœlum et coram te; * Jam non sum dignus vocári filius tuus : † Fac me sicut unum de mercenariis tuis. ℣. Deus meus, confundor, et erubesco leváre fáciem meam ad te. * Jam. Glória. † Fac me. *Luc.* 15. 1 *Esdr.* 9.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 8. G. Cùm adhuc longè esset, vidit illum pater ipsíus, et misericórdiâ motus est; et accurrens cécidit super collum ejus, et osculátus est eum. *Luc.* 15.

Orémus. ORATIO.

Populum tuum, quæsumus miséricors Deus, ad te confugientem paternâ récipe pietáte; ut qui tuam iracúndiam méritò formídant, de tua possint vénia gratulári; Per Dóminum.

## AD VESPERAS.

*Ant. sola.* 1. a. Peccávimus, recedentes à te, Dómine; sed in ánimo contríto et spíritu humilitátis suscipiámur. *Dan.* 3.

CAPITULUM *Ezech.* 20.

Hæc dicit Dóminus Deus : Ego sum Dóminus Deus vester, in præceptis meis ambuláte, judícia mea custodíte, et fácite ea; et sábbata mea sanctificáte, ut sint signum inter me et vos, et sciátis quia ego sum Dóminus Deus vester.

*Hymnus,* Audi, benigne *et* ℣ Tempus. 135.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 1. g. Fortis in bello Jesus Nave, successor Móysi in prophétis, máximus in salútem electórum Dei, expugnáre insurgentes hostes, ut consequc-

rétur hæreditátem Israel. *Eccli.* 46.

*Oratio ut infrà ad Laudes.*

## DOMINICA TERTIA QUADRAGESIMÆ.

*Invitat.* Veníte, * Revertámur ad Dóminum, et sanábit nos. *Os.* 6.

*Hymnus,* Quod lex, 127.

### *IN I NOCTURNO.*

LECTIO I.

Incipit liber Jósue.

*Cap.* 1.

Et factum est post mortem Móysi servi Dómini, ut loquerétur Dóminus ad Jósue fílium Nun, ministrum Móysi, et díceret ei : Móyses servus meus mórtuus est : surge, et transi Jordánem istum, tu, et omnis pópulus tecum, in terram quam ego dabo fíliis Israel. Omnem locum quem calcáverit vestígium pedis vestri, vobis tradam, sicut locútus sum Móysi. A deserto et Líbano, usque ad flúvium magnum Euphráten, omnis terra Hethæórum, usque ad mare magnum contra solis occásum, erit términus vester. Nullus póterit vobis resístere cunctis diébus vitæ tuæ : sicut fui cum Móyse, ita ero tecum : non dimittam, nec derelinquam te. Confortáre et esto robustus. Tu enim sorte dívides pópulo huic terram, pro qua jurávi pátribus suis ut tráderem eam illis.

℟. Egressus est pópulus, ut transíret Jordánem ; et sacerdótes qui portábant arcam fœderis, pergébant ante eum : * Ingressisque eis Jordánem, stetérunt aquæ, omnisque pópulus per arentem álveum transíbat. ℣. Tabernáculum testimónii induxérunt; suscipientes patres nostri cum Jesu in possessiónem géntium : * Ingressisque. *Josue* 3. *Act.* 7.

LECTIO II. *Cap.* 2.

Misit ígitur Jósue fílius Nun de Setim duos viros exploratóres in abscóndito, et dixit eis : Ite, et consideráte terram, urbemque Jéricho. Qui pergentes, ingressi sunt domum mulíeris meretrícis, nómine Rahab, et quievérunt apud eam. Nuntiatúmque est regi Jéricho, et dictum : Ecce viri ingressi sunt huc per noctem de fíliis Israel, ut explorárent terram. Misítque rex Jéricho ad Rahab, dicens : Educ viros qui venérunt ad te, et ingressi sunt domum tuam : exploratóres quippe sunt, et omnem terram consideráre venérunt. Tollensque múlier viros, abscondit, et ait : Fáteor, venérunt ad me; sed nesciébam unde essent : cùmque porta clauderétur in ténebris, et illi páriter exiérunt, néscio quò abiérunt : persequímini citò, et comprehendétis eos. Ipsa autem fecit ascéndere viros in solárium domûs suæ, operuitque eos stípulâ lini, quæ ibi erat.

℟. Ex opéribus justificátur

homo, et non ex fide tantùm. Rahab méretrix, * Nonne ex opéribus justificáta est, suscípiens núntios, et áliâ viâ ejíciens? ℣. Tollens múlier viros, abscondit, et demísit eos per funem de fenestra. * Nonne. *Jac.* 2. *Josue* 2.

Lectio iii. *Cap.* 3.

Igitur Jósue de nocte consurgens, movit castra: egredientesque de Setim, venérunt ad Jordánem ipse et omnes fílii Israel, et moráti sunt ibi tres dies. Quibus evolútis, transiérunt præcónes per castrórum médium, et clamáre cœpérunt: Quando vidéritis arcam fœderis Dómini Dei vestri, et Sacerdótes stirpis levíticæ portantes eam, vos quoque consúrgite, et sequímini præcedentes: sitque inter vos et arcam spátium cubitórum duórum míllium; ut procul vidére possítis, et nosse per quam viam ingrediámini; quia priùs non ambulastis per eam: et cavéte ne appropinquétis ad arcam. Dixitque Jósue ad pópulum: Sanctificámini; cras enim fáciet Dóminus inter vos mirabília. Et ait ad Sacerdótes: Tóllite arcam fœderis, et præcédite pópulum. Qui jussa complentes, tulérunt et ambulavérunt ante eos. Dixitque Dóminus ad Jósue: Hódie incípiam exaltáre te coram omni Israel; ut sciant quod sicut cum Móyse fui, ita et tecum sim.

℟. Stetérunt sol et luna, donec ulciscerétur se gens de inimícis suis. * Nonne scriptum est in libro Justórum: † Stetit sol in médio cœli, et non festinávit occúmbere spátio uníus diéi, obediente Dómino voci hóminis? ℣. Dixit discípulis Jesus: Si habuéritis fidem sicut granum sinápis, nihil impossíbile erit vobis. * Nonne. Glória. † Stetit sol. *Josue* 10. *Matth.* 17.

## *IN II NOCTURNO.*

Lectio iv.

Ex libro sancti Cypriáni Epíscopi et Mártyris, de Lapsis.

Quæso vos, fratres, acquiéscite salúbribus remédiis; consíliis obedíte melióribus; cum lácrymis nostris vestras lácrymas júngite; cum nostro gémitu gémitus vestros copuláte. Rogámus vos ut pro vobis Deum rogáre possímus. Agite pœniténtiam plenam, dolentis ac lamentantis ánimi probáte mœstítiam. Nec vos quorumdam móveat aut error impróvidus, aut stupor vanus, qui percussi sunt ánimi cæcitáte, ut nec intélligant delicta, nec plangant. Indignantis Dei major hæc plaga est: injustè sibi placentes, et transpunctæ mentis alienatióne dementes, Dómini præcepta contemnunt, medélam vúlneris négligunt, ágere pœniténtiam nolunt. Ante admissum fácinus impróvidi, post fácinus obstináti, nec priùs stábiles, nec póstmodum súpplices: quando debúerant stare, jacué-

runt; quando jacére, et prostérnere se Deo debent, stare se opinantur. Pacem sibi ultro, némine dante, sumpsérunt: homínibus contra Deum credunt, qui contra hómines Deo non credidérunt.

℟. Vivo ego, dicit Dóminus Deus; nolo mortem ímpii, sed ut convertátur à via sua, et vivat. * Convertímini, convertímini à viis vestris péssimis. Quare moriémini, domus Israel? ℣. Implétum est tempus, et appropinquávit regnum Dei. * Convertímini. *Ezech.* 33. *Marc.* 1.

LECTIO V.

Ejusmodi hómines, quantùm potestis, effúgite. Perniciósis conátibus adhærentes salúbri cautióne vitáte. Sola súperest pœniténtia quæ satisfáciat. Qui autem pœniténtiam críminis tollunt, satisfactiónis viam claudunt. Ita fit ut dum temeritáte quorumdam, vel promíttitur salus falsa, vel créditur, spes veræ salútis adimátur. Vos verò, fratres dilectíssimi, quorum timor in Deum pronus est, et in ruína licèt ánimus constitútus, mali sui memor est, pœnitentes ac dolentes peccáta vestra perspícite, gravíssimum consciéntiæ crimen agnóscite. Ad intelligéntiam delicti vestri óculos cordis aperíte, nec desperantes misericórdiam Dómini, nec tamen jam véniam vindicantes. Deus, quantùm patris pietáte indulgens semper et bonus est, tantùm júdicis majestáte metuendus est. Quàm magna delíquimus, tam gránditer defleámus. Alto vúlneri diligens et longa medicína non desit; pœniténtia crímine minor non sit.

℟. Fácite fructus dignos pœniténtiæ; * Jam enim secúris ad radícem árborum pósita est. Omnis arbor non fáciens fructum bonum excidétur, et in ignem mittétur. ℣. Altíssimus misertus est pœniténtibus: ímpiis et peccatóribus reddet vindictam. * Jam. *Luc.* 3. *Eccli.* 12.

LECTIO VI.

Orare oportet impénsiùs et rogáre, diem luctu transígere, vigíliis noctes ac flétibus dúcere, tempus omne lacrymósis lamentatiónibus occupáre, stratos solo adhærére in cínere et cilício, et sórdibus volutári; post indumentum Christi pérditum, nullum jam velle vestítum; post diáboli cibum, malle jejúnium; justis opéribus incúmbere, quibus peccáta purgantur; eleemósynis frequenter insístere, quibus à morte ánimæ liberantur. Nec tenéri jam, nec amári patrimónium debet. Ad hoc tantùm profúerit quod remansit, ut inde crimen et culpa redimátur. Incunctanter et lárgiter fiat operátio; census omnis in medélam vúlneris erogétur: ópibus et facultátibus nostris, qui de nobis judicatúrus est, Dó-

mino fœnerétur. Sic sub Apóstolis fides viguit; sic primus credéntium pópulus Christi mandáta servávit. Qui sic Deo satisfécerit, qui pœniténtiâ facti sui, qui pudóre delicti, plus et virtútis et fidei de ipso lapsûs sui dolóre concéperit, exaudítus et adjútus à Dómino, quam contristáverat nuper, lætam fáciet Ecclésiam : nec jam solam Dei véniam merébitur, sed et corónam.

℟. Quærite primum regnum Dei, et justítiam ejus : * Fácite vobis thesaurum non deficientem in cœlis; ubi enim thesaurus vester est, ibi et cor vestrum erit. ℣. Fidúcia magna erit coram summo Deo eleemósyna ómnibus faciéntibus eam. * Fácite. Glória. * Fácite. *Luc.* 12. *Tob.* 4.

## IN III NOCTURNO.

### Lectio vii.

Léctio sancti Evangélii secundùm Lucam.

*Cap.* 11.

In illo témpore; Erat Jesus ejíciens dæmónium, et illud erat mutum. Et cùm ejecisset dæmónium, locútus est mutus, et admirátæ sunt turbæ. Et réliqua.

Homília venerábilis Bedæ Presbyteri.

*In Luc. l.* 4. *c.* 48.

Dæmoniacus iste apud Matthæum, non solùm mutus, sed et cæcus fuisse narrátur; curatusque dícitur à Dómino, ita ut loquerétur, et vidéret. Tria ergo signa simul in uno [illegible] sunt : cæcus videt, mutus lóquitur, possessus à dæmone liberátur. Quod et tunc quidem carnáliter factum est, sed et quotídie complétur in conversióne credéntium : ut expulso primùm dæmone, fídei lumen aspíciant; deinde, ad laudes Dei, tacéntia priùs ora laxentur.

℟. Si sátanas sátanam éjicit, adversùs se divísus est : quómodo ergo stabit regnum ejus? * Si autem in Spíritu Dei ejício dæmones, ígitur pervénit in vos regnum Dei. ℣. Spíritus Dómini super me, eo quod únxerit Dóminus me. * Si. *Matth.* 12. *Is.* 61.

### Lectio viii.

Cum immundus spíritus exíerit de hómine, perámbulat per loca inaquósa. Quamvis simplíciter intélligi possit Dóminum hæc ad distinctiónem suórum, et sátanæ óperum adjunxisse; tamen et de hærético quovis, vel schismático, vel étiam malo cathólico potest non inconvenienter áccipi. De quo, témpore baptísmatis, spíritus immundus qui in eo priùs habitáverat, ad confessiónem cathólicæ fídei, abrenuntiationemque mundánæ conversatiónis ejiciátur : lócaque inaquósa péragret, id est, corda fidélium, quæ à mollítie fluxæ cogitatiónis expurgáta sint, cállidus insidiátor explóret, si quos ibi fortè suæ nequítiæ gressus fígere possit. Sed bene dícitur : Quærens réquiem, et non

invéniens; quia castas mentes effúgiens, in solo corde pravórum gratam sibi potest invenire réquiem.

℟. Cùm immundus spíritus exíerit de hómine, dicit: Revertar in domum meam unde exívi. Tunc assúmit septem álios spíritus secum nequióres se; et * Fiunt novíssima hóminis illíus pejóra prióribus. ℣. Sicut canis qui revértitur ad vómitum suum, sic imprúdens qui íterat stultítiam suam. * Fiunt novíssima hóminis. *Luc.* 11. *Prov.* 26.

LECTIO IX.

DICIT: Revertar in domum meam unde exívi. Timendus est iste versículus, non exponendus. Et cùm vénerit, ínvenit scopis mundátam, hoc est, grátiâ baptísmatis à peccatórum labe castigátam, sed nullâ boni óperis indústriâ cumulátam. Unde bene Matthæus hanc vacantem, mundátam, atque ornátam dicit; mundátam à vítiis prístinis per baptismum; vacantem à bonis áctibus per negligéntiam; ornátam simulátis virtútibus per hypócrisin. Et tunc vadit, et assúmit septem álios spíritus nequióres se, et ingressi hábitant ibi. Per septem malos spíritus, universa vítia designat. Quemcumque enim post baptisma, sive právitas hærética, seu mundána cupíditas arripúerit, mox ómnium prosternet in ima vitiórum. Unde rectè nequióres tunc eum spíritus dicuntur ingressi; quia non solùm habébit illa septem vítia, quæ septem spirituálibus sunt contrária virtútibus, sed et per hypócrisin ipsas se virtútes habére simulábit. Et sunt novíssima hóminis illíus pejóra prióribus. Mélius quippe erat ei viam veritátis non cognóscere, quàm post agnitiónem retrorsum converti.

℟. Cùm fortis armátus custódit átrium suum, in pace sunt ea quæ póssidet: * Si autem fórtior vícerit eum, univérsa arma ejus áuferet, et spólia ejus distríbuet. ℣. Numquid tollétur à forti præda? Equidem et captívitas à forti tollétur. * Si. Glória. *Luc.* 11. *Is.* 49.

*Repetit.* ℟ Cùm, *usque ad* ℣.

℣ *Sacerd.* In hoc cognóvi quóniam voluísti me; ℟. Quóniam non gaudébit inimícus meus super me. *Ps.* 40.

## AD LAUDES.

*Ant.* 7. a. Némini mandávit Deus ímpiè ágere, et némini dedit spátium peccandi: non enim concupiscit multitúdinem filiórum infidélium. *Eccli.* 15.

*Ant.* 8. G. Qui jejúnat in peccátis suis, et íterum éadem fáciens, quid próficit humiliando se? *Eccli.* 34.

*Ant.* 1. a. Facta sunt posterióra deterióra prióribus: mélius enim erat non cognóscere viam justítiæ, quàm post agnitiónem retrorsum converti. 2 *Petr.* 2.

*Ant.* 4. d. Ne quis desit grátiæ Dei, profánus ut Esaü: scitóte enim quóniam póstea cúpiens hæreditáte benedi-

ctiónem, reprobátus est, quanquam cum lácrymis inquisisset eam. *Hebr.* 12.

*Ant.* 3. c. Orábat scelestus Antiochus Dóminum, à quo non esset misericórdiam consecutúrus. 2 *Mach.* 9.

CAPITULUM. *Eccli.* 5.

Ne dicas: Miserátio Dómini magna est, multitúdinis peccatórum meórum miserébitur; misericórdia enim et ira ab illo citò próximant, et in peccatóres réspicit ira illíus. Non tardes converti ad Dóminum, et ne dífferas de die in diem.

*Hymnus*, Solemne, 129.

℣. Usquequo exaltábitur inimícus meus super me? ℟. Réspice, et exaudi me, Dómine Deus meus. *Ps.* 12.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 1. g. Erat Jesus ejíciens dæmónium, et illud erat mutum. Et cùm ejecisset dæmónium, locútus est mutus; et admirátæ sunt turbæ. *Luc.* 11.

Orémus. ORATIO.

Quæsumus omnípotens Deus, vota humílium réspice; atque ad defensiónem nostram, déxteram tuæ majestátis extende; Per Dóminum.

AD PRIMAM.

*Ant.* 2. D. Stupébant omnes turbæ, et dicébant: Numquid hic est Fílius David? Pharisæi autem audientes, dixérunt: Hic non éjicit dæmones, nisi in Beélzebub príncipe dæmoniórum. *Matth.* 12.

AD TERTIAM.

*Ant.* 4. E. Jesus sciens cogitatiónes eórum, dixit eis: Omne regnum in seipsum divísum desolábitur, et domus supra domum cadet. *Matt.* 12. *Luc.* 11.

CAPITULUM. *Isai.* 59.

Ecce non est abbreviáta manus Dómini, ut salváre néqueat; neque aggraváta est auris ejus, ut non exáudiat: sed iniquitátes vestræ divisérunt inter vos et Deum vestrum, et peccáta vestra abscondérunt fáciem ejus à vobis, ne exaudíret.

℟ *br.* Inimíci tui, Dómine, * Inimíci tui períbunt. Inimíci. ℣. Et dispergentur omnes * qui operantur iniquitátem; * Inimíci. Glória. Inimíci. *Ps.* 91.

℣. Contrítio et infelícitas in viis eórum: ℟. Viam pacis non cognovérunt. *Ps.* 13.

AD SEXTAM.

*Ant.* 3. a. Si ego in Beélzebub ejício dæmones, fílii vestri in quo ejíciunt? Ideo ipsi júdices vestri erunt. *Matt.* 12.

CAPITULUM. *Ezech.* 20.

Judicabor vobiscum fácie ad fáciem: sicut judício contendi adversùm patres vestros in deserto terræ Ægypti, sic judicábo vos, dicit Dóminus Deus. Et subjíciam vos sceptro meo, et indúcam vos in vínculis fœderis.

℟ *br.* Non repellet Dóminus plebem suam: * Hæreditátem suam non derelinquet. Non. ℣. Quoadusque justítia convertátur * in judícium, * Hæreditátem suam. Glória Patri. Non repellet.

℣. Quis consurget mihi adversùs malignantes? ℟. Aut

quis stabit mecum advérsùs operantes iniquitátem. *Ps.* 93.

AD NONAM.

*Ant.* 1. *f.* Qui non est mecum, contra me est; et qui non cólligit mecum, dispergit. *Luc.* 11.

CAPITULUM. *Prov.* 4.

Ne declínes ad déxteram, neque ad sinistram : vias enim quæ à dextris sunt novit Dóminus : perversæ verò sunt quæ à sinistris sunt. Ipse autem rectos fáciet cursus tuos : itínera tua in pace prodúcet.

℟ *br.* Dómine, deduc me * In justítia tua. Dómine. ℣. Dírige in conspectu tuo * viam meam, * In justítia tua. Glória. Dómine. *Ps.* 5.

℣. Pérfice gressus meos in sémitis tuis, ℟. Ut non moveantur vestígia mea. *Ps.* 16.

AD VESPERAS.

*Ant.* 1. g. Erat Jesus ejíciens dæmónium, et illud erat mutum. Et cùm ejecisset dæmónium, locútus est mutus; et admirátæ sunt turbæ. *Luc.* 11.

*Ant.* 2. D. Stupébant omnes turbæ, et dicébant : Numquid hic est Fílius David? Pharisæi autem audientes, dixérunt : Hic non éjicit dæmones, nisi in Beélzebub príncipe dæmoniórum. *Matth.* 12.

*Ant.* 4. E. Jesus sciens cogitatiónes eórum, dixit eis : Omne regnum in seipsum divísum desolábitur, et domus supra domum cadet. *Matt.* 12. *Luc.* 11.

*Ant.* 3. a. Si ego in Beélzebub ejício dæmones, fílii vestri in quo ejíciunt? Ideo ipsi júdices vestri erunt. *Matt.* 12.

*Ant.* 1. f. Qui non est mecum, contra me est; et qui non cólligit mecum, dispergit. *Luc.* 11.

CAPITULUM. *Ephes.* 6.

Confortamini in Dómino, et in poténtia virtútis ejus : indúite vos armatúram Dei, ut possítis stare advérsùs insídias diáboli.

*Hymn.* Audi benigne, 135.

℣. In æternum non obliviscar justificatiónes tuas; ℟. Quia in ipsis vivificasti me. *Ps.* 118.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 8. *g.* Extollens vocem quædam múlier de turba, dixit : Beátus venter qui te portávit, et úbera quæ suxisti. At Jesus dixit : Quinimmo, beáti qui áudiunt verbum Dei, et custódiunt illud. *Luc.* 11.

*Oratio ut suprà ad Laudes.*

## FERIA SECUNDA.

LECTIO I.

De libro Jósue. *Cap.* 3.

Egressus est pópulus de tabernáculis suis, ut transíret Jordánem; et Sacerdótes qui portábant arcam fœderis, pergébant ante eum. Ingressisque eis Jordánem, et pédibus eórum in parte aquæ tinctis, (Jordánis autem ripas álvei sui témpore messis impléverat) stetérunt aquæ descendentes in loco uno, et ad instar montis intumescentes apparébant procul ab urbe quæ vocátur Adom usque ad locum Sar-

than : quæ autem inferióres erant, in mare Solitúdinis (quod nunc vocátur Mórtuum) descendérunt, úsquequo omnino defícerent. Pópulus autem incedébat contra Jéricho; et Sacerdótes qui portábant arcam fœderis Dómini, stabant super siccam humum in médio Jordánis accincti, omnisque pópulus per arentem álveum transíbat.

Lectio ii. *Cap.* 4.

Quibus transgressis, dixit Dóminus ad Jósue : Elige duódecim viros síngulos per síngulas tribus ; et præcipe eis ut tollant de médio Jordánis álveo, ubi stetérunt pedes Sacerdótum, duódecim duríssimos lápides, quos ponétis in loco castrórum, ubi fixéritis hàc nocte tentória. Vocavítque Jósue duódecim viros quos elégerat de fíliis Israel, síngulos de síngulis tríbubus ; et ait ad eos : Ite ante arcam Dómini Dei vestri ad Jordánis médium, et portáte inde sínguli síngulos lápides in húmeris vestris, juxta númerum filiórum Israel, ut sit signum inter vos. * Et quando interrogáverint vos fílii vestri cras, dicentes : Quid sibi volunt isti lápides? respondébitis eis : Defecérunt aquæ Jordánis ante arcam fœderis Dómini, cùm transíret eum : idcirco pósiti sunt lápides isti in monumentum filiórum Israel usque in æternum. Fecérunt ergo fílii Israel, sicut præcépit eis Jósue, portantes de médio Jordánis álveo duódecim lápides, ut Dóminus ei imperárat, juxta númerum filiórum Israel, usque ad locum in quo castrametáti sunt, ibíque posuérunt eos.

Lectio iii.

Léctio sancti Evangélii secundùm Lucam. *Cap.* 4.

In illo témpore; Ait Jesus ómnibus qui erant in synagóga Názareth : Utique dicétis mihi hanc similitúdinem : Médice, cura teipsum; quanta audívimus facta in Caphárnaüm, fac et hìc in pátria tua. Et réliqua.

Homília sancti Ambrósii Epíscopi.

*In Luc. l.* 4. *n.* 46, 47.

Non mediócriter invídia próditur, quæ cívicæ caritátis oblíta, in acerba ódia causas amóris inflectit. Simul hoc exemplo páriter et oráculo declarátur, quod frustra opem misericórdiæ cœlestis expectes, si aliénæ frúctibus virtútis invídeas : aspernátor enim Dóminus invidórum est; et ab iis qui divína benefícia in áliis persequuntur, mirácula suæ potestátis avertit. Non otiósè ítaque Salvátor excúsat, quòd nulla in pátria sua mirácula virtútis operátus sit; ne fortassis áliquis viliórem pátriæ nobis esse debére putáret affectum. Neque enim cives póterat non amáre, qui amáret omnes; sed ipsi se caritáte pátriæ, qui ínvident, abdicárunt.

℟. Propter te, Dómine, sustínui oppróbrium; opéruit confúsio fáciem meam :

* Extráneus factus sum frátribus meis, et peregrínus fíliis matris meæ; † Quóniam zelus domûs tuæ comédit me. ℣. Dicébat Jesus: Quia non est prophéta sine honóre nisi in pátria sua, et in domo sua, et in cognatióne sua. * Extráneus. Glória. † Quóniam. *Ps.* 68. *Marc.* 6.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 2. D. Multi leprósi erant in Israel sub Eliséo prophéta: et nemo eórum mundátus est, nisi Náaman Syrus. *Luc.* 4.

Orémus. Oratio.

Purificet nos grátia tua, Deus; et per continéntiam salutáris jejúnii, ab omni semper iniquitáte custódiat; Per Dóminum.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 1. *g.* Duxérunt Jesum usque ad supercílium montis, ut præcipitárent eum; ipse autem tránsiens per médium illórum, ibat. *Luc.* 4.

Orémus. Oratio.

Subveniat nobis, Dómine, misericórdia tua: ut ab imminéntibus peccatórum nostrórum perículis, te mereámur protegente salvári; Per.

## FERIA TERTIA.

Lectio i.

De libro Jósue.

*Cap.* 5.

Eo témpore ait Dóminus ad Jósue: Fac tibi cultros lapídeos, et circumcíde secundò fílios Israel. Fecit quod jússerat Dóminus, et circumcídit fílios Israel in colle præputiórum. Hæc autem causa est secundæ circumcisiónis: Omnis pópulus qui egressus est de Ægypto géneris masculíni, universi bellatóres viri, mórtui sunt in deserto per longíssimos viæ circúitus; qui omnes circumcísi erant. Pópulus autem qui natus est in deserto, per quadraginta annos itíneris latíssimæ solitúdinis, incircumcísus fuit; donec consumerentur qui non audíerant vocem Dómini, et quibus antè juráverat, ut non osténderet eis terram lacte et melle manantem. Horum fílii in locum successérunt patrum, et circumcísi sunt à Jósue; quia sicut nati fúerant, in præpútio erant, nec eos in via áliquis circumcíderat. Postquam autem omnes circumcísi sunt, mansérunt in eódem castrórum loco, donec sanarentur. Dixitque Dóminus ad Jósue: Hódie ábstuli oppróbrium Ægypti à vobis. Vocatumque est nomen loci illíus Gálgala, usque in præsentem diem.

Lectio ii.

Manseruntque fílii Israel in Gálgalis, et fecérunt Phase quartâ-décimâ die mensis ad vésperum in campéstribus Jéricho: et comedérunt de frúgibus terræ die áltero, ázymos panes, et polentam ejusdem anni. Defecitque manna, postquam comedérunt de frúgibus terræ, nec usi sunt ultrà cibo illo fílii Israel, sed comedérunt de frúgibus

frúgibus præsentis anni terræ Chánaan. * Cùm autem esset Jósue in agro urbis Jéricho, levávit óculos; et vidit virum stantem contra se, evaginátum tenentem gládium; perrexitque ad eum, et ait: Noster es, an adversariórum? Qui respondit: Nequáquam, sed sum princeps exércitûs Dómini, et nunc vénio. Cécidit Jósue pronus in terram, et adórans ait: Quid Dóminus meus lóquitur ad servum suum? Solve, inquit, calceamentum tuum de pédibus tuis; locus enim in quo stas sanctus est. Fecitque Jósue ut sibi fúerat imperátum.

LECTIO III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Matthæum.

*Cap.* 18.

In illo témpore; Dixit Jesus discípulis suis: Si peccáverit in te frater tuus, vade, et córripe eum inter te et ipsum solum. Et réliqua.

Homília sancti Augustíni Epíscopi.

*Serm.* 82. *n.* 4.

Debemus amando corrígere, non nocendi aviditáte, sed stúdio corrigendi. Tales si fuérimus, óptimè fácimus quod hódie admóniti sumus: Si peccáverit in te frater tuus, córripe illum inter te et ipsum solum. Quare illum córripis? Quia tu doles quòd peccáverit in te? Absit. Si amóre tuì id fâcis, nihil facis: si amóre illíus facis, óptimè facis. Dénique in ipsis verbis attende, cujus amóre id fácere débeas; utrùm tuì, an illíus. Si te audíerit, inquit, lucrátus es fratrem tuum. Ergo propter illum fac, ut lucréris illum. Sic faciendo, lucráris: nisi fecisses, períerat.

℟. Si peccáverit in te frater tuus, vade, et * Córripe eum inter te et ipsum solum: † Si te audíerit, lucrátus eris fratrem tuum. ℣. Qui córripit hóminem, grátiam póstea invéniet apud eum, magis quàm ille qui per linguæ blandimenta décipit. * Córripe. Glória. † Si te audíerit. *Matth.* 18. *Prov.* 28.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 6. F. Ubi sunt duo vel tres congregáti in nómine meo, ibi sum in médio eórum. *Matthæi* 18.

Orémus. ORATIO.

Gratiæ tuæ nobis, Dómine, præsens auxílium impende: ut, sacro nos purificante jejúnio, toto simus tibi corde subjecti, et in tua caritáte concordes; Per.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 1. a. Dómine, quóties peccábit in me frater meus, et dimittam ei? Usque sépties? Dixit illi Jesus: Non dico tibi usque sépties, sed usque septuágies sépties. *Matth.* 18.

Orémus. ORATIO.

Deus, qui Ecclésiam sponsam tuam matrem nobis et magistram providisti; da fidélibus tuis in ipsíus doctrína et præceptis vocem tuam agnóscere: ut eórum infir-

mitas custodiátur ab omni circumventióne erróris, dum Ecclésiam Dei viventis áudiunt, columnam et firmamentum veritátis; Qui cum eódem Deo Patre vivis.

## FERIA QUARTA.

### Lectio i.

De libro Jósue. *Cap.* 6.

Jericho clausa erat atque muníta, timóre filiórum Israel; et nullus égredi audébat aut íngredi. Dixitque Dóminus ad Jósue: Ecce dedi in manu tua Jéricho, et regem ejus, omnesque fortes viros. Circuíte urbem cuncti bellatóres semel per diem; sic faciétis sex diébus. Séptimo autem die, Sacerdótes tollant septem búccinas quarum usus est in jubiléo, et præcédant arcam fœderis: septiesque circuíbitis civitátem, et Sacerdótes clangent búccinis. Cùmque insonúerit vox tubæ lóngior atque concísior, et in áuribus vestris increpúerit, conclamábit omnis pópulus vociferatióne máximâ, et muri fúnditus córruent civitátis; ingredienturque sínguli per locum contra quem stéterint.

### Lectio ii.

Cumque séptimo circúitu clángerent búccinis Sacerdótes, dixit Jósue ad omnem Israel: Vociferámini; trádidit enim vobis Dóminus civitátem: sitque cívitas hæc anáthema, et ómnia quæ in ea sunt, Dómino. Sola Rahab méretrix vivat cum univérsis qui cum ea in domo sunt: abscondit enim núntios quos diréximus. Vos autem cavéte ne de his quæ præcepta sunt, quídpiam contingátis, et sitis prævaricatiónis rei, et ómnia castra Israel sub peccáto sint atque turbentur. Quidquid auri et argenti fúerit, et vasorum æneórum ac ferri, Dómino consecrétur, repósitum in thesauris ejus. * Igitur omni pópulo vociferante, et clangéntibus tubis, postquam in aures multitúdinis vox sonitusque increpuit, muri íllico corruérunt: et ascendit unusquisque per locum qui contra se erat; ceperuntque civitátem, et interfecérunt ómnia quæ erant in ea.

### Lectio iii.

Léctio sancti Evangélii secundùm Matthæum.

*Cap.* 15.

In illo témpore; Accessérunt ad Jesum ab Jerosólymis Scribæ et Pharisæi, dicentes: Quare discípuli tui transgrediuntur traditiónem senióрum? Et réliqua.

Homília sancti Hierónymi Presbyteri.

*In Matth. lib.* 2. *c.* 15.

Mira Pharisæórum Scribarumque stultítia! Dei Fílium árguunt, quare hóminum traditiónes et præcepta non servet: Non enim lavant manus suas, cùm panem mandúcant. Ipse autem respondens, ait illis: Quare et vos transgredímini mandátum Dei

propter traditiónem vestram? Falsam calúmniam vera responsióne confútat. Præcéperat enim Dóminus, vel imbecillitátes, vel ætátes, vel penúrias parentum consíderans, ut filii honorárent, étiam in vitæ necessáriis ministrandis, parentes suos. Hanc providentíssimam Dei legem volentes Scribæ et Pharisæi subvértere, ut impietátem sub nómine pietátis indúcerent, docuérunt péssimos fílios, ut si quis ea quæ paréntibus offerenda sunt, Dómino vovére volúerit, qui verus est pater, oblátio Dei præponátur parentum munéribus : vel certè ipsi parentes, quæ Deo consecráta cernébant, ne sacrilégii crimen incúrrerent, declinantes, egestáte conficiebantur. Atque ita fiébat, ut oblátio liberórum, sub occasióne templi et Dei, in sacerdótum lucra céderet.

℟. Quare transgredímini mandátum Dei propter traditiónem vestram ? * Nam † Deus dixit : Honóra patrem et matrem. ℣. Fili, súscipe senectam patris tui, et non contristes eum in vita illíus; * Nam. Glória Patri. † Deus. *Matth.* 15. *Eccli.* 3.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 8. G. Cæcus si cæco ducátum præstet, ambo in fóveam cadunt. *Matth.* 15.

Orémus. Oratio.

Præsta nobis, quæsumus Dómine, ut salutáribus jejúniis erudíti, à nóxiis quoque vítiis abstinentes, propitiatiónem tuam facíliùs impetrémus ; Per Dóminum.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 7. a. De corde éxeunt cogitatiónes malæ, homicídia, adultéria : hæc sunt quæ coínquinant hóminem ; non lotis autem mánibus manducáre, non coínquinat hóminem. *Matth.* 15.

Orémus. Oratio.

Gratia tua nos, quæsumus Dómine, non derelinquat ; quæ et sacræ nos déditos fáciat servitúti, et tuam nobis opem semper acquírat ; Per Dóminum.

## FERIA QUINTA.

Lectio I.

De libro Jósue.

*Cap.* 10.

Habitatores Gábaon urbis obsessæ misérunt ad Jósue, qui tunc morabátur in castris apud Gálgalam, et dixérunt ei : Ne rétrahas manus tuas ab auxílio servórum tuórum ; ascende citò, et líbera nos, ferque præsídium ; convenérunt enim adversùm nos omnes reges Amorrhæórum qui hábitant in montánis. Ascenditque Jósue de Gálgalis, et omnis exércitus bellatórum cum eo, viri fortíssimi. Dixitque Dóminus ad Jósue : Ne tímeas eos; in manus enim tuas trádidi illos : nullus ex eis tibi resístere póterit. * Irruit ítaque Jósue super eos repente, totâ nocte ascendens de Gálgalis. Et conturbávit eos Dóminus à fácie Israel,

contrivitque plagâ magnâ in Gábaon, ac persecútus est eos per viam ascensûs Beth-horon, et percussit usque Azeca et Máceda. Cùmque fúgerent fílios Israel, et essent in descensu Beth-horon, Dóminus misit super eos lápides magnos de cœlo usque ad Azeca; et mórtui sunt multò plures lapídibus grándinis, quàm quos gládio percússerant fílii Israel.

Lectio ii.

Tunc locútus est Jósue Dómino in die quâ trádidit Amorrhæum in conspectu filiórum Israel, dixitque coram eis : Sol, contra Gábaon ne moveáris ; et Luna, contra vallem Aíalon. Steteruntque sol et luna, donec ulcisceré-tur se gens de inimícis suis. Nonne scriptum est hoc in libro Justórum ? Stetit ítaque sol in médio cœli, et non festinávit occúmbere spátio uníus diéi. Non fuit ántea nec póstea tam longa dies, obediente Dómino voci hóminis, et pugnante pro Israel. Reversusque est Jósue cum omni Israel in castra Gálgalæ. Fúgerant enim quinque reges, et se abscónderant in spelunca urbis Máceda. Nuntiatumque est Jósue quod inventi essent quinque reges latentes in spelunca urbis Máceda. Qui præcépit sóciis, et ait : Vólvite saxa ingéntia ad os speluncæ, et pónite viros indústrios, qui clausos custódiant ; vos autem nolíte stare, sed persequímini hostes, et extrémos quosque fugiéntium cædite : nec dimittátis eos úrbium suárum intráre præsídia, quos trádidit Dóminus Deus in manus vestras. Cæsis ergo adversáriis plagâ magnâ, et usque ad interneciónem penè consumptis, hi qui Israel effúgere potuérunt, ingressi sunt civitátes munítas. Reversusque est omnis exércitus ad Jósue in Máceda, ubi tunc erant castra, sani et íntegro número, nullusque contra fílios Israel mutíre ausus est.

Lectio iii.

Léctio sancti Evangélii secundùm Lucam. *Cap.* 4.

In illo témpore ; Surgens Jesus de synagóga introívit in domum Simónis. Socrus autem Simónis tenebátur magnis fébribus. Et réliqua.

Homília sancti Joannis Chrysóstomi.

28 *in Matthæum.*

Tetigit Jesus manum ejus; nec fébrium tantùm ardóres extinxit, aut certa incolumitátis signa reduxit : verùm étiam prístinas córporum vires recuperáre íllico fecit ; ut quando fácilis curátu ægrotátio videbátur, curandi modo virtus curantis ostenderétur. Nam id certè medendi artifícium fácere non potest. Nemo quippe ignórat, quàm longo témpore, postquam febres cessavérunt, opus sit ad prístinum robur recuperandum. Cuncta ígitur tunc simul facta sunt ; quod et in mari páriter evenisse perpéndere póssu-

mus : nam et ibi non ventos solùm ac tempestátes sedávit; sed, quod inaudítum omníno erat, fluctus étiam undasque statim compósuit. Nam etsi vis ventórum cessáverit, pérmanent tamen fluctus undárum diútiùs. Sed non ita hìc; non enim natúrâ duce aut arte fiunt quæ à Christo fiunt, sed simul ómnia finem suum assequuntur; quod subostendit Evangelista, dicens : Surrexit, et ministrábat illis. Id certè tam virtútem Christi suprà hóminem significábat, quàm voluntátem mulíeris atque affectum erga Christum aperiébat.

℟. Socrus Simónis tenebátur magnis fébribus, et * Rogavérunt Jesum pro ea. Et † Imperávit febri, et dimísit illam. ℣. Deprecatiónem timéntium se Dóminus exáudiet. * Rogavérunt. Glória. † Imperávit. *Luc.* 4. *Ps.* 144.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 8. *G.* Exíbant dæmónia à multis, clamántia, et dicéntia : Quia tu es Fílius Dei. Et íncrepans, non sinébat ea loqui, quia sciébant ipsum esse Christum. *Luc.* 4.

Orémus. Oratio.

Concede, quæsumus omnípotens Deus, ut jejuniórum sancta devótio, et purificatiónem nobis tríbuat, et majestáti tuæ nos reddat acceptos; Per Dóminum.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 3. *à.* Egressus Jesus ibat in desertum locum, et turbæ requirébant eum, et venérunt usque ad ipsum; et detinébant illum, ne discéderet ab eis. *Luc.* 4.

Orémus. Oratio.

Da, quæsumus omnípotens Deus, ut qui infirmitátis nostræ cónscii de tua virtúte confídimus, sub tua semper pietáte gaudeámus; Per.

## FERIA SEXTA.

### Lectio i.

De libro Jósue. *Cap.* 18.

Congregati sunt omnes fílii Israel in Silo, ibíque fixérunt tabernáculum testimónii, et fuit eis terra subjecta. Remánserant autem filiórum Israel septem tribus, quæ necdum accéperant possessiónes suas. Ad quos Jósue ait: Usquequo marcétis ignáviâ, et non intrátis ad possidendam terram quam Dóminus Deus patrum vestrórum dedit vobis? Elígite de síngulis tríbubus ternos viros, ut míttam eos, et pergant atque circúmeant terram, et descríbant eam juxta númerum uniuscujusque multitúdinis; referantque ad me quod descrípserint. * Divídite vobis terram in septem partes : Judas sit in términis suis ab austráli plaga, et domus Joseph ab aquilóne. Médiam inter hos terram in septem partes descríbite : et huc veniétis ad me, ut coram Dómino Deo vestro mittam vobis hìc sortem; quia non est inter vos pars Levitárum, sed sacerdótium Dómini est

eórum hæréditas. Gad autem et Ruben, et dimídia tribus Manasse jam accéperant possessiónes suas trans Jordánem ad orientálem plagam, quas dedit eis Móyses fámulus Dómini.

LECTIO II. *Cap.* 23.

Evoluto autem multo témpore, postquam pacem déderat Dóminus Israéli, subjectis in gyro natiónibus universis, et Jósue jam longævo, et persenílis ætátis; vocávit Jósue omnem Israélem, majoresque natu, et príncipes, ac duces, et magistros, dixitque ad eos: Ego sénui, et progressióris ætátis sum, vosque cérnitis ómnia quæ fécerit Dóminus Deus vester cunctis per circúitum natiónibus, quómodo pro vobis ipse pugnáverit, et nunc quia vobis sorte divísit omnem terram ab orientáli parte Jordánis usque ad mare Magnum, multæque adhuc supersunt natiónes; Dóminus Deus vester disperdet eas, et áuferet à fácie vestra: et possidébitis terram, sicut vobis pollícitus est. Tantùm confortámini, et estóte sollíciti, ut custodiátis cuncta quæ scripta sunt in volúmine legis Móysi, et non declinétis ab eis neque ad déxteram neque ad sinistram.

LECTIO III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Joannem. *Cap.* 4.

In illo témpore; Venit Jesus in civitátem Samaríæ, quæ dícitur Sichar, juxta prædium quod dedit Jacob Joseph fílio suo. Erat autem ibi fons Jacob. Jesus ergo fatigátus ex itínere, sedébat sic supra fontem. Et réliqua.

Homília sancti Augustíni Epíscopi. *In Joan. tract.* 15. *n.* 11, 12.

Venit múlier de Samaría haurire aquam. Dicit ei Jesus: Da mihi bíbere. Vidétis alienígenas: omníno vásculis eórum Judæi non utebantur. Et quia ferébat secum múlier vásculum unde aquam hauríret, eo miráta est, quia Judæus petébat ab ea bíbere, quod non solébant fácere Judæi. Ille autem qui bíbere quærébat, fidem ipsíus mulíeris sitiébat. Dénique audi quis petat bíbere. Respondit Jesus, et dixit ei: Si scires donum Dei, et quis est qui dicit tibi, Da mihi bíbere, tu fórsitan petísses ab eo; et dedisset tibi aquam vivam. Petit bíbere, et promittit bíbere. Eget quasi acceptúrus, et áffluit tanquam satiatúrus. Si scires, inquit, donum Dei. Donum Dei est Spíritus sanctus. Sed adhuc mulíeri tectè lóquitur: et paulátim intrat in cor. Fortassis jam docet. Quid enim istâ hortatióne suávius et benígnius? Si scires donum Dei, et quis est qui dicit tibi, Da mihi bíbere; tu fórsitan péteres, et daret tibi aquam vivam.

℟. Omnis qui bibit ex aqua hac, sítiet íterum: * Qui autem bíberit ex aqua quam ego dabo ei, non sítiet in ætérnum; sed † Aqua quam

ego dabo ei, fiet in eo fons aquæ salientis in vitam ætérnam. ℣. Appropiáte ad me: quid adhuc retardátis? ánimæ vestræ sitiunt vehementer. * Qui. Glória. † Aqua. *Joan.* 4. *Eccli.* 51.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 1. *f.* Venit hora, et nunc est, quando veri adoratóres adorábunt Patrem in spíritu et veritáte. *Joan.* 4.

Orémus. ORATIO.

JEJUNIA nostra, quæsumus Dómine, benigno favóre proséquere: ut sicut ab alimentis abstinémus in córpore, ita à vítiis jejunémus in mente; Per Dóminum.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 8. c. Spíritus est Deus; et eos qui adórant eum, in spíritu et veritáte oportet adoráre: nam et Pater tales quærit qui adórent eum. *Joan.* 4.

Orémus. ORATIO.

DEUS, qui spíritus es, et eos qui te adórant, in spíritu et veritáte jubes adoráre: purífica, quæsumus, sancto amóre tuo corda nostra, ut te in ómnibus et super ómnia diligentes, sincérâ tibi pietáte placeámus; Per Dóminum nostrum.

## SABBATO.

LECTIO I.

De libro Jósue. *Cap.* 24.

DIXIT Jósue ad pópulum: Non potéritis servíre Dómino; Deus enim sanctus et fortis æmulátor est, nec ignoscet sceléribus vestris atque peccátis. Si dimiséritis Dóminum, et serviéritis diis aliénis, convertet se, et affliget vos, atque subvertet, postquam vobis præstíterit bona. Dixitque pópulus ad Jósue: Nequáquam ita ut lóqueris, erit; sed Dómino serviémus. Et Jósue ad pópulum: Testes, inquit, vos estis, quia ipsi elegéritis vobis Dóminum, ut serviátis ei. Respondéruntque: Testes. Nunc ergo, ait, auferte deos aliénos de médio vestrî, et inclináte corda vestra ad Dóminum Deum Israel. Dixitque pópulus ad Jósue: Dómino Deo nostro serviémus, et obedientes érimus præceptis ejus. * Percussit ergo Jósue in die illo fœdus, et propósuit pópulo præcepta atque judícia in Sichem. Scripsit quoque ómnia verba hæc in volúmine legis Dómini; et tulit lápidem pergrandem, posuitque eum subter quercum quæ erat in sanctuário Dómini; et dixit ad omnem pópulum: En lapis iste erit vobis in testimónium, quod audíerit ómnia verba Dómini quæ locútus est vobis; ne fortè póstea negáre velítis, et mentíri Dómino Deo vestro.

LECTIO II.

DIMISITQUE pópulum, síngulos in possessiónem suam. Et post hæc mórtuus est Jósue fílius Nun servus Dómini, centum et decem annórum; sepeliéruntque eum in fínibus possessiónis suæ in Thamnáthsare quæ est sita in monte

Ephraim, à septentrionáli parte montis Gaas. Servivitque Israel Dómino cunctis diébus Jósue, et seniórum qui longo vixérunt témpore post Jósue, et qui novérunt ómnia ópera Dómini quæ fécerat in Israel. Ossa quoque Joseph, quæ túlerant fílii Israel de Ægypto, sepeliérunt in Sichem in parte agri quem émerat Jacob à fíliis Hemor patris Sichem centum novellis óvibus; et fuit in possessiónem filiórum Joseph. Eléazar quoque fílius Aaron mórtuus est; et sepeliérunt eum in Gábaath Phínees fílii ejus, quæ data est ei in monte Ephraim.

LECTIO III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Joannem.

*Cap.* 8.

In illo témpore; Jesus perrexit in montem Olivéti: et dilúculo íterum venit in templum; et omnis pópulus venit ad eum; et sedens docébat eos. Et réliqua.

Homília sancti Augustíni Epíscopi.

*In Ps.* 50. *n.* 8.

JUDÆI ad Dóminum adúlteram mulíerem adduxérunt. In adultério, ínquiunt, hæc múlier deprehensa est; Móyses hujúsmodi lapidári jussit: tu de illa quid censes? tanquam bicípiti muscípulâ tentantes cápere Sapiéntiam Dei: ut si jubéret occídi, pérderet mansuetúdinis famam; si autem jubéret dimítti, incúrreret, tanquam reprehensor legis, calúmniam. Quid ergo respondit? Non ait, Occídite; non ait, Dimíttite; sed ait, Qui se scit sine peccáto esse, primus in illam lápidem jáciat. Justa lex quæ jubet adúlteram occídi; sed hæc lex justa ministros hábeat innocentes. Atténditis quam addúcitis, atténdite et qui estis. Illi, hoc audíto, unus post álterum discessérunt. Remansit adúltera et Dóminus; remansit vulneráta et médicus; remansit magna miséria et magna misericórdia. Adducentes erubuérunt, nec véniam petivérunt: adducta confúsa est, et sanáta.

℟. Judæi dixérunt *Jesu*: Magister, hæc múlier modò deprehensa est in adultério. * Jesus dixit: Qui sine peccáto est vestrûm, primus in illam lápidem mittat. † Audientes autem, unus post unum exíbant. ℣. Impii vénient in cogitatióne peccatórum suórum tímidi; et tradúcent illos ex adverso iniquitátes ipsórum. * Jesus. Glória. † Audientes. *Joan.* 8. *Sap.* 4.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 3. c. Nemo te condemnávit, múlier? nec ego te condemnábo: vade, et jam ámpliùs noli peccáre. *Joan.* 8.

Orémus. ORATIO.

PRÆSTA, quæsumus omnípotens Deus, ut dignitas conditiónis humánæ per *immoderántiam* sauciáta, medicinális parcimóniæ stúdio reformétur; Per.

AD VESPERAS.

*Ant. sola.* 1. a. Peccávimus,

recedentes à te, Dómine: sed in ánimo contríto et spíritu humilitátis suscipiámur. *Dan.* 3.

Capitulum. 2 *Par.* 7.

Si conversus pópulus meus, super quos invocátum est nomen meum, deprecátus me fúerit, et exquisíerit fáciem meam, et égerit pœniténtiam à viis suis péssimis; et ego exáudiam de cœlo, et propítius ero peccátis eórum.

*Hymnus*, Audi, benigne cónditor, *et* ℣. Tempus, *ut suprà* 135.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 5. C. Cùm Dóminus Júdices suscitáret, in diébus eórum flectebátur misericórdiâ, et audiébat afflictórum gémitus, et liberábat eos de cæde vastántium. *Judic.* 2.

*Oratio ut infrà ad Laudes.*

## DOMINICA QUARTA QUADRAGESIMÆ.

### AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invit.* Veníte, * Revertámur ad Dóminum, et sanábit nos. *Osee* 6.

*Hymnus,* Quod lex, 127.

### IN I NOCTURNO.

Lectio i.

Incipit liber Júdicum.

*Cap.* 1.

Post mortem Jósue consuluérunt fílii Israel Dóminum, dicentes: Quis ascendet ante nos contra Chananæum, et erit dux belli? Dixitque Dóminus: Judas ascendet; ecce trádidi terram in manus ejus. Et ait Judas Simeóni fratri suo: Ascende mecum in sortem meam, et pugna contra Chananæum, ut et ego pergam tecum in sortem tuam. Et ábiit cum eo Símeon. Ascenditque Judas, et trádidit Dóminus Chananæum ac Pherezæum in manus eórum, et percussérunt in Bezec decem míllia virórum. Invenerúntque Adoníbezec in Bezec, et pugnavérunt contra eum, ac percussérunt Chananæum et Pherezæum. Fugit autem Adoníbezec; quem persecúti comprehendérunt, cæsis summitátibus mánuum ejus ac pedum. Dixitque Adoníbezec: Septuaginta reges, amputátis mánuum ac pedum summitátibus, colligébant sub mensa mea cibórum relíquias: sicut feci, ita réddidit mihi Deus. Adduxerúntque eum in Jerúsalem, et ibi mórtuus est. Oppugnantes ergo fílii Juda Jerúsalem, cepérunt eam, et percussérunt in ore gládii, tradentes cunctam incéndio civitátem.

℟. Jósue et Caleb constitúti sunt indúcere fílios Israel in hæreditátem: * Et Júdices sínguli suo nómine non aversi sunt à Dómino, ut sit memória illórum in benedictióne. ℣. Deus sorte distríbuit pátribus nostris terram Chánaan, et post hæc dedit Júdices usque ad Sámuel Prophétam. * Et. *Eccli.* 46. *Act,* 13.

Lectio ii. *Cap.* 2.

Fecerúntque fílii Israel malum in conspectu Dómini, et serviérunt Báalim. Ac dimisérunt Dóminum Deum patrum suórum, qui edúxerat eos de terra Ægypti; et secúti sunt deos aliénos, deosque populórum qui habitábant in circúitu eórum, et adoravérunt eos; et ad iracúndiam concitavérunt Dóminum, dimittentes eum, et servientes Baal et Astaroth. Iratusque Dóminus contra Israel, trádidit eos in manus diripiéntium; qui cepérunt eos, et vendidérunt hóstibus qui habitábant per gyrum: nec potuérunt resístere adversáriis suis; sed quòcumque pérgere voluissent, manus Dómini super eos erat, sicut locútus est, et jurávit eis: et vehementer afflicti sunt. Suscitavitque Dóminus Júdices qui liberárent eos de vastántium mánibus, sed nec eos audíre voluérunt fornicantes cum diis aliénis, et adorantes eos.

℞. Cessavérunt fortes in Israel, donec súrgeret Débbora, súrgeret mater in Israel. * Nova bella elégit Dóminus, et portas hóstium ipse subvertit. ℣. Infirma mundi elégit Deus, ut confundat fórtia; et ea quæ non sunt, ut ea quæ sunt destrúeret: * Nova bella. *Judic.* 5. 1. *Cor.* 1.

Lectio iii.

Cito deseruérunt viam per quam ingressi fúerant patres eórum; et audientes mandáta Dómini, ómnia fecére contrária. Cùmque Dóminus Júdices suscitáret, in diébus eórum flectebátur misericórdiâ, et audiébat afflictórum gémitus, et liberábat eos de cæde vastántium. Postquam autem mórtuus esset Judex, revertebantur; et multò faciébant pejóra quàm fécerant patres eórum, sequentes deos aliénos, servientes eis, et adorantes illos. Non dimisérunt adinventiónes suas, et viam duríssimam per quam ambuláre consuevérunt. Iratusque est furor Dómini in Israel, et ait: Quia írritum fecit gens ista pactum meum quod pepígeram cum pátribus eórum, et vocem meam audíre contempsit, et ego non delébo gentes quas dimísit Jósue, et mórtuus est; ut in ipsis expériar Israel, utrùm custódiant viam Dómini, et ámbulent in ea, sicut custodiérunt patres eórum, an non. Dimísit ergo Dóminus omnes natiónes has, et citò subvértere nóluit, nec trádidit in manus Jósue.

℞. Defíciet tempus enarrantem de Gédeon, Sámuel, et Prophétis, qui * Per fidem vicérunt regna, operáti sunt justítiam, † Adepti sunt repromissiónes. ℣. Illi viri misericórdiæ sunt, quorum pietátes non defuérunt; semen eórum, et glória eórum non derelinquétur. * Per fidem. Glória Patri. † Adepti sunt repromissiónes. *Hebr.* 11. *Eccli.* 44.

## IN II NOCTURNO.

### Lectio iv.

Sermo sancti Joannis Chrysóstomi.

*Hom.* 16 *ad pop. Ant.*

Non hoc est expedivisse jejúnium, si tempus præteriérimus; sed si transegérimus cum rectè factis. Hoc supputémus, si studiosióres facti sumus, si defectum áliquem nostrum corréximus, si ablúimus crímina. Quod lucrum, si rectè factis carentes jejúnium transegérimus? Si álius dicat : Totam jejunávi Quadragésimam; tu dic : Inimícum habébam, et conciliátus sum : habébam detrahendi consuetúdinem, et déstiti : jurandi tenébar usu, et mos ímprobus mihi correctus est. Nulla mercatóribus utílitas, si magnam maris longitúdinem percúrrerint; sed si cum rerum cópia et multo mercimónio navigáverint. Nulla jejúnii nobis utílitas, si infructuósè ipsum tempus et témerè prætereámus. Si cibórum jejúnium jejunémus, prætéritis quadragínta diébus præterit et jejúnium : si verò peccátis abstineámus, transacto jejúnio, illud rémanet, et contínuum erit : hinc nobis utílitas, et ante regnum cœlórum non parvas hic reddet retributiónes.

℞. Sumus húmiles in universa terra hódie propter peccáta nostra; et * Nunc séquimur te in toto corde, et timémus te, et quærimus fáciem tuam. Dómine, ne confundas nos. ℣. Nos omnes aliquando conversáti sumus in desidériis carnis nostræ, faciéntes voluntátem carnis et cogitatiónum. * Nunc. *Dan.* 3. *Ephes.* 2.

### Lectio v.

Sicut enim in nequítia vivens, et ante gehennam punítur consciéntiâ stimulátus, sic méritis abundans, et ante regnum magnâ fruétur lætítiâ, se bonâ spe pascens. Idcirco et Christus inquit : Iterum vidébo vos, et gaudébitis; et gáudium vestrum nemo tollet à vobis. Breve verbum, sed multam habet consolatiónem. Quidnam tandem est, Nemo gáudium vestrum tollet? Rerum quælibet mundanárum fácilè infestári potest, nec stábilem nobis voluptátem affert : píetas autem et ánimi virtus è contrà. Eleemósynam si féceris, méritum auferre potest nemo; sive exércitus, sive reges, sive infiníti calumniatóres et insidiatóres instent úndique, in cœlis repósitam possessiónem auferre non possunt; sed perenne pérmanet gáudium. Dispersit enim, inquit, dedit paupéribus; justítia ejus manet in séculum. Nec immérito : in cœlórum enim cellúriis repósita sunt, ubi fur non pérfodit, latro non tollit, tínea non consúmit. Si preces fúderis contínuas et intentas, eárum fructum auferre póterit nemo : hic étenim fructus in cœlo radicátus est, ab omni calúmnia liber, et pérma-

nens inexpugnábilis. Si malè passus beneféceris, si convíciis affectus benedíxeris, hæc mérita continuè manent, et ortam ex his lætítiam áuferet nemo; sed quotiescumque ipsórum recordátus fúeris, gaudes et lætáris, et multam capis voluptátem.

℟. Laudábitis nomen Dómini Dei vestri, qui fecit mirabília vobiscum; * Et sciétis quia ego Dóminus Deus vester, et non confundétur pópulus meus in ætérnum. ℣. Dóminum Christum sanctificáte in córdibus vestris, cum modéstia et timóre consciéntiam habentes bonam; * Et sciétis quia ego. *Joel* 2. 1 *Petr.* 3.

Lectio VI.

Sic profectò, et fúgere juraméntum si prævaleámus, et ab hac consuetúdine perniciósa linguam nostram abstinére persuadeámus; mériti quidem labor brevì absolvétur; lætítia verò mériti júgiter erit et indesinenter. Céterùm vos, et aliórum præceptóres esse oportet et duces. Et amícos próximi, servos autem conservi, et júvenes coævos suscípere, et institúere, et indúcere debent. Nonne si quis tibi áureum unum pro síngulis homínibus correctis promisisset, omne stúdium adhibuisses, et assíduus astitisses persuádens et exhortans? Nunc verò non áureum unum, neque decem, neque viginti, vel centum, vel mille, neque totam Deus terram tibi pollicétur in horum labórum retributiónem, sed quod orbe toto majus est, hoc tibi præbet, cœlórum regnum. Nec hoc solùm, verùm et áliud præter hoc. Quale verò hoc? Qui edúcit pretiósum à vili sicut os meum erit, inquit. Quid huic posset esse par ad honóris et securitátis ratiónem? Quæ verò nobis excusátio et vénia, post tantam promissiónem, proximórum salútem negligéntibus esse váleat.

℟. Justítiam et judícia sua Deus ostendit homínibus; et dixit illis: Atténdite ab omni iníquo, * Et † Mandávit unicuíque de próximo suo. ℣. Hoc mandátum habémus à Deo, ut qui díligit Deum, díligat et fratrem suum; * Et. Glória. † Mandávit. *Eccli.* 17. 1 *Joan.* 4.

*IN III NOCTURNO.*

Lectio VII.

Léctio sancti Evangélii secundùm Joannem. *Cap.* 6.

In illo témpore; Abiit Jesus trans mare Galilææ, quod est Tiberíadis: et sequebátur eum multitúdo magna, quia vidébant signa quæ faciébat super his qui infirmabantur. Et réliqua.

Homília sancti Augustíni Epíscopi.

*In Joan. tr.* 24. *n.* 1, 2.

Miracula quæ fecit Dóminus noster Jesus Christus, sunt quidem divína ópera, et ad intelligendum Deum de visibílibus ádmonent humánam mentem. Quia enim ille non

est talis substántia quæ vidéri óculis possit; et mirácula ejus quibus totum mundum regit, universamque creatúram administrat, assiduitáte viluérunt, ita ut penè nemo dignétur atténdere ópera Dei mira et stupenda in quólibet séminis grano: secundùm ipsam suam misericórdiam servávit sibi quædam quæ fáceret opportúno témpore, præter usitátum cursum ordinemque natúræ; ut non majóra, sed insólita vidéndo, stupérent, quibus quotidiána viluerant.

℟. Vidit turbam multam Jesus, et misertus est super eos; quia * Erant sicut oves non habentes pastórem: et cœpit illos docére multa; et eos qui curâ indigébant, sanábat. ℣. Misericórdia Dei super omnem carnem: qui misericórdiam habet, docet, et érudit quasi pastor gregem suum. * Erant. *Marc.* 6. *Luc.* 9. *Eccli.* 18.

LECTIO VIII.

Majus enim miráculum est gubernátio totíus mundi, quàm saturátio quinque míllium hóminum de quinque pánibus. Et tamen hæc nemo mirátur; illud mirantur hómines, non quia majus est, sed quia rarum est. Quis enim et nunc pascit universum mundum, nisi ille qui de paucis granis ségetes creat? Fecit ergo quómodo Deus: unde enim multíplicat de paucis granis ségetes, inde in mánibus suis multiplicávit quinque panes. Potestas enim erat in mánibus Christi: panes autem illi quinque quasi sémina erant, non quidem terræ mandáta, sed ab eo qui terram fecit, multiplicáta.

℟. Discubuérunt viri quasi quinque míllia; et * Accépit Jesus panes; et cùm grátias egisset, distríbuit discumbéntibus: simíliter et ex píscibus quantùm volébant. ℣. Memóriam fecit mirabílium suórum miséricors Dóminus: escam dedit timéntibus se. * Accépit Jesus. *Joan.* 6. *Ps.* 110.

LECTIO IX.

Hoc ergo admótum est sénsibus, quo erigerétur mens; et exhíbitum óculis, ubi exercerétur intellectus, ut invisíbilem Deum per visibília ópera mirarémur; et erecti ad fidem, et purgáti per fidem, étiam ipsum invisibíliter vidére cuperémus, quem de rebus visibílibus invisíbilem noscerémus. Nec tamen súfficit hæc intuéri in mirâculis Christi. Interrogémus ipsa mirácula, quid nobis loquantur de Christo: habent enim, si intelligantur, linguam suam. Quia ipse Christus Verbum Dei est; étiam factum Verbi, verbum nobis est.

℟. Manducavérunt omnes, et saturáti sunt: * Et discípuli sustulérunt relíquias fragmentórum, duódecim cóphinos plenos. ℣. Comedérunt, et supérfuit juxta ver-

bum Dómini : * Et. Glória. *Marc.* 6. 4 *Reg.* 4.

*Repetitur* ℟ Manducavérunt, *usque ad* ℣.

℣ *Sacerd.* Cantábo Dómino, qui bona tríbuit mihi, ℟. Et psallam nómini Dómini altíssimi. *Ps.* 12.

AD LAUDES.

*Ant* 1. g. Oculi Dómini sine intermissióne inspicientes in viis hóminum : non sunt absconsa testamenta per iniquitátem illórum. *Eccli.* 17.

*Ant.* 2. D. Pœniténtibus dedit viam justítiæ, et confirmávit deficientes sustinére, et destinávit illis sortem veritátis. *Eccli.* 17.

*Ant.* 3. a. Quàm magna misericórdia Dómini, et propitiátio illíus converténtibus ad se ! *Eccli.* 17.

*Ant.* 4. *D.* Benedícite, sancti et húmiles corde, Dómino; quia éruit nos de inferno, et salvos fecit de manu mortis. *Dan.* 3.

*Ant.* 5. F. A mórtuo, quasi nihil perit conféssio : confitéberis vivens, et laudábis Deum, et gloriáberis in miseratiónibus illíus. *Eccli.* 17.

CAPITULUM. *Isai.* 6.

SPIRITUS Dómini super me, ut consolárer omnes lugentes, et darem eis corónam pro cínere, óleum gáudii pro luctu, pállium laudis pro spíritu mœróris.

*Hymnus*, Solemne, 129.

℣. Bénedic, ánima mea, Dómino, ℟. Qui replet in bonis desidérium tuum. *Ps.* 102.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 1. D. Abiit Jésus trans mare Galilææ, et sequebátur eum multitúdo magna, quia vidébant signa quæ faciébat super his qui infirmabantur. *Joan.* 6.

Orémus. ORATIO.

CONCEDE, quæsumus omnípotens Deus, ut qui ex mérito nostræ actiónis affligimur, tuæ grátiæ consolatióne respirémus; Per.

AD PRIMAM.

*Ant.* 2. D. Súbiit in montem Jesus, et ibi sedébat cum discípulis suis : erat autem próximum Pascha, dies festus Judæórum. *Joan.* 6.

AD TERTIAM.

*Ant.* 1. *f.* Cùm vidisset Jesus quia multitúdo máxima venit ad eum, dixit ad Philippum : Unde emémus panes, ut mandúcent hi? *Hoc autem dicébat tentans eum; ipse enim sciébat quid esset factúrus. Joan.* 6.

CAPITULUM. *Ezech.* 34.

OVES meas pascam, et *in* móntibus excelsis Israel erunt páscua eárum : ibi requiescent in herbis viréntibus, et in páscuis pínguibus pascentur super montes Israel. Ego pascam oves meas, et ego eas accubáre fáciam, dicit Dóminus Deus.

℟ *br.* Tu das ómnium escam, Dómine, * In témpore opportúno. Tu das. ℣. Aperis tu manum tuam, * et imples omne ánimal benedictióne, * In. Glória. Tu das. *Ps.* 144.

℣. Dante te illis, cólligent:

℟. Aperiente te manum tuam, ómnia implebuntur bonitáte. *Ps.* 103.

AD SEXTAM.

*Ant.* 3. à. Acceptis Jesus quinque pánibus et duóbus píscibus, respexit in cœlum, et benedixit illis; et fregit, et distríbuit discípulis suis, ut pónerent ante turbas. *Luc.* 4.

CAPITULUM. *Sap.* 16.

CREATURA ómnium nutríci grátiæ tuæ deserviébat, ad voluntátem eórum qui à te desiderábant; ut scirent fílii tui quos dilexisti, Dómine, quóniam non nativitátis fructus pascunt hómines, sed sermo tuus hos qui in te credíderint, conservat.

℟ *brev.* Satiávit Dóminus * Animam inánem. Satiávit. ℣. Et ánimam esurientem * satiávit bonis, * Animam inánem. Glória Patri. Satiávit. *Ps.* 106.

℣. Dóminus facit judícium injúriam patiéntibus; ℟. Dat escam esuriéntibus. *Ps.* 145.

AD NONAM.

*Ant.* 7. c. Dixit Jesus: Collígite quæ superavérunt fragmenta, ne péreant. Collegérunt ergo, et implevérunt duódecim cóphinos fragmentórum. *Joan.* 6.

CAPITULUM. *Deut.* 30.

ABUNDARE te fáciet Dóminus Deus tuus in rerum ómnium largitáte: revertétur enim Dóminus, ut gáudeat super te in ómnibus bonis, sicut gavísus est in pátribus tuis: si tamen audíeris vocem Dómini Dei tui, et custodíeris præcepta ejus.

℟ *br.* Edent páuperes, * Et saturabuntur. Edent páuperes. ℣. Et laudábunt Dóminum, * qui requírunt eum, * Et saturabuntur. Glória. Edent.

℣. Manducavérunt et adoravérunt: ℟. In conspectu ejus cadent omnes qui descendunt in terram. *Ps.* 21.

AD VESPERAS.

*Ant.* 1. D. Abiit Jesus trans mare Galilææ, et sequebátur eum multitúdo magna: quia vidébant signa quæ faciébat super his qui infirmabantur. *Joan.* 6.

*Ant.* 2. D. Súbiit in montem Jesus, et ibi sedébat cum discípulis suis: erat autem próximum Pascha, dies festus Judæórum. *Joan.* 6.

*Ant.* 1. *f.* Cùm vidisset Jesus quia multitúdo máxima venit ad eum, dixit ad Philippum: Unde emémus panes, ut mandúcent hi? Hoc autem dicébat tentans eum; ipse enim sciébat quid esset factúrus. *Joan.* 6.

*Ant.* 3. à. Acceptis Jesus quinque pánibus et duóbus píscibus, respexit in cœlum, et benedixit illis; et fregit, et distríbuit discípulis suis, ut pónerent ante turbas. *Luc.* 9.

*Ant.* 7. c. Dixit Jesus: Collígite quæ superavérunt fragmenta, ne péreant. Collegérunt ergo, et implevérunt duódecim cóphinos fragmentórum. *Joan.* 6.

Capitulum. *Tob.* 12.

Benedicite Deum cœli, et coram ómnibus vivéntibus confitémini ei; quia fecit vobiscum misericórdiam suam.

*Hymn.* Audi benigne, 135:

℣. Confiteantur Dómino misericórdiæ ejus; ℟. Et mirabília ejus fíliis hóminum. *Ps.* 106.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 1. g. Illi ergo hómines, cùm vidissent quod Jesus fécerat signum, dicébant : Quia hic est verè Prophéta qui ventúrus est in mundum. *Joan.* 6.

## FERIA SECUNDA.

Lectio I.

De libro Júdicum.

*Cap.* 4.

Addiderunt fílii Israel fácere malum in conspectu Dómini post mortem Aod, et trádidit illos Dóminus in manus Jabin regis Chánaan, qui regnávit in Asor : habuítque ducem exércitûs sui, nómine Sísaram; ipse autem habitábat in Hároseth géntium. Clamaveruntque fílii Israel ad Dóminum; nongentos enim habébat falcátos currus, et per viginti annos vehementer oppresserat eos. Erat autem Débbora Prophétis uxor Lápidoth, quæ judicábat pópulum in illo témpore. Et sedébat sub palma, quæ nómine illíus vocabátur, inter Rama et Bethel, in monte Ephraim : ascendebantque ad eam fílii Israel in omne judícium. Quæ misit et vocávit Barac fílium Abínoem de Cedes Néphthali, dixitque ad eum : Præcépit tibi Dóminus Deus Israel, vade, et duc exércitum in montem Thabor; tollesque tecum decem míllia pugnatórum de fíliis Néphthali et de fíliis Zabúlon : ego autem addúcam ad te in loco torrentis Cison Sísaram príncipem exércitûs Jabin, et currus ejus, atque omnem multitúdinem; et tradam eos in manu tua.

Lectio II.

Dixitque Débbora ad Barac: Surge; hæc est enim dies in qua trádidit Dóminus Sísaram in manus tuas : en ipse ductor est tuus. Descendit ítaque Barac de monte Thabor, et decem míllia pugnatórum cum eo. Perterruítque Dóminus Sísaram, et omnes currus ejus, universamque multitúdinem in ore gládii ad conspectum Barac; in tantum ut Sísara de curru desíliens, pédibus fúgeret, et Barac persequerétur fugientes currus, et exércitum usque ad Hároseth géntium, et omnis hóstium multitúdo usque ad interneciónem cáderet. * Sísara autem fúgiens, pervénit ad tentórium Jahel uxóris Haber Cinæi. Erat enim pax inter Jabin regem Asor, et domum Haber Cinæi. Egressa ígitur Jahel in occursum Sísaræ, dixit ad eum : Intra ad me, dómine mi; intra, ne tímeas. Qui ingressus tabernáculum ejus, et opertus ab ea pállio, dixit

ad eam : Da mihi, óbsecro, páululum aquæ, quia sítio valde. Quæ apéruit utrem lactis, et dedit ei bíbere, et opéruit illum. Dixitque Sísara ad eam : Sta antè óstium tabernáculi; et cùm vénerit áliquis intérrogans te, et dicens : Numquid hic est áliquis? respondébis : Nullus est. Tulit ítaque Jahel uxor Haber clavum tabernáculi, assúmens páriter et málleum; et ingressa abscónditè et cum siléntio, pósuit supra tempus cápitis ejus clavum, percussúmque málleo defixit in cérebrum usque ad terram : qui sopórem morti consócians, defécit, et mórtuus est.

LECTIO III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Joannem. *Cap.* 2.

In illo témpore ; Prope erat Pascha Judæórum, et ascendit Jesus Jerosólymam : et invénit in templo vendentes boves, et oves, et columbas, et nummulários sedentes. Et réliqua.

Homília sancti Augustíni Epíscopi.

*In Joan. tract.* 10. *n.* 4.

Quid audívimus, fratres? Ecce templum illud figúra adhuc erat; et ejécit inde Dóminus omnes qui sua quærébant, qui ad núndinas vénerant. Et quæ ibi vendébant illi? Quæ opus habébant hómines in sacrifíciis illíus témporis. Non ergo magnum peccátum, si hoc vendébant in templo, quod emebátur ut offerrétur in templo; et tamen ejécit inde illos. Quid, si ibi ebriósos invenîret, quid fáceret Dóminus; si vendentes ea quæ lícita sunt, et contra justítiam non sunt (quæ enim honestè emuntur, non illícitè venduntur) éxpulit tamen, et non est passus domum oratiónis fíeri domum negotiatiónis?

℟. Dixit Jesus his qui columbas vendébant : * Auferte ista hinc, et † Nolíte fácere domum Patris mei, domum negotiatiónis. ℣. Numquid ergo spelunca latrónum facta est domus ista? Ego, ego sum : ego vidi, dicit Dóminus. * Auferte. Glória. † Nolíte. *Joan.* 2. *Jerem.* 7.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 6. F. Cùm esset Jesus Jerosólymis in Pascha in die festo, multi credidérunt in nómine ejus, videntes signa ejus quæ faciébat. *Joan.* 2.

Orémus. ORATIO.

Da, quæsumus omnípotens Deus, ut sacro nos puríficante jejúnio, sincéris méntibus ad sancta ventúra fácias pervenîre; Per.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 7. *d.* Jesus non credébat semetipsum eis, eo quod ipse nosset omnes, et quia opus ei non erat, ut quis testimónium perhibéret de hómine : ipse enim sciébat quid esset in hómine. *Joan.* 2.

Orémus. ORATIO.

Deprecatiónem nostram, quæsumus Dómine, benígnus exaudi : et quibus supplicandi præstas affectum,

tríbue defensiónis auxílium ; Per Dóminum.

## FERIA TERTIA.

Lectio i.

De libro Júdicum.

*Cap.* 6.

Venit Angelus Dómini, et sedit sub quercu quæ erat in Ephra, et pertinébat ad Joas patrem famíliæ Ezri. Cùmque Gédeon fílius ejus excúteret atque purgáret frumenta in torculári, ut fúgeret Mádian, appáruit ei Angelus Dómini, et ait : Dóminus tecum, virórum fortíssime. Dixitque ei Gédeon : Obsecro, mi Dómine, si Dóminus nobiscum est, cur apprehendérunt nos hæc ómnia? Ubi sunt mirabília ejus quæ narravérunt patres nostri, atque dixérunt : De Ægypto eduxit nos Dóminus? Nunc autem derelíquit nos Dóminus, et trádidit in manu Mádian. * Respexitque ad eum Dóminus, et ait : Vade in hac fortitúdine tua, et liberábis Israel de manu Mádian : scito quod míserim te. Qui respondens, ait : Obsecro, mi Dómine, in quo liberábo Israel? Ecce família mea ínfima est in Manasse, et ego mínimus in domo patris mei.

Lectio ii. *Cap.* 7.

Ingressusque est Gédeon, et trecenti viri qui erant cum eo in partem castrórum, incipiéntibus vigíliis noctis médiæ, et custódibus suscitátis, cœpérunt búccinis clángere, et complódere inter se lagénas. Cùmque per gyrum castrórum in tribus personárent locis, et hydrias confregíssent, tenuérunt sinistris mánibus lámpades, et dextris sonantes tubas, clamaveruntque : Gládius Dómini, et Gedeónis; stantes sínguli in loco suo per circúitum castrórum hostílium. Omnia ítaque castra turbáta sunt, et vociferantes ululantesque fugérunt; et nihilóminus insistébant trecenti viri búccinis personantes. Immisitque Dóminus gládium in ómnibus castris et mútuâ se cæde truncábant.

Lectio iii.

Léctio sancti Evangélii secundùm Joannem. *Cap.* 7.

In illo témpore; Jam die festo mediante, ascendit Jesus in templum, et docébat. Et mirabantur Judæi, dicentes : Quómodo hic lítteras scit, cùm non didícerit? Et réliqua.

Homília sancti Augustíni Epíscopi.

*In Joan. tract.* 29. *n.* 6.

Si quis volúerit voluntátem ejus fácere, cognoscet de doctrína. Quis nésciat hoc esse fácere voluntátem Dei, operári opus ejus, id est, quod illi placet? Ipse autem Dóminus apertè ália loco dicit : Hoc est opus Dei, ut credátis in eum quem ille misit. Ut credátis in eum ; non, ut credátis ei. Nam et dæmones credébant ei, et non credébant in eum. Rursus étiam de Apóstolis ipsíus póssumus dícere,

Crédimus Paulo ; sed non, Crédimus in Paulum : Crédimus Petro; sed non, Crédimus in Petrum. Credenti enim in eum qui justíficat ímpium, deputátur fides ejus ad justítiam. Quid est ergo, crédere in eum? Credendo amáre, credendo dilígere, credendo in eum ire, et ejus membris incorporári. Ipsa est ergo fides quam de nobis éxigit Deus : et non ínvenit quod éxigat, nisi donáverit quod invéniat. Quæ fides, nisi quam definívit álio loco Apóstolus pleníssimè, dicens : Neque circumcísio áliquid valet, neque præpútium; sed fides quæ per dilectiónem operátur? Non qualiscumque fides, sed fides quæ per dilectiónem operátur : hæc in te sit, et intélliges de doctrína Dei. Quid enim intélliges? Quia doctrína ista non est mea, sed ejus qui misit me; id est: Intélliges quia Christus Fílius Dei, qui est doctrína Patris, non est ex seipso, sed Fílius est Patris.

℟. Dixit Jesus Judæis : Mea doctrína non est mea, sed ejus qui misit me : * Si quis volúerit voluntátem ejus fácere, cognoscet de doctrína utrùm ex Deo sit, an ego à meipso loquar. ℣. Omnis sapiéntia à Dómino Deo est, et præbuit illam diligéntibus se : * Si quis. Glória Patri. * Si quis. *Joan.* 7. *Eccli.* 1.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 8. G. Clamábat Jesus in templo dicens : Et me scitis, et unde sim scitis; et à meipso non veni. *Joan.* 7.

Orémus. Oratio.

Da, quæsumus Dómine, pópulis christiánis quod profiténtur agnóscere, et ágnitum dignis pœniténtiæ frúctibus adipisci; Per Dóminum nostrum.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 1. g. Quærébant eum apprehéndere; et nemo misit in illum manus, quia nondum vénerat hora ejus. *Joan.* 7.

Orémus. Oratio.

Miserere, Dómine, pópulo tuo; et contínuis tribulatiónibus laborantem propítius respiráre concéde; Per Dóminum.

## FERIA QUARTA.

### Lectio I.

De libro Júdicum.

*Cap.* 11.

Fuit illo témpore Jephte Galaadítes vir fortíssimus atque pugnátor, fílius mulíeris meretrícis, qui natus est de Gálaad. Hábuit autem Gálaad uxórem de qua suscépit fílios; qui postquam créverant, ejecérunt Jephte, dicentes : Hæres in domo patris nostri esse non póteris; quia de áltera matre natus es. Quos ille fúgiens atque devítans, habitávit in terra Tob. Congregatíque sunt ad eum viri ínopes, et latrocinantes, et quasi príncipem sequebantur. In illis diébus pugnábant fílii Ammon contra Israel. Quibus ácriter instán-

tibus, perrexérunt majóres natu de Gálaad, ut tóllerent in auxílium suî Jephte de terra Tob; dixeruntque ad eum: Veni, et esto princeps noster, et pugna contra fílios Ammon. Quibus ille respondit: Nonne vos estis qui odistis me, et ejecistis de domo patris mei? et nunc venistis ad me necessitáte compulsi. Dixeruntque príncipes Gálaad ad Jephte: Ob hanc ígitur causam nunc ad te venímus, ut proficiscáris nobiscum, et pugnes contra fílios Ammon, sisque dux ómnium qui hábitant in Gálaad. Jephte quoque dixit eis: Si verè venistis ad me, ut pugnem pro vobis contra fílios Ammon, tradideritque eos Dóminus in manus meas, ego ero vester princeps? Qui respondérunt ei: Dóminus, qui hæc audit, ipse mediátor ac testis est quod nostra promissa faciémus.

LECTIO II.

FACTUS est ergo super Jephte Spíritus Dómini, et circúiens Gálaad, et Manasse, Maspha quoque Gálaad, et inde tránsiens ad fílios Ammon, votum vovit Dómino, dicens: Si tradíderis fílios Ammon in manus meas, quicumque primus fúerit egressus de fóribus domûs meæ, mihíque occúrrerit revertenti cum pace à fíliis Ammon, eum holocaustum ófferam Dómino. Transivitque Jephte ad fílios Ammon, ut pugnáret contra eos: quos trádidit Dóminus in manu ejus. Percussitque ab Aroer usque dum vénias in Mennith, viginti civitátes, et usque ad Abel quæ est víneis cónsita, plagâ magnâ nimis; humiliatíque sunt fílii Ammon à fíliis Israel.* Revertente autem Jephte in Maspha domum suam, occurrit ei unigénita fília sua cum tympanis et choris; non enim habébat álios líberos. Quâ visâ, scidit vestimenta sua, et ait: Heu me! fília mea, decepisti me, et ipsa decepta es; apérui enim os meum ad Dóminum, et áliud fácere non pótero. Cui illa respondit: Pater mi, si aperuisti os tuum ad Dóminum, fac mihi quodcumque pollícitus es, concessâ tibi ultióne atque victóriâ de hóstibus tuis. Dixitque ad patrem: Hoc solum mihi præsta, quod déprecor: Dimitte me, ut duóbus ménsibus circúmeam montes, et plangam virginitátem meam cum sodálibus meis. Cui ille respondit: Vade. Et dimísit eam duóbus ménsibus. Cùmque abiisset cum sóciis ac sodálibus suis, flebat virginitátem suam in móntibus. Expletisque duóbus ménsibus, reversa est ad patrem suum, et fecit ei sicut vóverat, quæ ignorábat virum. Exinde mos incrébuit in Israel, et consuetúdo serváta est; ut post anni círculum convéniant in unum fíliæ Israel, et plangant fíliam Jephte Galaadítæ diébus quátuor.

LECTIO III.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Joannem.

*Cap.* 9.

In illo témpore; Prætériens Jesus, vidit hóminem cæcum à nativitáte. Et réliqua.

Homília sancti Augustíni Epíscopi.

*In Joan. tract.* 44. *n.* 1. 2.

Genus humánum est iste cæcus; hæc enim cæcitas cóntigit in primo hómine per peccátum, de quo omnes oríginem dúximus, non solùm mortis, sed étiam iniquitátis. Si enim cæcitas est infidélitas, et illuminátio fides; quem fidélem, quando venit Christus, invénit? Quandóquidem Apóstolus natus in gente Prophetárum, dicit: Fúimus et nos aliquando natúrâ fílii iræ, sicut et céteri. Si fílii iræ, fílii vindictæ, fílii pœnæ, fílii gehennæ. Quómodo natúrâ, nisi quia peccante primo hómine, vítium pro natúra inolévit: si vítium pro natúra inolévit, secundùm mentem omnis homo cæcus natus est. Si enim videt, non opus habet ductóre: si opus habet ductóre et illuminatóre, cæcus est ergo à nativitáte. Venit Dóminus: éxpuit in terram, de salíva sua lutum fecit; quia Verbum caro factum est: et inunxit óculos cæci. Inunctus erat, et nondum vidébat. Misit illum ad piscínam quæ vocátur Síloe, quod interpretátur Missus. Lavit óculos in ea: baptizátus est in Christo. Audistis grande mystérium. Catechúmenus inunctus est, nondum lotus. Sed unde inunctus? Credit in Christum. Quid dixi de sputo et luto? Quia Verbum caro factum est. Sed Catechúmenis non súfficit id quod inuncti sunt: festínent ad lavácrum, si lumen inquírunt.

℟. Expuit Jesus in terram, fecit lutum, linívit óculos cæci, et dixit ei: * Vade, lava. † Abiit, et lavit, et venit videns. ℣. Hæc dicit Dóminus Deus: Ducam cæcos in viám quam nésciunt; ponam ténebras coram eis in lucem. * Vade. Glória Patri. † Abiit. *Joan.* 9. *Is.* 42.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 4. d. A século non est audítum, quia quis apéruit óculos cæci nati. Nisi esset hic à Deo, non póterat fácere quidquam. *Joan.* 9.

Orémus. ORATIO.

Da, quæsumus, fámulis tuis, Dómine, spíritum novum, et Ecclésiæ tuæ ánnue jejúniis; ut ad superni lúminis claritátem, et regenerandi óculos apériant, et renáti semper incédant; Per.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 3. à. Cùm invenisset Jesus hóminem qui fúerat cæcus, dixit ei: Tu credis in Fílium Dei? At ille ait: Credo, Dómine. Et prócidens adorávit eum. *Joan.* 9.

Orémus. ORATIO.

Da nobis, quæsumus Dómine, perseverantem in tua voluntáte famulátum; ut in

diébus nostris, et mérito et número pópulus tibi sérviens augeátur; Per.

# FERIA QUINTA.

## Lectio I.

### De libro Júdicum.

*Cap.* 13.

Rursum filii Israel fecérunt malum in conspectu Dómini, qui trádidit eos in manus Philisthinórum quadraginta annis. Erat autem quidam vir de Sáraa, et de stirpe Dan, nómine Mánue, habens uxórem stérilem. Cui appáruit Angelus Dómini, et dixit ad eam: Stérilis es, et absque líberis; sed concípies, et páries filium. Cave ergo ne bibas vinum ac síceram, nec immundum quidquam cómedas; quia concípies et páries filium, cujus non tanget caput novácula: erit enim Nazaræus Dei ab infántia sua, et ex matris útero; et ipse incípiet liberáre Israel de manu Philisthinórum. * Quæ cùm venisset ad marítum suum, dixit ei: Vir Dei venit ad me, habens vultum angélicum, terríbilis nimis. Quem cùm interrogassem, quis esset, et unde venisset, et quo nómine vocarétur, nóluit mihi dícere; sed hoc respondit: Ecce concípies et páries filium: cave ne vinum bibas nec síceram, et ne áliquo vescáris immundo; erit enim puer Nazaræus Dei ab infántia sua, ex útero matris suæ, usque ad diem mortis suæ. Orávit ítaque Mánue Dóminum, et ait: Obsecro, Dómine, ut vir Dei quem misisti, véniat íterum, et dóceat nos quid debeámus fácere de púero qui nascitúrus est. Exaudivítque Dóminus deprecantem Mánue.

## Lectio II.

Et nesciébat Mánue quod Angelus Dómini esset. Dixítque ad eum: Quod est tibi nomen: ut, si sermo tuus fúerit explétus, honorémus te? Cui ille respondit: Cur quæris nomen meum, quod est mirábile? Tulit ítaque Mánue hædum de capris et libamenta, et pósuit super petram, ófferens Dómino qui facit mirabília; ipse autem et uxor ejus intuebantur. Cùmque ascénderet flamma altáris in cœlum, Angelus Dómini páriter in flamma ascendit. Quod cùm vidissent Mánue et uxor ejus, proni cecidérunt in terram; et ultrà eis non appáruit Angelus Dómini. Statímque intellexit Mánue Angelum Dómini esse, et dixit ad uxórem suam: Morte moriémur, quia vídimus Deum. Cui respondit múlier: Si Dóminus nos vellet occídere, de mánibus nostris holocaustum et libamenta non suscepisset, nec ostendisset nobis hæc ómnia, neque ea quæ sunt ventúra dixisset. Péperit ítaque filium, et vocávit nomen ejus Samson. Crevítque puer, et benedixit ei Dóminus. Cœpítque Spíritus Dómini esse cum eo.

LECTIO III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Lucam.

*Cap.* 7.

In illo témpore; Ibat Jesus in civitátem quæ vocátur Naim; et ibant cum eo discípuli ejus, et turba copiósa. Cùm autem appropinquáret portæ civitátis, ecce defunctus efferebátur fílius únicus matris suæ. Et réliqua.

Homília sancti Ambrósii Epíscopi.

*In Luc. l.* 5. *n.* 90.

Audito Dei verbo, stetérunt acerbi illíus fúneris portitóres, qui corpus humánum letháli fluxu natúræ materiális urgébant. Quid enim áliud nisi quasi in quodam féretro, hoc est, suprémi fúneris instrumento, jacémus exánimes; cùm vel ignis immódicæ cupiditátis exæstuat, vel frígidus humor exundat, vel pigrâ quâdam terréni córporis habitúdine vigor hebetátur animórum, vel concrétâ noster spíritus labe, puræ lucis vácuus, mentem alit? Hi sunt nostri fúneris portitóres. Sed quamvis supréma mortis spem vitæ omnis aboléverint, et túmulo próximá córpora jáceant defunctórum, verbo tamen Dei jam moritúra resurgunt cadávera, vox redit, rédditur fílius matri, revocátur à túmulo, erípitur à sepulcro. Quis est iste túmulus tuus, nisi mali mores? Túmulus tuus perfídia est, sepulcrum tuum guttur est: sepulcrum enim patens est guttur eórum, unde verba mórtua proferuntur. Ab hoc sepulcro te líberat Christus: ab hoc túmulo resurges, si áudias verbum Dei. Et si grave peccátum est, quod pœniténtiæ tuæ lácrymis ipse laváre non possis, fleat pro te mater Ecclésia, quæ pro síngulis tanquam pro únicis fíliis vídua mater intérvenit. Compátitur enim quodam spiritáli dolóre natúræ, cùm suos líberos lethálibus vítiis ad mortem cernit urgéri.

℟. Defunctus efferebátur fílius únicus matris suæ; et hæc vídua erat. Quam cùm vidisset * Dóminus, misericórdiâ motus super eam, † Dixit illi: Noli flere. ℣. Non despíciet Dóminus víduam, si effundat loquélam gémitûs. * Dóminus. Glória Patri. † Dixit illi. *Luc.* 7. *Eccli.* 35.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 1. *D.* Tétigit lóculum Jesus, et ait: Adolescens, tibi dico, surge. Et resédit qui erat mórtuus, et cœpit loqui. Et dedit illum matri suæ. *Luc.* 7.

Orémus. ORATIO.

Moveant pietátem tuam, misericors Deus, afflictæ Ecclésiæ preces et lácrymæ: et ejus fílios in morte peccáti jacentes, ad vitam tuâ virtúte revocáre dignéris; Per.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 4. f. Magnificábant Deum, dicentes: Quia Prophéta magnus surrexit in nobis, et quia Deus visitávit plebem suam. *Luc.* 7.

Orémus. Oratio.

Da nobis, miséricors Deus, in jejúnii humilitáte prostrátis, ut nobis non váleat carnis infírmitas dominári; quia, si vis, potes nostrî cítiùs miseréri, ut spiritália cogitémus, et concupiscéntias carnis, te adjuvante, vincámus; Per Dóminum.

## FERIA SEXTA.

Lectio I.

De libro Júdicum.

*Cap.* 16.

Samson cùm apprehendissent Philisthiim, statim eruérunt óculos ejus, et duxérunt Gazam vinctum caténis, et clausum in cárcere mólere fecérunt. Jamque capilli ejus renasci cœperant; et príncipes Philisthinórum convenérunt in unum, ut immolárent hóstias magníficas Dagon deo suo, et epularentur, dicentes: Trádidit deus noster inimícum nostrum Samson in manus nostras. Quod étiam pópulus videns, laudábat deum suum, eademque dicébat: Trádidit deus noster adversárium nostrum in manus nostras, qui delévit terram nostram, et occídit plúrimos. Lætantesque per convívia, sumptis jam épulis, præcepérunt ut vocarétur Samson, et ante eos lúderet.

Lectio II.

Qui adductus de cárcere, ludébat ante eos; feceruntque eum stare inter duas columnas. Qui dixit púero regenti gressus suos: Dimitte me, ut tangam columnas quibus omnis imminet domus, et reclíner super eas; et páululum requiescam. Domus autem erat plena virórum ac mulierum: et erant ibi omnes príncipes Philisthinórum, ac de tecto et solário circiter tria míllia utriusque sexûs, spectantes ludentem Samson. * At ille, invocáto Dómino, ait: Dómine Deus, memento meî, et redde mihi nunc fortitúdinem prístinam, Deus meus; ut ulciscar me de hóstibus meis, et pro amissióne duórum lúminum unam ultiónem recípiam. Et apprehendens ambas columnas quibus innitebátur domus, alteramque eárum déxterâ, et álteram lævâ tenens, ait: Moriátur ánima mea cum Philísthiim. Concussisque fórtiter columnis, cécidit domus super omnes príncipes, et céteram multitúdinem quæ ibi erat: multóque plures interfécit móriens, quàm antè vivus occíderat.

Lectio III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Joannem. *C.* 11.

In illo témpore; Erat quidam languens Lázarus à Bethánia, de castello *Mariæ, et* Marthæ sorôris ejus. Et réliqua.

Homília sancti Joannis Chrysóstomi.

27 *in Matth. n.* 4.

Multi ex iis qui vivere videntur, à mórtuis nihil dífferunt, si in nequítia *vivant;* imò

mò deterióres étiam mórtuis sunt. Nam qui mórtuus est, inquit, justificátus est à peccáto. Hic autem nequítiæ servit. Ne mihi díxeris, illum à vérmibus non corródi, non in sandápila jacére, non óculos clausisse, neque ínstitis ligátum esse. Nam gravióra pátitur, quàm mórtuus; non vérmibus corrodéntibus, sed feris immanióribus ánimi affectibus ipsum discerpéntibus. At non vides corpus ejus pútridum: et quid hoc? Hic quippe, ántequam corpus ejus putrescat, ánimam habet corruptam, pérditam, fetóre plúrimo labefactátam. Ille quidem per decem dies fetet; hic verò per totam vitam fetórem emittit, os habens cloácis ipsis immúndius. Sed ille equo fertur? Quid hoc est? Nam hic in lecto decumbit; quodque grávius est, dum illum corruptum et fetentem nemo videt, hic vivens ac fétidus circumquáque vagátur, mórtuam ánimam in córpore quasi in sepulcro circúmferens. Ac si posset ánima cónspici viri in delíciis et in nequítia viventis, vidéres longè mélius esse in sepulcro ligátum jacére, quàm grave illud insensibilitátis habére opérculum. Quapropter cónvenit, ut mortuórum horumce propinqui, quóniam illi sic sine sensu jacent, ad Jesum accédant pro illis, ut olim María pro Lázaro.

℟. Ego sum resurréctio et vita. * Qui credit in me, etiamsi mórtuus fúerit, vivet: et † Omnis qui vivit, et credit in me, non moriétur in æternum. ℣. Edúcam vos de sepulcris vestris, et sciétis quia ego Dóminus. * Qui. Glória Patri. † Omnis. *Joan.* 11. *Ezech.* 37.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 1. a. Pródiit qui fúerat mórtuus, ligátus pedes et manus ínstitis; et fácies illíus sudário erat ligáta. Dixit eis Jesus: Sólvite eum, et sínite abíre. *Joan.* 11.

Orémus. ORATIO.

EXAUDI nos, Dómine, per contínua jejúnia tuam pro peccatóribus misericórdiam deprecantes; ut voce tuâ intérius à morte excitáti, à peccatórum vínculis liberentur; Per Dóminum.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 1. f. Multi ex Judæis qui vénerant ad Maríam et Martham, et víderant quæ fecit Jesus, credidérunt in eum. *Joan.* 11.

Orémus. ORATIO.

DEUS, humílium consolátor, et fidélium fortitúdo, propítius adesto précibus supplicántium: ut humána fragílitas quæ per se proclívis est ad labendum, per te semper muniátur ad standum; et quæ per se multíplicat offensam, per te semper reparétur ad véniam; Per Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum, qui tecum vivit et regnat in unitáte Spíritûs sancti Deus, per ómnia sécula seculórum.

## SABBATO.

### Lectio i.

Incipit liber Ruth. *Cap.* 1.

In diébus uníus Júdicis, quando júdices præerant, facta est fames in terra. Abiitque homo de Béthleem Juda, ut peregrinarétur in regióne Moabítide cum uxóre sua ac duóbus líberis. Ipse vocabátur Elímelech, et uxor ejus Nóemi: et duo fílii, alter Máhalon, et alter Chélion, Ephrathæi de Béthleem Juda. Ingressíque regiónem Moabítidem, morabantur ibi. * Et mórtuus est Elímelech marítus Nóemi; remansitque ipsa cum fíliis. Qui accepérunt uxóres Moabítidas, quarum una vocabátur Orpha, áltera verò Ruth. Manseruntque ibi decem annis, et ambo mórtui sunt, Máhalon vidélicet et Chélion: remansitque múlier orbáta duóbus líberis ac maríto. Et surrexit ut in pátriam pérgeret, cum utráque nuru sua de regióne Moabítide; audíerat enim quod respexisset Dóminus pópulum suum, et dedisset eis escas.

### Lectio ii. *Cap.* 4.

Tulit ítaque Booz Ruth et accépit uxórem, ingressusque est ad eam, et dedit illi Dóminus ut concíperet et páreret fílium. Dixeruntque mulíeres ad Nóemi: Benèdictus Dóminus, qui non est passus ut defíceret successor famíliæ tuæ, et vocarétur nomen ejus in Israel, et hábeas qui consolétur ánimam tuam, et enútriat senectútem: de nuru enim tua natus est, quæ te díligit; et multò tibi mélior est, quàm si septem habéres fílios. Susceptumque Nóemi púerum pósuit in sinu suo, et nutrícis ac gérulæ fungebátur offício. Vicínæ autem mulíeres congratulantes ei, et dicentes: Natus est fílius Nóemi, vocavérunt nomen ejus, Obed. Hic est pater Isai, patris David.

### Lectio iii.

Léctio sancti Evangélii secundùm Joannem. *Cap.* 8.

In illo témpore; Locútus est Jesus Scribis et Pharisæis, dicens: Ego sum lux mundi; qui séquitur me, non ámbulat in ténebris, sed habébit lumen vitæ. Et réliqua.

Homília sancti Augustíni Epíscopi. *In Joan. tract.* 34. *n.* 2, *etc.*

Non est Dóminus Christus sol factus, sed per quem sol factus est. Omnia enim per ipsum facta sunt, et sine ipso factum est nihil. Est ergo lux, quæ fecit hanc lucem. Hanc amémus, hanc intellígere cupiámus, ipsam sitiámus; ut ad ipsam, duce ipsâ, aliquando veniámus; et in illa ita vivámus, ut nunquam omníno moriámur. Per hoc Lumen factum est solis lumen; et Lumen quod fecit solem, sub quo fecit et nos, factum est sub sole *propter* nos. Noli contémnere nubem carnis: nube tégitur, non ut obscurétur, sed ut temperé-

tur. Loquens ergo per nubem carnis Lumen indefíciens, Lumen sapiéntiæ, ait homínibus: Ego sum lux mundi; qui séquitur me, non ambulábit in ténebris, sed habébit lumen vitæ. In eo quod fácere debémus, præsens tempus pósuit: quod autem promísit faciéntibus, futúri témporis verbo significávit. Qui séquitur, habébit. Modò séquitur, pòst habébit: modò séquitur per fidem, pòst habébit per spéciem. Ergo modò sequámur Dóminum; veritáte perfruémur, cùm vidérimus fácie ad fáciem.

℟. Locútus est Jesus: Ego sum lux mundi; * Qui séquitur me, non ámbulat in ténebris, sed † Habébit lumen vitæ. ℣. In me grátia omnis viæ et veritátis: in me omnis spes vitæ et virtútis. * Qui. Glória. † Habébit. *Joan.* 8. *Eccli.* 25.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 3. à. Locútus est Jesus, docens in templo; et nemo apprehendit eum, quia necdum vénerat hora ejus. *Joan.* 8.

Orémus. Oratio.

Cordibus nostris, quæsumus Dómine, grátiæ tuæ lucem benignus infunde; ut mandatórum tuórum lege perceptâ, te sequámur, et ad lumen ætérnæ vitæ perveníre mereámur; Qui vivis.

## IN I VESPERIS. DOMINICÆ PASSIONIS.

*Ant.* 4. E. Propter scelus pópuli mei percussi eum, et Dóminus vóluit contérere eum in infirmitáte. *Is.* 53.

*Ant.* 1. D. Si posúerit pro peccáto ánimam suam, vidébit semen longævum, et voluntas Dómini in manu ejus dirigétur. *Is.* 53.

*Ant.* 7. d. Justificábit ipse justus multos, et iniquitátes eórum ipse portábit. *Is.* 53.

*Ant.* 8. G. Eum qui non nóverat peccátum, pro nobis peccátum fecit Deus, ut nos efficerémur justítia Dei in ipso. 2 *Cor.* 5.

*Ant.* 6. F. Commendat caritátem suam Deus in nobis; quóniam justificáti in sánguine Christi, salvi érimus ab ira per ipsum. *Rom.* 5.

Capitulum. *Levit.* 23.

Hæ sunt fériæ Dómini sanctæ, quas celebráre debétis tempóribus suis. Mense primo, quartâ-décimâ die mensis ad vésperum, Phase Dómini est: et quintâ-décimâ die mensis hujus, solémnitas azymórum Dómini est.

℟. Hóstiæ quæ secundùm legem offeruntur, nunquam possunt auferre peccáta: * Christus autem unam pro peccátis ófferens hóstiam, unâ oblatióne consummávit in sempitérnum sanctificátos. ℣. Sacrifícium et oblatiónem noluisti, Deus; holocaustum et pro peccáto non postulasti: * Christus autem. *Hebr.* 10. *Ps.* 39.

*Ab hac die usque ad Pascha, in omni Officio de Tempore, omittitur* Glória Patri *in* ℟, *etiam brevibus.*

HYMNUS. *C.*

FANDO quis audívit? Dei
Quis grande dicat bráchium?
Perculsa mens confúnditur;
Stupet fides, vox déficit.

Ab orbe, Jesu, cóndito
Occísus Agnus, nunc Patri
Priscis adumbrátam sacris
Ardes litáre víctimam.

At cur humi stratus jaces?
Quis iste mœrentis pavor?
Quis iste qui toto fluit
Sudor cruentus córpore?

Hunc vis dolóris éxprimit,
Horrorque teter críminum:
Vices nocentûm sústinens,
Iram reformídas Patris.

Te terret objectus calix:
At ille, ni totum bibas,
Per sempiterna nos manet
Exhauriendus sécula.

Vincet pavórem cáritas;
Vincet voluntas pátria:
Temet potestáti, Deus,
Tradis tenebrárum volens.

Et jam flagellis, íctibus,
Ludíbriis, spinis, cruci,
Piaculáris hóstia,
Voves adorandum caput.

Qui Fílium tradit, Patri,
Natóque sit laus víctimæ:
Par sit tibi laus qui sacram
Succendis aram, Spíritus.

Amen.

℣. Obmútui, et non apérui os meum, ℟. Quóniam tu fecisti. *Ps.* 38.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 4. c. Ego quasi agnus mansuétus, qui portátur ad víctimam. *Jerem.* 11.

*Oratio ut infrà ad Laudes.*

COMPLETORIUM, *ut suprà* 124, *sine* Glória Patri *ad* ℟ *br.* In manus.

## DOMINICA PASSIONIS.

*Duplex-minus.*

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invit.* Christum qui passus est pro nobis, * Veníte, adorémus. 1 *Petr.* 2. *Repetitur,* Christum.

*Ps.* Veníte, *sine* Glória Patri; *sed finito ultimo versu Psalmi, dicitur* * Veníte adorémus, *et deinde repetitur Invitatorium.*

*Hymnus,* Oppróbriis, Jesu, satur, 227.

*Psalmi, Antiphonæ, et* ℣, *ut in Psalterio pro tempore Passionis.*

IN I NOCTURNO.

LECTIO I.

Incipit liber Jeremíæ Prophétæ. *Cap.* 1.

VERBA Jeremíæ fílii Helcíæ de sacerdótibus qui fuérunt in Anathoth in terra Bénjamin. Quod factum est verbum Dómini ad eum in diébus Josíæ fílii Amon regis Juda, in tértio décimo anno regni ejus. Et factum est in diébus Jóakim fílii Josíæ regis Juda, usque ad consummatiónem undécimi anni Sedecíæ fílii Josíæ regis Juda, usque ad transmigratiónem Jerúsalem, in mense quinto. Et factum est verbum Dómini ad me, dicens: Priusquam te formárem in útero, novi te: et ántequam exíres de vulva, sanctificávi te; et Prophétam in géntibus dedi te.

Et dixi : A, a, a, Dómine Deus; ecce néscio loqui, quia puer ego sum. Et dixit Dóminus ad me : Noli dícere : Puer sum, quóniam ad ómnia quæ mittam te, ibis; et univérsa quæcumque mandávero tibi, loquéris. Ne tímeas à fácie eórum ; quia tecum ego sum, ut éruam te, dicit Dóminus. ¶ Jerúsalem, Jerúsalem, convértere ad Dóminum Deum tuum.

¶ *Sic terminantur omnes Lectiones de Jeremia Propheta, ab hac die usque ad Sabbatum sanctum, nihil respondendo.*

℟. Dixit Dóminus ad Móysen : Mense primo, quartâdécimâ die mensis, Phase Dómini erit; offeretisque hircum pro peccáto unum, * Ut expiétur pro vobis. ℣. Non per sánguinem hircórum et taurórum, sed per próprium sánguinem introívit Christus in sancta; * Ut expiétur. *Numer.* 28. *Hebr.* 9.

Lectio II. *Cap.* 2.

Hæc dicit Dóminus : Quid invenérunt patres vestri in me iniquitátis, quia elongavérunt à me, et ambulavérunt post vanitátem, et vani facti sunt? Et non dixérunt : Ubi est Dóminus qui ascéndere nos fecit de terra Ægypti; qui tradúxit nos per desértum, per terram inhabitábilem et ínviam, per terram sitis, et imáginem mortis, per terram in qua non ambulávit vir, neque habitávit homo? Et indúxi vos in terram Carméli, ut comederétis fructum ejus, et óptima illíus : et ingressi contaminastis terram meam, et hæreditátem meam posuistis in abominatiónem. Sacerdótes non dixérunt : Ubi est Dóminus? Et tenentes legem nesciérunt me, et pastóres prævaricáti sunt in me, et Prophétæ prophetavérunt in Baal, et idóla secúti sunt. Proptérea adhuc judício conténdam vobiscum, ait Dóminus, et cum fíliis vestris disceptábo. Jerúsalem.

℟. Sument fílii Israel de sánguine agni, ac ponent super utrumque postem, et in superlimináribus domórum : * Erit autem sanguis in signum, nec erit plaga disperdens. ℣. Justificáti in sánguine Christi, salvi érimus ab ira per ipsum. * Erit. *Exod.* 12. *Rom.* 5.

Lectio III.

Transite ad ínsulas Cethim, et vidéte; et in Cedar míttite, et consideráte vehementer : et vidéte si factum est hujuscémodi, si mutávit gens deos suos; et certè ipsi non sunt dii : pópulus verò meus mutávit glóriam suam in idólum. Obstupéscite, cœli, super hoc; et portæ ejus, desolámini vehementer, dicit Dóminus. Duo enim mala fecit pópulus meus : me dereliquérunt fontem aquæ vivæ, et fodérunt sibi cisternas, cisternas dissipátas, quæ continére non valent aquas. Numquid servus est Israel,

aut vernáculus? Quare ergo factus est in prædam? Super eum rugiérunt leónes, et dedérunt vocem suam, posuérunt terram ejus in solitúdinem: civitátes ejus exustæ sunt, et non est qui hábitet in eis. Fílii quoque Mémpheos et Taphnes constupravérunt te usque ad vérticem. Numquid non istud factum est tibi, quia dereliquisti Dóminum Deum tuum, eo témpore quo ducébat te per viam? Jerúsalem.

℟. Fílius hóminis tradétur princípibus Sacerdótum: et damnábunt eum morte, et tradent eum géntibus; * Illúdent ei, et cónspuent eum, et flagellábunt eum, et interfícient eum. ℣. Sicut ovis ad occisiónem ducétur; et non apériet os suum. * Illúdent ei. *Marc.* 10. *Is.* 53.

*IN II NOCTURNO.*

LECTIO IV.

Sermo sancti Leónis Papæ.

*De Quadrag.* 9. *c.* 1.

In ómnibus, dilectíssimi, solemnitátibus christiánis, non ignorámus Paschále sacramentum esse præcípuum. Cui condignè et cóngruè suscipiendo totíus quidem nos témporis institúta præformant: sed devotiónem nostram præsentes vel máximè dies éxigunt, quos illi sublimíssimo divínæ misericórdiæ sacramento scimus esse contíguos. In quibus méritò à sanctis Apóstolis per doctrínam Spíritûs sancti majóra sunt ordináta jejúnia; ut per commúne consórtium crucis Christi, étiam nos áliquid in eo quod propter nos gessit, agerémus, sicut Apóstolus ait: Si compátimur, et conglorificábimur. Certa atque secúra est expectátio promissæ beatitúdinis, ubi est participátio Domínicæ passiónis. Tu autem.

℟. Réspice inimícos meos; quóniam multiplicáti sunt, et ódio iníquo odérunt me. * Custódi, Dómine, ánimam meam, et érue me. ℣. Odérunt et me, et Patrem meum, ut adimpleátur sermo qui in lege eórum scriptus est: Quia ódio habuérunt me gratis. * Custódi. *Ps.* 24. *Joan.* 15.

LECTIO V.

Nemo est, dilectíssimi, cui per conditiónem témporis societas hujus glóriæ denegétur, tanquam tranquíllitas pacis vácua sit occasióne virtútis. Apóstolus enim prædicat, dicens: Omnes qui piè volunt vívere in Christo, persecutiónem patientur; et ideo nunquam deest tribulátio persecutiónis, si nunquam desit observántia pietátis. Dóminus ipse in exhortatiónibus suis dicit: Qui non áccipit crucem suam, et séquitur me, non est me dignus. Nec dubitáre debémus, hanc vocem non solùm ad discípulos Christi, sed ad cunctos fidéles, totamque Ecclésiam pertinére, quæ salutáre suum in his qui áderant, universáliter audiébat.

℟. Deus meus es tu : * Ne discésseris à me, quóniam tribulátio próxima est; quóniam non est qui ádjuvet. ℣. Venit hora; ecce Filius hóminis tradétur in manus peccatórum : * Ne. *Ps.* 21. *Marc.* 14.

LECTIO VI.

SICUT ergo totíus est témporis piè vívere, ita totíus est témporis crucem ferre; quæ méritò unicuíque sua dícitur, quia própriis modis atque mensúris ab unoquóque tolerátur. Unum nomen est persecutiónis, sed non una est causa certáminis : et plus plerumque perículi est in insidiatóre occulto, quàm in hoste manifesto. Beátus Job alternántibus bonis ac malis mundi hujus erudítus, piè veraciterque dicébat : Nonne tentátio est vita hóminis super terram? Quóniam non solis dolóribus córporis atque supplíciis ánima fidélis impétitur; verùm étiam, salvâ incolumitáte membrórum, gravi morbo urgétur, si carnis voluptáte mollítur. Sed cùm caro concupiscit adversùs spíritum, et spíritus advérsùs carnem, præsídio crucis mens rationális instrúitur; nec cupiditátibus nóxiis illecta consentit, quóniam continéntiæ clavis et Dei timóre transfígitur.

℟. Dómine, ne elongáveris auxílium tuum à me : * Ad defensiónem meam cónspice. ℣. Nunc ánima mea turbáta est. Et quid dicam? Pater, salvífica me ex hac hora : * Ad defensiónem meam cónspice. *Psalm.* 21. *Joan.* 12.

## *IN III NOCTURNO.*

LECTIO VII.

Léctio sancti Evangélii secundùm Joannem.

*Cap.* 8.

IN illo témpore : Dixit Jesus turbis Judæórum : Quis ex vobis árguet me de peccáto? Si veritátem dico vobis, quare non créditis mihi? Et réliqua.

Homília sancti Gregórii Papæ. 18 *in Ev. n.* 1.

PENSATE, fratres caríssimi, mansuetúdinem Dei. Relaxáre peccáta vénerat, et dicébat : Quis ex vobis árguet me de peccáto? Non dedignátur ex ratióne osténdere se peccatórem non esse, qui ex virtúte divinitátis póterat peccatóres justificáre. Sed terríbile est valde quod súbditur : Qui ex Deo est, verba Dei audit; proptérea vos non audítis, quia ex Deo non estis. Si enim ipse verba Dei audit qui ex Deo est, et audíre verba ejus non potest quisquis ex illo non est; intérroget se unusquisque si verba Dei in aure cordis pércipit, et intélliget unde sit. Cœlestem pátriam desideráre Véritas jubet, carnis desidéria cónteri, mundi glóriam declináre, aliéna non appétere, própria largíri. Penset ergo apud se unusquisque vestrûm, si hæc vox Dei in cordis ejus aure convâluit;

et quia jam ex Deo sit, agnoscit.

℟. Quis ex vobis árguet me de peccáto? * Si veritátem dico vobis, quare non créditis mihi? ℣. Quare detraxistis sermónibus veritátis, cùm è vobis nullus sit qui possit argúere me? * Si. *Joan.* 8. *Job* 6.

LECTIO VIII.

Ego dæmónium non hábeo. In quibus verbis quid áliud nisi supérbia nostra confúnditur? quæ si exagitáta vel léviter fúerit, atrocióres injúrias reddit, quàm accéperat: facit mala quæ potest; minátur et quæ fácere non potest. Ecce injúriam suscípiens Dóminus non iráscitur, non contumeliósa verba respondet. Qui si eisdem ista dicéntibus respondére voluisset, Dæmónium vos habétis, verum profectò díceret; quia nisi impléti essent dæmónio, tam perversa de Deo loqui non possent. Sed acceptâ injúriâ, étiam quod verum erat, dícere Véritas nóluit; ne non dixisse veritátem, sed, provocátus, contuméliam reddidisse viderétur. Ex qua re quid nobis innúitur, nisi ut eo témpore quo à próximis ex falsitáte contumélias accípimus, eórum étiam vera mala taceámus, ne ministérium justæ correptiónis in arma vertámus furóris.

℟. Qui ex Deo est, verba Dei audit: * Proptérea vos non audítis, quia ex Deo non estis. ℣. Misit Dóminus ad vos omnes servos suos Prophétas, et non audistis: * Proptérea vos non audítis. *Joan.* 8. *Jerem.* 25.

LECTIO IX.

Sed quia quisque Dei zelo úritur, sæpe à pravis homínibus dehonestátur, in semetipso nobis Dóminus patiéntiæ præbuit exemplum, qui ait: Sed honoríficо Patrem meum, et vos inhonorastis me. Sed quid nobis ad ista faciendum sit, adhuc exemplo nos ádmonet, cùm subjungit: Ego autem non quæro glóriam meam: est qui quærat, et júdicet. Scimus certè quod scriptum est: Quia Pater omne judícium dedit Fílio; et tamen ecce idem Fílius injúrias accípiens, glóriam suam non quærit. Illátas contumélias Patris judício reservat; ut nobis profectò insínuet quantùm nos esse patientes debémus, dum se adhuc ulcisci non vult, et ipse qui júdicat.

℟. Judæi dixérunt Jesu: Nonne bene dícimus nos quia Samaritánus es tu, et dæmónium habes? Respondit Jesus: * Ego dæmónium non hábeo, sed honoríficо Patrem meum. ℣. Insurrexistis super me ore vestro, et derogastis adversùm me verba vestra. * Ego dæmónium non hábeo. *Joan.* 8. *Ezech.* 35.

*Repetitur* ℟. Judæi, *usque ad* ℣.

℣ *Sacerd.* Laudans invocábo Dóminum; ℟. Et ab

inimícis meis salvus ero. *Ps.* 17.

AD LAUDES.

*Ant.* 4. *D.* Quem contestábor ut áudiat? Ecce incircumcísæ aures eórum, et audíre non possunt. *Jerem.* 6.

*Ant.* 6. F. Ecce verbum Dómini factum est eis in oppróbrium : idcirco laborávi sústinens. *Jerem.* 6.

*Ant.* 8. G. Omnes subsannant me; quia jam olim loquor, vocíferans iniquitátem. *Jerem.* 20.

*Ant.* 7. b. Dixérunt : Veníte, percutiámus eum linguâ, et non attendámus ad universos sermónes ejus. *Jerem.* 18.

*Ant.* 3. a. Vidisti, Dómine, omnem furórem, universas cogitatiónes eórum adversùm me. *Thren.* 3.

CAPITULUM. *Jerem.* 20.

AUDIVI contumélias multórum, et terrórem in circúitu: Persequímini, et persequámur eum, ab ómnibus viris qui erant pacífici mei, et custodientes latus meum, si quo modo decipiátur; et prævaleámus adversùs eum, et consequámur ultiónem ex eo. Dóminus autem mecum est quasi bellátor fortis.

*Hymn.* Dum Christe, 227.

℣. Intende ánimæ meæ, et líbera eam : ℟. Propter inimícos meos éripe me. *Ps.* 68.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 8. *G.* Dixit Jesus : Ego non quæro glóriam meam : est qui quærat, et júdicet. *Joan.* 8.

Orémus. ORATIO.

DEUS, qui per Unigénitum tuum passum et humiliátum usque ad mortem antíqui hostis contrivisti supérbiam : da fidélibus tuis, et quæ ipse propter nos pértulit, dignè recólere, et adversa ómnia ejus exemplo patienter toleráre; Qui tecum vivit.

AD PRIMAM.

*Ant.* 1. D. Amen, amen dico vobis; si quis sermónem meum serváverit, mortem non vidébit in ætérnum. *Joan.* 8.

*In* ℟ *br.* ℣. Qui passus es * pro nobis. *Non dicitur* Glória Patri.

AD TERTIAM.

*Ant.* 6. F. Dixérunt Judæi : Numquid tu major es patre nostro Abraham, qui mórtuus est? et Prophétæ mórtui sunt. Quem teipsum facis? *Joan.* 8.

CAPITULUM. *Rom.* 15.

UNUSQUISQUE vestrûm próximo suo pláceat in bonum ad ædificatiónem. Etenim Christus non sibi plácuit, sed sicut scriptum est : Impropéria improperántium tibi cecidérunt super me.

℟ *br.* Exurge, Deus, * Júdica causam tuam. Exurge. ℣. Memor esto * improperiórum tuórum; * Júdica. *Resumitur* ℟ Exurge. *Ps.* 73.

℣. Exprobravérunt inimíci tui, Dómine; ℟. Exprobravérunt commutatiónem Christi tui. *Ps.* 88.

AD SEXTAM.

*Ant.* 4. E. Si ego glorífico

meipsum, glória mea nihil est. Est Pater meus qui glorificat me; et non cognovistis eum. *Joan.* 8.

CAPITULUM. *Hebr.* 5.

Christus in diébus carnis suæ, preces supplicationesque ad eum qui possit illum salvum fácere à morte, cum clamóre válido et lácrymis ófferens, exaudítus est pro sua reveréntia.

℟ *br.* Deus meus, éripe me * De manu peccatóris. Deus. ℣. Et de manu contra legem agentis, * et iníqui: * De manu. ℟. Deus. *Ps.* 70.

℣. Illustra fáciem tuam super servum tuum : ℟. Dómine, non confundar; quóniam invocávi te. *Ps.* 30.

AD NONAM.

*Ant.* 2. D. Abraham pater vester exultávit ut vidéret diem meum : vidit, et gavísus est. *Joan.* 8.

CAPITULUM. *Hebr.* 11.

Fide óbtulit Abraham Isaac, cùm tentarétur : et unigénitum ófferébat, qui suscéperat repromissiónes, ad quem dictum est : Quia in Isaac vocábitur tibi semen; árbitrans quia et à mórtuis suscitáre potens est Deus : unde eum et in parábolam accépit.

℟ *br.* Quis dabit ex Sion salutáre Israel ? * Exultábit Jacob. Quis dabit. ℣. Cùm avérterit Deus * captivitátem plebis suæ, * Exultábit. ℟. Quis dabit. *Ps.* 52.

℣. Congregáte Dómino sanctos ejus, ℟. Qui órdinant testamentum ejus super sacrifícia. *Ps.* 49.

AD II VESPERAS.

*Ant.* 8. *G.* Dixit Jesus : Ego non quæro glóriam meam : est qui quærat, et júdicet. *Joan.* 8.

*Ant.* 1. D. Amen, amen dico vobis; si quis sermónem meum serváverit, mortem non vidébit in æternum. *Joan.* 8.

*Ant.* 6. F. Dixérunt Judæi : Numquid tu major es patre nostro Abraham, qui mórtuus est ? et Prophétæ mórtui sunt. Quem teipsum facis ? *Joan.* 8.

*Ant.* 4. E. Si ego glorífico meipsum, glória mea nihil est. Est Pater meus qui glorificat me; et non cognovistis eum. *Joan.* 8.

*Ant.* 2. D. Abraham pater vester exultávit ut vidéret diem meum : vidit, et gavísus est. *Joan.* 8.

CAPITULUM. *Deut.* 9.

Domine Deus, ne disperdas pópulum tuum, et hæreditátem tuam quam redemisti in magnitúdine tua, quos eduxisti de Ægypto in manu forti. Recordáre servórum tuórum Abraham, Isaac, et Jacob : ne aspícias durítiam pópuli hujus.

*Hymn.* Vexilla, *infrà* 229.

℟. Deus rex noster ante sécula : ℟. Operátus est salútem in médio terræ. *Ps.* 73.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 2. D. Amen, amen dico vobis, ántequam Abraham fieret, ego sum. *Joan.* 8.

*Oratio ut suprà ad Laudes.*

COMPLETORIUM, *ut in Ordinario Breviarii*, 124.

## IN FERIIS PASSIONIS.

### AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invit.* Christum qui passus est pro nobis, * Veníte, adorémus. 1 *Petr.* 2.

*Ps.* Veníte, *sine* Glória Patri; *sed post ultimum versum Psalmi repetitur Invitatorium.*

HYMNUS. *C.*

OPPROBRIIS, Jesu, satur,
Ligni fatiscens póndere,
Ferále, verus Isaac,
Mactandus ascendis jugum.

Clavis statim trabálibus
Fixus manus, fixus pedes,
Sublíme terris ómnibus
Attólleris spectáculum.

In nos ô æterni Patris
Incomprehensa cáritas!
Insons cruentæ Fílius
Pro sóntibus morti datur.

Illo lavári sánguine
Opórtuit mundi scelus:
Talem sevéra Núminis
Poscébat ira víctimam.

Crux débitæ nos vínculo
Damnatiónis éximit;
Et pacis æterno ligat
Terras polumque fœdere.

Qui Fílium tradit, Patri,
Natóque sit laus víctimæ:
Par sit tibi laus, qui sacram
Succendis aram, Spíritus.
Amen.

*Psalmi secundùm Feriam sub Antiphonis sequentibus.*

*Ant.* 3. c. Convenérunt, Dómine, adversùs sanctum púerum tuum Jesum, quem unxisti. *Act.* 4.

*Ant.* 7. c. Dixérunt: Gloriátur patrem se habére Deum: videámus ergo si sermónes illíus veri sint. *Sap.* 2.

*Ant.* 8. c. Morte turpíssimâ condemnémus eum: si enim est verus Fílius Dei, liberábit eum. *Sap.* 2.

℣. Líbera me à persequéntibus me, ℟. Quia confortáti sunt super me. *Ps.* 141.

*Lectiones et* ℟℟℟, *infrà in qualibet Feria.*

℣ *Sacerd.* Laudans invocábo Dóminum; ℟. Et ab inimícis meis salvus ero. *Ps.* 17.

### AD LAUDES.

*Psalmi de Feria, sub sola Ant.* 6. *F.* Christus diléxit nos, et trádidit semetipsum pro nobis, oblatiónem et hóstiam Deo. *Ephes.* 5.

CAPITULUM. *Hebr.* 2.

DECEBAT eum, propter quem ómnia, et per quem ómnia, qui multos fílios in glóriam addúxerat, auctórem salútis eórum per passiónem consummáre.

HYMNUS. *C.*

DUM, Christe, confixus cruci
Agis suprémos spíritus,
Fas nos salúbri fígere
Intenta ligno lúmina.

Anguis venéno pérfidi
Inflicta nobis vúlnera,
Pendentis è celsa trabe
Sanábit aspectus Dei.

Hic nos olympo párturis;
Hìc Mártyres formas tuos;

Hic último sanctam fidem
Fundas amóris pígnore.
Hinc cuncta terrárum, suo
Regnátor ut sedens throno,
Utrinque protensæ manûs
Virtúte divínâ trahis.
Nos ergo cœlestis thronum
Sinas adíre grátiæ,
Pedemque complexos crucis,
Tuo rigári sánguine.
O spes salútis ómnium,
Crux vera mundi glória,
Infixa semper hæreas
Imisque regnes córdibus.
Qui Fílium tradit, Patri,
Natóque sit laus víctimæ :
Par sit tibi laus, qui sacram
Succendis aram, Spíritus.
Amen.

℣. Intende ánimæ meæ, et líbera eam : ℟. Propter inimícos meos éripe me. *Ps.* 68.

*Ad* Benedictus, *Ant. ut in qualibet Feria.*

*Deinde dicuntur Preces, flexis genibus, ut suprà* 129.

*Oratio ut in qualibet Feria, post Ant. ad* Benedictus.

*Non fiunt Suffragia.*

## AD PRIMAM.

*Hymnus,* Jam lucis, *cum Doxologia* Qui Fílium tradit, 120, *quæ dicitur ad alias Horas.*

*Ant.* 1. a. Deus salvátor meus, de iniquitáte liberábis me; quia circumdedérunt me contritiónes mortis. 2 *Reg.* 22.

*In* ℟ *br.* ℣. Qui passus es * pro nobis. *Non dicitur* Glória, *sed repetitur* Christe.

*Cetera ut in Feriis Quadragesimæ, suprà* 131.

## AD TERTIAM.

*Hymnus,* O fons, 122.

*Ant.* 2. D. Dómine, recordáre meî, et tuére me ab his qui persequuntur me. *Jerem.* 15.

CAPITULUM. *Jerem.* 18.

FODERUNT fóveam ut cáperent me, et láqueos abscondérunt pédibus meis : tu autem, Dómine, scis omne consílium eórum adversùm me in mortem.

℟ *br.* Custódi me, Dómine, * De manu peccatóris. Custódi me. ℣. Et ab homínibus iníquis * éripe me. * De manu peccatóris. *Non dicitur* Glória, *sed repetitur* ℟ Custódi me. *Ps.* 139.

℣. Custódi me à láqueo quem statuérunt mihi, ℟. Et à scándalis operántium iniquitátem. *Ps.* 140.

*Preces, flexis genibus, ut in Feriis Quadrages.* 134.

## AD SEXTAM.

*Hymnus,* Nunc solis, 123.

*Ant.* 4. a. Vidisti, Dómine, iniquitátem illórum adversùm me : júdica judícium meum. *Thren.* 3.

CAPITULUM. *Thren.* 3.

INVOCAVI nomen tuum, Dómine, de lacu novíssimo : vocem meam audisti, appropinquasti in die, quando invocávi te ; dixisti : Ne tímeas.

℟ *br.* Propter inimícos meos * Eripe me, Dómine. Propter. ℣. Tu scis impropérium meum, * et confu-

siónem meam; * Eripe me. ℟. Propter. *Ps.* 68.

℣. Totâ die verba mea execrabantur : ℟. Adversùm me omnes cogitatiónes eórum in malum. *Ps.* 55.

*Preces, flexis genibus*, 134.

AD NONAM.

*Hymnus*, Prono volútus impetu, 123.

*Ant.* 7. d. Omnes inimíci mei audiérunt malum meum; lætáti sunt, quóniam tu fecisti. *Thren.* 1.

CAPITULUM. *Jerem.* 11.

TU, Dómine, demonstrasti mihi, et cognóvi : tunc ostendisti mihi stúdia eórum : et ego quasi agnus mansuétus, qui portátur ad víctimam.

℟ *br.* Príncipes * Persecúti sunt me gratìs. Príncipes. ℣. Et à verbis tuis * formidávit cor meum. * Persecúti sunt. ℟. Príncipes. *Ps.* 118.

℣. Qui retríbuunt mala pro bonis, detrahébant mihi; ℟. Quóniam sequébar bonitátem. *Ps.* 37.

*Preces, flexis genibus*, 134.

AD VESPERAS.

*Psal. secundùm Feriam, sub sola Ant.* 4. d. Verè languóres nostros ipse tulit, et dolóres nostros ipse portávit : vulnerátus est propter iniquitátes nostras; attrítus est propter scélera nostra. *Is.* 53.

CAPITULUM. *Jerem.* 18.

RECORDARE, Dómine, quod stéterim in conspectu tuo, ut lóquerer pro eis bonum, et avérterem indignatiónem tuam ab eis.

HYMNUS. *Fortunat.*

VEXILLA Regis pródeunt;
Fulget Crucis mystérium,
Quo carne carnis Cónditor
Suspensus est patíbulo.

Quo vulnerátus ínsuper
Mucróne diró lánceæ,
Ut nos laváret crímine,
Manávit undá et sánguine.

IMPLETA sunt quæ cóncinit
David fidéli cármine,
Dicens : In natiónibus
Regnávit à ligno Deus.

Arbor decóra et fúlgida,
Ornáta Regis púrpurâ,
Electa digno stípite,
Tam sancta membra tángere.

BEATA cujus bráchiis
Seclì pependit prétium,
Statéra facta córporis,
Prædamque tulit tártari.

O Crux, ave, spes única;
Hoc Passiónis témpore,
Auge piis justítiam,
Reisque dona véniam.

TE, summa Deus Trínitas,
Collaudet omnis spíritus :
Quos per crucis mystérium
Salvas, rege per sécula.
Amen.

℣. Captábunt in ánimam Justi; ℟. Et sánguinem innocentem condemnábunt. *Ps.* 93.

*Ad* Magníficat, *Ant. ut in qualibet Feria.*

*Deinde dicuntur Preces, flexis genibus, ut in Feriis Quadragesimæ*, 129, 135.

*Oratio ut in qualibet Feria, post Ant. ad* Magnificat.

*Non fiunt Suffragia.*

COMPLETORIUM, *ut suprà* 136.

## FERIA SECUNDA,

LECTIO I.

De Jeremía Prophéta.

*Cap.* 2.

Et nunc quid tibi vis in via Ægypti, ut bibas aquam túrbidam? et quid tibi cum via Assyriórum, ut bibas aquam flúminis? Arguet te malítia tua, et avérsio tua increpábit te. Scito, et vide, quia malum et amárum est reliquisse te Dóminum Deum tuum, et non esse timórem meî apud te, dicit Dóminus Deus exercítuum. A século confregisti jugum meum, rupisti víncula mea, et dixisti: Non sérviam. In omni enim colle sublími, et sub omni ligno frondóso tu prosternebáris, méretrix. Ego autem plantávi te víneam electam, omne semen verum: quómodo ergo conversa es mihi in pravum, vínea aliéna? Si láveris te nitro, et multiplicáveris tibi herbam borith, maculáta es in iniquitáte tua coram me. Jerúsalem.

℟. Dixit Dóminus, 221.

LECTIO II.

Verterunt ad me tergum, et non fáciem; et in témpore afflictiónis suæ dicent: Surge, et líbera nos. Ubì sunt dii tui, quos fecisti tibi? Surgant, et líberent te in témpore afflictiónis tuæ; secundùm númerum quippe civitátum tuárum erant dii tui, Juda. * Quid vultis mecum judício conténdere? omnes dereliquistis me, dicit Dóminus. Frustra percussi fílios vestros, disciplínam non recepérunt: devorávit gládius vester Prophétas vestros; quasi leo vastátor generátio vestra. Vidéte verbum Dómini: Numquid solitúdo factus sum Israéli, aut terra serótina? Quare ergo dixit pópulus meus: Recéssimus; non veniémus ultrà ad te? Numquid obliviscétur virgo ornamenti sui, aut sponsa fásciæ pectorális suæ? Pópulus verò meus oblítus est meî diébus innúmeris. Jerúsalem.

℟. Sument, 221.

LECTIO III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Joannem.

*Cap.* 7.

In illo témpore; Misérunt Príncipes et Pharisæi ministros, ut apprehénderent Jesum. Et réliqua.

Homília sancti Augustíni Epíscopi.

*In Joan. tr.* 31. *n.* 8, 9.

Principes illi, audítâ multitúdinis fide, et eo múrmure quo Christus glorificabátur, misérunt ministros, ut apprehénderent eum? Quem apprehénderent? Adhuc nolentem? Quia ergo non póterant apprehéndere *nolentem*, missi sunt ut audírent docentem? Quid docentem? Dicit ergo Jesus: Adhuc módicum tempus vobiscum sum. Quod modò vultis fácere, factúri estis; sed non modò, quia modò nolo. Quare adhuc modò nolo? Quia *adhuc*

módicum tempus vobiscum sum; et tunc vado ad eum qui me misit. Implére débeo dispensatiónem meam, et sic pervenire ad passiónem meam. Quærétis me, et non inveniétis; et ubi sum ego, vos non potestis veníre. Hic jam resurrectiónem suam prædixit: noluérunt enim agnóscere præsentem, et póstea quæsiérunt, cùm vidérunt in eum multitúdinem jam credentem. Tu autem.

℟. Adhuc módicum tempus vobiscum sum; et vado ad eum qui me misit. * Quærétis me, et non inveniétis: et ubi ego sum, vos non potestis veníre. ℣. Quia despexistis omne consílium meum, et increpatiónes meas neglexistis; ego quoque subsannábo. * Quærétis me. *Joan.* 7. *Prov.* 1.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 8. *G.* Si quis sitit, véniat ad me, et bibat. *Joan.* 7.

Orémus. Oratio.

Implorámus in jejúnio, Dómine, misericórdiam tuam; ut te, qui fons bonitátis es, toto desidério sitientes, caritátis tuæ abundántiâ repleámur; Per Dóminum.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 4. E. Qui credit in me, sicut dicit Scriptúra, flúmina de ventre ejus fluent aquæ vivæ. *Joan.* 7.

Orémus. Oratio.

Clamantium ad te, quæsumus Dómine, preces dignanter exaudi; ut sicut olim pópulo tuo in afflictióne pósito pepercisti, ita et nobis in præsenti tribulatióne succurras; Per Dóminum.

## FERIA TERTIA.

Lectio i.

De Jeremía Prophéta.

*Cap.* 3.

Vulgo dicitur: Si dimíserit vir uxórem suam; et recédens ab eo, dúxerit virum álterum, numquid revertétur ad eam ultrà? numquid non pollúta et contamináta erit múlier illa? Tu autem fornicáta es cum amatóribus multis: tamen revértere ad me, dicit Dóminus, et ego suscípiam te. Leva óculos tuos in directum, et vide ubi non prostráta sis: in viis sedébas, expectans eos quasi latro in solitúdine; et polluisti terram in fornicatiónibus tuis et in malítiis tuis. Quámobrem prohíbitæ sunt stillæ pluviárum, et serótinus imber non fuit: frons mulíeris meretrícis facta est tibi, noluisti erubéscere. Ergo saltem ámodo voca me: Pater meus, dux virginitátis meæ tu es. Jerúsalem.

℟. Réspice, 222.

Lectio ii.

Et dixit Dóminus ad me in diébus Josíæ regis: Numquid vidisti quæ fécerit aversátrix Israel? Abiit síbimet super omnem montem excelsum, et sub omni ligno frondóso; et fornicáta est ibi. Et dixi, cùm fecisset hæc ómnia: Ad me revértere; et non est reversa. Et vidit prævaricátrix

soror ejus Juda, quia pro eo quod mœcháta esset aversátrix Israel, dimisissem eam, et dedissem ei libellum repúdii: et non tímuit prævaricátrix Juda soror ejus; sed ábiit, et fornicáta est étiam ipsa. Et facilitáte fornicatiónis suæ contaminávit terram, et mœcháta est cum lápide et ligno. Et in ómnibus his non est reversa ad me prævaricátrix soror ejus Juda in toto corde suo, sed in mendácio, ait Dóminus.* Et dixit Dóminus ad me: Justificávit ánimam suam aversátrix Israel, comparatióne prævaricatrícis Judæ. Vade, et clama sermónes istos contra aquilónem, et dices: Revértere, aversátrix Israel, ait Dóminus, et non avertam fáciem meam à vobis; quia sanctus ego sum, dicit Dóminus, et non irascar in perpétuum. Jerúsalem.

℟. Deus meus, 223.

LECTIO III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Joannem.

*Cap.* 7.

In illo témpore; Ambulábat Jesus in Galilæam: non enim volébat in Judæam ambuláre, quia quærébant eum Judæi interfícere. Et réliqua.

Homília sancti Augustíni Epíscopi.

*In Joan. tr.* 28. *n.* 1, 8, 11.

Christus manens Deus, accépit hóminem, qui fecit hóminem. Quando ergo látuit ut homo non poténtiam perdidisse putandus est, sed exemplum infirmitáti præbuisse. Ille enim quando vóluit, detentus est; quando vóluit, occísus est. Sed quóniam futúra erant membra ejus, id est, fidéles ejus, qui non habérent illam potestátem quam habébat ipse Deus noster; quod latébat, quod se, tanquam ne occiderétur, occultábat, hoc indicábat factúra esse membra sua, in quibus útique membris *suis* ipse erat. Non potest mundus odisse vos. Quid est hoc? nisi: Non potest *mundus* odisse amatóres suos, falsos testes. Bona enim dícitis quæ mala sunt, et mala quæ bona sunt. Me autem odit; quia ego testimónium *perhíbeo* de illo, quia ópera ejus mala sunt. Judæi ergo quærébant eum in die festo: et murmur multum de eo erat in turba. Unde murmur? De contentióne. Quæ fuit conténtio? Quidam enim dicébant, Quia bonus *est*; álii autem, Non, sed sedúcit turbas. De ómnibus servis ejus intelligendum: hoc dicitur modò. Quicumque enim eminúerit in *áliqua* grátia spiritáli, profectò álii dicunt, Bonus est; álii, Non, sed sedúcit turbas. *Quod* dictum est ergo de Dómino, valet ad consolatiónem, de quocumque hoc dictum fúerit Christiáno.

℟. Non potest *mundus* odisse vos: me autem odit; * Quia ego testimónium perhíbeo de illo, quòd ópera

ejus mala sunt. ℣. Os peccatóris super me apertum est; *Quia ego. *Joan.* 7. *Ps.* 108.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 3. a. Ascéndite ad diem festum hunc; ego autem non ascendo, quia meum tempus nondum implétum est. *Joan.* 7.

Orémus. Oratio.

Auxiliare, Dómine, pópulo tuo: ut sacræ devotiónis profíciens increméntis, et tuo semper múnere gubernétur; et ad redemptiónis ætérnæ pertíneat, te ducente, consórtium; Per.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 7. c. Quidam dicébant, Quia bonus est; álii autem dicébant, Non, sed sedúcit turbas. Nemo tamen palam loquebátur de illo, propter metum Judæórum. *Joan.* 7.

Orémus. Oratio.

Suscipe, misericors Dómine, súpplicum preces, et secundùm multitúdinem indulgentiárum tuárum ab ómnibus nos absolve peccátis: ut ad ómnia pietátis ópera, te parcente, reparémur; et quos véniâ féceris innocentes, auxílio fácias efficáces; Per Dóminum.

## FERIA QUARTA.

### Lectio I.

De Jeremía Prophéta.

*Cap.* 5.

Circuite vias Jerúsalem, et aspícite: et consideráte, et quærite in platéis ejus, an inveniátis virum facientem judícium, et quærentem fidem; et propítius ero ei. Quod si étiam, Vivit Dóminus, díxerint; et hoc falsò jurábunt. Dómine, óculi tui respíciunt fidem: percussisti eos, et non doluérunt: attrivisti eos, et renuérunt accípere disciplínam: induravérunt fácies suas supra petram, et noluérunt reverti. * Ego autem dixi: Fórsitan páuperes sunt et stulti, ignorantes viam Dómini, judícium Dei sui. Ibo ígitur ad optimátes, et loquar eis: ipsi enim cognovérunt viam Dómini, judícium Dei sui; et ecce magis hi simul confregérunt jugum, rupérunt víncula. Jerúsalem.

℟. Dixit Dóminus, 221.

### Lectio II.

Super quo propítius tibi esse pótero? Fílii tui dereliquérunt me, et jurant in his qui non sunt dii. Saturávi eos, et mœcháti sunt, et in domo meretrícis luxuriabantur. Equi amatóres et emissárii facti sunt: unusquisque ad uxórem próximi sui hinniébat. Numquid super his non visitábo, dicit Dóminus, et in gente tali non ulciscétur ánima mea? Ascéndite muros ejus, et dissipáte; consummatiónem autem nolíte fácere: auferte propágines ejus, quia non sunt Dómini. Prævaricatióne enim prævaricáta est in me domus Israel, et domus Juda, ait Dóminus. Negavérunt Dóminum, et dixérunt: Non est ipse; neque véniet super nos malum: gládium et famem non vidébi-

mus. Prophétæ fuérunt in ventum locúti, et responsum non fuit eis: hæc ergo evénient illis. Jerúsalem.

℟. Sument, 221.

LECTIO III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Joannem.

*Cap.* 10.

In illo témpore; Facta sunt Encænia in Jerosólymis; et hiems erat. Et ambulábat Jesus in templo, in pórticu Salomónis. Et réliqua.

Homília sancti Augustíni Episcopi.

*In Joan. tr.* 48. *n.* 2, 4, 5.

Encænia festívitas erat dedicatiónis templi. Illum enim diem, quo templum dedicátum est, Judæi solémniter celebrábant. Dicébant ei: Quóusque ánimam nostram tollis? Si tu es Christus, dic nobis palàm. Respondit eis Jesus: Loquor vobis, et non créditis: ópera quæ ego fácio in nómine Patris mei, hæc testimónium pérhibent de me; sed vos non créditis, quia non estis ex óvibus meis. Didicistis quæ sint oves, estóte oves. Óves credendo sunt, oves pastórem sequendo sunt, oves redemptórem non contemnendo sunt, oves per óstium intrando sunt, oves exeundo et páscua inveniendo sunt, oves vitâ æternâ perfruendo sunt. Oves meæ vocem meam áudiunt, et cognosco eas, et sequuntur me. Et ego vitam æternam do eis. Ecce sunt páscua. Si recólitis, supériùs díxerat, Et ingrediétur, et egrediétur, et páscua invéniet. Ingressi sumus credendo, egrédimur moriendo. Sed quómodo per óstium fídei ingressi sumus, sic fidéles de córpore exeámus: sic enim per ipsum óstium egrédimur, ut páscua invenire possímus. Bona páscua, vita æterna dícitur: ibi nulla herba arescit, totum viret, totum viget. Tu autem.

℟. Opera quæ ego fácio in nómine Patris mei, hæc testimónium pérhibent de me: * Sed vos non créditis; quia non estis ex óvibus meis. ℣. Usquequo détrahet mihi pópulus iste? Quousque non credent mihi in ómnibus signis quæ feci coram eis? * Sed. *Joan.* 10. *Num.* 14.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 4. d. Oves meæ vocem meam áudiunt: et ego vitam æternam do eis; et non períbunt in æternum. *Joan.* 10.

Orémus. ORATIO.

Sanctificato hoc jejúnio, Deus, tuórum corda fidélium miserátor illustra: et quibus devotiónis præstas affectum, præbe supplicántibus pium benignus audítum; Per Dóminum.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 6. F. Si mihi non vultis crédere, opéribus crédite; ut cognoscátis et credátis quia Pater in me est, et ego in Patre. *Joan.* 10.

Orémus. ORATIO.

Deus, qui misericórdiæ jánuam in te sperántibus pa-

tére voluisti : réspice nos, et miserére nostrî; ut qui voluntátis tuæ viam, te donante, séquimur, à vitæ nunquam sémitis deviémus; Per Dóminum.

## FERIA QUINTA.

LECTIO I.

De Jeremía Prophéta.

*Cap.* 6.

ERUDIRE, Jerúsalem, ne fortè recédat ánima mea à te; ne fortè ponam te desertam, terram inhabitábilem. Hæc dicit Dóminus exercítuum : Usque ad racémum cólligent quasi in vínea relíquias Israel: converte manum tuam, quasi vindemiátor ad cartallum. Cui loquar? et quem contestábor, ut áudiat? Ecce incircumcísæ aures eórum, et audíre non possunt: ecce verbum Dómini factum est eis in oppróbrium, et non suscípient illud. Idcirco furóre Dómini plenus sum; laborávi sústinens. Effunde super párvulum foris, et super consílium júvenum simul : vir enim cum mulíere capiétur, senex cum pleno diérum. Et transíbunt domus eórum ad álteros, agri et uxóres páriter; quia extendam manum meam super habitantes terram. Jerúsalem.

℟. Réspice, 222.

LECTIO II.

A MINORE quippe usque ad majórem omnes avarítiæ student : et à Prophéta usque ad Sacerdótem cuncti fáciunt dolum. Et curábant contritiónem filiæ pópuli mei cum ignomínia, dicentes : Pax, pax; et non erat pax. Confúsi sunt, quia abominatiónem fecérunt : quin pótiùs confusióne non sunt confúsi, et erubéscere nesciérunt. Quámobrem cadent inter ruentes: in témpore visitatiónis suæ córruent, dicit Dóminus. * Hæc dicit Dóminus : State super vias, et vidéte, et interrogáte de sémitis antíquis, quæ sit via bona, et ambuláte in ea; et inveniétis refrigérium animábus vestris. Et dixérunt; Non ambulábimus. Et constítui super vos speculatóres : Audíte vocem tubæ. Et dixérunt : Non audiémus. Jerúsalem.

℟. Deus meus, 223.

LECTIO III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Lucam.

*Cap.* 7.

IN illo témpore; Rogábat Jesum quidam de Pharisæis, ut manducáret cum illo. Et ingressus domum Pharisæi, discúbuit. Et ecce múlier, quæ erat in civitáte peccátrix, ut cognóvit quod accubuisset in domo Pharisæi, áttulit alabastrum unguenti. Et réliqua.

Homília sancti Gregórii Papæ. *In Ev.* 33. *n.* 2.

LIQUET, fratres, quod illícitis áctibus priùs múlier intenta, unguentum sibi pro odóre suæ carnis adhíbuit. Quod ergo sibi túrpiter exhibúerat, hoc jam Deo laudabíliter of-

ferébat. Oculis terréna concupíerat; sed hos jam per pœniténtiam cónterens flebat. Capillos ad compositiónem vultûs exhibúerat; sed jam capillis lácrymas tergébat. Ore superba díxerat; sed pedes Dómini ósculans, hoc in Redemptóris sui vestígia figébat. Quot ergo in se hábuit oblectamenta, tot de se invénit holocausta. Convertit ad virtútum númerum, númerum críminum; ut totum servíret Deo in pœniténtia, quidquid ex se Deum contémpserat in culpa. Tu autem.

℟. Múlier, quæ erat in civitáte peccátrix, áttulit alabastrum unguenti : et * Stans retrò secus pedes Jesu, lácrymis cœpit rigáre pedes ejus, et capillis suis tergébat; osculabátur pedes ejus, et unguento ungébat. ℣. Nonne lácrymæ ascendunt usque ad cœlum? Non discédet, donec Altíssimus aspíciat. * Stans retrò secus pedes Jesu. *Luc.* 7. *Eccli.* 35.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 2. D. Remittuntur ei peccáta multa, quóniam dilexit multùm. *Luc.* 7.

Orémus. Oratio.

Deus, qui multùm diligéntibus multa peccáta remittis : infunde córdibus nostris tui amóris affectum; ut ab ómnibus peccátis nostris tuâ misericórdiâ liberémur; Per Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum, qui tecum vivit et regnat in unitáte Spíritûs sancti Deus.

# FERIA SEXTA.

FIT OFFICIUM

## DE COMPASSIONE BEATÆ MARIÆ VIRGINIS.

*Duplex-majus.*

### IN I VESPERIS.

*Psalmi de Feria, et sic in toto Officio.*

*Ant.* 2. D. Fília pópuli mei, luctum unigéniti fac tibi planctum amárum. *Jerem.* 6.

*Ant.* 3. a. Lácrymæ ejus in maxillis ejus : non est qui consolétur eam ex ómnibus caris ejus. *Thren.* 1.

*Ant.* 8. c. Torcúlar calcávit Dóminus vírgini fíliæ Juda; quóniam inváluit inimícus. *Thren.* 1.

*Ant.* 6. *C.* Fília Sion oppressa est amaritúdine, et egressus est omnis decor ejus. *Thren.* 1.

*Ant.* 4. f. Ipsa gemens conversa est retrorsum : depósita est vehementer, non habens consolatórem. *Thren.* 1.

Capitulum. *Ruth* 1.

Ne vocétis me, Nóemi (*id* est, pulcram:) sed vocáte me, Mara (id est, amáram;) quia amaritúdine valde replévit me Omnípotens.

℟. Fília Jerúsalem, numquid rex non est tibi, quia comprehendit te dolor sicut parturientem? * Dole, et sátage quasi partúriens, quia liberáberis : rédimet te Dóminus. ℣. Nonne opórtuit

pati Christum, et ita intráre in glóriam suam? * Dole. *Mich.* 4. *Luc.* 24.

Hymnus. *H. Vab. Ep.*

Dum spargit aram sánguine
Jesus, salútis hóstia,
Præsens dolóris æmulum
María pectus ímmolat.

Caput cruentum Fílii
Matris corónat vérticem :
Clavis iisdem fígitur
Christus cruci, Christo parens.

O passionis mútuæ,
Jesu, María, cónscii!
Alterna vobis vúlnera
Inferre tandem párcite.

Quem vos dolétis, noster est
Error, furorque críminum :
Totum scelus faténtibus
Partem dolóris rèddite.

Qui natus es de Vírgine,
Jesu, tibi sit glória,
Cum Patre, cumque Spíritu,
In sempiterna sécula. Amen.

℣. Anima mea turbáta est valde : ℟. Sed tu, Dómine, úsquequo? *Ps.* 6.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 5. C. Cui comparábo te, fília Jerúsalem? cui exæquábo te, virgo fília Sion? Magna est enim velut mare contrítio tua : quis medébitur tuî? *Thren.* 2.

*Oratio ut infrà ad Laudes.*

*Pro Commemoratione Feriæ, Ant.* Fides tua te salvam fecit; vade in pace. *Luc.* 7.

℣. Captábunt in ánimam Justi; ℟. Et sánguinem innocentem condemnábunt. *Ps.* 93.

Orémus. Oratio.

Deus, qui non solùm peccántibus véniam tribuis, sed étiam præmia pœniténtibus impertíris : quod pérpeti malis opéribus promerémur, ineffábili pietáte depelle; ut nos ad tuæ majestátis cultum, et salúbri timóre dispónas, et sancto amóre perdúcas; Per Dóminum.

Completorium, *ut suprà, cum Hymno* Virgo Dei génitrix, 124, *hodie et cras.*

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invit.* Jesum crucifixum super quem planxit Mater quasi super unigénitum, * Veníte, adorémus. *Zach.* 12.

*Ps.* 94. Veníte, *sine* Glória Patri; *sed post ultimum versum Psalmi, dicitur* * Veníte, adorémus : *deinde repetitur Invitatorium.*

*Hymn.* Dum spargit, *suprà.*

*IN I NOCTURNO.*

*Ant.* 4. E. Ego plorans, et óculus meus dedúcens aquas; quia longè factus est à me consolátor. *Thren.* 1.

*Ant.* 6. *C.* Dolor meus super dolórem, in me cor meum mœrens. *Jerem.* 8.

*Ant.* 7. ç. Vocem meam audisti, Dómine; ne avertas aurem tuam à singultu meo et clamóribus. *Thren.* 3.

℣. Ad te clamávi, dum anxiarétur cor meum; ℟. Quia factus es spes mea, Deus. *Ps.* 60.

Lectio i.

De Jeremía Prophéta.

*Cap.* 8.

Quomodo dícitis : Sapientes nos sumus, et lex Dómini nobiscum est? Verè mendácium operátus est stylus men-

dux scribárum. Confúsi sunt sapientes, pertérriti et capti sunt; verbum enim Dómini projecérunt, et sapiéntia nulla est in eis. Proptérea dabo mulíeres eórum éxteris, agros eórum hærédibus; quia à mínimo usque ad máximum omnes avarítiam sequuntur, à Prophéta usque ad Sacerdótem cuncti fáciunt mendácium. Et sanábant contritiónem fíliæ pópuli mei ad ignomíniam, dicentes: Pax, pax; cùm non esset pax. Confúsi sunt, quia abominatiónem fecérunt: quinímo confusióne non sunt confúsi, et erusbéscere nesciérunt; idcirco cadent inter corruentes, in témpore visitatiónis suæ córruent, dicit Dóminus. Jerúsalem.

℟. Erit in die illa, dicit Dóminus, convertam ómnia cántica vestra in planctum, et * Ponam diem eam quasi luctum unigéniti, et novíssima ejus quasi diem amárum. ℣. Fílius hóminis tradendus est in manus hóminum; et occídent eum. * Ponam. *Amos* 8. *Matth.* 17.

LECTIO II.

A DAN audítus est frémitus equórum ejus; à voce hinnítuum pugnatórum ejus commóta est omnis terra: et venérunt, et devoravérunt terram et plenitúdinem ejus, urbem et habitatóres ejus. Quia ecce ego mittam vobis serpentes régulos, quibus non est incantátio; et mordébunt vos, ait Dóminus. Dolor meus super dolórem; in me cor meum mœrens. Ecce vox clamóris fíliæ pópuli mei de terra longinqua: Numquid Dóminus non est in Sion? aut rex ejus non est in ea? Quare ergo me ad iracúndiam concitavérunt in sculptílibus suis, et in vanitátibus aliénis? Tránsiit messis, finíta est æstas; et nos salváti non sumus. Super contritióne fíliæ pópuli mei contrítus sum et contristátus; stupor obtínuit me. Numquid resína non est in Gálaad? aut médicus non est ibi? Quare ígitur non est obducta cicátrix fíliæ pópuli mei? Jerúsalem.

℟. Multiplicátæ sunt mihi víduæ Jerúsalem: * Induxi eis super matrem adolescentis, vastatórem merídie; et resíduos in gládium dabo. ℣. Ecce vénient dies in quibus dicent: Beátæ stériles, et ventres qui non genuérunt, et úbera quæ non lactavérunt. * Induxi. *Jerem.* 15. *Luc.* 23.

LECTIO III. *Cap.* 9.

HÆC dicit Dóminus exercítuum, Deus Israel: Contemplámini, et vocáte lamentatríces, et véniant; et ad eas quæ sapientes sunt, míttite, et próperent: festínent, et assúmant super nos lamentum: dedúcant óculi nostri lácrymas, et pálpebræ nostræ défluant aquis. Quia vox lamentatiónis audíta est de Sion: Quómodo vastáti sumus et confúsi vehementer? quia derelíquimus terram, quóniam dejecta sunt taber-

nácula nostra. Audíte ergo, mulíeres, verbum Dómini; et assúmant aures vestræ sermónem oris ejus: et docéte fílias vestras lamentum, et unaquæque próximam suam planctum; quia ascendit mors per fenestras nostras; ingressa est domos nostras, dispérdere párvulos déforis, júvenes de platéis. Jerúsalem.

℟. Dedúcant óculi mei lácrymam per noctem et diem, et non táceant; * Quóniam contritióne magnâ contríta est virgo fília pópuli mei, plagâ péssimâ vehementer. ℣. Si in víridi ligno hæc fáciunt, in árido quid fiet? * Quóniam. *Non dicitur* Glória. *Jerem.* 14. *Luc.* 23.

*IN II NOCTURNO.*

*Ant.* 1. a. Dóleo super te, decóre nimis et amábilis. Sicut únicum fílium, ita ego te diligébam. 2 *Reg.* 1.

*Ant.* 4. a. Fili mi, fili mi, quis mihi dabit ut ego móriar pro te? 2 *Reg.* 18.

*Ant.* 8. G. Præcipe, Dómine, récipi spíritum meum; expedit enim mihi mori magis quàm vívere. *Tob.* 3.

℣. Sitívit ánima mea: quàm multiplíciter tibi caro mea! ℟. Adhæsit ánima mea post te. *Ps.* 62.

*Benedictiones de B. M. V.*

LECTIO IV.

Sermo sancti Bernardi Abbátis.

*De* 12 *Prær. B. M. n.* 14.

MARTYRIUM Vírginis tam in Simeónis prophetía, quàm in ipsa Domínicæ passiónis história commendátur. Pósitus est hic, ait sanctus senex de párvulo Jesu, in signum cui contradicétur; et tuam ipsíus ánimam (ad Maríam autem dicébat) pertransíbit gládius. Verè tuam, ô beáta Mater, ánimam gládius pertransívit; alióquin, nonnísi eam pertránsiens, carnem Fílii tui penetráret. Et quidem, postéaquam emísit spíritum tuus ille Jesus, (ómnium quidem, sed speciáliter tuus:) ipsíus planè non áttigit ánimam crudélis láncea, quæ ipsíus, nec mórtuo parcens cui nocére non posset, apéruit latus; sed tuam útique ánimam pertransívit. Ipsíus nimírum ánima jam ibi non erat; sed tua planè inde nequíbat avelli. Tuam ergo pertransívit ánimam vis dolóris, ut plusquam Mártyrem non immérito prædicémus, in qua nimírum corpóreæ sensum passiónis excésserit compassiónis affectus. Tu autem.

℟. Símeon dixit ad Maríam matrem Jesu: Ecce pósitus est hic in signum cui contradicétur: * Et tuam ipsíus ánimam pertransíbit gládius, ut revelentur ex multis córdibus cogitatiónes. ℣. Replébêris cálice mœróris et tristítiæ, et bibes illum, et epotábis usque ad fæces; * Et tuam. *Luc.* 2. *Ezech.* 23.

LECTIO V. *n.* 15.

AN non tibi plusquam gládius fuit sermo ille, revérâ pertránsiens ánimam, et per-

tingens usque ad divisiónem ánimæ et spíritûs : Múlier, ecce fílius tuus? O commutatiónem ! Joannes tibi pro Jesu tráditur, servus pro dómino, discípulus pro magistro, fílius Zebedæi pro Fílio Dei, homo purus pro Deo vero. Quómodo non tuam affectuosíssimam ánimam pertransíret hæc audítio, quando et nostra, licèt sáxea, licèt férrea péctora, sola recordátio scindit?

℟. Sequebátur Jesum turba mulíerum quæ plangébant et lamentabantur eum. Et postquam venérunt in locum Calváriæ, crucifixérunt eum. * Stabat autem juxta crucem Jesu mater ejus. ℣. Sedérunt in terra, conspersérunt cínere cápita sua, abjecérunt in terram cápita sua vírgines Jerúsalem. * Stabat. *Luc.* 23. *Joan.* 19. *Thren.* 2.

LECTIO VI.

NON miréminì, fratres, quod María martyr in ánima fuisse dicátur. Mirétur qui non memínerit se audisse Paulum inter máxima géntium crímina memorantem, quod sine affectióne fuissent. Longè id fuit à Maríæ viscéribus; longè id sit étiam à sérvulis ejus. Sed fortè quis dicat : Numquid non eum præscíerat moritúrum? Et indubitanter. Numquid non sperábat contínuò resurrectúrum? Et fidenter. Super hæc dóluit crucifixum? Et vehementer. Alióquin, quisnam tu, frater, aut unde tibi hæc sapiéntia, ut miréris plus Maríam compatientem, quàm Maríæ Fílium patientem? Ille étiam mori córpore pótuit; ista cómmori corde non pótuit? Fecit illud cáritas, quâ majórem nemo hábuit : fecit et hoc cáritas, cui post illam símilis áltera non fuit.

℟. Vidit Jesus matrem, et discípulum stantem quem diligébat; * Et dicit Jesus matri suæ : Múlier, ecce fílius tuus. ℣. Supra modum mater mirábilis bono ánimo ferébat, propter spem quam in Deum habébat, femíneæ cogitatióni masculínum ánimum ínserens. * Et dicit. *Joan.* 19. 2 *Mach.* 7.

*IN III NOCTURNO.*

*Ant.* 3. a. Nemo gáudeat super me desolátam; ego enim derelicta sum sola, et clamábo ad Altíssimum in diébus meis. *Baruch* 4.

*Ant.* 2. D. Oculus meus non tácuit, eo quod non esset réquies; donec respíceret et vidéret Dóminus de cœlis. *Thren.* 3.

*Ant.* 5. a. Non repellet in sempiternum Dóminus; quia si abjécit, et miserébitur secundùm multitúdinem miseratiónum suárum. *Thren.* 3.

℣. In umbra alárum tuárum sperábo, ℟. Donec tránseat iníquitas. *Ps.* 56.

LECTIO VII.

Léctio sancti Evangélii secundùm Joannem. *Cap.* 19.

IN illo témpore; Stabant juxta crucem Jesu mater ejus, et

et soror matris ejus María Cléophæ, et María Magdaléne. Et réliqua.

Homília sancti Ambrósii Epíscopi. *De Instit. Virg.* n. 48, 49.

CLAUDITE ora, ímpii; aperíte aures, pii: audíte quid Christus loquátur. Testátur de cruce Dóminus Jesus, et paulisper públicam differt salútem, ne matrem inhonóram relinquat. Subscríbitur Joannes testamento Christi: legátur matri pudóris defénsio, testimónium integritátis: legátur et discípulo matris custódia, pietátis grátia. Et ex illo suscépit eam discípulus in sua. Non útique Christus faciébat divórtium, non María relinquébat virum. Sed cum quo Virgo habitáre debébat, quàm cum eo quem fílii hærédem, integritátis sciret esse custódem? Stabat ante crucem mater; et, fugiéntibus viris, stabat intrépida. Vidéte utrùm pudórem mutáre potúerit mater Jesu, quæ ánimum non mutávit. Spectábat piis óculis fílii vúlnera, per quem sciébat ómnibus futúram redemptiónem.

℟. Dicit Jesus discípulo quem diligébat: * Ecce mater tua. ℣. Cùm accéperit Deus ánimam meam, honórem habébis matri tuæ ómnibus diébus vitæ ejus: * Ecce. *Joan.* 19. *Tob.* 4.

LECTIO VIII.

STABAT non degéneri mater spectáculo, quæ non metuébat peremptórem. Pendébat in cruce fílius, mater se persecutóribus offerébat. Si hoc solùm esset ut ante fílium prosternerétur, laudandus pietátis affectus, quòd superstes fílio esse nolébat. Sin verò, ut cum fílio morerétur, cum eódem gestiébat resúrgere, non ignára mystérii quòd genuisset resurrectúrum: simul quæ público úsui impendi mortem fílii nóverat, præstolabátur si fortè étiam suâ morte público múneri áliquid adderétur. Sed Christi pássio adjutório non éguit, sicut ipse Dóminus longè antè prædixit: Et respexi, et non erat auxiliátor; et attendi, et nemo suscipiébat: et liberábo eos bráchio meo. Quómodo ergo extorquéri pótuit intégritas Maríæ, quæ, fugiéntibus Apóstolis, supplícia non metuébat, sed ipsa se offerébat perículis?

℟. Ex illa hora accépit matrem Jesu discípulus in sua. * Erat ferè hora sexta, et ténebræ factæ sunt in universam terram. ℣. Misi repente terrórem, dicit Dóminus: infirmáta est quæ péperit: óccidit ei sol, cùm adhuc esset dies. * Erat ferè hora sexta. *Joan.* 19. *Luc.* 23. *Jerem.* 15.

LECTIO IX.

Léctio sancti Evangélii secundùm Joannem.

*Cap.* 11.

IN illo témpore; Collegérunt Pontífices et Pharisæi concílium, et dicébant: Quid fá-

cimus? quia hic homo multa signa facit. Et réliqua.

Homília sancti Augustíni Epíscopi. *In Joan. tract.* 49. *n.* 26.

Dicebant : Quid fácimus? nec tamen dicébant : Credámus. Plus enim pérditi hómines cogitábant quómodo nocérent ut pérderent, quàm quómodo sibi consúlerent ne perírent. Et tamen timébant, et quasi consulébant. Dicébant enim : Quid fácimus? quia hic homo multa signa facit. Si dimíttimus eum sic, omnes credent in eum; et vénient Románi, et tollent nostrum locum et gentem. Temporália pérdere timuérunt, et vitam æternam non cogitavérunt; ac sic utrumque amisérunt. Nam et Románi, post Dómini passiónem et glorificatiónem, tulérunt eis et locum et gentem, expugnando et transferendo; et illud eos séquitur quod álibi dictum est : Fílii autem regni hujus ibunt in ténebras exterióres.

℟. Omnis turba eórum qui simul áderant ad spectáculum istud, et vidébant quæ fiébant, percutientes péctora sua revertebantur : stabant autem * Noti ejus et mulíeres de longè aspicientes. ℣. Plangent eum planctu quasi super unigénitum, et dolébunt super eum ut in morte primogéniti, * Noti. *Luc.* 23. *Marc.* 15. *Zach.* 12.

*Repetitur* ℟ Omnis, *usque ad* ℣.

*Non dicitur* Te Deum.

℣ *Sacerd.* Quámdiu ponam consília in ánima mea, ℟. Dolórem in corde meo per diem? *Ps.* 12.

## AD LAUDES.

*Ant.* 5. C. O vos omnes, qui transítis per viam, atténdite, et vidéte si est dolor sicut dolor meus. *Thren.* 1.

*Ant.* 1. f. Defecérunt præ lácrymis óculi mei : conturbáta sunt víscera mea. *Thren.* 2.

*Ant.* 8. c. Attenuáti sunt óculi mei, suspicientes in excelsum : Dómine, vim pátior. *Is.* 38.

Canticum. *Thren.* 2.

Quomodo obtexit calígine in furóre suo Dóminus * fíliam Sion;

Projécit de cœlo in terram* ínclytam Israel :

Et non est recordátus scabelli pedum suórum * in die furóris sui.

Præcipitávit Dóminus, nec pepercit, * ómnia speciósa Jacob.

Destruxit in furóre suo munitiónes Vírginis Juda : * et dejécit in terram :

Pólluit regnum et príncipes ejus : * confrégit in ira furóris sui omne cornu Israel :

Avertit retrorsum déxteram suam * à fácie inimíci :

Et succendit in Jacob quasi ignem flammæ * devorantis in gyro.

Tetendit arcum suum quasi inimícus; * firmávit déxteram suam quasi hostis :

Et occídit omne, quod pulcrum erat visu, * in tabernáculo fíliæ Sion.

*Ant.* 2. D. Numquid oblivisci potest múlier infantem suum, ut non misereátur fílio úteri sui? *Is.* 49.

*Ant.* 4. *D.* Angústia possédit me sicut angústia parturientis : córrui, cùm audírem, cùm vidérem; ténebræ stupefecérunt me. *Is.* 21.

Capitulum. *Thren.* 1.

Vide, Dómine, quóniam tríbulor : conturbátus est venter meus, subversum est cor meum in memetipsa; quóniam amaritúdine plena sum.

Hymnus. *H. Vab. Ep.*

Illæsa, te, puérpera,
Non fécerat matrem dolor;
Nascente quem nescíveras,
Orbáta sentis Fílio.

Dum te salútat últimum,
Natóque tradit álteri,
Natumque tradit álterum,
In morte Christum párturis.

Non ejulantem cérnimus,
Non ungue vellentem comas;
Silensque plus novit pati
Virtus dolóre fórtior.

¶ Qui natus es de Vírgine,
Jesu, tibi sit glória,
Cum Patre, cumque Spíritu,
In sempiterna sécula. Amen.

℣. Dum turbábitur terra,
℟. Deus in médio ejus; non commovébitur. *Ps.* 45.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 7. G. Fortis est ut mors diléctio. Aquæ multæ non potuérunt extínguere caritátem, nec flúmina óbruent illam. *Cantic.* 8.

Orémus. Oratio.

Da, quæsumus Dómine, córdibus nostris íntimum veræ pietátis affectum; ut in tui Fílii passióne sanctíssimæ Matri ejus dignè compatientes, salutáris mystérii fructum percípere mereámur; Per eumdem.

*Pro Commemoratione Feriæ, Ant.* Collegérunt Pontífices et Pharisæi concílium adversùs Jesum, et dicébant : Quid fácimus? quia hic homo multa signa facit. *Joan.* 11.

℣. Intende ánimæ meæ, et líbera eam : ℟. Propter inimícos meos éripe me. *Ps.* 68.

Orémus. Oratio.

Tuæ nos, Dómine, grátiâ pietátis illustra; ut semper in regendis áctibus et móribus potióra probantes, et quod nocet fúgere, et quod prodest elígere, te inspirante, possímus; Per Dóminum.

Ad Horas, *in fine Hymnorum dicitur :* ¶ Qui natus es de Vírgine, *ut suprà.*

AD PRIMAM.

*Ant.* 5. C. O vos omnes.

*In* ℟ *br.* ℣. Qui natus es * de María Vírgine. *Non dicitur* Glória Patri.

AD TERTIAM.

*Ant.* 1. f. Defecérunt.

Capitulum. *Job* 30.

Interiora mea efferbuérunt absque ulla réquie; prævenérunt me dies afflictiónis : mœrens incedébam.

℟ *br.* Tribulatiónem * Et dolórem invéni. Tribulatiónem. ℣. Circumdedérunt

me * dolóres mortis; * Et. *Repetitur* ℟. Tribulatiónem. *Ps.* 114.

℣. Sustínui qui simul contristarétur, et non fuit. ℟. Et qui consolarétur, et non invéni. *Ps.* 68.

AD SEXTAM.

*Ant.* 8. c. Attenuáti sunt.

CAPITULUM. *Thren.* 3.

INUNDAVERUNT aquæ super caput meum; dixi: Périi. Invocávi nomen tuum, Dómine, de lacu novíssimo.

℟ *br.* Usquequo, Deus,* Improperábit inimícus? Usquequo. ℣. Irrítat adversárius * nomen tuum in finem? * Improperábit. ℟. Usquequo. *Ps.* 73.

℣. Da impérium tuum púero tuo, ℟. Et salvum fac filium ancillæ tuæ. *Ps.* 85.

AD NONAM.

*Ant.* 4. *D.* Angústia.

CAPITULUM. *Jerem.* 4.

VOCEM quasi parturientis audívi, angústias ut puérperæ. Vox filiæ Sion intermorientis expandentisque manus suas: Væ mihi, quia défécit ánima mea.

℟ *br.* Cor meum conturbátum est: * Derelíquit me virtus mea. Cor. ℣. Lumen oculórum meórum, * et ipsum non est mecum: * Derelíquit. ℟. Cor. *Ps.* 37.

℣. Tribulatiónem meam ante Dóminum pronúntio, ℟. In deficiendo ex me spíritum meum. *Ps.* 141.

AD II VESPERAS.

*Ant.* 1. D. Fecit Dóminus quæ cogitávit, complévit sermónem suum, et non pepercit; et lætificávit super te inimícum. *Thren.* 2.

*Ant.* 2. D. Plausérunt super te mánibus omnes transeuntes per viam: sibilavérunt, et movérunt caput. *Thren.* 2.

*Ant.* 7. *d.* Consurge, fília Sion; effunde sicut aquam cor tuum ante conspectum Dómini: leva ad eum manus tuas. *Thren.* 2.

*Ant.* 8. c. Persecútus est te inimícus tuus; sed citò vidébis perditiónem ipsíus, et super cervíces ipsíus ascendes. *Baruch* 4.

*Ant.* 6. F. Nocentes períbunt qui te vexavérunt; et exultátio multitúdinis erit in luctum. *Baruch* 4.

CAPITULUM. *Jerem.* 15.

DICIT Dóminus; Si non relíquiæ tuæ in bonum, si non occurri tibi in témpore afflictiónis, et in témpore tribulatiónis adversùs inimícum.

*Hymn.* Dum spargit, 237.

℣. Quando consoláberis me, Dómine? ℟. Quando fácies de persequéntibus me judícium? *Ps.* 118.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 4. E. Animæquior esto: exhortátur enim te, qui te nominávit; et qui gratuláti sunt in tua ruína, punientur. *Baruch* 4.

*Pro Commemoratione Feriæ, Ant.* Ab illo die cogitavérunt ut interfícerent Jesum. Jesus ergo jam non in palàm ambulábat apud Judæos; sed ábiit in regiónem juxta desertum cum discípulis suis. *Joan.* 11.

℣. Captábunt in ánimam Justi; ℟. Et sánguinem innocentem condemnábunt. *Ps.* 93.

Orémus. Oratio.

Miserere, Dómine, deprecantis Ecclésiæ tuæ; et inclinántibus tibi sua corda propitiátus intende: ut quos unigéniti Fílii tui morte redemisti, nec peccátis fieri permittas obnóxios, nec ópprimi patiáris adversis; Per eumdem.

## SABBATO ANTE PALMAS.

Lectio i.
De Jeremía Prophéta.
*Cap.* 9.

Loquere: Hæc dicit Dóminus: Et cadet morticínum hóminis quasi stercus super fáciem regiónis, et quasi fenum post tergum metentis; et non est qui cólligat. Hæc dicit Dóminus: Non gloriétur sápiens in sapiéntia sua, et non gloriétur fortis in fortitúdine sua, et non gloriétur dives in divítiis suis; sed in hoc gloriétur, qui gloriátur, scire et nosse me, quia ego sum Dóminus, qui fácio misericórdiam, et judícium, et justítiam in terra: hæc enim placent mihi, ait Dóminus. * Ecce dies véniunt, dicit Dóminus, et visitábo super omnem qui circumcísum habet præpútium, super Ægyptum, et super Juda, et super Edom, et super fílios Ammon, et super Moab, et super omnes qui attonsi sunt in comam, habitantes in deserto: quia omnes gentes habent præpútium, omnis autem domus Israel, incircumcísi sunt corde. Jerúsalem.

℟. Réspice, 222.

Lectio ii. *Cap.* 10.

Non est símilis tuî, Dómine: magnus es tu; et magnum nomen tuum in fortitúdine. Quis non timébit te, ô Rex géntium? tuum est enim decus. Inter cunctos sapientes géntium, et in universis regnis eórum, nullus est símilis tuî. Páriter insipientes: et fátui probabuntur: doctrína vanitátis eórum lignum est. Argentum involútum de Tharsis affertur, et aurum de Ophaz, opus artíficis, et manus ærárii: hyacinthus et púrpura indumentum eórum; opus artíficum universa hæc. Dóminus autem Deus verus est: ipse Deus vivens, et Rex sempiternus. Ab indignatióne ejus commovébitur terra; et non sustinébunt gentes comminatiónem ejus. Sic ergo dicétis eis: Dii, qui cœlos et terram non fecérunt, péreant de terra et de his quæ sub cœlo sunt. Jerúsalem.

℟. Deus meus, 223.

Lectio iii.
Léctio sancti Evangélii secundùm Joannem.
*Cap.* 12.

In illo témpore; Cogitavérunt príncipes Sacerdótum ut et Lázarum interfícerent:

quia multi propter illum abíbant ex Judæis, et credébant in Jesum. Et réliqua.

Homília sancti Augustíni Epíscopi. *In Joan. tract.* 50. *n.* 24.

Viso Lázaro resuscitáto, quia tantum miráculum Dómini tantà erat evidéntià diffamátum, tantà manifestatióne declarátum, ut non possent vel occultáre quod factum est, vel negáre; quid invenérunt vidéte: Cogitavérunt autem príncipes Sacerdótum, ut et Lázarum interfícerent. O stulta cogitátio, et cæca sævítia! Dóminus Christus, qui suscitáre pótuit mórtuum, non posset occísum? Quando Lázaro inferebátis necem, numquid auferebátis Dómino potestátem? Si áliud vobis vidétur mórtuus, áliud occísus; ecce Dóminus utrumque fecit: et Lázarum mórtuum, et seipsum suscitávit occísum. Tu autem.

℟. Adhuc módicùm, lumen in vobis est. * Ambuláte, dum lucem habétis; ut non vos ténebræ comprehendant. ℣. Date Dómino Deo vestro glóriam, ántequam contenebrescat. * Ambuláte. *Joan.* 12. *Jerem.* 13.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 1. f. Venit hora, ut clarificétur Fílius hóminis. *Joan.* 12.

Orémus. Oratio.

Omnipotens sempiterne Deus, cleméntiam tuam supplíciter exorámus; ut salutáribus jejúniis castigáti, et bonórum óperum exercitatióne mundáti, ad celebrandum Paschále mystérium dignis sénsibus accedámus; Per Dóminum.

## IN I VESPERIS DOMINICÆ PALMARUM.

*Ant.* 7. *d.* Egredímini in montem, et afferte frondes olívæ, et frondes ligni pulchérrimi, et ramos palmárum. 2 *Esdr.* 8.

*Ant.* 2. D. Transíte per portas: præparáte viam pópulo; planum fácite iter; eleváte signum ad pópulos. *Is.* 62.

*Ant.* 6. F. Ecce Dóminus audítum fecit in extrémis terræ; dícite fíliæ Sion: Ecce salvátor tuus venit. *Is.* 62.

*Ant.* 1. g. Factus est eis salvátor: in dilectióne sua et in indulgéntia sua ipse redémit eos. *Is.* 63.

*Ant.* 8. G. O Dómine, bene prosperáre: benedíctus qui venit in nómine Dómini, Rex Israel. *Ps.* 117. *Joan.* 12.

Capitulum. *Jerem.* 26.

Ecce in mánibus vestris sum: fácite mihi quod bonum et rectum est in óculis vestris. Verúmtamen scitóte et cognóscite, quod si occidéritis me, sánguinem innocentem tradétis contra vosmetipsos, et contra civitátem istam, et habitatóres ejus; in veritáte enim misit me Dóminus ad vos.

℟. Jerúsalem, Jerúsalem, quóties vólui congregáre fí-

tios tuos? et noluisti : * Ecce relinquétur vobis domus vestra deserta. Dico enim vobis : Non me vidébitis ámodo, donec dicátis : Benedictus qui venit in nómine Dómini. ℣. Dedi dilectam ánimam meam in manu inimicórum ejus : hæréditas mea dedit contra me vocem, ídeo odívi eam. * Ecce. *Non dicitur* Glória. *Matth.* 23. *Jerem.* 12.

*Hymnus*, Fando, 220.

℣. Dixi : Ecce vénio, ℟. Ut fáciam, Deus, voluntátem tuam. *Hebr.* 10.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 8. G. Jerúsalem, si cognovisses et tu, et quidem in hac die tua, quæ ad pacem tibi! nunc autem abscóndita sunt ab óculis tuis. *Luc.* 19.

*Oratio ut infrà ad Laudes.*

Completorium, *ut suprà* 124.

¶ *Festum Duplex et suprà occurrens à Dominica Palmarum ad Dominicam in Albis inclusivè, transfertur post Octavam Paschæ.*

*De Semiduplici autem et Simplici fit Commemoratio usque ad Laudes Feriæ IV Majoris Hebdomadæ inclusivè.* ]

## DOMINICA PALMARUM.

*Duplex-majus.*

### AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invit.* Christum Jesum, qui dedit redemptiónem semetipsum pro ómnibus, * Veníte, adorémus. *Repetitur* Christum. 1 *Tim.* 2.

*Ps.* Veníte, *sine* Glória Patri; *sed post ultimum versum Psalmi, dicitur* * Veníte, adorémus : *deinde repetitur Invitatorium.*

*Hymnus,* Oppróbriis, 227.

### IN I NOCTURNO.

Lectio i.

De Jeremía Prophéta.

*Cap.* 11.

Quid est, quod dilectus meus in domo mea fecit scélera multa? Numquid carnes sanctæ áuferent à te malítias tuas, in quibus gloriáta es? Olívam úberem, pulcram, fructíferam, speciósam, vocávit Dóminus nomen tuum : ad vocem loquélæ, grandis exarsit ignis in ea, et combusta sunt frutéta ejus. Et Dóminus exercítuum, qui plantávit te, locútus est super te malum pro malis domûs Israel et domûs Juda, quæ fecérunt sibi ad irritandum me, libantes Báalim. Tu autem, Dómine, demonstrasti mihi, et cognóvi; tunc ostendisti mihi stúdia eórum. Et ego quasi agnus mansuétus qui portátur ad víctimam; et non cognóvi quia cogitavérunt super me consília dicentes : Mittámus lignum in panem ejus, et eradámus eum de terra vivéntium, et nomen ejus non memorétur ámpliùs. Tu autem, Dómine sábaoth, qui júdicas justè, et probas renes et corda, vídeam ultiónem tuam ex eis : tibi enim revelávi causam meam. Jerúsalem.

℟. Décimâ die mensis hujus

tollat unusquisque agnum per famílias et domos suas; et servábitis eum usque ad quartam-décimam diem mensis hujus : * Immolabitque eum universa multitúdo filiórum Israel ad vésperam. ℣. Venit dies azymórum, in qua necesse erat occídi Pascha. * Immolabitque eum. *Exod.* 12. *Luc.* 22.

Lectio ii. *Cap.* 12.

Justus quidem tu es, Dómine, si dísputem tecum; verúmtamen justa loquar ad te : Quare via impiórum prosperátur? bene est ómnibus qui prævaricantur, et iníquè agunt? Plantasti eos, et radícem misérunt; profíciunt, et fáciunt fructum : prope es tu ori eórum, et longè à rénibus eórum. Et tu, Dómine, nosti me; vidisti me, et probasti cor meum tecum : cóngrega eos quasi gregem ad víctimam, et sanctífica eos in die occisiónis. Usquequo lugébit terra, et herba omnis regiónis siccábitur propter malítiam habitántium in ea? Consumptum est ánimal, et vólucrê, quóniam dixérunt: Non vidébit novíssima nostra. Jerúsalem.

℟. Post hebdómades septem, et hebdómades sexaginta duas * Occidétur Christus; et in dimídio hebdómadis defíciet hóstia et sacrifícium. ℣. Fílius hóminis tradétur príncipibus Sacerdótum, et condemnábunt eum morte. * Occidétur Christus; et in dimídio hebdómadis. *Dan.* 9. *Matth.* 20.

Lectio iii.

Reliqui domum meam, dimísi hæreditátem meam : dedi dilectam ánimam meam in manu inimicórum ejus. Facta est mihi hærédìtas mea quasi leo in silva : dedit contra me vocem; idèo odívi eam. Numquid avis díscolor hærêditas mea mihi? numquid avis tincta per totum? Veníte, congregámini, omnes béstiæ terræ; properáte ad devorandum. Pastóres multi demolíti sunt víneam meam, conculcavérunt partem meam : dedérunt portiónem meam desiderábilem in desertum solitúdinis. Posuérunt eam in dissipatiónem, luxítque super me : desolatióne desoláta est omnis terra, quia nullus est qui recógitet corde. Jerúsalem.

℟. Si sanguis hircórum inquinátos sanctíficat ad emundatiónem carnis; * Quantò magìs sanguis Christi emundábit consciéntiam nostram ab opéribus mórtuis? ℣. Dixit Dóminus ad Móysen : Hircus offerétur Dómino pro peccátis in holocaustum sempiternum. * Quantò. *Hebr.* 9. *Num.* 28.

## *IN II NOCTURNO.*

Lectio iv.

Sermo sancti Leónis Papæ. *Serm.* 60. *de Pass.* 11. *cap.* 1.

Desiderata nobis, dilectíssimi, et universo optábilis mundo, adest festívitas Do-

mínicæ passiónis, quæ nos inter exultatiónes spirituálium gaudiórum silére non pátitur; quia etsi difficile est de eádem solemnitáte sæpius dignè aptéque dissérere, non est tamen líberum Sacerdóti, in tanto divínæ misericórdiæ sacramento, fidélis pópuli áuribus subtráhere sermónis offícium: cùm ipsa matéria ex eo quod est ineffábilis, fandi tríbuat facultátem, nec possit defícere quod dicátur, dum nunquam potest satìs esse quod dícitur. Quid autem inter ómnia ópera Dei in quibus humánæ admiratiónis fatigátur inténtio, ita contemplatiónem mentis nostræ et oblectat et súperat, sicut pássio Salvátoris? De cujus omnipoténtia, quæ ei cum Patre unius et æquális esséntiæ est, quóties, ut póssumus, cogitámus, mirabílior nobis fit in Deo humílitas quàm potestas; et difficíliùs cápitur divínæ majestátis exinanítio, quàm servílis formæ in summa provéctio.

℟. Factum est, dum complerentur dies assumptiónis Jesu, * Et ipse fáciem suam firmávit ut iret in Jerúsalem. ℣. Dedit se ut liberáret pópulum suum; * Et ipse. *Luc.* 9. 1 *Mach.* 6.

LECTIO V.

CHRISTUS, ut humánum genus vínculis mortíferæ prævaricatiónis absólveret, et sævienti diábolo poténtiam suæ majestátis occúluit, et infirmitátem nostræ humilitátis objécit. Si enim crudélis et superbus inimícus consílium misericórdiæ Dei nosse potuisset, Judæórum ánimos mansuetúdine pótiùs temperáre, quàm injustis ódiis studuisset accéndere; ne ómnium captivórum amítteret servitútem, dum nihil sibi debentis perséquitur libertátem. Fefellit ergo illum malígnitas sua: íntulit supplícium Fílio Dei, quod cunctis fíliis hóminum in remédium verterétur. Fudit sánguinem justum, qui reconciliando mundo et prétium esset et póculum. Suscépit Dóminus quod secundùm propósitum suæ voluntátis elégit. Admísit in se ímpias manus furéntium, quæ dum próprio incumbunt scéleri, famulátæ sunt Redemptóri. Cujus étiam circa interfectóres suos tanta erat pietátis afféctio, ut de cruce súpplicans Patri, non se vindicári, sed illis postuláret ignosci.

℟. Præcedébat discípulos Jesus, et stupébant; et sequentes timébant. Et cœpit illis dícere: * Ecce ascéndimus Jerosólymam, et damnábunt Fílium hóminis morte. ℣. Ego in flagella parátus sum; inimíci autem mei confirmáti sunt super me. * Ecce. *Marc.* 10. *Ps.* 37.

LECTIO VI. *Cap.* 5.

QUOD ergo falsi testes, quod cruenti príncipes, quod ímpii Sacerdótes in Dómini Jesu Christi mystério, ignáviâ præsidis, et famulátu im-

...

perítæ cohortis egérunt, et detestandum universis séculis, et amplectendum fuit. Crux enim Dómini, sicut in Judæórum erat mente crudélis, ita est in Crucifixi virtúte mirábilis. Furit in unum pópulus, et miserétur ómnium Christus. Quod sævítiâ infertur, potestáte suscípitur; ut licéntia facínoris ætérnæ opus ímpleat voluntátis. Unde omnis ordo rerum gestárum, quem plenissimè Evangélica narrátio percurrit, ita fidélium est accipiendus audítu, ut salvâ fide actiónum quæ témpore Domínicæ passiónis implétæ sunt, intelligámus non solùm remissiónem peccatórum in Christo complétam, sed étiam formam justítiæ esse propósitam.

℟. Ecce ascéndimus Jerosólymam, * Et consummabuntur ómnia quæ scripta sunt de Fílio hóminis: tradétur enim géntibus, et illudétur, et flagellábitur, et conspuétur; et occídent eum. ℣. Inimíci mei dixérunt mala mihi: Quando moriétur, et períbit nomen ejus? Verbum iníquum constituérunt advérsùm me. * Et consummabuntur. *Luc.* 18. *Ps.* 40.

*IN III NOCTURNO.*

LECTIO VII.

Léctio sancti Evangélii secundùm Matthæum.

*Cap.* 21.

IN illo témpore; Cùm appropinquassent Jerosólymis, et venissent Béthphage ad montem Olivéti; tunc Jesus misit duos discípulos, dicens eis: Ite in castellum quod contra vos est, et statim inveniétis ásinam alligátam, et pullum cum ea: sólvite, et addúcite mihi. Et réliqua.

Homília sancti Joannis Chrysóstomi. *In Matth.* 67.

DUPLICEM in hoc facto prophetíam, álteram ópere, álteram verbis Jesus adimplet: ópere quidem, quòd super ásinam séderit; verbis verò, quia scriptum est à Zacharía quod in ásina sícuti rex sedébit. Cùm ígitur id, véluti scriptum est, explesset, altérius ipse prophetíæ dabat inítium, quæ futúra erant ipsis factis significando. Immundárum enim vocatiónem géntium, et quod in ipsis requiescet, et vénient atque adorábunt eum, res ista significábat: ita prophetíæ prophetía successit. Mihi verò, non idcirco solùm in ásina sedisse vidétur, verùm étiam ut vivendi philosóphiâ nos erudíret. Ita simul, et prophetías adimplébat, et dógmata veritátis plantábat, et vivendi præcepta exemplis præbébat et affirmábat. Régulas enim nobis præbet, ne majóra quàm necessárius usus éxigat, requirámus.

℟. Véniet qui mittendus est, et ipse erit expectátio géntium: * Ligans ad víneam pullum suum, et ad vitem, ô fili mi, ásinam suam. ℣. Benedictus, qui venit in nómine Dómini, Rex Israel. * Li-

gans ad víneam pullum suum. *Gen.* 49. *Joan.* 12.

LECTIO VIII.

Sed videámus jam tam verbórum quàm rerum prophetíam. Quæ ígitur est illa? Ecce Rex tuus venit tibi mansuétus, ascendens super jugálem et pullum novum. Non currus, ut reges céteri, agens; non vectigália éxigens, non elátus tumóre, nec satellítibus stipátus; sed magnam úndique monstrans humilitátem. Interrogétur ergo Judæus, quisnam regum ásinâ vectus Jerosólymam intrávit? Néminem profectò præter Christum dícere possent. Hæc faciébat, ut, quemádmodum díximus, figúris ventúra significáret. Hìc enim Ecclésia et novus pópulus olim immundus per pullum significátur; qui, postquam in eo Jesus quiévit, ab omni sorde liberátus, mundus effectus est. Perpende autem ad amussim imáginem esse conservátam. Discípuli quippe jumenta solvunt; quóniam et nos, et illi per Apóstolos vocáti, et adducti ad Christum sumus; et nostra fides in zelum illos deduxit. Idcirco ásina pullum suum sequi perspícitur; quóniam postquam in géntibus Christus séderit, tunc et Israelítæ zelantes vénient; quod Paulus signíficans, dicébat: Quia cæcitas ex parte Israéli áccidit, quousque plenitúdo géntium intráret; et sic omnis Israel salvábitur.

℞. Dixit Jesus: Ite, inveniétis ásinam alligátam, et pullum cum ea: sólvite, et addúcite mihi; et * Si quis vobis áliquid díxerit, dícite quia Dóminus his opus habet: et confestim dimittet eos. ℣. Meæ sunt omnes feræ silvárum, jumenta in móntibus. * Si quis. *Matth.* 21. *Ps.* 49.

LECTIO IX.

Quam húmili autem et abjecto ánimo tunc témporis essent Judæi, consídera; qui, quamvìs tam multa ejus signa víderint, nunquam tamen ipsum sic admiráti sunt, quemádmodum nunc: postquam autem turbas concúrrere aspexérunt, vehementer obstupescunt. Concussa enim fuit, inquit, universa cívitas, dicens: Quis est hic? Turbæ autem dicébant: Hic est Jesus Prophéta à Názareth Galilææ. Ita quando étiam magnum quid de ipso dícere nisi sunt, tunc húmilis et abjecta ipsórum senténtia humi trahebátur. Hæc autem faciébat, non ut se hâc pompâ ostentáret; sed partim, ut et prophetíam, ut díximus, impléret, et vitam nostram instrúeret; partim ut discípuli horum testes, hinc máximè solámen mortis ejus habérent, cùm vidérent in nullo invítum posse violári. Tu verò id étiam admiráre quómodo tam à Zacharía quàm à David ad unguem ista prædicta fuérunt. Sic ígitur étiam nos faciámus; et laudes can-

témus, et vestimenta tradámus iis qui ipsum ásferunt. Quâ enim véniâ digni érimus, cùm illórum álii ásinam vestimentis suis, Christi in ea sessúri grátiâ, ornárent; álii indumenta sub pédibus ásinæ stérnerent, si nos nudum ipsum videntes, à recónditis pro eo quidquam impéndere nólumus, et cùm illórum álii præcédant, álii subsequantur, nos advenientem repellámus atque contemnámus? Quo putas hæc supplício digna esse? Accédit ad te Dóminus índigens; tu ne supplicantem quidem audíre vis, sed accúsas et íncrepas.

℟. Exulta satis, fília Sion: júbila, fília Jerúsalem: * Ecce Rex tuus véniet tibi justus, et salvátor; ipse pauper, et ascendens super ásinam et super pullum fílium ásinæ. ℣. Invénit Jesus asellum, et sedit super eum, sicut scriptum est: * Ecce. *Zach.* 9. *Joan.* 12.

*Repetitur* ℟. Exulta, *usque ad* ℣.

℣ *Sacerd.* Lætétur Israel in eo qui fecit eum; ℟. Et fílii Sion exultent in Rege suo. *Ps.* 149.

AD LAUDES.

*Ant.* 1. a. Dícite fíliæ Sion: Ecce Rex tuus venit tibi mansuétus, sedens super ásinam et pullum fílium subjugális. *Matth.* 21.

*Ant.* 1. D. Testimónium perhibébat turba quæ erat cum eo, quando Lázarum suscitávit à mórtuis; proptérea et óbviam venit ei turba, quia audiérunt eum fecisse hoc signum. *Joan.* 12.

*Ant.* 2. D. Multi autem vestimenta sua stravérunt in via; álii autem frondes cædébant de arbóribus, et sternébant in via. *Marc.* 11.

*Ant.* 3. a. Cœpérunt turbæ discipulórum gaudentes laudáre Deum super ómnibus quas víderant virtútibus, dicentes: Benedictus qui venit Rex in nómine Dómini; pax in cœlo, et glória in excelsis. *Luc.* 19.

*Ant.* 6. *C.* Dico vobis: Quia, si hi tacúerint, lápides clamábunt. *Luc.* 19.

CAPITULUM. *Coloss.* 2.

CHIROGRAPHUM decréti, quod erat contrárium nobis, et ipsum tulit Christus de médio, affígens illud cruci; et expólians principátus et potestátes, traduxit confidenter, palàm triumphans illos in semetipso.

*Hymn.* Dum Christe, 227.

℣. Confiteantur tibi pópuli, Deus; ℟. Confiteantur tibi pópuli omnes. *Ps.* 66.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 1. J. Turbæ quæ præcedébant, et quæ sequebantur, clamábant, dicentes: Hosanna Fílio David; benedictus qui venit in nómine Dómini; hosanna in altíssimis. *Matth.* 21.

Orémus. ORATIO.

OMNIPOTENS sempiterne Deus, qui humáno géneri ad imitandum humilitátis exemplum, Salvatórem nostrum

carnem súmere, et crucem subíre fecisti : concéde propítius, ut et patiéntiæ ipsíus habére documenta, et resurrectiónis consórtia mereámur; Per eumdem.

AD PRIMAM.

*Ant.* 1. a. Dícite.

*In* ℟ *br.* ℣. Qui passus es * pro nobis.

AD TERTIAM.

*Ant.* 1. D. Testimónium.

CAPITULUM. *Tob.* 13.

IPSE salvábit nos propter misericórdiam suam. Aspícite ergo quæ fecit nobiscum, et cum timóre et tremóre confitémini illi; Regemque seculórum exaltáte in opéribus vestris.

℟ *br.* Afferte Dómino * Glóriam et honórem. Afferte. ℣. Afferte Dómino * glóriam nómini ejus, * Glóriam et honórem. ℟. Afferte.

℣. Commoveátur à fácie ejus universa terra; ℟. Dícite in géntibus, quia Dóminus regnávit. *Ps.* 95.

AD SEXTAM.

*Ant.* 2. D. Multi.

CAPITULUM. *Isai.* 55.

MONTES et colles cantábunt coram vobis laudem, et ómnia ligna regiónis plaudent manu. Pro saliunca ascendet ábies, et pro urtíca crescet myrtus; et erit Dóminus nominátus in signum æternum quod non auferétur.

℟ *br.* Benedictus qui venit * In nómine Dómini. Benedictus. ℣. Deus Dóminus * et illuxit nobis, * In nómine. ℟. Benedictus.

℣. Constitúite diem solemnem in condensis, ℟. Usque ad cornu altáris. *Ps.* 117.

AD NONAM.

*Ant.* 6. C. Dico vobis.

CAPITULUM. *Sap.* 10.

DECANTAVERUNT, Dómine, nomen sanctum tuum, et victrícem manum tuam laudavérunt páriter; quóniam Sapiéntia apéruit os mutórum, et linguas infántium fecit disertas.

℟ *br.* Ex ore infántium et lacténtium, * Perfecisti laudem. Ex ore infántium. ℣. Propter inimícos tuos, * Dómine, * Perfecisti laudem. ℟. Ex ore. *Ps.* 8.

℣. Laudáte, púeri, Dóminum : ℟. Laudáte nomen Dómini. *Ps.* 112.

AD II VESPERAS.

*Ant.* 8. G. Videntes príncipes Sacerdótum et Scribæ mirabília quæ fecit Jesus, et púeros clamantes in templo, Hosanna Fílio David, indignáti sunt. *Matth.* 21.

*Ant.* 7. d. Dixérunt ad semetipsos : Vidétis quia nihil profícimus? ecce mundus totus post eum ábiit. *Joan.* 12.

*Ant.* 3. D. Quærébant Jesum pérdere; et non inveniébant quid fácerent illi. *Luc.* 19.

*Ant.* 1. g. Ex princípibus multi credidérunt in eum; sed non confitebantur, ut è Synagóga non ejicerentur. *Joan.* 12.

*Ant.* 4. E. Jam enim conspiráverant Judæi, ut si quis eum confiterétur esse Chri-

stum, extra Synagógam fieret. *Joan.* 9.

CAPITULUM. *Hebr.* 12.

RECOGITATE eum qui talem sustínuit à peccatóribus adversùm semetipsum contradictiónem; ut ne fatigémini, ánimis vestris deficientes : nondum enim usque ad sánguinem restitistis, adversùs peccátum repugnantes.

*Hymnus*, Vexilla, 229.

℣. Dóminus regnávit, irascantur pópuli : ℟. Confiteantur nómini tuo magno. *Ps.* 98.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 5. C. Pater, salvífica me ex hac hora; sed proptérea veni in horam hanc : Pater, clarífica nomen tuum. *Joan.* 12.

*Oratio ut suprà ad Laudes.*

## FERIA SECUNDA.

¶ *Hàc Feriâ et duabus sequentibus, omnia ut in Feriis Hebdomadæ præcedentis, exceptis his quæ hìc habentur propria.* ]

LECTIO I.
De Jeremia Prophéta.
*Cap.* 14.

DIXIT Dóminus ad me : Noli oráre pro pópulo isto in bonum. Cùm jejunáverint, non exáudiam preces eórum; et si obtúlerint holocautómata et víctimas, non suscípiam ea; quóniam gladio, et fame, et peste consúmam eos. Et dixi : A, a, a, Dómine Deus : prophétæ dicunt eis : Non vidébitis gládium, et fames non erit in vobis; sed pacem veram dabit vobis in loco isto. Et dixit Dóminus ad me : Falsò prophétæ vaticinantur in nómine meo : non misi eos, et non præcépi eis, neque locútus sum ad eos : visiónem mendácem, et divinatiónem, et fraudeléntiam, et seductiónem cordis sui prophétant vobis. Idcirco hæc dicit Dóminus de prophétis qui prophétant in nómine meo, quos ego non misi, dicentes : Gládius et fames non erit in terra hac : In gládio et fame consumentur prophétæ illi. Et pópuli quibus prophétant, erunt projecti in viis Jerúsalem præ fame et gládio; et non erit qui sepéliat eos. Jerúsalem.

℟. Décimâ die, 247.

LECTIO II. *Cap.* 18.

DIXERUNT : Veníte, et cogitémus contra Jeremíam cogitatiónes; non enim períbit lex à sacerdóte, neque consílium à sapiente, nec sermo à prophéta : veníte, et percutiámus eum linguâ, et non attendámus ad universos sermónes ejus. Attende, Dómine, ad me, et audi vocem adversariórum meórum. Numquid rédditur pro bono malum, quia fodérunt fóveam ánimæ meæ? Recordáre quod stéterim in conspectu tuo, ut lóquerer pro eis bonum, et avérterem indignatiónem tuam ab eis. Proptérea da fílios eórum in famem, et deduc eos in manus gládii : fiant uxóres eórum absque líberis, et víduæ; et viri eárum interficiantur morte, júvenes eórum

confodiantur gládio in prælio. Audiátur clamor de dómibus eórum : addúces enim super eos latrónem repente; quia fodérunt fóveam ut cáperent me, et láqueos abscondérunt pédibus meis. Tu autem, Dómine, scis omne consílium eórum adversùm me in mortem : ne propitiéris iniquitáti eórum, et peccátum eórum à fácie tua non deleátur. Jerúsalem.

℟. Post hebdómades septem, 248.

LECTIO III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Joannem.

*Cap.* 12.

JESUS ante sex dies Paschæ venit Bethániam, ubi Lázarus fúerat mórtuus, quem suscitávit Jesus. Et réliqua.

Homília sancti Augustíni Epíscopi. *In Joan. tract.* 50. *n.* 5, 6.

NE putárent hómines phantasma esse factum, quia mórtuus resurrexit, Lázarus unus erat ex recumbéntibus; vivébat, loquebátur, epulabátur: véritas ostendebátur, infidélitas Judæórum confundebátur. Discumbébat ergo Dóminus cum Lázaro et céteris, ministrábat Martha una ex soróribus Lázari. María verò, áltera soror Lázari, accépit libram unguenti nardi pístici pretiósi, unxit pedes Jesu, et extersit capillis suis pedes ejus; et domus impléta est ex odóre unguenti. Factum audívimus, mystérium requirámus. Quæcumque ánima fidélis vis esse, cum María unge pedes Dómini pretióso unguento : unge pedes Jesu; bene vivendo Domínica sectáre vestígia. Capillis terge : si habes supérflua, da paupéribus, et Dómini pedes tersisti; capilli enim supérflua córporis videntur. Habes quod agas de supérfluis tuis : tibi supérflua sunt, sed Dómini pédibus necessária.

℟. Dixit Judas, qui erat Jesum traditúrus : Quare hoc unguentum non væniit trecentis denáriis, et datum est egénis? * Dixit Jesus : Páuperes semper habétis vobiscum; me autem non semper habétis. ℣. Locútus est Móyses ad Israel in solitúdine : non décerunt páuperes in terra habitatiónis tuæ. * Dixit. *Joan.* 12. *Deut.* 15.

℣ *Sacerd.* Laudans invocábo Dóminum; ℟. Et ab inimícis meis salvus ero. *Ps.* 17.

AD LAUDES.

*Ant.* 2. D. Vide, Dómine, afflictiónem meam, quóniam erectus est inimícus. *Thren.* 1.

*Ant.* 7. d. Collégit furórem suum in me; et cómminans mihi, infrémuit contra me déntibus suis hostis meus. *Job* 16.

*Ant.* 8. c. Abjectiónem posuisti me in médio populórum : aperuérunt os suum omnes inimíci. *Thren.* 3.

*Ant.* 3. b. Factus sum in derísum omni pópulo meo : cánticum eórum totâ die. *Thren.* 3.

*Ant.* 4. f. Audisti oppró-

brium eórum, Dómine, omnes cogitatiónes eórum advérsùm me. *Thren.* 3.

*Capitulum, Hymnus, et* ℣, *ut suprà,* 227, 228.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 6. F. María unxit pedes Jesu, et extersit capillis suis; et domus impléta est ex odóre unguenti. *Joan.* 12.

Orémus. ORATIO.

LARGIRE nobis, Dómine, appropinquante Fílii tui passióne, grátiæ tuæ abundántius auxílium; ut per ópera caritátis, Christi bonum odórem ubíque diffundámus; Per eumdem Dóminum nostrum Jesum Christum.

AD HORAS, *Antiphonæ de Laudibus, quartâ prætermissâ.*

AD VESPERAS, *Psalmi dicuntur sub quinque Antiphonis de Laudibus, ut suprà.*

*Capitul. etc. ut suprà,* 229.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 1. D. Mittens hæc múlier unguentum hoc in corpus meum, ad sepeliendum me fecit. *Matth.* 26.

Orémus. ORATIO.

DA, quæsumus omnípotens Deus, ut qui in tot adversis ex nostra infirmitáte defícimus, intercedente unigéniti Fílii tui passióne, respirémus; Qui tecum vivit.

## FERIA TERTIA.

LECTIO I.

De Jeremía Prophéta.

*Cap.* 26.

CUM complesset Jeremías, loquens ómnia quæ præcéperat ei Dóminus, ut loquerétur ad universum pópulum, apprehendérunt eum Sacerdótes, et Prophétæ, et omnis pópulus, dicens: Morte moriátur. Quare prophetávit in nómine Dómini, dicens: Sicut Silo erit domus hæc; et urbs ista desolábitur, eo quod non sit habitátor? Et congregátus est omnis pópulus adversùs Jeremíam in domo Dómini. Et audiérunt príncipes Juda verba hæc; et ascendérunt de domo regis in domum Dómini, et sedérunt in intróitu portæ domûs Dómini novæ. Et locúti sunt Sacerdótes et Prophétæ ad príncipes, et ad omnem pópulum, dicentes: Judícium mortis est viro huic; quia prophetávit adversùs civitátem istam, sicut audistis áuribus vestris. Jerúsalem.

℟. Præcedébat, 249.

LECTIO II.

ET ait Jeremías ad omnes príncipes et ad universum pópulum, dicens: Dóminus misit me, ut prophetárem ad domum istam et ad civitátem hanc ómnia verba quæ audistis. Nunc ergo bonas fácite vias vestras et stúdia vestra, et audíte vocem Dómini Dei vestri; et pœnitébit Dóminum mali quod locútus est advérsùm vos. Ego autem ecce in mánibus vestris sum: fácite mihi quod bonum et rectum est in óculis vestris; verúmtamen scitóte et cognóscite, quod si occidéritis me, sánguinem innocentem tradétis

contra vosmetipsos, et contra civitátem istam et habitatóres ejus: in veritáte enim misit me Dóminus ad vos, ut lóquerer in áuribus vestris ómnia verba hæc. Et dixérunt príncipes et omnis pópulus ad Sacerdótes et ad Prophétas: Non est viro huic judícium mortis; quia in nómine Dómini Dei nostri locútus est ad nos. Jerúsalem.

℟. Ecce ascéndimus, 250.

LECTIO III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Marcum.

*Cap.* 14.

In illo témpore; Erat Pascha et Azyma post bíduum: et quærébant summi Sacerdótes et Scribæ quómodo Jesum dolo tenérent, et occíderent. Et réliqua.

Homília sancti Joannis Chrysóstomi.

*In Matth.* 80.

Príncipes Sacerdótum eos dicit, qui de princípibus Sacerdótum fúerant. Quod autem consílium cepérunt? Ut occúltiùs eum cáperent atque interfícerent? Utrumque: pópulum enim valde formidábant, ac ídeo præteríre diem festum volébant, dicentes: Non in die festo. Nam diábolus, ne manifestè pássio extáret, ad áliud tempus rejícere ipsam studébat. Ne tumultus, ínquiunt, fiat in pópulo. Consídera valde ipsos timére, non Deum, neque ne majus scelus esset in ipsa Paschæ celebratióne tam tetrum fácinus fácere, sed hómines et tumultum. Irâ tamen inflammáti, postéaquam proditórem invenérunt, commutáti, expectáre non potuérunt, sed in ipsa solemnitáte eum occidérunt. Quasi enim cæci cupiditáte, furóreque irritáti, quamprímùm sibi facultas data est, peregérunt. Et quamvìs ipse nequítiâ illórum dispensando in mélius uterétur, non tamen hinc innóxii facti, propter hanc causam effúgere póterunt supplícium; cùm mille cruciátus ex voluntátis pravitáte mereantur, qui eo témpore quo nóxii étiam solvebantur, innocentem interfícere voluérunt, à quo innúmera et immensa benefícia suscéperant, et qui propter illos, gentes intérea neglígere videbátur.

℟. Quærébant summi Sacerdótes et Scribæ quómodo Jesum dolo tenérent, et occíderent; * Dicébant autem: Non in die festo; ne fortè tumultus fíeret in pópulo. ℣. Qui inquirébant mala, locúti sunt vanitátes, et dolos totâ die meditabantur. * Dicébant. *Marc.* 14. *Ps.* 37.

℣ *Sacerd.* Laudans invocábo Dóminum; ℟. Et ab inimícis meis salvus ero. *Ps.* 17.

AD LAUDES.

*Ant.* 8. G. Dixérunt ímpii: Opprimámus virum justum, quóniam inútilis est nobis, et impróperat nobis peccáta legis. *Sap.* 2.

*Ant.* 7. *d.* Factus est nobis

in traductiónem cogitatiónum nostrárum : gravis est nobis étiam ad videndum. *Sap.* 2.

*Ant.* 5. a. Tanquam nugáces æstimáti sumus ab illo; et ábstinet se à viis nostris tanquam ab immundítiis. *Sap.* 2.

*Ant.* 4. E. Contuméliâ et tormento interrogémus eum, ut sciámus reveréntiam ejus, et probémus patiéntiam illíus. *Sap.* 2.

*Ant.* 1. g. Hæc cogitavérunt, et erravérunt: excæcávit enim illos malítia eórum. *Sap.* 2.

*Capitulum, Hymnus, et ℣, ut suprà* 227, 228.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 3. c. Nemo tollit à me ánimam meam, sed ego pono eam à meipso : et potestátem hábeo ponendi eam, et potestátem hábeo íterum sumendi eam. *Joan.* 10.

Orémus. Oratio.

Reminiscere miseratiónum tuárum, Dómine; et fámulos tuos æternâ protectióne sanctífica, pro quibus Jesus Christus Fílius tuus sponte se morti trádidit, et Paschále sacrifícium fuso sánguine consummávit; Qui tecum vivit et regnat.

Ad Horas, *Antiphonæ de Laudibus, quartâ prætermissâ.*

Ad Vesperas, *Antiphonæ de Laudibus : Capitulum, etc. ut suprà* 229.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 1. D. Sciens Jesus quia venit hora ejus ut tránseat ex hoc mundo ad Patrem, cùm dilexisset suos qui erant in mundo, in finem dilexit eos. *Joan.* 13.

Orémus. Oratio.

Deus, in cujus præcípuis mirabílibus est humána reparátio; solve ópera diáboli, et mortífera peccáti víncula disrumpe: ut, destructâ malignitáte quæ nócuit, vincat misericórdia quæ redémit; Per Dóminum.

## FERIA QUARTA.

Lectio 1.

Incipit liber Baruch Prophétæ. *Cap.* 1.

Et hæc verba libri, quæ scripsit Baruch fílius Neríæ, fílii Maasíæ, fílii Sedecíæ, fílii Sédei, fílii Helcíæ in Babylónia, in anno quinto, in séptimo die ménsis, in témpore quo cepérunt Chaldæi Jerúsalem, et succendérunt eam igni. Et legit Baruch verba libri hujus ad aures Jechoníæ fílii Jóakim regis Juda, et ad aures universi pópuli venientis ad librum, et ad aures poténtium filiórum regum, et ad aures presbyterórum, et ad aures pópuli, à mínimo usque ad máximum eórum ómnium habitántium in Babylónia, ad flumen Sodi. Qui audientes plorábant, et jejunábant, et orábant in conspectu Dómini. Jerúsalem.

℟. Congregáti sunt príncipes Sacerdótum, et Senióres pópuli in átrium prínci-

pis Sacerdótum; * Et consílium fecérunt, ut Jesum dolo tenérent, et occíderent. ℣. Príncipes convenérunt in unum adversùs Dóminum, et adversùs Christum ejus; * Et consílium. *Matth.* 26. *Ps.* 2.

Lectio II. *Cap.* 3.

Et nunc, Dómine omnípotens, Deus Israel, ánima in angústiis, et spíritus ánxius clamat ad te: Audi, Dómine, et miserére, quia Deus es miséricors; et miserére nostri, quia peccávimus ante te. Quia tu sedes in sempitérnum, et nos períbimus in ævum? Dómine omnípotens, Deus Israel, audi nunc oratiónem mortuórum Israel, et filiórum ipsórum, qui peccavérunt ante te, et non audiérunt vocem Dómini Dei sui: et agglutináta sunt nobis mala. Noli meminisse iniquitátum patrum nostrórum; sed memento manûs tuæ et nóminis tui in témpore isto, quia tu es Dóminus Deus noster: et laudábimus te, Dómine, quia propter hoc dedisti timórem tuum in córdibus nostris, et ut invocémus nomen tuum, et laudémus te in captivitáte nostra; quia convértimur ab iniquitáte patrum nostrórum qui peccavérunt ante te. Et ecce nos in captivitáte nostra sumus hódie, quâ nos dispersisti in impropérium, et in maledictum, et in peccátum, secundùm omnes iniquitátes patrum nostrórum qui recessérunt à te, Dómine Deus noster. Jerúsalem.

℟. Intrávit sátanas in Judam; et locútus est cum princípibus Sacerdótum quemádmodum Jesum tráderet eis: et * Pacti sunt pecúniam illi dare; et spopondit. ℣. Sedet peccátor in insídiis cum divítibus in occultis, ut interfíciat innocentem. * Pacti sunt. *Luc.* 22. *Ps.* 9.

Lectio III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Lucam.

*Cap.* 22.

In illo témpore; Appropinquábat dies festus Azymórum, qui dícitur Pascha: et quærébant príncipes Sacerdótum et Scribæ, quómodo Jesum interfícerent. Et réliqua.

Homília venerábilis Bedæ Presbyteri. *In Luc. l.* 6.

Abiit Judas, et locútus est cum princípibus Sacerdótum et magistrátibus quemádmodum Jesum tráderet eis: et pacti sunt illi pecúniam dare; et spopondit. Et quærébat opportunitátem, ut tráderet illum sine turba. Multi hódie Judæ scelus, quòd Dóminum ac Magistrum, Deumque suum pecúniâ vendíderit, velut immáne et nefárium exhorrent, nec tamen cavent. Nam cùm pro munéribus falsum contra quémlibet testimónium dicunt, profectò, quia veritátem pro pecúnia negant, Dóminum pecúniâ vendunt. Ipse enim dixit: Ego sum Véritas. Cùm

societátem fraternitátis áliquâ discórdiæ peste commáculant, Dóminum produnt. Nam sicut Joannes Baptista, qui non pro Christi confessióne, sed pro defensióne veritátis martyr occúbuit; ídeo tamen pro Christo, quia pro veritáte martyrium suscépit: ita è contrário, qui caritátis et veritátis jura spernit, Christum útique, qui est cáritas et véritas, prodit.

℟. Appendérunt mercédem meam triginta argénteos, * Decórum prétium, quo appretiátus sum ab eis. ℣. Ait Judas: Quid vultis mihi dare, et ego vobis eum tradam? At illi constituérunt ei triginta argénteos; * Decórum prétium. *Zach.* 11. *Matth.* 26.

℣ *Sacerd.* Laudans invocábo Dóminum; ℟. Et ab inimícis meis salvus ero. *Ps.* 17.

AD LAUDES.

*Ant.* 4. E. Fodérunt fóveam, ut cáperent me, et láqueos abscondérunt pédibus meis. Tu, Dómine, scis omne consílium eórum adversùm me in mortem. *Jerem.* 18.

*Ant.* 3. c. Despiciébant me, et detrahébant mihi; et quem máximè diligébam, aversátus est me. *Job* 19.

*Ant.* 8. c. Et quidem Fílius hóminis, secundùm quod definítum est, vadit: verúmtamen væ hómini illi per quem tradétur. *Luc.* 22.

*Ant.* 6. F. Quod scriptum est, oportet impléri in me; étenim ea quæ sunt de me, finem habent. *Luc.* 22.

*Ant.* 2. D. Ecce appropinquávit hora; et Fílius hóminis tradétur in manus peccatórum. *Matth.* 26.

*Capitulum, Hymnus, et* ℣ *ut suprà.* 227, 228.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 1. f. Quærébat Judas opportunitátem, ut tráderet Jesum sine turbis. *Luc.* 22.

Orémus. ORATIO.

PRÆTENDE nobis misericórdiam tuam, Dómine, qui ab infidéli discípulo tradi pertulisti; ut ab ejus cæcitáte aliéni, te Salvatórem toto corde agnoscámus, et in tua semper cruce gloriémur; Qui vivis.

AD HORAS, *Antiphonæ de Laudibus, quartâ prætermissâ.*

*Hodie dictis* Pater, *et* Ave, *secretò, Vesperæ inchoantur absolutè ab impositione primæ Antiphonæ.*

¶ *Officium deinceps, usque ad Nocturnum Paschæ, dicitur sine* Deus, in adjutórium; *sine* Glória Patri *etiam in fine Psalmorum; sine* Dóminus vobiscum; *sine* Orémus; *et sine* Benedicámus.

*Nec etiam dicuntur Capitula,* ℟℟℟ *brevia, et Hymni; neque accinitur jubilus in fine Antiphonarum, usque ad Vesperas Sabbati in Albis exclusivè.* ]

AD VESPERAS.

*Psalmi de Feria.*

*Ant.* 8. G. Scitis quia post bíduum Pascha fiet, et Fílius

hóminis tradétur, ut crucifigátur. *Matth.* 26.

*Ant.* 3. b. Tempus meum prope est : euntes paráte nobis Pascha, ut manducémus. *Matth.* 26. *Luc.* 22.

*Ant.* 7. *d.* Ubi est reféctio mea, ubi Pascha cum discípulis meis mandúcem? *Marc.* 14.

*Ant.* 6. F. Desidério desiderávi hoc Pascha manducáre vobiscum, ántequam pátiar. *Luc.* 22.

*Ant.* 1. g. Dico vobis quia ex hoc non manducábo illud, donec impleátur in regno Dei. *Luc.* 22.

*Continuò imponitur Antiphona sequens ad Canticum* Magníficat.

*Ant.* 4. E. Vos estis qui permansistis mecum in tentatiónibus meis; et ego dispóno vobis sicut dispósuit mihi Pater meus regnum, ut edátis et bibátis super mensam meam. *Luc.* 22.

*Finitâ Antiphonâ, sine* Dóminus vobiscum, *et sine* Orémus, *dicitur sequens*

ORATIO.

RESPICE, quæsumus Dómine, super hanc famíliam tuam, pro qua Dóminus noster Jesus Christus non dubitávit mánibus tradi nocéntium, et crucis subíre tormentum; *sub silentio dicitur :* Qui tecum vivit et regnat in unitáte Spíritûs sancti Deus, per ómnia sécula seculórum. Amen. *Et nihil additur. Dicitur tamen* Pater noster *secretò, de more : sicque terminantur Horæ usque ad Vesperas Sabbati sancti.*

COMPLETORIUM *inchoatur absolutè à Psalmo* Cùm invocárem, *ut in Completorio Dominicæ : et continuò dicitur Cantic.* Nunc dimittis; *deinde Oratio* Réspice, *ut suprà; tandem* Pater, Ave, Credo. *Omittitur Antiphona de Beata, usque ad Pascha.*

¶ *Tribus Feriis sequentibus, dictis secretò* Pater, Ave, Credo, *Officium Nocturnum inchoatur absolutè ab impositione Antiphonæ in primum Psalmum. Et in fine cujuslibet Antiphonæ Nocturnorum et Laudum extinguitur unus ex quindecim cereis, in loco conspicuo ante vel retro altare positis.*]

# FERIA QUINTA
## IN CŒNA DOMINI.

### *IN I NOCTURNO.*

*Ps.* Quare fremuérunt, 1.

*Ant.* 1. g. Astitérunt reges terræ, et príncipes convenérunt in unum adversùs Dóminum, et adversùs Christum ejus.

*Ps.* Dóminus regit me, 76.

*Ant.* 6. F. Parasti, Dómine, in conspectu meo mensam, adversùs eos qui tríbulant me : et calix meus inébrians quàm præclárus est!

*Ps.* Júdica me...... quóniam, 45.

*Ant.* 8. G. Cum ímpiis non sedébo; lavábo inter innocentes manus meas.

℣. Lavábis me, Dómine,
℟. Et super nivem dealbábor.
*Ps.* 50.

*Hoc triduo, post* ℣ *cujusque Nocturni,* Pater noster *dicitur totum secretò. Et statim sine Absolutione et sine Benedictione leguntur Lectiones, in quarum fine non dicitur* Tu autem.

LECTIO I.

Incipit Lamentátio Jeremíæ Prophétæ.

*Cap.* I.

QUOMODO sedet sola cívitas plena pópulo? facta est quasi vídua dómina géntium : princeps provinciárum facta est sub tribúto. Plorans plorávit in nocte, et lácrymæ ejus in maxillis ejus : non est qui consolétur eam ex ómnibus caris ejus : omnes amíci ejus sprevérunt eam, et facti sunt ei inimíci. Migrávit Judas propter afflictiónem et multitúdinem servitútis; habitávit inter gentes, nec invénit réquiem : omnes persecutóres ejus apprehendérunt eam inter angústias. Viæ Sion lugent, eo quod non sint qui véniant ad solemnitátem: omnes portæ ejus destructæ, sacerdótes ejus gementes, vírgines ejus squálidæ, et ipsa oppressa amaritúdine. Facti sunt hostes ejus in cápite, inimíci ejus locupletáti sunt; quia Dóminus locútus est super eam, propter multitúdinem iniquitátum ejus : párvuli ejus ducti sunt in captivitátem ante fáciem tribulantis. Jerúsalem, Jerúsalem, convértere ad Dóminum Deum tuum.

℟. Cœnâ factâ, surgit Jesus à cœna, et cœpit laváre pedes discipulórum, et dicit Petro : * Vos mundi estis, sed non omnes; sciébat enim quisnam esset qui tráderet eum. ℣. Non supergáudeant mihi qui adversantur mihi iníquè; qui odérunt me gratìs, et ánnuunt óculis : * Vos. *Joan.* 13. *Ps.* 34.

LECTIO II.

ET egressus est à fília Sion omnis decor ejus : facti sunt príncipes ejus velut arietes non invenientes páscua; et abiérunt absque fortitúdine ante fáciem subsequentis. Recordáta est Jerúsalem diérum afflictiónis suæ, et prævaricatiónis ómnium desiderabílium suórum, quæ habúerat à diébus antíquis, cùm cáderet pópulus ejus in manu hostíli, et non esset auxiliátor : vidérunt eam hostes, et derisérunt sábbata ejus. Peccátum peccávit Jerúsalem, proptérea instábilis facta est. Omnes qui glorificábant eam, sprevérunt illam, quia vidérunt ignomíniam ejus; ipsa autem gemens, conversa est retrorsum. Sordes ejus in pédibus ejus, nec recordáta est finis sui : depósita est vehementer, non habens consolatórem : vide, Dómine, afflictiónem meam, quóniam erectus est inimícus. Jerúsalem.

℟. Turbátus est Jesus spíritu, et protestátus est, et dixit : Amen, amen dico vobis, quia

unus ex vobis tradet me : * Ecce manus tradentis me mecum est in mensa. ℣. Homo pacis meæ, qui edébat panes meos, magnificávit super me supplantatiónem : * Ecce. *Joan.* 13. *Luc.* 22. *Ps.* 40.

Lectio III.

Manum suam misit hostis ad ómnia desiderabília ejus; quia vidit gentes ingressas sanctuárium suum, de quibus præcéperas ne intrárent in ecclésiam tuam. Omnis pópulus ejus gemens, et quærens panem, dedérunt pretiósa quæque pro cibo ad refocillandam ánimam. Vide, Dómine, et considera, quóniam facta sum vilis. O vos omnes, qui transítis per viam, atténdite, et vidéte si est dolor sicut dolor meus; quóniam vindemiávit me, ut locútus est Dóminus in die iræ furóris sui. De excelso misit ignem in óssibus meis, et erudívit me : expandit rete pédibus meis, convertit me retrorsum : pósuit me desolátam, totâ die mœróre confectam. Vigilávit jugum iniquitátum meárum; in manu ejus convolútæ sunt, et impósitæ collo meo; infirmáta est virtus mea : dedit me Dóminus in manu, de qua non pótero súrgere. Jerúsalem.

℟. Fílius hóminis vadit, sicut scriptum est de illo : væ autem hómini illi per quem Fílius hóminis tradétur : * Bonum erat ei si natus non fuisset homo ille. ℣. Dilexit maledictiónem, et véniet ei; et nóluit benedictiónem, et elongábitur ab eo : * Bonum. *Matth.* 26. *Ps.* 108.

*IN II NOCTURNO.*

*Ps.* Ad te, Dómine, clamábo, 5.

*Ant.* 5. a. Cum operántibus iniquitátem ne perdas me : qui loquuntur pacem cum próximo suo; mala autem in córdibus eórum.

*Ps.* Expectans, ***cum sua divisione***, 90.

*Ant.* 4. A. Confundantur et revereantur simul, qui quærunt ánimam meam, ut áuferant eam.

*Ps.* Beátus qui intélligit, 97.

*Ant.* 1. g. Adversùm me susurrábant omnes inimíci mei : verbum iníquum constituérunt adversùm me.

℣. Pro eo ut me dilígerent, detrahébant mihi; ℟. Ego autem orábam. *Ps.* 108.

Pater noster, *secretò.*

Lectio IV.

Sermo sancti Joannis Chrysóstomi.

*Hom.* 1 *in prodit. Judæ, et in Pascha, n.* 1.

Hodie, dilectíssimi fratres, Dóminus noster Jesus Christus tráditus est : hujus namque diéi vésperâ, Judæi, illo comprehenso, abiérunt. Verùm ne contristéris áudiens Christum próditum esse; imò pótiùs contristáre, et acerbè luge non próditum, sed proditórem Judam. Etenim qui próditus est, mundum salvum fecit; próditor verò ánimam suam pérdidit. Qui próditus est, ad déxteram Patris sedet in cœlis : próditor in inferno

nunc est, inevitábile ferens supplícium. Hujus causâ luge et ingemisce; hujus causâ lacrymáre; ejus quippe causâ flevit Christus. Nam cùm vidisset eum, inquit, turbátus est, et dixit : Unus ex vobis tradet me.

℟. Jesus cùm intinxisset panem, dedit Judæ Simónis Iscariótæ; et * Post buccellam introívit in eum sátanas. ℣. Fiat mensa eórum coram ipsis in láqueum, et in retributiónes, et in scándalum. * Post. *Joan.* 13. *Ps.* 68.

LECTIO V. *n.* 5.

Erat olim Pascha Judáicum, sed nunc solútum est, advenitque spirituále Pascha, quod trádidit Christus. Illis enim manducántibus ac bibéntibus, inquit, accípiens panem, fregit et dixit : Hoc est corpus meum, quod pro vobis frángitur in remissiónem peccatórum. Sciunt ii qui initiáti sunt illa quæ dicuntur. Et rursus cálicem, dicens ; Hic est sanguis meus, qui pro multis effúnditur in remissiónem peccatórum. Aderat Judas, hæc Christo dicente : Hoc est corpus quod vendidisti, Juda, triginta argénteis, pro quo nuper pacta impudenter iníbas cum ímprobis Pharisæis. O Christi benignitátem! ô Judæ deméntiam et insániam! Ille namque véndidit illum triginta denáriis : Christus verò póstea non recusávit hunc ipsum sánguinem vénditum vendenti dare in remissiónem peccatórum, si ipse voluisset. Aderat Judas, et sacræ mensæ párticeps erat. Sicut enim pedes ejus lavit, ut aliórum discipulórum; ita et sacræ mensæ párticeps ille fuit, ut nullum excusatiónis locum habéret, si in nequítia perseveráret. Omnia enim quæ penès se erant, Dóminus ei tribúerat et protúlerat; ille verò in malo suo propósito mansit.

℟. Accepto Jesus pane, grátias egit, et fregit, et dedit discípulis suis, dicens : Hoc est corpus meum quod pro vobis datur : * Hoc fácite in meam commemoratiónem. ℣. Cùm díxerint vobis fílii vestri : Quæ est ista relígio? dicétis eis : Víctima tránsitûs Dómini est : * Hoc fácite. *Luc.* 22. *Exod.* 12.

LECTIO VI. *n.* 6.

Sed tempus demum est ad terríbilem hanc mensam accedendi. Omnes ítaque accedámus cum congruenti temperántia ac vigilántia. Nullus ultrà Judas esto, nullus ímprobus, nullus venéno infectus; neque ália in ore versans, ália in mente rétinens. Adest Christus; et nunc is qui mensam illam apparávit, hic ipse hanc nunc exornat. Non enim homo est qui facit ut propósita efficiantur corpus et sanguis Christi; sed ipse Christus qui pro nobis crucifixus est. Figúram implens stat Sacerdos, verba illa próferens; virtus autem et grátia Dei est. Hoc est corpus meum, inquit. Hoc verbum transformat ea quæ propósita

propósita sunt. Ac quemádmodum vox illa : Créscite et multiplicámini, et repléte terram, semel quidem proláta est, ómni verò témpore natúræ nostræ vim præbet ad filiórum procreatiónem; ita et vox hæc semel proláta in Ecclésiis ad unamquamque mensam ab illo, ad hodiernum usque tempus, et usque ad adventum ejus, sacrificium perfectum éfficit.

℟. Accepto Jesus cálice, grátias agens dedit eis; et bibérunt ex illo omnes. * Et ait Jesus : Hic est sanguis meus novi testamenti, qui pro multis effundétur. ℣. Móyses sumptum sánguinem respersit in pópulum, et ait : Hic est sanguis fœderis quod pépigit Dóminus vobiscum. * Et ait Jesus. *Marc.* 14. *Exod.* 24.

*IN III NOCTURNO.*

*Ps.* Exaudi, Deus, oratiónem, *cum sua divisione*, 81.

*Ant.* 2. D. Cor meum conturbátum est in me, et formído mortis cécidit super me.

*Ps.* Miserére.... quóniam conculcávit, 96.

*Ant.* 4. E. Sustinuérunt ánimam meam; posuisti lácrymas meas in conspectu tuo, Dómine.

*Ps.* Deus, laudem meam, *cum suis divisionibus*, 48.

*Ant.* 1. D. Libera me, quia pauper ego sum, et cor meum conturbátum est intra me.

℣. Circumdedérunt me dolóres mortis. ℟. Et torrentes iniquitátis conturbavérunt me. *Ps.* 17.

LECTIO VII.

De Epístola prima beáti Pauli Apóstoli ad Corínthios.

*Cap.* 11.

Hoc præcípio, non laudans quòd non in mélius, sed in detérius convenítis. Primùm quidem, conveniéntibus vobis in Ecclésiam, áudio scissúras esse inter vos : et ex parte credo. Nam oportet et hæreses esse; ut et qui probáti sunt, manifesti fiant in vobis. Conveniéntibus ergo vobis in unum, jam non est Domínicam cœnam manducáre. Unusquisque enim suam cœnam præsúmit ad manducandum. Et álius quidem ésurit; álius autem ébrius est. Numquid domos non habétis ad manducandum et bibendum? aut Ecclésiam Dei contémnitis, et confúnditis eos qui non habent? Quid dicam vobis? Laudo vos? in hoc non laudo.

℟. Filíoli, adhuc módicum vobiscum sum. Quærétis me, et sicut dixi Judæis : Quò ego vado, vos non potestis veníre. * Mandátum novum do vobis : Ut diligátis ínvicem, sicut dilexi vos. ℣. Custodíte præcepta mea, et fácite ea : ego Dóminus qui sanctífico vos. * Mandátum novum. *Joan.* 13. *Levit.* 20.

LECTIO VIII.

Ego enim accépi à Dómino quod et trádidi vobis : quóniam Dóminus Jesus in qua nocte tradebátur, accépit pa-

nem, et grátias agens, fregit, et dixit : Accípite, et manducáte : hoc est corpus meum, quod pro vobis tradétur ; hoc fácite in meam commemoratiónem. Simíliter et cálicem, postquam cœnávit, dicens : Hic calix novum testamentum est in meo sánguine : hoc fácite, quotiescumque bibétis, in meam commemoratiónem. Quotiescumque enim manducábitis panem hunc, et cálicem bibétis, mortem Dómini annuntiábitis donec véniat.

℟. Omnes vos scándalum patiémini in me in ista nocte : scriptum est enim : Percútiam pastórem, * Et dispergentur oves gregis. ℣. Frámea, suscitáre super pastórem meum, et super virum cohærentem mihi, dicit Dóminus : pércute pastórem, * Et. *Matth.* 26. *Zach.* 13.

LECTIO IX.

Itaque quicumque manducáverit panem hunc, vel bíberit cálicem Dómini indignè, reus erit córporis et sánguinis Dómini. Probet autem seipsum homo ; et sic de pane illo edat, et de cálice bibat. Qui enim mandúcat et bibit indignè, judícium sibi mandúcat et bibit, non dijúdicans corpus Dómini. Ideo inter vos multi infirmi et imbecilles, et dórmiunt multi. Quod si nosmetipsos dijudicarémus, non utique judicarémur. Dum judicámur autem, à Dómino corrípimur, ut non cum hoc mundo damnémur. Itaque, fratres mei, cùm convenítis ad manducandum, ínvicem expectáte. Si quis ésurit, domi mandúcet ; ut non in judícium conveniátis. Cétera autem, cùm vénero, dispónam.

℟. Pater, quos dedisti mihi custodívi : ego dedi eis sermónem tuum ; * Et pro eis ego sanctífico meipsum, ut sint et ipsi sanctificáti in veritáte. ℣. Ecce ego et púeri mei, quos dedit mihi Dóminus. * Et. *Joan.* 17. *Is.* 8.

*Repet.* ℟ Pater, *usque ad* ℣.

AD LAUDES.

*Ps.* Dómine, ne in furóre.... Miserére meî, 36.

*Ant.* 6. *C.* Cœpit Jesus pavére et tædére ; et ait discípulis suis : Tristis est ánima mea usque ad mortem. Sustinéte hìc, et vigiláte mecum. *Marc.* 14. *Matth.* 26.

*Ps.* Usquequo, Dómine, oblivíscéris me, 51.

*Ant.* 7. *d.* Vigiláte et oráte, ut non intrétis in tentatiónem : spíritus quidem promptus est, caro autem infirma. *Matth.* 26.

*Ps.* Exaudi, Dómine, justítiam meam, *cum sua divisione*, 101.

*Ant.* 2. D. Prócidit in fáciem suam, orans et dicens : Pater mi, si possíbile est, tránseat à me calix iste : verúmtamen non mea volúntas, sed tua fiat. *Matth.* 26. *Luc.* 22.

CANTICUM. 2 *Reg.* 22.

Dominus petra mea, et robur meum, * et salvátor meus.

Deus fortis meus; sperábo in eum : * scutum meum, et cornu salútis meæ :

Elevátor meus, et refúgium meum; * salvátor meus, de iniquitáte liberábis me.

Laudábilem invocábo Dóminum; * et ab inimícis meis salvus ero.

Quia circumdedérunt me contritiónes mortis : * torrentes Bélial terruérunt me.

Funes inferni circumdedérunt me ; * prævenérunt me láquei mortis.

In tribulatióne mea invocábo Dóminum, * et ad Deum meum clamábo.

Et exáudiet de templo suo vocem meam, * et clamor meus véniet ad aures ejus.

*Ant.* 3. c. Appáruit illi Angelus de cœlo, confortans eum. Et factus in agónia, prolíxiùs orábat : et factus est sudor ejus sicut guttæ sánguinis decurrentis in terram. *Luc.* 22.

*Ps.* Laudáte Dóminum de cœlis, 9.

*Ant.* 4. d. Appropinquávit Judas, ut oscularétur eum. Dixitque illi Jesus : Amíce, ad quid venisti? Juda, ósculo Fílium hóminis tradis? *Luc.* 22. *Matth.* 26.

*Dum cantatur* Benedictus, *extinguantur cerei altaris.*

*Ad* Benedictus. *Ant.* 1. g. Dixit Jesus ad eos qui vénerant ad se : Quasi ad latrónem existis cum gládiis et fústibus. Cùm quotídie vobiscum fúerim in templo, non extendistis manus in me; sed hæc est hora vestra, et potestas tenebrárum. *Luc.* 22.

*Dum dicitur hæc Antiphona, amovetur à cuspide summus cereus accensus, et absconditur retro altare.*

*Finitâ Antiphonâ, cantatur à duobus Clericis, retro altare genuflexis,* Kyrie, *cum tropis; et omnes de Choro genuflexi repetunt* Kyrie, *vel* Christe, *ut infrà notatur : quod etiam observatur in secunda et tertia nocte.*

PRECES.

*Clerici :* Kyrie, eléison.

*Chorus :* Kyrie, eléison.

*Clerici :* Dómine, miserére; parce fámulis : Christus Dóminus factus est obédiens usque ad mortem. *Phil.* 2.

*Chorus :* Kyrie, eléison.

*Clerici :* Qui dedisti redemptiónem teipsum pro ómnibus. 1 *Tim.* 2.

*Chorus :* Christe, eléison.

*Clerici :* Qui à Juda ósculo tráditus, sicut ovis ad occisiónem ductus es. *Luc.* 22. *Is.* 53.

*Chorus :* Christe, eléison.

*Clerici :* Qui exaltátus à terra, ómnia traxisti ad teipsum. *Joan.* 12.

*Chorus :* Christe, eléison.

*Clerici :* Qui per Prophétam dixisti : Ero mors tua, ô mors. *Osee* 13.

*Chorus :* Kyrie, eléison.

*Clerici :* Auctor vitæ per mortem destruxit eum qui habébat mortis impérium. *Act.* 3. *Hebr.* 2.

*Chorus :* Kyrie, eléison.

*Clerici :* A forti prædam

ábstulit, expólians potestátes, et palàm triumphávit. *Is.* 49. *Col.* 2.

*Chorus :* Kyrie, eléison. Dómine, miserére ; parce fámulis : Christus Dóminus factus est obédiens usque ad mortem,

*Clerici :* Mortem autem crucis. *Philip.* 2.

*Inchoatur absolutè à Celebrante genuflexo, Psalm.* Miserére, 111, *quem omnes, flexis genibus, alternis choris prosequuntur mediocri voce.*

*Quo finito, Celebrans, flexis genibus, simili voce dicit absolutè sequentem Orationem.*

Respice, quæsumus Dómine, super hanc famíliam tuam pro qua Dóminus noster Jesus Christus non dubitávit mánibus tradi nocéntium, et crucis subíre tormentum ; *secretò*, Qui tecum vivit.

*Et statim fit strepitus à Celebrante in signum exeundi. Mox profertur cereus accensus ; et omnes surgunt, et cum silentio discedunt.*

AD HORAS.

*Dictis secretò,* Pater *et* Ave, *recitantur recto vocis tono Psalmi de Dominica, excepto quod ad Primam, loco Ps.* Confitémini, *dicitur Ps.* Deus, in nómine tuo, 85, *omisso Symbolo* Quicumque. *Quibus finitis, in unaquaque Hora dicitur, flexis genibus:*

*Ant.* Christus factus est pro nobis obédiens usque ad mortem. *Philipp.* 2. *Deinde Oratio,* Réspice, *quæ sub silentio concluditur.*

*Hæc omnia servantur, ad Laudes et ad Horas, hodie et biduo sequenti. Ad Primam verò, Officium Capituli, Lectio Martyrologii et Canonis omittuntur.*

[ *Hodie dicuntur in Choro septem Psalmi Pœnitentiales; deinde fit Absolutio, eo ritu qui notatur in Missali.* ]

AD VESPERAS.

*Ps.* Dilexi, 35.

*Ant.* 4. E. Occidétur Christus ; et non erit ejus pópulus, qui eum negatúrus est. *Dan.* 9.

*Ps.* Crédidi, 78.

*Ant.* 8. G. Sicut ovis ad occisiónem ducétur, et quasi agnus coram tondente se obmutescet. *Is.* 53.

*Ps.* Ad Dóminum, 49.

*Ant.* 1. a. Omnes nos quasi oves errávimus, unusquisque in viam suam declinávit; et pósuit Dóminus in eo iniquitátem ómnium nostrûm. *Is.* 53.

*Ps.* Levávi óculos meos in montes, 35.

*Ant.* 2. D. Oblátus est, quia ipse vóluit ; et iniquitátes multórum ipse portábit. *Is.* 53.

*Ps.* Beáti omnes, 110.

*Ant.* 6. F. Unâ oblatióne consummávit in sempiternum sanctificátos. *Hebr.* 10.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 1. D. Spíritus oris nostri Christus Dóminus captus est in peccátis nostris. *Thren.* 4.

*Pro Oratione, in Choro di-*

citur Postcommunio Missæ: extra Chorum, Réspice, suprà.
Completorium, ut suprà 261.

# FERIA SEXTA IN PARASCEVE.

*IN I NOCTURNO.*

*Ps.* Dómine, quid multiplicáti sunt, 2.

*Ant.* 6. F. Non timébo míllia pópuli circumdantis me: exurge, Dómine, salvum me fac, Deus meus.

*Ps.* Deus, Deus meus, réspice in me, *cum suis divisionibus*, 92.

*Ant.* 5. a. Aperuérunt super me os suum, sicut leo rápiens et rúgiens: concílium malignántium obsédit me.

*Ps.* Dóminus illuminátio mea, *cum sua divisione*, 75.

*Ant.* 8. G. Insurrexérunt in me testes iníqui; et mentíta est iníquitas sibi.

℣. Acuérunt linguas suas sicut serpentis: ℟. Venénum áspidum sub lábiis eórum. *Ps.* 139.

Lectio i.

De Lamentatióne Jeremíæ Prophétæ. *Cap.* 3.

Ego vir videns paupertátem meam in virga indignatiónis ejus. Me minávit, et addúxit in ténebras, et non in lucem. Tantùm in me vertit, et convertit manum suam totâ die. Vetustam fecit pellem meam, et carnem meam; contrívit ossa mea. Ædificávit in gyro meo, et circúmdedit me felle et labóre. In tenebrósis collocávit me, quasi mórtuos sempitérnos. Circumædificávit adversùm me, ut non egrédiar; aggravávit cómpedem meum. Sed et cùm clamávero et rogávero, exclúsit oratiónem meam. Conclúsit vias meas lapídibus quadris; sémitas meas subvértit. Ursus insídians factus est mihi, leo in abscónditis. Jerúsalem, Jerúsalem, etc.

℟. Quærébant adversùs Jesum testimónium, ut eum morti tráderent; nec inveniébant: * Multi enim testimónium falsum dicébant; et convenientia testimónia non erant. ℣. Surgentes testes iníqui, quæ ignorábam interrogábant me. * Multi. *Marc.* 14. *Ps.* 34.

Lectio ii.

Teténdit arcum suum, et pósuit me quasi signum ad sagittam. Misit in rénibus meis fílias pháretræ suæ. Factus sum in derísum omni pópulo meo, cánticum eórum totâ die. Replévit me amaritudínibus, inebriávit me absínthio. Et fregit ad númerum dentes meos, cibávit me cínere. Et repulsa est à pace ánima mea, oblítus sum bonórum. Et dixi: Périit finis meus, et spes mea à Dómino. Recordáre paupertátis et transgressiónis meæ, absínthii et fellis. Memóriâ memor ero, et tabescet in me ánima mea. Hæc récolens in corde meo, ideo sperábo. Jerúsalem. . .

℟. Princeps Sacerdótum

ait : Adjúro te per Deum vivum, ut dicas nobis si tu es Christus Filius Dei. Dicit illi Jesus : Tu dixisti. At illi dixérunt : * Reus est mortis. ℣. Locúti sunt Sacerdótes : Judícium mortis est viro huic, quia prophetávit sicut audistis áuribus vestris.* Reus est. *Matth.* 26. *Jer.* 26.

LECTIO III.

VENATIONE cepérunt me quasi avem inimíci mei gratis. Lapsa est in lacum vita mea, et posuérunt lápidem super me. Inundavérunt aquæ super caput meum : dixi : Périi. Invocávi nomen tuum, Dómine, de lacu novíssimo. Vocem meam audisti : ne avertas aurem tuam à singultu meo et clamóribus. Appropinquasti in die quando invocávi te : dixisti : Ne tímeas. Judicasti, Dómine, causam ánimæ meæ, redemptor vitæ meæ. Vidisti, Dómine, iniquitátem illórum adversùm me : júdica judícium meum. Vidisti omnem furórem, universas cogitatiónes eórum adversùm me. Audisti oppróbrium eórum, Dómine : omnes cogitatiónes eórum adversùm me; lábia insurgéntium mihi, et meditatiónes eórum adversùm me totâ die. Sessiónem eórum et resurrectiónem eórum vide; ego sum psalmus eórum. Reddes eis vicem, Dómine, juxta ópera mánuum suárum. Jerúsalem.

℟. Expuérunt in fáciem Jesu, * Et cólaphis cecidérunt, dicentes : Prophetiza nobis, Christe : quis est qui te percussit? ℣. Aperuérunt super me ora sua, et exprobrantes percussérunt maxillam meam; * Et. *Matth.* 26. *Job* 16.

*IN II NOCTURNO.*

*Ps.* Dómine. ne in furóre, ...quóniam, *cum sua divis.* 95.

*Ant.* 8. G. Vim faciébant qui quærébant ánimam meam.

*Ps.* Eripe me de inimícis meis, *cum sua divisione,* 82.

*Ant.* 3. c. Irruérunt in me fortes : neque iníquitas mea, neque peccátum meum, Dómine.

*Ps.* Nonne Deo, 98.

*Ant.* 7. *d.* Deo subjecta esto, ánima mea; quóniam ab ipso patiéntia mea.

℣. Subsannavérunt me subsannatióne : ℟. Frenduérunt super me déntibus suis. *Ps.* 34.

LECTIO IV.

Sermo sancti Joannis Chrysóstomi. *Hom. de Cruce et Latr. n.* 1.

HODIE Pascha nostrum pro nobis immolátus est Christus. Ubi, quæso, immolátus? In excelso patíbulo. Novum altáre hujus sacrifícii, quia ipsum sacrifícium novum stupendumque est. Idem quippe et sacrifícium et sacerdos erat : sacrifícium secundùm carnem, sacerdos secundùm spíritum. Idem et offerébat, et secundùm carnem offerebátur. Et crux fuit altáre. Et cur, ínquies, non in tem-

plo hóstia offertur, sed extra urbem et mœnia? Ut impleretur illud: Cum iníquis reputátus est. Cur autem in sublími patíbulo jugulátur, non sub tecto? Ut aëris natúram purgáret, cùm ovis in sublími immolarétur. Purgabátur item et terra; fluébat enim è látere sanguis in ipsam. Ideo non sub tecto, ídeo non in templo Judáico, ne sibi Judæi hóstiam vindicárent, neve putáres pro illa gente tantùm hanc offerri. Idcirco extra urbem et mœnia; ut discas universále sacrifícium esse, quia pro universa terra erat oblátio; et purgatiónem item esse commúnem, non peculiárem, quemádmodum apud Judæos.

℟. Dicébant Petro: Verè ex illis es. * Ille cœpit anathematizáre, et juráre: Quia néscio hóminem istum quem dícitis. ℣. Inquilíni domûs meæ sicut aliénum habuérunt me, et quasi peregrínus fui in óculis eórum. * Ille. *Marc.* 14. *Job* 19.

LECTIO V. *n.* 2.

Vis díscere áliud ejus insigne opus? Paradísum clausum hódie nobis apéruit. Hâc quippe die, hâc ipsâ horâ latrónem eò introduxit Deus. Hódie antíquam pátriam nobis réddidit: hódie in pátriam civitátem nos reduxit; nam: Hódie, inquit, mecum eris in paradíso. Quid dicis? crucifixus es et clavis affixus, et paradísum pollicéris? Etiam, inquit; ut in cruce virtútem meam édiscas. Quia enim res erat tristis, ne natúræ crucis atténderes, sed Crucifixi virtútem edísceres, in cruce hoc pérpetrat miráculum, quod ejus máximè virtútem demonstrat. Non enim cùm mórtuum suscitáret, non cùm ventos ac mare increpáret, non cùm dæmones fugáret; sed crucifixus, clavis perforátus, contuméliis, sputis, convíciis, oppróbriis onerátus, ímprobum latrónis ánimum mutáre pótuit, ut ex omni parte virtútem ejus vídeas. Creatúram quippe totam commóvit; petras scidit, sed petrâ duriórem latrónis ánimam attraxit.

℟. Quem vultis dimittam vobis; Barabbam, an Jesum? Dixérunt: Barabbam. Quid ígitur fáciam de Jesu? Dicunt omnes: * Crucifigátur. ℣. Dixérunt: Rogámus ut occidátur homo iste; síquidem non quærit pacem pópulo, sed malum: * Crucifigátur. *Matth.* 27. *Jer.* 38.

LECTIO VI. *n.* 3.

Sed quid tantum fecit latro, inquies, ut post crucem paradísum sit adeptus? Visne ut virtútem ejus bréviter demonstrem? Cùm Petrus negábat infrà, tunc ille suprà confitebátur. Discípulus vilíssimæ puellæ minas non tulit; latro autem videns pópulum totum circumstantem, clamantem, blasphémias et dictéria jaculantem, non attendit illis: non cogi-

távit præsentem Crucifixi vilitátem; sed fídei óculis hæc ómnia prætergrédiens, missis illis vílibus impedimentis, agnóvit cœlórum Dóminum, et ad ipsum ánimo procumbens, dicébat: Memento meî, Dómine, cùm véneris in regnum tuum. Viden quantórum nobis bonórum crux causa fúerit? Dic mihi, regnum petis? Quid vides hujúsmodi? Clavi et crux in conspectu sunt. Verùm ea ipsa crux, inquit, est symbolum regni. Ideo ipsum regem voco, quia vídeo crucifixum. Regis enim est pro súbditis mori. Hic ipse dixit: Bonus pastor ánimam suam ponit pro óvibus: ergo et bonus rex ánimam suam ponit pro súbditis. Quóniam ígitur ánimam suam pósuit, ídeo regem illum voco. Memento meî, Dómine, in regno tuo.

℟. Jesum flagellis cæsum mílites índuunt púrpurâ, et impónunt ei spíneam corónam; et cœpérunt salutáre eum: Ave, Rex Judæórum; et * Percutiébant caput ejus arúndine, et conspuébant eum. ℣. Corpus meum dedi percutiéntibus, et genas meas velléntibus; fáciem meam non averti à conspuéntibus in me; * Percutiébant. *Marc.* 15. *Is.* 50.

## *IN III NOCTURNO.*

*Ps.* Exaudi... cùm déprecor, 99.

*Ant.* 1. f. Protexisti me, Deus, à conventu malignántium, à multitúdine operántium iniquitátem; quia exacuérunt ut gládium linguas suas.

*Ps.* Salvum me fac, Deus, *cum suis divisionibus*, 84.

*Ant.* 4. E. Quem tu percussisti, persecúti sunt; et super dolórem vúlnerum meórum addidérunt.

*Ps.* Ut quid, Deus, repulisti, *cum sua divisione*, 109.

*Ant.* 2. D. Exurge, Deus, júdica causam tuam: memor esto improperiórum tuórum.

℣. Oppróbria exprobrántium tibi ℟. Cecidérunt super me. *Ps.* 68.

### Lectio vii.

De Epístola beáti Pauli Apóstoli ad Hebræos.

*Cap.* 4 *et* 5.

Habentes Pontíficem magnum qui penetrávit cœlos, Jesum Fílium Dei, teneámus confessiónem. Non enim habémus Pontíficem qui non possit cómpati infirmitátibus nostris; tentátum autem per ómnia pro similitúdine absque peccáto. Adeámus ergo cum fidúcia ad thronum grátiæ, ut misericórdiam consequámur, et grátiam inveniámus in auxílio opportúno. Omnis namque Póntifex ex homínibus assumptus, pro homínibus constitúitur in iis quæ sunt ad Deum, ut ófferat dona et sacrifícia pro peccátis: qui condolére possit iis qui ignórant et errant; quóniam et ipse circúmdatus est infirmitáte: et proptérea debet, quemádmodum pro pópulo, ita étiam

et pro semetipso offerre pro peccátis.

℣. Suscepérunt Jesum, et eduxérunt. * Et bájulans sibi crucem, exívit Jesus in eum qui dícitur Calváriæ locum. ℣. Tulit Abraham ligna holocausti, et impósuit super Isaac fílium suum ; * Et. *Joan.* 19. *Gen.* 22.

LECTIO VIII. *Cap.* 5.

Nec quisquam sumit sibi honórem, sed qui vocátur à Deo, tanquam Aaron. Sic et Christus non semetipsum clarificávit, ut Póntifex fíeret; sed qui locútus est ad eum : Fílius meus es tu, ego hódie génui te. Quemádmodum et in álio loco dicit : Tu es sacerdos in æternum secundùm órdinem Melchísedech. Qui in diébus carnis suæ, preces supplicationesque ad eum qui possit illum salvum fácere à morte, cum clamóre válido et lácrymis ófferens, exaudítus est pro sua reveréntia. Et quidem cùm esset Fílius Dei, dídicit ex eis quæ passus est, obediéntiam; et consummátus, factus est ómnibus obtemperántibus sibi causa salútis ætérnæ, appellátus à Deo Póntifex juxta órdinem Melchísedech.

℟. Crucifixérunt Jesum, et latrónes, unum à dextris, et álterum à sinistris. Jesus autem dicébat : * Pater, dimitte illis ; non enim sciunt quid fáciunt. ℣. Cum scelerátis reputátus est ; et ipse peccáta multórum tulit, et pro transgressóribus rogávit. * Pater. *Luc.* 23. *Is.* 53.

LECTIO IX. *Cap.* 2.

Et álii quidem plures facti sunt sacerdótes, idcirco quod morte prohiberentur permanére : hic autem, eo quod máneat in æternum, sempiternum habet sacerdótium. Unde et salváre in perpétuum potest accedentes per semetipsum ad Deum, semper vivens ad interpellandum pro nobis. Talis enim decébat ut nobis esset Póntifex, sanctus, ínnocens, impollútus, segregátus à peccatóribus, et excélsior cœlis factus : qui non habet necessitátem quotídie, quemádmodum sacerdótes, priùs pro suis delictis hóstias offerre, deinde pro pópuli ; hoc enim fecit semel, seipsum offerendo.

℟. Ipse vulnerátus est propter iniquitátes nostras, attrítus est propter scélera nostra : * Disciplína pacis nostræ super eum, et livóre ejus sanáti sumus. ℣. Peccáta nostra ipse pértulit in córpore suo super lignum; ut peccátis mórtui, justítiæ vivámus. * Disciplína. *Is.* 53. 1 *Petr.* 2.

*Repet.* ℟ Ipse, *usque ad* ℣.

AD LAUDES.

*Ps.* Verba mea, 5.

*Ant.* 8. c. Posuit Pilátus títulum super crucem. Erat autem scriptum : Jesus Nazarénus, Rex Judæórum. *Joan.* 19.

*Ps.* Quemádmodum, *cum sua divisione*, 61.

*Ant.* 5. a. Mílites cùm cru-

cifixissent eum, accepérunt vestimenta ejus et túnicam, mittentes sortem super eis, quis quid tólleret. *Joan.* 19. *Marc.* 15.

*Ps.* Miserére meî, Deus, miserére meî, 101.

*Ant.* 7. a. Prætereuntes blasphemábant eum, moventes cápita sua, et dicentes: Salva temetipsum; si Fílius Dei es, descende de cruce. *Matth.* 27.

Canticum. *Isai.* 5.

Cantabo dilecto meo * cánticum patruélis mei víneæ suæ.

Vínea facta est dilecto meo* in cornu fílio ólei.

Et sepívit eam, et lápides elégit ex illa, * et plantávit eam electam;

Et ædificávit turrim in médio ejus, * et torcúlar extruxit in ea.

Et expectávit ut fáceret uvas, * et fecit labruscas.

Nunc ergo, habitatóres Jerúsalem, et viri Juda, * judicáte inter me et víneam meam.

Quid est quod débui ultrà fácere víneæ meæ, et non feci ei? * an quòd expectávi ut fáceret uvas, et fecit labruscas?

Et nunc osténdam vobis quid ego fáciam víneæ meæ: * áuferam sepem ejus, et erit in direptiónem.

Díruam macériam ejus, * et erit in conculcatiónem.

Et ponam eam desertam: non putábitur, et non fodiétur; * et ascendent vepres et spinæ.

Et núbibus mandábo * nè pluant super eam imbrem.

*Ant.* 3. à. Dedérunt ei vinum bíbere cum felle mistum; et mílites, acétum offerentes ei, illudébant, dicentes: Si tu es Rex Judæórum, salvum te fac. *Matth.* 27. *Luc.* 23.

*Ps.* Cantáte Dómino.... laus ejus, 107.

*Ant.* 6. F. Unus de latrónibus blasphemábat eum. Respondens autem alter increpábat eum, dicens: Nos quidem digna factis recípimus; hic verò nihil mali gessit. *Luc.* 23.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 1. g. Dicébat ad Jesum: Dómine, memento meî, cùm véneris in regnum tuum. Et dixit illi Jesus: Amen dico tibi; hódie mecum eris in paradíso. *Luc.* 23.

Kyrie, etc. *ut heri*, 267.

Ad Horas, *post Psalmos dicitur, flexis genibus*, Christus factus est pro nobis obédiens usque ad mortem, mortem autem crucis. *Philip.* 2.

*Deinde* Oratio.

Respice, quæsumus Dómine, super hanc famíliam tuam pro qua Dóminus noster Jesus Christus non dubitávit mánibus tradi nocéntium, et crucis subíre torméntum; *secretò,* Qui tecum vivit et regnat in unitáte Spiritûs sancti Deus, per ómnia sécula seculórum.

## AD VESPERAS.

*Dicuntur sine cantu Psalmi et Antiphonæ sequentes.*

*Ps.* Nisi quia Dóminus, 35.

*Ant.* Cùm vidisset Jesus matrem, et discípulum stantem quem diligébat, dicit matri suæ : Múlier, ecce fílius tuus; deinde dicit discípulo: Ecce mater tua. *Joan.* 19.

*Ps.* Sæpe expugnavérunt me, 94.

*Ant.* Erat ferè hora sexta, et ténebræ factæ sunt in universam terram usque in horam nonam, et obscurátus est sol. *Luc.* 23.

*Ps.* Eripe me, Dómine, *cum sua divisione*, 95.

*Ant.* Circa horam nonam clamávit Jesus voce magnâ : Deus meus, Deus meus, ut quid dereliquisti me? *Matth.* 27.

*Ps.* Dómine, clamávi ad te, 50.

*Ant.* Sciens Jesus quia ómnia consummáta sunt, ut consummarétur Scriptúra, dixit : Sitio. *Joan.* 19.

*Ps.* Voce meâ... voce meâ ad Dóminum, 50.

*Ant.* Vas erat acéto plenum; illi autem spóngiam plenam acéto, hyssópo circumponentes, obtulérunt ori ejus. *Joan.* 19.

*Ad* Magníficat. *Ant.* Cùm accepisset Jesus acétum, dixit : Consummátum est. Et clamans voce magnâ, ait : Pater, in manus tuas commendo spíritum meum. Et, inclináto cápite, trádidit spíritum. *Joan.* 19. *Luc.* 23.

*Oratio*, Réspice, quæsumus, *suprà.*

COMPLETORIUM, *ut suprà* 261.

# SABBATO SANCTO.

## *IN I NOCTURNO.*

*Ps.* Dómine Deus meus *cum sua divisione*, 37.

*Ant.* 2. D. Consumétur nequítia peccatórum; et díriges justum, Dómine.

*Ps.* Dómine, quis habitábit, 37.

*Ant.* 4. E. Habitábit in tabernáculo tuo : requiescet in monte sancto tuo.

*Ps.* Conserva me, 66.

*Ant.* 7. ç. Caro mea requiescet in spe.

℣. Non derelinques ánimam meam in inferno, ℟. Nec dabis sanctum tuum vidére corruptiónem. *Ps.* 15.

LECTIO I.

De Lamentatióne Jeremíæ Prophétæ. *Cap.* 4.

QUOMODO obscurátum est aurum, mutátus est color óptimus, dispersi sunt lápides sanctuárii in cápite ómnium plateárum? Fílii Sion ínclyti, et amicti auro primo, quómodo reputáti sunt in vasa téstea, opus mánuum fíguli? Sed et lamíæ nudavérunt mammam, lactavérunt cátulos suos : fília pópuli mei crudélis quasi strúthio in deserto. Adhæsit lingua lactentis ad palátum ejus in siti : párvuli petiérunt panem, et non erat qui frángeret eis. Qui vescebantur voluptuósè, interiérunt in viis : qui nutriebantur in cróceis, am-

plexáti sunt stércora. Et major effecta est iníquitas fíliæ pópuli mei peccáto Sodomórum, quæ subversa est in momento, et non cepérunt in ea manus. Jerúsalem.

℟. Aspícient ad me quem confixérunt : et * Plangent eum planctu quasi super unigénitum, et dolébunt super eum ut in morte primogéniti. ℣. Centúrio, et qui cum eo erant, timuérunt valde, dicentes : Verè Fílius Dei erat iste. Et percutientes péctora sua, revertebantur. * Plangent. *Zach.* 12. *Matth.* 27. *Luc.* 23.

LECTIO II.

Cum adhuc subsisterémus, defecérunt óculi nostri ad auxílium nostrum vanum, cùm respicerémus attenti ad gentem quæ salváre non póterat. Lubricavérunt vestígia nostra in itínere plateárum nostrárum, appropinquávit finis noster : compléti sunt dies nostri, quia venit finis noster. Velocióres fuérunt persecutóres nostri áquilis cœli : super montes persecúti sunt nos, in deserto insidiáti sunt nobis. Spíritus oris nostri Christus Dóminus captus est in peccátis nostris ; cui díximus : In umbra tua vivémus in géntibus. Gaude et lætáre, fília Edom quæ hábitas in terra Hus : ad te quoque pervéniet calix, inebriáberis atque nudáberis. Compléta est iníquitas tua, fília Sion ; non addet ultrà ut transmigret te : visitávit iniquitátem tuam, fília Edom, discoopéruit peccáta tua. Jerúsalem.

℟. In una domo comedétur agnus, nec efferétis de cárnibus ejus forás, et * Os non comminuétis ex eo. ℣. Ut vidérunt Jesum jam mórtuum, non fregérunt ejus crura ; ut Scriptúra implerétur : * Os. *Exod.* 12. *Joan.* 19.

LECTIO III.

De Oratióne Jeremíæ Prophétæ. Cap. 5.

Defecit gáudium cordis nostri : versus est in luctum chorus noster : Cécidit coróna cápitis nostri : væ nobis quia peccávimus. Propterea mœstum factum est cor nostrum ; ídeo contenebráti sunt óculi nostri. Propter montem Sion quia dispériit, vulpes ambulavérunt in eo. Tu autem, Dómine, in æternum permanébis, sólium tuum in generatiónem et generatiónem. Quare in perpétuum obliviscéris nostri? derelinques nos in longitúdine diérum? Converte nos, Dómine, ad te, et convertémur : ínnova dies nostros sicut à princípio. Sed projíciens repulisti nos ; irátus es contra nos vehementer. Jerúsalem.

℟. In die illa erit fons patens dómui David, et habitántibus Jerúsalem, * In ablutiónem peccatóris. ℣. Unus mílitum lánceâ latus Jesu apéruit, et contínuò exívit sanguis et aqua, * In ablutiónem. *Zach.* 13. *Joan.* 19.

*IN II NOCTURNO.*

*Ps.* Dómini est terra, 41.

*Ant.* 5. a. Elevámini, portæ æternáles; et introíbit Rex glóriæ.

*Ps.* Exaltábo te, Dómine, 6.

*Ant.* 8. G. Dómine, eduxisti ab inferno ánimam meam.

*Ps.* Exaudi, Deus, deprecatiónem, 83.

*Ant.* 1. g. Intende, Deus, oratióni meæ: à fínibus terræ ad te clamávi.

℣. Tu, Dómine, miserére mei, ℟. Et resúscita me, et retríbuam eis. *Ps.* 40.

LECTIO IV.

Sermo sancti Joannis Chrysóstomi. *De Cœmet. et Cruce, n.* 2.

Hodie, dilectíssimi, ómnia inferórum loca círcuit Dóminus noster: hódie portas æreas confrégit, hódie vectes férreos contrívit. Vide in Prophéta dicti accuratiónem. Non dixit, Apéruit portas æreas; sed, Confrégit; ut inútilis deinceps carcer fiat. Non ábstulit vectes, sed contrívit; ut custódia deinceps frágilis et infirma reddátur, ubi neque jánua, neque vectis, et licèt quis intret, non tenétur. Quando ígitur Christus confrégit, quis álius reparáre póterit? Reges cùm vinctos dimíttere volunt, missis epístolis non ita agunt; sed tam fores quàm custódes relinquunt, ut ostendant eò dénuo ingrediendum esse, vel illis qui jam líberi abiérunt, vel, eórum loco, áliis. Non ita Christus: sed demonstráre volens mortem jam ad finem metamque pervenisse, æreas ejus portas confrégit, hoc est, immítem illam, et inexorábilem mortis necessitátem.

℟. Christus pro peccátis nostris mórtuus est, ut nos offerret Deo, mortificátus carne, vivificátus autem spíritu, in quo * Et his, qui in cárcere erant, spirítibus véniens prædicávit. ℣. Confiteantur Dómino misericórdiæ ejus, quia contrívit portas æreas, et vectes férreos confrégit; * Et his. 1 *Petr.* 3. *Ps.* 106.

LECTIO V.

Porro, quod admiratióne digníssimum est, Rex ipse ad vinctos venit. Atqui nullus rex unquam hoc dignarétur fácere; sed ministri vinctos dimittunt. Secùs hic: ípsemet Rex ad vinctos venit. Non erúbuit cárcerem, neque detentos in cárcere, (de eo enim quem fínxerat erubéscere non pótuit) et confrégit fores, et vectes contrívit. Superástitit inferno; et desertam fecit totam illíus custódiam; carcerísque custóde in víncula conjecto, ad nos remeávit. Tyrannus captívus ducebátur; fortis vinctus; ipsa mors, abjectis armis, nuda ad pedes regis cucurrit.

℟. Participávit carni et sánguini, * Ut per mortem destrúeret eum qui habébat mortis impérium, id est, diábolum, et liberáret eos qui timóre mortis per totam vitam obnóxii erant servitúti.

℣. Præcipitábit mortem in sempiternum, quia Dóminus locútus est; * Ut. *Hebr.* 2. *Is.* 25.

Lectio vi.

Vidisti mirandam victóriam? vidisti crucis beneficia? De morte immortáles facti sumus: hæc sunt præclára crucis facínora. Intellexisti victóriam, intellexisti modum victóriæ; disce nunc quómodo sine labóre et sudóre nostro victória hæc fúerit parta. Nos arma non cruentávimus, non stétimus in ácie, non accépimus vúlnera, neque vídimus bellum: et tamen victóriam obtinúimus. Certámen Dómini coróna nostra. Cùm ergo et nostra sit victória, mílites imitémur, lætisque vócibus victóriæ laudes et cármina hódie decantémus. Dicámus, Dóminum laudantes: Absorpta est mors in victória. Ubi est, mors, victória tua? ubi stímulus tuus, inferne? Hæc ómnia præclára facta crux nobis péperit. Crux trophæum contra dæmones erectum, gládius contra peccátum, gládius quo serpentem confódit Christus. Crux Patris voluntas, Unigéniti glória, Spíritûs exultátio, Angelórum decus, Ecclésiæ secúritas, gloriátio Pauli, Sanctórum murus, totíus orbis lumen.

℟. Beáti qui lavant stolas suas in sánguine Agni; * Ut sit potestas eórum in ligno vitæ, et per portas intrent in civitátem. ℣. In sánguine testamenti tui emisisti vinctos tuos de lacu; * Ut sit. *Apoc.* 22. *Zach.* 9.

*IN III NOCTURNO.*

*Ps.* Notus in Judæa, 99.

*Ant.* 7. d. In pace factus est locus ejus, et in Sion habitátio ejus.

*Ps.* Dómine Deus salútis meæ, 104.

*Ant.* 4. d. Factus sum sicut homo sine adjutório, inter mórtuos liber.

*Ps.* Deus ultiónum Dóminus, *cum sua divisione*, 64.

*Ant.* 6. F. Nisi quia Deus adjúvit me, paulò minùs habitasset in inferno ánima mea.

℣. Verbum iníquum constituérunt adversùm me: ℟. Numquid qui dormit, non adjíciet ut resurgat? *Ps.* 40.

Lectio vii.

De Epístola beáti Pauli Apóstoli ad Hebræos.

*Cap.* 9.

Christus assistens Póntifex futurórum bonórum, per ámplius et perféctius tabernáculum non manufactum, id est, non hujus creatiónis, neque per sánguinem hircórum aut vitulórum, sed per próprium sánguinem introívit semel in Sancta, ætérnâ redemptióne inventâ. Si enim sanguis hircórum et taurórum, et cinis vítulæ aspersus inquinátos sanctíficat ad emundatiónem carnis; quantò magis sanguis Christi, qui per Spíritum sanctum semet-

ipsum óbtulit immaculátum Deo, emundábit consciéntiam nostram ab opéribus mórtuis, ad serviendum Deo viventi?

℟. Quando appensus fúerit homo in patíbulo, non permanébit cadáver ejus in ligno, sed in eádem die sepeliétur; * Quia maledictus à Deo est omnis qui pendet in ligno. ℣. Christus nos redémit de maledicto legis, factus pro nobis maledictum; * Quia. *Deut.* 21. *Galat.* 3.

Lectio viii.

Et ídeo novi testamenti mediátor est; ut morte intercedente, in redemptiónem eárum prævaricatiónum, quæ erant sub prióri testamento, repromissiónem accípiant qui vocáti sunt, æternæ hæreditátis. Ubi enim testamentum est, mors necesse est intercédat testatóris. Testamentum enim in mórtuis confirmátum est: alióquin nondum valet, dum vivit qui testátus est. Unde nec primum quidem sine sánguine dedicátum est. Lecto enim omni mandáto legis à Móyse universo pópulo, accípiens sánguinem vitulórum et hircórum cum aqua, et lana coccínea, et hyssópo; ipsum quoque librum et omnem pópulum aspersit, dicens: Hic sanguis testamenti quod mandávit ad vos Deus. Etiam tabernáculum et ómnia vasa ministérii sánguine simíliter aspersit. Et ómnia penè in sánguine secundùm legem mundantur; et sine sánguinis effusióne non fit remíssio.

℟. In die illa radix Jesse qui stat in signum populórum, ipsum gentes deprecabuntur: * Et erit sepulcrum ejus gloriósum. ℣. Christus mórtuus est pro peccátis nostris secundùm Scriptúras, et sepultus est: * Et erit. *Is.* 11. 1 *Cor.* 15.

Lectio ix.

Necesse est ergo exemplária quidem cœléstium his mundári, ipsa autem cœléstia melióribus hóstiis quàm istis. Non enim in manufacta sancta Jesus introívit, exemplária verórum; sed in ipsum cœlum, ut appáreat nunc vúltui Dei pro nobis: neque ut sæpe ófferat semetipsum, quemádmodum Póntifex intrat in sancta per síngulos annos in sánguine aliéno; alióquin oportébat eum frequenter pati ab orígine mundi: nunc autem semel in consummatióne seculórum, ad destitutiónem peccáti, per hóstiam suam appáruit. Et quemádmodum statútum est homínibus semel mori, post hoc autem judícium; sic et Christus semel oblátus est ad multórum exhauriendа peccáta: secundò sine peccáto apparébit expectántibus se in salútem.

℟. Christus novi testamenti mediátor, * Initiávit nobis viam novam et viventem per velámen, id est, carnem suam, in intróitum sanctórum; nondum propalátam;

adhuc prióre tabernáculo habente statum. ℣. Ascendet pandens iter ante eos, et Dóminus in cápite eórum. * Initiávit nobis *Hebr.* 9 *et* 10. *Mich.* 2.

*Repetit.* ℟. Christus, *usque ad* ℣.

AD LAUDES.

*Ps.* Júdica me, Deus, 62.

*Ant.* 4. d. Ero mors tua, ô mors : morsus tuus ero, inferne. *Osee* 13.

*Ps.* Inclína, Dómine, *cum sua divisione*, 112.

*Ant.* 3. *a.* De manu mortis liberábo eos : de morte rédimam eos. *Os.* 13.

*Ps.* Dómine, exaudi... áuribus pércipe, *cum sua divisione*, 105.

*Ant.* 8. c. Penetrábo omnes inferióres partes terræ, et inspíciam omnes dormientes, et illuminábo omnes sperantes in Dómino. *Eccli.* 24.

Canticum Jonæ. *Cap.* 2.

Clamavi de tribulatióne mea ad Dóminum, * et exaudívit me.

De ventre ínferi clamávi, * et exaudisti vocem meam.

Et projecisti me in profundum in corde maris, * et flumen circúmdedit me.

Omnes gúrgites tui et fluctus tui * super me transiérunt.

Et ego dixi : Abjectus sum à conspectu oculórum tuórum : * verúmtamen rursus vidébo templum sanctum tuum.

Circumdedérunt me aquæ * usque ad ánimam.

Abyssus vallávit me, * pélagus opéruit caput meum.

Ad extréma móntium descendi : * terræ vectes conclusérunt me in æternum.

Et sublevábis de corruptióne vitam meam, * Dómine Deus meus.

Cùm angustiarétur in me ánima mea, Dómini recordátus sum; * ut véniat ad te orátio mea ad templum sanctum tuum.

Qui custódiunt vanitátes frustra, * misericórdiam suam derelinquunt.

Ego autem in voce laudis immolábo tibi : * quæcumque vovi reddam pro salúte Dómino.

*Ant.* 4. E. Sicut fuit Jonas in ventre ceti tribus diébus et tribus nóctibus, sic erit Fílius hóminis in corde terræ. *Matth.* 12.

*Ps.* Laudáte Dóminum in sanctis ejus, 44.

*Ant.* 2. D. Dabit ímpios pro sepultúra, et dívitem pro morte sua; eo quod iniquitátem non fécerit, neque dolus fúerit in ore ejus. *Is.* 53.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 6. *C.* Accepérunt Joseph et Nicodémus corpus Jesu, et ligavérunt illud línteis cum aromátibus, et posuérunt illud in monumento. *Joan.* 19.

Kyrie, etc. *ut suprà*, 267.

Ad Horas, *post Psalmos dicitur, flexis genibus*, Christus factus est pro nobis obédiens usque ad mortem, mortem autem crucis. Propter quod et Deus exaltávit illum, et

donávit illi nomen quod est super omne nomen. *Phil.* 2.

*Deinde* ORATIO.

RESPICE, quæsumus Dómine, super hanc famíliam tuam pro qua Dóminus noster Jesus Christus non dubitávit mánibus tradi nocéntium, et crucis subíre tormentum; *secretò,* Qui tecum vivit.

¶ *Factâ Communione in Missa, pro Vesperis dicuntur tantùm Psalmus et Canticum sequens, cum suis Antiphonis, sine* Glória Patri. ]

AD VESPERAS.

PSALMUS 116.

LAUDATE Dóminum, omnes gentes :* laudáte eum, omnes pópuli;

Quóniam confirmáta est super nos misericórdia ejus,* et véritas Dómini manet in ætcrnum.

*Ant.* 5. a. Allelúia, quóniam in æternum, allelúia, misericórdia ejus, allelúia, allelúia. *Ps.* 135.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 6. F. Cùm transisset sábbatum, María Magdaléne, et María Jacóbi, et Salóme, emérunt arómata, ut venientes úngerent Jesum, allelúia. *Marc.* 16.

*Sacerdos ad altare dicit :*

℣. Dóminus vobiscum,

℟. Et cum spíritu tuo.

Orémus.

DEUS, qui nos per Paschále mystérium docuisti vetustátem vitæ relínquere, et in novitáte spíritûs ambuláre : præsta ut Unigénitus tuus per hoc sacramentum nobis vitam suam tríbuat, qui mortem nostram suscépit, et occídit; Qui tecum vivit et regnat in unitáte Spíritûs sancti Deus.

*Deinde* ℣. Dóminus vobiscum, ℟. Et cum spíritu tuo.

*Diaconus dicit*, Ite, Missa est, ℟. Deo grátias.

¶ *Extra Chorum, Vesperæ dicuntur ut suprà; sed ante Orationem non dicitur* Dóminus vobiscum; *nec* Orémus; *et post Orationem nihil additur.* ]

AD COMPLETORIUM.

*Non præmittitur* Converte nos, *nec* Deus, in adjutórium; *sed dictis, sine* Glória Patri, *Psalmis* Cùm invocárem, *etc. de Dominica,* 20; *dicitur semel* Allelúia.

*Deinde,* Nunc dimittis, *sine* Glória Patri, *sub Ant.* 8. G. Véspere sábbati, quæ lucescit in prima sábbati, venit María Magdaléne, et áltera María, vidére sepulcrum, allelúia. *Matth.* 28.

*Statim sequitur Oratio, ante quam non dicitur* Dóminus vobiscum, *nec* Orémus.

ORATIO.

VISITA, quæsumus Dómine, habitatiónem nostram; et omnes insídias inimíci ab ea longè repelle : Angeli tui sancti hábitent in ea, qui nos in pace custódiant; et benedíctio tua sit super nos semper; Per Dóminum.

*Non dicitur* Dóminus vobiscum, *nec* Benedicámus.

*Antiph. de Beata,* Regína cœli *infrà,* 314.

# IN DIE SANCTO PASCHÆ.

## ANNUALE-MAJUS.

### AD NOCTURNUM.

℣. Dómine, lábia, etc. Allelúia.

*Invitat.* Allelúia. Surrexit Dóminus verè : * Venite, adorémus, allelúia. *Luc.* 24.

*Ps.* 94. Venite, 115.

*Non dicitur Hymnus, nec accinitur jubilus in fine Antiphonarum: quod servatur etiam ad omnes Horas per totam Octavam.*

*Ps.* Quare fremuérunt, 1.

*Ant.* 1. J. Repromissiónem Deus adimplévit, resúscitans Jesum, sicut et in Psalmo scriptum est : Filius meus es tu; ego hódie génui te, allelúia. *Act.* 13.

*Ps.* Conserva me, 66.

*Ant.* 4. D. Quod Deus suscitávit eum à mórtuis, ámplius jam non reversúrum in corruptiónem, ita dixit : Non dabis Sanctum tuum vidére corruptiónem, allelúia. *Act.* 13.

*Ps.* Exaltábo te, Dómine, 6.

*Ant.* 8. G. Definito consilio, et præsciéntiâ Dei tráditum Deus suscitávit, solútis dolóribus inferni, juxta quod impossibile erat tenéri illum ab eo, allelúia. *Act.* 2.

℣. Dómine, eduxisti ab inferno ánimam meam : ℟. Salvasti me à descendéntibus in lacum. *Ps.* 29.

Pater noster. *Absol.* Benedictus, 307. *Bened.* Confiteámur in ore, *infrà* 307.

LECTIO I.

De Epistola beáti Pauli Apóstoli ad Romános.

*Cap.* 6.

An ignorátis, fratres, quia quicumque baptizáti sumus in Christo Jesu, in morte ipsius baptizáti sumus? Consepulti enim sumus cum illo per baptismum in mortem; ut quómodo Christus surrexit à mórtuis per glóriam Patris, ita et nos in novitáte vitæ ambulémus. Si enim complantáti facti sumus similitúdini mortis ejus, simul et resurrectiónis érimus. Hoc scientes, quia vetus homo noster simul crucifixus est, ut destruátur corpus peccáti, et ultrà non serviámus peccáto. Qui enim mórtuus est, justificátus est à peccáto. Si autem mórtui sumus cum Christo, crédimus quia simul étiam vivémus cum Christo; scientes quod Christus resurgens ex mórtuis, jam non móritur, mors illi ultrà non dominábitur. Quod enim mórtuus est peccáto, mórtuus est semel : quod autem vivit, vivit Deo. Ita et vos existimáte vos mórtuos quidem esse peccáto; viventes autem Deo in

Christo Jesu Dómino nostro. Tu autem.

℟. Ego sum primus et novíssimus, et vivus, et fui mórtuus; * Et ecce sum vivens in sécula seculórum : † Et hábeo claves mortis et inferni, allelúia, allelúia, allelúia. ℣. Ego dormívi, et soporátus sum, et exurrexi, quia Dóminus suscépit me; * Et ecce. Glória. † Et hábeo. *Apoc.* 1. *Ps.* 3.

LECTIO II.

Sermo sancti Augustíni Epíscopi. 231. *n.* 2.

RESURRECTIO Dómini nóstri Jesu Christi nova vita est credéntium in Jesum; et hoc est sacramentum passiónis et resurrectiónis ejus, quod valde nosse et ágere debétis. Non enim sine causa vita venit ad mortem; non sine causa fons vitæ, unde bíbitur ut vivátur, bibit hunc cálicem qui ei non debebátur. Non enim Christo debebátur mors. Huic conditióni mortis obstrictus náscitur omnis homo, sed præter illum hóminem qui homo factus est, ne períret homo. Pœna culpæ mors : Dóminus Jesus Christus mori venit, peccáre non venit. Communicando nobiscum sine culpa pœnam, et culpam solvit et pœnam. Quam pœnam solvit? Quæ nobis debebátur post istam vitam. Ergo crucifixus est, ut in cruce osténderet véteris hóminis nostri occásum; et resurrexit, ut in sua vita osténderet nostræ vitæ novitátem.

℟. Pascha nostrum immolátus est Christus : ítaque epulémur * Non in fermento véteri, neque in fermento malítiæ, sed † In ázymis sinceritátis et veritátis, allelúia, allelúia. ℣. Exurgat Deus, et dissipentur inimíci ejus; et justi epulentur et exultent in conspectu Dei, * Non. Glória. † In ázymis. 1 *Cor.* 5. *Ps.* 67.

LECTIO III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Marcum. *Cap.* 16.

IN illo témpore; María Magdaléne, et María Jacóbi, et Salóme, emérunt arómata, ut venientes úngerent Jesum. Et réliqua.

Homília sancti Gregórii Papæ. *In Ev.* 21. *n.* 2.

AUDISTIS, fratres caríssimi, quod sanctæ mulíeres quæ Dóminum fúerant secútæ, cum aromátibus ad monumentum venérunt; et ei quem viventem diléxerant, étiam mórtuo, stúdio humanitátis, obsequuntur. Sed res gesta áliquid in sancta Ecclésia signat gerendum. Sic quippe necesse est ut audiámus quæ facta sunt, quátenus cogitémus étiam quæ nobis sint ex eórum imitatióne facienda. Et nos ergo in eum qui est mórtuus credentes, si odóre virtútum referti, cum opinióne bonórum óperum Dóminum quærimus, ad monumentum profectò illíus cum aromátibus venímus. Illæ autem mulíeres Angelos vident, quæ cum aromátibus vené-

runt; quia vidélicet illæ mentes supernos cives aspíciunt, quæ cum virtútum odóribus ad Dóminum per sancta desidéria proficiscuntur. Notandum verò nobis est quidnam sit, quod in dextris sedére Angelus cérnitur, qui stolâ cândidâ coopertus appáruit. Sed quid advenientes féminas affátur, audiámus: Nolíte expavéscere; ac si apertè dicat: Páveant illi qui non amant adventum supernórum cívium. Vos cur pertiméscitis, quæ vestros concives vidétis? Unde et Matthæus Angelum apparuisse descríbens, ait: Erat aspectus ejus sicut fulgur, et vestimenta ejus sicut nix. In fulgóre étenim terror timóris est, in nive autem blandimentum candóris. Quia verò omnípotens Deus, et terríbilis peccatóribus, et blandus est justis; rectè testis resurrectiónis ejus Angelus, et in fulgóre vultûs, et in candóre hábitûs demonstrátur; ut de ipsa sua spécie et terréret réprobos, et mulcéret pios.

℟. Ecce terræ motus factus est magnus; * Angelus enim Dómini descendit de cœlo, et accédens revolvit lápidem, et sedébat super eum, allelúia, allelúia, allelúia. ℣. Terra trémuit et quiévit, cùm exúrgeret in judícium Deus, ut salvos fáceret omnes mansuétos terræ; * Angelus. Glória. * Angelus. *Matth.* 28. *Ps.* 75.

*Repet.* ℟ Ecce, *usque ad* ℣.

Te Deum.

℣ *Sacerd.* Exaltábo te, Dómine, quóniam suscepisti me, ℟. Nec delectasti inimícos meos super me. *Ps.* 29.

## AD LAUDES.

*Psalmi de Dominica.*

*Ant.* 1. D. Unâ sábbati valde dilúculo, mulíeres venérunt ad monumentum, portantes quæ paráverant arómata; et invenérunt lápidem revolútum à monumento, allelúia. *Luc.* 24.

*Ant.* 3. a. Introeuntes in monumentum, vidérunt júvenem sedentem in dextris, et obstupuérunt, allelúia. *Marc.* 16.

*Ant.* 8. c. Erat autem aspectus ejus sicut fulgur, et vestimentum ejus sicut nix, allelúia, allelúia. *Matth.* 28.

CANTICUM. *Isai.* 63.

Quis est iste qui venit de Edom, * tinctis véstibus de Bosra?

Iste formósus in stola sua, * grádiens in multitúdine fortitúdinis suæ.

Ego qui loquor justítiam, * et propugnátor sum ad salvandum.

Quare ergo rubrum est indumentum tuum, * et vestimenta tua sicut calcántium in torculári?

Torcúlar calcávi solus, * et de géntibus non est vir mecum.

Calcávi eos in furóre meo, * et conculcávi eos in ira mea.

Et aspersus est sanguis eórum super vestimenta mea, *

et ómnia indumenta mea inquinávi.

Dies enim ultiónis in corde meo, * annus redemptiónis meæ venit.

Circumspexi, et non erat auxiliátor, * quæsívi, et non fuit qui adjuváret.

Et salvávit mihi bráchium meum; * et indignátio mea ipsa auxiliáta est mihi.

*Ant.* 7. d. Præ timóre autem ejus extérriti sunt custódes, et facti sunt velut mórtui, allelúia. *Matth.* 28.

*Ant.* 8. *G.* Respondens autem Angelus, dixit muliéribus: Nolíte timére; scio enim quod Jesum quæritis: non est hic, allelúia. *Matt.* 28.

*Loco Capituli, Hymni et Versiculi, dicitur sine neumate:*

Hæc dies quam fecit Dóminus; exultémus et lætémur in ea. *Ps.* 117.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 6. F. Surrexit sicut dixit: Veníte, et vidéte locum ubi pósitus erat Dóminus, allelúia. *Matth.* 28.

Orémus. ORATIO.

Deus, qui hodiernâ die per Unigénitum tuum æternitátis nobis áditum, devictâ morte, reserasti: vota nostra, quæ præveniendo aspíras, étiam adjuvando proséquere; Per eumdem Dóminum.

℣. Dóminus vobiscum, etc.

## AD HORAS.

*Dicitur* Deus, in adjutórium, *ac prætermisso Hymno, absoluté inchoatur Psalmus de* 2 in b; *et loco Antiphonæ, Capituli,* ℟ *br. et* ℣, *dicitur* Allelúia *semel; deinde*: Hæc dies quam fecit Dóminus; exultémus et lætémur in ea. *Et statim dicitur*, Dóminus vobiscum, *et Oratio.*

AD PRIMAM, *omittitur Symbolum* Quicumque; *dicitur Oratio solita*, Dómine Deus, *quam sequitur lectio Martyrologii, et reliquum Capituli Officium, ad cujus absolutionem legitur Canon, ad calcem.*

## AD VESPERAS.

*Ps.* Dixit Dóminus, 18.

*Ant.* 6. F. Dícite discípulis ejus quia surrexit, allelúia, allelúia, allelúia. *Matth.* 28.

*Ps.* Confitébor, 18.

*Ant.* 4. E. Ecce præcédit vos in Galilæam; ibi eum vidébitis, allelúia, allelúia. *Matth.* 28.

*Ps.* Beátus vir, 19.

*Ant.* 1. f. Et exiérunt citò de monuménto cum timóre et gáudio magno, currentes nuntiáre discípulis, allelúia. *Matth.* 28.

*Graduale.* Hæc dies quam fecit Dóminus; exultémus et lætémur in ea. ℣. Confitémini Dómino, quóniam bonus, quóniam in séculum misericórdia ejus. *Ps.* 117.

Allelúia, allelúia. ℣. Surrexit Dóminus, et occurrit muliéribus, dicens: Avéte. Illæ autem accessérunt, et tenuérunt pedes ejus. Allelúia. *Matth.* 28.

SEQUENTIA.

Victimæ Pascháli laudes ímmolent Christiáni.

Agnus redémit oves: Christus innocens Patri reconciliávit peccatóres.

Mors et vita duello conflixére mirando: dux vitæ mórtuus, regnat vivus.

Dic nobis, María, quid vidisti in via?

Sepulcrum Christi viventis, et glóriam vidi resurgentis;

Angélicos testes, sudárium et vestes.

Surrexit Christus spes mea; præcédet suos in Galilæam.

Scimus Christum surrexisse à mórtuis verè. Tu nobis, victor Rex, miserére. Amen.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 3. a. Cùm serò esset die illo, et fores essent clausæ, ubi erant discípuli congregáti; venit Jesus, et stetit in médio, et dixit eis: Pax vobis, allelúia. *Joan.* 20.

*Oratio ut suprà ad Laudes.*

¶ *Qui privatim recitant, non tenentur ad ea quæ sequuntur usque ad Completorium exclusivè; quæ tamen in Ecclesiis, ubi non sunt Fontes, cantantur in Choro. In aliis verò, dicto* Benedicámus, *progreditur Clerus ad Fontes.*

*Eundo cantatur:* ℟. Christus resurgens ex mórtuis, jam non móritur; * Mors illi ultrà non dominábitur: quòd enim mórtuus est peccáto, mórtuus est semel; quòd autem vivit, vivit Deo, allelúia, allelúia. *Rom.* 6.

*Postea cantatur de* 1 *in* A, *Ps.* Laudáte, púeri, 19.

*Cantatur à toto Clero simul:* ℣. Præcipitábit mortem in sempiternum, et oppróbrium pópuli sui áuferet de universa terra; * Mors. *Is.* 25.

*Versic.* Salvávit sibi déxtera ejus, ℟. Et bráchium sanctum ejus. *Ps.* 97.

Orémus. Oratio.

Deus, qui ad æternam vitam in Christi resurrectióne nos réparas: imple pietátis tuæ ineffábile sacramentum; ut, cùm in majestáte sua Salvátor noster advénerit, quos fecisti baptismo regenerári, fácias beátâ immortalitáte vestíri; Per eumdem Christum Dóminum nostrum. ℟. Amen.

*Eundo ad Stationem:* ℟. Quicumque baptizáti sumus in Christo Jesu, in morte ipsíus baptizáti sumus:* Consepulti enim sumus cum illo per baptismum in mortem; ut quómodo Christus surrexit à mórtuis per glóriam Pátris, ita et nos in novitáte vitæ ambulémus, allelúia. *Rom.* 6.

*Deinde de* 3 *in* a, *Ps.* In éxitu, 19.

*Cantatur à toto Clero simul:* ℣. Dóminus scidit aquas ante eos, ut fáceret sibi nomen sempiternum: eduxit nos per abyssos. * Consepulti enim. *Is.* 63.

*Et fit Statio secundùm consuetudinem locorum, in qua dicitur* ℣. Audítam fácite vocem laudis ejus, ℟. Qui pósuit ánimam meam ad vitam. *Ps.* 65.

Orémus. Oratio.

Deus, qui resurrectiónis tuæ fidem per baptísmi grátiam in nobis obsignáre voluisti: concéde, ut à peccáti morte liberáti, in novitáte vitæ ambulémus; Qui vivis et regnas Deus. ℟. Amen.

*Redeundo cantatur:* ℟. Quid quæritis viventem cum mórtuis? Non est hic, sed surrexit: * Recordámini quáliter locútus est vobis, dicens: Quia oportet Fílium hóminis tradi in manus peccatórum, et crucifigi, et die tértiâ resúrgere, allelúia, allelúia. *Luc.* 24.

*Ante Crucifixum cantatur:* ℣. Adoráte Dóminum in átrio sancto ejus; commoveátur à fácie ejus universa terra: dícite in géntibus quia Dóminus regnávit à ligno.

*Tum Clerus ingreditur Chorum, cantando:* * Recordámini.

℣. Lápidem quem reprobavérunt ædificantes, ℟. Hic factus est in caput ánguli. *Ps.* 117.

Orémus. Oratio.

Deus, cujus Fílius pro nobis crucifixus mundum redímere dignátus est: præsta, ut qui de nostra redemptióne lætámur, æternis gáudiis, te donante, perfruámur; Per eumdem Dóminum nostrum Jesum Christum.

℣. Dóminus vobíscum.

℣. Benedicámus Dómino.

AD COMPLETORIUM.

*Dicto* Converte nos, *etc. dicuntur absolutè tres Psalmi de Dominica, et in fine,* Allelúia *semel.*

*Deinde imponitur* Hæc dies, *et dicitur* Nunc dimittis, *de 2 in* A. *Postea dicitur integrè* Hæc dies, *ut suprà ad Laudes. Oratio,* Vísita.

¶ *Prædictus modus Horarum servatur usque ad Nonam Sabbati in Albis inclusivè.* ]

## INTRA OCTAVAM PASCHÆ.

*Omnia ut in die, exceptis quæ sequuntur.*

AD NOCTURNUM.

*Invitat.* Surrexit Dóminus verè, * Allelúia. *Luc.* 24.

*Tres Psalmi in unaquaque Feria notati, sub sola Ant,* 2. D. Christus mórtuus est pro peccátis nostris, et sepultus est, et resurrexit tértiâ die secundùm Scriptúras, allelúia. 1 *Cor.* 15.

℣. Cor meum et caro mea ℟. Exultavérunt in Deum vivum. *Ps.* 83.

*Lectiones et* ℟℟℟, *ut infrà in qualibet die.*

AD LAUDES.

*Ant. et Psalmi cum Cantico, ut in die Paschæ,* 284.

*Antiph. ad* Benedictus, *et Oratio, infrà in qualibet die.*

Ad Horas, *ut in die Paschæ, præter Orationem. Canon ad calcem.*

AD VESPERAS.

*Psalmi et Antiphonæ, ut in die Paschæ,* 285.

*Graduale* Hæc dies, etc. *et Antiph. ad* Magnificat, *cum*

*Oratione, ut infrà in qualibet die.*

*In Processione ad Fontes, quæ fit post* Benedicámus, ℟℟℟ *et* ℣℣℣, *ut in die Paschæ: Orationes sunt propriæ cuilibet diei.*

Completorium, *ut suprà.*

## FERIA SECUNDA.

*Duplex-majus.*

### AD NOCTURNUM.

*Tres Psalmi è I Nocturno Dominicæ, ut in Psalterio,* 1.

Lectio i.

Incipiunt Actus Apostolórum. *Cap.* 1.

Primum quidem sermónem feci de ómnibus, ô Theóphile, quæ cœpit Jesus fácere et docére, usque in diem quâ præcípiens Apóstolis per Spíritum sanctum, quos elégit, assumptus est : quibus et præbuit seipsum vivum post passiónem suam in multis argumentis, per dies quadraginta appárens eis, et loquens de regno Dei. Et convescens, præcépit eis ab Jerosólymis ne discéderent, sed expectárent promissiónem Patris, quam audistis, inquit, per eos meum; quia Joannes quidem baptizávit aquâ; vos autem baptizabímini Spíritu sancto, non post multos hos dies. Igitur qui convénerant, interrogábant eum, dicentes: Dómine, si in témpore hoc restítues regnum Israel? Dixit autem eis : Non est vestrûm nosse témpora vel momenta quæ Pater pósuit in sua potestáte; sed accipiétis virtútem supervenientis Spíritûs sancti in vos, et éritis mihi testes in Jerúsalem, et in omni Judæa, et Samaría, et usque ad últimum terræ.

℟. Qui habitábant Jerúsalem, et príncipes ejus ignorantes Jesum, * Petiérunt à Piláto ut interficerent eum; Deus verò suscitávit eum à mórtuis tértiâ die, allelúia, allelúia. ℣. Ipsi non cognovérunt cogitatiónes Dómini, et non intellexérunt consílium ejus : * Petiérunt à Piláto. *Act.* 13. *Mich.* 4.

Lectio ii.

Sermo sancti Leónis Papæ.

*De Resurr. Domini,* 1.

Cum quadraginta diérum observántiâ hoc voluérimus operári, ut áliquid sentirémus crucis in témpore Domínicæ Passiónis; adnitendum nobis est, ut étiam Resurrectiónis Christi inveniámur esse consortes, et de morte ad vitam, dum in isto sumus córpore, transeámus. Moriendum ergo est diábolo, et vivendum Deo : deficiendum iniquitáti, ut justítiæ resurgátur. Occumbant vétera, ut oriantur nova. Resurréctio Dómini, non finis carnis, sed commutátio fuit, nec virtútis augmento consumpta substántia est. Quálitas tránsiit, non natúra defécit : et factum est corpus impassíbile, quod pótuit crucifígi; factum est immortále, quod

quod pótuit occídi; factum est incorruptíbile, quod pótuit vulnerári. Agnoscat ígitur pópulus Dei novam se esse in Christo creatúram. Nemo in id récidat, unde surrexit; sed, etiamsi pro infirmitáte corpórea in alíquibus adhuc languóribus jacet, sanári instanter desíderet ac levári. Hæc est enim salútis via, et cœptæ in Christo resurrectiónis imitátio. Hæc meditátio, dilectíssimi, non pro sola solemnitáte Pascháli, sed pro totíus vitæ sanctificatióne retinenda est.

℟. Christus crucifixus est ex infirmitáte; sed vivit ex virtúte Dei: et nos infirmi sumus in illo; sed vivémus cum eo * Ex virtúte Dei, allelúia, allelúia. ℣. Vivificábit nos, et suscitábit nos; et vivémus in conspectu ejus, * Ex. 2 *Cor*. 13. *Osee* 6.

LECTIO III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Lucam.

*Cap*. 24.

In illo témpore; Duo ex discípulis Jesu ibant ipsâ die in castellum quod erat in spátio stadiórum sexaginta ab Jerúsalem, nómine Emmaüs. Et réliqua.

Homília sancti Augustíni Epíscopi.

*Serm*. 235. *n*. 2, 3.

In via cum illis tanquam comes ambulábat, et ipse dux erat: útique vidébant, sed non agnoscébant. Tenebantur enim óculi eórum, sicut audívimus, ne eum agnóscerent. Eia, fratres, ubi vóluit Dóminus agnosci? In fractióne panis. Secúri sumus: panem frángimus, et Dóminum agnóscimus. Nóluit agnosci, nisi ibi, propter nos qui non eum visúri erámus in carne, et tamen manducatúri erámus ejus carnem. Quisquis ergo fidélis es, quisquis non ínániter Christiánus vocáris, quisquis Ecclésiam non sine causa ingréderis, quisquis verbum Dei cum timóre et spe audis, consolétur te fráctio panis. Abséntia Dómini non est abséntia: habéto fidem, et tecum est quem non vides.

℟. O stulti et tardi corde ad credendum in ómnibus quæ locúti sunt Prophétæ! * Nonne hæc opórtuit pati Christum, et ita intráre in glóriam suam? allelúia, allelúia, ℣. Dóminus vóluit contérere eum in infirmitáte. * Nonne. Glória. * Nonne. *Luc*. 24. *Is*. 53.

*Ad* Benedictus. *Ant*. 7. a. Incípiens Jesus à Móyse et ómnibus Prophétis, interpretabátur illis in ómnibus Scriptúris quæ de ipso erant, allelúia. *Luc*. 24.

Orémus. ORATIO.

Deus, qui solemnitáte Paschâli mundo remédia contulisti; pópulum tuum, quæsumus, cœlesti dono prosédquere: ut et perfectam libertátem cónsequi mereátur, et ad vitam profíciat sempiternam; Per Dóminum nostrum.

## AD VESPERAS.

*Graduale.* Hæc dies quam fecit Dóminus; exultémus et lætémur in ea. ℣. Iter fácite ei qui ascendit super occásum; Dóminus nomen illi. *Ps.* 67.

Allelúia, allelúia. ℣. Cognovérunt eum, et dixérunt ad ínvicem: Nonne cor nostrum ardens erat in nobis, dum loquerétur in via? Allelúia. *Luc.* 24.

*Sequentia,* Victimæ, 285.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 7. G. Regressi sunt in Jerúsalem, et invenérunt congregátos úndecim, et eos qui cum illis erant; et ipsi narrábant quómodo cognovérunt Jesum in fractióne panis, allelúia. *Luc.* 24.

*Oratio ut suprà ad Laudes.*

*In Baptisterio.*

Oremus. Oratio.

Deus, qui renátis ex aqua et Spíritu sancto cœlestis regni pandis intróitum; auge super fámulos tuos grátiam quam dedisti: ut qui ab ómnibus sunt purgáti peccátis, nullis priventur promissis; Per Christum.

*Ad Stationem.*

Orémus. Oratio.

Populus tuus, quæsumus Dómine, renovátis exultet ánimæ virtútibus; et vivificatiónis tuæ grátiam consecútus, in tuo semper múnere gloriétur; Per Christum.

*In Choro.*

Orémus. Oratio.

Deus, qui pópulum tuum de hostis cállidi servitúte liberasti: preces ejus misericórditer réspice, et adversantes ei tuâ virtúte prosterne; Per Dóminum.

## FERIA TERTIA.

*Duplex-majus.*

### AD NOCTURNUM.

*Tres Psalmi è II Nocturno Dominicæ, ut in Psalterio,* 3.

Lectio i.

De Actibus Apostolórum.

*Cap.* 2.

Stans Petrus cum úndecim, levávit vocem suam, et locútus est: Viri Israelítæ, audíte verba hæc: Jesum Nazarénum, virum approbátum à Deo in vobis, virtútibus, et prodígiis, et signis, quæ fecit Deus per illum in médio vestrî, sicut et vos scitis; hunc definíto consílio, et præsciéntiâ Dei tráditum, per manus iniquórum affigentes, interemistis: quem Deus suscitávit, solútis dolóribus inferni, juxta quod impossíbile erat tenéri illum ab eo. David enim dicit in eum: Providébam Dóminum in conspectu meo semper; quóniam à dextris est mihi, ne commóvear: propter hoc lætátum est cor meum, et exultávit lingua mea, ínsuper et caro mea requiescet in spe; quóniam non derelinques ánimam meam in inferno, nec dabis Sanctum tuum vidére corruptiónem. Notas mihi fecisti vias vitæ; et replébis me jucunditáte cum

fácie tua. Viri fratres, liceat audenter dícere ad vos de Patriarcha David, quóniam defunctus est, et sepultus: et sepulcrum ejus est apud nos usque in hodiernum diem. Prophéta ígitur cùm esset, et sciret quia jurejurando jurasset illi Deus de fructu lumbi ejus sedére super sedem ejus; próvidens locútus est de resurrectióne Christi, quia neque derelictus est in inferno, neque caro ejus vidit corruptiónem. Hunc Jesum resuscitávit Deus, cujus omnes nos testes sumus.

℟. Vos Sanctum et Justum negastis, et petistis virum homicídam donári vobis; auctórem verò vitæ interfecistis,* Quem Deus suscitávit à mórtuis, cujus nos testes sumus, allelúia, allelúia. ℣. Fílii hóminum, scitóte quia Dóminus mirificávit Sanctum suum, * Quem. *Act.* 3. *Ps.* 4.

LECTIO II.

Sermo sancti Augustíni Epíscopi.

*In Ps.* 101, *serm.* 2. *n.* 7.

NON laus fídei Christianórum est, quia credunt mórtuum Christum, sed quia credunt resurrexisse Christum. Nam mórtuum et pagánus credit; et hoc tibi pro crímine óbjicit, quia in mórtuum credidisti. Quæ ígitur laus tua? Crédere resurrexisse Christum, et speráre te resurrectúrum esse per Christum, hæc est laus fídei. Si enim credíderis in corde tuo quia Dóminus est Jesus, et confessus fúeris ore tuo quia eum Deus suscitávit à mórtuis, salvus eris. Non ait: Si confessus fúeris quia Deus eum trádidit occidendum, sed quia eum Deus suscitávit à mórtuis, si confessus fúeris, tunc salvus eris.

℟. Crédimus, scientes quóniam * Qui suscitávit Jesum, et nos cum Jesu suscitábit, allelúia, allelúia. ℣. Inclináte aurem vestram, et veníte: audíte, et vivet ánima vestra.* Qui suscitávit Jesum. 2 *Cor.* 4. *Is.* 55.

LECTIO III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Lucam.

*Cap.* 24.

IN illo témpore; Stetit Jesus in médio discipulórum suórum, et dicit eis: Pax vobis; ego sum, nolíte timére. Et réliqua.

Homília sancti Gregórii Papæ. 26 *in Ev. n.* 1.

PRIMA lectiónis hujus Evangélicæ quæstio ánimum pulsat, quómodo post resurrectiónem corpus Domínicum verum fuit, quod, clausis jánuis, ad discípulos íngredi pótuit. Sed sciendum nobis est quod divína operátio, si ratióne comprehénditur, non est admirábilis; nec fides habet méritum, cui humána rátio præbet experimentum. Sed hæc ipsa nostri Redemptóris ópera, quæ ex semetipsis comprehendi nequáquam possunt, ex ália ejus operatióne pensanda sunt,

ut rebus mirabílibus fidem præbeant facta mirabilióra. Illud enim corpus Dómini intrávit ad discípulos, jánuis clausis, quod vidélicet ad humános óculos, per nativitátem suam, clauso éxiit útero Vírginis. Quid ergo mirum, si, clausis jánuis, post resurrectiónem suam, in æternum jam victúrus intrávit, qui moritúrus véniens, non aperto Vírginis útero exívit.

℟. Stetit Jesus in médio discipulórum suórum, et dicit eis: * Pax vobis; ego sum, nolíte timére, allelúia, allelúia. ℣. Ego sum frater vester, nolíte pavére; pro salúte enim vestra misit me Deus ante vos: * Pax. Glória. * Pax. *Luc.* 24. *Gen.* 45.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 1. g. Obtulérunt discípuli Dómino partem piscis assi, et favum mellis; et, cùm manducasset coram eis, sumens relíquias, dedit eis, allelúia. *Luc.* 24.

Orémus. Oratio.

Deus, qui Ecclésiam tuam novo semper fœtu multíplicas: concéde fámulis tuis, ut sacramentum vivendo téneant, quod fide percepérunt; Per Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum, qui tecum vivit et regnat in unitáte Spíritûs sancti Deus.

AD VESPERAS.

*Graduale.* Hæc dies quam fecit Dóminus; exultémus et lætémur in ea. ℣. Memor fuit in séculum testamenti sui, verbi quod mandávit in mille generatiónes. *Ps.* 104.

Allelúia, allelúia. ℣. Apéruit Jesus discípulis sensum, ut intellígerent Scriptúras. Allelúia. *Luc.* 24.

*Sequentia,* Victimæ, 285.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 3. a. Sic scriptum est, et sic oportébat Christum pati, et resúrgere à mórtuis tértiâ die, et prædicári in nómine ejus pœniténtiam, et remissiónem peccatórum in omnes gentes, allelúia. *Luc.* 24.

*Oratio ut suprà ad Laudes.*

*In Baptisterio.*

Orémus. Oratio.

Deus, per quem nobis redémptio venit, et præstátur adóptio; réspice in ópera misericórdiæ tuæ: ut in Christo renátis, et ætérna tribuátur hæréditas, et vera libertas; Per eumdem Christum.

*Ad Stationem.*

Orémus. Oratio.

Fac, quæsumus omnípotens Deus, ut qui Paschálibus remédiis innováti, similitúdinem terréni parentis evásimus, ad formam cœlestis transferámur auctóris; Qui tecum vivit et regnat Deus.

*In Choro.*

Orémus. Oratio.

Deus, qui nos, in cruce passus, prétio magno redímere voluisti: infunde nobis virtútem auxílii tui, ut nostra te semper vita glorífícet; Qui vivis et regnas cum Deo Patre in unitáte Spíritûs sancti Deus, per ómnia sécula seculórum.

## FERIA QUARTA.

*Duplex-minus.*

### AD NOCTURNUM.

*Tres Psalmi è III Nocturno Dominicæ, ut in Psalterio*, 5.

LECTIO I.

De Actibus Apostolórum.

*Cap.* 2.

HIS audítis, compuncti sunt corde, et dixérunt ad Petrum et ad réliquos Apóstolos : Quid faciémus, viri fratres? Petrus verò ad illos : Pœniténtiam, inquit, ágite, et baptizétur unusquisque vestrûm in nómine Jesu Christi in remissiónem peccatórum vestrórum; et accipiétis donum Spíritûs sancti. Vobis enim est repromíssio, et fíliis vestris, et ómnibus qui longè sunt, quoscumque advocáverit Dóminus Deus noster. Aliis étiam verbis plúrimis testificátus est, et exhortabátur eos, dicens : Salvámini à generatióne istá prava. Qui ergo recepérunt sermónem ejus, baptizáti sunt; et appósitæ sunt in die illa ánimæ círciter tria míllia. Erant autem perseverantes in doctrína Apostolórum, et communicatióne fractiónis panis, et oratiónibus. Fiébat autem omni ánimæ timor : multa quoque prodígia et signa per Apóstolos in Jerúsalem fiébant, et metus erat magnus in universis.

℟. Secundùm misericórdiam suam magnam regenerávit nos Deus in spem vivam per resurrectiónem Jesu Christi ex mórtuis, * In hæreditátem incorruptíbilem et incontaminátam, allelúia, allelúia. ℣. Memor fuit nostri, redémit nos Dóminus, quóniam in æternum misericórdia ejus; * In hæreditátem. 1 *Petr.* 1. *Ps.* 135.

LECTIO II.

Sermo sancti Gregórii Nazianzéni. *Or.* 41.

RESURRECTIONIS dies, faustumque princípium : proinde ob festum diem explendescámus : ei qui pro nobis passus est ac resurrexit, múnera offerámus. Aurum fortasse me dícere putátis, aut argentum, aut textúras, aut pellúcidos et ingentis prétii lápides, fluxam fragilemque matériam, cujus ferè majórem partem póssident ímprobi, et servi rerum terrenárum mundíque príncipis. Imò verò nosmetipsos offerámus, hoc est, opes Deo caríssimas, ipsóque máximè dignas. Imáginis decus imágini reddámus : dignitátem nostram agnoscámus : exemplar nostrum honóre prosequámur : mystérii vim intelligámus, et pro quo Christus morte functus est. Simus ut Christus, quóniam Christus quoque sicut nos. Efficiámur dii propter ipsum, quóniam ipse quoque homo propter nos factus est. Assumpsit quod detérius erat, ut det quod præstántius est : men-

dicus factus est, ut nos illius mendicitáte ditémur. Servi formam suscépit, ut nos in libertátem asserámur : descendit, ut evehámur : tentátus est, ut vincámus : contemptus est, ut nos glóriâ afficiámur : mórtuus est, ut salútem nobis ásferat : ascendit, ut eos qui in peccáti lapsu jacébant ad seipsum trahat. Omnia quisque donet : ómnia, inquam, ei qui seipsum redemptiónis prétium pro nobis ac culpæ nostræ succidáneum dedit, nemo non ófferat. Nihil autem datúrus est tantum, quantum si seipsum obtúlerit, hujus mystérii vim ac ratiónem probè intelligentem, et totum in eo nitentem, ut propter illum ómnia sit, quæcumque ipse propter nos factus est.

℟. Sive vívimus, sive mórimur, Dómini sumus; * In hoc enim Christus mórtuus est, et resurrexit, ut et mortuórum et vivórum dominétur, allelúia, allelúia. ℣. Fórtium dívidet spólia, pro eo quod trádidit in mortem ánimam suam; * In hoc enim Christus mórtuus est. *Rom.* 14. *Is.* 53.

LECTIO III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Joannem.

*Cap.* 21.

In illo témpore; Manifestávit se íterum Jesus discípulis, ad mare Tiberíadis. Manifestávit autem sic. Erant simul Simon Petrus, et Thomas qui dícitur Dídymus. Et réliqua.

Homília sancti Gregórii Papæ. *In Ev.* 24.

Lectio sancti Evangélii, quæ modò in áuribus vestris lecta est, fratres mei, quæstióne ánimum pulsat, sed pulsatióne suâ vim discretiónis índicat. Quæri étenim potest cur Petrus, qui piscátor ante conversiónem fuit, post conversiónem ad piscatiónem rédiit; et cùm Véritas dicat: Nemo mittens manum suam ad arátrum, et aspíciens retrò, aptus est regno Dei; cur repétiit quod derelíquit? Sed si virtus discretiónis inspícitur, cítiùs vidétur quia nimírum negótium quod ante conversiónem sine peccáto éxtitit, hoc étiam post conversiónem repétere culpa non fuit.

℟. Stetit Jesus in líttore; non tamen cognovérunt discípuli quia Jesus est. * Dicit eis : Míttite in déxteram navígii rete. Misérunt, et jam non valébant illud tráhere præ multitúdine píscium, allelúia, allelúia. ℣. Omnia quæcumque vóluit, Dóminus fecit in cœlo, in terra, in mari, et in ómnibus abyssis. * Dicit eis. Glória. * Dicit eis. *Joan.* 21. *Ps.* 134.

*Ad* Benedictus. *Ant* 8. *G.* Dicit discípulis suis Jesus: Veníte, prandéte. Et nemo audébat discumbéntium interrogáre eum, Tu quis es? scientes quia Dóminus est, allelúia. *Joan.* 21.

Orémus. Oratio.

Deus, qui nos resurrectiónis Domínicæ ánnuâ solemnitáte lætíficas: concéde propítius, ut per temporália festa quæ ágimus, perveníre ad gáudia æterna mereámur; Per eumdem Dóminum.

AD VESPERAS.

*Graduale.* Hæc dies quam fecit Dóminus; exultémus et lætémur in ea. ℣. Annúntient ópera ejus, qui descendunt in mare; ipsi vidérunt mirabília ejus in profundo. *Ps.* 106.

Allelúia, allelúia. ℣. Apóstolis quos elégit Jesus, præbuit seipsum vivum in multis argumentis, per dies quadraginta appárens eis. Allelúia. *Act.* 1.

*Sequentia*, Víctimæ, 285.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 8. G. Accipit Jesus panem, et dat discípulis suis, et piscem simíliter. Hoc jam tértiò manifestátus est Jesus, postquam resurrexit à mórtuis, allelúia. *Joan.* 21. *Act.* 10.

*Oratio ut suprà ad Laudes.*

*In Baptisterio.*

Orémus. Oratio.

Deus, qui Ecclésiam tuam multíplicas sóbole renascéntium: fac eam propítius gaudére de suórum proféctibus filiórum; Per Christum.

*Ad Stationem.*

Orémus. Oratio.

Deus, qui per Paschále mystérium docuisti nos vetustátem vitæ relínquere, et in novitáte spíritûs ambuláre: præsta, ut sacramentis tuis innováti, dona grátiæ tuæ servémus; Per Christum.

*In Choro.*

Orémus. Oratio.

Tua nos, quæsumus Dómine, pietáte custódi: ut qui Unigéniti tui passióne sunt redempti, ejusdem resurrectiónis et glóriæ efficiantur partícipes; Per eumdem Dóminum.

## FERIA QUINTA.

*Semiduplex.*

AD NOCTURNUM.

*Tres Psalmi è I Nocturno Dominicæ, ut in Psalterio,* 1.

Lectio I.

De Actibus Apostolórum.

*Cap.* 5.

Petrus et Joannes ascendébant in templum ad horam oratiónis nonam. Et quidam vir, qui erat claudus ex útero matris suæ, bajulabátur: quem ponébant quotídie ad portam templi, quæ dícitur Speciósa, ut péteret eleemósynam ab introeúntibus in templum. Is, cùm vidisset Petrum et Joannem incipientes introíre in templum, rogábat ut eleemósynam accíperet. Intuens autem in eum Petrus cum Joanne, dixit: Réspice in nos. At ille intendébat in eos, sperans se áliquid acceptúrum ab eis. Petrus autem dixit: Argentum et aurum non est mihi; quod autem hábeo, hoc tibi do: In nómine Jesu Christi Nazaréni surge, et ámbula. Et apprehensâ manu ejus déx-

terâ, allevávit eum, et prótinus consolidátæ sunt bases ejus et plantæ. Et exíliens stetit, et ambulábat : et intrávit cum illis in templum ámbulans, et exíliens, et laudans Deum. Et vidit omnis pópulus eum ambulantem, et laudantem Deum. Cognoscébant autem illum, quòd ipse erat qui ad eleemósynam sedébat in Speciósam portam templi; et impléti sunt stupóre.

℟. Jesum Nazarénum virum approbátum à Deo virtútibus et prodígiis, per manus iniquórum affigentes, interemistis : * Quem Deus suscitávit, allelúia, allelúia. ℣. Ipse est Deus vivens, et æternus in sécula, fáciens signa et mirabília in cœlo et in terra : * Quem. *Act.* 2. *Dan.* 6.

LECTIO II.

Sermo sancti Joannis Chrysóstomi.

*Cur in Pentec. legantur Acta Apost. Hom.* 4. *n.* 5, 6.

Merito quæret áliquis quam tandem ob causam statútum fúerit ut históriam crucis in die crucis et passiónis legámus; Apostolórum autem Acta non ipsis illis diébus, aut illo témpore quo patráta sunt, legámus. Causam diligenter atténdite. Statim post crucem ac resurrectiónem mirácula légimus Apostolórum, ut manifestam et indubitátam resurrectiónis probatiónem habeámus. Excitátum illum à mórtuis, corpóreis óculis non vidisti; sed óculis fidei cernis illum à mórtuis excitátum. Non vidisti illum his óculis à mórtuis excitátum; at per illa mirácula excitátum illum à mórtuis intuébere. Ad illum enim fídei conspectum signórum exhibítio te dedúcet. Itaque multò major et evidéntior illa fuit demonstrátio, quòd in ejus nómine signa fíerent, quàm quòd excitátus ille à mórtuis apparéret. Cùm enim Petrum audivissent turbæ claudo dicentem : In nómine Jesu Christi surge, et ámbula; tria míllia et quinque míllia virórum Christo credidérunt. At discípulus cùm suscitátum vidéret, nisi étiam tángeret, incrédulus fuit : hæc cùm vel inimíci ipsi spectassent, prótinus credidérunt. Ita in hujúsmodi miráculis majus áliquid visu fuit et evidéntius, plusque ad illos alliciendos váluit atque flectendos, ut resurrectióni fidem adhibérent.

℟. Per Christum fidéles estis in Deo qui suscitávit eum à mórtuis, et dedit ei glóriam; * Ut fides vestra et spes esset in Deo, allelúia, allel. ℣. Antíquus diérum dedit ei potestátem, et honórem, et regnum; * Ut fides vestra et spes. 1 *Petr.* 1. *Dan.* 7.

LECTIO III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Joannem.

*Cap.* 20.

In illo témpore; María stabat ad monumentum foris plorans. Et réliqua.

Homília sancti Gregórii Papæ. *In Ev.* 25. *n.* 4, 5.

Mulier, quid ploras? quem quæris? Interrogátur dolóris causa, ut augeátur desidérium; quátenus cùm nomináret quem quæreret, in amóre ejus ardéntiùs æstuáret. Illa exístimans quia hortulánus esset, dicit ei : Dómine, si tu sustulisti eum. Quid est quod, viso eo quem hortulánum crédidit, cui necdum díxerat quem quærébat, ait : Dómine, si tu sustulisti eum? Quasi enim jam dixisset ex cujus desidério plángeret, eum dicit quem non díxerat. Sed vis amóris hoc ágere solet in ánimo, ut quem ipse semper cógitat, nullum álium ignoráre credat. Rectè et hæc múlier quem quærit, non dicit; et tamen dicit : Si tu sustulisti eum; quia álteri non putat incógnitum, quem sic ipsa contínuo plangit desidério.

℟. María stabat ad monumentum foris, plorans. Dicit ei Jesus : Múlier, quid ploras? quem quæris? Illa exístimans quia hortulánus esset, dicit ei : Dómine, * Si tu sustulisti eum, dícito mihi ubi posuisti eum, et ego eum tollam, allelúia, allelúia. ℣. Indica mihi quem díligit ánima mea : * Si tu. Glória. * Si tu. *Joan.* 20. *Cant.* 1.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 8. G. Surgens Jesus mane, primâ sábbati, appáruit primò Maríæ Magdaléne, allelúia. *Marc.* 16.

Orémus. Oratio.

Omnipotens sempitérne Deus, qui Paschále sacraméntum in reconciliatiónis humánæ fœdere contulisti : da méntibus nostris, ut quod professióne celebrámus, imitémur effectu; Per.

AD VESPERAS.

*Graduale.* Hæc dies quam fecit Dóminus, exultémus et lætémur in ea. ℣. Déxtera Dómini fecit virtútem : déxtera Dómini exaltávit me. *Ps.* 117.

Allelúia, allelúia. ℣. Dicit Maríæ Jesus : Vade ad fratres meos, et dic eis : Ascendo ad Patrem meum et Patrem vestrum, Deum meum et Deum vestrum. Allelúia. *Joan.* 20.

*Sequentia*, Víctimæ, 285.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 6. F. Venit María Magdaléne, annúntians discípulis : Quia vidi Dóminum, allelúia. *Joan.* 20.

*Oratio ut suprà ad Laudes.*

*In Baptisterio.*

Orémus. Oratio.

Præsta, quæsumus omnípotens Deus, ut Ecclésia tua, et suórum firmitáte membrórum, et novâ semper fœcunditáte lætétur; Per Christum.

*Ad Stationem.*

Orémus. Oratio.

Largire fámulis tuis, Dómine, grátiam tuam : et præsta, ut qui ad imáginem Fílii tui divíno sunt baptismo regeneráti, à regni tui poténtia nunquam divellantur; Per eumdem Christum.

*In Choro.*

Orémus. ORATIO.

DEUS, qui nobis ad celebrandum Paschále sacramentum liberióres ánimos præstitisti: doce nos, et odisse quibus irásceris, et amáre quæ præcipis; Per Dóminum nostrum.

## FERIA SEXTA.

*Semiduplex.*

### AD NOCTURNUM.

*Tres Psalmi è II Nocturno Domin. ut in Psalterio,* 3.

LECTIO I.

De Actibus Apostolórum.

*Cap.* 3.

CUM tenéret (claudus) Petrum et Joannem, cucurrit omnis pópulus ad eos ad pórticum, quæ appellátur Salomónis, stupentes. Videns autem Petrus respondit ad pópulum: Viri Israelítæ, quid mirámini in hoc, aut nos quid intuémini, quasi nostrâ virtúte aut potestáte fecérimus hunc ambuláre? Deus Abraham, et Deus Isaac, et Deus Jacob, Deus patrum nostrórum glorificávit Fílium suum Jesum, quem vôs quidem tradidistis, et negastis ante fáciem Piláti, judicante illo dimitti. Vos autem Sanctum et Justum negastis, et petistis virum homicídam donári vobis; auctórem verò vitæ interfecistis, quem Deus suscitávit à mórtuis, cujus nos testes sumus. Et in fide nóminis ejus, hunc quem vos vidistis et nostis, confirmávit nomen ejus, et fides quæ per eum est, dedit integram sanitátem istam in conspectu ómnium vestrûm.

℟. Convenérunt in civitáte ista adversùs sanctum Púerum tuum Jesum, quem unxisti: * Et nunc, Dómine, da servis tuis cum fidúcia loqui, in eo quod manum tuam extendas ad sanitátes et prodígia, per nomen sancti Fílii tui Jesu, allelúia, allelúia. ℣. Astitérunt reges terræ, et príncipes convenérunt in ùnum adversùs Dóminum et adversùs Christum ejus; * Et. *Act.* 4. *Ps.* 2.

LECTIO II.

Sermo sancti Gregórii Papæ.

*Hom.* 21 *in Ev. n.* 7.

ECCE ad memóriam redit quod crucifixo Dei Fílio Judæi insultantes dicébant: Si Rex Israel est, descendat de cruce, et crédimus ei. Qui si de cruce tunc descénderet, nimírum insultántibus cedens, virtútem patiéntiæ non demonstráret. Sed expectávit páululum, tolerávit oppróbria, irrisiónes sustínuit, servávit patiéntiam, dístulit admiratiónem; et qui de cruce descéndere nóluit, de sepulcro surrexit. Plus ígitur fuit de sepulcro súrgere, quàm de cruce descéndere. Plus fuit mortem resurgendo destrúere, quàm vitam descendendo serváre. Sed cùm Judæi hunc ad insultatiónes suas de cruce descéndere mínimè cérnerent; cùm morientem vidérent, eum se vicisse credidé-

runt, nomen illíus se quasi extinxisse gavísi sunt. Sed ecce de morte nomen ejus per mundum crevit, ex qua hoc infidélis turba extinxisse se crédidit: et quem gaudébat occísum, dolet mórtuum; quia hunc ad suam glóriam cognoscit pervenisse per pœnam.

℟. Ubi est, mors, victória tua? ubi est, mors, stímulus tuus? Stímulus mortis, peccátum est; * Deo autem grátias, qui dedit nobis victóriam per Dóminum nostrum Jesum Christum, allelúia. allel. ℣. Oblivióni tráditæ sunt angústiæ prióres, et abscónditæ ab óculis; * Deo. 1 *Cor.* 15. *Is.* 65.

LECTIO III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Matthæum. *Cap.* 28.

In illo témpore; Undecim discípuli abiérunt in Galilæam, in montem ubi constitúerat illis Jesus. Et réliqua.

Homília sancti Hierónymi Presbyteri. *In Matth. l.* 4.

Post resurrectiónem Jesus in monte Galilææ conspícitur, ibíque adorátur: licet quidam dúbitent, et dubitátio eórum nostram áugeat fidem. Tunc manifestiùs osténditur Thomæ; et latus lánceâ vulnerátum, et manus fixas demonstrat clavis. Et accédens Jesus locútus est eis, dicens: Data est mihi omnis potéstas in cœlo et in terra. Illi potestas data est, qui paulò antè crucifixus, qui sepultus in túmulo, qui mórtuus jacúerat, qui póstea resurrexit. In cœlo autem et in terra potestas data est; ut qui antè regnábat in cœlo, per fidem credéntium regnet in terris.

℟. Videntes Jesum discípuli adoravérunt. Et accédens Jesus locútus est eis, dicens: * Data est mihi omnis potestas in cœlo et in terra, allelúia, allelúia. ℣. Ego constitútus sum rex à Dómino super Sion montem sanctum ejus: * Data est. Glória. * Data est. *Matth.* 28. *Ps.* 2.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 3. à. Euntes docéte omnes gentes, baptizantes eos in nómine Patris, et Fílii, et Spíritûs sancti, allelúia. *Matth.* 28.

Orémus. ORATIO.

Deus, qui diversitátem géntium in confessióne tui nóminis adunasti: da ut renátis fonte baptísmatis una sit fides méntium, et pietas actiónum; Per Dóminum.

AD VESPERAS.

*Graduale.* Hæc dies quam fecit Dóminus; exultémus et lætémur in ea. ℣. Annuntiáte inter gentes glóriam ejus, in ómnibus pópulis mirabília ejus. *Ps.* 95.

Allelúia, allelúia. ℣. Euntes in mundum universum, prædicáte Evangélium omni creatúræ. Allelúia. *Marc.* 16.

*Sequentia,* Víctimæ, 285.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 1. f. Qui credíderit et baptizátus fúerit, salvus erit, allelúia. *Marc.* 16.

*Oratio ut suprà ad Laud.*

*In Baptisterio.*

Orémus. Oratio.

Deus, qui credentes in te fonte baptísmatis innovasti : hanc renátis in Christo concéde custódiam, ut nullo erróris incursu grátiam regeneratiónis amittant; Per eumdem Christum.

*Ad Stationem.*

Orémus. Oratio.

Depelle, Dómine, conscriptum peccáti lege chirógraphum, quod in nobis Pascháli mystério per resurrectiónem Fílii tui delevisti; Qui tecum vivit et regnat Deus.

*In Choro.*

Orémus. Oratio.

Deus, qui ad æternam vitam in Christi resurrectióne nos réparas; érige nos ad consedentem in déxtera tua nostræ salútis Auctórem : ut qui propter nos judicandus advénit, pro nobis judicatúrus advéniat idem Jesus Christus Fílius tuus Dóminus noster; Qui tecum vivit et regnat in unitáte.

## SABBATO IN ALBIS.

*Semiduplex.*

### AD NOCTURNUM.

*Tres Psalmi è III Nocturno Dominicæ*, 5.

Lectio i.

De Actibus Apostolórum.

*Cap.* 3.

Et nunc, fratres, scio quia per ignorántiam fecistis, sicut et príncipes vestri. Deus autem quæ prænuntiávit per os ómnium Prophetárum, pati Christum suum, sic implévit. Pœnitémini ígitur, et convertímini, ut deleantur peccáta vestra; ut cùm vénerint témpora refrigérii à conspectu Dómini, et míserit eum, qui prædicátus est vobis, Jesum Christum, quem oportet quidem cœlum suscípere usque in témpora restitutiónis ómnium, quæ locútus est Deus per os sanctórum suórum à século Prophetárum. Móyses quidem dixit: Quóniam Prophétam suscitábit vobis Dóminus Deus vester de frátribus vestris, tanquam me; ipsum audiétis juxta ómnia quæcumque locútus fúerit vobis. Erit autem; omnis ánima quæ non audíerit Prophétam illum, exterminábitur de plebe. Et omnes Prophétæ à Sámuel, et deinceps qui locúti sunt, annuntiavérunt dies istos. Vos estis fílii Prophetárum, et testamenti quod dispósuit Deus ad patres nostros, dicens ad Abraham : Et in sémine tuo benedicentur omnes famíliæ terræ. Vobis primùm Deus súscitans Fílium suum, misit eum benedicentem vobis, ut convertat se unusquisque à nequítia sua.

℟. Jesum à Názareth suscitávit Deus tértiâ die, et præcépit nobis testificári, * Quia ipse est qui constitútus est à Deo judex vivórum et mortuórum, allelúia, allelúia.
℣. Correxit orbem terræ, qui

non commovébitur: judicábit pópulos in æquitáte; * Quia. *Act.* 10. *Ps.* 95.

LECTIO II.

Sermo sancti Augustíni Epíscopi. 228. *n.* 1, 2.

DIES istos, quibus post passiónem Dómini nostri Deo cantámus Allelúia, festos habémus in lætítia usque ad Pentecosten, quando missus est de cœlo promissus Spíritus sanctus. Ex his diébus septem vel octo qui nùnc aguntur, sacramentis infántium deputantur. Qui paulò antè vocabantur competentes, modò vocantur infantes. Competentes dicebantur, quóniam materna víscera, ut nascerentur, petendo pulsábant. Infantes dicuntur, quia modò nati sunt Christo, qui priùs nati fúerant século. In illis est vita nováta, quæ in vobis debet esse firmáta; et qui jam fidéles estis, non eis exempla, quibus péreant, sed quibus profíciant, præbeátis. Jam ipsos álloquor, ut grana sint in área. Vos fratres, vos filii, vos novella gérmina matris Ecclésiæ, óbsecro vos per quod accepistis, ut attendátis in eum qui vos vocávit, qui dilexit vos, qui pérditos quæsívit vos, qui inventos illuminávit vos, ut non sectémini vias perditórum, in quibus errat nomen fidélium. Elígite vobis quos imitémini, Deum timentes, Ecclésiam Dei cum timóre intrantes, verbum Dei diligenter audientes, memóriâ retinentes, cogitatióne ruminantes, factis implentes.

℟. Estis in illo repléti qui est caput omnis principátûs et potestátis; consepulti ei in baptismo, * In quo et resurrexistis per fidem operatiónis Dei, qui suscitávit illum à mórtuis, allelúia, allelúia. ℣. Cognóscite hódie quæ ignórant, qui non vidérunt magnália Dómini, et robustam manum, extentumque bráchium, * In quo. *Coloss.* 2. *Deut.* 11.

LECTIO III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Joannem.

*Cap.* 20.

IN illo témpore; Unâ sábbati, María Magdaléne venit mane, cùm adhuc ténebræ essent, ad monumentum. Et réliqua.

Homília sancti Gregórii Papæ. *In Ev.* 22. *n.* 1.

LECTIO sancti Evangélii, quam modò, fratres, audistis, valde in superfície históricâ est aperta; sed ejus nobis sunt mystéria sub brevitáte requirenda. María Magdaléne, cùm adhuc ténebræ essent, venit ad monumentum. Juxta históriam notátur hora: juxta intellectum verò mysticum requirentis signátur intelligéntia. María étenim auctórem ómnium, quem carne víderat mórtuum, quærébat in monumento: et quia hunc mínimè invénit, furátum crédidit. Adhuc ergo erant ténebræ, cùm venit ad monumentum. Cucurrit

cítiùs, discipulisque nuntiávit. Sed illi præ céteris cucurrérunt, qui præ céteris amavérunt; vidélicet, Petrus et Joannes.

℟. Unâ sábbati, María Magdaléne * Venit mane, cùm adhuc ténebræ essent, ad monumentum, allelúia, allelúia. ℣. Fortis est ut mors diléctio. * Venit. Glória. * Venit. *Joan.* 20. *Cant.* 8.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 4. *D.* Nondum sciébant Scriptúram, quia oportébat Jesum à mórtuis resúrgere, allelúia. *Joan.* 20.

Orémus. Oratio.

Concede, quæsumus omnípotens Deus, ut qui festa Paschália venerando égimus, per hæc contíngere ad gáudia ætérna mereámur; Per Dóminum nostrum.

## DOMINICA
## IN ALBIS DEPOSITIS,
### PRIMA POST PASCHA.

*Duplex-majus.*

### IN I VESPERIS.

*Psalmi de Sabbato.*

*Ant.* 1. g. Confortábo domum Juda, et domum Joseph: ego enim Dóminus Deus eórum, et congregábo illos, quia redémi eos, allelúia. *Zach.* 10.

*Ant.* 6. F. Ad pópulos exaltábo signum meum: et ắfferent fílios in ulnis, et fílias super húmeros portábunt, allelúia. *Is.* 49.

*Ant.* 5. a. Addúcet illos Deus Israel cum jucunditáte, in lúmine majestátis suæ, cum misericórdia et justítia, quæ est ex ipso, allelúia. *Baruch* 5.

*Ant.* 4. E. Miserátor eórum reget eos, et ad fontes aquárum potábit eos, allelúia. *Is.* 49.

*Ant.* 7. d. Ambulábunt mecum in albis, quia digni sunt, allelúia. *Apoc.* 3.

Capitulum. *Isai.* 60.

Non óccidet ultrà sol tuus, Jerúsalem, et luna tua non minuétur; quia erit tibi Dóminus in lucem sempitérnam, et complebúntur dies luctûs tui. Pópulus autem tuus omnes justi, in perpétuum hæreditábunt terram.

℟. Liberávit nos Deus secundùm grátiam quæ manifestáta est nunc per illuminatiónem Salvatóris nostri Jesu Christi; * Qui destruxit quidem mortem, illumináv it autem vitam et incorruptiónem, allelúia, allelúia. ℣. Cantáte Deo, psalmum dícite nómini ejus: iter fácite ei qui ascendit super occásum; * Qui. Glória. * Qui 2 *Tim.* 1. *Ps.* 67.

*Hymn.* Forti tegente, 312.

℣. Dómine, in lúmine vultûs tui ambulábunt, ℟. Et in nómine tuo exultábunt. *Ps.* 88.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 5. C. Numquid non tu, Dómine, percussisti superbum, vulnerasti dracónem? Et nunc qui redempti sunt à Dómino, revertentur laudantes; et læ-

títia sempitérna super cápita eórum, allelúia. *Is.* 51.

*Oratio ut infrà ad Laudes.*

Ad Completorium, *ut infrà* 313.

AD NOCTURNUM.

*Invitat.* Surrexit Dóminus verè, * Allelúia. *Repetitur*, Surrexit. *Luc.* 24.

*Hymn.* Adeste, *infrà* 307.

*Tres Psalmi è I Nocturno Domin.* 1, *sub sola Ant.* 1. *g.* Conversi estis ad Deum, servíre Deo vivo et vero, et expectáre Fílium ejus de cœlis, quem suscitávit ex mórtuis, Jesum, allelúia. 1 *Thess.* 1.

℣. Dicant, qui redempti sunt à Dómino, ℟. Quóniam in séculum misericórdia ejus. *Ps.* 106.

Lectio i.

De Actibus Apostolórum.

*Cap.* 4.

Factum est in crástinum, ut congregarentur príncipes Sacerdótum, et Senióres, et Scribæ in Jerúsalem, et Annas princeps Sacerdótum, et Cáiphas, et Joannes, et Alexander, et quotquot erant de génere sacerdotáli. Et statuentes Apóstolos in médio, interrogábant: In qua virtúte, aut in quo nómine fecistis hoc vos? Tunc replétus Spíritu sancto Petrus, dixit ad eos: Príncipes pópuli, et Senióres, audíte: Si nos hódie dijudicámur in benefacto hóminis infirmi, in quo iste salvus factus est, notum sit ómnibus vobis et omni plebi Israel, quia in nómine Dómini nostri Jesu Christi Nazaréni, quem vos crucifixistis, quem Deus suscitávit à mórtuis, in hoc iste astat coram vobis sanus. Hic est lapis qui reprobátus est à vobis ædificántibus, qui factus est in caput ánguli; et non est in álio áliquo salus. Nec enim áliud nomen est sub cœlo datum homínibus, in quo opórteat nos salvos fíeri.

℟. Vos pópulus acquisitiónis; qui aliquando non pópulus, nunc autem pópulus Dei: * Qui non consecúti misericórdiam, nunc autem misericórdiam consecúti, allelúia, allelúia. ℣. Dóminus elégit vos, quia diléxit vos, et redémit de domo servitútis: * Qui. 1 *Petr.* 2. *Deut.* 7.

Lectio ii.

Sermo sancti Augustini Epíscopi. 260.

Ne moras faciámus, actúri multa, regenerátis in baptismo, qui hódie miscendi sunt pópulo, brevis, sed gravis sermo reddendus est. Vos qui baptizáti estis, et hódie complétis sacraméntum octavárum vestrárum, bréviter accípite, et intellígite translátam fuisse figúram circumcisiónis carnis ad circumcisiónem cordis. Infantes appellámini, quóniam regeneráti estis, et novam vitam ingressi estis, et ad vitam æternam renáti estis, si hoc quod in vobis renátum est, malè vivendo non suffocétis. Reddendi estis pópulis, miscendi

estis plebi fidélium: cavéte ne imitémini malos fidéles, imò falsos fidéles; quasi confitendo fidéles, sed malè vivendo infidéles. Vidéte quia testíficor vobis coram Deo et Angelis ejus; castitátem serváte, sive conjugálem, sive omnímodæ continéntiæ. Quicumque continéntiam vovistis, réddite quod vovistis; quia non exigerétur, si non vovissétis. Quod pótuit licére, non licet; non quia núptiæ damnantur, sed qui retrò réspicit, damnátur. Cavéte à fráudibus in negótiis vestris. Cavéte à mendáciis et perjúriis. Cavéte à verbositáte et luxúria. Quæcumque non vultis fíeri vobis, nolíte fácere áliis, et homínibus, et Deo. Quid vos ónerem? Hæc ágite, et Deus pacis erit vobiscum.

℟. Deponentes omnem malítiam, * Sicut modò géniti infantes, rationábile sine dolo lac concupíscite; ut in eo crescátis in salútem, allelúia, allelúia. ℣. Testes vos estis quia ipsi elegéritis vobis Dóminum, ut serviátis ei: nunc ergo inclináte corda vestra ad Dóminum. * Sicut modò géniti infantes. 1 *Petr.* 2. *Josue* 24.

LECTIO III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Joannem.

*Cap.* 20.

In illo témpore: Cùm serò esset die illo, unà sabbatórum; et fores essent clausæ, ubi erant discípuli congregáti propter metum Judæórum, venit Jesus, et stetit in médio; et dixit eis: Pax vobis. Et réliqua.

Homília sancti Gregórii Papæ. *In Ev.* 26. *n.* 2.

Dixit eis, Pax vobis: Sicut misit me Pater, et ego mitto vos; id est, Sicut misit me Pater, Deus Deum; et ego mitto vos, homo hómines. Pater Fílium misit, qui hunc pro redemptióne géneris humáni incarnári constítuit. Quem vidélicet in mundum veníre ad passiónem vóluit: sed tamen amávit Fílium, quem ad passiónem misit. Electos verò Apóstolos Dóminus non ad mundi gáudia, sed, sicut ipse missus est, ad passiónes in mundum mittit. Quia ergo et Fílius amátur à Patre, et tamen ad passiónem míttitur: ita et discípuli à Dómino amantur, qui tamen ad passiónem mittuntur in mundum. Itaque dícitur: Sicut misit me Pater, et ego mitto vos; id est, Eà vos caritáte díligo, cùm inter scándala persecutórum mitto, quà me caritáte Pater díligit, quem veníre ad tolerandas passiónes fecít.

℟. Pax vobis; sicut misit me Pater, et ego mitto vos: * Accípite Spíritum sanctum: quorum remiséritis peccáta, remittuntur eis; et quorum retinuéritis, retenta sunt, allelúia, allelúia. ℣. Vos Sacerdótes Dómini vocabímini: Ministri Dei nostri, dicétur vobis. * Accípite. Gló-

ria Patri. * Accípite. *Joan.* 20. *Is.* 61.

℣. *Sacerd.* Exaltábo te, Dómine, quóniam suscepisti me, ℟. Nec delectasti inimícos meos super me. *Ps.* 29.

AD LAUDES.

*Ant.* 8. G. Cùm mórtui essétis in delictis, convivificávit vos cum Christo Deus, donans vobis ómnia delicta, allelúia. *Coloss.* 2.

*Ant.* 2. D. Mortificáti estis legi per corpus Christi, ut sitis altérius qui ex mórtuis resurrexit; ut fructificémus Deo, allelúia. *Rom.* 7.

*Ant.* 5. a. Vos nunc salvos facit baptisma per resurrectiónem Jesu Christi, qui est in déxtera Dei, deglútiens mortem, allelúia. 1 *Petr.* 3.

*Canticum*, Ecce vicit leo, *infrà* 308.

*Ant.* 3. c. Omnes vos filii Dei estis per fidem, quæ est in Christo Jesu, allelúia. *Galat.* 3.

*Ant.* 1. a. Quicumque in Christo baptizáti estis, Christum induistis, allel. *Gal.* 3.

Capitulum. *Apoc.* 1.

Gratia vobis, et pax à Jesu Christo, qui est testis fidélis, primogénitus mortuórum, et princeps regum terræ: qui diléxit nos, et lavit nos à peccátis nostris in sánguine suo.

*Hymn.* Auróra, *infrà* 308.

℣. Tu es Deus qui facis mirabília: ℟. Redemisti in bráchio tuo pópulum tuum. *Ps.* 76.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 8. c. Post dies octo, iterum venit Jesus, jánuis clausis, et stetit in médio, et dixit: Pax vobis, allelúia. *Joan.* 20.

Orémus. Oratio.

Præsta, quæsumus omnípotens Deus, ut qui Paschália festa perégimus, hæc, te largiente, móribus et vità teneámus; Per Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum, qui tecum vivit.

Ad Horas, *dicuntur Hymni cum Doxologia propria, ut infrà* 309 *et seq.*

AD PRIMAM.

*Ant.* 8. G. Cùm mórtui.

*Dicitur Symbolum* Quicumque.

*Capitulum, et* ℟ *br. ut infrà* 309.

AD TERTIAM.

*Ant.* 2. D. Mortificáti.

Capitulum. *Rom.* 6.

Vetus homo noster simul crucifixus est, ut destruátur corpus peccáti, et ultrà non serviámus peccáto. Qui enim mórtuus est, justificátus est à peccáto.

℟ *br.* Beáti * quorum remissæ sunt iniquitátes, * Allelúia, allelúia. Beáti. ℣. Et quorum * tecta sunt peccáta, * Allelúia. Glória Patri. Beáti.

℣. Beátus vir cui non imputávit Dóminus peccátum, ℟. Nec est in spíritu ejus dolus. *Ps.* 31.

AD SEXTAM.

*Ant.* 5. a. Vos.

Capitulum. *Tit.* 3.

Non ex opéribus justítiæ quæ fécimus nos, sed secun-

dùm suam misericórdiam salvos nos fecit per lavácrum regeneratiónis et renovatiónis Spíritûs sancti, quem effúdit in nos abundè per Jesum Christum salvatórem nostrum.

℟ *br.* Salvávit eos * propter nomen suum,* Allelúia, allelúia. Salvávit eos. ℣. Ut notam fáceret * poténtiam suam. * Allelúia. Glória. Salvávit eos.

℣. Deduxit eos in abyssis sicut in deserto : ℟. Et salvávit eos de manu odiéntium. *Ps.* 105.

AD NONAM.

*Ant.* 1. a. Quicumque.

CAPITULUM. *Eccles.* 9.

Deo placent ópera tua. Omni témpore sint vestimenta tua cándida, et óleum de cápite tuo non defíciat.

℟ *br.* Non discédimus à te, * vivificábis nos, * Allelúia, allelúia. Non. ℣. Et nomen tuum * invocábimus. * Allelúia. Glória Patri. Non. *Ps.* 79.

℣. Beáta gens cujus est Dóminus Deus ejus : ℟. Pópulus quem elégit in hæreditátem sibi. *Ps.* 32.

AD II VESPERAS.

*Ant.* 1. D. Christus resurrexit à mórtuis, allelúia : oportet autem illum regnáre, donec ponat Deus omnes inimícos sub pédibus ejus, allelúia. 1 *Cor.* 15.

*Ant.* 2. D. Dedit semetipsum pro nobis, ut nos redímeret ab omni iniquitáte, et mundáret sibi pópulum acceptábilem, allelúia. *Tit.* 2.

*Ant.* 3. a. Vos genus electum, regále sacerdótium, gens sancta; ut virtútes annuntiétis ejus qui de ténebris vos vocávit in admirábile lumen suum, allel. 1 *Petr.* 2.

*Ant.* 4. D. Crédimus in Deo secundùm operatiónem poténtiæ virtútis ejus, quam operátus est in Christo, súscitans illum à mórtuis, et constítuens ad déxteram suam, allelúia. *Ephes.* 1.

*Ant.* 5. C. Pro ómnibus mórtuus est Christus; et ut qui vivunt, jam non sibi vivant, sed ei qui pro ipsis mórtuus est, et resurrexit, allelúia. 2 *Cor.* 5.

CAPITULUM. 1 *Petr.* 1.

Benedictus Deus et Pater Dómini nostri Jesu Christi, qui secundùm misericórdiam suam magnam regenerávit nos in spem vivam, per resurrectiónem Jesu Christi ex mórtuis, in hæreditátem incorruptíbilem.

*Hymnus*, Forti, *infrà* 312.

℣. Pro pátribus tuis nati sunt tibi fílii; ℟. Propterea pópuli confitebuntur tibi in ætermum. *Ps.* 44.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 8. G. Multa fecit Jesus quæ non sunt scripta : hæc autem scripta sunt, ut credátis quia Jesus est Christus Fílius Dei; et ut credentes vitam habeátis in nómine ejus, allelúia. *Joan.* 20.

*Oratio ut suprà ad Laudes.*

AD COMPLETORIUM, *ut infrà* 313.

# COMMUNE TEMPORIS PASCHALIS

## USQUE AD ASCENSIONEM DOMINI.

### IN DOMINICIS.

#### AD NOCTURNUM.

*Invitator.* Auctórem vitæ. quem Deus suscitávit à mórtuis, * Veníte, adorémus, allelúia. *Act.* 3.

*Ps.* Veníte, 115.

Hymnus *N. T.*

Adeste, Cœlitûm chori,
Lætum sonantes cánticum,
Dum liber inter mórtuos
Christus sepulcrum déserit.

Frustra sepulcro mílites
Appónit insánus furor:
Frustra specûs gens pérfida
Firmat sigillis óstium.

Inanis absistat metus:
Hinc nemo corpus áuferet,
Sed vi reviviscet suâ
Qui sponte mortem pértulit.

Clausâ, sigillis íntegris,
Exíre speluncâ potest,
Quem matris alvo Vírginis
Effúdit illæsus pudor.

Ridebat hunc turpi trabe
Vesána pendentem cohors:
Descendat, inquit, et Deum
Illi Patrem fatébimur.

At tu, paternis óbsequens
Ad usque mortem légibus,
Orbem sacerdos víctima
Toto piábas sánguine.

Non ille descendit cruce;
Plus fecit, ecce mórtuus
Se reddit ipse lúmini:
Deo natum jam crédite.

Da, Christe, nos tecum mori,
Tecum simul da súrgere;
Terréna da contémnere,
Amáre da cœléstia.

Sit laus Patri; laus Fílio,
Qui nos, triumphátâ nece,
Ad astra secum dux vocat:
Compar tibi laus, Spíritus.
Amen.

*Tres Psalmi notati in qualibet Dominica, sub sola Ant.* 8. c. Christus mórtuus est pro peccátis nostris, et sepultus est, et resurrexit tértiâ die secundùm Scriptúras, allelúia. 1 *Cor.* 15.

℣. Cor meum et caro mea
℟. Exultavérunt in Deum vivum. *Ps.* 83.

*A die sancto Paschæ usque ad Sabbatum intra Octavam Pentecostes, in omni Officio, tam de Tempore quàm de beata Maria et de Sanctis, dicuntur Absolutio et Benedictiones ut sequitur:*

Absolutio. 1 *Petr.* 1.

Benedictus Deus, qui secundùm misericórdiam suam magnam regenerávit nos in spem vivam per resurrectiónem Jesu Christi ex mórtuis.

℟. Amen.

Benedictiones.

1. Confiteámur in ore, et in corde credámus, quod Deus suscitávit Jesum à mórtuis. *Rom.* 10.

2. Interpellet pro nobis

Christus qui mórtuus est et resurrexit. *Rom.* 8.

3. Spíritus ejus qui suscitávit Jesum à mórtuis, hábitet in nobis. *Rom.* 8.

*Si tertia Lectio sit de Evangelio, tunc tertia Benedictio erit:* Fúlgeat nobis illuminátio Evangélii glóriæ Christi, qui est imágo Dei. 2 *Cor.* 4.

*Si duæ sint Lectiones de Evangelio, ad primum Evangelium, Benedictio erit :* Fúlgeat, etc. *ut suprà.*

*Ad secundum :* Permaneámus in fide fundáti, et immóbiles à spe Evangélii. *Coloss.* 1.

*Lectiones et* ℟℟℟ *infrà in qualibet Dominica.*

*Post Canticum* Te Deum.

℣ *Sacerdotal.* Exaltábo te, Dómine, quóniam suscepisti me; ℟. Nec delectasti inimícos meos super me. *Ps.* 29.

AD LAUDES.

*Psalmi de Dominica, cum Cantico proprio, infrà.*

*Ant.* 5. C. Allelúia, quóniam regnávit Dóminus Deus noster omnípotens, allelúia. *Apoc.* 19.

*Ant.* 3. a. Gaudeámus et exultémus, et demus glóriam ei, allelúia. *Apoc.* 19.

*Ant.* 1. *D.* Beáti qui lavant stolas suas in sánguine Agni, allelúia, allelúia. *Apoc.* 22.

CANTICUM. *Apoc.* 5.

Ecce vicit leo de tribu Juda, * radix David.

Dignus es, Dómine, accípere librum, * et aperíre signácula ejus :

Quóniam occísus es, * et redemisti nos Deo in sánguine tuo.

Ex omni tribu et lingua, * et pópulo et natióne ;

Et fecisti nos Deo nostro regnum et sacerdótes, * et regnábimus super terram.

Dignus est Agnus qui occísus est, * accípere virtútem,

Et divinitátem, et sapiéntiam, * et fortitúdinem ;

Et honórem, et glóriam, * et benedictiónem.

Sedenti in throno et Agno * benedíctio,

Et honor, et glória, et potestas * in sécula seculórum.

*Ant.* 6. *C.* Sedenti in throno, et Agno, benedíctio et honor in sécula seculórum, allelúia. *Apoc.* 5.

*Ant.* 8. *G.* Laudem dícite Deo nostro, omnes servi ejus, et qui timétis eum, allelúia, allelúia. *Apoc.* 19.

*Capitulum, ut in qualibet Dominica.*

HYMNUS. *N. T.*

Aurora lucis dum novæ
Spargit polum fulgóribus,
Victóris Agni júbilans
Orbis triumphos pérsonet.

Fuso Redemptor sánguine
Piávit orbis crímina ;
Scissóque sanctuárium
Patére dat velámine.

Granum solo recónditum
Iners manére non potest ;
Vix mórtuum jam gérminat,
Hinc quanta púllulat seges!

Non destruuntur fúnere,
Sed seminantur córpora :

Fecit resurgendi viam
Surgens ab ínferis Deus.

Affixa cum Christo cruci,
Christo caro commórtua,
Et ipsa surget spléndidis
Christi decóra dótibus.

Da, Christe, nos tecum mori,
Tecum simul da súrgere;
Terréna da contémnere,
Amáre da cœléstia.

Sit laus Patri; laus Fílio,
Qui nos, triumphátâ nece,
Ad astra secum dux vocat:
Compar tibi laus, Spíritus.
Amen.

℣, *Ant. ad* Benedictus, *et Oratio, in qualibet Dominicâ.*

## AD PRIMAM.

Hymnus. *C.*

Jam lucis orto sídere,
Deum precémur súpplices,
Nostras ut ipse dírigat,
Lux increáta, sémitas.

Nil lingua, nil peccet manus,
Nil mens ináne cógitet:
In ore simplex véritas,
In corde regnet cáritas.

Incœpta dum fluet dies,
O Christe, custos pérvigil,
Quas sævus hostis óbsidet,
Portas tuére sénsuum.

Præsta diurnus ut tuæ
Subsérviat laudi labor:
Auctóre quæ te cœpimus,
Da te favente prósequi.

Superba ne nimis caro
Menti licenter ímperet,
Carnis domet supérbiam
Potûs cibíque párcitas.

¶ Da, Christe, nos tecum mori,
Tecum simul da súrgere;
Terréna da contémnere,
Amáre da cœléstia.

Sit laus Patri; laus Fílio,
Qui nos, triumphátâ nece,
Ad astra secum dux vocat:
Compar tibi laus, Spíritus.
Amen.

¶ Ad Horas, *strophe* Da Christe, *dicitur etiam in Festis, usque ad Pentecosten; Doxologia verò* Sit laus, *usque ad Ascensionem, nisi aliter notetur.*

*Ant.* 7. d. Conresuscitávit nos Deus in Christo, ut osténderet abundantes divítias grátiæ suæ in bonitáte super nos, allelúia. *Ephes.* 2.

Capitulum. *Ephes.* 5.

Eratis aliquando ténebræ; nunc autem lux in Dómino. Ut fílii lucis ambuláte; fructus enim lucis est in omni bonitáte, et justítia, et veritáte: probantes quid sit beneplácitum Deo.

℟. Deo grátias.

℟ *brev.* Christe, Fili Dei vivi, * miserére nobis, * Allelúia, allelúia. *Repet.* Christe. ℣. Qui surrexisti * à mórtuis. * Allelúia. Glória Patri. Christe. *Rom.* 6.

℣. Exurge, Dómine, ádjuva nos; ℟. Et rédime nos propter nomen tuum. *Ps.* 43.

℣. Dóminus vobiscum, ℟. Et cum spíritu tuo.

Orémus.

Domine Deus omnípotens, qui ad princípium hujus diéi nos perveníre fecisti; tuâ nos hódie salva virtúte; ut ad nullum declinémus peccátum, sed semper ad tuam justítiam

faciendam nostra procédant elóquia, dirigantur cogitatiónes et ópera; Per Dóminum nostrum Jesum, etc.

℣. Dóminus vobiscum, ℟. Et cum spíritu tuo.

℣. Benedicámus Dómino, ℟. Deo grátias.

AD OFFICIUM CAPITULI.

*Post lectionem Martyrologii, in cujus fine nihil respondetur, Hebdomadarius dicit :*

℣. Pretiósa in conspectu Dómini ℟. Mors Sanctórum ejus. *Ps.* 115.

Sancta María, et omnes Sancti ádjuvent nos in oratiónibus suis pro nobis ad Deum; ut secundùm eum qui vocávit nos, Sanctum, et ipsi in omni conversatióne sancti simus. ℟. Amen. *Rom.* 15. 1 *Petr.* 1.

¶ In Choro, *post lectionem Necrologii, vel ejus loco, dicuntur* ℣, *Psalmus, etc. ut in Ordinario,* 121.]

*Postea dicitur :* ℣. Deus, in adjutórium meum intende : ℟. Dómine, ad adjuvandum me festína.

℣. Deus, in adjutórium meum intende : ℟. Dómine, ad adjuvandum me festína.

℣. Deus, in adjutórium meum intende : ℟. Dómine, ad adjuvandum me festína. Glória Patri, et Fílio, et Spirítui sancto : Sicut erat in princípio, et nunc, et semper, et in sécula seculórum. Amen.

Kyrie, eléison. Christe, eléison. Kyrie, eléison. *Secretò,* Pater. *Altâ voce,* ℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem ; ℟. Sed líbera nos à malo.

℣. Réspice in servos tuos, Dómine, et in ópera tua ; et dírige fílios eórum. ℟. Et sit splendor Dómini Dei nostri super nos ; et ópera mánuum nostrárum dírige super nos, et opus mánuum nostrárum dírige. *Ps.* 89.

Glória Patri, *et* Sicut erat.

Orémus.

Dirigere et sanctificáre, régere et gubernáre dignáre, Dómine Deus, Rex cœli et terræ, hódie corda et córpora nostra, sensus, sermónes et actus nostros, in lege tua et in opéribus mandatórum tuórum; ut hìc, et in æternum, te auxiliante, salvi et líberi esse mereámur, Salvátor mundi; Qui vivis et regnas in sécula seculórum. ℟. Amen.

*Lector,* Jube, Domne, benedícere. [*Lectrix dicit,* Domna: *solus vel sola recitans dicit absolutè*] *Bened.* Det Dóminus leges suas in mentem nostram, et in corde nostro superscríbat eas. *Hebr.* 8. ℟. Amen.

*Tum fit lectio Canonis, qui pro singulis diebus habetur ad calcem Breviarii; in cujus fine dicitur :* Tu autem, Dómine, miserére nostri. ℟. Deo grátias.

*Post Lectionem, Hebdomadarius dicit :* Adjutórium † nostrum in nómine Dómini. ℟. Qui fecit cœlum et terram. *Ps.* 123.

*Submissiori voce, dicit :* Benedícite. *Lector versus ad eum,*

Deus. *Hebd.* Deus pacis aptet nos in omni bono, ut faciámus ejus voluntátem, fáciens in nobis quod pláceat coram se, per Jesum Christum, cui est glória in sécula seculórum. *Hebr.* 13. *Lector,* Amen.

## AD TERTIAM.

HYMNUS. *C.*

O FONS amóris, Spíritus,
O sancte donórum parens,
Tuas refúsus íntimis
Accende flammas córdibus.

Qui caritátis vínculo
Cum Patre nectis Fílium,
Et nos amóris mútui
Arctis coapta néxibus.

¶ DA, Christe, nos tecum mori,
Tecum simul da súrgere;
Terréna da contémnere,
Amáre da cœléstia.

Sit laus Patri; laus Fílio,
Qui nos, triumphátâ nece,
Ad astra secum dux vocat:
Compar tibi laus, Spíritus.
Amen.

*Ant.* 1. a. Ipse est caput córporis Ecclésiæ, qui est princípium, primogénitus ex mórtuis, ut sit in ómnibus ipse primátum tenens, allelúia. *Coloss.* 1.

CAPITULUM. 1 *Cor.* 15.

CHRISTUS resurrexit à mórtuis, primítiæ dormiéntium; quóniam quidem per hóminem mors, et per hóminem resurréctio mortuórum. Et sicut in Adam omnes moriuntur, ita et in Christo omnes vivificabuntur.

℟ *br.* Vivit Dóminus, * et benedictus Deus meus, * Allelúia, allelúia. Vivit. ℣. Et exaltétur * Deus salútis meæ. * Allelúia, allel. Glória Patri. Vivit. *Ps.* 17.

℣. Salvávit sibi déxtera ejus. ℟. Et bráchium sanctum ejus. *Ps.* 97.

*Oratio in qualibet Dominica, et sic ad alias Horas.*

## AD SEXTAM.

HYMNUS. *C.*

NUNC solis excelsum jubar
Pleno coruscat lúmine;
Sic, Christe, tu mundum novâ,
Sol verus, accendis face,

Fac pura nostris fúlgeat
Lux veritátis méntibus;
Fac nostra plenam cáritas
Crescendo surgat ad diem.

¶ DA, Christe, *ut suprà.*

*Ant.* 8. *G.* Si complantáti facti sumus similitúdini mortis ejus, simul et resurrectiónis érimus, allelúia. *Rom.* 6.

CAPITULUM. *Rom.* 6.

SI mórtui sumus cum Christo, crédimus quia simul étiam vivémus cum Christo; scientes quod Christus resurgens ex mórtuis jam non móritur, mors illi ultrà non dominábitur.

℟ *br.* Audítam fácite * vocem laudis ejus. * Allelúia, allelúia. Audítam. ℣. Qui pósuit ánimam meam * ad vitam. * Allelúia. Glória Patri. Audítam. *Ps.* 65.

℣. Notas mihi fecisti vias vitæ: ℟. Adimplébis me lætitiâ cum vulto tuo, Dómine, *Ps.* 15.

## AD NONAM.

HYMNUS. *C.*

PRONO volútus ímpetu,
Inclínat in noctem dies;
Sic vita suprémam cito
Festínat ad metam gradu.

O Christe, dum fixus cruci
Expandis orbi bráchia,
Amáre da crucem; tuo
Da nos in amplexu mori.

DA, Christe, nos tecum mori,
Tecum simul da súrgere;
Terréna da contémnere,
Amáre da cœléstia.

Sit laus Patri; laus Fílio,
Qui nos, triumphátâ nece,
Ad astra secum dux vocat:
Compar tibi laus, Spíritus.
Amen.

*Ant.* 2. D. Corpus quidem mórtuum est propter peccátum; spíritus verò vivit propter justificatiónem, allelúia. *Rom.* 8.

CAPITULUM. 1 *Petr.* 3.

CHRISTUS semel pro peccátis nostris mórtuus est, justus pro injustis, ut nos offerret Deo, mortificátus quidem carne, vivificátus autem spíritu.

℟ *br.* Convertisti planctum meum * in gáudium mihi. * Allelúia, allelúia. Convertisti. ℣. Conscidisti saccum meum,* et circumdedisti me lætítiâ. * Allelúia. Glória Patri. Convertisti. *Ps.* 29.

℣. In Deo sperávit cor meum, et adjútus sum; ℟. Et reflóruit caro mea. *Ps.* 27.

## AD VESPERAS.

*Ant.* 1. D. Christus resurrexit à mórtuis, allelúia: oportet autem illum regnáre, donec ponat Deus omnes inimícos sub pédibus ejus, allelúia. 1 *Cor.* 15.

*Ant.* 2. D. Dedit semetipsum pro nobis, ut nos redímeret ab omni iniquitáte, et mundáret sibi pópulum acceptábilem, allelúia. *Tit.* 2.

*Ant.* 3. a. Vos genus electum, regále sacerdótium, gens sancta; ut virtútes annuntiétis ejus qui de ténebris vos vocávit in admirábile lumen suum, allelúia. 1 *Petr.* 2.

*Ant.* 4. *D.* Crédimus in Deo secundùm operatiónem poténtiæ virtútis ejus, quam operátus est in Christo, súscitans illum à mórtuis, et constítuens ad déxteram suam, allelúia. *Ephes.* 1.

*Ant.* 5. C. Pro ómnibus mórtuus est Christus; ut et qui vivunt, jam non sibi vivant, sed ei qui pro ipsis mórtuus est, et resurrexit, allelúia. 2 *Cor.* 5.

*Capitulum, ut in qualibet Dominica.*

HYMNUS. *C.*

FORTI tegente bráchio
Evásimus Rubrum mare,
Tandemque durum pérfidi
Jugum tyranni frégimus.

Nunc ergo lætas víndici
Grates rependámus Deo;
Agníque mensam cándidis
Cingámus ornáti stolis.

HUJUS sacráto córpore,
Amóris

Amóris igne férvidi,
Vescámur atque sánguine:
Vescendo, vívimus Deo.

Jam Pascha nostrum Christus est,
Hic agnus, hæc est víctima,
Cruóre cujus íllitos
Transmittit ultor Angelus.

O DIGNA cœlo Víctima,
Mors ipsa per quam víncitur,
Per quam refractis ínferi
Prædam relaxant póstibus.

Christus sepulcri fáucibus
Emersus ad lucem redit;
Hostem retrúdit tártaro,
Cœlíque pandit íntima.

DA, Christe, nos tecum mori,
Tecum simul da súrgere;
Terréna da contémnere,
Amáre da cœléstia.

Sit laus Patri; laus Fílio;
Qui nos, triumphátâ nece,
Ad astra secum dux vocat:
Compar tibi laus, Spíritus.
Amen.

℣. *Ant. ad* Magníficat, *et Oratio, ut in qualibet Dominica.*

## AD COMPLETORIUM.

*Ant.* 7. *d.* Erípuit nos Deus de potestáte tenebrárum, et tránstulit in regnum Fílii dilectiónis suæ, allelúia. *Coloss.* 1.

HYMNUS. *C.*

JESU, redemptor séculi,
Qui tértio post fúnera
Redux ab ínferis die,
Mortem resurgendo necas;

Nox atra jam terras premet,
Mergetque somno lúmina:
Hostis furórem pérfidi,
Artesque cæcas dísjice;

UT justa dum curas levat,
Et corpus instaurat quies,
Sic membra somnus óccupet,
Ne corda torpor ópprimat.

Da, Christe, nos tecum mori,
Tecum simul da súrgere;
Terréna da contémnere,
Amáre da cœléstia.

SIT laus Patri; laus Fílio,
Qui nos, triumphátâ nece,
Ad astra secum dux vocat:
Compar tibi laus, Spíritus.
Amen.

CAPITULUM. 1 *Thess.* 5.

OMNES vos fílii lucis estis, et fílii diéi: non sumus noctis, neque tenebrárum: ígitur non dormiámus sicut et céteri, sed vigilémus et sóbrii simus.

℟ *br.* In manus tuas, Dómine, * commendo spíritum meum, * Allelúia, allelúia. In manus. ℣. Redemisti me, Dómine, * Deus veritátis. * Allelúia. Glória. In manus. *Ps.* 30.

℣. Custódi me, Dómine, ut pupillam óculi: ℟. Sub umbra alárum tuárum prótege me. *Ps.* 16.

CANTICUM SIMEONIS.
*Luc.* 2.

NUNC dimittis servum tuum, Dómine, * secundùm verbum tuum, in pace;

Quia vidérunt óculi mei * salutáre tuum,

Quod parasti * ante fáciem ómnium populórum,

Lumen ad revelatiónem géntium, * et glóriam plebis tuæ Israel.

*Ant.* 5. C. Cùm Christus

apparúerit, vita vestra, tunc et vos apparébitis cum ipso in glória, allelúia. *Coloss.* 3.

℣. Dóminus vobiscum,

℟. Et cum spíritu tuo.

Orémus.

VISITA, quæsumus Dómine, habitatiónem nostram, et omnes insídias inimíci ab ea longè repelle: Angeli tui sancti hábitent in ea, qui nos in pace custódiant; et benedíctio tua sit super nos semper; Per Dóminum nostrum.

℣. Dóminus vobiscum.

℣. Benedicámus Dómino.

*Finito Completorio, submissâ voce dicitur:* Grátia Dómini nostri Jesu Christi, et cáritas Dei, et communicátio sancti Spíritûs sit cum ómnibus vobis. 2 *Cor.* 13.

[*Solus recitans,* nobis.]

℟. Amen.

℣. Fidélium ánimæ, etc.

*Tandem dicitur sequens*

ANTIPHONA DE BEATA.

REGINA cœli, lætáre, allelúia;
Quia quem meruisti portáre, allelúia,
Resurrexit sicut dixit, allelúia:
Ora pro nobis Deum, allelúia.

℣. Circumdedisti me lætítiâ, Dómine; ℟. Ut cantet tibi glória mea. *Ps.* 29.

Orémus.

DEUS, qui per Resurrectiónem Fílii tui Dómini nostri Jesu Christi mundum lætificáre dignátus es; præsta, quæsumus, ut per ejus Genitrícem vírginem Maríam, perpétuæ capiámus gáudia vitæ; Per eumdem Christum Dóminum nostrum.

*Post completum Officium, dicitur secretò,* Pater, Ave, Credo.

## IN FERIIS.

### AD NOCTURNUM.

*Invitat.* Qui crucifixus est, surrexit.* Allelúia. *Matth.* 28.

*Ps.* Veníte, 115.

*Hymn.* Adeste, *suprà* 307.

*Tres Psalmi, ut distribuuntur infrà in qualibet Feria, sub sola Ant.* 4. a. Allelúia, *semel.*

℣. Dóminus regnávit, decórem indútus est; ℟. Indútus est Dóminus fortitúdinem. *Ps.* 92.

*Benedictiones, ut in Dominicis, suprà* 307, 308.

*Lectiones et* ℟℟℟, *ut assignantur in qualibet Feria.*

*Dicitur* Te Deum, 118.

℣ *Sacerdotal.* Exaltábo te, Dómine, quóniam suscepisti me; ℟. Nec delectasti inimícos meos super me. *Ps.* 29.

### AD LAUDES.

*Psal. de Feria, cum Cantico de Psalterio pro Tempore Paschali, sub sola Ant.* 3. à. Verbum misit Deus annúntians pacem per Jesum: hunc Deus suscitávit tértiâ die, allelúia. *Act.* 10.

CAPITULUM. *Hebr.* 13.

DEUS pacis, qui eduxit de mórtuis Pastórem magnum óvium in sánguine testamenti æterni, Dóminum nostrum

Jesum Christum, aptet vos in omni bono; ut faciátis ejus voluntátem fáciens in vobis quod pláceat coram se.

*Hymnus*, Auróra, 308.

℣. Déxtera Dómini fecit virtútem : ℟. Déxtera Dómini exaltávit me. *Ps.* 117.

*Ad* Benedictus, *Ant. propria, ut in qualibet Feria.*

*Oratio Dominicæ præcedentis, et sic ad ceteras Horas.*

*Dicto* Benedicámus, *fit Commem. de Cruce et Resurrectione Christi, ut sequitur :*

*Ant.* Crucifixus ex infirmitáte, vivit ex virtúte Dei, allelúia, allelúia. 2 *Cor.* 13.

℣. Dícite in natiónibus ℟. Quia Dóminus regnávit. *Ps.* 95.

Orémus.

Deus, qui pro nobis Fílium tuum crucis patíbulum subíre voluisti, ut inimíci à nobis expélleres potestátem : concéde, quæsumus, ut resurrectiónis grátiam consequámur; Per eumdem Dóminum.

*Hæc Commemoratio fit etiam in Festis Simplicibus.*

Ad Horas, *Psalmi de Feria: cetera ut in Dominicis, suprà* 309 *et seq.*

Ad Primam, *non dicuntur Preces.*

AD VESPERAS.

*Psalmi de Feria, sub sola Ant.* 4. d. Deus et Dóminum suscitávit, et nos suscitábit per virtútem suam, allelúia. 1 *Cor.* 6.

Capitulum. 1 *Cor.* 15.

Cum mortále hoc indúerit immortalitátem, tunc fiet sermo qui scriptus est : Absorpta est mors in victória. Ubi est, mors, victória tua? ubi est, mors, stímulus tuus?

*Hymnus*, Forti, 312.

℣. Iter fácite ei qui ascendit super occásum : ℟. Dóminus nomen illi. *Ps.* 67.

*Ad* Magníficat, *Ant. propria, ut in qualibet Feria.*

*Oratio Dominicæ præcedentis.*

*Dicto* Benedicámus, *fit Commem. de Cruce et Resurrectione Christi, ut sequitur :*

*Ant.* Dignus est Agnus qui occísus est, accípere virtútem, et divinitátem, et sapiéntiam, et fortitúdinem, et honórem, et glóriam, et benedictiónem, allelúia. *Apoc.* 5.

℣. Omnis terra adóret te, et psallat tibi : ℟. Psalmum dicat nómini tuo, Dómine. *Ps.* 65.

*Oratio,* Deus, qui pro nobis, *suprà.*

*Hæc Commemoratio fit etiam in Festis Simplicibus.*

Ad Completorium, *Ps. de Feria: cetera ut in Dominicis, suprà* 313. *Non dicuntur Preces.*

## FERIA SECUNDA

### INTRA HEBDOM. I POST PASCHA.

### AD NOCTURNUM.

*Psal.* Bénedic..... Quàm magnificáta, 22. Sit glória Dómini, 23.

Lectio i.

De Actibus Apostolórum.

*Cap.* 4.

Videntes Petri constántiam et Joannis, comperto quod

hómines essent sine litteris, et idiótæ, admirabantur; et cognoscébant eos, quóniam cum Jesu fúerant: hóminem quoque videntes stantem cum eis, qui curátus fúerat, nihil póterant contradícere. Jussérunt autem eos foràs extra concílium secédere; et conferébant ad ínvicem, dicentes: Quid faciémus homínibus istis? quóniam quidem notum signum factum est per eos ómnibus habitántibus Jerúsalem: manifestum est, et non póssumus negáre. Sed ne ámpliùs divulgétur in pópulum, comminémur eis ne ultrà loquantur in nómine hoc ulli hóminum.

℟. Príncipes Jerúsalem cùm consummassent ómnia quæ de Jesu scripta erant, deponentes eum de ligno, posuérunt eum in monumento: * Deus verò suscitávit eum à mórtuis, allelúia, allelúia. ℣. De angústia et de judício sublátus est; abscissus est de terra vivéntium: * Deus. *Act.* 13. *Is.* 53.

LECTIO II.

Et vocantes eos, denuntiavérunt ne omníno loquerentur, neque docérent in nómine Jesu. Petrus verò et Joannes respondentes, dixérunt ad eos: Si justum est in conspectu Dei vos pótiùs audíre quàm Deum, judicáte; non enim póssumus quæ vídimus et audívimus, non loqui. At illi comminantes dimisérunt eos, non invenientes quómodo puníren eos, propter pópulum: quia omnes clarificábant id quod factum fúerat in eo quod acciderat. Annórum enim erat ámpliùs quadraginta homo, in quo factum fúerat signum istud sanitátis.

℟. Visus est Jesus per dies multos his * Qui ascénderant cum eo de Galilæa in Jerúsalem; qui usque nunc sunt testes ejus ad plebem, allelúia, allel. ℣. In viis ostendit se illis hiláriter, et in omni providéntia occurrit illis, * Qui. *Act.* 13. *Sap.* 6.

LECTIO III.

Dimissi autem venérunt ad suos, et annuntiavérunt eis quanta ad eos príncipes Sacerdótum et Senióres dixissent. Qui, cùm audissent, unanímiter levavérunt vocem ad Deum, et dixérunt: Dómine, tu es qui fecisti cœlum et terram, mare, et ómnia quæ in eis sunt; qui Spíritu sancto per os patris nostri David púeri tui dixisti: Quare fremuérunt gentes, et pópuli meditáti sunt inánia? Astitérunt reges terræ, et príncipes convenérunt in unum adversùs Dóminum et adversùs Christum ejus. Convenérunt enim verè in civitáte ista adversùs sanctum púerum tuum Jesum quem unxisti, Heródes et Póntius Pilátus cum Géntibus, et pópulis Israel, fácere quæ manus tua et consílium tuum decrevérunt fieri. Et nunc, Dómine, réspice in minas eórum, et da servis tuis cum

omni fidúcia loqui verbum tuum, in eo quod manum tuam extendas ad sanitátes, et signa, et prodígia fieri per nomen sancti Fílii tui Jesu. Et cùm orassent, motus est locus in quo erant congregáti; et repléti sunt omnes Spíritu sancto, et loquebantur verbum Dei cum fidúcia.

℟. Quem vos interemistis suspendentes in ligno,* Hunc príncipem et salvatórem Deus exaltávit déxterâ suâ, ad dandam pœniténtiam Israéli, et remissiónem peccatórum, allelúia, allelúia. ℣. In sciéntia sua justificábit ipse justus servus meus multos. * Hunc. Glória Patri. * Hunc. *Act.* 5. *Is.* 53.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 1. D. Deus patrum nostrórum glorificávit Fílium suum Jesum, allelúia. *Act.* 3.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 6. F. Vide manus meas, et affer manum tuam, et mitte in latus meum, allel. *Joan.* 20.

## FERIA TERTIA.

Ad Noct. *Psal.* Dómine, quis habitábit, 37. Cœli enarrant.... Lex Dómini, 38.

Lectio i.

De Actibus Apostolórum.

*Cap.* 4.

Multitudinis credéntium erat cor unum et ánima una; nec quisquam eórum quæ possidébat áliquid suum esse dicébat; sed erant illis ómnia commúnia. Et virtúte magnâ reddébant Apóstoli testimónium resurrectiónis Jesu Christi Dómini nostri; et grátia magna erat in ómnibus illis. Neque enim quisquam egens erat inter illos. Quotquot enim possessóres agrórum aut domórum erant, vendentes afferébant prétia eórum quæ vendébant, et ponébant ante pedes Apostolórum. Dividebátur autem síngulis prout cuíque opus erat. Joseph autem qui cognominátus est Bárnabas ab Apóstolis, (quod est interpretátum Fílius consolatiónis) Levítes, Cyprius génere, cùm habéret agrum, véndidit eum, et áttulit prétium, et pósuit ante pedes Apostolórum.

℟. Virtúte magnâ reddébant Apóstoli * Testimónium resurrectiónis Jesu Christi Dómini nostri, allelúia, allel. ℣. Invocábant Dóminum, et ipse exaudiébat eos: custodiébant præceptum quod dedit illis, * Testimónium. *Act.* 4. *Ps.* 98.

Lectio ii. *Cap.* 5.

Vir autem quidam nómine Ananías, cum Saphira uxóre sua, véndidit agrum, et fraudávit de prétio agri, cónsciâ uxóre suâ: et áfferens partem quamdam, ad pedes Apostolórum pósuit. Dixit autem Petrus: Ananía, cur tentávit sátanas cor tuum mentíri te Spirítui sancto, et fraudáre de prétio agri? Nonne manens tibi manébat, et venúmdatum in tua erat potestáte? Quare posuisti in

corde tuo hanc rem? Non es mentítus homínibus, sed Deo. Audiens autem Ananías hæc verba, cécidit, et expirávit. Et factus est timor magnus super omnes qui audiérunt. Surgentes autem júvenes, amovérunt eum, et efferentes sepeliérunt.

℟. Certíssimè sciat omnis domus Israel, * Quia et Dóminum et Christum fecit Deus hunc Jesum quem vos crucifixistis, allelúia, allel. ℣. Ecce servus meus exaltábitur et elevábitur, et sublímis erit valde; *Quia. *Act.* 2. *Is.* 52.

LECTIO III.

Factum est autem quasi horárum trium spátium; et uxor ipsíus nésciens quod factum fúerat, introívit. Dixit autem ei Petrus: Dic mihi, múlier, si tanti agrum vendidistis. At illa dixit; Etiam tanti. Petrus autem ad eam: Quid útique cónvenit vobis tentáre Spíritum Dómini? Ecce pedes eórum qui sepeliérunt virum tuum ad óstium, et éfferent te. Confestim cécidit ante pedes ejus, et expirávit. Intrantes autem júvenes, invenérunt illam mórtuam; et extulérunt, et sepeliérunt ad virum suum. Et factus est timor magnus in universa Ecclésia, et in omnes qui audiérunt hæc.

℟. Hic est lapis reprobátus ab ædificántibus, qui factus est in caput ánguli; * Et non est in álio áliquo salus, allelúia, allelúia. ℣. Ecce ego mittam in fundamentis Sion lápidem, lápidem probátum, angulárem, pretiósum, in fundamento fundátum: *Et. Glória. * Et. *Act.* 4. *Is.* 28.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 5. C. Cùm resurrexisset Jesus à mórtuis, recordáti sunt discípuli ejus quia dicébat: Sólvite templum hoc, et in tribus diébus excitábo illud, allelúia. *Joan.* 2.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 7. ç. Noli esse incrédulus, sed fidélis, allelúia. *Joan.* 20.

## FERIA QUARTA.

AD NOCT. *Ps.* Confitébor, 52. Miserére mei.... Ut quid, 53.

LECTIO I.

De Actibus Apostolórum. *Cap.* 5.

Per manus Apostolórum fiébant signa et prodígia multa in plebe. Et erant unanímiter omnes in pórticu Salomónis. Ceterórum autem nemo audébat se conjúngere illis, sed magnificábat eos pópulus. Magìs autem augebátur credéntium in Dómino multitúdo virórum ac mulíerum; ita ut in platéas ejícerent infirmos, et pónerent in léctulis ac grabátis, ut, veniente Petro, saltèm umbra illíus obumbráret quemquam illórum, et liberaréntur ab infirmitátibus suis. Concurrébat autem et multitúdo vicinárum civitátum Jerúsalem, afferentes ægros, et vexátos à spirítibus immundis; qui curabantur omnes.

℟. Quæ ad patres nostros repromíssio facta est, hanc Deus adimplévit fíliis nostris, * Resúscitans Jesum, allelúia, allelúia. ℣. Dóminus Deus noster adimplévit misericórdiam suam, quam promísit dómui Israel, * Resúscitans. *Act.* 13. *Judith* 13.

LECTIO II.

Exurgens autem princeps Sacerdótum, et omnes qui cum illo erant, quæ est hæresis Sadducæórum, repléti sunt zelo: et injecérunt manus in Apóstolos, et posuérunt eos in custódia pública. Angelus autem Dómini per noctem apériens jánuas cárceris, et edúcens eos, dixit: Ite, et stantes loquímini in templo plebi ómnia verba vitæ hujus. Qui cùm audissent, intravérunt dilúculo in templum, et docébant. Advéniens autem princeps Sacerdótum, et qui cum eo erant, convocavérunt concílium, et omnes senióres filiórum Israel; et misérunt ad cárcerem ut adduceréntur. Cùm autem venissent ministri, et, aperto cárcere, non invenissent illos, reversi nuntiavérunt, dicentes: Cárcerem quidem invénimus clausum cum omni diligéntia, et custódes stantes ante jánuas; aperientes autem, néminem intus invénimus.

℟. Deus dedit Jesum manifestum fíeri, non omni pópulo, sed téstibus præordinátis à Deo; nobis, * Qui manducávimus et bíbimus cum illo postquam resurrexit à mórtuis, allelúia, allelúia. ℣. Pépigit fœdus nobiscum qui in præsentiárum sumus et vívimus; fácie ad fáciem locútus est nobis, * Qui manducávimus. *Act.* 10. *Deut.* 5.

LECTIO III.

Ut autem audiérunt hos sermónes magistrátus templi, et príncipes Sacerdótum, ambigébant de illis quidnam fíeret. Advéniens autem quidam nuntiávit eis: Quia ecce viri quos posuistis in cárcerem, sunt in templo stantes, et docentes pópulum. Tunc ábiit magistrátus cum ministris, et adduxit illos sine vi; timébant enim pópulum, ne lapidarentur. Et cùm adduxissent illos, statuérunt in concílio. Et interrogávit eos princeps Sacerdótum, dicens: Præcipiendo præcépimus vobis ne docerétis in nómine isto; et ecce replestis Jerúsalem doctrínâ vestrâ; et vultis indúcere super nos sánguinem hóminis istíus. Respondens autem Petrus et Apóstoli, dixérunt: Obedíre oportet Deo magis quàm homínibus. Deus patrum nostrórum suscitávit Jesum, quem vos interemistis, suspendentes in ligno. Hunc príncipem et salvatórem Deus exaltávit déxterâ suâ ad dandam pœniténtiam Israéli, et remissiónem peccatórum. Et nos sumus testes horum verbórum, et Spíritus sanctus quem dedit Deus ómnibus obediéntibus sibi.

℟. Per Christum vobis remíssio peccatórum annuntiátur, et ab ómnibus, quibus non potuistis in lege Móysi justificári : * In hoc omnis qui credit justificátur, allelúia, allel. ℣. Israel salvátus est in Dómino salúte ætérnâ. * In hoc. *Act.* 13. *Is.* 45.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 8. G. Hæc sunt verba quæ locútus sum ad vos, cùm adhuc essem vobiscum ; quóniam necesse est impléri ómnia quæ scripta sunt de me, allelúia. *Luc.* 24.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 6. F. Dóminus meus, et Deus meus, allelúia. *Joan.* 20.

## FERIA QUINTA.

Ad Noct. *Ps.* Exáudiat.... Exultáte, 67. Beáta gens, 68.

Lectio I.

De Actibus Apostolórum. *Cap.* 5.

Hæc cùm audissent, dissecabantur, et cogitábant interficere illos. Surgens autem quidam in concílio Pharisæus, nómine Gamáliel, legis doctor, honorábilis universæ plebi, jussit foràs ad breve hómines fieri, dixitque ad illos : Viri Israelítæ, atténdite vobis super homínibus istis quid actúri sitis. Ante hos enim dies éxtitit Théodas, dicens se esse áliquem, cui consensit númerus virórum circiter quadringentórum, qui occísus est : et omnes, qui credébant ei, dissipáti sunt, et redacti ad níhilum. Post hunc éxtitit Judas Galilæus in diébus professiónis, et avertit pópulum post se, et ipse périit ; et omnes, quotquot consensérunt ei, dispersi sunt.

℟. Príncipes, 316.

Lectio II.

Et nunc itaque dico vobis : Discédite ab homínibus istis, et sínite illos ; quóniam si est ex homínibus consílium hoc aut opus, dissolvétur : si verò ex Deo est, non potéritis dissólvere illud, ne fortè et Deo repugnáre inveniámini. Consensérunt autem illi. Et convocantes Apóstolos, cæsis denuntiavérunt ne omníno loquerentur in nómine Jesu : et dimisérunt eos. Et illi quidem ibant gaudentes à conspectu concílii, quóniam digni hábiti sunt pro nómine Jesu contuméliam pati. Omni autem die non cessábant, in templo et circa domos docentes, et evangelizantes Christum Jesum.

℟. Visus est, 316.

Lectio III. *Cap.* 8.

Saulus autem devastábat Ecclésiam per domos intrans ; et trahens viros ac mulíeres, tradébat in custódiam. Igitur qui dispersi erant pertransíbant, evangelizantes verbum Dei. Philippus autem descendens in civitátem Samaríæ, prædicábat illis Christum. Intendébant autem turbæ his quæ à Philippo dicebantur, unanímiter audientes, et videntes signa quæ faciébat. Multi enim eó-

rum qui habébant spíritus immundos, clamantes voce magnâ exíbant. Multi autem paralytici et claudi curáti sunt. Factum est ergo gáudium magnum in illa civitáte. ℟. Quem vos, 317.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 8. c. Oportébat Christum pati, et resúrgere à mórtuis tértiâ die, allelúia. *Luc.* 24.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 3. a. Beáti qui non vidérunt, et credidérunt, allelúia. *Joan.* 20.

## FERIA SEXTA.

Ad Nocturn. *Ps.* Quid gloriáris.... Exaudi, 81. Véspere, 82.

### Lectio i.

De Actibus Apostolórum. *Cap.* 8.

Vir quidam nómine Simon, qui antè fúerat in civitáte magus, sedúcens gentem Samaríæ, dicens se esse áliquem magnum; cui auscultábant omnes à mínimo usque ad máximum, dicentes: Hic est virtus Dei, quæ vocátur magna. Attendébant autem eum; propter quod multo témpore mágiis suis dementasset eos. Cùm verò credidissent Philippo, evangelizanti de regno Dei, in nómine Jesu Christi baptizabantur viri ac mulíeres. Tunc Simon et ipse crédidit: et cùm baptizátus esset, adhærébat Philippo. Videns étiam signa et virtútes máximas fieri, stupens admirabátur.

℟. Virtúte magnâ, 317.

### Lectio ii.

Cum autem audissent Apóstoli, qui erant Jerosólymis, quod recepisset Samaría verbum Dei, misérunt ad eos Petrum et Joannem; qui, cùm venissent, oravérunt pro ipsis, ut accíperent Spíritum sanctum; nondum enim in quemquam illórum vénerat, sed baptizáti tantùm erant in nómine Dómini Jesu. Tunc imponébant manus super illos, et accipiébant Spíritum sanctum. Cùm vidisset autem Simon, quia per impositiónem manûs Apostolórum darétur Spíritus sanctus, óbtulit eis pecúniam, dicens; Date et mihi hanc potestátem, ut cuicumque imposúero manus, accípiat Spíritum sanctum.

℟. Certíssimè, 318.

### Lectio iii.

Petrus autem dixit ad eum: Pecúnia tua tecum sit in perditiónem, quóniam donum Dei existimasti pecúniâ possidéri. Non est tibi pars neque sors in sermóne isto; cor enim tuum non est rectum coram Deo: pœniténtiam ítaque age ab hac nequítia tua. et roga Deum, si fortè remittátur tibi hæc cogitátio cordis tui; in felle enim amaritúdinis, et obligatióne iniquitátis video te esse. Respondens autem Simon, dixit: Precámini vos pro me ad Dóminum, ut nihil véniat super me horum quæ dixistis.

℟. Hic est lapis reprobátus, 318.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 1. D. Prædestinávit nos Deus in adoptiónem filiórum per Jesum Christum, in quo habémus redemptiónem per sánguinem ejus, allelúia. *Ephes.* 1.

AD VESPERAS.

*Fit à Capitulo de beata Maria in Sabbato, (nisi occurrat Festum Semiduplex aut suprà) cum Commem. de Cruce; et sic in tribus Sabbatis sequentibus.*

## SABBATO.

Ad Nocturn. *Ps.* Beátus.... Audíte, 97. Ne timúeris, 98.

Lectio i.

De Actibus Apostolórum.

*Cap.* 10.

Vir quidam erat in Cæsaréa, nómine Cornélius, centúrio cohortis quæ dícitur Itálica, religiósus ac timens Deum cum omni domo sua, fáciens eleemósynas multas plebi, et déprecans Deum semper. Is vidit in visu manifestè, quasi horâ diéi nonâ, Angelum Dei introeuntem ad se, et dicentem sibi: Cornéli. At ille íntuens eum, timóre correptus, dixit: Quid est, Dómine? Dixit autem illi: Oratiónes tuæ et eleemósynæ tuæ ascendérunt in memóriam in conspectu Dei. Et nunc mitte viros in Joppen, et accersi Simónem quemdam, qui cognominátur Petrus: hic hospitátur apud Simónem quemdam coriárium, cujus est domus juxta mare: hic dicet tibi quid te opórteat fácere. Et cùm discessisset Angelus qui loquebátur illi, vocávit duos domésticos suos, et mílitem metuentem Dóminum ex his qui illi parébant. Quibus cùm narrasset ómnia, misit illos in Joppen.

Lectio ii.

Postera autem die, iter illis faciéntibus, et appropinquántibus civitáti, ascendit Petrus in superióra, ut oráret, circa horam sextam. Et cùm esuríret, vóluit gustáre. Parántibus autem illis, cécidit super eum mentis excessus: et vidit cœlum apertum, et descendens vas quoddam velut línteum magnum, quátuor inítiis submitti de cœlo in terram, in quo erant ómnia quadrupédia et serpéntia terræ, et volatília cœli. Et facta est vox ad eum: Surge, Petre, occíde, et mandúca. Ait autem Petrus: Absit, Dómine, quia nunquam manducávi omne commúne et immundum. Et vox íterum secundò ad eum: Quod Deus purificávit, tu commúne ne díxeris. Hoc autem factum est per ter; et statim receptum est vas in cœlum. Et dum intra se hæsitáret Petrus quidnam esset vísio quam vidisset, ecce viri qui missi erant à Cornélio, inquirentes domum Simónis, astitérunt ad jánuam. Et cùm vocassent, interrogábant si Simon, qui cognominátur Petrus, illic habéret

hospítium. Petro autem cogitante de visióne, dixit Spíritus ei : Ecce viri tres quærunt te. Surge ítaque, descende, et vade cum eis nihil dúbitans; quia ego misi illos. Descendens autem Petrus ad viros, dixit : Ecce ego sum quem quæritis : quæ causa est propter quam venistis? Qui dixérunt : Cornélius centúrio, vir justus et timens Deum, et testimónium habens ab universa gente Judæórum, responsum accépit ab Angelo sancto accersíre te in domum suam, et audíre verba abs te.

AD VESPERAS.

*Psalmi de Sabbato, sub sola Ant.* 4. d. Deus et Dóminum suscitávit; et nos suscitábit per virtútem suam, allelúia. 1 *Cor.* 6.

CAPITULUM. *Jerem.* 31.

AUDITE verbum Dómini, gentes; et annuntiáte in ínsulis quæ procul sunt, et dícite : Qui dispersit Israel, congregábit eum, et custódiet eum sicut pastor gregem suum; redémit enim Dóminus Jacob, et liberávit eum de manu potentióris.

*Hymnus*, Forti, 312.

℣. Dóminus ipse est Deus noster; ℟. Nos autem pópulus ejus, et oves páscuæ ejus. *Ps.* 94.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 2. D. Tanquam ovis ad occisiónem ductus est, et sicut agnus non apéruit os suum. In humilitáte judícium ejus sublátum est : generatiónem ejus quis enarrábit? allelúia. *Act.* 8.

*Oratio ut infrà ad Laudes.*

# DOMINICA II POST PASCHA.

## AD NOCTURNUM.

*Omnia ut in Dominicis Temporis Paschalis, suprà* 307, *additis quæ sequuntur.*

*Tres Psalmi è II Nocturno Dominicæ*, 3.

LECTIO I.

De Actibus Apostolórum.

*Cap.* 13.

ERANT in Ecclésia quæ erat Antiochíæ, Prophétæ, et Doctóres, in quibus Bárnabas, et Simon qui vocabátur Niger, et Lúcius Cyrenensis, et Mánahen qui erat Heródis Tetrarchæ collactáneus, et Saulus. Ministrántibus autem illis Dómino, et jejunántibus, dixit illis Spíritus sanctus : Segregáte mihi Saulum et Bárnabam in opus ad quos assumpsi eos. Tunc jejunantes, et orantes, imponentesque eis manus, dimisérunt illos. Et ipsi quidem missi à Spíritu sancto, abiérunt Seléuciam, et inde navigavérunt Cyprum. Et, cùm venissent Salamínam, prædicábant verbum Dei in synagógis Judæórum. Habébant autem et Joannem in ministério. Et cùm perambulassent universam ínsulam usque Paphum, invenérunt quemdam virum magum pseudoprophétam, Judæum, cui

nomen erat Bárjesu, qui erat cum Procónsule Sérgio Paulo, viro prudente. Hic, accersítis Bárnabâ et Saulo, desiderábat audíre verbum Dei. Resistébat autem illis Elymas magus, ( sic enim interpretátur nomen ejus ) quærens avértere Procónsulem à fide. Saulus autem qui et Paulus, replétus Spíritu sancto, intuens in eum dixit : O plene omni dolo et omni falláciâ, fili diáboli, inimíce omnis justítiæ, non désinis subvértere vias Dómini rectas. Et nunc ecce manus Dómini super te; et eris cæcus, non videns solem usque ad tempus. Et confestim cécidit in eum calígo, et ténebræ; et circúiens, quærébat qui ei manum daret. Tunc Proconsul, cùm vidisset factum, crédidit, admírans super doctrína Dómini.

℞. Lætentur cœli, et exultet terra; et dicant in natiónibus : Dóminus regnávit. *Exultent agri, et ómnia quæ in eis sunt, quia venit Dóminus judicáre terram, allelúia, allelúia. ℣. Deus judicatúrus est orbem, in viro in quo státuit, fidem præbens ómnibus, súscitans eum à mórtuis. * Exultent. 1 *Paral.* 16. *Act.* 17.

LECTIO II.

Sermo sancti Augustíni Epíscopi. *In Ps.* 110.

VENERUNT dies ut cantémus Allelúia. Et hi quidem dies véniunt transitúri, transeuntque ventúri, et significant diem qui non venit et transit. Ad quem sanè nos cùm venérimus, inhærentes ei, nec nos transíbimus. Sicut enim dies isti, prætéritis diébus Quadragésimæ, quibus ante resurrectiónem Domínici córporis, vitæ hujus significátur mœror, solémniter gratâ hilaritáte succédunt; sic dies ille qui post resurrectiónem dábitur plenário córpori Dómini, hoc est, sanctæ Ecclésiæ, cunctis vitæ hujus ærumnis atque dolóribus exclúsis, perpétuâ beatitáte succédet. Quod promísit Christus, non est hìc expectandum, non hìc sperandum; sed hoc est verum et justum, ut hìc laborétur, illic requiescátur. Non ergo réquies, nisi in cœlesti pátria requirátur. Non tale áliquid meditéris adipisci, quale solet hìc óculus avarítiæ concupíscere. Pro delíciis ómnibus hujus séculi, immortálium deliciárum matrem concupisce sapiéntiam. Delectábit illa, et ineffabíliter procul dúbio delectábit castis atque æternis veritátis ampléxibus. Inítium sapiéntiæ, timor Dómini; laus ejus manet in séculum séculi : et hoc erit præmium, hic finis, hæc státio sedesque perpétua.

℞. Per vicos Jerúsalem. Allelúia cantábitur. Benedictus Dóminus qui exaltávit eam; et * Sit regnum ejus in sécula seculórum, allelúia, allelúia. ℣. Allelúia, salus,

et glória, et virtus Deo nostro est; quia vera et justa judícia sunt ejus: * Sit. *Tob.* 13. *Apoc.* 19.

LECTIO III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Joannem. *Cap.* 10.

In illo témpore: Dixit Jesus quibusdam ex Pharisæis: Ego sum pastor bonus. Bonus pastor ánimam suam dat pro óvibus suis. Et réliqua.

Homília sancti Gregórii Papæ. *In Ev.* 14.

Fecit Dóminus quod mónuit, ostendit quod jussit. Bonus Pastor pro óvibus suis ánimam suam pósuit; ut in sácramento nostro corpus suum et sánguinem vérteret, et oves quas redémerat, carnis suæ aliménto satiáret. Ostensa nobis est de contemptu mortis via quam sequámur; appósita est forma cui imprimámur. Primum nobis est, exterióra nostra misericórditer óvibus ejus impéndere; postrémum verò, si necesse sit, étiam mortem nostram pro eisdem óvibus ministráre. A primo autem hoc mínimo pervenítur ad postrémum majus. Sed cùm incomparabíliter longè sit mélior ánima quâ vívimus, terrénâ substántiâ quam extériùs possidémus; qui non dat pro óvibus substántiam suam, quando pro his datúrus est ánimam suam?

℟. Ego sum pastor bonus; et * Cognosco oves meas, et cognoscunt me meæ, allelúia, allelúia. ℣. Ecce ego ipse requíram oves meas, et visitábo eas, et edúcam eas de pópulis, et pascam eas. * Cognosco. Glória. * Cognosco. *Joan.* 10. *Ezech.* 34.

AD LAUDES.

CAPITULUM. *Isai.* 49.

Super vias pascentur, et in ómnibus planis páscua eórum. Non esúrient, neque sítient: et non percútiet eos æstus et sol; quia miserátor eórum reget eos, et ad fontes aquárum potábit eos.

*Hymnus*, Auróra, 308.

℣. Pópulus Dómini, oves páscuæ ejus: ℟. Introíte portas ejus in confessióne. *Ps.* 99.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 1. D. Ego sum óstium óvium: veni ut vitam hábeant, et abundántiùs hábeant. Ego sum pastor bonus, allelúia. *Joan.* 10.

Orémus. ORATIO.

Deus, qui errántibus, ut in viam possint redíre justítiæ, veritátis tuæ lumen ostendis: da cunctis qui christiánâ professióne censentur, et illa respúere quæ huic inimíca sunt nómini, et ea quæ sunt apta sectári; Per Dóminum.

*Pro Commemoratione*

TRANSLATIONIS S. VINCENTII A PAULO.

*Ant.* Cùm effúderis esurienti ánimam tuam, et ánimam afflictam repléveris; réquiem tibi dabit Dóminus semper, et implébit splendóribus ánimam tuam, et ossa tua liberábit, allelúia. *Is.* 58.

℣. Dispersit, dedit paupéribus; ℟. Cornu ejus exaltábitur in glória. *Ps.* 111.

Orémus. Oratio.

Deus, qui beátum Sacerdótem Vincéntium, ut tam multis hóminum misériis subveníret, misericórdiæ viscéribus implevisti; éxcita in Translatióne Córporis ejus; quam adhuc spirant sacri cíneres caritátem, ipsiusque précibus eamdem in córdibus nostris benignus infunde; Per Dóminum.

AD VESPERAS.

Capitulum. 1 *Petr.* 2.

Eratis sicut oves errantes; sed conversi estis nunc ad pastórem et epíscopum animárum vestrárum.

*Hymnus*, Forti, 312.

℣. Abstulit sicut oves pópulum suum; ℟. Et deduxit eos in spe. *Ps.* 77.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 8. G. Alias oves hábeo quæ non sunt ex hoc ovíli; et illas oportet me addúcere: et vocem meam áudient; et fiet unum ovíle, et unus pástor, allelúia. *Joan.* 10.

## FERIA SECUNDA.

Ad Noct. *Ps.* Confitémini.... Vocávit, 23. Misit Dóminus, 24.

Lectio i.

De Actibus Apostolórum.

*Cap.* 15.

Surrexerunt quidam de hæresi Pharisæórum qui crediderunt, dicentes: Quia oportet circumcídi eos, præcípere quoque serváre legem Móysi. Convenerúntque Apóstoli et Senióres, vidére de verbo hoc. Cùm autem magna conquisítio fíeret, surgens Petrus dixit ad eos: Viri fratres, vos scitis quóniam ab antíquis diébus Deus in nobis elégit per os meum audíre Gentes verbum Evangélii, et crédere. Et qui novit corda Deus, testimónium perhíbuit, dans illis Spíritum sanctum sicut et nobis, et nihil discrévit inter nos et illos, fide puríficans corda eórum. Nunc ergo quid tentátis Deum, impónere jugum super cervíces discipulórum, quod neque patres nostri, neque nos portáre potúimus? Sed per grátiam Dómini Jesu Christi crédimus salvári, quemádmodum et illi. Tácuit autem omnis multitúdo, et audiébant Bárnabam et Paulum, narrantes quanta Deus fecisset signa et prodígia in Géntibus per eos.

℟. Príncipes, 316.

Lectio ii.

Et, postquam tacuérunt, respondit Jacóbus, dicens: Viri fratres, audíte me: Simon narrávit quemádmodum primùm Deus visitávit súmere ex Géntibus pópulum nómini suo. Et huic concordant verba Prophetárum, sicut scriptum est: Post hæc revertar, et reædificábo tabernáculum David, quod décidit: et díruta ejus reædificábo, et érigam illud; ut requírant céteri hóminum Dóminum, et

omnes gentes super quas invocátum est nomen meum, dicit Dóminus fáciens hæc. Notum à século est Dómino opus suum. Propter quod ego júdico non inquietári eos, qui ex Géntibus convertuntur ad Deum; sed scríbere ad eos, ut abstíneant se à contaminatiónibus simulacrórum, et fornicatióne, et suffocátis, et sánguine. Móyses enim à tempóribus antíquis habet in síngulis civitátibus qui eum prædicent in synagógis, ubi per omne sábbatum légitur.

℟. Visus est, 316.

LECTIO III.

Tunc plácuit Apóstolis, et Senióribus cum omni Ecclésia, elígere viros ex eis, et míttere Antiochíam cum Paulo et Bárnaba, Judam, qui cognominabátur Bársabas, et Silam, viros primos in frátribus; scribentes per manus eórum: Apóstoli et senióres fratres, his qui sunt Antiochíæ, et Syriæ, et Cilíciæ, frátribus ex Géntibus, salútem. Quóniam audívimus quia quidam ex nobis exeuntes, turbavérunt vos verbis, everténtes ánimas vestras, quibus non mandávimus: plácuit nobis collectis in unum, elígere viros, et míttere ad vos, cum caríssimis nostris Bárnaba et Paulo, homínibus qui tradidérunt ánimas suas pro nómine Dómini nostri Jesu Christi. Mísimus ergo Judam et Silam, qui et ipsi vobis verbis réferent éadem. Visum est enim Spirítui sancto et nobis, nihil ultrà impónere vobis óneris quàm hæc necessária: ut abstineátis vos ab immolátis simulacrórum, et sánguine, et suffocáto, et fornicatióne; à quibus custodientes vos, bene agétis. Valéte.

℟. Quem vos, 317.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 4. E. Ite, nuntiáte frátribus meis, ut eant in Galilæam; ibi me vidébunt, allelúia. *Matth.* 28.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 6. F. Pastor próprias oves vocat nominátim, et edúcit eas, allelúia. *Joan.* 10.

## FERIA TERTIA.

Ad Noct. *Ps.* Deus, judícium... Reges Tharsis, 38. Misericórdiam, 39.

LECTIO I.

De Actibus Apostolórum.

*Cap.* 17.

Paulus cùm Athénis Silam et Timótheum expectáret, incitabátur spíritus ejus in ipso, videns idololatríæ déditam civitátem. Disputábat ígitur in synagóga cum Judæis et coléntibus, et in foro, per omnes dies ad eos qui áderant. Quidam autem Epicúrei et Stóici philósophi disserébant cum eo, et quidam dicébant: Quid vult seminivérbius hic dícere? Alii verò: Novórum dæmoniórum vidétur annuntiátor esse; quia Jesum, et resurrectiónem annuntiábat eis. Et apprehensum eum ad Areópagum

duxérunt, dicentes: Póssumus scire quæ est hæc nova, quæ à te dícitur, doctrína? nova enim quædam infers áuribus nostris: vólumus ergo scire quidnam velint hæc esse. (Athenienses autem omnes, et ádvenæ hóspites, ad nihil áliud vacábant, nisi aut dícere aut audíre áliquid novi.) ℟. Virtúte, 317.

LECTIO II.

Stans autem Paulus in médio Areópagi, ait: Viri Athenienses, per ómnia quasi superstitiosióres vos vídeo. Prætériens enim, et videns simulácra vestra, invéni et aram, in qua scriptum erat: Ignóto Deo. Quod ergo ignorantes cólitis, hoc ego annúntio vobis. Deus qui fecit mundum et ómnia quæ in eo sunt, hic cœli et terræ cùm sit Dóminus, non in manufactis templis hábitat, nec mánibus humánis cólitur índigens áliquo, cùm ipse det ómnibus vitam, et inspiratiónem, et ómnia: fecitque ex uno omne genus hóminum inhabitáre super universam fáciem terræ, definiens statúta témpora, et términos habitatiónis eórum, quærere Deum, si fortè attrectent eum, aut invéniant; quamvis non longè sit ab unoquóque nostrûm. In ipso enim vívimus, et movémur, et sumus; sicut et quidam vestrórum poetárum dixérunt: Ipsíus enim et genus sumus.

℟. Certíssimè, 318.

LECTIO III.

Genus ergo cùm simus Dei, non debémus æstimáre auro, aut argento, aut lápidi, sculptúræ artis et cogitatiónis hóminis, Divínum esse símile. Et témpora quidem hujus ignorántiæ despíciens Deus, nunc annúntiat homínibus ut omnes ubíque pœniténtiam agant, eo quod státuit diem in quo judicatúrus est orbem in æquitáte, in viro in quo státuit, fidem præbens ómnibus, súscitans eum à mórtuis. Cùm audíssent autem resurrectiónem mortuórum, quidam quidem irridébant, quidam verò dixérunt: Audiémus te de hoc íterum. Sic Paulus exívit de médio eórum. Quidam verò viri adhærentes ei, credidérunt, in quibus et Dionysius Areopagíta, et múlier nómine Dámaris, et álii cum eis.

℟. Hic est lapis reprobátus, 318.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 8. G. Dedit eum Deus manifestum fíeri, non omni pópulo, sed téstibus præordinátis, allelúia. *Act.* 10.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 2. D. Cùm próprias oves pastor emíserit, ante eas vadit; et oves illum sequuntur, quia sciunt vocem ejus, allelúia. *Joan.* 10.

## FERIA QUARTA.

Ad Noct. *Ps.* Atténdite, pópule... Fílii Ephrem, 54; Tránstulit, 55.

LECTIO I.

De Actibus Apostolórum.

*Cap.* 20.

PROPOSUERAT Paulus transnavigáre Ephesum, ne qua mora illi fleret in Asia. Festinábat enim, si possíbile sibi esset, ut diem Pentecostes fáceret Jerosólymis. A Miléto autem mittens Ephesum, vocávit majóres natu Ecclésiæ. Qui cùm venissent ad eum, et simul essent, dixit eis: Vos scitis à prima die quâ ingressus sum in Asiam, quáliter vobiscum per omne tempus fúerim, sérviens Dómino cum omni humilitáte, et lácrymis, et tentatiónibus quæ mihi accidérunt ex insídiis Judæórum: quómodo nihil subtráxerim utílium, quóminus annuntiárem vobis, et docérem vos públicè et per domos; testíficans Judæis atque Gentílibus in Deum pœniténtiam, et fidem in Dóminum nostrum Jesum Christum. Et nunc ecce alligátus ego spíritu, vado in Jerúsalem, quæ in ea ventúra sint mihi, ignórans; nisi quod Spíritus sanctus per omnes civitátes mihi protestátur, dicens: Quóniam víncula et tribulatiónes Jerosólymis me manent. Sed nihil horum véreor: nec fácio ánimam meam pretiosiórem quàm me, dúmmodo consummem cursum meum, et ministérium verbi, quod accépi à Dómino Jesu, testificári Evangélium grátiæ Dei.

℟. Quæ ad patres, 319.

LECTIO II.

ET nunc ecce ego scio, quia ámpliùs non vidébitis fáciem meam vos omnes, per quos transívi prædicans regnum Dei. Quaprópter contestor vos hodiernâ die, quia mundus sum à sánguine ómnium; non enim subterfúgi quóminus annuntiárem omne consílium Dei vobis. Atténdite vobis, et univérso gregi, in quo vos Spíritus sanctus pósuit Epíscopos régere Ecclésiam Dei, quam acquisívit sánguine suo. Ego scio quóniam intrábunt post discessiónem meam lupi rapáces in vos, non parcentes gregi; et ex vobis ipsis exurgent viri loquentes perversa, ut abdúcant discípulos post se. Propter quod vigiláte, memóriâ retinentes quóniam per triénnium nocte et die non cessávi, cum lácrymis monens unumquemque vestrûm. Et nunc commendo vos Deo, et verbo grátiæ ipsíus, qui potens est ædificáre et dare hæreditátem in sanctificátis ómnibus. Argentum et aurum, aut vestem nullíus concupívi, sicut ipsi scitis; quóniam ad ea quæ mihi opus erant, et his qui mecum sunt, ministravérunt manus istæ. Omnia ostendi vobis, quóniam sic laborantes opórtet suscípere infirmos, ac meminisse verbi Dómini Jesu, quóniam ipse dixit: Beátius est magis dare, quàm accípere.

℟. Deus, 319.

LECTIO III. *Cap.* 20, 21.

ET cùm hæc dixisset, pósitis génibus suis, orávit cum ómnibus illis. Magnus autem fletus factus est ómnium; et procumbentes super collum Pauli, osculabantur eum, dolentes máximè in verbo quod díxerat, quóniam ámpliùs fáciem ejus non essent visúri. Et deducébant eum ad navem. Cùm autem factum esset ut navigarémus, abstracti ab eis, recto cursu vénimus Coum, et sequenti die Rhodum, et inde Pátaram. Et cùm invenissémus navem transfretantem in Phœnicen, ascendentes navigávimus. Cùm apparuissémus autem Cypro, relinquentes eam ad sinistram, navigávimus in Syriam, et vénimus Tyrum: ibi enim navis expositúra erat onus. Inventis autem discípulis, mánsimus ibi diébus septem: qui Paulo dicébant per Spíritum ne ascénderet Jerosólymam. Et explétis diébus, profecti ibámus, deducéntibus nos ómnibus cum uxóribus et fíliis usque foràs civitátem; et pósitis génibus in líttore, orávimus. Et cùm valefecissémus ínvicem, ascéndimus navem; illi autem rediérunt in sua. Nos verò, navigatióne expléta, à Tyro descéndimus Ptolemáidam: et salutátis frátribus, mánsimus die unâ apud illos. Aliâ autem die profecti, vénimus Cæsaréam.

℟. Per Christum, 320.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 1. *D.* Duóbus ex discípulis ostensus est Jesus in ália effígie eúntibus in villam; óculi autem eórum tenebantur ne eum agnóscerent, allelúia. *Marc.* 16. *Luc.* 24.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 7. *d.* Per Jesum fidéles estis in Deo, qui suscitávit eum à mórtuis, et dedit ei glóriam, allelúia. 1 *Petr.* 1.

## FERIA QUINTA.

AD NOCTURN. *Ps.* Exurgat Deus, 68. Dóminus dabit verbum.... In Ecclésiis benedícite Deo, 69.

LECTIO I.

De Actibus Apostolórum.

*Cap.* 24.

DESCENDIT princeps Sacerdótum Ananías, cum Senióribus quibusdam, et Tertullo quodam oratóre, qui adiérunt Præsidem adversùs Paulum. Et citáto Paulo, cœpit accusáre Tertullus, dicens: Cùm in multa pace agámus per te, et multa corrigantur per tuam providéntiam; semper et ubíque suscípimus, óptime Felix, cum omni gratiárum actióne. Ne diútiùs autem te prótraham, oro, bréviter áudias nos pro tua cleméntia. Invénimus hunc hóminem pestíferum, et concitantem seditiónes ómnibus Judæis in universo orbe, et auctórem seditiónis sectæ Nazarenórum: qui étiam templum violáre conátus est; quem et apprehensum volúi-

mus secundùm legem nostram judicáre. Supervéniens autem Tribúnus Lysias, cum vi magna erípuit eum de mánibus nostris, jubens accusatóres ejus ad te veníre, à quo póteris ipse júdicans de ómnibus istis cognóscere de quibus nos accusámus eum. Adjecérunt autem et Judæi, dicentes hæc ita se habére. ℟. Príncipes, 316.

Lectio II.

Respondit autem Paulus, (annuente sibi Præside dícere:) Ex multis annis te esse júdicem genti huic sciens, bono ánimo pro me satisfáciam. Potes enim cognóscere quia non plus sunt mihi dies quàm duódecim, ex quo ascendi adoráre in Jerúsalem: et neque in templo invenérunt me cum áliquo disputantem, aut concursum faciéntem turbæ, neque in synagógis, neque in civitáte: neque probáre possunt tibi de quibus nunc me accúsant. Confíteor autem hoc tibi, quod, secundùm sectam quam dicunt hæresim, sic desérvio Patri et Deo meo, credens ómnibus quæ in Lege et Prophétis scripta sunt; spem habens in Deum, quam et hi ipsi expectant, resurrectiónem futúram justórum et iniquórum. In hoc et ipse stúdeo sine offendículo consciéntiam habére ad Deum et ad hómines semper. Post annos autem plures, eleemósynas factúrus in gentem meam, veni, et oblatiónes et vota; in quibus invenérunt me purificátum in templo, non cum turba, neque cum tumultu. Quidam autem ex Asia Judæi, quos oportébat apud te præstò esse, et accusáre si quid habérent adversùm me: aut hi ipsi dicant si quid invenérunt in me iniquitátis, cùm stem in concílio, nisi de una hac solúmmodo voce, quâ clamávi inter eos stans: Quóniam de resurrectióne mortuórum ego júdicor hódie à vobis.

℟. Visus est, 316.

Lectio III.

Distulit autem illos Felix, certíssimè sciens de via hac, dicens: Cùm Tribúnus Lysias descénderit, áudiam vos. Jussitque Centurióni custodíre eum, et habére réquiem, nec quemquam de suis prohibére ministráre ei. Post áliquot autem dies véniens Felix cum Drusilla uxóre sua, quæ erat Judæa, vocávit Paulum, et audívit ab eo fidem quæ est in Christum Jesum. Disputante autem illo de justítia et castitáte, et de judício futúro, tremefactus Felix respondit: Quod nunc áttinet, vade; témpore autem opportúno accersam te. Simul et sperans quod pecúnia ei darétur à Paulo; propter quod et frequenter accersens eum, loquebátur cum eo. Biénnio autem expléto, accépit successórem Felix Pórtium Festum. Volens autem grátiam præstáre

Judæis Felix, relíquit Paulum vinctum.

℟. Quem vos, 317.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 3. a. Dum Jesus recúmberet cum illis, accépit panem, et benedixit, ac fregit; et porrigébat illis, allelúia. *Luc.* 24.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 1. g. Cùm apparúerit Princeps pastórum, percipiétis immarcescíbilem glóriæ corónam, allelúia. 1 *Petr.* 5.

## FERIA SEXTA.

Ad Noct. *Ps.* Eripe me, 82. Deus ostendet.... Exaudi, Deus, 83.

Lectio i.

De Actibus Apostolórum.

*Cap.* 25.

Festus descendit Cæsaréam, et álterâ die sedit pro tribunáli, et jussit Paulum addúci. Qui cùm perductus esset, circumstetérunt eum, qui ab Jerosólyma descénderant Judæi; multas et graves causas objicientes, quas non póterant probáre, Paulo ratiónem reddente: Quóniam neque in legem Judæórum, neque in templum, neque in Cæsarem quidquam peccávi. Festus autem volens grátiam præstáre Judæis, respondens Paulo, dixit: Vis Jerosólymam ascéndere, et ibi de his judicári apud me? Dixit autem Paulus. Ad tribúnal Cæsaris sto, ibi me oportet judicári: Judæis non nócui, sicut tu méliùs nosti. Si enim nócui, aut dignum morte áliquid feci, non recúso mori: si verò nihil est eórum quæ hi accúsant me, nemo potest me illis donáre. Cæsarem appello. Tunc Festus cum concílio locútus, respondit: Cæsarem appellasti, ad Cæsarem ibis.

℟. Virtúte magnâ, 317.

Lectio ii. *Cap.* 27.

Ut autem judicátum est navigáre eum in Itáliam, et tradi Paulum cum réliquis custódiis Centurióni, nómine Júlio, cohortis Augustæ, ascendentes navem Adrumetínam, incipientes navigáre circa Asiæ loca, sustúlimus, perseverante nobiscum Aristarcho Macédone Thessalonicensi. Sequenti autem die devénimus Sidónem. Humánè autem tractans Július Paulum, permísit ad amícos ire, et curam suî ágere. Et inde cùm sustulissémus, subnavigávimus Cyprum, proptérea quod essent venti contrárii. Et pélagus Cilíciæ et Pamphyliæ navigantes, vénimus Lystram, quæ est Lyciæ: et ibi invéniens Centúrio navem Alexandrínam navigantem in Itáliam, transpósuit nos in eam. Et cùm multis diébus tardè navigarémus, et devenissémus contra Gnidum, prohibente nos vento, adnavigávimus Cretæ juxta Salmónem: et vix juxtà navigantes, vénimus in locum quemdam qui vocátur Boniportus, cui juxta erat cívitas Thalassa. Multo autem témpore peracto, et cùm

jam non esset tuta navigátio, eo quod et jejúnium jam præteriisset, consolabátur eos Paulus, dicens eis: Viri, video quóniam cum injúria et multo damno non solùm óneris et navis, sed étiam animárum nostrárum, íncipit esse navigátio. Centúrio autem gubernatóri et nauclére magis credébat, quàm his quæ à Paulo dicebantur. Et cùm aptus portus non esset ad hiemandum, plúrimi statuérunt consílium navigáre inde, si quo modo possent, devenientes Phœnicen, hiemáre.

℟. Certíssimè, 318.

LECTIO III.

Valida autem nobis tempestáte jactátis, sequenti die jactum fecérunt; et tértiâ die suis mánibus armamonta navis projecérunt. Neque autem sole, neque sidéribus apparéntibus per plures dies, et tempestáte non exíguâ imminente, jam abláta erat spes omnis salútis nostræ. Et cùm multa jejunátio fuisset, tunc stans Paulus in médio eórum, dixit: Oportébat quidem, ô viri, audíto me, non tóllere à Creta, lucríque fácere injúriam hanc et jactúram. Et nunc suádeo vobis bono ánimo esse: amíssio enim nullius ánimæ erit ex vobis, præterquam navis. Astitit enim mihi hâc nocte Angelus Dei, cujus sum ego, et cui desérvio, dicens: Ne tímeas, Paule; Cæsari te oportet assístere: et ecce donávit tibi Deus omnes qui návigant tecum. Propter quod bono ánimo estóte, viri; credo enim Deo, quia sic erit, quemádmodum dictum est mihi. In ínsulam autem quamdam oportet nos devenire. ℟. Hic est, 318.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 6. F. Cognovérunt Dóminum in fractióne panis, allelúia. *Luc.* 24.

AD VESPERAS.

*A Capitulo de Beata, nisi occurrat Festum Semiduplex.*

## SABBATO.

Ad Nocturnum. *Ps.* Nonne Deo, 98. Exaudi.... Confitébimur, 99.

LECTIO I.

De Actibus Apostolórum.

*Cap.* 28.

Cum venissémus Romam, permissum est Paulo manére sibímet cum custodiente se mílite. Post tértium autem diem convocávit primos Judæórum: cùmque convenissent, dicébat eis: Ego, viri fratres, nihil adversùs plebem fáciens aut morem patérnum, vinctus ab Jerosólymis tráditus sum in manus Romanórum: qui, cùm interrogatiónem de me habuissent, voluérunt me dimíttere, eo quod nulla esset causa mortis in me. Contradicéntibus autem Judæis, coactus sum appelláre Cæsarem, non quasi gentem meam habens áliquid accusáre. Propter hanc ígitur causam rogávi

vos vidére, et álloqui; propter spem enim Israel caténâ hâc circúmdatus sum.

Lectio ii.

Cum constituissent autem illi diem, venérunt ad eum in hospítium plúrimi, quibus exponébat testíficans regnum Dei, suadensque eis de Jesu ex lege Móysi et Prophétis à mane usque ad vésperam. Et quidam credébant his quæ dicebantur; quidam verò non credébant. Cùmque ínvicem non essent consentientes, discedébant, dicente Paulo unum verbum : Quia bene Spíritus sanctus locútus est per Isaíam Prophétam ad patres nostros, dicens : Vade ad pópulum istum, et dic ad eos : Aure audiétis, et non intelligétis; et videntes vidébitis, et non perspiciétis. Incrassátum est enim cor pópuli hujus, et áuribus gráviter audiérunt; et óculos suos compressérunt, ne fortè vídeant óculis, et áuribus áudiant, et corde intélligant, et convertantur, et sanem eos. Notum ergo sit vobis quóniam Géntibus missum est hoc salutáre Dei, et ipsi áudient. Et cùm hæc dixisset, exiérunt ab eo Judæi, multam habentes inter se quæstiónem. Mansit autem biénnio toto in suo conducto, et suscipiébat omnes qui ingrediebantur ad eum, prædicans regnum Dei, et docens quæ sunt de Dómino Jesu Christo, cum omni fidúcia, sine prohibitióne.

AD VESPERAS.

*Psal. sub sola Ant.* 4. d. Deus et Dóminum suscitávit; et nos suscitábit per virtútem suam, allelúia. 1 *Cor.* 6.

Capitulum. *Exod.* 19.

Si audiéritis vocem meam, et custodiéritis pactum meum, éritis mihi in pecúlium de cunctis pópulis; mea est enim omnis terra : et vos éritis mihi in regnum sacerdotále, et gens sancta.

*Hymnus,* Forti, 312.

℣. Redemptiónem misit Dóminus pópulo suo : ℟. Mandávit in æternum testamentum suum. *Ps.* 110.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 3. a. Occísus es, Dómine, et redemisti nos Deo in sánguine tuo, ex omni tribu, et linguâ, et pópulo, et natióne; et fecisti nos Deo nostro regnum et sacerdótes, allelúia. *Apoc.* 5.

*Oratio ut infrà ad Laudes.*

## DOMINICA III POST PASCHA.

AD NOCTURNUM.

*Tres Psalmi è III Nocturno Dominicæ,* 5.

Lectio i.

Incipit liber Apocalypsis beáti Joannis Apóstoli.

*Cap.* 1.

Apocalypsis Jesu Christi, quam dedit illi Deus palàm fácere servis suis quæ oportet fieri citò, et significávit, mittens per Angelum suum servo suo Joanni, qui testimónium perhíbuit verbo Dei, et

testimónium Jesu Christi, quæcumque vidit. Beátus qui legit et audit verba prophetíæ hujus, et servat ea quæ in ea scripta sunt; tempus enim prope est. Joannes septem Ecclésiis quæ sunt in Asia: Grátia vobis et pax ab eo qui est, et qui erat, et qui ventúrus est: et à septem spirítibus qui in conspectu throni ejus sunt: et à Jesu Christo, qui est testis fidélis, primogénitus mortuórum, et princeps regum terræ; qui diléxit nos, et lavit nos à peccátis nostris in sánguine suo, et fecit nos regnum et sacerdótes Deo et Patri suo: ipsi glória et impérium in sécula seculórum: amen. Ecce venit cum núbibus; et vidébit eum omnis óculus, et qui eum pupugérunt: et plangent se super eum omnes tribus terræ: Etiam, amen. Ego sum Alpha et Omega, princípium et finis, dicit Dóminus Deus, qui est, et qui erat, et qui ventúrus est, Omnípotens.

℟. Grátia vobis et pax à Jesu Christo, * Qui est testis fidélis, primogénitus mortuórum, et princeps regum terræ, allelúia, allelúia. ℣. Ejus regnum, regnum sempitérnum est; et omnes reges sérvient et obédient ei, * Qui est. *Apoc.* 1. *Dan.* 7.

LECTIO II.

Ex libro sancti Ambrósii Episcopi, de fide resurrectiónis. *l.* 2. *n.* 90, 91.

Quoniam Deus mori non póterat, mori non póterat Sapiéntia: resúrgere autem non póterat quod mórtuum non erat; assúmitur caro, quæ mori posset; ut dum móritur quod solet, quod mórtuum fúerat hoc resúrgeret. Neque enim póterat esse nisi per hóminem resurréctio. Ergo resurrexit homo, quóniam homo mórtuus est: resuscitátus homo, sed resúscitans Deus. Tunc secundùm carnem homo, nunc per ómnia Deus. Nunc enim secundùm carnem jam non nóvimus Christum, sed carnis grátiam tenémus; ut ipsum primítias quiescéntium, ipsum primogénitum ex mórtuis novérimus. Itaque sicut primítiæ mortis in Adam, ita étiam primítiæ resurrectiónis in Christo. Omnes resurgunt, sed nemo despéret, neque justus dóleat commúne consórtium resurgendi, cum præcípuum fructum virtútis expectet. Omnes quidem resurgent, sed unusquisque, ut ait Apóstolus, in suo órdine. Commúnis est divínæ fructus cleméntiæ, sed distinctus ordo meritórum.

℟. Beátus et sanctus qui habet partem in resurrectióne prima: In his secunda mors non habet potestátem, sed erunt sacerdótes Dei et Christi, et regnábunt cum illo, allelúia, allelúia. ℣. Vivent mórtui tui, Sion, interfecti mei resurgent: expergiscímini, et laudáte, qui habitátis in púlvere, * In his secunda mors non habet potestátem. *Apoc.* 20. *Is.* 26.

LECTIO III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Joannem.

*Cap.* 16.

In illo témpore; Dixit Jesus discípulis suis: Módicum, et jam non vidébitis me; et íterum módicum, et vidébitis me: quia vado ad Patrem. Et réliqua.

Homília sancti Augustíni Epíscopi.

*In Joan. tract.* 101. *n.* 6.

Modicum est hoc totum spátium, quo præsens pérvolat séculum. Unde dicit idem ipse Evangelista in epístola sua: Novíssima hora est. Illis ergo ait, Módicum, et jam non vidébitis me, qui eum corporáliter tunc vidébant; quia itúrus erat ad Patrem, et eum deinceps mortálem visúri non erant, qualem cùm ista loquerétur vidébant. Quod verò áddidit, Et íterum módicum, et vidébitis me; universæ promísit Ecclésiæ, sicut universæ promísit, Ecce ego vobiscum sum usque in consummatiónem séculi. Non tardat Dóminus promissum: módicum, et vidébimus eum, ubi jam nihil rogémus, nihil interrogémus; quia nihil desiderandum remanébit, nihil quærendum latébit. Hoc módicum longum nobis vidétur, quóniam adhuc ágitur: cùm finítum fúerit, tunc sentiémus quàm módicum fúerit.

℟. Módicum, et jam non vidébitis me, et íterum módicum, et vidébitis me. * Quia vado ad Patrem, allelúia, allelúia. ℣. Ego consolábor vos, et consolabímini: vidébitis, et gaudébit cor vestrum; * Quia. Glória Patri. * Quia. *Joan.* 16. *Is.* 66.

AD LAUDES.

CAPITULUM. *Rom.* 8.

Scimus quod omnis creatúra ingemiscit, et párturit usque adhuc. Non solùm autem illa, sed et nos ipsi primítias Spiritûs habentes, et ipsi intra nos gémimus, adoptiónem filiórum Dei expectantes, redemptiónem córporis nostri; spe enim salvi facti sumus.

*Hymnus*, Auróra, 308.

℣. Ad vésperum demorábitur fletus, ℟. Et ad matutínum lætítia. *Ps.* 29.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 6. F. Amen, amen dico vobis, quia plorábitis et flébitis vos; mundus autem gaudébit: vos autem contristabímini, sed tristítia vestra vertétur in gáudium, allelúia. *Joan.* 16.

Orémus. ORATIO.

Deus, qui in Fílii tui humilitáte jacentem mundum erexisti; fidélibus tuis perpétuam concéde lætítiam: ut quos perpétuæ mortis eripuisti cásibus, gáudiis fácias sempiternis pérfrui; Per eumdem Dóminum.

AD VESPERAS.

CAPITULUM. 1 *Petr.* 4.

Carissimi, nolíte peregrinári in fervóre qui ad tentatiónem vobis fit, quasi novi áliquid vobis contingat; sed communicantes Christi passiónibus.

siónibus, gaudéte, ut et in revelatióne glóriæ ejus gaudeátis exultantes.

*Hymnus*, Forti, 312.

℣. Lætáti sumus pro diébus quibus nos humiliasti, ℟. Annis quibus vidimus mala. *Ps.* 89.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 6. F. Nunc quidem tristítiam habétis, íterum autem vidébo vos, et gaudébit cor vestrum; et gáudium vestrum nemo tollet à vobis, allelúia. *Joan.* 16.

## FERIA SECUNDA.

Ad Noct. *Psal.* Confitémini, 24. Peccávimus, 25. Non disperdidérunt, 26.

### Lectio i.

De libro Apocalypsis beáti Joannis Apóstoli.

*Cap.* 1.

Ego Joannes frater vester, et párticeps in tribulatióne, et regno, et patiéntia in Christo Jesu, fui in ínsula quæ appellátur Patmos, propter verbum Dei, et testimónium Jesu. Fui in spíritu in Domínica die, et audívi post me vocem magnam tanquam tubæ, dicentis: Quod vides, scribe in libro; et mitte septem Ecclésiis quæ sunt in Asia, Epheso, et Smyrnæ, et Pérgamo, et Thyatíræ, et Sardis, et Philadelphíæ, et Laodiciæ. Et conversus sum, ut vidérem vocem quæ loquebátur mecum; et conversus, vidi septem candelábra áurea, et in médio septem candelabrórum aureórum símilem Fílio hóminis, vestítum pódere, et præcinctum ad mamillas zonâ áureâ. Caput autem ejus et capilli erant cándidi tanquam lana alba, et tanquam nix, et óculi ejus tanquam flamma ignis, et pedes ejus símiles aurichalco sicut in camíno ardenti, et vox illíus tanquam vox aquárum multárum: et habébat in déxtera sua stellas septem; et de ore ejus gládius utráque parte acútus exíbat: et fácies ejus sicut sol lucet in virtúte sua.

℟. Jesus Christus dilexit nos, et lavit nos à peccátis nostris in sánguine suo; * Ipsi glória et impérium in sécula seculórum: amen, allelúia, allelúia. ℣. Vitam pétiit à te, Dómine, et tribuisti ei: magna est glória ejus in salutári tuo. * Ipsi. *Apoc.* 1. *Ps.* 20.

### Lectio ii.

Et cùm vidissem eum, cécidi ad pedes ejus tanquam mórtuus; et pósuit déxteram suam super me, dicens: Noli timére, ego sum primus et novíssimus; et vivus, et fui mórtuus: et ecce sum vivens in sécula seculórum, et hábeo claves mortis et inferni. Scribe ergo quæ vidisti, et quæ sunt, et quæ oportet fíeri post hæc. Sacraméntum septem stellárum quas vidisti in déxtera mea, et septem candelábra áurea: Septem stellæ, Angeli sunt septem Ecclesiárum; et candelábra septem, septem Ecclésiæ sunt.

℟. Ecce vicit leo de tribu Juda, radix David : * Dignus est Agnus, qui occísus est, accípere virtútem, et divinitátem, et glóriam, allelúia, allelúia. ℣. Ipse est Deus vivens in sécula : Ipse liberátor, atque salvátor. * Dignus est. *Apoc.* 5. *Dan.* 6.

Lectio iii. *Cap.* 2.

Angelo Ephesi Ecclésiæ scribe : Hæc dicit qui tenet septem stellas in déxtera sua, qui ámbulat in médio septem candelabrórum aureórum : Scio ópera tua, et labórem, et patiéntiam tuam, et quia non potes sustinére malos ; et tentasti eos qui se dicunt Apóstolos esse, et non sunt, et invenisti eos mendáces ; et patiéntiam habes, et sustinuisti propter nomen meum, et non defecisti. Sed hábeo adversùm te, quod caritátem tuam primam reliquisti. Memor esto ítaque unde excíderis, et age pœniténtiam ; et prima ópera fac. Sin autem, vénio tibi ; et movébo candelábrum tuum de loco suo, nisi pœniténtiam égeris. Sed hoc habes, quia odisti facta Nicolaitárum, quæ et ego odi. Qui habet aurem, áudiat quid Spíritus dicat Ecclésiis : Vincenti dabo édere de ligno vitæ, quod est in paradíso Dei mei.

℟. In cápite ejus diadémata multa, habens nomen scriptum quod nemo novit, nisi ipse ; * Et † Habet in vestimento et in fémore suo scriptum : Rex regum, et Dóminus dominántium, allelúia, allelúia. ℣. Magnificéntia tua, Deus, in diadémate cápitis illíus sculpta erat ; * Et habet. Glória Patri. † Habet. *Apoc.* 19. *Sap.* 18.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 1. D. Manducávimus et bíbimus cum illo, postquam resurrexit à mórtuis, allelúia. *Act.* 10.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 4. E. Adhuc módicum, et mundus me jam non videt ; vos autem vidétis me, quia ego vivo, et vos vivétis, allelúia. *Joan.* 14.

## FERIA TERTIA.

Ad Noct. *Psal.* Confitémini, 39. Confiteantur, 40. Confiteantur, 41.

Lectio i.

De libro Apocalypsis beáti Joannis Apóstoli.

*Cap.* 2.

Et Angelo Smyrnæ Ecclésiæ scribe : Hæc dicit primus et novíssimus, qui fuit mórtuus, et vivit : Scio tribulatiónem tuam, et paupertátem tuam ; sed dives es, et blasphemáris ab his qui se dicunt Judæos esse, et non sunt ; sed sunt synagóga sátanæ. Nihil horum tímeas quæ passúrus es. Ecce missúrus est diábolus áliquos ex vobis in cárcerem, ut tentémini ; et habébitis tribulatiónem diébus decem. Esto fidélis usque ad mortem, et dabo tibi corónam vitæ. Qui

habet aurem, áudiat quid Spíritus dicat Ecclésiis : Qui vícerit, non lædétur à morte secunda.

℟. Cantábant cánticum Agni, dicentes : Magna et mirabília sunt ópera tua, Dómine Deus omnípotens : * Justæ et veræ sunt viæ tuæ, Rex seculórum, allelúia, allelúia. ℣. Quis símilis tuî in fórtibus, Dómine? quis símilis tuî? magníficus in sanctitáte, fáciens mirabília : * Justæ. *Apoc.* 15. *Exod.* 15.

LECTIO II.

Et Angelo Pérgami Ecclésiæ scribe : Hæc dicit qui habet romphæam utráque parte acútam : Scio ubi hábitas, ubi sedes est sátanæ : et tenes nomen meum, et non negasti fidem meam. Et in diébus illis, Antípas testis meus fidélis, qui occísus est apud vos, ubi sátanas hábitat. Sed hábeo adversùs te pauca; quia habes illìc tenentes doctrínam Bálaam, qui docébat Balac míttere scándalum coram fíliis Israel, édere, et fornicári : ita habes et tu tenentes doctrínam Nicolaitárum. Simíliter pœniténtiam age : si quóminus véniam tibi citò, et pugnábo cum illis in gládio oris mei. Qui habet aurem, áudiat quid Spíritus dicat Ecclésiis : Vincenti dabo manna abscónditum, et dabo illi cálculum cándidum; et in cálculo nomen novum scriptum, quod nemo scit, nisi qui áccipit.

℟. Audívi vocem dicéntium : * Allelúia; gaudeámus et exultémus, quia venérunt núptiæ Agni, allelúia, allelúia. ℣. Dóminus regnávit, lætáta est Sion, et exultavérunt fíliæ Judæ : * Allelúia; gaudeámus. *Apoc.* 19. *Ps.* 96.

LECTIO III.

Et Angelo Thyatíræ Ecclésiæ scribe : Hæc dicit Fílius Dei, qui habet óculos tanquam flammam ignis, et pedes ejus símiles aurichalco : Novi ópera tua, et fidem, et caritátem tuam, et ministérium, et patiéntiam tuam, et ópera tua novíssima plura prióribus. Sed hábeo adversùs te pauca, quia permittis mulíerem Jézabel, quæ se dicit Prophéten, docére, et sedúcere servos meos, fornicári, et manducáre de idolóthytis. Et dedi illi tempus ut pœniténtiam ágeret, et non vult pœnitére à fornicatióne sua. Ecce mittam eam in lectum; et qui mœchantur cum ea, in tribulatióne máxima erunt, nisi pœniténtiam ab opéribus suis égerint. Et fílios ejus interfíciam in morte; et scient omnes Ecclésiæ quia ego sum scrutans renes et corda : et dabo unicuíque vestrûm secundùm ópera sua.

℟. Vidi sanctam civitátem Jerúsalem descendentem de cœlo à Deo sicut sponsam; et audívi vocem dicentem : Ecce tabernáculum Dei cum homínibus, et habitábit cum eis; * Et † Ipse Deus cum

eis erit córum Deus, alleluia, allelúia. ℣. Ergone credíbile est, ut hábitet Deus cum homínibus super terram ! * Et. Glória Patri. † Ipse Deus. *Apoc.* 21. 2 *Par.* 6.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 8. c. Apéruit illis sensum, ut intellígerent Scriptúras, allelúia. *Luc.* 24.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 7. G. In illo die vos cognoscétis quia ego sum in Patre meo, et vos in me, et ego in vobis, allelúia. *Joan.* 14.

## FERIA QUARTA.

Ad Noct. *Ps.* Abundávit, 55. Abstulit .... Excitátus est, 56.

### Lectio i.

De libro Apocalypsis beáti Joannis Apóstoli.

*Cap.* 3.

Et Angelo Ecclésiæ Sardis scribe : Hæc dicit qui habet septem spíritus Dei, et septem stellas : Scio ópera tua, quia nomen habes quod vivas, et mórtuus es. Esto vígilans, et confírma cétera quæ moritúra erant; non enim invénio ópera tua plena coram Deo meo. In mente ergo habe quáliter accéperis et audíeris, et serva, et pœniténtiam age. Si ergo non vigiláveris, véniam ad te tanquam fur, et néscies quâ horâ véniam ad te. Sed habes pauca nómina in Sardis, qui non inquinavérunt vestimenta sua ; et ambulábunt mecum in albis, quia digni sunt. Qui vícerit, sic vestiétur vestimentis albis; et non delébo nomen ejus de libro vitæ. et confitébor nomen ejus coram Patre meo, et coram Angelis ejus. Qui habet aurem, áudiat quid Spíritus dicat Ecclésiis.

℟. Omnem creatúram, quæ in cœlo est, et super terram, et sub terra, et quæ sunt in mari, omnes audívi dicentes : * Sedenti in throno, et Agno, benedíctio et honor, et glória, et potestas in sécula seculórum, allelúia, allelúia. ℣. Dicant qui redempti sunt à Dómino, quos redémit de manu inimíci : * Sedenti. *Apocal.* 5. *Ps.* 106.

### Lectio ii.

Et Angelo Philadelphíæ Ecclésiæ scribe : Hæc dicit Sanctus et Verus, qui habet clavem David; qui áperit, et nemo claudit; claudit, et nemo áperit : Scio ópera tua. Ecce dedi coram te óstium apertum, quod nemo potest cláudere; quia módicam habes virtútem, et servasti verbum meum, et non negasti nomen meum. Ecce dabo de synagóga sátanæ, qui dicunt se Judæos esse, et non sunt, sed mentiuntur : ecce fáciam illos ut véniant, et adórent ante pedes tuos; et scient quia ego dilexi te. Quóniam servasti verbum patiéntiæ meæ, et ego servábo te ab hora tentatiónis quæ ventúra est in orbem universum tentáre habitantes in terra.

Ecce vénio citò : tene quod habes, ut nemo accípiat corónam tuam. Qui vícerit, fáciam illum columnam in templo Dei mei; et foràs non egrediétur ámpliùs : et scribam super eum nomen Dei mei, et nomen civitátis Dei mei novæ Jerúsalem, quæ descendit de cœlo à Deo meo, et nomen meum novum. Qui habet aurem, áudiat quid Spíritus dicat Ecclésiis.

℟. Ego sum inítium et finis; ego sitienti dabo de fonte aquæ vitæ gratis : * Qui vícerit, ero illi Deus, et ille erit mihi fílius, allelúia, allelúia. ℣. Ego dixi : Patrem vocábis me, et post me íngredi non cessábis. * Qui. *Apoc.* 21. *Jer.* 3.

LECTIO III.

Et Angelo Laodíciæ Ecclésiæ scribe : Hæc dicit, Amen, testis fidélis, et verus, qui est princípium creatúræ Dei: Scio ópera tua; quia neque frígidus es, neque cálidus. Utinam frígidus esses, aut cálidus! sed quia tépidus es, et nec frígidus, nec cálidus, incípiam te evómere ex ore meo. Quia dicis : Quòd dives sum, et locupletátus, et nullíus égeo; et nescis quia tu es miser, et miserábilis, et pauper, et cæcus, et nudus. Suádeo tibi émere à me aurum ignítum probátum, ut lócuples fias, et vestimentis albis induáris, et non appáreat confúsio nuditátis tuæ, et collyrio innunge óculos tuos ut vídeas. Ego quos amo, árguo et castígo. Æmuláre ergo, et pœniténtiam age; ecce sto ad óstium, et pulso. Si quis audíerit vocem meam, et aperúerit mihi jánuam, intrábo ad illum, et cœnábo cum illo, et ipse mecum. Qui vícerit, dabo ei sedére mecum in throno meo : sicut et ego vici, et sedi cum Patre meo in throno ejus. Qui habet aurem, áudiat quid Spíritus dicat Ecclésiis.

℟. Ego sum radix et genus David, stella spléndida, et matutína : * Et spíritus et sponsa dicunt, Veni; et qui audit, dicat, Veni : † Amen. Veni, Dómine Jesu, allelúia, allelúia. ℣. Omnes sitientes, veníte ad aquas ; inclináte aurem vestram, et veníte ad me. * Et spíritus. Glória. † Amen. Veni, Dómine Jesu, allelúia, allelúia. *Apoc.* 22. *Is.* 55.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 1. g. Insufflávit Jesus in discípulos suos, et dixit eis : Accípite Spíritum sanctum; quórum remiséritis peccáta, remittuntur eis, allelúia. *Joan.* 20.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 2. D. Deus omnis grátiæ, qui vocávit nos in æternam suam glóriam in Christo Jesu, módicum passos ipse perfíciet, allelúia. 1 *Petr.* 5.

## FERIA QUINTA.

AD NOCTURN. *Ps.* Misericórdias.... Beátus, 70. Semel jurávi, 71.

Lectio I.
De libro Apocalypsis beáti Joannis Apóstoli.
*Cap.* 4.

Fui in spíritu : et ecce sedes pósita erat in cœlo, et supra sedem sedens. Et qui sedébat, símilis erat aspéctui lápidis jáspidis et sárdinis : et iris erat in circúitu sedis, símilis visióni smarágdinæ. Et in circúitu sedis sedília viginti quátuor, et super thronos viginti quátuor senióres sedentes, circumamicti vestiméntis albis, et in capítibus eórum corónæ áureæ. Et de throno procedébant fúlgura, et voces, et tonítrua : et septem lámpades ardentes ante thronum, qui sunt septem spíritus Dei. Et in conspectu sedis tanquam mare vítreum, símile crystallo : et in médio sedis, et in circúitu sedis, quátuor animália plena óculis antè et retrò. Et ánimal primum símile leóni, et secundum ánimal símile vítulo, et tértium ánimal habens fáciem quasi hóminis, et quartum ánimal símile áquilæ volanti. Et quátuor animália, síngula eórum habébant alas senas; et in circúitu et intus plena sunt óculis : et réquiem non habébant die ac nocte dicéntia : Sanctus, Sanctus, Sanctus, Dóminus Deus omnípotens, qui erat, et qui est, et qui ventúrus est. ℟. Jesus Christus, 337.

Lectio II. *Cap.* 5.

Et vidi in déxtera sedentis supra thronum librum scriptum intus et foris, signátum sigillis septem. Et vidi Angelum fortem, prædicantem voce magnâ : Quis est dignus aperíre librum, et sólvere signácula ejus? Et nemo póterat, neque in cœlo, neque in terra, neque subtus terram, aperíre librum, neque respícere illum. Et ego flebam multùm, quóniam nemo dignus inventus est aperíre librum, nec vidére eum. Et unus de senióribus dixit mihi : Ne fléveris : ecce vicit leo de tribu Juda, radix David, aperíre librum, et sólvere septem signácula ejus. Et vidi, et ecce in médio throni et quátuor animálium, et in médio seniórum, Agnum stantem tanquam occísum, habentem córnua septem et óculos septem, qui sunt septem spíritus Dei missi in omnem terram. Et venit, et accépit de déxtera sedentis in throno librum. Et cùm aperuisset librum, quátuor animália, et viginti quátuor senióres cecidérunt coram Agno, habentes singuli cítharas, et phíalas áureas plenas odoramentórum, quæ sunt oratiónes Sanctórum; et cantábant cánticum novum, dicentes : Dignus es, Dómine, accípere librum, et aperíre signácula ejus: quóniam occísus es, et redemísti nos Deo in sánguine tuo ex omni tribu, et linguâ, et pópulo, et natióne; et fecisti nos Deo nostro regnum,

et sacerdótes; et regnábimus super terram.

℟. Ecce, 338.

Lectio iii. *Cap.* 15, 16.

Et vidi áliud signum in cœlo magnum et mirábile: Angelos septem habentes plagas septem novíssimas; quóniam in illis consummáta est ira Dei. Et vidi tanquam mare vítreum mistum igne, et eos qui vicérunt béstiam, et imáginem ejus, et númerum nóminis ejus, stantes super mare vítreum, habentes cítharas Dei, et cantantes cánticum Móysi servi Dei, et cánticum Agni, dicentes: Magna et mirabília sunt ópera tua, Dómine Deus omnípotens: justæ et veræ sunt viæ tuæ, Rex seculórum. Quis non timébit te, Dómine, et magnificábit nomen tuum? quia solus pius es; quóniam ómnes gentes vénient, et adorábunt in conspectu tuo, quóniam judícia tua manifesta sunt. Et post hæc vidi, et ecce apertum est templum tabernáculi testimónii in cœlo: et exiérunt septem Angeli habentes septem plagas, de templo, vestíti lino mundo et cándido, et præcincti circa péctora zonis áureis. Et unum de quátuor animálibus dedit septem Angelis septem phíalas áureas, plenas iracúndiæ Dei viventis in sécula seculórum. Et implétum est templum fumo à majestáte Dei, et de virtúte ejus; et nemo póterat introíre in templum, donec consummarentur septem plagæ septem Angelórum. Et audívi vocem magnam de templo, dicentem septem Angelis: Ite, et effúndite septem phíalas iræ Dei in terram. ℟. In cápite, 338.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 2. D. Præbuit seipsum vivum Dóminus Jesus post passiónem suam in multis argumentis, allelúia. *Act.* 1.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 5. C. In Christo exultábitis, módicum nunc si oportet contristári in váriis tentatiónibus, reportantes finem fídei vestræ, salútem animárum. allelúia. 1 *Petr.* 1.

## FERIA SEXTA.

Ad Noct. *Ps.* Salvum me fac.... Exaudi me, 84. Ego sum pauper, 85.

Lectio i.

De libro Apocalysis beáti Joannis Apóstoli.

*Cap.* 18.

Et post hæc vidi álium Angelum descendentem de cœlo, habentem potestátem magnam: et terra illumináta est à glória ejus. Et exclamávit in fortitúdine, dicens: Cécidit, cécidit Bábylon magna; et facta est habitátio dæmoniórum, et custódia omnis spíritûs immundi, et custódia omnis vólucris immundæ et odíbilis; quia de vino iræ fornicatiónis ejus bibérunt omnes gentes, et reges terræ cum illa fornicáti sunt, et mercatóres terræ

de virtúte deliciárum ejus dívites facti sunt. Et audívi áliam vocem de cœlo, dicentem: Exíte de illa, pópulus meus, ut ne partícipes sitis delictórum ejus, et de plagis ejus non accipiátis. Quóniam pervenérunt peccáta ejus usque ad cœlum, et recordátus est Dóminus iniquitátum ejus. Réddite illi sicut et ipsa réddidit vobis, et duplicáte duplícia secundùm ópera ejus: in póculo quo miscuit, miscéte illi duplum. Quantùm glorificávit se, et in delíciis fuit, tantùm date illi tormentum et luctum; quia in corde suo dicit: Sédeo regína, et vídua non sum, et luctum non vidébo. Ideo in una die vénient plagæ ejus, mors, et luctus, et fames, et igne comburétur: quia fortis est Deus, qui judicábit illam.

℟. Cantábant, 339.

LECTIO II. *Cap.* 19.

POST hæc audívi quasi vocem turbárum multárum in cœlo dicéntium: Allelúia: Salus, et glória, et virtus Deo nostro est; quia vera et justa judícia sunt ejus qui judicávit de meretríce magna, quæ corrúpit terram in prostitutióne sua; et vindicávit sánguinem servórum suórum de mánibus ejus. Et íterum dixérunt: Allelúia. Et fumus ejus ascendit in sécula seculórum. Et cecidérunt senióres viginti quátuor, et quátuor animália, et adoravérunt Deum sedentem super thronum, dicentes: Amen, Allelúia. Et vox de throno exívit, dicens: Laudem dícite Deo nostro, omnes servi ejus, et qui timétis eum, pusilli, et magni. Et audívi quasi vocem turbæ magnæ, et sicut vocem aquárum multárum, et sicut vocem tonitruórum magnórum, dicéntium: Allelúia; quóniam regnávit Dóminus Deus noster omnípotens.

℟. Audívi, 339.

LECTIO III.

ET vidi cœlum apertum, et ecce equus albus; et qui sedébat super eum, vocabátur Fidélis, et Verax, et cum justítia júdicat et pugnat. Oculi autem ejus sicut flamma ignis; et in cápite ejus diadémata multa, habens nomen scriptum, quod nemo novit nisi ipse. Et vestítus erat veste aspersâ sánguine: et vocátur nomen ejus, Verbum Dei. Et exércitus qui sunt in cœlo, sequebantur eum in equis albis, vestíti byssino albo et mundo. Et de ore ejus procédit gládius ex utráque parte acútus, ut in ipso percútiat gentes: et ipse reget eas in virga férrea; et ipse calcat torcúlar vini furóris iræ Dei omnipotentis. Et habet in vestimento et in fémore suo scriptum: Rex regum, et Dóminus dominántium.

℟. Vidi sanctam civitátem, 339.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 6. F. In hoc Christus mórtuus est, et resurrexit, ut et mortuó-

rum et vivórum dominétur, allelúia. *Rom.* 14.

AD VESPERAS.

*A Capitulo de Beata in Sabbato, nisi occurrat Festum Semiduplex.*

## SABBATO.

AD NOCT. *Ps.* Notus in Judæa Deus, 99. Deus, quis símilis.... Deus meus, pone illos, 100.

LECTIO I.

De libro Apocalypsis beáti Joannis Apóstoli.

*Cap.* 22.

ET ostendit mihi flúvium aquæ vitæ, spléndidum tanquam crystallum, procedentem de sede Dei et Agni. In médio platéæ ejus, et ex utráque parte flúminis lignum vitæ, ásferens fructus duódecim, per menses síngulos reddens fructum suum, et fólia ligni ad sanitátem géntium. Et omne maledictum non erit ámpliùs; sed sedes Dei et Agni in illa erunt, et servi ejus sérvient illi. Et vidébunt fáciem ejus : et nomen ejus in fróntibus eórum. Et nox ultrà non erit : et non egébunt lúmine lucernæ, neque lúmine solis; quóniam Dóminus Deus illuminábit illos, et regnábunt in sécula seculórum. Et dixit mihi : Hæc verba fidelíssima sunt, et vera. Et Dóminus Deus spirítuum Prophetárum misit Angelum suum osténdere servis suis quæ oportet fieri citò. Et ecce vénio velóciter. Beátus qui custódit verba prophetíæ libri hujus.

LECTIO II.

ECCE vénio citò; et merces mea mecum est, réddere unicuíque secundùm ópera sua. Ego sum Alpha et Oméga, primus et novíssimus, princípium et finis. Beáti qui lavant stolas suas in sánguine Agni; ut sit potestas eórum in ligno vitæ, et per portas intrent in civitátem. Foris canes, et venéfici, et impudíci, et homicídæ, et idólis servientes, et omnis qui amat et facit mendácium. Ego Jesus misi Angelum meum testificári vobis hæc in Ecclésiis. Ego sum radix et genus David, stella spléndida, et matutína. Et spíritus et sponsa dicunt : Veni. Et qui audit, dicat : Veni. Et qui sitit, véniat; et qui vult, accípiat aquam vitæ gratìs. Contestor enim omni audienti verba prophetíæ libri hujus : Si quis apposúerit ad hæc, appónet Deus super illum plagas scriptas in libro isto. Et si quis diminúerit de verbis libri prophetíæ hujus, áuferet Deus partem ejus de libro vitæ, et de civitáte sancta, et de his quæ scripta sunt in libro isto. Dicit qui testimónium pérhibet istórum : Etiam vénio citò : Amen. Veni, Dómine Jesu. Grátia Dómini nostri Jesu Christi cum ómnibus vobis. Amen. Tu autem.

AD VESPERAS.

*Psal. sub sola Ant.* 4. d. Deus et Dóminum suscitávit; ...

et nos suscitábit per virtútem suam, allelúia. 1 *Cor.* 6.

Capitulum. *Act.* 10.

Nos testes sumus ómnium quæ fecit in regióne Judæórum et Jerúsalem, quem occidérunt suspendentes in ligno; hunc Deus suscitávit tértiâ die.

*Hymnus,* Forti, 312.

℣. Confitébimur tibi, Deus: ℟. Narrábimus mirabília tua. *Ps.* 74.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 7. G. Resurrexit Christus, et visus est Cephæ, et post hoc Undecim: deinde visus est plusquam quingentis frátribus simul; deinde visus est Jacóbo, deinde Apóstolis ómnibus. allelúia. 1 *Cor.* 15.

*Oratio ut infrà ad Laudes.*

## DOMINICA IV
## POST PASCHA.

### AD NOCTURNUM.

*Tres Psalmi è I Nocturno Dominicæ.*

Lectio i.

Incipit Epístola Cathólica beáti Jacóbi Apóstoli.

*Cap.* 1.

Jacobus, Dei et Dómini nostri Jesu Christi servus, duódecim tríbubus, quæ sunt in dispersióne, salútem. Omne gáudium existimáte, fratres mei, cùm in tentatiónes várias incidéritis; scientes quod probátio fídei vestræ patiéntiam operátur. Patiéntia autem opus perfectum habet; ut sitis perfecti et íntegri, in nullo deficientes. Si quis autem vestrûm índiget sapiéntiâ, póstulet à Deo, qui dat ómnibus affluenter, et non impróperat; et dábitur ei. Póstulet autem in fide nihil hæsitans: qui enim hæsitat, símilis est flúctui maris, qui à vento movétur et circumfertur. Non ergo æstimet homo ille quod accípiat áliquid à Dómino. Vir duplex ánimo inconstans est in ómnibus viis suis. Gloriétur autem frater húmilis in exaltatióne sua; dives autem in humilitáte sua, quóniam sicut flos feni transíbit. Exortus est enim sol cum ardóre, et arefécit fenum, et flos ejus décidit, et decor vultûs ejus depériit; ita et dives in itinéribus suis marcescet.

℟. Dóminus in humilitáte nostra memor fuit nostri: * Et redémit nos ab inimícis nostris; quóniam in ætérnum misericórdia ejus, allelúia, allel. ℣. Finem Dómini vidistis, quóniam miséricors Dóminus est, et miserátor; * Et. *Ps.* 135. *Jac.* 5.

Lectio ii.

Sermo sancti Augustíni Epíscopi. 242. *n.* 1.

Diebus his sanctis resurrectióni Dómini dedicátis, quantùm, donante ipso, póssumus, de carnis resurrectióne tractémus. Hæc enim fides est nostra: hoc donum in Dómini nostri Jesu Christi nobis carne promissum est, et in ipso præcessit exem-

plum. Vóluit enim nobis quod promísit in fine, non solùm prænuntiáre, sed étiam demonstráre. Contra istam evidéntiam dísputant hómines. Quid enim áliud fácerent hómines, qui ea quæ sunt hóminum sápiunt, quàm disputárent de Deo contra Deum? Ille enim Deus est, illi hómines sunt. In hómine carnáli tota régula intelligendi, est consuetúdo cernendi. Quod solent vidére, credunt; quod non solent, non credunt. Præter consuetúdinem facit Deus mirácula, quia Deus est. Majóra quidem mirácula sunt, tot quotídie hómines nasci qui non erant, quàm paucos resurrexisse qui erant; et tamen ista mirácula non consideratióne comprehensa sunt, sed assiduitáte viluérunt. Resurrexit Christus: absolúta res est. Corpus erat, caro erat, pependit in cruce, emisit ánimam; pósita est caro in sepulcro: exhíbuit illam vivam qui vivébat in illa. Quare mirámur? Quare non crédimus? Deus est qui fecit: consídera auctórem, et tolle dubitatiónem.

℟. Benedictus Dóminus die quotídie, Deus salutárium nostrórum, * Deus noster, Deus salvos faciendi; et Dómini Dómini éxitus mortis, allelúia, allelúia. ℣. Salvatórem expectámus Dóminum Jesum, qui reformábit corpus humilitátis nostræ, configurátum córpori claritátis suæ, * Deus. *Ps.* 67. *Philip.* 3.

LECTIO III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Joannem.

*Cap.* 16.

In illo témpore; Dixit Jesus discípulis suis: Vado ad eum qui misit me; et nemo ex vobis intérrogat me, Quò vadis? Et réliqua.

Homília sancti Augustíni Epíscopi.

*In Joan. tract.* 94. *n.* 4.

Videbat útique Dóminus Jesus quid illa sua verba in córdibus discipulórum ágerent. Spiritálem quippe nondum intériùs habentes consolatiónem, quam per Spíritum sanctum fúerant habitúri, id quod extériùs in Christo vidébant, amíttere metuébant. Et quia se amissúros esse illum vera denuntiantem dubitáre non póterant, contristabátur humánus affectus, quia carnális desolabátur aspectus. Nóverat autem ille quid eis pótiùs expedíret; quia visus intérior ipse est útique mélior, quo eos consolatúrus fúerat Spíritus sanctus; non cernéntium corpóribus ingestúrus corpus humánum, sed seipsum credéntium pectóribus infusúrus. Adjungit: Sed ego veritátem dico vobis; éxpedit vobis ut ego vadam. Si enim non abíero, Paraclétus non véniet ad vos; si autem abíero, mittam eum ad vos. Tanquam díceret: Expedit vobis ut hæc forma servi auferátur à vobis: caro quidem factum Verbum hábito in vobis; sed

nolo me carnáliter adhuc diligátis, et isto lacte contenti semper infantes esse cupiátis. Expedit vobis ut ego vadam. Si enim non abíero, Paraclétus non véniet ad vos. Si alimenta ténera quibus vos álui non subtráxero, sólidum cibum non esuriétis: si carni carnáliter hæséritis, capáces Spíritûs non éritis.

℞. Ego veritátem dico vobis: mittam Paraclétum ad vos; et * Cùm vénerit ille, † Arguet mundum de peccáto, et de justítia, et de judício, allelúia, allelúia. ℣. Qui lóquitur iníqua, non potest latére Spíritum Dómini, nec prætériet illum corrípiens judícium: * Cùm. Glória. † Arguet. *Joan.* 16. *Sap.* 1.

AD LAUDES.

Capitulum. 2 *Cor.* 5.

Si cognóvimus secundùm carnem Christum; sed nunc jam non nóvimus. Si qua ergo in Christo nova creatúra, vétera transiérunt: ecce facta sunt ómnia nova.

*Hymnus*, Auróra, 308.

℣. Salvum fecit Dóminus Christum suum: ℞. Exáudiet illum de cœlo sancto suo. *Ps.* 19.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 3. à. Nunc vado ad eum qui misit me, allelúia, allel. *Joan.* 16.

Orémus. Oratio.

Deus, qui fidélium mentes uníus éfficis voluntátis; da pópulis tuis, id amáre quod præcipis, id desideráre quod promittis: ut inter mundánas varietátes, ibi nostra fixa sint corda, ubi vera sunt gáudia; Per Dóminum.

AD VESPERAS.

Capitulum. *Rom.* 8.

Qui in carne sunt, Deo placére non possunt. Vos autem in carne non estis, sed in spíritu; si tamen Spíritus Dei hábitat in vobis.

*Hymnus*, Forti, 312.

℣. Memor esto verbi tui, Dómine, ℞. In quo mihi spem dedisti. *Ps.* 118.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 8. G. Expedit vobis ut ego vadam: si enim abíero, Paraclétus non véniet ad vos; si autem abíero, mittam eum ad vos, allelúia. *Joan.* 16.

## FERIA SECUNDA.

Ad Noct. *Ps.* Bénedic.... Quàm magnificáta sunt, 22. Sit glória, 23.

Lectio i.

De Epístola Cathólica beáti Jacóbi Apóstoli. *Cap.* 1.

Omne datum óptimum, et omne donum perfectum, desursum est, descendens à Patre lúminum, apud quem non est transmutátio, nec vicissitúdinis obumbrátio. Voluntárìè enim génuit nos verbo veritátis; ut simus inítium áliquod creatúræ ejus. Scitis, fratres mei dilectíssimi. Sit autem omnis homo velox ad audiendum, tardus autem ad loquendum, et tardus ad iram; ira enim viri justítiam Dei non operátur. Propter quod abjicientes omnem immundítiam, et abundántiam

malítiæ, in mansuetúdine suscípite ínsitum verbum, quod potest salváre ánimas vestras.

℟. Consurge, Dómine Deus, in réquiem tuam, tu et arca fortitúdinis tuæ, allel. * Dómine Deus, ne avérteris fáciem Christi tui, allelúia, allelúia. ℣. Pater, venit hora; clarífica Fílium tuum, ut Fílius tuus claríficet te. * Dómine. 2 *Paral.* 6. *Joan.* 17.

Lectio ii.

Estote autem factóres verbi, et non auditóres tantùm, fallentes vosmetipsos. Quia si quis audítor est verbi, et non factor, hic comparábitur viro consideranti vultum nativitátis suæ in spéculo; considerávit enim se, et ábiit, et statim oblítus est qualis fúerit. Qui autem perspéxerit in legem perfectam libertátis, et permánserit in ea, non audítor obliviósus factus, sed factor óperis; hic beátus in facto suo erit. Si quis autem putat se religiósum esse, non refrenans linguam suam, sed sedúcens cor suum, hujus vana est relígio. Relígio munda et immaculáta apud Deum et Patrem, hæc est: Visitáre pupillos et víduas in tribulatióne eórum, et immaculátum se custodíre ab hoc século.

℟. Super cœlos, Deus, et super omnem terram glória tua, allelúia; * Ut liberentur dilecti tui, allelúia, allelúia. ℣. Ego te clarificávi super terram: manifestávi nomen tuum homínibus; * Ut liberéntur *Ps.* 107. *Joan.* 17.

Lectio iii. *Cap.* 2.

Fratres mei, nolíte in personárum acceptióne habére fidem Dómini nostri Jesu Christi glóriæ. Etenim si introíerit in conventum vestrum vir áureum ánnulum habens, in veste cándida; introíerit autem et pauper in sórdido hábitu, et intendátis in eum qui indútus est veste præclárâ, et dixéritis ei: Tu sede hìc bene; páuperi autem dicátis: Tu sta illìc, aut sede sub scabello pedum meórum; nonne judicátis apud vosmetipsos, et facti estis júdices cogitatiónum iniquárum? Audíte, fratres mei dilectíssimi. Nonne Deus elégit páuperes in hoc mundo, dívites in fide, et hærédes regni quod repromísit Deus diligéntibus se? Vos autem exhonorastis páuperem. Nonne dívites per poténtiam ópprimunt vos, et ipsi trahunt vos ad judícia? Nonne ipsi blasphémant bonum nomen quod invocátum est super vos?

℟. Dómine, qui sperant in te, in æternum exultábunt, allelúia: * Et habitábis in eis, et † Gloriabuntur in te, allelúia, allelúia. ℣. Ego claritátem quam dedisti mihi, dedi eis, ut sint unum sicut et nos; ego in eis, et tu in me: * Et. Glória. † Gloriabuntur. *Ps.* 5. *Joan.* 17.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 7. d. Regenerávit nos Deus in spem vivam per resurrectiónem

Jesu Christi ex mórtuis, in hæreditátem incorruptíbilem, allelúia. 1 *Petr.* 1.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 3. a. Adhuc multa hábeo vobis dícere; sed non potestis portáre modò: cùm autem vénerit ille Spíritus veritátis, docébit vos omnem veritátem, allelúia. *Joan.* 16.

## FERIA TERTIA.

Ad Noct. *Ps.* Dómine, quis habitábit, 37. Cœli enarrant.... Lex Dómini immaculáta, 38.

Lectio i.

De Epístola Cathólica beáti Jacóbi Apóstoli. *Cap.* 2.

Si legem perfícitis regálem secundùm Scriptúras: Díliges próximum tuum sicut teipsum; bene fácitis. Si autem persónas accípitis, peccátum operámini, redargúti à lege quasi transgressóres. Quicumque autem totam légem serváverit, offendat autem in uno, factus est ómnium reus. Qui enim dixit: Non mœcháberis, dixit et: Non occídes. Quod si non mœcháberis, occídes autem, factus es transgressor legis. Sic loquímini, et sic fácite, sicut per legem libertátis incipientes judicári. Judícium enim sine misericórdia illi qui non fecit misericórdiam; superexaltat autem misericórdia judícium.

℟. Cantáte Dómino, omnis terra: annuntiáte de die in diem salutáre ejus: * Narráte in géntibus glóriam ejus, allelúia, allelúia. ℣. Nunc clarificátus est Fílius hóminis, et Deus clarificátus est in eo: * Narráte. 1 *Paral.* 16. *Joan.* 13.

Lectio ii.

Quid próderit, fratres mei, si fidem quis dicat se habére, ópera autem non hábeat? Numquid póterit fides salváre eum? Si autem frater et soror nudi sint, et indígeant victu quotidiáno, dicat autem áliquis ex vobis illis: Ite in pace, calefacímini, et saturámini; non dedéritis autem eis quæ necessária sunt córpori, quid próderit? Sic et fides, si non hábeat ópera, mórtua est in semetipsa. Sed dicet quis: Tu fidem habes, et ego ópera hábeo: ostende mihi fidem tuam sine opéribus, et ego ostendam tibi ex opéribus fidem meam. Tu credis quóniam unus est Deus. Bene facis: et dæmones credunt, et contremiscunt.

℟. Salvum fecit Dóminus Christum suum, allelúia: * Exáudiet illum de cœlo sancto suo, allelúia: in potentátibus salus déxteræ ejus, allelúia, allelúia. ℣. Deus clarificábit eum in semetipso, et contínuò clarificábit: * Exáudiet. *Ps.* 19. *Joan.* 13.

Lectio iii.

Vis autem scire, ô homo inánis, quóniam fides sine opéribus mórtua est? Abraham pater noster nonne ex opéribus justificátus est, ófferens Isaac fílium suum super

altáre? Vides quóniam fides cooperabátur opéribus illíus; et ex opéribus fides consummáta est? Et suppléta est Scriptúra, dicens: Crédidit Abraham Deo, et reputátum est illi ad justítiam, et amícus Dei appellátus est. Vidétis quóniam ex opéribus justificátur homo, et non ex fide tantùm? Simíliter et Rahab méretrix, nonne ex opéribus justificáta est, suscípiens núntios, et áliâ viâ ejíciens? Sicut enim corpus sine spíritu mórtuum est, ita et fides sine opéribus mórtua est.

℟. Magna est glória ejus in salutári tuo, glóriam et magnum decórem impónes super eum; * Quóniam dabis eum, Dómine, in benedictiónem in séculum séculi, allelúia, allelúia. ℣. Dómino nostro et Salvatóri Jesu Christo glória, et nunc, et in diem æternitátis: Amen. * Quóniam. Glória. * Quóniam. *Ps.* 20. 2 *Petr.* 3.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 4. E. Si commórtui sumus Christo, et convivémus: si sustinébimus, et conregnábimus, allelúia. 2 *Tim.* 2.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 8. G. Non loquétur à semetipso; sed quæcumque áudiet loquétur, et quæ ventúra sunt annuntiábit vobis, allelúia. *Joan.* 16.

## FERIA QUARTA.

Ad Noct. *Ps.* Confitébor, 52. Miserére mei.... Ut quid, Dómine, 53.

Lectio i.

De Epístola Cathólica beáti Jacóbi Apóstoli.

*Cap.* 3.

Nolite plures magistri fíeri, fratres mei; scientes quóniam majus judícium súmitis. In multis enim offéndimus omnes. Si quis in verbo non offendit, hic perfectus est vir: potest étiam freno circumdúcere totum corpus. Si autem equis frena in ora mittìmus ad consentiendum nobis, et omne corpus illórum circumférimus: ecce et naves, cùm magnæ sint, et à ventis válidis minentur, circumferuntur à módico gubernáculo ubi ímpetus dirigentis volúerit; ita et lingua módicum quidem membrum est, et magna exaltat.

℟. Consurge, 349.

Lectio ii.

Ecce quantus ignis quàm magnam silvam incendit! Et lingua ignis est, univérsitas iniquitátis. Lingua constitúitur in membris nostris, quæ máculat totum corpus, et inflammat rotam nativitátis nostræ, inflammáta à gehenna. Omnis enim natúra bestiárum, et vólucrum, et serpéntium, et ceterórum domantur, et dómita sunt à natúra humána; linguam autem nullus hóminum domáre potest: inquiétum malum, plena venéno mortífero. In ipsa benedícimus Deum et Patrem; et in ipsa maledícimus hómines qui ad similitúdinem Dei facti sunt. Ex ipso

ore procédit benedíctio, et maledíctio. Non oportet, fratres mei, hæc ita fíeri. Numquid fons de eódem forámine emánat dulcem et amáram aquam? Numquid potest, fratres mei, ficus uvas fácere, aut vitis ficus? Sic neque salsa dulcem potest fácere aquam.

℟. Super cœlos, 349.

Lectio III.

Quis sápiens et disciplinátus inter vos? Ostendat ex bona conversatióne operatiónem suam in mansuetúdine sapiéntiæ. Quod si zelum amárum hábetis, et contentiónes sint in córdibus vestris, nolíte gloriári, et mendáces esse adversùs veritátem: non est enim ista sapiéntia desursum descendens; sed terréna, animális, diabólica. Ubi enim zelus et conténtio, ibi inconstántia et omne opus pravum. Quæ autem desursum est sapiéntia, primùm quidem pudíca est, deinde pacífica, modesta, suadíbilis, bonis conséntiens, plena misericórdiâ et frúctibus bonis, non júdicans, sine simulatióne. Fructus autem justítiæ in pace seminátur, faciéntibus pacem.

℟. Dómine, 349.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 1. g. Qui suscitávit Jesum Christum à mórtuis, vivificábit et mortália córpora vestra, propter inhabitantem Spíritum ejus in vobis, allel. *Rom.* 8.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 1. f. Ille me clarificábit; quia de meo accípiet, et annuntiábit vobis, allelúia. *Joan.* 16.

## FERIA QUINTA.

Ad Noct. *Ps.* Exáudiat... Exultáte, 67. Beáta gens, 68.

Lectio I.

De Epístola Cathólica beáti Jacóbi Apóstoli.

*Cap.* 4.

Unde bella et lites in vobis? Nonne hinc? ex concupiscéntiis vestris, quæ mílitant in membris vestris? Concupíscitis, et non habétis: occíditis, et zelátis, et non potestis adipisci: litigátis, et belligerátis; et non habétis, propter quod non postulátis. Pétitis, et non accípitis; eo quod malè petátis, ut in concupiscéntiis vestris insumátis. Adúlteri, nescítis quia amicítia hujus mundi, inimíca est Dei? Quicumque ergo voluérit amícus esse séculi hujus, inimícus Dei constúitur.

℟. Cantáte, 350.

Lectio II.

An putátis quia inániter Scriptúra dicat: Ad invídiam concupiscit spíritus qui hábitat in vobis? Majórem autem dat grátiam. Propter quod dicit: Deus superbis resistit, humílibus autem dat grátiam. Súbditi ergo estóte Deo; resístite autem diábolo, et fúgiet à vobis. Appropinquáte Deo, et appropinquábit vobis. Emundáte manus, peccatóres; et purificáte corda, dúplices ánimo. Míseri estóte, et lugéte, et ploráte. Ri-

sus vester in luctum convertátur, et gáudium in mœrórem. Humiliámini in conspectu Dómini, et exaltábit vos.

℟. Salvum fecit, 350.

Lectio iii.

Nolite detráhere altérutrum, fratres. Qui détrahit fratri, aut qui júdicat fratrem suum, détrahit legi, et júdicat legem. Si autem júdicas legem, non es factor legis, sed judex. Unus est legislátor et judex, qui potest pérdere et liberáre. Tu autem quis es, qui júdicas próximum? Ecce nunc qui dícitis: Hódie, aut crástino íbimus in illam civitátem, et faciémus ibi quidem annum, et mercábimur, et lucrum faciémus, qui ignorátis quid erit in crástino. Quæ est enim vita vestra? Vapor est ad módicum parens, et deinceps exterminábitur; pro eo ut dicátis: Si Dóminus volúerit; et: Si vixérimus, faciémus hoc, aut illud. Nunc autem exultátis in supérbiis vestris. Omnis exultátio talis maligna est. Scienti ígitur bonum fácere, et non facienti, peccátum est illi.

℟. Magna est glória ejus in salutári tuo, 351.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 1. g. Baptizabímini Spíritu sancto non post multos hos dies, allelúia. *Act.* 1.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 3. c. Omnia quæcumque habet Pater, mea sunt: proptérea dixi quia de meo accípiet, allelúia. *Joan.* 16.

## FERIA SEXTA.

Ad Noct. *Ps.* Quid gloriáris... Exaudi, 81. Véspere et mane, 82.

Lectio i.

De Epístola Cathólica beáti Jacóbi Apóstoli.

*Cap.* 5.

Agite nunc, dívites: ploráte, ululantes in misériis vestris quæ advénient vobis. Divítiæ vestræ putrefactæ sunt, et vestimenta vestra à tíneis comesta sunt. Aurum et argentum vestrum æruginávit, et ærúgo eórum in testimónium vobis erit, et manducábit carnes vestras sicut ignis. Thesaurizastis vobis iram in novíssimis diébus. Ecce merces operariórum qui messuérunt regiónes vestras, quæ fraudáta est à vobis, clamat; et clamor eórum in aures Dómini sábaoth introívit. Epuláti estis super terram, et in luxúriis enutristis corda vestra in die occisiónis. Addixistis et occidistis justum, et non réstitit vobis.

℟. Consurge, 349.

Lectio ii.

Patientes ígitur estóte, fratres, usque ad adventum Dómini. Ecce agrícola expectat pretiósum fructum terræ, patienter ferens, donec accípiat temporáneum et serótinum. Patientes ígitur estóte et vos, et confirmáte corda vestra, quóniam adventus Dómini appropinquávit.

℟. Super cœlos, 349.

LECTIO III.

NOLITE ingemíscere, fratres, in altérutrum; ut non judicémini. Ecce judex ante jánuam assistit. Exemplum accípite, fratres, éxitûs mali, labóris et patiéntiæ, Prophétas qui locúti sunt in nómine Dómini. Ecce beatificámus eos qui sustinuérunt. Sufferéntiam Job audistis, et finem Dómini vidistis, quóniam misericors Dóminus est, et miserátor.

℟. Dómine, 349.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 8. G. Sedéte in civitáte, quoadusque induámini virtúte ex alto, allelúia. *Luc.* 24.

AD VESPERAS.

*A Capitulo de Beata, nisi occurrat Festum Semiduplex.*

## SABBATO.

AD NOCT. *Ps.* Beátus..... Audíte, 97. Ne timúeris, 98.

LECTIO I.

De Epístola Cathólica beáti Jacóbi Apóstoli.

*Cap.* 5.

ANTE ómnia, fratres mei, nolíte juráre neque per cœlum, neque per terram, neque áliud quodcumque juramentum. Sit autem sermo vester: Est, est: Non, non; ut non sub judício decidátis. Tristátur áliquis vestrûm? oret. Æquo ánimo est? psallat. Infirmátur quis in vobis? indúcat Presbyteros Ecclésiæ, et orent super eum, ungentes eum óleo in nómine Dómini: et orátio fídei salvábit infirmum, et alleviábit eum Dóminus; et si in peccátis sit, remittentur ei.

LECTIO II.

CONFITEMINI ergo altérutrum peccáta vestra, et oráte pro invicem, ut salvémini; multùm enim valet deprecátio justi assídua. Elías homo erat símilis nobis, passíbilis: et oratióne orávit ut non plúeret super terram, et non pluit annos tres et menses sex. Et rursum orávit; et cœlum dedit plúviam, et terra dedit fructum suum. Fratres mei, si quis ex vobis erráverit à veritáte, et convérterit quis eum, scire debet quóniam qui converti fécerit peccatórem ab erróre viæ suæ, salvábit ánimam ejus à morte, et opériet multitúdinem peccatórum.

AD VESPERAS.

*Psalmi sub sola Ant.* 4. d. Deus et Dóminum suscitávit; et nos suscitábit per virtútem suam, allelúia. 1 *Cor.* 6.

CAPITULUM. *Act.* 17.

PAULUS disserébat Judæis de Scriptúris, adapériens et insínuans quia Christum opórtuit pati, et resúrgere à mórtuis; et quia hic est Jesus Christus.

*Hymnus*, Forti tegente bráchio, 312.

℣. Non móriar, sed vivam,
℟. Et narrábo ópera Dómini. *Ps.* 117.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 6. F. David appósitus est ad patres suos, et vidit corruptiónem: quem verò Deus suscitávit à

mórtuis, non vidit corruptiónem, allelúia. *Act.* 13.

*Oratio ut infrà ad Laudes.*

# DOMINICA V POST PASCHA.

## AD NOCTURNUM.

*Tres Psalmi è II Nocturno Dominicæ,* 3.

### Lectio I.

Incipit Epístola prima beáti Petri Apóstoli.

*Cap.* 1.

Petrus Apóstolus Jesu Christi, electis ádvenis dispersiónis Ponti, Galátiæ, Cappadóciæ, Asiæ, et Bithyniæ, secundùm præsciéntiam Dei Patris, in sanctificatiónem Spíritûs, in obediéntiam, et aspersiónem sánguinis Jesu Christi; Grátia vobis, et pax multiplicétur. Benedictus Deus et Pater Dómini nostri Jesu Christi, qui secundùm misericórdiam suam magnam regenerávit nos in spem vivam, per resurrectiónem Jesu Christi ex mórtuis in hæreditátem incorruptíbilem, et incontaminátam, et immarcescíbilem, conservátam in cœlis in vobis, qui in virtúte Dei custodímini per fidem in salútem, parátam revelári in témpore novíssimo. In quo exultábitis, módicùm nunc si oportet contristári in váriis tentatiónibus; ut probátio vestræ fídei multò pretiósior auro (quod per ignem probátur) inveniátur in laudem, et glóriam, et honórem, in revelatióne Jesu Christi; quem, cùm non vidéritis, dilígitis; in quem nunc quoque non videntes créditis: credentes autem exultábitis lætítiâ inenarrábili et glorificátâ, reportantes finem fídei vestræ, salútem animárum. De qua salúte exquisiérunt atque scrutáti sunt Prophétæ. qui de futúra in vobis grátia prophetavérunt: scrutantes in quod vel quale tempus significáret in eis Spíritus Christi; prænúntians eas quæ in Christo sunt passiónes, et posterióres glórias: quibus revelátum est, quia non sibimetipsis, vobis autem ministrábant ea quæ nunc nuntiáta sunt vobis per eos qui evangelizavérunt vobis, Spíritu sancto misso de cœlo, in quem desíderant Angeli prospícere.

℟. Bonus Dóminus: in séculum misericórdia ejus, allelúia. * Dicant qui redempti sunt à Dómino, allelúia, allelúia. ℣. Non corruptibílibus auro vel argento redempti estis, sed pretióso sánguine Agni immaculáti Christi: * Dicant. *Ps.* 106. 1 *Petr.* 1.

### Lectio II.

Sermo sancti Cæsárii Arelatensis Epíscopi.

*Homil.* 37. *de Litan.*

Ecce, fratres dilectíssimi, dies sancti et spirituáles advéniunt. In istis tribus diébus, quos reguláriter in toto mundo célebrat Ecclésia, nullus se à sancto conventu subdú-

eat; quia per totum annum nobis peccatórum vúlnera subrépunt. In istis tribus diébus fidéliter ad Ecclésiam currámus, et contríto corde, vel humiliáto córpore, Dei misericórdiam deprecémur; ut ómnium peccatórum nostrórum vúlnera, isto triduáno compunctiónis medicamento, ad sanitátem prístinam revocémus. Convivíola nobis étiam quadragesimáli órdine præparémus, et magis, legendo, et psallendo, vel orando, animábus nostris spiritáles épulas, quàm corporáles delícias requirámus. Audíte ergo me, fratres, rogantem: audíte paternâ pietáte admonentem, ut vobis Deus, et in hoc século sanitátem córporum, ubertátem frúctuum, et peccatórum indulgéntiam tríbuat, et in futúro ad æterna præmia felíciter perveníre concédat.

℟. Spíritus ádjuvat infirmitátem nostram: nam quid orémus, sicut oportet, nescímus; sed * Ipse Spíritus póstulat pro nobis gemítibus inenarrabílibus, allelúia, allelúia. ℣. In die illa, dicit Dóminus, effundam super domum David, et super habitatóres Jerúsalem, Spíritum grátiæ et precum: * Ipse. *Rom.* 8. *Zach.* 12.

LECTIO III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Joannem. *Cap.* 16.

In illo témpore; Dixit Jesus discípulis suis: Amen, amen dico vobis: si quid petiéritis Patrem in nómine meo, dabit vobis. Et réliqua.

Homília sancti Augustíni Epíscopi. *In Joan. tract.* 102. *n.* 1, 2.

Jam dictum est in superióribus hujus Domínici sermónis pártibus, propter eos qui nonnulla petunt à Patre in Christi nómine, nec accípiunt, non peti in nómine Salvatóris quidquid pétitur contra ratiónem salútis. Non enim sonum litterárum ac syllabárum, sed quod sonus ipse signíficat, et quod eo sono rectè ac veráciter intellígitur, hoc accipiendus est dícere, cùm dicit, In nómine meo. Unde qui hoc sentit de Christo, quod non est de único Dei Fílio sentiendum, non petit in ejus nómine, etiamsi non táceat litteris ac syllabis Christum; quóniam in ejus nómine petit, quem cógitat cùm petit. Qui verò quod est de illo sentiendum sentit, ipse in ejus nómine petit; et áccipit quod petit, si non contra suam salútem sempiternam petit. Accipit autem, quando debet accípere. Quædam enim non negantur; sed, ut cóngruo dentur témpore, differuntur. Usque modò, inquit, non petistis quidquam in nómine meo: pétite, et accipiétis, ut gáudium vestrum sit plenum. Hoc quod dicit gáudium plenum, profectò non carnále, sed spiritále gáudium est; et quando tantum

erit, ut áliquid ei jam non sit addendum, procul dúbio tunc erit plenum. Quidquid ergo pétitur quod pertíneat ad hoc gáudium consequendum, hoc est in nómine Christi petendum, si divínam intellígimus grátiam, si verè beátam póscimus vitam. Quidquid autem áliud pétitur, nihil pétitur; non quia nulla omníno res est, sed quia in tantæ rei comparatióne quidquid áliud concupíscitur, nihil est.

℟. Usque modò non petistis quidquam in nómine meo: * Pétite, et accipiétis, ut gáudium vestrum sit plenum, allelúia, allelúia. ℣. Voluntátem timéntium se fáciet Dóminus, et deprecatiónem eórum exáudiet :* Pétite. Glória Patri. * Pétite. *Joan.* 16. *Ps.* 144.

## AD LAUDES.

Capitulum. 1 *Joan.* 3.

Carissimi, si cor nostrum non reprehénderit nos, fidúciam habémus ad Deum: et quidquid petiérimus, accipiémus ab eo; quóniam mandáta ejus custodímus, et ea quæ sunt plácita coram eo fácimus.

*Hymnus*, Auróra, 308.

℣. Desidérium páuperum exaudívit Dóminus: ℟. Præparatiónem cordis eórum audívit auris tua. *Ps.* 9.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 1. D. Amen, amen dico vobis; si quid petiéritis Patrem in nómine meo, dabit vobis, allelúia. *Joan.* 16.

Orémus. Oratio.

Deus, à quo bona cuncta procédunt: largíre supplícibus tuis, ut cogitémus, te inspirante, quæ recta sunt; et, te gubernante, éadem faciámus; Per Dóminum nostrum.

## AD VESPERAS.

Capitulum. 1 *Joan.* 5.

Creditis in nómine Filii Dei: et hæc est fidúcia quam habémus ad eum, quia quodcumque petiérimus secundùm voluntátem ejus, audit nos. Et scimus quia audit nos, quidquid petiérimus: scimus quóniam habémus petitiónes quas postulámus ab eo.

*Hymnus*, Forti, 312.

℣. Oculi Dómini super justos, ℟. Et aures ejus in preces eórum. *Ps.* 33.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 4. E. In nómine meo petétis, et non dico vobis quia ego rogábo Patrem de vobis: ipse enim Pater amat vos, quia vos me amastis, et credidistis quia ego à Deo exívi, allelúia. *Joan.* 16.

# FERIA SECUNDA
## IN ROGATIONIBUS.

¶ *Hodie et cras, si occurrat Festum Duplex vel Semiduplex, de eo fiet Officium cum Commemoratione Feriæ ad Officium Nocturnum et ad Laudes tantùm. Tuncque prima Lectio erit de Scriptura occurrente, duabus in unam junctis: secunda Lectio erit de Festo;*

*tertia denique de Evangelio et Homilia Feriæ.*

*De Festo autem Simplici occurrente fiet tantùm Commemoratio in Laudibus.* ]

Ad Noct. *Ps.* Confitémini... Vocávit, 23. Misit Dóminus, 24.

Lectio i.

De Epístola prima beáti Petri Apóstoli.

*Cap.* 1.

Succincti lumbos mentis vestræ, sóbrii perfectè speráte in eam quæ offertur vobis grátiam in revelatiónem Jesu Christi: quasi fílii obediéntiæ, non configuráti prióribus ignorántiæ vestræ desidériis; sed secundùm eum, qui vocávit vos, Sanctum, et ipsi in omni conversatióne sancti sitis, quóniam scriptum est: Sancti éritis, quóniam ego sanctus sum. Et si Patrem invocátis eum qui sine acceptióne personárum júdicat secundùm uniuscujusque opus, in timóre incolátûs vestri témpore conversámini.

℟. Consurge, Dómine Deus, in réquiem tuam, tu et arca fortitúdinis tuæ, allelúia: * Dómine Deus, ne avérteris fáciem Christi tui, allelúia, allelúia. ℣. Pater, venit hora; clarífica Fílium tuum, ut Fílius tuus clarífícet te. * Dómine. 2 *Par.* 6. *Joan.* 17.

Lectio ii.

Scientes quod non corruptibílibus auro vel argento redempti estis de vana vestra conversatióne paternæ traditiónis, sed pretióso sánguine quasi Agni immaculáti Christi, et incontamináti; præcógniti quidem ante mundi constitutiónem, manifestáti autem novíssimis tempóribus propter vos, qui per ipsum fidéles estis in Deo qui suscitávit eum à mórtuis, et dedit ei glóriam, ut fides vestra et spes esset in Deo. Animas vestras castificantes in obediéntia caritátis, in fraternitátis amóre, símplici ex corde ínvicem dilígite atténtiùs; renáti non ex sémine corruptíbili, sed incorruptíbili per verbum Dei vivi et permanentis in æternum. Quia omnis caro ut fenum, et omnis glória ejus tanquam flos feni: exáruit fenum, et flos ejus décidit; verbum autem Dómini manet in æternum. Hoc est autem verbum quod evangelizátum est in vos.

℟. Super cœlos, Deus, et super omnem terram glória tua, allelúia; * Ut liberentur dilecti tui, allelúia, allelúia. ℣. Ego te clarificávi super terram: manifestávi nomen tuum homínibus; * Ut liberentur. *Ps.* 107. *Joan.* 17.

Lectio iii.

Léctio sancti Evangélii secundùm Lucam.

*Cap.* 11.

In illo témpore; Ait Jesus ad discípulos suos: Quis vestrûm habébit amícum, et ibit ad illum médiâ nocte, et dicet illi? Amíce, cómmoda

mihi tres panes; quóniam amícus venit de via ad me. Et réliqua.

Homília sancti Augustíni Epíscopi.

*Ep.* 130. *n.* 16 *et seq.*

Qui novit bona data dare fíliis suis, pétere nos et quærere et pulsáre compellit. Quod quare fáciat, qui novit quid nobis necessárium sit, priusquam petámus ab eo, movére ánimum potest, nisi intelligámus quod Dóminus et Deus noster non voluntátem nostram sibi velit innotéscere, quam non potest ignoráre; sed exercére in oratiónibus desidérium nostrum, quo possímus cápere quod præparat dare. Illud enim valde magnum est; sed nos ad capiendum parvi et angusti sumus. Ideo nobis dícitur: Dilatámini. Tantò quippe illud sumémus capáciùs, quantò id et fidéliùs crédimus, et sperámus fírmiùs, et desiderámus ardéntiùs. In ipsa ergo fide, et spe, et caritáte continuáto desidério semper orámus. Ac per hoc, et quod ait Apóstolus, Sine intermissióne oráte; quid est áliud quàm beátam vitam, quæ nulla nisi æterna est, ab eo qui eam solus dare potest, sine intermissióne desideráte? Semper ergo hanc à Dómino Deo desiderémus; et orámus semper. Sed ídeo ab áliis curis atque negótiis, quibus ipsum desidérium quodámmodo tepescit, certis horis ad negótium orandi mentem revocámus, verbis oratiónis nos ipsos admonentes, in id quod desiderámus inténdere; ne quod tepéscere cœperat, omníno frigescat; et pénitus extinguátur, nisi crébriùs inflammétur. Quæ cùm ita sint, étiam cùm diu oráre vacat, id est, cùm ália bonárum et necessariárum actiónum non impediuntur offícia, quamvis et in eis, ut dixi, desidério illo semper orandum sit, non est ímprobum nec inútile. Neque enim, ut nonnulli putant, hoc est oráre in multilóquio, si diútiùs orétur. Aliud est sermo multus, áliud diuturnus affectus. Absit ab oratióne multa locútio; sed non desit multa precátio, si fervens persevérat inténtio. Nam multùm loqui est in orando rem necessáriam supérfluis ágere verbis: multùm autem precári est ad eum quem precámur, diuturnâ et piâ cordis excitatióne pulsáre. Nam plerumque hoc negótium plus gemítibus quàm sermónibus ágitur, plus fletu quàm affátu.

℟. Pétite, et dábitur vobis: quærite, et inveniétis: * Pulsáte, et aperiétur vobis, allelúia, allelúia. ℣. Invocábitis et orábitis me, et ego exáudiam vos: quærétis me, et inveniétis: * Pulsáte. Glória Patri. * Pulsáte. *Luc.* 11. *Jerem.* 29.

*Non dicitur* Te Deum.

*Reliqua ut in Feriis Temporis Paschalis, suprà* 314, *exceptis quæ sequuntur.*

Ad Laudes, *post Hymn.* ℣. Déxtera Dómini fecit virtútem : ℟. Déxtera Dómini exaltávit me. *Ps.* 117.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 7. *d.* Quis ex vobis patrem petit panem, numquid lápidem dabit illi? allelúia. *Luc.* 11.

Orémus. Oratio.

Præsta, quæsumus omnípotens Deus, ut qui in afflictióne nostra de tua pietáte confídimus, contra adversa ómnia tuâ semper protectióne muniámur; Per Dóminum.

*Et dicitur ad Horas diei.*

*Ad* Magníficat. *Ant.* 1. *D.* Si vos, cùm sitis mali, nostis bona data dare fíliis vestris; quantò magìs Pater vester de cœlo dabit Spíritum bonum peténtibus se? allel. *Luc.* 11.

*Or.* Deus, à quo bona, 357.

## FERIA TERTIA IN ROGATIONIBUS.

Ad Noct. *Ps.* Deus, judícium tuum, 38. Reges Tharsis... Misericórdiam, 39.

Lectio I.

De Epístola prima beáti Petri Apóstoli. *Cap.* 2.

Deponentes omnem malítiam, et omnem dolum, et simulatiónes, et invídias, et omnes detractiónes, sicut modò géniti infantes, rationábile sine dolo lac concupíscite; ut in eo crescátis in salútem, si tamen gustastis quóniam dulcis est Dóminus. Ad quem accedentes, lápidem vivum, ab homínibus quidem reprobátum, à Deo autem electum et honorificátum; et ipsi tanquam lápides vivi superædificámini, domus spirituális, sacerdótium sanctum, offerre spirituáles hóstias, acceptábiles Deo per Jesum Christum. Propter quod cóntinet Scriptúra : Ecce pono in Sion lápidem summum angulárem, electum, pretiósum; et qui credíderit in eum, non confundétur. Vobis ígitur honor credéntibus; non credéntibus autem, lapis quem reprobavérunt ædificantes, hic factus est in caput ánguli; et lapis offensiónis et petra scándali, his qui offendunt verbo, nec credunt in quo et pósiti sunt.

℟. Cantáte Dómino, 350.

Lectio II.

Carissimi, óbsecro vos tanquam ádvenas et peregrínos abstinére vos à carnálibus desidériis quæ mílitant adversùs ánimam, conversatiónem vestram inter gentes habentes bonam; ut in eo quod detrectant de vobis tanquam de malefactóribus, ex bonis opéribus vos considérantes, gloríficent Deum in die visitatiónis. Subjecti ígitur estóte omni humánæ creatúræ propter Deum; sive regi, quasi præcellenti; sive dúcibus, tanquam ab eo missis ad vindictam malefactórum, laudem verò bonórum; quia sic est voluntas Dei, ut benefacientes obmutéscere faciátis imprudéntium hóminum ignorántiam : quasi líberi, et non quasi velámen habentes malítiæ

malítiæ libertátem, sed sicut servi Dei.

℟. Salvum fecit, 350.

LECTIO III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Lucam.

*Cap.* 11.

In illo témpore; Factum est cùm esset Jesus in quodam loco orans, ut cessávit, dixit unus ex discípulis ejus ad eum: Dómine, doce nos oráre. Et réliqua.

Homília sancti Augustíni Epíscopi.

*Ep.* 130. *n.* 21, 22, 23.

Hoc quod in Domínica oratióne pósitum est, tam latè patet, ut homo Christiánus in quálibet tribulatióne constitútus, in hoc gémitus edat, in hoc lácrymas fundat, hinc exordiátur, in hoc immorétur, ad hoc términet oratiónem. His enim verbis res ipsas memóriæ nostræ commendári oportébat. Nam quælibet ália verba dicámus, quæ affectus orantis vel præcedendo format ut cláreat, vel consequendo attendit ut crescat, nihil áliud dícimus quàm quod in ista Domínica oratióne pósitum est, si rectè et congruenter orámus. Quisquis autem id dicit quod ad istam evangélicam precem pertinére non possit, etiamsi non illícitè orat, carnáliter orat: quod néscio quemádmodum non dicátur illícitè, quandóquidem Spíritu renátos non nisi spirituáliter decet oráre. Unde líberum est áliis atque áliis verbis éadem tamen in orando dícere; sed non debet esse líberum ália dícere. Qui dicit in oratióne, verbi grátiâ: Dómine, multíplica divítias meas; aut: Da mihi tantas quantas illi vel illi dedisti; aut: Honóres meos auge; et hæc dicit, eórum habens concupiscéntiam, non id attendens, ut ex his secundùm Deum prosit homínibus: puto eum non inveníre in oratióne Domínica, quò possit hæc vota coaptáre. Quamobrem púdeat saltèm pétere quæ non pudet cúpere; aut si et hoc pudet, sed cupíditas vincit, quantò mélius hoc pétitur, ut étiam ab isto cupiditátis malo líberet, cui dícimus: Líbera nos à malo.

℟. Cùm stábitis ad orandum, dimíttite, si quid habétis adversùs áliquem; * Ut et Pater vester, qui in cœlis est, dimittat vobis peccáta vestra, allelúia, allel. ℣. Miseratiónes fácite, unusquisque cum fratre suo: et malum vir fratri suo non cógitet in corde suo; * Ut. Glória. * Ut. *Marc.* 11. *Zach.* 7.

*Dicitur* Te Deum.

AD LAUDES, *post Hymnum*, ℣. Déxtera Dómini fecit virtútem; ℟. Déxtera Dómini exaltávit me. *Ps.* 117.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 2. D. Dicit unus ex discípulis ad Jesum: Dómine, doce nos oráre, allelúia. *Luc.* 11.

Orémus. ORATIO.

Excita, Dómine, tuórum corda fidélium; ut sacris intenta doctrínis, quod precen-

tur intélligant, et petendo perseveranter, obtíneant; Per Dóminum.

*Et dicitur ad Horas diei.*

*Ad* Magníficat. *Ant.* 7. d. Cùm orátis, dícite : Pater, sanctificétur nomen tuum, allelúia. *Luc.* 11.

*Oratio*, Deus, à quo, 357.

## FERIA QUARTA IN ROGATIONIBUS VIGILIA ASCENSIONIS.

¶ *Si hodie occurrat Festum Duplex et suprà, de eo fiet Officium, cum Commem. Vigiliæ in Nocturno et Laudibus.*

*De Semiduplici aut Simplici occurrente, fiet tantùm Commem. ad Laudes.*]

### AD NOCTURNUM.

*Invit.* Fílium hóminis contínuò clarificandum, * Veníte, adorémus, allelúia. *Joan.* 13.

*Hymn.* Adeste, 307.

*Psal.* Atténdite..... Fílii Ephrem, 54. Tránstulit, 55; *sub sola Ant.* 4. a. Allelúia.

℣. Dóminus regnávit, decórem indútus est; ℟. Indútus est Dóminus fortitúdinem. *Ps.* 92.

LECTIO I.

De Epístola prima beáti Petri Apóstoli. *Cap.* 2.

OMNES honoráte : fraternitátem dilígite : Deum timéte : regem honorificáte. Servi, súbditi estóte in omni timóre dóminis, non tantùm bonis et modestis, sed étiam dyscolis. Hæc est enim grátia, si propter Dei consciéntiam sústinet quis tristítiam, pátiens injustè. Quæ enim est glória, si peccantes et colaphizáti suffertis? Sed si bene facientes patienter sustinétis, hæc est grátia apud Deum : in hoc enim vocáti estis; quia et Christus passus est pro nobis, vobis relínquens exemplum ut sequámini vestígia ejus.

℟. Consurge, 349.

LECTIO II. *Cap.* 3.

ET quis est qui vobis nóceat, si boni æmulatóres fuéritis? Sed et si quid patímini propter justítiam, beáti. Timórem autem eórum ne timuéritis, et non conturbémini. Dóminum autem Christum sanctificáte in córdibus vestris, paráti semper ad satisfactiónem omni poscenti vos ratiónem de ea, quæ in vobis est, spe : sed cum modéstia et timóre consciéntiam habentes bonam; ut in eo quod détrahunt vobis, confundantur qui calumniantur vestram bonam in Christo conversatiónem. Mélius est enim benefacientes (si voluntas Dei velit) pati, quàm malefacientes; quia et Christus semel pro peccátis nostris mórtuus est, justus pro injustis, ut nos offerret Deo, mortificátus quidem carne, vivificátus autem spíritu.

℟. Super cœlos, 349.

LECTIO III.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Joannem. *Cap.* 17.

IN illo témpore; Sublevátis Jesus óculis in cœlum, dixit:

Pater, venit hora; clarífica Fílium tuum, ut Fílius tuus clarífîcet te. Et réliqua.

Homília sancti Augustíni Epíscopi. *In Joan. tract.* 104. *n.* 3.

CLARIFICATUM à Patre Fílium nonnulli accípiunt in hoc quod ei non pepercit, sed pro nobis ómnibus trádidit eum. Sed si passióne clarificátus dícitur, quantò magis resurrectióne? Nam in passióne magis ejus humílitas quàm cláritas commendátur, Apóstolo teste qui dicit: Humiliávit semetipsum, factus obédiens usque ad mortem, mortem autem crucis. Deinde séquitur, et de ejus clarificatióne jam dicit: Propter quod et Deus illum exaltávit, et donávit ei nomen quod est super omne nomen; ut in nómine Jesu omne genu flectátur cœléstium, terréstrium, et infernórum; et omnis lingua confiteátur quia Dóminus Jesus Christus in glória est Dei Patris. Hæc est clarificátio Dómini nostri Jesu Christi, quæ ab ejus resurrectióne sumpsit exórdium.

℟. Pater, ego te clarificávi super terram; opus consummávi, quod dedisti mihi ut fáciam: * Et nunc clarífica me, tu, Pater, apud temetipsum claritáte quam hábui, priusquam mundus esset, apud te, allelúia, allel. ℣. Ostende hódie quia tu es Deus Israel, et ego servus tuus, et juxta præceptum tuum feci ómnia: * Et nunc. Glória Patri. * Et. *Joan.* 17. 3 *Reg.* 18.

*Dicitur* Te Deum.

℣ *Sacerd.* Surge, Dómine, in réquiem tuam; ℟. Tu, et arca sanctificatiónis tuæ. *Ps.* 131.

## AD LAUDES.

*Semiduplex.*

*Ant.* 1. f. Exívi à Patre, et veni in mundum, íterum relinquo mundum, et vado ad Patrem, allelúia. *Joan.* 16.

*Ant.* 7. d. Ascendo ad patrem meum, et patrem vestrum, Deum meum, et Deum vestrum, allelúia. *Joan.* 20.

*Ant.* 6. F. Si diligerétis me, gauderétis útique; quia vado ad Patrem, allelúia. *Joan.* 14.

CANTICUM. *Dan.* 7.

ASPICIEBAM in visióne noctis, * et ecce cum núbibus cœli quasi fílius hóminis veniébat;

Et usque ad Antíquum diérum pervénit: * et in conspectu ejus obtulérunt eum.

Et dedit ei potestátem, et honórem, et regnum: * et omnes pópuli, tribus, et linguæ ipsi sérvient:

Potestas ejus, potestas ætérna, quæ non auferétur; * et regnum ejus quod non corrumpétur.

*Ant.* 4. E. Non turbétur cor vestrum: vado paráre vobis locum, allelúia. *Joan.* 14.

*Ant.* 3. a. Iterum vénio, et accípiam vos ad meipsum, ut ubì sum ego, et vos sitis, allelúia. *Joan.* 14.

CAPITULUM. *Act.* 1.

APOSTOLIS præbuit seipsum vivum Jesus post passiónem suam in multis argumentis, per dies quadraginta appárens eis, et loquens de regno Dei.

*Hymnus*, Auróra, 308.

℣. Iter fácite ei qui ascendit super occásum : ℟. Dóminus nomen illi. *Ps.* 67.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 1. *D.* Pater, non pro mundo rogo, sed pro his quos dedisti mihi, quia tui sunt : et jam non sum in mundo, et hi in mundo sunt, et ego ad te vénio, allelúia. *Joan.* 17.

Orémus. ORATIO.

PRÆSTA, quæsumus omnípotens Deus, ut nostræ mentis inténtio, quò ventúræ solemnitátis gloriósus auctor ingressus est, semper intendat; et quò fide pergit, conversatióne pervéniat; Per eumdem Dóminum nostrum Jesum Christum Filium tuum.

AD HORAS, *Duplex-minus.*

AD PRIMAM.

*Ant.* 1. f. Exívi.

AD TERTIAM.

*Ant.* 7. d. Ascendo.

CAPITULUM. *Ephes.* 4.

QUOD ascendit, quid est nisi quia et descendit primùm in inferióres partes terræ? Qui descendit, ipse est, et qui ascendit super omnes cœlos, ut impléret ómnia.

℟ *br.* Exaltáre * super cœlos, Deus, *Allelúia, allelúia. Exaltáre. ℣. Et super omnem terram * glória tua. *Allelúia. Glória. Exaltáre. *Ps.* 107.

℣. Psállite Deo nostro, psállite; ℟. Psállite Regi nostro, psállite. *Ps.* 46.

AD SEXTAM.

*Ant.* 6. F. Si diligerétis me.

CAPITULUM. *Isai.* 66.

QUOMODO, si cui mater blandiátur, ita ego consolábor vos, et in Jerúsalem consolabímini : Vidébitis et gaudébit cor vestrum.

℟. *br.* Bénedic, * ánima mea, Dómino, *Allelúia, allelúia. Bénedic. ℣. Dómine Deus meus, * magnificátus es vehementer. * Allelúia. Glória. Bénedic.

℣. Sit glória Dómini in séculum ; ℟. Lætábitur Dóminus in opéribus suis. *Ps.* 103.

AD NONAM.

*Ant.* 3. a. Iterum vénio.

CAPITULUM. *Hebr.* 13.

EXEAMUS ad Jesum extra castra, impropérium ejus portantes. Non enim habémus hic manentem civitátem, sed futúram inquírimus.

℟ *br.* Elégit nobis * hæreditátem suam, * Allelúia, allelúia. Elégit. ℣. Spéciem Jacob, * quam diléxit. * Allelúia. Glória. Elégit. *Ps.* 46.

℣. Cantent in viis Dómini, quóniam magna est glória Dómini; ℟. Quóniam excelsus Dóminus, et humília réspicit. *Ps.* 137.

# IN ASCENSIONE DOMINI.

## ANNUALE-MINUS.

### IN I VESPERIS.

*Psalmi de Feria quarta.*

*Ant.* 1. J. Quis ascendit in cœlum, atque descendit? quis suscitávit omnes términos terræ? quod nomen est ejus, si nosti? allelúia. *Prov.* 30.

*Ant.* 7. a. Non est Deus álius, ut Deus ascensor cœli: magnificéntiâ ejus discurrunt nubes: habitáculum ejus sursum, allelúia. *Deut.* 33.

*Ant.* 3. a. Ascendet pandens iter ante eos: et transíbit Rex eórum coram eis, et Dóminus in cápite eórum, allelúia. *Mich.* 2.

*Ant.* 5. C. Ecce intélliget, exaltábitur et elevábitur, et sublímis erit valde, allelúia. *Is.* 52.

*Ant.* 4. *D.* Stabunt pedes ejus in die illa super montem Olivárum, qui est contra Jerúsalem ad orientem, allelúia. *Zach.* 14.

CAPITULUM. *Act.* 3.

PRÆDICATUS est vobis Jesus Christus, quem oportet quidem cœlum suscípere, usque in témpora restitutiónis ómnium quæ locútus est Deus per os sanctórum suórum à século Prophetárum.

℟. Attóllite portas, príncipes, vestras: et elevámini, portæ æternáles, allelúia; et introíbit Rex glóriæ. * Quis est iste Rex glóriæ? † Dóminus virtútum ipse est Rex glóriæ, allelúia, allelúia. ℣. Hunc príncipem Deus exaltávit déxterâ suâ.* Quis est. Glória. † Dóminus. *Ps.* 23. *Act.* 5.

*Hymnus,* Opus peregisti tuum, *infrà* 370.

℣. Regnábit Deus super gentes: ℟. Deus sedet super sedem sanctam suam. *Ps.* 46.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 7. G. Ecce cum núbibus cœli quasi Filius hóminis veniébat, et usque ad Antíquum diérum pervénit; et in conspectu ejus obtulérunt eum: et dedit ei potestátem, et honórem, et regnum, allelúia. *Dan.* 7.

*Oratio ut infrà ad Laudes.*

AD COMPLETORIUM, *Ant. etc. ut infrà* 371.

### AD NOCTURNUM.

*Invitat.* Allelúia: Dóminum Jesum euntem in cœlum, * Veníte, adorémus, allelúia. *Act.* 1.

HYMNUS. *B.*

PROMISSA, tellus, cóncipe gáudia;
Te fausta cœlo conciliat dies:
Deus tumentes ponet iras:
Sancta tuus Mediátor intrat.
Tu, Christe, victor mortis et ínferi,

Cruóre partam súscipe glóriam :
Procéde, regna, sume sceptrum ;
Subjicitur tibi totus orbis.

Quid obstupentes suspicitis polo,
O vos, euntem, discipuli, Deum?
Ut nunc redemptor scandit astra,
Sic veniet metuendus ultor.

O Christe, dextræ qui Patris ássides,
Fac nos triumphi participes tui :
Certámen urget : militémus,
Et, duce te, superémus hostem.

Laus summa Patri, qui Genitum polo
Pacis perennis súscipit óbsidem :
Laus, qui triumphat, summa Nato :
Par tibi laus, utriusque Nexus. Amen.

*Ps.* Dómine Dóminus noster, 30.

*Ant.* 5. C. Eleváta est magnificéntia tua super cœlos, Deus, allelúia.

*Ps.* In Dómino confído, 66.

*Ant.* 1. J. Dóminus in templo sancto suo : Dóminus in cœlo, allelúia.

*Ps.* Cœli enarrant, *cum sua divisione,* 38.

*Ant.* 7. *d.* A summo cœlo egréssio ejus, et occursus ejus usque ad summum ejus, allelúia.

℣. Psállite Deo qui ascendit super cœlum cœli. ℟. Ad orientem. *Ps.* 67.

LECTIO I.

De Actibus Apostolórum.

*Cap.* 1.

Dixit Jesus Apóstolis : Accipiétis virtútem supervenientis Spíritûs sancti in vos, et éritis mihi testes in Jerúsalem, et in omni Judæa et Samaría, et usque ad últimum terræ. Et cùm hæc dixisset, vidéntibus illis, elevátus est ; et nubes suscépit eum ab óculis eórum. Cùmque intuerentur in cœlum euntem illum, ecce duo viri astitérunt juxta illos in véstibus albis, qui et dixérunt : Viri Galilæi, quid statis aspicientes in cœlum? Hic Jesus, qui assumptus est à vobis in cœlum, sic véniet quemádmodum vidistis eum euntem in cœlum. Tunc reversi sunt Jerosólymam à monte qui vocátur Olivéti, qui est juxta Jerúsalem, sábbati habens iter. Et cùm introissent in cœnáculum, ascendérunt ubi manébant Petrus et Joannes, Jacóbus et Andréas, Philippus et Thomas, Bartholomæus et Matthæus, Jacóbus Alphæi, et Simon Zelótes, et Judas Jacóbi. Hi omnes erant perseverantes unanímiter in oratióne cum muliéribus, et María matre Jesu, et frátribus ejus.

℟. Eduxit Jesus discípulos foràs in Bethaníam, et, elevátis mánibus, benedixit eis ; et factum est, * Dum benedíceret illis, recessit ab eis, et ferebátur in cœlum, allelúia, allelúia. ℣. Sedébit Dó-

minus rex in æternum : Dóminus benedícet pópulo suo in pace: * Dum benedíceret. *Luc.* 24. *Ps.* 28.

LECTIO II.

Sermo sancti Leónis Papæ. *De Ascens.* 2. *c.* 1, 2, 3.

SICUT in solemnitáte paschâli resurréctio Dómini fuit nobis causa lætandi ; ita ascénsio ejus in cœlos præséntium nobis est matéria gaudiórum, recoléntibus illum diem et ritè venerántibus, quo explétis ómnibus quæ evangélicæ prædicatióni et novi Testamenti mystériis congruébant, Dóminus noster Jesus Christus, quadragésimo post resurrectiónem die, coram discípulis elevátus in cœlum, corporális præséntiæ modum fecit, mansúrus in Patris déxtera, donec témpora multiplicandis Ecclésiæ fíliis divínitus præstitúta peragantur, et ad judicandos vivos et mórtuos in eádem carne, in qua ascendit, advéniat. Exultémus ítaque, dilectíssimi, gáudio spiritáli ; et digná apud Deum gratiárum actióne lætantes, líberos cordis óculos ad illam altitúdinem, in qua Christus est, erigámus. Sursum vocátos ánimos desidéria terréna non déprimant ; ad æterna præelectos peritúra non óccupent; viam veritátis ingressos falláces illécebræ non retardent : et ita à fidélibus hæc temporália decurrantur, ut peregrinári se in hac mundi valle cognoscant, in qua, etiamsi quædam cómmoda blandiantur, non amplectenda néquiter, sed transeunda sunt fórtiter.

℟. Vidéntibus Apóstolis, * Jesus elevátus est ; et nubes suscépit eum ab óculis eórum, allel. allel. ℣. Ascendit Elías in cœlum ; Eliséus autem vidébat, et clamábat : Pater mi ; et non vidit eum ámpliùs. * Jesus. *Act.* 1. 4 *Reg.* 2.

LECTIO III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Marcum.

*Cap.* 16.

IN illo témpore; Recumbéntibus Undecim appáruit Jesus, et exprobrávit incredulitátem eórum, et durítiam cordis ; quia iis, qui víderant eum resurrexisse, non credidérunt. Et réliqua.

Homília sancti Gregórii Papæ. *In Ev.* 29. *n.* 10, 11.

QUOD resurrectiónem Domínicam discípuli tardè credidérunt, non tam illórum infírmitas, quàm nostra, ut ita dicam, futúra fírmitas fuit. Ipsa namque resurréctio illis dubitántibus per multa argumenta monstráta est : quæ dum nos legentes agnóscimus, quid áliud quàm de illórum dubitatióne solidámur? Minus enim mihi María Magdaléne præstitit, quæ citiùs crédidit, quàm Thomas qui diu dubitávit. Ille étenim dubitando, vúlnerum cicatríces tétigit, et de nostro péctore dubitatiónis vulnus amputávit. Dóminus tunc discípulos increpávit, cùm eos corporá-

liter relíquit; ut verba quæ recédens díceret, in córdibus audiéntium árctiùs impressa remanérent. Et Dóminus quidem Jesus, postquam locútus est, assumptus est in cœlum, non curru, non Angelis sublevátus; quia is qui fécerat ómnia, nimírum super ómnia suâ virtúte ferebátur. Exultávit ut gigas ad currendam viam suam, ut nos ei dicerémus ex corde: Trahe nos; post te currémus in odórem unguentórum tuórum. Unde, fratres caríssimi, Christum oportet ut illúc sequámur corde, ubi eum córpore ascendisse crédimus. Desidéria terréna fugiámus; nihil nos jam delectet in ínfimis, qui Patrem habémus in cœlis.

℟. Ascendit Deus in júbilo: * Psállite Deo nostro, psállite Regi nostro; quóniam rex omnis terræ Deus, allelúia, allelúia. ℣. Dóminus Jesus assumptus est in cœlum, et sedet à dextris Dei. * Psállite Deo. Glória. * Psállite Deo. *Ps.* 46. *Marc.* 16.

*Repetitur* ℟ Ascendit, *usque ad* ℣.

℣ *Sacerd.* Benedictus es, Dómine, in throno regni tui, ℟. Et superlaudábilis, et superexaltátus in sécula. *Dan.* 3.

## AD LAUDES.

*Psalmi de Dominica.*

*Ant.* 3. a. Christus Póntifex futurórum bonórum, per próprium sánguinem introívit semel in sancta, allelúia. *Hebr.* 9.

*Ant.* 4. E. Non in manufacta Sancta Jesus introívit, exemplária verórum; sed in ipsum cœlum, ut appáreat nunc vúltui Dei pro nobis, allelúia. *Hebr.* 9.

*Ant.* 1. g. Talis decébat ut nobis esset Póntifex, sanctus, ínnocens, excélsior cœlis factus, allelúia. *Hebr.* 7.

Canticum. *Dan.* 3.

Benedictus es, Dómine Deus patrum nostrórum; * et laudábilis, et gloriósus, et superexaltátus in sécula.

Et benedictum nomen glóriæ tuæ sanctum; * et laudábile, et superexaltátum in ómnibus séculis.

Benedictus es in templo sancto glóriæ tuæ; * et superlaudábilis, et supergloriósus in sécula.

Benedictus es in throno regni tui; * et superlaudábilis et superexaltátus in sécula.

Benedictus es, qui intuéris abyssos, et sedes super Chérubim; * et laudábilis, et superexaltátus in sécula.

Benedictus es in firmamento cœli; * et laudábilis, et gloriósus in sécula.

*Ant.* 5. a. Habentes Sacerdótem magnum, accedámus cum vero corde, in plenitúdine fídei, allelúia. *Hebr.* 10.

*Ant.* 8. G. Deus dedit ei glóriam, ut fides vestra et spes esset in Deo, allelúia. 1 *Petr.* 1.

Capitulum. *Hebr.* 1.

Christus cùm sit splendor glóriæ, et figúra substántiæ Dei, portansque ómnia verbo virtútis suæ, purgatiónem

peccatórum fáciens, sedet ad déxteram majestátis in excelsis.

HYMNUS.

Jesu, nostra redémptio,
Amor et desidérium,
Deus creátor ómnium,
Homo in fine témporum :
Quæ te vicit cleméntia,
Ut nostra ferres crímina,
Crudélem mortem pátiens,
Ut nos à morte tólleres?
Inferni claustra pénetrans,
Tuos captívos rédimens.
Victor triumpho nóbili,
Ad dextram Patris résidens.
Ipsa te cogat pietas
Ut mala nostra súperes
Parcendo, et voti cómpotes
Nos tuo vultu sáties.
Tu esto nostrum gáudium,
Qui es futúrus præmium :
Sit nostra in te glória
Per cuncta semper sécula.
Amen.

℣. Dóminus in cœlo parávit sedem suam; ℟. Et regnum ipsíus ómnibus dominábitur. *Ps.* 102.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 1. J. Christus Jesus mórtuus est, et resurrexit, qui est ad déxteram Dei, qui étiam interpellat pro nobis, allelúia. *Rom.* 8.

Orémus. ORATIO.

Concede, quæsumus omnípotens Deus, ut qui hodiernâ die Unigénitum tuum redemptórem nostrum ad cœlos ascendisse crédimus, ipsi quoque mente in cœléstibus habitémus; Per eumdem.

Ad Horas, *in fine Hymnorum, post strophen* Da, Christe, *dicitur sequens Doxologia:*

¶ Qui victor ad cœlum redis,
Jesu tibi sit glória,
Cum Patre, cumque Spíritu,
In sempiterna sécula.
Amen.

¶ *Hæc Doxologia dicitur in fine Hymnorum ejusdem metri, usque ad Octavam Ascensionis exclusivè, nisi propria assignetur.*

*Psalmi de Dominica.*

AD PRIMAM.

*Ant.* 3. a. Christus.

*In* ℟ *br.* ℣. Qui victor * ad cœlum redis. * Allelúia.

AD TERTIAM.

*Ant.* 4. E. Non in manufacta Sancta.

CAPITULUM. *Hebr.* 8.

Talem habémus Pontíficem, qui consédit in déxtera sedis magnitúdinis in cœlis; sanctórum minister, et tabernáculi veri quod fixit Dóminus, et non homo.

℟ *br.* Dixit Dóminus Dómino meo : * Sede à dextris meis, * Allelúia, allelúia. Dixit. ℣. Donec ponam inimícos tuos * scabellum pedum tuórum. * Allelúia. Glória Patri. Dixit.

℣. Tu es Sacerdos in ætemum ℟. Secundùm órdinem Melchísedech. *Ps.* 109.

AD SEXTAM.

*Ant.* 1. g. Talis decébat.

CAPITULUM. *Hebr.* 7.

Christus sempiternum habet sacerdótium; unde et salváre in perpétuum potest accedentes per semetipsum ad Deum, semper vivens ad interpellandum pro nobis.

℟ *br.* Vidérunt * ingressus tuos, Deus,*Allelúia, allelúia. Vidérunt. ℣. Ingressus Regis mei * qui est in sancto. * Allelúia. Glória Patri. Vidérunt.

℣. Ascendisti in altum, cepisti captivitatem : ℟. Accepisti dona in homínibus. *Ps.* 67.

AD NONAM.

*Ant.* 8. G. Deus.

CAPITULUM. *Hebr.* 2.

Eum qui módico quàm Angeli minorátus est, vidémus Jesum, propter passiónem mortis, glóriâ et honóre coronátum.

℟ *br.* Minuisti eum * paulò minùs ab Angelis, * Allelúia. allelúia. Minuisti. ℣. Glóriâ et honóre * coronasti eum. *Allelúia. Glória. Minuisti.

℣. Constituisti eum super ópera mánuum tuárum : ℟. Omnia subjecisti sub pédibus ejus. *Ps.* 8.

AD II VESPERAS.

*Ps.* Dixit Dóminus, 18.

*Ant.* 1. f. Ad quem Angelórum dixit Deus aliquando : Sede à dextris meis, quoadusque ponam inimícos tuos scabellum pedum tuórum? allelúia. *Hebr.* 1.

*Ps.* Confitébor tibi, 18.

*Ant.* 3. a. Nemo ascendit in cœlum, nisi qui descendit de cœlo, Fílius hóminis qui est in cœlo, allelúia. *Joan.* 3.

*Ps.* Laudáte púeri, 19.

*Ant.* 5. C. Qui descendit ipse est et qui ascendit super omnes cœlos, ut impléret ómnia, allelúia. *Ephes.* 4.

*Ps.* Lætátus sum, 49.

*Ant.* 6. F. Initiávit nobis viam novam et viventem per velámen, id est carnem suam, allelúia. *Hebr.* 10.

*Psal.* Confitébor..... quóniam, 79.

*Ant.* 7. a. Omnis lingua confiteátur quia Dóminus Jesus Christus in glória est Dei Patris, allelúia. *Philip.* 2.

CAPITULUM. *Ephes.* 2.

Conresuscitavit nos Deus, et consedére fecit in cœléstibus in Christo Jesu, ut osténderet in séculis superveniéntibus abundantes divítias grátiæ suæ in bonitáte super nos in Christo Jesu.

HYMNUS. *C.*

Opus peregisti tuum :
Te, Christe, victórem necis
Æterna, quam relíqueras,
Cœlo reposcit glória.

Jam nube vectus fúlgidâ,
Terras jacentes déspicis :
Educta longo cárcere
Regem sequuntur ágmina.

Mirante turmâ cœlitûm,
Panduntur æternæ fores;
Ovansque sublímem Patris
Homo Deus scandis thronum.

Illic patrónus, póntifex,
Pacis sequester, quem tua
Semel profúdit cáritas,
Offerre pergis sánguinem.

Illinc adornas et foves
Ecclésiam sponsus tuam ;
Cunctisque vitam dívidis,
Infúsa ceu mens, ártubus.

Illinc tot inter prælia
Periclitantem sústines;
Das militanti víncere,
Palmam triumphanti paras.

Quo, Christe, præcédis caput,
Huc íntegrum corpus vocas:
Vestígiis tritam tuis
Fac membra sectentur viam.
¶ Qui victor ad cœlum redis,
Jesu, tibi sit glória,
Cum Patre, cumque Spíritu,
In sempiterna sécula. Amen.

℣. Excelsus super omnes gentes Dóminus, ℟. Et super cœlos glória ejus. *Ps.* 112.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 1. D. Habentes Pontíficem magnum, qui penetrávit cœlos, Jesum Fílium Dei, teneámus confessiónem, allelúia. *Hebr.* 4.

*Oratio ut suprà ad Laudes.*

AD COMPLETORIUM.

*Psalmi de Dominica.*

*Ant.* 3. à. Lucerna civitátis est Agnus; et ambulábunt gentes in lúmine ejus, allelúia. *Apoc.* 21.

*Hymnus*, Jesu redemptor séculi, 313, *cum strophe*, Da, Christe; *et Doxologia*, ¶ Qui victor, *ut suprà.*

*Ad* Nunc dimittis. *Ant.* 1. a. Scimus quóniam, cùm apparúerit, símiles ei érimus; quóniam vidébimus eum sícuti est, allelúia. 1 *Joan.* 3.

## DIEBUS INTRA OCTAVAM ASCENSIONIS.

*Semiduplex.*

*Omnia ut in die, exceptis quæ sequuntur.*

AD NOCTURNUM.

*Tres Psalmi infrà notati in qualibet Feria, sub sola* *Ant.* 7. c. Jesus ferebátur in cœlum: et discípuli adorantes, regressi sunt in Jerúsalem cum gáudio magno, allelúia. *Luc.* 24.

℣. Ascendit super Chérubim, et volávit, ℟. Volávit super pennas ventórum. *Ps.* 17.

*Lectiones et* ℟℟. *ut infrà, in qualibet Feria.*

AD LAUDES.

*Psalmi de Feria, cum Cantico de Festo,* 368, *sub sola* *Ant.* 2. D. Cùm introissent in cœnáculum, ascendérunt ubi manébant (Apóstoli:) hi omnes erant perseverantes unanímiter in oratióne, allelúia. *Act.* 1.

AD HORAS.

*Psalmi de Feria. Reliqua ut in die Ascensionis,* 369. *Canon ad Primam dicitur ut habetur pro qualibet Feria.*

AD VESPERAS.

*Psalmi de Feria, sub sola* *Ant.* 6. F. Erant semper in templo, laudantes et benedicentes Deum, allel. *Luc.* 24.

AD COMPLETORIUM, *Psal. de Feria. Reliqua ut suprà.*

## FERIA SEXTA INTRA OCTAVAM ASCENSIONIS.

AD NOCT. *Ps.* Eripe me, 82. Deus ostendet..... Exaudi, Deus, 83.

LECTIO I.

De Epístola prima beáti Petri Apóstoli. *Cap.* 4.

Estote prudentes, et vigiláte in oratiónibus. Ante ómnia autem, mútuam in

vobismetipsis caritátem contínuam habentes; quia cáritas óperit multitúdinem peccatórum. Hospitáles ínvicem sine murmuratióne. Unusquísque, sicut accépit grátiam, in altérutrum illam administrantes, sicut boni dispensatóres multiformis grátiæ Dei. Si quis lóquitur, quasi sermónes Dei: si quis ministrat, tanquam ex virtúte quam administrat Deus; ut in ómnibus honorificétur Deus, per Jesum Christum, cui est glória, et impérium in sécula seculórum: Amen. Caríssimi, nolíte peregrinári in fervóre qui ad tentatiónem vobis fit, quasi novi áliquid vobis contingat: sed communicantes Christi passiónibus, gaudéte, ut et in revelatióne glóriæ ejus gaudeátis exultantes. Si exprobrámini in nómine Christi, beáti éritis; quóniam quod est honóris, glóriæ et virtútis Dei, et qui est ejus Spíritus, super vos requiescit.

℟. Auctor fidei et consummátor Jesus, propósito sibi gáudio, sustínuit crucem, confusióne contemptâ; * Atque in déxtera sedis Dei sedet, allelúia, allelúia. ℣. Date glóriam Deo super Israel: magnificéntia ejus et virtus ejus in núbibus; * Atque. *Hebr.* 12. *Ps.* 67.

LECTIO II.

Sermo sancti Leónis Papæ.

*De Ascens.* 1. *c.* 1, 4.

Post beátam et gloriósam resurrectiónem Dómini nostri Jesu Christi, quâ verum Dei templum Judáicâ impietáte resolútum, divína in tríduo poténtia suscitávit; quadragenárius hódie, dilectíssimi, sanctórum diérum explétus est númerus, sacratíssimâ ordinatióne dispósitus, et ad utilitátem nostræ eruditiónis impensus; ut dum à Dómino in hoc spátium mora præséntiæ corporális exténditur, fides resurrectiónis documentis necessáriis munirétur. Mors enim Christi multùm discipulórum corda turbáverat; et de supplício crucis, de emissióne spíritûs, de exanimáti córporis sepultúra, gravátis mœstitúdine méntibus quidam diffidéntiæ torpor obrépserat. Per omne ergo tempus, quod inter Resurrectiónem et Ascensiónem Dómini exactum est, hoc providéntia Dei curávit, hoc suórum et óculis insinuávit et córdibus, ut Dóminus Jesus verè agnoscerétur resuscitátus, qui verè erat et natus, et passus, et mórtuus. Unde beatíssimi Apóstoli omnesque discípuli, qui et de éxitu crucis fúerant trépidi, et de fide resurrectiónis ambígui, ita sunt veritáte perspícuâ roboráti, ut Dómino in cœlórum eunte sublímia, non solùm nullâ afficeréntur tristítiâ, sed étiam magno gáudio repleréntur.

℟. Deus exaltávit illum, et donávit illi nomen quod est super omne nomen; ut in

nómine Jesu omne genu flectátur * Cœléstium, terréstrium, et infernórum, allelúia, allel. ℣. Dicit Dóminus: In memetipso jurávi, quia mihi curvábitur omne genu, et jurábit omnis lingua, * Cœléstium. *Philip.* 2. *Is.* 45.

LECTIO III.

Et revérâ magna et ineffábilis erat causa gaudendi, cùm in conspectu sanctæ multitúdinis super ómnium creaturárum cœléstium dignitátem humáni géneris natúra conscénderet, supergressúra Angélicos órdines, et ultra Archangelórum altitúdines elevanda; nec ullis sublimitátibus modum suæ provectiónis habitúra, nisi æterni Patris recepta consessu, illíus glóriæ sociarétur in throno, cujus natúræ copulabátur in Fílio. Quia ígitur Christi Ascénsio nostra provéctio est; et quò præcessit glória cápitis, eò spes vocátur et córporis: dignis, dilectíssimi, exultémus gáudiis, et piâ gratiárum actióne lætémur. Hódie enim non solùm paradísi possessóres firmáti sumus, sed étiam cœlórum in Christo superna penetrávimus; amplióra adepti per ineffábilem Christi grátiam, quàm per diáboli amiserámus invídiam.

℟. Christus Jesus in sempiternum sedet in déxtera Dei, de cétero * Expectans donec ponantur inimíci ejus scabellum pedum ejus, allelúia, allelúia. ℣. Dómini est regnum; et ipse dominábitur géntium, * Expectans. Glória. * Expectans. *Hebr.* 10. *Ps.* 21.

## SABBATO

INTRA OCTAVAM ASCENSIONIS

AD NOCTURN. *Ps.* Nonne Deo, 98. Exaudi.... Confitébimur, 99.

LECTIO I.

De Epístola prima beáti Petri Apóstoli.

*Cap.* 5.

Seniores qui in vobis sunt, óbsecro, consénior et testis Christi passiónum, qui et ejus, quæ in futúro revelanda est, glóriæ communicátor: Páscite qui in vobis est gregem Dei, providentes non coactè, sed spontáneè secundùm Deum; neque turpis lucri grátiâ, sed voluntáriè; neque ut dominantes in cleris, sed forma facti gregis ex ánimo. Et cùm apparúerit Princeps pastórum, percipiétis immarcescíbilem glóriæ corónam. Simíliter, adolescentes, súbditi estóte senióribus. Omnes autem ínvicem humilitátem insinuáte, quia Deus superbis resistit, humílibus autem dat grátiam. Humiliámini ígitur sub potenti manu Dei, ut vos exaltet in témpore visitatiónis; omnem sollicitúdinem vestram projicientes in eum, quóniam ipsi cura est de vobis. Sóbrii estóte, et vigiláte; quia adversárius vester diá-

bolus, tanquam leo rúgiens círcuit, quærens quem dévoret: cui resístite fortes in fide; scientes eamdem passiónem ei, quæ in mundo est, vestræ fraternitáti fíeri. Deus autem omnis grátiæ, qui vocávit nos in æternam suam glóriam in Christo Jesu, módicùm passos ipse perfíciet, confirmábit, solidabítque. Ipsi glória, et impérium in sécula seculórum: Amen. Tu autem.

℟. Ad interióra veláminis præcursor * Pro nobis introívit Jesus, Póntifex factus in æternum, allelúia, allelúia. ℣. Póntifex ultra velum intrábit in Sancta, ut roget pro universo cœtu Israel. * Pro nobis. *Hebr.* 6. *Levit.* 16.

LECTIO II.

De Sermóne sancti Leónis Papæ.

*De Ascens.* 2. *cap.* 1.

SACRAMENTUM, dilectíssimi, salútis nostræ, quam prétio sánguinis sui universitátis Cónditor æstimávit, à die corporális ortûs, usque ad éxitum passiónis, per dispensatiónem humilitátis implétum est. Et licèt multa étiam in forma servi divinitátis signa radiáverint, própriè tamen illíus témporis áctio ad demonstrandam suscepti hóminis pertínuit veritátem. Post passiónem verò, ruptis mortis vínculis, quæ vim suam, in eum qui peccáti erat néscius, incedendo perdíderat: infírmitas in virtútem, mortálitas in immortalitátem, contumélia transívit in glóriam: quam Dóminus Jesus Christus in multis manifestisque documentis, multórum declarávit aspéctibus, donec triumphum victóriæ, quem reportárat à mórtuis, inferret et cœlis. Quo órdine óperum divinórum nos fundáti, nos ædificáti sumus; ut mirabílior fíeret grátia Dei, cùm remótis à conspectu hóminum, quæ méritò reveréntiam suî sentiebantur indícere, fides non defíceret, spes non fluctuáret, cáritas non tepéret.

℟. Ipse est ante omnes, et ómnia in ipso constant: * Et ipse est caput córporis Ecclésiæ, primogénitus ex mórtuis; ut sit in ómnibus ipse primátum tenens, allelúia. ℣. Regnábit Dóminus in monte Sion, ex hoc nunc, et usque in æternum: * Et. *Colos.* 1. *Mich.* 4.

LECTIO III. *Cap.* 3.

IPSI beáti Apóstoli, qui tot miráculis confirmáti, tot sermónibus erudíti, atrocitátem tamen Domínicæ passiónis expáverant, et veritátem resurrectiónis ejus non sine hæsitatióne suscéperant, tantùm de ascensióne Dómini profecérunt, ut quidquid illis priùs intúlerat metum, verterétur in gáudium. Totam enim contemplatiónem ánimi in divinitátem ad Patris déxteram consedentis eréxerant, nec jam corpóreæ visiónis tardabantur objectu, quóminus in id áciem mentis inténderent,

quod nec à Patre descendendo abfúerat, nec à discípulis ascendendo discésserat. Tunc ígitur, dilectíssimi, Fílius hóminis Dei Fílius, excellentiùs sacratiùsque innótuit, cùm in patérnæ majestátis glóriam se recépit; et ineffábili modo cœpit esse divinitáte præséntior, qui factus est humanitáte longínquior. Tunc ad æquálem Patri Fílium erudítior fides gressu mentis cœpit accédere, et contrectatióne in Christo corpóreæ substántiæ, quæ Patre minor est, non egére; quóniam glorificáti córporis manente natúrâ, eò fides credéntium vocabátur, ubi non carnáli manu, sed spiritáli intellectu, par Genitóri Unigénitus tangerétur.

℟. Deus Pater glóriæ constítuens Christum ad déxteram suam in cœléstibus supra omnem Principátum, * Ipsum dedit caput supra omnem Ecclésiam, allelúia, allelúia. ℣. Fílii hóminum, úsquequo gravi corde? Scitóte quóniam mirificávit Dóminus sanctum suum. * Ipsum. Glória. * Ipsum. *Ephes.* 1. *Ps.* 4.

AD VESPERAS.

*Psalmi de Sabbato, sub sola Ant.* 6. F. Erant semper in templo laudántes et benedicentes Deum, allel. *Luc.* 24.

CAPITULUM. *Colos.* 3.

Quæ sursum sunt quærite, ubi Christus est in déxtera Dei sedens: quæ sursum sunt sápite, non quæ super terram; mórtui enim estis, et vita vestra est abscóndita cum Christo in Deo.

*Hymnus,* Opus, 370.

℣. Excelsus super omnes gentes Dóminus, ℟. Et super cœlos glória ejus. *Ps.* 112.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 7. G. Per Christum máxima et pretiósa nobis promissa donávit Deus, ut per hæc efficiámini divínæ consortes natúræ, allelúia. 2 *Petr.* 1.

*Oratio ut infrà ad Laudes.*

*Non fit alia Commemoratio Ascensionis.*

AD COMPLETORIUM. *Ant. etc. ut suprà,* 371.

## DOMINICA

### INTRA OCTAVAM ASCENSIONIS.

*Omnia ut in die Ascensionis, præter ea quæ hìc sunt propria.*

AD NOCTURNUM.

*Tres Psalmi è III Nocturno Dominicæ, pag.* 5, *sub sola Ant.* 1. a. Fílius qui rectúrus erat omnes gentes, raptus est ad Deum, et ad thronum ejus, allelúia. *Apoc.* 12.

℣. Sedes tua, Deus, in séculum séculi: ℟. Virga directiónis, virga regni tui. *Ps.* 44.

LECTIO I.

Incipit Epístola secunda beáti Petri Apóstoli.

*Cap.* 1.

Simon Petrus, servus et Apóstolus Jesu Christi, iis qui coæquálem nobiscum sortíti

sunt fidem in justítia Dei nostri, et Salvatóris Jesu Christi. Grátia vobis et pax adimpleátur in cognitióne Dei, et Christi Jesu Dómini nostri: quómodo ómnia nobis divínæ virtútis suæ, quæ ad vitam et pietátem donáta sunt, per cognitiónem ejus qui vocávit nos própriâ glóriâ et virtúte, per quem máxima et pretiósa nobis promissa donávit; ut per hæc efficiámini divínæ consortes natúræ: fugientes ejus, quæ in mundo est, concupiscéntiæ corruptiónem. Vos autem curam omnem subinferentes, ministráte in fide vestra virtútem, in virtúte autem sciéntiam, in sciéntia autem abstinéntiam, in abstinéntia autem patiéntiam, in patiéntia autem pietátem, in piétate autem amórem fraternitátis, in amóre autem fraternitátis caritátem. Hæc enim si vobiscum adsint, et súperent, non vácuos nec sine fructu vos constítuent in Dómini nostri Jesu Christi cognitióne. Cui enim non præstò sunt hæc, cæcus est et manu tentans, obliviónem accípiens purgatiónis véterum suórum delictórum. Quapropter, fratres, magis satágite, ut per bona ópera certam vestram vocatiónem et electiónem faciátis; hæc enim facientes, non peccábitis aliquando.

℟. Exaltáre, Dómine, in virtúte tua, allelúia. * Cantábimus et psallémus virtútes tuas, allelúia, allelúia. ℣. Grátias ágimus tibi, Dómine Deus omnípotens, quia accepisti virtútem tuam magnam, et regnasti: * Cantábimus. *Ps.* 20. *Apoc.* 11.

LECTIO II.

Sermo sancti Augustíni Epíscopi. 261.

Resurrectio Dómini spes nostra: ascénsio Dómini glorificátio nostra. Si ergo rectè, si fidéliter, si devótè, si sanctè, si piè Ascensiónem Dómini celebrámus, ascendámus cum illo, et sursum cor habeámus. Ascendentes autem non extollámur, nec de nostris quasi de própriis méritis præsumámus. Sursum enim cor habére debémus, sed ad Dóminum. Sursum enim cor non ad Dóminum, supérbia vocátur; sursum autem cor ad Dóminum, refúgium vocátur. Illi enim dícimus qui ascendit: Dómine, refúgium factus es nobis. Resurrexit enim, ut spem nobis daret quia resurgit quod móritur, ne moriendo desperarémus, et totam vitam nostram morte finítam putarémus. Sollíciti enim erámus de ipsa ánima; et ille nobis, resurgendo, et de carne securitátem dedit.

℟. Confiteantur tibi, Dómine, et cantent * Quóniam magna est glória Dómini; quóniam excelsus Dóminus, allelúia, allelúia. ℣. Salus Deo nostro qui sedet super thronum, et Agno: * Quóniam magna est glória Dómini. *Ps.* 137 *Apoc.* 7.

LECTIO III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Joannem.

*Cap.* 15.

IN illo témpore; Dixit Jésus discípulis suis : Cùm vénerit Paraclétus, quem ego mittam vobis à Patre, Spíritum veritátis qui à Patre procédit, ille testimónium perhibébit de me. Et réliqua.

Homília sancti Augustíni Epíscopi. *In Joan. tract.* 92. *n.* 1, 2.

DOMINUS dicébat : Odio habuérunt me gratis : cùm autem vénerit Paraclétus, ille testimónium perhibébit de me. Tanquam díceret : Odio me habuérunt, et occidérunt videntes; sed tale de me Paraclétus testimónium perhibébit, ut eos fáciat in me crédere non videntes. Et vos, inquit, testimónium perhibébitis, quia ab inítio mecum estis. Perhibébit Spíritus sanctus, perhibébitis et vos. Quia enim ab inítio mecum estis, potestis prædicáre quod nostis : quod ut modò non faciátis, illíus Spiritûs plenitúdo nondum adest vobis. Ille ergo testimónium perhibébit de me, et vos perhibébitis; dabit enim vobis fidúciam testimónium perhibendi cáritas Dei diffúsa in córdibus vestris per Spíritum sanctum qui dábitur vobis.

℟. Cùm vénerit Paraclétus qui à Patre procédit, ille testimónium perhibébit de me : * Et vos testimónium perhibébitis, quia ab inítio mecum estis, allelúia, allelúia. ℣. Ego sum Dóminus, et non est absque me Salvátor : ego salvávi; vos testes mei, et ego Deus. * Et vos. Glória Patri. * Et vos. *Joan.* 15. *Is.* 43.

AD LAUDES.

CAPITULUM. *Ephes.* 1.

OMNIA subjécit Deus sub pédibus ejus; et ipsum dedit caput supra omnem Ecclésiam, quæ est corpus ipsíus, et plenitúdo ejus qui ómnia in ómnibus adimplétur.

*Hymn.* Jesu nostra redémptio, 369.

℣. Dóminus in cœlo parávit sedem suam; ℟. Et regnum ipsíus ómnibus dominábitur. *Ps.* 102.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 1. *D.* Ego mittam vobis à Patre Spíritum veritátis, allelúia. *Joan.* 15.

Orémus. ORATIO.

DEUS, cujus Fílius in alta cœlórum potenter ascendens, captivitátem nostram suâ duxit virtúte captívam : tríbue, quæsumus, ut dona quæ discípulis suis cóntulit, largiátur et nobis; Qui tecum.

AD PRIMAM, *omittitur Symbolum* Quicumque.

AD VESPERAS.

*Psalmi de Dominica.*

CAPITULUM. 1 *Petr.* 3.

JESUS Christus est in déxtera Dei, deglútiens mortem, ut vitæ ætérnæ hærédes efficerémur : profectus in cœlum, subjectis sibi Angelis, et Potestátibus, et Virtútibus.

*Hymnus,* Opus, 370.

℣. Excelsus super omnes

gentes Dóminus, ℟. Et super cœlos glória ejus. *Ps.* 112.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 8. G. Hæc locútus sum vobis; ut, cùm vénerit hora eórum, reminiscámini quia ego dixi vobis, allelúia. *Joan.* 16.

*Oratio ut suprà ad Laudes.*

## FERIA SECUNDA
### INTRA OCTAVAM ASCENSIONIS.

Ad Noct. *Ps.* Confitémini, 24. Peccávimus, 25. Non disperdidérunt, 26.

Lectio i.

De Epístola secunda beáti Petri Apóstoli.

*Cap.* 3.

Hanc ecce vobis, caríssimi, secundam scribo Epístolam, in quibus vestram éxcito in commonitióne sincéram mentem; ut mémores sitis eórum, quæ prædixi, verbórum à sanctis Prophétis, et Apostolórum vestrórum, præceptórum Dómini et Salvatóris. Hoc primum scientes, quod vénient in novíssimis diébus in deceptióne illusóres, juxta próprias concupiscéntias ambulantes, dicentes : Ubi est promíssio, aut adventus ejus? Ex quo enim patres dormiérunt, ómnia sic persevérant ab inítio creatúræ. Latet enim eos hoc volentes, quod cœli erant priùs, et terra, de aqua et per aquam consistens Dei verbo : per quæ ille tunc mundus aquâ inundátus périit. Cœli autem qui nunc sunt, et terra, eódem verbo repósiti sunt, igni reserváti in diem judícii et perditiónis impiórum hóminum. Unum verò hoc non láteat vos, caríssimi, quia unus dies apud Dóminum sicut mille anni, et mille anni sicut dies unus. Non tardat Dóminus promissiónem suam, sicut quidam exístimant; sed patienter agit propter vos, nolens áliquos períre, sed omnes ad pœniténtiam reverti. Advéniet autem dies Dómini ut fur, in quo cœli magno ímpetu tránsient, elementa verò calóre solventur; terra autem et quæ in ipsa sunt ópera, exurentur. Cùm ígitur hæc ómnia dissolvenda sint, quales oportet vos esse in sanctis conversatiónibus et pietátibus, expectantes et properantes in adventum diéi Dómini, per quem cœli ardentes solventur, et elementa ignis ardóre tabescent?

℟. Eduxit, 366.

Lectio ii.

Sermo sancti Augustíni Epíscopi. 263. n. 1.

Glorificatio Dómini nostri Jesu Christi resurgendo et ascendendo compléta est. Resurrectiónem ipsíus Paschæ Domínico celebrávimus: ascensiónem hódie celebrámus. Festum nobis dies uterque. Ideo enim resurrexit, ut nobis exemplum resurrectiónis osténderet: et ídeo ascendit, ut nos désuper protégeret. Hábemus ergo Dóminum et Salvatórem nostrum Jesum Christum priùs pen-

dentem in ligno, nunc sedentem in cœlo. Prétium nostrum dedit, cùm pendéret in ligno; cólligit quod emit, cùm sedet in cœlo. Cùm enim omnes collégerit, quos útique per témpora cólliget, in fine témporis véniet; et quómodo scriptum est, Deus manifestus véniet, non quemádmodum prímitus venit, occultus, sed, sicut dictum est, manifestus. Occultum enim oportébat eum veníre, ut judicarétur; manifestus autem véniet, ut júdicet. Si enim priùs manifestus venisset, judicáre manifestum quis audéret? quandóquidem dicit Apóstolus Paulus: Si enim cognovissent, nunquam Dóminum glóriæ crucifixissent. Sed si ille non occiderétur, mors non morerétur. Trophæo suo diábolus victus est.

℟. Vidéntibus, 367.

LECTIO III. *n.* 2.

Hodie Dóminus noster ascendit in cœlum; ascendat cum illo et cor nostrum. Sicut enim ille ascendit, nec recessit à nobis; sic et nos cum illo ibi jam sumus, quamvis nondum in córpore nostro factum sit quod promíttitur nobis. Neque enim proptérea nobis desperanda est perfecta et angélica cœlestis habitátio, quia dixit: Nemo ascendit in cœlum, nisi qui descendit de cœlo, Fílius hóminis qui est in cœlo. Sed hoc dictum est propter unitátem, quâ caput nostrum est, et nos corpus ejus. Cùm ascendit in cœlum, nos ab illo non separámur. Qui de cœlo descendit, non nobis ínvidet cœlum, sed quodámmodo clamat: Membra mea estóte, si ascéndere vultis in cœlum. In hoc ergo ipsi ínterim roborémur, in hoc votis ómnibus æstuémus. Hoc meditémur in terris, quod computámur in cœlis. Tunc exutúri carnem mortalitátis, nunc exuámus ánimi vetustátem.

℟. Ascendit, 368.

# FERIA TERTIA
## INTRA OCTAVAM ASCENSIONIS.

Ad Noct. *Ps.* Confitémini, 39. Confiteantur, 40. Confiteantur Dómino, 41.

LECTIO I.

Incipit Epístola prima beáti Joannis Apóstoli.

*Cap.* 1.

Quod fuit ab inítio, quod audívimus, quod vídimus óculis nostris, quod perspéximus, et manus nostræ contrectavérunt de verbo vitæ; et vita manifestáta est, et vídimus, et testámur, et annuntiámus vobis vitam ætérnam, quæ erat apud Patrem, et appáruit nobis. Quod vídimus et audívimus, annuntiámus vobis; ut et vos societátem habeátis nobiscum, et societas nostra sit cum Patre et cum Fílio ejus Jesu Christo. Et hæc scríbimus vobis, ut gaudeátis, et

gáudium vestrum sit plenum. Et hæc est annuntiátio quam audívimus ab eo, et annuntiámus vobis: Quóniam Deus lux est, et ténebræ in eo non sunt ullæ. Si dixérimus quóniam societátem habémus cum eo, et in ténebris ambulámus, mentímur, et veritátem non fácimus. Si autem in luce ambulámus, sicut et ipse est in luce, societátem habémus ad ínvicem, et sanguis Jesu Christi Fílii ejus emundat nos ab omni peccato.

℟. Auctor fídei, 372.

LECTIO II.

Sermo sancti Augustíni Epíscopi. 262. *n.* 3.

HODIERNO die, hoc est quadragésimo post resurrectiónem suam, Dóminus ascendit in cœlum. Non vídimus, sed credámus. Qui vidérunt, prædicavérunt, et orbem terrárum implevérunt. Ecce celebrátur hodiernus dies toto orbe terrárum. Recólite Psalmum. Cui dictum est, Exaltáre super cœlos, Deus? Cui dictum est? Numquid Deo Patri dicerétur, Exaltáre, qui nunquam est humiliátus? Exaltáre, tu qui fuisti in ventre matris inclúsus, tu qui in præsépi jacuisti, tu in ligno suspense, tu mórtue, tu sepulte.* Exaltáre super cœlos, Deus. Jam factum est, jam implétum est. Non vídimus, sed crédimus. Ecce ante óculos nostros est quod séquitur: Exaltáre super cœlos, Deus, et super omnem terram glória tua. Non credat illud, qui non videt istud. Quid est enim, Et super omnem terram glória tua; nisi, Super omnem terram Ecclésia tua, super omnem terram sponsa tua, dilecta tua? Ipsa est glória tua.

¶ *Ubi nihil fit de Translatione S. Ludovici, Lectio ij dividitur ad asteriscum*.*

℟. Deus exaltávit, 372.

DE TRANSLATIONE CAPITIS SANCTI LUDOVICI.

LECTIO III.

PHILIPPUS Pulcher, dum apud se cogitáret quantâ pietáte affectus fúerat sanctus Ludovícus in sacrosancta Domínicæ passiónis Insígnia, quæ in Palátii régii capella ipse reposúerat, existimávit pium et æquum esse, ut ejus Caput eò transferrétur, cum sacris, quæ in tanto prétio habúerat, pignóribus asservandum. Hoc autem religiónis offícium cum summa Cleri ac pópuli exultatióne præstitit, anno Dómini millésimo trecentésimo sexto, Fériâ tértiâ post Ascensiónem. Quâ étiam die unam ex ejus costis Ecclésiæ Parisiensi trádidit. Hæc sacra pígnora, exeunte sæculo octávo-décimo, à sacrílega manu abláta sunt: sedátis verò Gálliæ tumúltibus, regnóque restitúto, anno millésimo octingentésimo vigésimo, pars Cápitis sancti Regis depósita est in thesauro Ecclésiæ Parisiensis, ubi nunc religiósè asservátur.

℟. Christus Jesus, 373.

**Ad Laudes**, *pro Commemor. Translationis Capitis S. Ludovici*, *Ant.* Rex qui sedet in sólio judícii, díssipat omne malum intúitu suo, allelúia. *Prov.* 20.

℣. Glóriâ et honóre coronasti eum; ℟. Et constituisti eum super ópera mánuum tuárum. *Ps.* 8.

Orémus. Oratio.

Deus, qui de cura temporális regíminis beátum Ludovícum Regem ad cœlestis regni cúriam transtulisti: concéde propítius, ut qui venerandi Cápitis ipsíus Translatiónem devòtè ágimus, ejus apud tuam clementiam patrocíniis adjuvémur; Per Dóminum.

## FERIA QUARTA

### INTRA OCTAVAM ASCENSIONIS.

**Ad Nocturn.** *Ps.* Abundávit, 55. Abstulit... Excitátus est, 56.

Lectio i.

De Epístola prima beáti Joannis Apóstoli.

*Cap.* 2.

Filioli mei, hæc scribo vobis, ut non peccétis. Sed et si quis peccáverit, advocátum habémus apud Patrem, Jesum Christum justum: et ipse est propitiátio pro peccátis nostris; non pro nostris autem tantùm, sed étiam pro totíus mundi. Et in hoc scimus quóniam cognóvimus eum, si mandáta ejus observémus. Qui dicit se nosse eum, et mandáta ejus non custódit, mendax est, et in hoc véritas non est. Qui autem servat verbum ejus, verè in hoc cáritas Dei perfecta est: et in hoc scimus quóniam in ipso sumus. Qui dicit se in ipso manére, debet, sicut ille ambulávit, et ipse ambuláre. Caríssimi, non mandátum novum scribo vobis, sed mandátum vetus, quod habuistis ab inítio: mandátum vetus est verbum quod audistis. Iterum novum mandátum scribo vobis, quod verum est et in ipso et in vobis; quia ténebræ transiérunt, et verum lumen jam lucet.

℟. Ad interióra, 374.

Lectio ii.

Sermo sancti Joannis Chrysóstomi. *In Ascens.* 11.

Propterea astitérunt Angeli, qui docérent ascensiónem in cœlum; ne arbitrarentur eum tanquam in cœlum ascendisse, instar Elíæ. Sed quòd verè in cœlum ascénderit, ob id ait: Qui à vobis in cœlum assumptus est. Neque enim hoc simplíciter adjectum est. Quinímo, Elías tanquam in cœlum assumptus est, servus enim erat: Jesus autem in cœlum, quia Dóminus erat. Atque Elías quidem ascendens, melóten super Eliséum dimísit: Jesus autem ascendens, gratiárum dona in discípulos relíquit, non unum solum Prophétam faciéntia, sed infinítos Eliséos, atque ádeo illo multò majóres et illustrióres.

℟. Ipse est, 374.

LECTIO III.

*Hom. 2 ad pop. Antioch.*

TANQUAM maximam hæreditátem Eliséus melóten suscépit; étenim verè máxima fuit hæréditas omni auro pretiósior: et erat posthac duplex Elías ille; et erat sursum Elías, et deorsum Elías. Novi quod justum illum beátum putátis, et vellétis quisquis esse ut ille. Quid ígitur si vobis demonstrávero quod álind quàm ille multò majus omnes sacris mystériis imbúti recépimus? Elías nempe melóten discípulo relíquit; Fílius autem Dei ascendens suam nobis carnem relíquit: sed Elías quidem exútus; Christus autem et nobis relíquit, et ipsam habens ascendit. Ne ígitur ánimo concidámus, neque lamentémur, neque témporum difficultátem timeámus. Qui enim sánguinem suum pro ómnibus effúndere non dubitávit, et carnem suam, et rursus ipsum sánguinem nobis communicávit, quid pro salúte nostra fácere recusábit?

℟. Deus Pater glóriæ constítuens, 375.

AD LAUDES, *fit Commemoratio* TRANSLATIONIS SANCTORUM DIONYSII *et* SOCIORUM.

*Ant.* Ossa vestra quasi herba germinábunt; et cognoscétur manus Dómini servis ejus, et indignábitur inimícis suis, allelúia. *Is.* 26.

℣. Custódit Dóminus ómnia ossa eórum. ℟. Unum ex his non conterétur. *Ps.* 33.

Orémus. ORATIO.

OMNIPOTENS sempitérne Deus, qui ad immortáles triumphos, Dionysium, Rústicum et Eleuthérium Mártyres tuos extulisti: da córdibus nostris dignam pro eórum Translatióne lætítiam, ut quorum córpora pio amóre ampléctimur, eórum précibus adjuvémur; Per.

## FERIA QUINTA
## OCTAVA ASCENSIONIS.

*Duplex-majus.*

*Ant.* 2. D. Factum est regnum hujus mundi Dómini nostri et Christi ejus; et regnábit in sécula seculórum, allelúia. *Apoc.* 11.

*Ant.* 6. F. Ecce venit cum núbibus: et vidébit eum omnis óculus, et qui eum pupugérunt, allelúia. *Apoc.* 1.

*Ant.* 3. à. Fílius hóminis ventúrus est in glória Patris sui cum Angelis suis; et tunc reddet unicuíque secundùm ópera ejus, allelúia. *Matth.* 16.

*Ant.* 4. f. Neque enim Pater júdicat quemquam; sed omne judícium dedit Fílio, ut omnes honoríficent Fílium, sicut honoríficant Patrem, allelúia. *Joan.* 5.

*Ant.* 5. a. Potestátem dedit ei judícium fácere, quia Fílius hóminis est, allelúia. *Joan.* 5.

CAPITULUM. *Act.* 17.

DEUS nunc annúntiat homínibus, ut omnes ubíque pœ-

niténtiam agant, eo quod státuit diem, in quo judicatúrus est orbem in æquitáte, in viro in quo státuit, fidem præbens ómnibus, súscitans eum à mórtuis.

℟. Viri Galilæi, quid statis aspicientes in cœlum? Hic Jesus qui assumptus est à vobis in cœlum, * Sic véniet quemádmodum vidistis eum euntem in cœlum, allelúia, allelúia. ℣. Ad judícium véniet cum sénibus pópuli sui, et princípibus ejus: * Sic. Glória. * Sic véniet. *Act.* 1. *Is.* 3.

HYMNUS. *S. V.*

Felix dies mortálibus,
Quâ per profúsum sánguinem,
Homo Deus, clausas diu
Intrávit æternas domos!

Nos membra, quò nostrum caput,
Quò dux prævit, íbimus:
Si jungat una mens simul,
Nos una junget glória.

Discessit, et suis adest,
Præsente semper spíritu:
Miscens suo se córpori
Omnes in artus ínfluit.

At illa quæ! qualis dies!
Dies tremenda sóntibus,
Dum sede descendens suâ
Redíbit ultor críminum!

Damnatus insons à reis
Partes resúmet júdicis,
Ad cujus ora cóntrement
Dijudicandi júdices.

Ut morte dignos sólveret,
Morti volens se súbdidit:
Cui mors Dei non próderit,
Vindicta qualis ímminet!

Quem noxa letális premit,
Prævertat iram Núminis;
Largisque prudens débitos
Extinguat ignes flétibus.

¶ Ventúre Judex séculi,
Jesu, tibi sit glória
Cum Patre, cumque Spíritu,
In sempiterna sécula. Amen.

℣. Parávit Dóminus in judício thronum suum; ℟. Et ipse judicábit orbem terræ in æquitáte. *Ps.* 9.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 1. D. Amodo vidébitis Fílium hóminis sedentem à dextris virtútis Dei, et venientem in núbibus cœli, allel. *Matth.* 26.

*Oratio ut infrà ad Laudes.*

Ad Completorium, *Ant. etc. ut suprà* 371.

*In fine Hymni, post strophen,* Da, Christe, *dicitur Doxologia,* ¶ Ventúre Judex; *et sic ad omnes Horas.*

AD NOCTURNUM.

*Invitat.* Allelúia: Júdicem vivórum ac mortuórum Dóminum, * Veníte, adorémus, allelúia. *Act.* 10.

HYMNUS. *S. V.*

Sensus quis horror pércutit?
Cœlum profundum scínditur:
Christum sedentem núbibus
Hinc inde stipant ágmina.

Ferális ad sonum tubæ
Mors jussa reddit mórtuos,
Quos ad tribúnal Júdicis
Urgent coactos Angeli.

Pios locans ad déxteram,
Repellit ad lævam reos:
Novit gregem Pastor suum,
Oves ab hædis ségregat.

Ad Júdicis sedent latus
Quicumque, spretis ómnibus
Fugére mundum páuperes,
Deum secúti páuperem.

CRUX ante Judæis probrum,
Ludíbrium crux Géntibus,
Terror reis, probis amor,
Summo micábit æthere.

Fixére quem diræ trabi,
Cernent, pavébunt, íngement:
Vultu beábit quo suos,
Hoc territábit ímpios.

FAC, Christe, ne mores bonos
Contáge mundus ínquinet:
Secerne nos ab ímprobis,
Ne misceámur sóntibus.

Ventúre Judex séculi,
Jesu, tibi sit glória
Cum Patre, cumque Spíritu,
In sempiterna sécula. Amen.

*Ps.* Misericórdias.... Beátus, 70. Semel jurávi, 71; *sub sola Ant.* 6. F. Ecce vénio citò, et merces mea mecum est, réddere unicuíque secundùm ópera sua, allel. *Apoc.* 22.

℣. Cùm accépero tempus,
℟. Ego justítias judicábo. *Ps.* 74.

LECTIO I.

De Epístola prima beáti Joannis Apóstoli.

*Cap.* 2.

QUIS est mendax, nisi is qui negat quóniam Jesus est Christus? Hic est Antichristus, qui negat Patrem et Fílium. Omnis qui negat Fílium, nec Patrem habet: qui confitétur Fílium, et Patrem habet. Vos quod audistis ab inítio, in vobis permáneat: si in vobis permánserit quod audistis ab inítio, et vos in Fílio et Patre manébitis. Et hæc est repromíssio quam ipse pollícitus est nobis, vitam æternam. Hæc scripsi vobis de his qui sedúcunt vos. Et vos unctiónem quam accepistis ab eo, máneat in vobis. Et non necesse habétis, ut áliquis dóceat vos: sed sicut únctio ejus docet vos de ómnibus, et verum est, et non est mendácium. Et sicut dócuit vos, manéte in eo. Et nunc, filíoli, manéte in eo; ut cùm apparúerit, habeámus fidúciam, et non confundámur ab eo in adventu ejus.

℟. Sóbriè, et justè, et piè vivámus in hoc século, * Expectantes beátam spem, et adventum glóriæ magni Dei, et Salvatóris nostri Jesu Christi, allelúia, allelúia. ℣. Deus manifestè véniet; Deus noster, et non silébit: congregáte illi sanctos ejus, * Expectantes. *Tit.* 2. *Ps.* 49.

LECTIO II.

Sermo sancti Augustini Epíscopi.

*In Ps.* 49. *n.* 5, 6, 7.

FECIT Dóminus cum discípulis suis quadraginta dies. Quadragésimo die commendans Ecclésiam suam, ascendit in cœlum. Et cùm ab eis iret in cœlum, admóniti sunt voce angélicâ dicente: Quid statis, viri Galilæi? Hic Jesus quem vidétis ire, sic véniet quemádmodum vidistis eum euntem in cœlum. Qui venit occultus, véniet manifestus. Venit occultus judicandus, véniet manifestus judicatúrus. Venit occultus, ut ante júdicem staret;

staret; véniet manifestus, ut étiam de judícibus júdicet. Véniet manifestus, et non silébit. Ad judícium véniet, ignis ante eum præíbit. Timémus? Mutémur, et non timébimus. Ignem pálea tímeat: auro quid facit? Qui dulcédinem sapiéntiæ et veritátis utcumque sentíre cœpérunt, novérunt quanta pœna sit tantúmmodo à fácie Dei separári. Qui autem illam dulcédinem non gustavérunt, si nondum desíderant Dei fáciem, tímeant vel ignem: supplícia térreant, quem præmia non invítant. Vile tibi est quod Deus pollicétur; contremisce quod minátur.

℞. Cùm vénerit Fílius hóminis in majestáte sua, et omnes Angeli cum eo, tunc sedébit super sedem majestátis suæ; * Et congregabuntur ante eum omnes gentes, allelúia, allelúia. ℣. Sedébit super sólium, in veritáte júdicans, et velóciter reddens quod justum est; * Et. *Matth.* 25. *Is.* 16.

LECTIO III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Lucam.

*Cap.* 24.

In illo témpore; Dixit Jesus ad discípulos suos: Hæc sunt verba quæ locútus sum ad vos, cùm adhuc essem vobiscum; quóniam necesse est impléri ómnia quæ scripta sunt in lege Móysi, et Prophétis, et Psalmis de me. Et réliqua.

Homília sancti Gregórii Papæ. 29 *in Ev. n.* 11.

Hoc nobis est magnópere perpendendum, quia is qui plácidus ascendit, terríbilis redíbit; et quidquid nobis cum mansuetúdine præcépit, hoc à nobis cum districtióne éxiget. Nemo ergo indulta pœniténtiæ témpora parvipendat: nemo curam suî, dum valet, ágere négligat; quia Redemptor noster tantò tunc in judícium districtior véniet, quantò nobis ante judícium magnam patiéntiam prærogávit. Hæc ítaque vobiscum, fratres, ágite: hæc in mente sédulâ cogitatióne versáte. Quamvìs adhuc rerum perturbatióne ánimus flúctuet, jam tamen spei vestræ ánchoram in æternam pátriam fígite, intentiónem mentis in vera luce solidáte. Ecce ad cœlum ascendisse Dóminum audívimus. Hoc ergo servémus in meditatióne, quod crédimus. Etsi adhuc hìc tenémur infirmitáte córporis, sequámur tamen eum pássibus amóris.

℞. Nostra conversátio in cœlis est; unde étiam Salvatórem expectámus Dóminum nostrum Jesum Christum, qui * Reformábit corpus humilitátis nostræ configurátum córpori claritátis suæ, allelúia, allelúia. ℣. Ecce Dóminus Deus in fortitúdine véniet, et bráchium ejus dominábitur: ecce merces ejus cum eo: * Reformábit.

Glória Patri. * Reformábit. *Philip.* 3. *Is.* 40.

℣ *Sacerd.* Sedísti super thronum, Dómine, ℟. Qui júdicas justítiam. *Ps.* 9.

AD LAUDES.

*Ant.* 7. c. Jesum Deus suscitávit tértiâ die, et præcépit nobis prædicáre pópulo, et testificári quia ipse est qui constitútus est à Deo judex vivórum et mortuórum, allelúia. *Act.* 10.

*Ant.* 8. G. Omnes vivificabuntur, qui sunt Christi; deinde finis, cùm tradíderit regnum Deo et Patri, allelúia. 1 *Cor.* 15.

*Ant.* 1. *g.* Oportet autem illum regnáre, donec ponat Deus omnes inimícos sub pédibus ejus, allel. 1 *Cor.* 15.

CANTICUM. *Apoc.* 15 et 19.

MAGNA et mirabília sunt ópera tua, Dómine Deus omnípotens: * justæ et veræ sunt viæ tuæ, Rex sæculórum.

Quis non timébit te, Dómine, et magnificábit nomen tuum? * quia solus pius es.

Quóniam omnes gentes vénient, et adorábunt in conspectu tuo, * quóniam judícia tua manifesta sunt.

Allelúia: Salus, et glória, et virtus Deo nostro est; * quia vera et justa judícia sunt ejus.

*Ant.* 2. D. Novíssima inimíca destruétur mors; ómnia enim subjécit sub pédibus ejus, allelúia. 1 *Cor.* 15.

*Ant.* 6. C. Cùm subjecta fúerint illi ómnia, tunc et ipse Fílius subjectus erit ei qui subjécit sibi ómnia; ut sit Deus ómnia in ómnibus, allelúia. 1 *Cor.* 15.

CAPITULUM. *Hebr.* 9.

QUEMADMODUM statútum est homínibus semel mori, post hoc autem judícium; sic et Christus semel oblátus est ad multórum exhauriénda peccáta: secundò sine peccáto apparébit expectántibus se in salútem.

HYMNUS. *S. V.*

NOBIS, olympo rédditus,
Qui, Christe, sedes præparas,
Nos éxules in pátriam
Trahas amóris néxibus.

Bonis abundans ómnibus,
Ingens eris merces, Deus.
Quàm longa pro pœna brevi
Tuos manébunt gáudia!

TUNC ore nudo qualis es,
Quantusque, te vidébimus;
Amábimus te júgiter,
Te júgiter laudábimus.

Si quos amas non déseris,
Nostræ salútis óbsidem
Mittas ab altis sédibus,
Qui nos adoptet, Spíritum.

¶ VENTURE Judex séculi,
Jesu, tibi sit glória,
Cum Patre, cumque Spíritu,
In sempiterna sécula. Amen.

℣. Jubiláte in conspectu regis Dómini; ℟. Quóniam venit judicáre terram. *Ps.* 99.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 1. g. Accepisti, Dómine Deus, virtútem tuam magnam, et regnasti; et irátæ sunt gentes: et advénit tempus mortuórum judicári, et réddere

mercédem servis tuis, et sanctis, allelúia. *Apoc.* 11.

Orémus. Oratio.

Deus, cujus Unigénitum in infirmitáte carnis venisse crédimus Salvatórem, et in glória majestátis ventúrum Júdicem expectámus; fac nos eídem in déxtera tua regnanti casto timóre subjectos: ut in conspectu judicantis stare cum fidúcia mereámur; Per eumdem Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum, qui tecum vivit.

Ad Horas, *Doxol.* ¶ Ventúre Judex, *ut suprà ad Laudes.*

## AD PRIMAM.

*Ant.* 7. c. Jesum.

*In* ℟ *br.* ℣ Qui judicatúrus es orbem * in æquitáte. * Allelúia, allelúia. *Act.* 17.

## AD TERTIAM.

*Ant.* 8. G. Omnes.

Capitulum. 1 *Tim.* 6.

Adventum Dómini nostri Jesu Christi suis tempóribus ostendet beátus et solus potens, Rex regum, et Dóminus dominántium: qui solus habet immortalitátem, et lucem inhábitat inaccessíbilem: quem nullus hóminum vidit, sed nec vidére potest.

℟ *br.* Exurge, Dómine; * non confortétur homo, * Allelúia, allelúia. Exurge. ℣. Judicentur gentes * in conspectu tuo. * Allelúia. Glória. Exurge.

℣. Constitue, Dómine, legislatórem super eos; ℟. Ut sciant gentes quóniam hómines sunt. *Ps.* 9.

## AD SEXTAM.

*Ant.* 1. *g.* Oportet.

Capitulum. *Hebr.* 10.

Christus in sempiternum sedet in déxtera Dei, de cétero expectans donec ponantur inimíci ejus scabellum pedum ejus. Unâ enim oblatióne consummávit in sempiternum sanctificátos.

℟ *br.* Dícite in géntibus * quia Dóminus regnávit, * Allelúia, allelúia. Dícite. ℣. Judicábit pópulos * in æquitáte. * Allelúia. Glória. Dícite. *Ps.* 95.

℣. Ignis ante ipsum præcédet, ℟. Et inflammábit in circúitu inimícos ejus. *Ps.* 96.

## AD NONAM.

*Ant.* 6. *C.* Cùm subjecta.

Capitulum. 1 *Thess.* 4.

Dominus in jussu, et in voce Archángeli, et in tuba Dei descendet de cœlo; et mórtui qui in Christo sunt, resurgent primi. Deinde nos qui vívimus, qui relínquimur, simul rapiémur cum illis in núbibus óbviam Christo in áera; et sic semper cum Dómino érimus.

℟ *br.* Judicábit Dóminus * pópulum suum, * Allelúia, allelúia. Judicábit. ℣. Et in servis suis * deprecábitur. * Allelúia. Glória. Judicábit. *Ps.* 134.

℣. Lætentur omnes qui sperant in te: ℟. In ætérnum exultábunt, et habitábis in eis. *Ps.* 5.

## AD II VESPERAS.

*Ant.* 4. *D.* Ecce venit Dóminus in sanctis míllibus

suis, fácere judícium contra omnes, et argúere omnes ímpios, allelúia. *Judæ* 14.

*Ant.* 8. c. Illuminábit abscóndita tenebrárum, et manifestábit consília córdium; et tunc laus erit unicuíque à Deo, allelúia. 1 *Cor.* 4.

*Ant.* 2. D. De die illa et hora nemo scit, neque Angeli cœlórum, nisi solus Pater: ídeo et vos estóte paráti, allelúia. *Matth.* 24.

*Ant.* 3. c. Vidéte, vigiláte, et oráte: nescítis enim quando tempus sit, allelúia. *Marc.* 13.

*Ant.* 5. a. Beáti servi illi, quos, cùm vénerit Dóminus, invénerit vigilantes, allelúia. *Luc.* 12.

CAPITULUM. *Judæ* 20.

CARISSIMI, superædificantes vosmetipsos sanctíssimæ vestræ fídei, in Spíritu sancto orantes, vosmetípsos in dilectióne Dei serváte, expectantes misericórdiam Dómini nostri Jesu Christi in vitam æternam.

*Hymnus*, Felix dies, 383.

℣. Qui sedes super Chérubim, Deus virtútum, ℟. Osténde fáciem tuam; et salvi érimus. *Ps.* 79.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 1. J. Sint lumbi vestri præcincti, et lucernæ ardentes in mánibus vestris; et vos símiles homínibus expectántibus dóminum suum, quando revertátur à núptiis, allelúia. *Luc.* 12.

*Oratio ut suprà ad Laudes.*

COMPLETORIUM *ut suprà* 383.

# FERIA SEXTA

## POST OCTAVAM ASCENSIONIS.

*Simplex.*

¶ *Si hodie occurrat Festum Semiduplex aut suprà, fiet de Festo, cum Commemor. hujus Feriæ ad Laudes duntaxat.*

*De Festo autem Simplici occurrente fiet tantùm Commemoratio in Laudibus.* ]

## AD NOCTURNUM.

*Invitat.* Ascendit Christus in altum: * Veníte, adorémus, allelúia. *Ephes.* 4.

*Hymnus*, Nobis, olympo redditus, 386, *cum Doxologia*, Qui Patris, *infrà*, 390.

*Ps.* Salvum me fac..... Exaudi me, 84. Ego sum, 85. *sub sola Ant.* 7. c. Jesus ferebátur in cœlum: et discípuli adorantes regressi sunt in Jerúsalem cum gáudio magno, allelúia. *Luc.* 24.

℣. Ascendit super Chérubim, et volávit: ℟. Volávit super pennas ventórum. *Ps.* 17.

LECTIO I.

De Epístola prima beáti Joannis Apóstoli. *Cap.* 3.

VIDETE qualem caritátem dedit nobis Pater, ut filii Dei nominémur, et simus. Propter hoc mundus non novit nos, quia non novit eum. Caríssimi, nunc filii Dei sumus; et nondum appáruit quid érimus. Scimus quóniam, cùm apparúerit, símiles ei érimus; quóniam vidébimus eum sícuti est. Et

omnis qui habet hanc spem in eo, sanctíficat se, sicut et ille sanctus est. Omnis qui facit peccátum, et iniquitátem facit; et peccátum est iníquitas. Et scitis quia ille appáruit, ut peccáta nostra tólleret; et peccátum in eo non est. Omnis qui in eo manet, non peccat; et omnis qui peccat, non vidit eum, nec cognóvit eum. Filíoli, nemo vos sedúcat. Qui facit justítiam, justus est, sicut et ille justus est. Qui facit peccátum, ex diábolo est; quóniam ab inítio diábolus peccat. In hoc appáruit Fílius Dei, ut dissolvat ópera diáboli.

℟. Exaltáre, 376.

LECTIO II.

OMNIS qui natus est ex Deo, peccátum non facit; quóniam semen ipsíus in eo manet, et non potest peccáre, quóniam ex Deo natus est. In hoc manifesti sunt fílii Dei, et fílii diáboli. Omnis qui non est justus, non est ex Deo, et qui non díligit fratrem suum; quóniam hæc est annuntiátio quam audistis ab inítio, ut diligátis altérutrum. Non sicut Cain, qui ex maligno erat, et occídit fratrem suum. Et propter quid occídit eum? Quóniam ópera ejus maligna erant; fratris autem ejus justa. Nolíte mirári, fratres, si odit vos mundus. Nos scimus quóniam transláti sumus de morte ad vitam, quóniam dilígimus fratres. Qui non díligit, manet in morte: omnis qui odit fratrem suum, homicída est. Et scitis quóniam omnis homicída non habet vitam æternam in semetipso manentem. In hoc cognóvimus caritátem Dei, quóniam ille ánimam suam pro nobis pósuit; et nos debémus pro frátribus ánimas pónere.

℟. Confiteantur, 376.

LECTIO III.

Ex Commentário sancti Joannis Chrysóstomi, in Acta Apostolórum. *Hom.* 1.

QUARE Spíritus sanctus non advénit, cùm adhuc adesset Dóminus, aut mox ab illíus discessu; sed ipse quidem ábiit die quadragésimo, Spíritus autem advénit, cùm complerétur dies quinquagésimus? At si nondum advénerat, quómodo stat quod díxerat: Accípite Spíritum sanctum? Nimírum, ut eos capáces rédderet et idóneos accipiendo Spirítui. Etenim si Dániel Angelum visúrus, semótus est; multò magis hos decébat secédere, tanquam Dei donum acceptúros. Licetne eo modo quæstiónem sólvere? An sic pótiùs accipiendum est, quòd de eo quod futúrum erat, perinde quasi jam factum esset, sit locútus, velut cùm ait: Calcáte serpentes et scorpiónes, et omnem virtútem inimíci? Cur ígitur non tum prótinus advénit Spíritus? Oportébat illos desidério promissi tenéri, atque ita donum accípere. Ideóque, cùm ipse digressus esset, tum advénit Spíritus. Qui si

venisset eo præsente, non habuisset illos tam ardens expectátio.

℟. Cùm vénerit, 377.

*Dicitur* Te Deum.

℣. *Sacerd.* Benedictus es, Dómine, in throno regni tui, ℟. Et superlaudábilis, et superexaltátus in sécula. *Dan.* 3.

AD LAUDES.

*Psalmi de Feria, cum Cantico,* Benedictus es, 368; *sub sola Ant.* 2. D. Cùm introissent in cœnáculum, ascendérunt ubi manébant (Apóstoli.) Hi omnes erant perseverantes unanímiter in oratióne, allelúia. *Act.* 1.

CAPITULUM. *Ephes.* 1.

Omnia subjécit Deus sub pédibus ejus; et ipsum dedit caput supra omnem Ecclésiam, quæ est corpus ipsius, et plenitúdo ejus qui ómnia in ómnibus adimplétur.

*Hymnus,* Jesu nostra redémptio, 369.

℣. Dóminus in cœlo parávit sedem suam; ℟. Et regnum ipsius ómnibus dominábitur. *Ps.* 102.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 8. G. Nondùm erat Spíritus datus, quia Jesus nondum erat glorificátus, allelúia. *Joan.* 7.

Orémus. ORATIO.

Deus, qui nos Resurrectiónis et Ascensiónis Domínicæ solémnia celebráre fecisti: da fámulis tuis, ut et advenientis Spíritûs sancti grátiam purificátis méntibus suscípere mereámur; Per eumdem Dóminum nostrum Jesum Christum Filium tuum, qui tecum vivit et regnat in unitáte ejusdem Spíritûs sancti Deus, per ómnia sécula seculórum.

*Et dicitur ad Horas diei.*

AD HORAS, *Psalmi de Feria. Cetera ut in die Ascensionis,* 369, *præter sequentia.*

*In fine Hymni post stropham* Dæ, Christe, *Doxologia:*

Qui Patris ad dextram sedes,
Jesu, tibi sit glória;
Cum Patre, cumque Spíritu,
In sempiterna sécula. Amen.

AD PRIMAM.

*In* ℟ *br.* ℣. Qui sedes * ad déxteram Patris. * Allelúia.

AD VESPERAS.

*Psalmi de Feria, sub sola Ant.* 6. F. Erant semper in templo, laudantes et benedicentes Deum, allel. *Luc.* 24.

CAPITULUM. 1 *Petr.* 3.

Jesus Christus est in déxtera Dei, deglútiens mortem, ut vitæ ætérnæ hærédes efficerémur: profectus in cœlum, subjectis sibi Angelis, et Potestátibus, et Virtútibus.

*Hymnus,* Nobis, olympo rédditus, 386, *cum Doxologia,* Qui Patris, *suprà.*

℣. Excelsus super omnes gentes Dóminus, ℟. Et super cœlos glória ejus. *Ps.* 112.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 1. f. Pater vester de cœlo dabit Spíritum bonum peténtibus se, allelúia. *Luc.* 11.

*Oratio ut suprà ad Laudes.*

AD COMPLETORIUM. *Ant. de Ascens.* 371; *in fine Hymni, Doxol.* Qui Patris, *suprà.*

## SABBATO
## IN VIGILIA PENTECOSTES.

[ *Ab hac Vigilia inclusivè, ad Festum SS. Trinitatis etiam inclusivè, non fit Officium de ullo Festo Duplici et suprà; sed quodlibet occurrens transferatur post idem Festum SS. Trinitatis. De Semiduplici nulla fit Commemoratio, nisi tantùm ultimo triduo Octavæ Pentecostes.* ]

AD NOCTURNUM.

*Invitat.* Sedentem ad déxteram majestátis Dei Jesum, * Veníte, adorémus, allelúia. *Hebr.* 1.

HYMNUS.

O Christe, qui noster poli
Præcursor intras régiam,
Quos hic jacentes réspicis,
Sursum voca, sursum rape.

Ad illa fac nos cúrrere
Amóre casto gáudia,
Terréna quæ mens non capit,
Quæ sola pérspicit fides:

Ubi labórum præmium
Dat ipse se suis Deus;
Et ut beátos éxpleat,
In ómnibus fit ómnia.

Qui nos ad istam, grátiâ
Ducat potenti, glóriam,
Nunc è supernis sédibus
Emitte nobis Spíritum.

Qui Patris ad dextram sedes,
Jesu, tibi sit glória,
Cum Patre, cumque Spíritu,
In sempiterna sécula. Amen.

*Ps.* Notus in Judæa, 99. Deus, quis símilis erit.... Deus meus, 100; *sub sola Ant.* 7. ç. Qui credit in me, flúmina de ventre ejus fluent aquæ vivæ. Hoc autem dixit Jesus de Spíritu quem acceptúri erant credentes in eum, allelúia. *Joan.* 7.

℣. Quemádmodum desíderat cervus ad fontes aquárum, ℟. Ita desíderat ánima mea ad te, Deus. *Ps.* 41.

LECTIO I.

De Epístola prima beáti Joannis Apóstoli. *Cap.* 3.

Qui habúerit substántiam hujus mundi, et víderit fratrem suum necessitátem habére, et cláuserit víscera sua ab eo; quómodo cáritas Dei manet in eo? Filíoli mei, non diligámus verbo, neque linguâ, sed ópere et veritáte. In hoc cognóscimus quóniam ex veritáte sumus; et in conspectu ejus suadébimus corda nostra. Quóniam si reprehénderit nos cor nostrum, major est Deus corde nostro, et novit ómnia. Caríssimi, si cor nostrum non reprehénderit nos, fidúciam habémus ad Deum: et quídquid petiérimus, accipiémus ab eo; quóniam mandáta ejus custodímus, et ea quæ sunt plácita coram eo fácimus. Et hoc est mandátum ejus: Ut credámus in nómine Fílii ejus Jesu Christi, et diligámus altérutrum, sicut dedit mandátum nobis. Et qui servat mandáta ejus, in illo manet, et ipse in eo: et in hoc scimus quóniam manet in nobis de Spíritu quem dedit nobis.

℟. Effundam aquas super

sitientem, et fluenta super áridam: effundam Spíritum meum, * Et germinábunt quasi sálices juxta prætertfluentes aquas, allelúia, allelúia. ℣. Fiet fons aquæ salientis in vitam æternam; * Et. *Is.* 44. *Joan.* 4.

Lectio ii. *Cap.* 4.

Carissimi, nolíte omni spirítui crédere, sed probáte spíritus si ex Deo sint; quóniam multi pseudoprophétæ exiérunt in mundum. In hoc cognóscitur Spíritus Dei. Omnis spíritus qui confitétur Jesum Christum in carne venisse, ex Deo est: et omnis spíritus qui solvit Jesum, ex Deo non est, et hic est Antichristus, de quo audistis quóniam venit, et nunc jam in mundo est. Vos ex Deo estis, filíoli, et vicistis eum; quóniam major est qui in vobis est, quàm qui in mundo. Ipsi de mundo sunt: ídeo de mundo loquuntur, et mundus eos audit.

℟. Cùm vénerit Spíritus veritátis, * Docébit vos omnem veritátem; et quæ ventúra sunt annuntiábit vobis, allelúia, allelúia. ℣. Ténebræ et palpátio in æternum, donec effundátur Spíritus de excelso. * Docébit. *Joan.* 16. *Is.* 32.

Lectio iii.

Léctio sancti Evangélii secundùm Joannem.

*Cap.* 14.

In illo témpore; Dixit Jesus discípulis suis: Si diligitis me, mandáta mea serváte. Et ego rogábo Patrem, et álium Paraclétum dabit vobis. Et réliqua.

Homília sancti Augustíni Epíscopi.

*In Joan. tract.* 74. *n.* 4.

Quod ait: Rogábo Patrem, et álium Paraclétum dabit vobis; ostendit et se ipsum esse Paraclétum. Paraclétus enim latínè dícitur Advocátus; et dictum est de Christo: Advocátum habémus ad Patrem, Jesum Christum justum. Sic autem mundum dixit non posse accípere Spíritum sanctum, sicut étiam dictum est: Prudéntia carnis inimíca est in Deum, legi enim Dei non est subjecta, nec enim potest: velut si dicámus: Injustítia justa esse non potest. Mundum quippe ait hoc loco, mundi signíficans dilectóres; quæ diléctio non est à Patre. Et ídeo dilectióni hujus mundi, de qua satis ágimus ut minuátur et consumátur in nobis, contrária est diléctio Dei quæ diffúnditur in córdibus nostris per Spíritum sanctum qui datus est nobis.

℟. Si diligitis me, mandáta mea serváte: * Et ego rogábo Patrem, et álium Paraclétum dabit vobis, ut máneat vobiscum in æternum, allelúia, allelúia. ℣. Dilígite Dóminum, omnes sancti ejus; et confortétur cor vestrum, omnes qui sperátis in Dómino: * Et. Glória. * Et. *Joan.* 14. *Ps.* 30.

*Dicitur* Te Deum.

℣ *Sacerd.* Exultent et læténtur super te, omnes quærentes te; ℟. Et dicant semper: Magnificétur Dóminus, qui díligunt salutáre tuum. *Ps.* 39.

## AD LAUDES.

*Semiduplex.*

*Psalmi de Sabbato.*

*Ant.* 1. f. Joannes baptizávit aquâ, vos autem baptizabímini Spíritu sancto, allelúia. *Act.* 1.

*Ant.* 3. c. Spíritum non potest mundus accípere, quia non videt eum, nec scit eum; vos autem cognoscétis eum, allelúia. *Joan.* 14.

*Ant.* 7. d. Spíritus apud vos manébit, et in vobis erit. Non relinquam vos órphanos, allelúia. *Joan.* 14.

CANTICUM. *Isai.* 59.

TIMEBUNT qui ab occidente nomen Dómini, * et qui ab ortu solis glóriam ejus;

Cùm vénerit quasi flúvius violentus, * quem Spíritus Dómini cogit;

Et vénerit Sion redemptor, * et eis qui rédeunt ab iniquitáte in Jacob, dicit Dóminus.

Hoc fœdus meum cum eis, * dicit Dóminus:

Spíritus meus qui est in te, et verba mea quæ pósui in ore tuo, * non recédent de ore tuo, et de ore séminis tui,

Et de ore séminis séminis tui, dicit Dóminus, * ámodo et usque in sempitérnum.

*Ant.* 4. d. Docébit vos ómnia, et súggeret vobis ómnia quæcumque díxero vobis, allelúia. *Joan.* 14.

*Ant.* 8. G. Ille me clarificábit; quia de meo accípiet, et annuntiábit vobis, allelúia. *Joan.* 10.

CAPITULUM. *Sap.* 9.

SENSUM tuum, Dómine, quis sciet? nisi tu déderis sapiéntiam, et míseris Spíritum sanctum tuum de altíssimis; et sic correctæ sint sémitæ eórum qui sunt in terris, et quæ tibi placent didícerint hómines.

HYMNUS.

SUPREME Rector cœlitûm,
Qui morte devictâ potens,
Cruóre signátam tuo
Ad astra pandis sémitam:

Alto benignus è throno,
E Patris almi déxtera,
Quos hìc relinquis órphanos,
Non intuéri désinas.

Nos, Christe, tot dolóribus
Quos parturísti, réspice;
Quos obstetríce lánceâ
Apertus effúdit sinus.

Partâ tuis labóribus
Jam tu potíris glóriâ;
Nunc hora; promissum Patris
Nunc mitte nobis Spíritum.

QUI Patris ad dextram sedes,
Jesu, tibi sit glória
Cum Patre, cumque Spíritu,
In sempitérna sécula. Amen.

℣. Non erubescant qui expectant te, Dómine, ℟. Dómine virtútum. *Ps.* 68.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 3. à. Qui díligit me, diligétur à Patre meo; et ego díligam eum, et manifestábo ei me ipsum, allelúia. *Joan.* 14.

Orémus. Oratio.

Præsta, quæsumus omnipotens Deus, ut claritátis tuæ super nos splendor effúlgeat; et lux tuæ lucis corda eórum, qui per grátiam tuam renáti sunt, sancti Spíritûs illustratióne confirmet; Per Dóminum nostrum....... in unitáte ejusdem.

Ad Horas, *Duplex-minus*.

*In fine Hymnorum post strophen,* Da, Christe, *Doxologia:*

Qui Patris ad dextram sedes,
Jesu, tibi sit glória,
Cum Patre, cumque Spíritu,
In sempiterna sécula.
Amen.

AD PRIMAM.

*Ant.* 1. f. Joannes.

*In* ℟ *br.* ℣. Qui sedes * ad déxteram Patris. * Allelúia.

AD TERTIAM.

*Ant.* 3. e. Spíritum.

Capitulum. *Sap.* 1.

Spiritus sanctus disciplínæ effúgiet fictum, et áuferet se à cogitatiónibus quæ sunt sine intellectu, et corripiétur à superveniente iniquitáte: benignus est enim Spíritus sapiéntiæ.

℟ *br.* Ne projícias me * à fácie tua, Dómine, * Allelúia, allel. Ne projícias. ℣. Et Spíritum sanctum tuum * ne áuferas à me. * Allelúia. Glória. Ne projícias. *Ps.* 50.

℣. Viam iniquitátis ámove à me: ℟. Et de lege tua miserére meî. *Ps.* 118.

AD SEXTAM.

*Ant.* 7. *d.* Spíritus.

Capitulum. *Ezech.* 36.

Spiritum meum ponam in médio vestrî; et fáciam ut in præceptis meis ambulétis, et judícia mea custodiátis, et operémini.

℟ *br.* Spíritus tuus bonus dedúcet me * in terram rectam, * Allelúia, allel. Spíritus. ℣. Propter nomen tuum * vivificábis me in æquitáte tua. * Allelúia. Glória Patri. Spíritus.

℣. Doce me fácere voluntátem tuam, ℟. Quia Deus meus es tu. *Ps.* 142.

AD NONAM.

*Ant.* 8. G. Ille.

Capitulum. *Act.* 1.

Accipietis virtútem superveniéntis Spíritûs sancti in vos. et éritis mihi testes in Jerúsalem, et in omni Judæa et Samaría, et usque ad últimum terræ.

℟ *br.* Dabit Dóminus voci suæ * vocem virtútis, * Allelúia, allelúia. Dabit. ℣. Date * glóriam Deo. * Allelúia. Glória. Dabit. *Ps.* 67.

℣. Turbabuntur gentes. ℟. Et timébunt à signis tuis. *Ps.* 64.

# IN DIE SANCTO

# PENTECOSTES.

## ANNUALE-MAJUS.

### IN I VESPERIS.

*Ps.* Ecce quàm bonum, 50.

*Ant.* 5. C. Spíritus meus erit in médio vestrûm: nolíte timére, dicit Dóminus exercítuum, allelúia. *Agg.* 2.

*Ps.* Dómine, exaudi... áuribus, *cum sua divisione*, 105.

*Ant.* 1. D. Dabo vobis cor novum, et Spíritum novum ponam in médio vestrî: et áuferam cor lapídeum de carne vestra, allel. *Ezech.* 36.

*Ps.* Lauda, Jerúsalem, 74.

*Ant.* 3. a. Cùm dédero Spíritum meum in vobis, sciétis quia ego Dóminus locútus sum, et feci, allelúia. *Ezech.* 37.

CAPITULUM. *Joel* 2.

Effundam Spíritum meum super omnem carnem: et prophetábunt fílii vestri et fíliæ vestræ; senes vestri sómnia somniábunt, et júvenes vestri visiónes vidébunt.

℟. Super servos meos et ancillas in diébus illis effundam Spíritum meum: * Et dabo prodígia in cœlo et in terra; et erit: † Omnis qui invocáverit nomen Dómini, salvus erit, allelúia, allelúia. ℣. Oportébat Christum pati, et resúrgere à mórtuis: vos autem testes estis horum; et ego mitto promissum Patris mei in vos: * Et. Glória Patri. † Omnis. *Joel* 2. *Luc.* 24.

HYMNUS. *C.*

Veni, superne Spíritus:
Purgáta Christi sánguine,
Tuîque terra jam capax,
Expandit arentes sinus.

Christi petentis æthera
Exolve promissam fidem;
Et nostra præsens ígneo
Munda lavácro péctora.

Lugemus amissum Patrem;
Te nostra tangat órbitas:
Soláre mœstos; ánxiis
Spem redde, qui solus potes.

Docére quæ Christus rudes
Prudens alumnos distulit,
Hæc præparátis ínsere
Novus magister méntibus.

Olim per umbras vátibus
Retecta paucis véritas,
Nunc orbe toto díssitis
Per te patescat géntibus.

Divína jam nos únctio
Informet omnes; háctenus
Mutis arátam lítteris
Inscríbe legem córdibus.

Sit laus Patri, laus Fílio:
Utrumque qui nectis, Deus,
Utríque compar, sit tibi
Decus perenne, Spíritus.
Amen.

℣. Deus Israel ipse dabit virtútem, ℟. Et fortitúdinem plebi suæ. *Ps.* 67.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 1. J. Ecce dies vénient, et hoc erit pactum quod fériam cum domo Israel : Dabo legem meam in viscéribus eórum, et in corde eórum scribam eam. *Jerem.* 31.

*Oratio ut infrà ad Laudes.*

AD COMPLETORIUM.

*Psalmi de Dominica, et sic per totam hebdomadam. Ant. etc. infrà* 402.

AD NOCTURNUM.

*Invit.* Allelúia : Spíritus Dómini replévit orbem terrárum : * Veníte, adorémus, allelúia. *Sap.* 1.

HYMNUS. *C.*

INTER sulphurei fúlgura túrbinis,
Flammarumque globos et sónitum tubæ,
Antíquam veteri, monte Sina super,
Legem das populo, Deus.

His infída probas corda pavóribus,
Et peccáre vetas, aut pretium mori :
Verùm terribiles quid parient minæ?
Quò tantus recidet tremor?

EN fumantis adhuc montis ad ínfima,
Plebs oblíta datam continuò fidem,
Brutam pérfida plebs effigiem colit,
Veri Núminis in locum.

Heu! mens nostra, Deus, te sine quid potest?
Lucem prome animis; cordis ahéneam
Molli duritiem; redde, potes, Deus,
Voci nos dociles tuæ.

SIT laus summa Patri, summaque Fílio :
Sit par, alme, tibi laus quoque, Spíritus,
Per quem legis amor córdibus ínsitus
Dat quod lex jubet éxequi.
Amen.

*Ps.* Afferte Dómino, 105.

*Ant.* 7. *d.* Vox Dómini in virtúte, vox Dómini in magnificéntia : Dóminus virtútem pópulo suo dabit : Dóminus benedícet pópulo suo, allelúia.

*Ps.* Deus noster. 107.

*Ant.* 1. g. Dedit vocem suam, mota est terra : Dóminus virtútum nobiscum : veníte, et vidéte quæ pósuit prodígia super terram, allelúia.

*Ps.* Magnus Dóminus, 107.

*Ant.* 8. *G.* Sicut audívimus, sic vídimus in civitáte Dómini virtútum, allelúia : lætétur mons Sion, quóniam hic est Deus, Deus noster, allelúia, allelúia.

℣. Terra mota est, cœli distillavérunt, ℟. A fácie Dei Sínai, à fácie Dei Israel. *Ps.* 67.

LECTIO I.

De Actibus Apostolórum.

*Cap.* 2.

CUM compleréntur dies Pentecostes, erant omnes páriter in eódem loco : et factus est repente de cœlo sonus tanquam adveniéntis spíritûs veheméntis, et replévit totam domum ubi erant sedentes. Et apparuérunt illis disper-

titæ linguæ tanquam ignis, seditque supra singulos eórum : et repléti sunt omnes Spíritu sancto ; et cœpérunt loqui váriis linguis, prout Spíritus sanctus dabat éloqui illis. Erant autem in Jerúsalem habitantes Judæi, viri religiósi ex omni natióne quæ sub cœlo est. Factâ autem hâc voce, convénit multitúdo, et mente confúsa est, quóniam audiébat unusquisque linguâ suâ illos loquentes. Stupébant autem omnes, et mirabantur, dicentes : Nonne ecce omnes isti qui loquuntur, Galilæi sunt? et quómodo nos audívimus unusquisque linguam nostram, in qua nati sumus, Parthi, et Medi, et Elamítæ, et qui hábitant Mesopotámiam, Judæam, et Cappadóciam, Pontum, et Asiam, Phrygiam, et Pamphyliam, Ægyptum, et partes Líbyæ quæ est circa Cyrénen, et ádvenæ Románi, Judæi quoque, et Prosélyti, Cretes, et Arabes, audívimus eos loquentes nostris linguis magnália Dei.

℟. Numerábitis vobis ab áltero die sábbati azymórum quinquaginta dies ; et sic offerétis sacrifícium novum Dómino : et * Vocábitis hunc diem celebérrimum atque sanctíssimum, allelúia, allelúia. ℣. Cùm complerentur dies Pentecostes, erant omnes páriter in eódem loco ; et repléti sunt Spíritu sancto : * Vocábitis. Glória. * Vocábitis. *Levit.* 23. *Act.* 2.

LECTIO II.

Sermo sancti Augustíni Epíscopi. 155. *n.* 5, 6.

CELEBRATUM est Pascha in véteri pópulo : nondum in luce fulgente, sed in umbra significante celebrátum est ; et post quinquaginta dies à celebratióne Paschæ, datur lex in monte Sina, scripta dígito Dei. Venit verum Pascha ; immolátur Christus ; tránsitum facit à morte ad vitam : et numerantur quinquaginta dies, et venit Spíritus sanctus, dígitus Dei. Sed vidéte ibi quómodo, et hic quómodo. Ibi plebs longè stabat; timor erat, amor non erat : nam usque ádeo timuérunt, ut dícerent ad Móysen : Lóquere tu ad nos ; et non nobis loquátur Dóminus, ne moriámur. Descendit ergo, sicut scriptum est, Deus in Sina, in igne ; sed plebem longè stantem térritans, et dígito suo scribens in lápide, non in corde. Huc autem quando venit Spíritus sanctus, congregáti erant fidéles in unum : nec in monte térruit, sed intrávit in domum. De cœlo quidem factus est súbitò sonus, quasi ferrétur flatus véhemens : sónuit, sed nullus expávit. Visæ sunt illis, inquit Scriptúra, linguæ divísæ, velut ignis. Numquid de longinquo térritans? Absit. Nam insédit super unumquemque eórum ; et cœpérunt linguis loqui, sicut Spíritus dabat eis pronuntiáre. Audi lin-

guam loquentem, et intél-lige Spíritum, non in lápide, sed in corde scribentem. Lex ergo spíritûs vitæ scripta in corde, non in lápide.

℟. Factus est repente de cœlo sonus tanquam advenientis spíritûs vehementis : * Sedit ignis supra síngulos eórum ; et † Cœpérunt loqui váriis linguis, prout Spíritus sanctus dabat éloqui illis, allelúia, allelúia. ℣. Dóminus de Sínai venit; in déxtera ejus ígnea lex : et qui appropinquant pédibus ejus, accípient de doctrína illíus. * Sedit. Glória Patri. † Cœpérunt. *Act.* 2. *Deut.* 33.

LECTIO III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Joannem.

*Cap.* 14.

In illo témpore; Dixit Jesus discípulis suis : Si quis díligit me, sermónem meum servábit; et Pater meus díliget eum. Et réliqua.

Homília sancti Gregórii Papæ. *In Ev.* 30. *n.* 1.

Hodie Spíritus sanctus repentíno sónitu super discípulos venit, mentesque carnálium in suî amórem permutávit: et foris apparéntibus linguis ígneis, intus facta sunt corda flammántia; quia dum Deum in ignis visióne suscípiunt, per amórem suáviter arsérunt. Ipse namque Spíritus sanctus amor est. Unde et Joannes dicit : Deus cáritas est. Qui ergo mente íntegrâ Deum desíderat, profectò jam habet quem amat. Neque enim quisquam posset Deum dilígere, si eum quem díligit, non habéret. Sed ecce, si unusquisque vestrûm requirátur, an díligat Deum ; totâ fidúciâ et secúrâ mente respondet, Díligo. In ipso autem lectiónis exórdio audistis quid Véritas dicat : Si quis díligit me, sermónem meum servábit. Probátio ergo dilectiónis, exhibítio est óperis. Hinc in Epístola sua idem Joannes dicit : Qui dicit, Díligo Deum, et mandáta ejus non custódit, mendax est. Verè étenim Deum dilígimus, si ad mandáta ejus nos à nostris voluptátibus coarctámus. Nam qui adhuc per illícita desidéria dífluit, profectò Deum non amat; quia ei in sua voluntáte contradícit.

℟. Qui servat mandáta Dei, in illo manet, et ipse in eo ; * Et in hoc scimus quóniam manet in nobis de Spíritu quem dedit nobis, allelúia, allelúia. ℣. Deus creávit sapiéntiam in Spíritu sancto, et effúdit illam super omnem carnem, et præbuit illam diligéntibus se ; * Et. Glória. * Et. 1 *Joan.* 3. *Eccli.* 1.

*Repetitur* ℟ Qui servat, *usque ad* ℣.

℣ *Sacerdot.* Emittes Spíritum tuum, et creabuntur ; ℟. Et renovábis fáciem terræ. *Ps.* 103.

AD LAUDES.

*Ant.* 8. G. Erant Apóstoli perseverantes unanímiter in oratióne cum muliéribus, et

María matre Jesu, et frátribus ejus, allelúia. *Act.* 1.

*Ant.* 5. C. Sonus replévit totam domum ubi erant sedentes; et apparuérunt illis dispertítæ linguæ tanquam ignis, allelúia. *Act.* 2.

*Ant.* 1, f. Audiébat unusquisque linguâ suâ illos loquentes, allelúia. *Act.* 2.

Canticum. *Judith* 16.

Hymnum cantémus Dómino, * hymnum novum cantémus Deo nostro.

Adónai Dómine, magnus es tu, et præclárus in virtúte tua, * et quem superáre nemo potest.

Tibi sérviat omnis creatúra tua; * quia dixisti, et facta sunt.

Misisti Spíritum tuum, et creáta sunt; * et non est qui resistat voci tuæ.

Montes à fundamentis movebuntur cum aquis: * petræ sicut cera liquescent ante fáciem tuam.

Qui autem timent te, * magni erunt apud te per ómnia.

*Ant.* 2. D. Stupébant omnes, et mirabantur, dicentes: Nonne ecce omnes isti qui loquuntur, Galilæi sunt? et quómodo nos audívimus unusquisque linguam nostram in qua nati sumus? allelúia. *Act.* 2.

*Ant.* 3. à. Audívimus eos loquentes nostris linguis magnália Dei, allelúia, allelúia. *Act.* 2.

Capitulum. *Apoc.* 2.

Qui habet aurem, áudiat quid Spíritus dicat Ecclésiis.

Hymnus. C.

Audimur: almo Spíritus
Descendit è sinu Patris,
Ægrisque fert mortálibus
Promissa cœli múnera.

Quot próditur miráculis
Præsentis adventus Dei!
Jam tota sublími domus
Repente flatu pérsonat.

Puro cadúcus æthere,
Candentis ad linguæ modum,
In considentûm vérticem
Ignítus imber dépluit.

Quæ flamma summas álluit
Innóxio tactu comas,
Hæc gliscit arcánis simul
In pectus et mentem viis.

Stupente turbâ géntium
Linguis loquuntur ómnibus:
Vatum crepant orácula;
Quidquid profantur, ignis est.

Inter profandum, Spíritus
In audientes írruit,
Instincta quo passim nova
Surgit Prophetárum seges.

¶ Sit laus Patri; laus Fílio:
Par sit tibi laus, Spíritus,
Afflante quo mentes sacris
Lucent et ardent ígnibus.
Amen.

℣. Dóminus dabit verbum evangelizántibus ℟. Virtúte multâ. *Ps.* 67.

*Ad* Benedictus, *Ant.* 7. G. Non hi, sicut vos æstimátis, ébrii sunt; sed hoc est, quod dictum est per Prophétam: Effundam de Spíritu meo super omnem carnem, allelúia. *Act.* 2.

Orémus. Oratio.

Deus, qui hodiernâ die corda fidélium sancti Spíritûs il-

lustratióne docuisti : da nobis in eódem Spíritu recta sápere, et de ejus semper consolatióne gaudére; Per Dóminum nostrum..... in unitáte ejúsdem.

Ad Horas, *in fine Hymnorum, dicitur Doxologia* ¶ Sit laus Patri, *suprà, sine strophe* Da, Christe.

AD PRIMAM.

*Ant.* 8. G. Erant Apóstoli.

*Non dicitur Symbolum* Quicumque.

*In* ℟ *br.* ℣. Qui de Spíritu tuo* dedisti nobis. *Allelúia, allelúia. 1 *Joan.* 4.

AD TERTIAM.

*Loco Hymni* O fons, *hodie et per Octavam, dicitur sequens*

Hymnus.

Veni, creátor Spíritus,
Mentes tuórum vísita,
Imple supernâ grátiâ
Quæ tu creasti péctora.

Qui Paraclétus díceris,
Donum Dei altíssimi,
Fons vivus, ignis, cáritas,
Et spiritális únctio.

Tu septiformis múnere,
Dextræ Dei tu dígitus,
Tu ritè promissum Patris
Sermóne ditans gúttura.

Accende lumen sénsibus,
Infunde amórem córdibus,
Infirma nostri córporis
Virtúte firmans pérpeti.

Hostem repellas lóngiùs,
Pacemque dones prótinus;
Ductóre sic te prævio,
Vitémus omne nóxium.

Per te sciámus da Patrem,
Noscámus atque Fílium :
Te utriusque Spíritum
Credámus omni témpore.

Sit laus Patri; laus Filio:
Par sit tibi laus, Spíritus,
Afflante quo mentes sacris
Lucent et ardent ígnibus.
Amen.

*Ant.* 5. C. Sonus.

Capitulum. 2 *Cor.* 3.

Si ministrátio mortis, lítteris deformáta in lapídibus, fuit in glória, ita ut non possent inténdere fílii Israel in fáciem Móysi, propter glóriam vultûs ejus, quæ evacuátur; quómodo non magis ministrátio Spíritûs erit in glória?

℟ *br.* Intónuit * de cœlo Dóminus, *Allelúia, allelúia. Intónuit. ℣. Et Altíssimus* dedit vocem suam. * Allelúia. Glória. Intónuit.

℣. Commóta est et contrémuit terra : ℟. Ignis à fácie ejus exarsit. *Ps.* 17.

AD SEXTAM.

*Ant.* 1. f. Audiébat.

Capitulum. 1 *Cor.* 12.

Alii quidem per Spíritum datur sermo sapiéntiæ : álii autem sermo sciéntiæ secundùm eumdem Spíritum : álteri fides in eódem Spíritu: álii grátia sanitátum in uno Spíritu : álii operátio virtútum, álii prophetía, álii discrétio spirítuum, álii génera linguárum, álii interpretátio sermónum.

℟ *br.* Non sunt loquélæ * neque sermónes, * Allelúia, allel. Non sunt. ℣. Quorum non audiántur* voces eórum. *Allelúia. Glória. Non sunt.

℣. In omnem terram exívit sonus eórum. ℟. Et in

fines orbis terræ verba eórum. *Ps.* 18.

AD NONAM.

*Ant.* 3. à. Audívimus.

CAPITULUM. 1 *Cor.* 2.

QUÆ Dei sunt nemo cognóvit, nisi Spíritus Dei. Nos autem non spíritum hujus mundi accépimus, sed Spíritum qui ex Deo est, ut sciámus quæ à Deo donáta sunt nobis: quæ et lóquimur non in doctis humánæ sapiéntiæ verbis, sed in doctrína Spíritûs.

℟ *brev.* Annuntiavérunt * ópera Dei, * Allelúia, allel. Annuntiavérunt. ℣. Et facta ejus * intellexérunt. * Allelúia. Glória. Annuntiavérunt.

℣. Conturbáti sunt omnes qui vidébant eos; ℟. Et tímuit omnis homo. *Ps.* 64.

AD II VESPERAS.

*Ps.* Dixit Dóminus, 18.

*Ant.* 4. E. Déxterâ Dei exaltátus Jesus, et promissióne Spíritûs sancti acceptâ à Patre, effúdit hunc quem vos vidétis et audítis, allelúia. *Act.* 2.

*Ps.* Laudáte, púeri, 19.

*Ant.* 1. A. Sanctificáti estis in nómine Dómini nostri Jesu Christi, et in Spíritu Dei nostri, allelúia. 1 *Cor.* 6.

*Ps.* In éxitu, 19.

*Ant.* 3. a. Signáti estis Spíritu promissiónis sancto, qui est pignus hæreditátis nostræ, in redemptiónem acquisitiónis, allelúia, allel. *Ephes.* 1.

CAPITULUM. *Tit.* 3.

SECUNDUM suam misericórdiam salvos nos fecit Deus per lavácrum regeneratiónis, et renovatiónis Spíritûs sancti, quem effúdit in nos abunde per Jesum Christum salvatórem nostrum; ut justificáti grátiâ ipsíus, hærédes simus secundùm spem vitæ ætérnæ.

HYMNUS. *C.*

QUO vos Magistri glória, quò salus
Invítat orbis, sancta cohors, Dei
Portáte verbum: vos reposcit
Prima seges, pia cura fratrum.

Proh! quanta messis prótinus éxtitit!
Ter mille verbum concipiunt viri:
Deóque maturante, reddunt
Multiplicem, bona terra, fructum.

COMPUNCTA passim péctora flétibus
Mœrent amáris, atque piáculo
Ardent salutáris lavácri,
Præteritas abolére labes.

At non Hebræis limitibus sacer
Hærébit ardor. Sol habitábiles
Quà lustrat oras, hàc triumphis
Materies patet ampla vestris.

JAM mille divûm templa solo ruunt:
Cedit superbæ vis sapiéntiæ,
Cedunt tyranni: victa cedit
Carnificum rabies furentûm.

Novum potentis grátia Spíritûs
Creávit orbem: nos quoque, nos tuæ
Succendat ardor caritátis,

Alme Deus, renovetque totos.

Laus summa Patri; súmmaque Fílio:
Sit, sancte, compar laus tibi, Spíritus,
Quo dura mitescunt, novísque
Concipiunt pia corda flammas. Amen.

℟. Confirma hoc, Deus, quod operátus es in nobis, ℟. A templo tuo in Jerúsalem. *Ps.* 67.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 1. D. Det vobis Deus virtúte corroborári per Spíritum ejus in interiórem hóminem; ut in caritáte radicáti et fundáti, impleámini in omnem plenitúdinem Dei, allel. *Ephes.* 3.

*Oratio ut suprà ad Laudes.*

AD COMPLETORIUM.

*Ant.* 7. d. Ductor eórum fuisti, Dómine, per diem et per noctem; et Spíritum tuum bonum dedisti, qui docéret eos, allelúia. 2 *Esdr.* 9.

Hymnus.

Adsis superne Spíritus,
Pater benigne páuperum;
Sinúque fundas úberi
Prómissa terris múnera.

Dum nox creáti lúminis
Jubar tenébris óbruit,
Splendére tu non désinas,
Lux increáta méntium.

Tu cordis hospes íntimus,
Dulcis labórum tu quies;
Tu flétibus quos élicis
Divína misces gáudia.

Totíus ô fons grátiæ,
Certáre da nos fórtiter;
Certántibus da víncere,
Vincéntibus da præmium.

Sit laus Patri, laus Fílio:
Par sit tibi laus, Spíritus,
Afflante quo mentes sacris
Lucent et ardent ígnibus.
Amen.

*Ad* Nunc dimittis. *Ant.* 6. F. O quàm bonus et suávis est, Dómine, Spíritus tuus in ómnibus! Allelúia. *Sap.* 12.

## DIEBUS INTRA OCTAVAM PENTECOSTES.

*Omnia ut in die, exceptis quæ sequuntur.*

AD NOCTURNUM.

*Invitat.* Allelúia: Spíritus Dómini replévit orbem terrárum: * Veníte, adorémus, allelúia. *Sap.* 1.

*Tres Psalmi, ut distribuuntur infrà in qualibet Feria, sub sola Ant.* 8. c. Ecclésia ædificabátur ámbulans in timóre Dómini; et consolatióne sancti Spíritûs replebátur, allelúia. *Act.* 9.

℣. Auxit Dóminus pópulum suum vehementer, ℟. Et firmávit eum super inimícos ejus. *Ps.* 104.

*Lectiones et* ℟℟℟, *ut notantur infrà in qualibet Feria.*

℣ *Sacerd.* Emittes Spíritum tuum; et creabuntur; ℟. Et renovábis fáciem terræ. *Ps.* 103.

AD LAUDES.

*Antiphonæ et Psalmi cum Cantico, ut in die,* 398 *etc.*

*Antiphona ad* Benedictus, *et Oratio, in qualibet Feria.*

Ad Horas, *ut in die, præter Canonem et Orationem.*

## AD VESPERAS.

*Psalmi et Antiphonæ cum ceteris, ut suprà in Festo Pentecostes,* 401.

*Antiph. ad* Magnificat, *et Oratio, infrà in qualibet die.*

## FERIA SECUNDA.

*Duplex-majus.*

AD NOCT. *Ps.* Dómine Dóminus noster, 30. Cœli enarrant, *cum sua divisione*, 38. Exultáte Deo, 72.

LECTIO I.

De Epístola prima beáti Joannis Apóstoli. *C.* 4.

Nos ex Deo sumus. Qui novit Deum, audit nos: qui non est ex Deo, non audit nos: in hoc cognóscimus Spíritum veritátis, et spíritum erróris. Caríssimi, diligámus nos ínvicem; quia cáritas ex Deo est. Et omnis qui díligit, ex Deo natus est, et cognoscit Deum. Qui non díligit, non novit Deum; quóniam Deus cáritas est. In hoc appáruit cáritas Dei in nobis, quóniam Fílium suum unigénitum misit Deus in mundum, ut vivámus per eum. In hoc est cáritas: non quasi nos dilexérimus Deum, sed quóniam ipse prior dilexit nos, et misit Fílium suum propitiatiónem pro peccátis nostris. Caríssimi, si sic Deus dilexit nos, et nos debémus altérutrum díligere.

℟. Petrus cum Undecim locútus est eis; Pœniténtiam ágite, * Et baptizétur unusquisque vestrûm in remissiónem peccatórum; et accipiétis donum Spíritûs sancti, allelúia, allelúia. ℣. Usquequo stulti ea quæ sibi sunt nóxia cúpient? Convertímini ad correptiónem meam, * Et. *Act.* 2. *Prov.* 1.

LECTIO II.

Sermo sancti Augustíni Epíscopi. 269. *n.* 3, 4.

Habetis baptismum Christi: veníte ut habeátis et Spíritum Christi. Timéte quod scriptum est; Quisquis autem Spíritum Christi non habet, hic non est ejus. Induistis Christum formâ sacramenti: indúite imitatióne exempli; quóniam Christus pro nobis passus est, relinquens nobis exemplum, ut sequámur vestígia ejus. Nolíte esse habentes formam pietátis, virtútem autem ejus abnegantes. Quæ autem major est virtus pietátis, quàm cáritas unitátis? Vidémini vobis dícere: Dóminus Jesus. Et fortè non intelligentes atténditis ad id quod Apóstolus ait: Nemo dicit, Dóminus Jesus, nisi in Spíritu sancto. Sed hoc quod ait, Dicit, signatè pósitum est, et próprio quodam modo. Nemo enim dicit, Dóminus Jesus, nisi in Spíritu sancto; sed si dicit factis, non solis verbis. Nam possunt dícere, Dóminus Jesus, étiam de quibus ait: Non omnis qui dicit mihi, Dómine, Dómine, intrábit in regnum cœlórum. Sed, Nemo dicit, Dóminus Jesus, nisi in Spíritu sancto:

nemo planè, sed eo modo quod dictum est, id est, factis. Unde secútus adjunxit, Sed is qui facit voluntátem Patris mei qui in cœlis est, ipse intrábit in regnum cœlórum. Nunc ergo vos sanctum Spíritum habére cognóscite, quando mentem vestram per sincéram caritátem unitáti consenséritis hærére.

℟. Qui recepérunt sermónem Petri, baptizáti sunt: erant autem perseverantes in doctrína Apostolórum;* Omnes étiam qui credébant, erant páriter, et habébant ómnia commúnia, allelúia, allelúia. ℣. Ecce quàm bonum et quàm jucundum habitáre fratres in unum! quóniam illic mandávit Dóminus benedictiónem: * Omnes. *Act.* 2. *Ps.* 132.

LECTIO III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Joannem.

*Cap.* 3.

In illo tempore; Dixit Jesus Nicodémo: Amen, amen dico tibi; nisi quis renátus fúerit ex aqua et Spíritu sancto, non potest introíre in regnum Dei. Et réliqua.

Homília sancti Augustíni Epíscopi.

*In Joan. tract.* 12. *n.* 5.

Dicit Dóminus Nicodémo, et expónit ei: Amen, amen dico tibi; nisi quis renátus fúerit ex aqua et Spíritu, non potest introíre in regnum Dei. Tu, inquit, carnálem generatiónem intélligis, cùm dicis: Numquid potest homo redíre in víscera matris suæ? Ex aqua et Spíritu oportet ut nascátur propter regnum Dei. Si propter hæreditátem patris hóminis temporálem náscitur, nascátur ex viscéribus matris carnális: si propter hæreditátem Patris Dei sempiternam, nascátur ex viscéribus Ecclésiæ. Génerat per uxórem fílium pater moritúrus successúrum; génerat Deus de Ecclésia fílios non successúros, sed secum mansúros. Et séquitur: Quod natum est de carne, caro est; et quod natum est de Spíritu, spíritus est. Spirituáliter ergo náscimur verbo et sacramento.

℟. Quod natum est ex carne, caro est; et quod natum est ex Spíritu, spíritus est. Non miréris quia dixi: Oportet vos nasci dénuo. * Spíritus ubi vult spirat, allelúia, allelúia. ℣. Quis adjúvit Spíritum Dómini? aut quis consiliárius ejus fuit, et ostendit illi? * Spíritus. Glória. * Spíritus. *Joan.* 3. *Is.* 40.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 8. G. Spíritus ubi vult spirat; et vocem ejus audis, sed nescis unde véniat, aut quò vadat: sic est omnis qui natus est ex Spíritu, allelúia. *Joan.* 3.

Orémus. ORATIO.

Deus, totíus cónditor creatúræ, fámulos tuos quos fonte renovasti baptísmatis, quosque Spíritûs sancti plenitúdine solidasti, in adoptiónis

sorte fácias, quæsumus, dignanter ascríbi; Per Dóminum.... in unitáte ejusdem.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 8. *G.* Non misit Deus Fílium suum in mundum, ut júdicet mundum, sed ut salvétur mundus per ipsum, allelúia. *Joan.* 3.

## FERIA TERTIA.

*Duplex-majus.*

Ad Noct. *Ps.* Deus deórum Dóminus, *cum sua divisione*, 46. Miserére meî.... secundùm, 111. Te decet hymnus, 58.

Lectio i.

De Epístola prima beáti Joannis Apóstoli. *Cap.* 4.

Deum nemo vidit unquam. Si diligámus ínvicem, Deus in nobis manet, et cáritas ejus in nobis perfecta est. In hoc cognóscimus, quóniam in eo manémus, et ipse in nobis, quóniam de Spíritu suo dedit nobis: et nos vídimus, et testificámur, quóniam Pater misit Fílium suum Salvatórem mundi. Quisquis confessus fúerit quóniam Jesus est Fílius Dei, Deus in eo manet, et ipse in Deo. Et nos cognóvimus, et credídimus caritáti quam habet Deus in nobis. Deus cáritas est: et qui manet in caritáte, in Deo manet, et Deus in eo. In hoc perfecta est cáritas Dei nobiscum, ut fidúciam habeámus in die judícii; quia sicut ille est, et nos sumus in hoc mundo. Timor non est in caritáte: sed perfecta cáritas foràs mittit timórem, quóniam timor pœnam habet. Qui autem timet, non est perfectus in caritáte. Nos ergo diligámus Deum, quóniam Deus prior dilexit nos.

℟. Dixérunt Apóstoli: Dómine, da servis tuis cum omni fidúcia loqui verbum tuum. Et cùm orassent, * Motus est locus in quo erant congregáti; et repléti sunt omnes Spíritu sancto, allelúia, allelúia. ℣. Illuxérunt coruscatiónes tuæ, Deus, orbi terræ; commóta est et contrémuit terra: * Motus est. *Act.* 4. *Ps.* 76.

Lectio ii.

Sermo sancti Leónis Papæ.

* *De Pentec.* 1. *c.* 2.

Repleti sunt omnes Spíritu sancto, et cœpérunt loqui áliis linguis, prout Spíritus sanctus dabat éloqui illis. O quàm velox est sermo sapiéntiæ! et ubi Deus magister est, quàm citò díscitur quod docétur! Non est adhíbita intepretátio ad audiendum, non consuetúdo ad usum, non tempus ad stúdium; sed spirante ubi vóluit Spíritu veritátis, própriæ singulárum géntium voces factæ sunt in Ecclésiæ ore commúnes. Ab hoc ígitur die, tuba evangélicæ prædicatiónis intónuit: ab hoc die imbres charísmatum, flúmina benedictiónum omne desertum et universam áridam rigavérunt; quóniam ad renovandam fáciem terræ

Spíritus Dei ferebátur super aquas; et ad véteres ténebras abigendas, novæ lucis fúlgura coruscábant, cùm micántium splendóre linguárum, et verbum Dómini lúcidum, et elóquium conciperétur ignitum, cui ad creandum intelléctum, consumendumque peccátum, et efficácia illuminandi, et vis inesset urendi.

℟. Salus ab eis qui audiérunt confirmáta est, * Contestante Deo signis, et portentis, et váriis virtútibus, et Spíritûs sancti distributiónibus, allelúia, allelúia. ℣. Crevérunt, et quasi germinantes multiplicáti sunt; ac roboráti nimis, implevérunt terram: * Contestante. *Hebr.* 2. *Exod.* 1.

LECTIO III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Joannem.

*Cap.* 10.

In illo témpore; Dixit Jesus Pharisæis: Amen, amen dico vobis: Qui non intrat per óstium in ovíle óvium, sed ascendit aliunde, ille fur est et latro. Qui autem intrat per óstium, pastor est óvium. Et réliqua.

Homília sancti Augustíni Epíscopi. *In Joan. tract.* 45. *n.* 2.

Dominus de grege suo, et de óstio quo intrátur ad ovíle, similitúdinem propósuit in hodierna lectióne. Dicant ergo pagáni: Bene vívimus. Si per óstium non intrant, quid prodest eis unde gloriantur? Ad hoc enim debet unicuíque prodesse bene vívere, ut detur illi semper vívere; nam cui non datur semper vívere, quid prodest bene vívere? Quia nec bene vívere dicendi sunt, qui finem bene vivendi vel cæcitáte nésciunt, vel inflatióne contemnunt. Non est autem cuíquam spes vera et certa semper vivendi, nisi agnoscat vitam quæ est Christus, et per jánuam intret in ovíle.

℟. Recordátus est Dóminus pópuli sui: eduxit eos cum pastóribus gregis sui: * Pósuit in médio ejus Spíritum Sancti sui, allelúia, allelúia. ℣. Ipse dedit pastóres et doctóres, ad consummatiónem sanctórum in opus ministérii, in ædificatiónem córporis Christi: * Pósuit. Glória Patri. * Pósuit. *Is.* 63. *Ephes.* 4.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 2. D. Qui intrat per óstium, pastor est óvium: huic ostiárius áperit, et oves vocem ejus áudiunt, allelúia. *Joan.* 10.

Orémus. ORATIO.

Da, quæsumus, Ecclésiæ tuæ, miséricors Deus, ut sancto Spíritu congregáta, hostíli nullátenus incursióne turbétur; Per Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum...... in unitáte ejusdem.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 5. C. Per me si quis introíerit, salvábitur; et ingrediétur, et egrediétur, et páscua invéniet, allelúia. *Joan.* 10.

## FERIA QUARTA
### QUATUOR TEMPORUM.
*Duplex-minus.*

Ad Noct. *Ps.* Exurgat, 68. Dóminus dabit.... In ecclésiis, 69.

Lectio i.

De Epístola prima beáti Joannis Apóstoli.

*Cap.* 5.

Tres sunt qui testimónium dant in cœlo: Pater, Verbum, et Spíritus sanctus; et hi tres unum sunt. Et tres sunt qui testimónium dant in terra: spíritus, et aqua, et sanguis; et hi tres unum sunt. Si testimónium hóminum accípimus, testimónium Dei majus est; quóniam hoc est testimónium Dei, quod majus est, quóniam testificátus est de Fílio suo. Qui credit in Fílium Dei, habet testimónium Dei in se. Qui non credit Fílio, mendácem facit eum; quia non credit in testimónium, quod testificátus est Deus de Fílio suo. Et hoc est testimónium, quóniam vitam ætérnam dedit nobis Deus. Et hæc vita in Fílio ejus est. Qui habet Fílium, habet vitam: qui non habet Fílium, vitam non habet. Hæc scribo vobis, ut sciátis quóniam vitam habétis ætérnam, qui créditis in nómine Fílii Dei. Et hæc est fidúcia quam habémus ad eum; quia quodcumque petiérimus secundùm voluntátem ejus, audit nos. Et scimus quia audit nos quidquid petiérimus: scimus quóniam habémus petitiónes quas postulámus ab eo.

℟. Loquente Petro, cécidit Spíritus sanctus super omnes qui audiébant verbum; et obstupuérunt ex circumcisióne fidéles, quia * Et in natiónes grátia Spíritûs sancti effúsa est, allelúia, allelúia. ℣. Non est apud Deum nostrum personárum accéptio; * Et. *Act.* 10. 2 *Paral.* 19.

Lectio ii.

De Sermóne sancti Leónis Papæ. *De Jejun. Pentec.* 1. *c.* 1, 3.

Hodiernam, dilectíssimi, festivitátem, descensióne sancti Spíritûs consecrátam, séquitur, ut nostis, solemne jejúnium, quod ánimis corporibusque curandis salúbriter institútum, devótâ nobis est observántiâ celebrandum. Replétis namque Apóstolis virtúte promissâ; et in corda eórum Spíritu veritátis ingresso, non ambígimus inter cétera cœlestis sacramenta doctrínæ, hanc spiritális continéntiæ disciplínam de Paracléti magistério prímitus fuisse conceptam; ut sanctificátæ jejúnio mentes conferendis sibi charismátibus fierent aptióres. Igitur post sanctæ dies lætítiæ, quos in honórem Dómini à mórtuis resurgentis, ac deinde in cœlos ascendentis, exégimus, postque perceptum sancti

Spíritûs donum, salúbriter et necessáriè consuetúdo est ordináta jejúnii; ut si quid fortè inter ipsa festivitátum gáudia négligens libertas et licéntia inordináta præsumpsit, hoc religiósæ abstinéntiæ censúra castíget: quæ ob hoc quoque studiósiùs exequenda est, ut illa in nobis quæ hâc die Ecclésiæ divínitus sunt colláta, permáneant. Templum enim facti Spíritûs sancti, et majóre quàm unquam cópiâ divíni flúminis irrigáti, nullis debêmus concupiscéntiis vinci, nullis vítiis possidéri, ut virtútis habitáculum nullâ sit contaminatióne pollútum.

℟. Qui novit corda Deus, testimónium perhíbuit géntibus, dans illis Spíritum sanctum, sicut et nobis, * Et nihil discrévit inter nôs et illos, fide puríficans corda eórum, allelúia, allelúia. ℣. Parávit Dóminus bráchium sanctum suum in óculis ómnium géntium; * Et. *Act.* 15. *Is.* 52.

Lectio III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Joánnem.

*Cap.* 6.

In illo témpore; Dixit Jesus Judæis: Nemo potest veníre ad me, nisi Pater, qui misit me, tráxerit eum. Et réliqua.

Homília sancti Augustíni Epíscopi. *In Joan. tract.* 26. *n.* 2, 4.

Magna grátiæ commendátio. Nemo venit nisi tractus. Quem trahat et quem nòn trahat, quare illum trahat et illum non trahat, noli velle judicáre, si non vis erráre. Semel áccipe, et intéllige. Nondum tráheris? Ora ut tracháris. Inde et hìc si advertis, noli te cogitáre invítum trahi: tráhitur ánimus et amóre. Nec timére debémus ne dicátur nobis, Quómodo voluntáte credo, si trahor? Ego dico: Parum est voluntáte, étiam voluptáte tráheris. Quid est trahi voluptáte? Delectáre in Dómino, et dabit tibi petitiónes cordis tui. Est quædam voluptas cordis, cui panis dulcis est ille cœlestis. Porrò si poétæ dícere lícuit, Trahit sua quemque voluptas; non necéssitas, sed voluptas; non obligátio, sed delectátio: quantò fórtiùs nos dícere debémus, trahi hóminem ad Christum, qui delectátur veritáte, delectátur beatitúdine, delectátur justítiâ, delectátur sempiternâ vitâ, quod totum Christus est? Da amantem, et sentit quod dico. Da desiderantem, da esurientem, da in ista solitúdine peregrinantem atque sitientem, et fontem ætérnæ pátriæ suspirantem: da talem, et scit quid dicam. Si autem frígido loquor, nescit quid loquor. Tales erant isti qui ínvicem murmurábant.

℟. Est scriptum in Prophétis: * Et erunt omnes docíbiles Dei. Omnis qui audívit à Patre et dídicit, venit ad me, allelúia, allelúia.

℣.

℣. Dicit Dóminus : Ponam universos fílios tuos doctos à Dómino : * Et. Glória. * Et erunt. *Joan.* 6. *Is.* 54.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 3. c. Nemo potest veníre ad me, nisi Pater, qui misit me, tráxerit eum; et ego resuscitábo eum in novíssimo die, allelúia. *Joan.* 6.

Orémus. ORATIO.

MENTES nostras, quæsumus Dómine, Paraclétus qui à te procédit, illúminet; et indúcat in omnem, sicut tuus promísit Fílius, veritátem; Qui tecum vivit et regnat in unitáte ejusdem.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 1. D. Amen, amen dico vobis; qui credit in me, habet vitam æternam, allelúia. *Joan.* 6.

## FERIA QUINTA.

*Semiduplex.*

AD NOCTURN. *Ps.* Confitébimur, 99. Notus in Judæa, 99. Voce meâ,... voce meâ ad Deum, *cum sua divisione*, 30.

LECTIO I.

Incipit Epístola secunda beáti Joannis Apóstoli.

SENIOR Electæ dóminæ, et natis ejus, quos ego díligo in veritáte; et non ego solus, sed et omnes qui cognovérunt veritátem, propter veritátem quæ pérmanet in nobis, et nobiscum erit in ætérnum. Sit vobiscum grátia, misericórdia, pax à Deo Patre, et à Christo Jesu Fílio Patris, in veritáte et caritáte. Gavísus sum valde, quóniam invéni de fíliis tuis ambulantes in veritáte, sicut mandátum accépimus à Patre. Et nunc rogo te, dómina, non tanquam mandátum novum scribens tibi, sed quod habúimus ab inítio, ut diligámus altérutrum. Et hæc est cáritas, ut ambulémus secundùm mandáta ejus. Hoc est ènim mandátum, ut quemádmodum audistis ab inítio, in eo ambulétis; quóniam multi seductóres exiérunt in mundum, qui non confiténtur Jesum Christum venisse in carnem : hic est seductor et Antichristus. Vidéte vosmetipsos, ne perdátis quæ operáti estis; sed ut mercédem plenam accipiátis. Omnis qui recédit, et non pérmanet in doctrína Christi, Deum non habet; qui pérmanet in doctrína, hic et Patrem et Fílium habet. Si quis venit ad vos, et hanc doctrínam non affert, nolíte recípere eum in domum, nec Ave ei dixéritis. Qui enim dicit illi Ave, commúnicat opéribus ejus malignis. Plura habens vobis scríbere, nólui per chartam et atramentum; spero enim me futúrum apud vos, et os ad os loqui, ut gáudium vestrum plenum sit. Salútant te fílii soróris tuæ Electæ.

℟. Quæ præparávit Deus iis qui díligunt illum, nobis revelávit per Spíritum suum; * Spíritus enim ómnia scrutátur, étiam profunda Dei,

allelúia, allelúia. ℣. Sapiéntia et fortitúdo ipsíus sunt: ipse revélat profunda et abscóndita. * Spíritus. 1 *Cor.* 2. *Dan.* 2.

LECTIO II.

Sermo sancti Gregórii Nazianzéni. *Or.* 44.

PRIMUM Spíritus sanctus in angélicis et cœléstibus Virtútibus vim suam exerébat; deinde in Pátribus et Prophétis, quorum álii Deum per imáginem vidérunt aut cognovérunt, álii autem étiam res futúras præscivérunt: tum in Christi discípulis, iisque trifáriam, prout ipsórum captus ferébat, tribusque tempóribus; nempe ántequam Christus per passiónem glorificátus esset, postquam post resurrectiónem glorificátus fuit, ac dénique post ejus ad cœlos ascensiónem. Hoc autem perspícue osténdit tum prima illa morbórum spirituumque depúlsio, quæ scílicet non absque Spíritûs númine fiébat; tum illa post confectum salútis nostræ negótium insufflátio, quæ diviniórìs procul dúbio inspiratiónis spécimen habébat; tum postrémò præsens hæc igneárum linguárum divísio, quam étiam solemni festo celebrámus. Verùm primò quidem obscúrè, secundò expréssiùs, nunc verò perféctiùs, útpote qui non jam operatióne solâ præsens sit, ut priùs; sed essentiáli, ut sic loquar, modo adsit, simulque versétur. Nam, cùm Fílius corpóream nobiscum consuetúdinem habuisset, Spíritum quoque corpóreo modo cerni conveniébat. Cur autem in linguis ígneis? Utrùm propter purgatiónem? Ignis enim purgantis Scriptúra méminit. An verò propter esséntiam? Deus autem noster ignis est, et quidem ignis improbitátem absúmens. Atque in dispertítis linguis appáret ob gratiárum diversitátem; sedéntibus autem, propter régiæ dignitátis excelléntiam, ejúsque super sanctos requiétem.

℟. Prophétis qui de futúra in vobis grátia prophetavérunt, revelátum est; quia non sibimetipsis, vobis autem ministrábant ea * Quæ nunc nuntiáta sunt per eos qui evangelizavérunt, Spíritu sancto misso de cœlo, allelúia, allelúia. ℣. A sǽculo non audiérunt, neque áuribus percepérunt: óculus non vidit, Deus, absque te, quæ præparasti expectántibus te, * Quæ. 1 *Petr.* 1. *Is.* 64.

LECTIO III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Lucam. *Cap.* 9.

IN illo témpore; Convocátis Jesus duódecim Apóstolis, dedit illis virtútem et potestátem super ómnia dæmónia, et ut languóres curárent. Et réliqua.

Homília sancti Augustíni Epíscopi.

*De Civ. Dei, l.* 22. *c.* 5.

TRIA sunt incredibília, quæ tamen facta sunt. Incredíbile

est Christum resurrexisse in carne, et in cœlum ascendisse cum carne. Incredíbile est mundum rem tam incredíbilem credidisse. Incredíbile est hómines ignóbiles, ínfimos, paucíssimos, imperítos, rem tam incredíbilem, tam efficáciter mundo, et in illo étiam doctis persuadére potuisse. Horum trium incredibílium primum nolunt isti cum quibus ágimus, crédere : secundum coguntur et cérnere; quod non invéniunt unde sit factum, si non credunt tértium. Resurréctio certè Christi, et in cœlum cum carne in qua resurrexit ascénsio, toto jam mundo prædicátur et créditur. Si credíbilis non est, unde toto terrárum orbe jam crédita est? Si multi nóbiles, sublímes, docti eam se vidisse dixérunt, et quod vidérunt diffamáre curárunt, eis mundum credidisse non mirum est; sed istos adhuc crédere nolle perdúrum est. Si autem, ut verum est, paucis, obscúris, mínimis, indoctis eam se vidisse dicéntibus et scribéntibus crédidit mundus; cur pauci obstinatíssimi, qui remansérunt, ipsi mundo jam credenti adhuc usque non credunt?

℟. Convocátis Jesus duódecim Apóstolis, * Misit illos prædicáre regnum Dei, allelúia, allelúia. ℣. Creávit illis sciéntiam spíritûs, sensu implévit cor illórum, ut magnália enarrent óperum ejus. * Misit. Glória. * Misit. *Luc.* 9. *Eccli.* 17.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 8. G. Dedit Apóstolis Jesus virtútem et potestátem super ómnia dæmónia, et ut languóres curárent, allelúia. *Luc.* 9.

Orémus. Oratio.

Deus, qui Apóstolis tuis sanctum dedisti Spíritum; concéde plebi tuæ piæ petitiónis effectum: ut quibus dedisti fidem, largiáris et pacem; Per Dóminum..... in unitáte ejusdem.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 1. f. Egressi Apóstoli circuíbant per castella, evangelizantes et curantes ubíque, allelúia. *Luc.* 9.

## FERIA SEXTA
### QUATUOR TEMPORUM.
*Semiduplex.*

Ad Noct. *Psal.* Bénedic.... Quàm magnificáta sunt, 22. Sit glória, 23.

Lectio i.

Incipit Epístola tértia beáti Joannis Apóstoli.

Senior Gaio caríssimo quem ego díligo in veritáte. Caríssime, de ómnibus oratiónem fácio prósperè te ingredi et valére, sicut prósperè agit ánima tua. Gavísus sum valde veniéntibus frátribus, et testimónium perhibéntibus veritáti tuæ, sicut tu in veritáte ámbulas. Majórem horum non hábeo grátiam, quàm ut áudiam fílios meos in veritáte ambuláre. Caríssime, fidé-

liter facis quidquid operáris in frátres, et hoc in peregrínos qui testimónium reddidérunt caritáti tuæ in conspectu Ecclésiæ: quos benefáciens, dedúces dignè Deo. Pro nómine enim ejus profecti sunt, nihil accipientes à Géntibus. Nos ergo debémus suscípere hujúsmodi, ut cooperatóres simus veritátis. Scripsissem fórsitan Ecclésiæ; sed is qui amat primátum gérere in eis, Diótrephes, non récipit nos. Propter hoc si vénero, commonébo ejus ópera quæ facit, verbis malignis gárriens in nos; et quasi non ei ista sufficiant, neque ipse súscipit fratres, et eos qui suscípiunt, próhibet, et de Ecclésia éjicit. Caríssime, noli imitári malum, sed quod bonum est. Qui bene facit, ex Deo est: qui malè facit, non vidit Deum. Demétrio testimónium rédditur ab ómnibus, et ab ipsa veritáte: sed et nos testimónium perhibémus; et nosti quóniam testimónium nostrum verum est. Multa hábui tibi scríbere; sed nólui per atramentum et cálamum scríbere tibi. Spero autem prótinus te vidére, et os ad os loquémur. Pax tibi. Salútant te amíci. Salúta amícos nominátim.

℟. Omnia operátur unus atque idem Spíritus; * Et quosdam quidem pósuit in Ecclésia doctóres, deinde virtútes, exinde grátias curatiónum, allelúia, allelúia. ℣. Per sapiéntiam sanáti sunt quicumque placuérunt tibi, Dómine. * Et. 1 *Cor.* 12. *Sap.* 9.

LECTIO II.

De Sermóne sancti Leónis Papæ.

*De Pentec.* 1. *c.* 4, 5.

SICUT detestámur Ariános, qui inter Patrem et Fílium áliquam volunt esse distántiam; ita étiam Macedoniános páriter detestámur, qui, licet Patri et Fílio tríbuant æqualitátem, Spíritum tamen sanctum inferióris putant esse natúræ: non considerantes eam blasphémiam se incídere, quæ neque in præsenti século, neque in futúro sit remittenda judício, dicente Dómino: Quicumque díxerit verbum contra Fílium hóminis, remittétur ei; qui autem díxerit contra Spíritum sanctum, non remittétur ei, neque in hoc século, neque in futúro. Pérmanens itaque in hac impietáte, sine vénia est; quia exclúsit eum à se per quem póterat confitéri: nec unquam pervénit ad indulgéntiæ remédium, qui patrocinatúrum sibi non habet advocátum. Ab ipso enim est invocátio Patris, ab ipso sunt lácrymæ pœniténtium, ab ipso sunt gémitus supplicántium. Et nemo potest dícere Dóminum Jesum, nisi in Spíritu sancto, cujus æquálem cum Patre et Fílio omnipoténtiam, unamque deitátem evidentíssimè prædicat Apóstolus, dicens: Divisiónes quidem gratiárum sunt, idem autem Spíritus: et divisiónes

ministratiónum sunt, idem autem Dóminus: et divisiónes operatiónum sunt, idem verò Deus, qui operátur ómnia in ómnibus. His dilectíssimi aliisque documentis, quibus innumerabíliter divinórum eloquiórum coruscat auctóritas ad veneratiónem Pentecostes unanímiter incitémur; exultantes in honórem sancti Spíritûs, per quem omnis Ecclésia Cathólica sanctificátur, omnis ánima rationális imbúitur: qui inspirátor fídei, doctor sciéntiæ, fons dilectiónis, signáculum castitátis, et totíus est causa virtútis.

℟. Non vocávit nos Deus in immundítiam, sed in sanctificatiónem; * Qui étiam dedit Spíritum suum sanctum in nobis, allelúia, allel. ℣. Deus excelsus, ipse est miséricors, et propítius fiet peccátis eórum; * Qui étiam. 1 *Thess.* 4. *Ps.* 77.

LECTIO III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Lucam.

*Cap.* 5.

In illo témpore; Factum est in una diérum, et Jesus sedébat docens. Et erant Pharisæi sedentes, et legis Doctóres, qui vénerant ex omni castello Galilææ, et Judææ. et Jerúsalem: et virtus Dómini erat ad sanandum eos. Et réliqua.

Homília sancti Hilárii Epíscopi. *In Matt. c.* 8. *n.* 6.

Movet Scribas remissum ab hómine peccátum: hóminem enim tantùm in Jesu Christo contuebantur. Et remissum est ab eo, quod lex laxáre non póterat; fides enim sola justíficat. Deinde murmuratiónem eórum Dóminus intróspicit, dicitque fácile esse Fílio hóminis in terra peccáta dimíttere. Verùm enim nemo potest dimíttere peccáta, nisi solus Deus: ergo qui remittit, Deus est. Quia nemo remittit nisi Deus, Deus in hómine manens, curatiónem hómini præstábat: et nulla ei agendi et loquendi erat difficultas, cui subest totum posse quod lóquitur. Porrò autem ut ipse esse in córpore pósitus intélligi posset, qui et ánimis peccáta dimítteret, et resurrectiónem corpóribus præstáret, ait: Ut sciátis quóniam Fílius hóminis habet potestátem in terra dimíttere peccáta, ait paralytico: Surge. Sed quia omnis erat perficiendi óperis rátio explicanda, adjécit: Tolle lectum tuum. Primùm remissiónem tríbuit peccáti, dehinc virtútem resurrectiónis ostendit; tum sublatióne lécluli infirmitátem ac dolórem corpóribus dócuit abfutúram; postrémò réditu in domum própriam, iter in paradísum credéntibus esse redhibendum.

℟. Quid cogitátis in córdibus vestris? Quid est facílius dícere, Dimittuntur tibi peccáta; an dícere, Surge, et ámbula? * Ut autem sciátis quia Fílius hóminis habet

potestátem in terra dimittendi peccáta, tibi dico : Surge, tolle lectum tuum, et vade in domum tuam, allelúia, allelúia. ℣. Spíritus Dómini super me, eo quod únxerit Dóminus me, ut prædicárem indulgéntiam, et annum placábilem Dómino. * Ut autem. Glória. * Ut autem. *Luc.* 5. *Is.* 61.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 4. E. Virtus Dómini erat ad sanandum eos, allelúia. *Luc.* 5.

Orémus. Oratio.

Adsit nobis, quæsumus Dómine, virtus Spíritûs sancti, quæ et corda nostra clementer expurget, et ab ómnibus tueátur adversis; Per Dóminum... in unitáte ejusdem.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 3. a. Stupor apprehendit omnes; et magnificábant Deum, et repléti sunt timóre, dicentes : Quia vídimus mirabília hódie, allelúia. *Luc.* 5.

## SABBATO
### QUATUOR TEMPORUM.
*Semiduplex.*

Ad Noct. *Ps.* Confitémini. 39. Confiteántur, 40. Confiteantur Dómino, 41.

Lectio i.

Incipit Epístola Cathólica beáti Judæ Apóstoli.

Judas Jesu Christi servus, frater autem Jacóbi, his qui sunt in Deo Patre dilectis, et Christo Jesu conservátis et vocátis : Misericórdia vobis et pax, et cáritas adimpleátur. Caríssimi, omnem sollicitúdinem fáciens scribendi vobis de commúni vestra salúte, necesse hábui scríbere vobis : déprecans supercertári semel tráditæ sanctis fídei. Subintroiérunt enim quidam hómines (qui olim præscripti sunt in hoc judícium) ímpii, Dei nostri grátiam transferentes in luxúriam, et solum Dominatórem, et Dóminum nostrum Jesum Christum negantes. Commonére autem vos volo, scientes semel ómnia, quóniam Jesus pópulum de terra Ægypti salvans, secundò eos qui non credidérunt, pérdidit : Angelos verò, qui non servavérunt suum principátum, sed dereliquérunt suum domicílium, in judícium magni diéi vínculis ætérnis sub calígine reservávit. Sicut Sódoma, et Gomorrha, et finítimæ civitátes símili modo exfornicátæ, et abeuntes post carnem álteram, factæ sunt exemplum, ignis ætérni pœnam sustinentes; simíliter et hi carnem quidem máculant, dominatiónem autem spernunt, majestátem autem blasphémant.

℟. Quid orémus sicut oportet, nescímus; sed * Ipse Spíritus póstulat pro nobis gemítibus inenarrabílibus, allelúia, allelúia. ℣. In die illa, dicit Dóminus, effundam super domum David, et super habitatóres Jerúsalem, spíritum grátiæ et precum. * Ipse Spíritus póstulat pro nobis. *Rom.* 8. *Zach.* 12.

LECTIO II.
Sermo sancti Bernardi Abbátis.
*De Pentec. Serm.* 3. *n.* 8.

VERE múltiplex Spíritus, qui tam multiplíciter fíliis hóminum inspirátur, ut non sit qui se abscondat à calóre ejus: síquidem concéditur eis ad usum, ad miráculum, ad salútem, ad auxílium, ad solátium, ad fervórem. Ad usum quidem vitæ, bonis et malis, dignis páriter et indignis commúnia bona abundantíssimè tríbuens. Ingrátus est qui in his quoque benefícium Spíritûs non agnoscit. Ad miráculum, in signis et prodígiis, in váriis virtútibus quas per quorúmlibet manus operétur. Ipse est antíqua mirácula súscitans, ut ex præséntibus fidem ástruat præteritórum. Sed quia nonnullis hanc quoque grátiam sine própria utilitáte largítur, tértiò infúnditur ad salútem, cùm in toto corde nostro revértimur ad Dóminum Deum nostrum. Porrò ad auxílium datur, cùm in omni colluctatióne ádjuvat infirmitátem nostram. Nam cùm testimónium pérhibet spirítui nostro, quod fílii Dei sumus, ea inspirátio est ad consolatiónem. Datur étiam ad fervórem, cùm in córdibus perfectórum vehementiùs spirans, válidum ignem caritátis accendit; ut non solùm in spe filiórum Dei, sed étiam in tribulatiónibus glorientur, contuméliam glóriam reputantes, oppróbrium gáudium, despectiónem exaltatiónem. Omnibus nobis, ni fallor, datus est Spíritus ad salútem; ad fervórem non ita. Pauci enim sunt qui hoc Spíritu repleantur: pauci qui stúdeant æmulári. Contenti sumus angústiis nostris; nec respiráre in libertátem illam, non saltèm ad eam spiráre conámur. Orémus, fratres, ut compleantur in nobis dies Pentecostes, dies remissiónis, dies exultatiónis, dies veríssimi jubiléi: et invéniat nos semper Spíritus sanctus omnes propter præséntiam corporálem, páriter propter córdium unitátem, in eódem loco per promissam stabilitátem; ad laudem et glóriam sponsi Ecclésiæ Jesu Christi Dómini nostri, qui est super ómnia Deus benedictus in sǽcula. Amen. Tu autem, Dómine, miserére nostri.

℟. Qui confirmat nos in Christo, et qui unxit nos, Deus; qui et signávit nos, * Et dedit pignus Spíritûs in córdibus nostris, allelúia, allelúia. ℣. Dóminus Deus noster pépigit nobiscum fœdus. * Et. 2 *Cor.* 1. *Deut.* 5.

LECTIO III.
Léctio sancti Evangélii secundùm Lucam.
*Cap.* 4.

IN illo témpore; Descendit Jesus in Caphárnaum civitátem Galilææ; ibíque docébat illos sábbatis. Et stupébant in doctrína ejus, quia in potestáte erat sermo ipsíus. Et réliqua.

Homília sancti Ambrósii Epíscopi. *In Luc. l.* 4. *n.* 57, 58, 63.

Vide cleméntiam Dómini Salvatóris: nec indignatióne commótus, nec scélere offénsus, nec injúriâ violátus, Judæam déserit: quin étiam ímmemor injúriæ, memor cleméntiæ, nunc docendo, nunc liberando, nunc sanando, infídæ plebis corda demulcet. Et bene sanctus Lucas virum ab spíritu nequitiæ liberátum antè præmísit, et substítuit féminæ sanitátem. Utrumque enim sexum Dóminus curatúrus advénerat: et prior sanári débuit, qui prior creátus est; nec prætermitti illa quæ mobilitáte magis ánimi, quàm pravitáte peccáverat. Sábbato medicínæ Domínicæ ópera cœpta signíficat; ut inde nova creatúra cœperit, ubi vetus antè desívit; nec sub lege esse Dei Fílium, sed supra legem in ipso princípio designáret; nec solvi legem, sed impléri. Fortassis étiam in typo mulíeris illíus socrûs Simónis et Andréæ, váriis críminum fébribus caro nostra languébat, et diversárum cupiditátum immódicis æstuábat illécebris. Nec minórem febrem amóris esse díxerim, quàm calóris. Itaque illa ánimum febris, hæc corpus inflammat. Febris enim nostra avarítia est, febris nostra libído est, febris nostra ambítio est, febris nostra iracúndia est.

℟. Jesus docébat sábbatis; et * Stupébant in doctrína ejus; quia in potestáte erat sermo ipsíus, allelúia, allelúia. ℣. Sapiéntia in ecclésiis Altíssimi apériet os suum, et in médio pópuli exaltábitur, et in plenitúdine sancta admirábitur. * Stupébant. Glória. * Stupébant in doctrína. *Luc.* 4. *Eccli.* 24.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 1. f. Colloquebantur ad ínvicem, dicentes: Quod est hoc verbum, quia in potestáte et virtúte ímperat immundis spirítibus, et éxeunt? allelúia. *Luc.* 4.

Orémus. Oratio.

Mentibus nostris, quæsumus Dómine, Spíritum sanctum benignus infunde, cujus et sapiéntiâ cónditi sumus, et providéntiâ gubernámur; Per Dóminum..... in unitáte ejusdem.

# PROPRIUM SANCTORUM.

## PARS VERNA.

¶ *Per Quadragesimam non dicitur* Allelúia *in fine Antiphonarum quæ sumuntur de Communi pro Commemoratione Sanctorum.* ]

### DIE 4 FEBRUARII.

### S<sup></sup>Tæ JOANNÆ VALESIÆ, REGINÆ FRANCIÆ,

*Commemoratio.*

Ad Laudes. *Ant.* Orátio. ℣. Humiliábam, xlix.

Orémus. Oratio.

Deus, qui beátam Joannam è cadúci honóris fastígio ad crucis humilitátem vocasti, virtutumque splendóre illustrem effecisti; ejus méritis et intercessióne tríbue, ut spretis mundi illécebris, Christum sequi valeámus; Qui tecum vivit et regnat in unitáte Spíritûs sancti Deus, per ómnia sécula seculórum.

### DIE 5.

### SANCTÆ AGATHÆ, VIRGINIS ET MARTYRIS,

*Commemoratio.*

Ad Laudes, *Ant.* Factus est. ℣. Hæréditas. *Oratio,* Omnípotens, xliij.

### DIE 6.

### SS. EPISCOPORUM VEDASTI ET AMANDI

*Commemoratio.*

Ad Laudes, *Ant.* Ego sum óstium. ℣. Elégit, xvj. *Oratio*, Deus, qui beátos Pontífices, xvij.

### DIE 8.

### S. JOANNIS DE MATHA, PRESBYTERI,

*Commemoratio.*

¶ *In Dominica tantùm,*

Lectio ix.

Joannes, cui de Matha cognómen, in província Narbonensi secunda, Falcóne natus est à paréntibus pietáte et nobilitáte conspícuis. Studiórum causâ primùm Aquas Séxtias, et póstea Parísiòs profectus, emenso theológiæ currículo, magistérii láuream adeptus est, et à Maurítio Parisiensi Epíscopo, qui eum Clero suo ascrípserat Présbyter ordinátus. Cùm autem in prima sacrifícii oblatióne, divíno quodam instinctu ad redimendos ab infidélium ser-

vitúte captívos Christiános inflammátum se sensisset, ut ea de re matúriùs cogitáret, solitúdinem quamdam Meldensis diœcésis pétiit; ex qua post triénnium Romam, ut ab Apostólica Sede vivendi normam expéteret profectus, ab Innocéntio tértio recèns elecio Pontífice ad Odónem Epíscopum Parisiensem remissus est; cum quo communicátis consíliis ordinatisque ómnibus, ad prístinam solitúdinem reversus, in loco cui nomen erat Cervi frígidi, sócios adunávit, primumque Ordinis sui monastérium sub nómine et clientéla sanctíssimæ Trinitátis constítuit. Hujus institútum Parísiis statim in domo sancti Maturíni receptum, per Itáliam, deinceps Gálliam et Hispánias, ædificátis multis monastériis, propagátum est. Joannes autem, plenus opéribus bonis, Romæ óbiit die vigésimâ-primâ Decembris, anno millésimo ducentésimo décimo-tértio.]

Ad Laudes, *Ant.* Euge. ℣. Sacerdótes, xxvj.

Orémus. Oratio.

Deus, qui beáto Joanni Presbytero, ac sóciis ejus zelum fidéles rediṃendi captívos infudisti: ipso intercedente, da servis tuis illam córporis et ánimæ libertátem, quâ Christus Fílius tuus nos liberávit; Qui tecum vivit et regnat in unitáte Spíritûs sancti Deus, per ómnia sécula seculórum.

DIE 9.

## SANCTÆ APOLLONIÆ,

### VIRGINIS ET MARTYRIS,

*Commemoratio.*

¶ *In Dominica tantùm,*

Lectio ix.

Ex Epístola sancti Dionysii Alexandríni, ad Fábium Antiochénum.

*Euseb. Hist. l.* 6. *c.* 41.

Nequaquam ex Décii Imperatóris edicto persecútio apud nos cœpta est, sed íntegro anno antevérterat. Nam infaustus quidam vates ac poéta commóvit Alexándriæ advérsùs nos Gentílium turbas. Ab illo ígitur stimuláti, hanc solam pietátem cultumque dæmonum suórum existimábant, si cædibus advérsùs nostros sævírent. Itaque admirandam illam provectæ jam ætátis Vírginem Apollóniam tunc comprehendérunt; et maxillas quidem ejus percutientes, cunctos ei dentes excussérunt. Accenso autem extra urbem rogo, minabantur vivam se illam combustúros, nisi unà cum ipsis ímpia verba pronuntiáret. At illa véniam deprecári paulisper visa, atque ínterim dimissa, celériter in ignem insíliit, et conflagrávit.]

Ad Laudes, *Ant.* Factus est Dóminus. ℣. Hæréditas. *Oratio*, Deus, qui inter cétera, xliij.

DIE 10.

## SANCTÆ SCHOLASTICÆ, VIRGINIS, *Commemoratio.*

¶ *In Dominica tantùm*,

LECTIO IX.

SCHOLASTICA, Benedicti Abbátis soror, Deo ab infántiæ témpore dedicáta, ad fratrem quotannis veníre consuéverat, ut ejus sacris collóquiis fruerétur. Ad hanc vir Dei non longè extra jánuam in possessióne monastérii descendébat. Quâdam verò die, cùm diútius eum apud se retinére vellet, et ille non acquiésceret, insertas digitis manus ad oratiónem super mensam pósuit, ut Deus fratris mentem inflécteret. Tántaque súbitò tonítrui vis, et inundátio plúviæ erúpit, ut Benedictus pedem extra limen efferre non posset. Sicque factum est ut totam noctem pervígilem in spirituáli collóquio transígerent. Hinc reversus ad cellam Benedictus, post tríduum elevátis óculis, vidit ejusdem sorôris suæ ánimam in columbæ spécie cœli secréta penetrâre. Qui ex hac visióne óbitum ejus intélligens, prótinus fratres misit, qui corpus ejus ad monastérium suum deferrent, et in sepulcro quod sibi paráverat, pónerent. ¶ Eódem die óbiit in Túscia, ad annum millésimum centésimum quinquagésimum - séptimum, Guillelmus Eremíta, qui vitæ primórdiis in milítia licéntiùs transactis, pœniténtiâ ductus, in silvam Liválliam apud Pisános cum áliquot sóciis secessit; unde póstea discédens, uno Petro cómite, venit ad montem de Pruno, ac demum in Stábulum Rhodis, in quo austeritáte confectus, migrávit ad Dóminum. ]

AD LAUDES, *Ant.* Exultábit. ℣. Sitívit. *Oratio*, Fidéles tuos, xliv.

*Pro Commem. S. Guillelmi de Malavalle, Eremita; Ant.* Pars mea. ℣. Clamávi. xxxij.

Orémus. ORATIO.

DEUS, qui ánimæ fámuli tui Guillelmi æternæ beatitúdinis præmia contulisti: concéde propítius, ut qui nostræ justítiæ fidúciam non habémus, ejus qui tibi plácuit précibus adjuvémur; Per Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum.

DIE 11.

## S. SEVERINI ABBATIS *Commemoratio.*

¶ *In Dominica tantùm*,

LECTIO IX.

SEVERINUS, referente Fausto Presbytero, in Agaunensi monastério, ubi sanctus Maurícius quiescit, primùm Mónachus, deinde Abbas effectus est. Eâ sanctitáte et miraculórum grátiâ præfulsit, ut ad eum infirmi et à dæmónibus vexáti undecumque conflúe-

rent, ejusque précibus sanarentur. Tunc témporis Clodovéus Magnus, annum regni agens vigésimum-quintum, longâ et à médicis desperátâ febre confectus, consílio Tranquillíni médici, sanctum virum, misso Transoário cubiculário, accersívit. Annuit petitióni regis Severínus, eamque frátribus expósuit. Quos et Spíritûs instinctu præmónuit non ultrà se ad eos reversúrum. Statim Agauno profectus, cùm Nivernum venisset, Euládio Epíscopo, muto, surdo et ægrotanti, íntegram valetúdinem sic restítuit, ut eódem die Missas celebráverit, et pópulo benedíxerit. Parísios ingrédiens, óbvium sibi juxta portam urbis leprósum osculátus, ac sputo líniens, adhíbitâ oratióne, sanávit. In régiam admissus, detractam sibi casúbulam Clodovéo impósuit, eumque à febre statim liberávit. Morátus ibi aliquantisper, plúribus áulicis et cívibus sanitátem réddidit. Inopes ex régiis thesauris, ipso rege liberáliter annuente, fovit; vinctosque quos vellet, relaxandi accépit ab eo potestátem. Cùm propinquum sui éxitûs diem præséntiens, regi et Parisiórum cívibus valedixisset, ad Castrum Nantónis se cóntulit; ibíque intra tríduum óbiit. ]

Ad Laudes, *Ant.* Ecce ego. ℣. Veníte. *Oratio*, Deus, cujus múnere, xxxij.

DIE 18.

## SANCTI SIMEONIS, EPISCOPI ET MARTYRIS,

*Commemoratio.*

¶ *In Dominica tantùm,*

LECTIO IX.

Ex libro quinto Commentariórum sancti Hegesippi Historiógraphi.

*Euseb. Hist. l.* 3.

Simeon, cognátus Dómini, fílius Cléophæ, secundus post Jacóbum Hierosólymæ Epíscopus, calúmniam passus ab hæréticis, accusátus est coram Attico Consulári; et per plúrimos dies acerbíssimis tormentis excruciátus, fidem Christi constantíssimè professus est; ita ut omnes supra modum admirarentur, et ipse quoque Consuláris, quómodo is qui centum viginti annos attígerat, tália pertulisset. Tandem verò senténtiâ júdicis cruci affixus est. Ad hæc usque témpora Ecclésia virgo pura et incorrupta permansit, in obscúro adhuc recessu delitescéntibus quicumque rectam salutáris prædicatiónis régulam depraváre nitebantur. Postquam autem sacer Apostolórum chorus vário mortis génere extinctus est, effluxeratque jam ætas hóminum illórum qui divínam ipsam Sapiéntiam suis áuribus auscultáre merúerant; tunc demum exorta est ímpii erróris conspirátio, nullo vidélicet ám-

pliùs ex Apóstolis supérstite. ]

Ad Laudes, *Ant.* Bonum. ℣. Adjútor. *Oratio*, Deus, cujus grátia, vj.

DIE 24 *vel* 25.

## S. MATTHIÆ APOSTOLI.

*Duplex-majus.*

### IN I VESPERIS.

*Ant.* 1. D. Vocávit Jesus discípulos suos, et elégit duódecim ex ipsis, quos et Apóstolos nominávit. *Luc.* 6.

*Ant.* 3. a. Vocávit ad se quos vóluit; et dedit illis potestátem curandi infirmitátes, et ejiciendi dæmónia. *Marc.* 3.

*Ant.* 4. E. Hos misit Jesus, præcípiens eis; Ite ad oves quæ periérunt domûs Israel. *Matth.* 10.

*Ant.* 5. C. Euntes prædicáte, dicentes: Quia appropinquávit regnum cœlórum. *Matth.* 10.

*Ant.* 7. d. Egressi autem, circuíbant per castella, evangelizantes, et curantes ubíque. *Luc.* 9.

Capitulum. *Hebr.* 2.

Cum inítium accepisset salus enarrári per Dóminum, ab eis qui audiérunt in nos confirmáta est, contestante Deo signis et portentis, et váriis virtútibus, et Spíritûs sancti distributiónibus secundùm suam voluntátem.

℟. Ecce dedi vobis potestátem super omnem virtútem inimíci: * Verúmtamen in hoc nolíte gaudére: † Gaudéte quòd nómina vestra scripta sunt in cœlis. ℣. Dabo vos in nomen, et in laudem ómnibus pópulis: * Verúmtamen. Glória. † Gaudéte. *Luc.* 10. *Soph.* 3.

Hymnus. *C.*

Lætare, cœlum; pláusibus
Tellus resultet æmulis:
Apostolórum glóriam
Solemnis instaurat dies.

Vos, ceu tubis sonántibus,
Christum per orbem spárgitis:
Vos illa sacris vátibus
Prædicta mundi lúmina.

Qui, dante Christo, pánditis,
Qui cláuditis cœli fores,
Nos críminum tenácibus
Vinclis ligátos sólvite.

Potente qui nutu graves
Morbos fugátis córporum,
Desiderátam póscite
Ægris medélam móribus;

Sublimis ut cùm vénerit,
Vobis simul sedéntibus,
Ad déxterum Judex latus
Nos inter agnos cóllocet.

Uni sit et trino Deo
Supréma laus, summum decus,
De nocte qui nos ad suæ
Lumen vocávit glóriæ.
Amen.

℣. Dóminus dabit verbum evangelizántibus, ℟. Virtúte multâ. *Ps.* 67.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 2. D. Oportet ex his viris qui nobiscum sunt congregáti in omni témpore quo intrávit et exívit inter nos Dóminus Jesus, testem resurrectiónis

ejus nobiscum fieri unum ex istis. *Act.* 1.

*Oratio ut infrà ad Laudes.*

*Fit Commemoratio Feriæ.*

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invit.* Christum Apostolórum Magistrum et Dóminum, * Veníte, adorémus. *Joan.* 13.

HYMNUS. *S. V.*

SUPREME, quales, Arbiter,
Tibi ministros éligis,
Tuas opes qui vilibus
Vasis amas committere!

Hæc nempe plena lúmine
Tu vasa frangi præcipis:
Lux inde magna rúmpitur,
Ceu, nube scissâ, fúlgura.

TOTUM per orbem núntii,
Nubes velut, citi volant:
Verbo graves, Verbo Deo,
Tonant, coruscant, pérpluunt.

Christum sonant: versæ ruunt
Arces superbæ dæmonum.
Circùm tubis clangéntibus,
Sic versa quondam mœnia.

FAC, Christe, cœlestes tubæ
Somno graves nos éxcitent:
Accensa de te lúmina
Pellant tenébras méntium.

Uni sit et trino Deo
Supréma laus, summum decus,
De nocte qui nos ad suæ
Lumen vocávit glóriæ.
Amen.

*IN I NOCTURNO.*

*Ant.* 1. g. Convocátis Jesus duódecim Apóstolis, cœpit illos míttere binos prædicáre regnum Dei. *Luc.* 9. *Marc.* 6.

*Ant.* 2. D. Præcípiens, dicébat eis: Infírmos curáte, mórtuos suscitáte, dæmones ejícite: gratìs accepístis, gratìs date. *Matth.* 10.

*Ant.* 3. c. Nolíte possidére aurum, neque argentum, neque pecúniam in zonis vestris: dignus enim est operárius cibo suo. *Matth.* 10.

℣. Custodiébant testimónia ejus, ℟. Et præceptum quod dedit illis. *Ps.* 98.

*Lectiones de Scriptura occurrente, divisione factâ ad asteriscum* *.

℟ *j.* Ecce ego mitto vos sicut oves in médio lupórum: * Estóte ergo prudentes sicut serpentes, et símplices sicut columbæ. ℣. Ex ore Dómini prudéntia; et proteget gradientes simplíciter. * Estóte ergo. *Matth.* 10. *Prov.* 2.

℟ *ij.* Tradémini à paréntibus, et cognátis, et amícis; et morte afficient ex vobis, et capillus de cápite vestro non períbit: * In patiéntia vestra possidébitis ánimas vestras. ℣. Nolíte timére oppróbrium hóminum, et blasphémias eórum ne metuátis; ego, ego ipse consolábor vos: * In patiéntia. *Luc.* 21. *Is.* 51.

℟ *iij.* Cùm tradent vos, nolíte cogitáre quómodo, aut quid loquámini: * Non enim vos estis qui loquímini, sed Spíritus Patris vestri qui lóquitur in vobis. ℣. Spíritus meus erit in médio vestrûm, nolíte timére:

* Non. Glória Patri. * Non. *Matth.* 10. *Agg.* 2.

*IN II NOCTURNO.*

*Ant.* 4. E. In quamcumque domum intravéritis, dícite : Pax huic dómui ; et si ibi fúerit fílius pacis, requiescet super illum pax vestra. *Luc.* 10.

*Ant.* 5. a. Qui vos audit, me audit ; et qui vos spernit, me spernit : qui autem me spernit, spernit eum qui misit me. *Luc.* 10.

*Ant.* 6. F. Quod dico vobis in ténebris, dícite in lúmine ; et quod in aure audítis, prædicáte super tecta. *Matth.* 10.

℣. Annuntiáte inter gentes glóriam Dómini, ℟. In ómnibus pópulis mirabília ejus. *Ps.* 95.

LECTIO IV.

De Actibus Apostolórum.

*Cap.* 1.

In diébus illis, exurgens Petrus in médio fratrum, dixit : ( erat autem turba hóminum simul ferè centum viginti ) Viri fratres, oportet impléri Scriptúram quam prædixit Spíritus sanctus per os David, de Juda qui fuit dux eórum qui comprehendérunt Jesum ; qui connumerátus erat in nobis, et sortítus est sortem ministérii hujus. Et hic quidem possédit agrum de mercéde iniquitátis, et suspensus crépuit médius, et diffúsa sunt ómnia víscera ejus. Et notum factum est ómnibus habitántibus Jerúsalem ; ita ut appellarétur ager ille linguâ eórum, Hacéldama, hoc est, Ager sánguinis. Scriptum est enim in libro Psalmórum : Fiat commorátio eórum deserta, et non sit qui inhábitet in ea, et episcopátum ejus accípiat alter. Oportet ergo ex his viris qui nobiscum sunt congregáti in omni témpore quo intrávit et exívit inter nos Dóminus Jesus, incípiens à baptísmate Joannis usque in diem quâ assumptus est à nobis, testem resurrectiónis ejus nobiscum fíeri unum ex istis. Et statuérunt duos ; Joseph, qui vocabátur Bársabas, qui cognominátus est Justus ; et Matthíam. Et orantes dixérunt : Tu, Dómine, qui corda nosti ómnium, ostende quem elégeris ex his duóbus unum, accípere locum ministérii hujus, et apostolátûs, de quo prævaricátus est Judas, ut abíret in locum suum. Et dedérunt sortes eis, et cécidit sors super Matthíam ; et annumerátus est cum úndecim Apóstolis.

℟. Vos estis qui permansistis mecum in tentatiónibus meis : * Et ego dispóno vobis sicut dispósuit mihi Pater meus regnum. ℣. Dispósui testamentum electis meis : * Et. *Luc.* 22. *Ps.* 88.

LECTIO V.

Ex Commentário sancti Joannis Chrysóstomi, in Actus Apostolórum. *Hom.* 3.

In diébus illis, exurgens Petrus. Tanquam férvidus, et

tanquam is cui à Christo grex commissus fúerat, et tanquam chori princeps, ubíque primus íncipit loqui. Viri fratres, oportébat impléri Scriptúram. Illud consídera, quod Petrus agit ómnia ex commúni senténtia, nihil ex auctoritáte, nihil cum império. Oportet ígitur ex viris nobiscum congregátis in omni témpore. Quámobrem commúnicat hoc negótium cum illis? Ne delaberentur in contentiónem; nam si his ipsis hoc áccidit, multò magis accidisset illis. Proptérea ait: Viri fratres, oportet elígere è nobis. Multitúdini permittit judícium; simul eos qui eligebantur reddens venerandos, et seipsum líberans ab ódio ceterórum. Ex quibus autem facienda sit eléctio, ipse interpretátur dicens: Ex viris nobiscum congregátis in omni témpore. Etenim si dixisset, Modestos oportet adesse, céteros affecisset contuméliâ. Et statuérunt duos; Joseph, qui vocabátur Bársabas, qui cognominátus est Justus; et Matthíam. Quare non multos? Ne major fieret animórum dejéctio, neve res in multos distraherétur.

℟. Jam non dicam vos servos: vos autem dixi amícos; * Quia ómnia quæcumque audívi à Patre meo, nota feci vobis. ℣. Antíqua ne intueámini: ecce ego fácio nova, et nunc orientur: útique cognoscétis ea; * Quia ómnia quæcumque audívi. *Joan.* 15. *Is.* 43.

LECTIO VI.

Et verò omnes commúniter precantur, dicentes: Tu, Dómine, qui nosti corda ómnium, ostende. Tu, inquiunt; non nos. Aptè córdium cognitórem appellant: hinc enim eléctio erat facienda, non ab exterióribus. Neque dixérunt, Elige; sed, Ostende electum, hoc est, quem tu elegisti; scientes ómnia præfiníta esse à Deo. Et dedérunt eis sortes. Nondum judicábant se esse idóneos ut rem ipsi sibi permítterent. Ideóque cúpiunt áliquo signo edocéri. Alióqui, si illic ubi nec erat precátio, neque viri probi, tantùm váluit sors eo quod recto ánimo fieret super Jona; multò magis hic explévit chorum, ac perfécit órdinem. Nec alter ille dóluit; non enim celassent Apóstoli próprios defectus, qui de ipsis primóribus non vériti sunt dícere, quod álibi commóti fúerint indignatióne: idque non semel, sed sæpiùs. Hos ígitur et nos imitémur. Non jam ómnibus loquor, sed his tantùm qui principátum affectant. Si credis Dei esse electiónem, ne indignéris; illi enim indignáris, et irritáris adversùs illum. Ille est qui elégit.

℟. Elégi vos, et pósui vos, ut eátis, et fructum afferátis, et fructus vester máneat; * Ut quodcumque

petiéritis Patrem in nómine meo, det vobis. ℣. Quod salvátum fúerit de domo Juda, fáciet fructum: zelus Dómini exercítuum fáciet istud; * Ut. Glória Patri. * Ut. *Joan.* 15. *Is.* 37.

*IN III NOCTURNO.*

*Ant.* 8. G. Príncipes géntium dominantur eórum; et qui majóres sunt, potestátem exercent in eos: non ita erit inter vos. *Matth.* 20.

*Ant.* 7. d. Quicumque volúerit inter vos major fíeri, sit vester minister: sicut Fílius hóminis non venit ministrári, sed ministráre. *Matth.* 20.

*Ant.* 3. à. Cùm fecéritis ómnia quæ præcepta sunt vobis, dícite: Servi inútiles sumus; quod debúimus fácere, fécimus. *Luc.* 17.

℣. Non nobis, Dómine, non nobis, sed nómini tuo da glóriam ℟. Super misericórdia tua et veritáte tua. *Ps.* 113.

LECTIO VII.

Léctio sancti Evangélii secundùm Joannem. *C.* 13.

ANTE diem festum Paschæ, dixit Jesus discípulis suis: Amen, amen dico vobis, Non est servus major dómino suo, neque apóstolus major est eo qui misit illum. Si hæc scitis, beáti éritis si fecéritis ea. Et réliqua.

Homília sancti Augustíni Epíscopi.

*Tract. in Joan.* 59. *n.* 1.

CUM hæc Dóminus præmisisset, adjunxit: Non de ómnibus vobis dico; ego scio quos elégerim. Notum est de quo loquátur: Judas ille tráditor ejus attíngitur. Ergo ipsum non elégerat; unde ab eis quos elégit, isto sermóne secernit. Quid est ergo quod álio loco dicit, Nonne ego vos duódecim elégi, et unus ex vobis diábolus est? An et ipse ad áliquid est electus, ad quod útique erat necessárius; non autem ad beatitúdinem, de qua modò ait: Beáti éritis si fecéritis ea? Hoc non de ómnibus dicit; scit enim quos ad societátem beatitúdinis hujus elégerit. Non est ex eis iste, qui panem illíus sic edébat, ut super eum leváret calcáneum.

℟. Mementóte sermónis mei quem ego dixi vobis: * Non est servus major dómino suo: si me persecúti sunt, et vos persequentur. ℣. Locúti sunt adversùm me linguâ dolósâ, et sermónibus ódii circumdedérunt me: * Non est. *Joan.* 15. *Ps.* 108.

LECTIO VIII. *Tr.* 27. *n.* 10.

ELECTI in laude solent dici. An electus est et iste, de quo nolente et nesciente magnum áliquid boni fíeret? Hoc est próprium Dei, contrárium iníquis. Omnibus bonis Dei malè útitur malus: contrà, malis hóminum malórum bene útitur bonus. Et quid tam bonum quàm unus Deus? Quandóquidem ipse Dóminus dixit: Nemo bonus nisi unus Deus. Quantò ergo ille mélior, tantò méliùs úti-

tur et malis nostris. Quid Judâ pejus? Sed malo ejus bene usus est Dóminus. Tradi se pértulit, ut redímeret nos. Ecce malum Judæ in bonum conversum est. Potest et sic intélligi quod ait: Duódecim elégi, quia sacrátus est númerus. Non enim quia périit inde unus, ídeo illíus númeri honor demptus est: nam in locum pereuntis álius subrogátus est.

℟. De mundo non estis, sed ego elégi vos de mundo; proptérea odit vos mundus: sed * Confídite, ego vici mundum. ℣. Non derelinquet Dóminus sanctos suos; éruet eos à peccatóribus, et salvábit eos: * Confídite, ego vici mundum. *Joan.* 15. *Ps.* 36.

*Lectio ix de Evangelio et Homilia Feriæ occurrentis.*

℟. Pater sancte, serva eos in nómine tuo quos dedisti mihi. Sicut tu me misisti in mundum, ego misi eos in mundum; et * Pro eis ego sanctífico meipsum, ut sint et ipsi sanctificáti in veritáte. ℣. Sanctificábunt Sanctum Jacob, et Deum Israel prædicábunt. * Pro eis. Glória. * Pro eis. *Joan.* 17. *Is.* 29.

*Dicitur* Te Deum.

℣ *Sacerd.* Confitémini Dómino, et invocáte nomen ejus; ℟. Annuntiáte inter gentes ópera ejus. *Ps.* 104.

AD LAUDES.

*Ant.* 8. *G.* Jesus locútus est úndecim discípulis, dicens: Data est mihi omnis potestas in cœlo et in terra; euntes ergo, docéte omnes gentes. *Matth.* 28.

*Ant.* 6. F. Prædicáte Evangélium omni creatúræ, baptizantes eos, docentes serváre ómnia quæcumque mandávi vobis. *Marc.* 16. *Matth.* 28.

*Ant.* 2. D. Quorum remiséritis peccáta, remittuntur eis; et quorum retinuéritis, retenta sunt. *Joan.* 20.

CANTICUM. *Is.* 66.

PONAM in géntibus signum, * et mittam ex eis, qui salváti fúerint, ad gentes in mare;

In Africam, et Lydiam tendentes sagittam; * in Itáliam, et Græciam, ad Insulas longè:

Ad eos, qui non audiérunt de me, * et non vidérunt glóriam meam.

Et annuntiábunt glóriam meam géntibus, * et addúcent omnes fratres vestros de cunctis géntibus donum Dómino, ad montem sanctum meum Jerúsalem.

Quómodo si inferant filii Israel munus in vàse mundo, * in domum Dómini.

Et assúmam ex eis in Sacerdótes, et Levítas, * dicit Dóminus.

Quia sicut cœli novi, et terra nova, quæ ego fácio stare coram me, dicit Dóminus; * sic stabit semen vestrum, et nomen vestrum.

*Ant.* 4. *D.* Accipiétis virtútem superveniéntis Spíritûs sancti in vos; et éritis mihi testes usque ad últimum terræ. *Act.* 1.

*Ant.* 1. a. Ecce ego vobiscum sum ómnibus diébus usque ad consummatiónem séculi. *Matth.* 28.

CAPITULUM. *Ephes.* 4.

CHRISTUS dedit quosdam quidem Apóstolos, quosdam autem Prophétas, álios verò Evangelistas, álios autem Pastóres, et Doctóres, ad consummatiónem sanctórum in opus ministérii, in ædificatiónem córporis Christi.

HYMNUS. *S. V.*

CŒLESTIS aulæ Príncipes,
Sacri duces exércitûs,
Bisséna mundi lúmina,
Olim futúri júdices.

Mersis gravi calígine,
Per vos dies renáscitur:
Quos vanus error lúserat,
Illustrat alma véritas.

NON vi, nec armis mílitum,
Fandi nec ullis ártibus;
Verbo sed irrísæ Crucis,
Christo rebelles súbditis.

Quibus gemébat súbditus,
Rumpuntur orbis víncula:
Jam gaudet, excusso jugo,
Liber Dei sub légibus.

VULGATA terris ómnibus
Per vos Dei mystéria:
Sic vestra terris ómnibus
Præclára facta pérsonant.

Uni sit et trino Deo
Supréma laus, summum decus,
De nocte qui nos ad suæ
Lumen vocávit glóriæ. Amen.

℣. Príncipes populórum congregáti sunt ℟. Cum Deo Abraham. *Ps.* 46.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 4. E. Tu, Dómine, qui corda nosti ómnium, ostende quem elégeris accípere locum ministérii hujus. *Act.* 1.

Orémus. ORATIO.

DEUS, qui beátum Matthíam Apostolórum tuórum collégio sociasti; tríbue, quæsumus, ut ejus interventióne, tuæ circa nos pietátis semper víscera sentiámus; Per Dóminum.

*Fit Commemoratio Feriæ.*

## AD PRIMAM.

*Ant.* 8. G. Jesus.

*In* ℟ *br.* ℣. Qui venisti, etc. *ut in Ordinario*, 121.

## AD TERTIAM.

*Ant.* 6. F. Prædicáte.

CAPITULUM. 2 *Cor.* 2.

DEO grátias, qui semper triumphat nos in Christo Jesu, et odórem notítiæ suæ manifestat per nos in omni loco.

℟ *br.* In omnem terram * Exívit sonus eórum. In omnem. ℣. Et in fines orbis terræ * verba eórum. * Exívit. Glória. In omnem.

℣. Non sunt loquélæ neque sermónes, ℟. Quorum non audiantur voces eórum. *Ps.* 18.

## AD SEXTAM.

*Ant.* 2. D. Quorum.

CAPITULUM. 2 *Cor.* 5.

POSUIT in nobis Deus verbum reconciliatiónis. Pro Christo ergo legatióne fúngimur, tanquam Deo exhortante per nos. Obsecrámus pro Christo, reconciliámini Deo.

℟ *br.* Dóminus excelsus * Subjécit pópulos nobis. Dó-

minus. ℣. Elégit nobis * hæreditátem suam : * Subjécit. Glória. Dóminus. *Ps.* 46.

℣. Nimis honorificáti sunt amíci tui, Deus : ℟. Nimis confortátus est principátus eórum. *Ps.* 138.

AD NONAM.

*Ant.* 1. a. Ecce.

CAPITULUM. 2 *Thess.* 2.

STATE, et tenéte traditiónes quas didicistis sive per sermónem, sive per epístolam nostram. Ipse autem Dóminus noster Jesus Christus, et Deus, et Pater noster, qui dilexit nos, et dedit consolatiónem æternam, et spem bonam in grátia, exhortétur corda vestra, et confirmet in omni ópere et sermóne bono.

℟ *br.* Confitébimur tibi, Deus : * Invocábimus nomen tuum. Confitébimur, ℣. Narrábimus * mirabília tua : * Invocábimus. Glória. Confitébimur. *Ps.* 74.

℣. In generatiónem et generatiónem ℟. Annuntiábimus laudem tuam. *Ps.* 78.

AD II VESPERAS.

*Ant.* 6. F. Injecérunt manus in Apóstolos, et posuérunt eos in custódia. *Act.* 5.

*Ant.* 2. D. Cæsis denuntiavérunt ne omníno loquerentur in nómine Jesu. *Act.* 5.

*Ant.* 4. E. Ibant gaudentes à conspectu concílii, quóniam digni hábiti sunt pro nómine Jesu contuméliam pati. *Act.* 5.

*Ant.* 1. g. Loquebantur verbum Dei cum fidúcia ; et virtúte magnâ reddébant testimónium resurrectiónis Jesu Christi. *Act.* 4.

*Ant.* 3. a. Tradidérunt ánimas suas pro nómine Dómini nostri Jesu Christi. *Act.* 15.

CAPITULUM. 1 *Cor.* 4.

DEUS nos Apóstolos novíssimos ostendit, tanquam morti destinátos ; quia spectáculum facti sumus mundo, et ángelis, et homínibus.

HYMNUS. *S. V.*

QUEM misit in terras Deus,
Ut morte nos servet suà,
Amóris hic fidos sui
Vos éligit vicários.

Occísus Agnus à lupis,
Vos misit agnos ad lupos :
Mores ferínos éxuunt,
Agni repente de lupis.

QUÆ victimárum cædibus
Tellus madébat ímpiis,
Vestris eam sudóribus,
Vestro piastis sánguine.

Hoc rore facta pínguior,
Quot illa fructus prótulit !
Quæ, quanta surrexit seges !
Et ista nos seges sumus.

QUAM si bonus respéxeris.
Qui das rigátis créscere ;
Frumenta nos cœléstibus
Matúra condes hórreis.

Uni sit et trino Deo
Supréma laus, summum decus,
De nocte qui nos ad suæ
Lumen vocávit glóriæ.
Amen.

℣. Pro pátribus tuis nati sunt tibi filii : ℟. Constítues eos príncipes super omnem terram. *Ps.* 44.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 6. F. Dedérunt sortes eis : et céci-

dit sors super Matthíam et annumerátus est cum úndecim Apóstolis. *Act.* 1.

*Fit Commemoratio Feriæ.*

DIE 27 *vel* 28.

## SANCTÆ HONORINÆ,

### VIRGINIS ET MARTYRIS,

*Commemoratio.*

¶ *In Dominica tantùm,*

LECTIO IX.

HONORINA, virginitátis et martyrii palmâ illustris, passa est apud Calétes in diœcési Rotomagensi, et sepulta prímitus in vico Gerardi-Villa, non longè ab óstiis Séquanæ, ubi jam à plúribus séculis trádita est Canónicis reguláribus ecclésia ejus título et patrocínio illustris. Sub Cárolo Símplice, cùm Normanni sacra profánaque vastárent, à Christiánis eórum immanitátem fugiéntibus sanctum corpus ad confluentes Séquanæ et Isaræ translátum est, et collocátum in æde sanctæ Maríæ, quam Ivo comes Bellimontis ad Isaram Beccensi monastério donávit, tempóribus sancti Anselmi ejusdem monastérii Abbátis, cujus nómine inscripta est hujus translatiónis história.]

AD LAUDES, *Ant.* Factus est, ℣. Hæréditas, xliij.

Orémus. ORATIO.

AURES tuæ pietátis, quæsumus Dómine, précibus nostris inclína; ut qui delictórum nostrórum caténis stríngimur, interveniente beátâ Honorínâ Vírgine et Mártyre tuâ, miseratiónis tuæ grátiâ liberémur; Per Dóminum.

DIE 1 MARTII.

## S. ALBINI EPISCOPI

*Commemoratio.*

¶ *In Dominica tantùm,*

LECTIO IX.

ALBINUS, Venétiæ in Armórica claro génere natus, relictis à púero paréntibus, in Cincillacense monastérium ingressus est. Anno ætátis trigésimo-quinto Abbas creátus, singulári vigilántiâ cœnóbium administrávit annis quinque et viginti. Unde invitus ad cáthedram Andegavensem evectus, totus alendis paupéribus, tuendis cívibus, ægris visitandis, captívis redimendis incúbuit. Ecclesiásticæ disciplínæ vindex fuit acérrimus, ádeo ut nec précibus nec minis potentiórum moverétur: quod ei multórum invídiam conflávit. Váriis in Synodis, ac præcípuè in Aurelianensi tértia, plúrimum laborávit, ut incestæ núptiæ damnarentur. Cæsárium quoque Arelatensem super ea re consultúrus ádiit unà cum sancto Leobíno tum Abbáte Braiacensi, póstea Carnutensi Epíscopo. Jussus ab Epíscopis quosdam à se excommunicátos absólvere, páruit sacerdotáli judício; ab iisque rogátus ut et ipse signáret eulógias quas ad unum ex illis dirigendas benedíxerant, respondit: Etsi

ad impérium vestrum signáre compellor, dum vos causam Dei recusátis defféndere, ipse potens est vindicáre. At ille, nondum acceptis eulógiis, intériit. Explétis demum episcopátûs annis viginti, ménsibus sex, ætátis octoginta, mortalitátem éxuit. ]

AD LAUDES, *Ant.* Ego sum, ℣. Elégit, xvj.

Orémus. ORATIO.

FAMULOS tuos, quæsumus Dómine, interveniente beáto Albíno Pontífice, tibi fácias toto corde subjectos: ut tuæ caritátis spíritu repléti, à terrénis mundémur cupiditátibus, et cœlesti beatitúdine, te donante, digni efficiámur; Per.

DIE 6.

## SANCTÆ COLETÆ;

VIRGINIS, *Commemoratio.*

¶ *In Dominica tantùm,*

LECTIO IX.

COLETA Boilet Corbeiæ in diœcesi Ambianensi nata, ab ineunte ætáte, in offícia caritátis ita propensa fuit, ut quidquid habére póterat, hiláriter paupéribus largirétur. Oratióni assíduè vacans, solitária loca quærébat, ténerum ibi corpúsculum inédiâ confíciens, aliísque pœniténtiæ exercítiis, vigíliis præsertim ac cilícii asperitáte, carnem spirítui subjíciens. A dæmónibus frequenter lacéssita, nihilóminus rerum cœléstium contemplatióni intenta, ipsórum assultus írritos semper réddidit. Mórtuis paréntibus, Clarissárum institútum, quod à primævo fervóre defléxerat, divíno impulsu ingressa, ipsíus reformatiónem invicto ánimo suscépit. Quo in ópere ingruentes difficultátes admirábili constántiâ súperans, ita profécit, ut in plúrimis monastériis sive in Gállia, sive in Hispánia et in áliis regiónibus exactíssimam régulæ observántiam felíciter restitúerit. Caritáte, patiéntiâ, humilitáte, mansuetúdine, paupertátis stúdio, ceterísque virtútibus decoráta, dono étiam prophetíæ illustris, apud omnes sanctitátis famam adepta est. Tandem multis patrátis miráculis, sacramentis Ecclésiæ munita, hortatisque soróribus ad regulárem disciplínam, obdormívit in Dómino, Gándavi in Flándria, anno millésimo quadringentésimo quadragésimo-séptimo, ætátis suæ sexagésimo-sexto. Eam, jamprídem cultu peculiári venerátam, inter sanctas Vírgines solémniter ascripsit Pius Papa séptimus, recurrente die sanctíssimæ Trinitátis, anno millésimo octingentésimo-séptimo. Circa finem séculi octávi-décimi, moniáles Colettinæ è Bélgio expulsæ, corpus sanctæ fundatrícis secum asportárunt, et deposuérunt Poliniáno in diœcesi Bisúntina, nunc Sancti-Claudii, ubi religiósè cólitur. ]

Ad Laudes, *Ant.* Exultábit, ℣. Sitívit. *Oratio*, Fidéles tuos, xliv.

DIE 7.

## SS. PERPETUÆ, FELICITATIS, ET SOCIORUM EARUM, MARTYRUM,

*Commemoratio.*

¶ *In Dominica tantùm,*

Lectio ix.

Perpetua et Felícitas, in persecutióne Sevéri Imperatóris, Carthágine in Africa unà cum Revocáto, Saturníno et Secúndulo comprehensæ sunt, et in tenebrósum cárcerem detrúsæ; quibus ultro adjunxit se Sátyrus. Erant adhuc catechúmenæ; sed paulò pòst baptizátæ sunt. Paucis diébus interjectis, è cárcere ad forum deductæ cum sóciis; post gloriósam confessiónem, ab Hilariáno Procuratóre damnantur ad béstias. Inde hílares descendunt ad cárcerem, ubi váriis visiónibus recreantur; et ad martyrii palmam accenduntur. Perpétuam, nec patris sénio penè confecti iterátæ preces et lácrymæ, nec erga fílium infantem pendentem ad úbera maternus amor, nec supplícii atrócitas à Christi fide dimovére unquam potuérunt. Felícitas verò, instánte spectáculi die, cùm octo jam menses prægnans esset, in magno erat luctu ne differrétur: leges quippe vetábant prægnantes supplício áffici. At précibus commártyrum acceleráto partu, enixa est fíliam. Cùmque in partu labórans doléret, ait illi quidam ex ministris: Quæ sic modò doles; quid fácies objecta béstiis? Cui illa: Modò ego pátior quod pátior; illìc autem álius erit in me, qui patiétur pro me; quia et ego pro illo passúra sum. In amphitheátrum, toto inspectante pópulo, producuntur tandem generósæ mulíeres, Nonis Mártii. Ac primùm flagellis cæduntur; tum à ferocíssima vacca aliquándiu jactátæ, plagis concísæ, et in terram elísæ sunt; demum cum sóciis, qui à váriis béstiis vexáti erant, gladiatórum énsibus conficiuntur.]

Ad Laudes, *Ant.* Infirma mundi elégit Deus, ut confundat fórtia; ut non gloriétur omnis caro in conspectu ejus. 1 *Cor.* 1.

℣. Exultavérunt fíliæ Judæ, ℟. Propter judícia tua, Dómine. *Ps.* 96.

Orémus. Oratio.

Deus, fortitúdo certántium, et palma vincéntium, qui beátos Mártyres Perpétuam, Felicitátem, et sócios eárum, contra tormentórum immanitátem mirà virtúte roborasti: quæsumus, ut, sicut eórum nos triumpho lætíficas, ita semper supplicatióne defendas; Per Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum.

DIE 9.

## SS. XL MARTYRUM,

*Commemoratio.*

¶ *In Dominica tantùm,*

LECTIO IX.

Sermo sancti Basílii Epíscopi.

*Homil. in 40 Mart.*

QUADRAGINTA Christi mílites magnitúdine córporis, et ætátis flore ac virtúte, céteris ómnibus præcellentes, ad militáres órdines regendos promóti sunt; et propter militárem experiéntiam animíque fortitúdinem, jam primos honóres apud Imperatóres obtinébant. Ubi verò ímpium edictum denuntiátum est, ne quis Christum profiterétur; tunc horum quílibet in médium procédens: En, ait, Christiánus sum. Quæ ut áudiit bárbarus judex, cùm considerasset regiónis natúram quòd esset frígida, et anni tempus quòd hibernum, et noctem in qua bóreas máximè spiráret, jussit omnes nudos sub dio in média civitáte congelandos mori. Qui, loco summa cum lætítia conspecto, últimum étiam amictum alácriter abjicientes, ad mortem properárunt. Una autem erat ómnium orátio: Quadraginta in stádium ingressi sumus; quadraginta, ô Dómine, coronémur. Unus autem ex eórum número vacillans, ad pœnam desertor ábiit, luctum inconsolábilem sanctis relinquens. Verùm Dóminus eórum preces írritas esse non permísit. Nam custos Mártyrum, cùm eventum observáret, mirum vidit spectáculum; Virtútes quasdam è cœlis descendentes, et tanquam à rege magna dona milítibus distribuentes, quæ áliis quidem ómnibus dona dividébant, unum verò solùm indonátum dimisérunt, qui statim dolóres detrectans, ad adversários transfúgit. Lictor autem ut illum defecisse vidit, et ad bálneum accurrisse, seipsum in desertóris locum substítuit; et abjíciens vestes, nudis se permíscuit, eamdemque cum sanctis vocem emísit: Christiánus sum. Hic baptisma suscépit, non ab ullo, sed à própria fide; non in aqua, sed in próprio sánguine. Sicque, illucescente die, adhuc spirantes igni tráditi sunt; et ignis relíquiæ in flúvium projectæ. ]

AD LAUDES, *Ant.* Beáti. ℣. Multæ, xj.

Orémus. ORATIO.

DA nobis, Dómine, sanctórum Mártyrum tuórum dignè collaudáre triumphum: quos per aquam et ignem transvectos, in refrigérium æternum eduxisti; Per.

DIE 10.

## S. DROCTOVEI ABBATIS,

*Commemoratio.*

¶ *In Dominica tantùm,*

LECTIO IX.

DROCTOVEUS, Augustodúni in cœnóbio sancti Symphoriáni

riáni sub Germáno Abbáte, juxta régulam sancti Basílii, magnâ sanctitáte mónachi vitam egit. Hunc, ædificátâ Parisiis in honórem sancti Vincéntii basilicâ, Germánus Parisiensis Epíscopus ad se accitum præfécit mónachis quos eum in locum indúxerat. Ibi vir beátus, impósito sibi múnere digníssimè functus, ad cœlestem glóriam transívit; et in eádem basílica sepultus, cláruit miráculis. Extat élegans Fortunáti ad eum epístola vérsibus conscripta, in qua sanctum Abbátem eo potíssimùm commendat, quod sancti Germáni studiósus esset imitátor.]

AD LAUDES, *Ant.* Ecce. ℣. Veníte. *Oratio*, Deus, cujus múnere, xxxij.

DIE 17.

## SANCTÆ GERTRUDIS

VIRGINIS, *Commemoratio.*

¶ *In Dominica tantùm*,

LECTIO IX.

GERTRUDIS, Pippíni Majóris Austrásiæ sub Clotário, Dagoberto et Sigeberto régibus, ac beátæ Ittæ fília, grándior facta, núptias fílii Ducis Austrasiórum detrectávit, uníque sponso Christo adhærére constítuit. Defuncto Pippíno, Itta cùm velum à sancto Amando, reluctántibus licèt propinquis, suscepisset, atque Nivigellæ cœnóbium ædificasset, Gertrúdem totondit in similitúdinem corónæ, et cum áliis virgínibus velandam sacerdótibus óbtulit. Quæ sùpra ætátem virtútibus illustris, primò cum matre sua monastérium rexit; ac deinde, illâ mórtuâ, Abbatissæ offício functa est. Tunc Româ Sanctórum relíquias sacrosque códices ad se afferri curávit: et ex Hibérnia erudítos viros, sacræ legis cántica quæ penè memóriâ complectebátur, sibi suisque expositúros, accersívit. Basílicas multis in locis, imprimisque Vossuense monastérium ad ripam Sabis, beátis Fulláno et Ultáno sancti Fursæi frátribus excipiendis, extrúxit. Tribus ante óbitum ménsibus, vigíliis, oratiónibus, jejúniis majóri stúdio sese exércuit; et de hora mortis ab Ultáno præmónita, percepto córporis et sánguinis Christi Viático, cœlo recepta est, anno salútis sexcentésimo quinquagésimo-nono, ætátis suæ trigésimo-tértio.]

AD LAUDES, *Ant.* Exultábit. ℣. Sitívit, xliv.

Orémus. ORATIO.

INTERVENIAT pro nobis, quæsumus Dómine, beáta Virgo Gertrúdis, quæ pro tui nóminis amóre, virginitátis propósitum, illibátâ mente servávit; Per Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum, qui tecum vivit et regnat in unitáte Spíritûs sancti Deus, per ómnia sécula seculórum.

DIE 18.

# SANCTI ALEXANDRI,

## EPISCOPI ET MARTYRIS,

*Commemoratio.*

¶ *In Dominica tantùm,*

LECTIO IX.

Ex libro sancti Hierónymi Presbyteri, de Scriptóribus Ecclesiásticis. *Cap.* 62.

ALEXANDER Epíscopus Cappadóciæ cùm desidério sanctórum locórum Hierosólymam pérgeret, et Narcissus Epíscopus ejusdem urbis jam senex régeret Ecclésiam, Narcisso et multis Clericórum ejus revelátum est, álterâ die mane intráre Epíscopum, qui adjútor sacerdotális cáthedræ esse deberet. Itaque re ita complétâ, ut prædicta fúerat, cunctis in Palestína Epíscopis in unum congregátis, adnitente quoque ipso vel máximè Narcisso, Hierosolymitánæ Ecclésiæ cum eo gubernáculum suscépit. Hic in fine cujusdam epístolæ quam scribit ad Antinóitas super pace Ecclésiæ, ait: Salútat vos Narcissus, qui ante me hic ténuit episcopálem locum; et nunc mecum eumdem oratiónibus regit, annos natus círciter centum séxdecim, et vos mecum precátur ut unum idemque sapiátis. Scripsit et áliam ad Antiochenses per Clementem Presbyterum Alexandrinum, necnon ad Orígenem, et pro Orígene contra Demétrium, eo quod juxta testimónium Demétrii eum Presbyterum constitúerit. Sed et áliæ ejus ad diversos feruntur epístolæ. Séptimâ autem persecutióne sub Décio, quo témpore Bábylas Antiochíæ passus est, ductus Cæsaréam, et clausus in cárcere ob confessiónem Christi, martyrio coronátur. (Hunc Alexandrum esse qui in Cánone Missæ post Ignátium Mártyrem Antiochénum invocátur, tam ipse invocatiónis ordo, quàm passiónis celébritas, et certa fides quæ nulli álii hujus nóminis cómpetit, sufficienter ostendunt.]

AD LAUDES, *Ant.* Bonum certámen, ℣. Adjútor, ℣.

Orémus. ORATIO.

OMNIPOTENS sempitérne Deus, qui beáto Mártyri et Pontífici Alexandro, non solùm crédere unigénito Fílio tuo, sed étiam pro ipso pati posse, tribuisti: concéde propítius, ut misericórdiam sempitérnam pro qua ipse felíciter dimicávit, nos quoque fámuli tui percípere mereámur; Per eumdem.

DIE 19 MARTII.

## IN FESTO

# SANCTI JOSEPH

## SPONSI BEATÆ MARIÆ VIRGINIS.

### SOLEMNE-MINUS.

IN I VESPERIS.

*Psalmi de Feria.*

*Ant.* 1. f. Jacob génuit Joseph virum Maríæ, de qua natus est Jesus qui vocátur Christus. *Matth.* 1.

*Ant.* 4. E. Erat Virgo desponsáta viro cui nomen erat Joseph, de domo David: et ingressus Angelus ad eam, dixit: Ecce concípies in útero, et páries fílium. *Luc.* 1.

*Ant.* 8. G. Christi generátio sic erat: Cùm esset desponsáta mater Jesu María Joseph, ántequam convenírent, inventa est in útero habens de Spíritu sancto. *Matth.* 1.

*Ant.* 2. D. Joseph autem vir ejus, cùm esset justus, et nollet eam tradúcere, vóluit occultè dimíttere eam. *Matth.* 1.

*Ant.* 3. a. Hæc eo cogitante, ecce Angelus Dómini appáruit ei in somnis. *Matth.* 1.

CAPITULUM. *Prov.* 2.

CUSTODIET Dóminus rectórum salútem, et próteget gradientes simplíciter, servans sémitas justítiæ, et vias sanctórum custódiens.

℟. Omnípotens benedícet tibi benedictiónibus cœli: * Benedictiónes patris tui confortátæ sunt benedictiónibus patrum, donec veníret desidérium cóllium æternórum. ℣. Sicut locútus est per os sanctórum, qui à sǽculo sunt, Prophetárum ejus, * Benedictiónes. Glória. * Benedictiónes. *Gen.* 49. *Luc.* 1.

HYMNUS. *S. V.*

REGUM progenies, Isacidum decus,
Festo te celebrent cármine cónjuges,
Certatimque ferant cándida vírgines
Sponso lília vírgini.

Tu, Joséphe, novi lux nova fœderis,
Tu custos sociæ Vírginis ínteger,
Tu sanctæ thalamo cónjugis ábstinens,
Tu Christi tamen es pater.

ALTO progeniem quàm bene créditam
Servas consilio, depositum Dei!

Tecum pervigiles Unigenæ Pater
Curas júraque dívidit.
Artus invalidum tu Puerum foves,
Infantíque Deo pábula súfficis;
Et formáta Dei te sine, de tuis
Crescunt membra labóribus.
Sint qui mille tubis úndique pérsonent
Adventasse Deum qui populos regat:
Tu commissa tibi non violábili
Velas sacra siléntio.
Sit laus summa Patri, súmmaque Fílio:
Sit par, alme, tibi glória, Spíritus,
Qui fœcunda facis víscera Vírginis,
Illábens utero, Deus.
Amen.

℣. Jacta super Dóminum curam tuam: ℟. Non dabit in æternum fluctuatiónem justo. *Ps.* 54.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 5. a. Páriet María fílium; et vocábis nomen ejus, Jesum: ipse enim salvum fáciet pópulum suum à peccátis eórum. *Matth.* 1.

*Oratio ut infrà ad Laudes.*
*Fit Commemoratio Feriæ.*

AD COMPLETORIUM.

*Psalmi de Feria.*

*Ant.* 4. d. Deus custodiébat me, quando secrétò erat in tabernáculo meo. *Job* 29.

*In fine Hymni, Doxologia:*
Qui sponte Joseph súbderis,
Jesu, tibi sit glória,
Cum Patre, cumque Spíritu
In sempiterna sécula. Amen.

*Ad* Nunc dimittis. *Ant.* 5. a. Vidérunt óculi mei salutáre tuum, Domine. *Luc* 2.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invit.* Púerum Jesum, Maríæ et Joseph súbditum, * Venite, adorémus. *Luc.* 2.

*Hymnus*, Regum progenies, *ut suprà.*

*Psalmi de Dominica.*

*IN I NOCTURNO.*

*Ant.* 8. G. Oculus Dei respexit illum in bono, et erexit eum ab humilitáte ipsius. et exaltávit caput ejus. *Eccli.* 11.

*Ant.* 1. f. Sapiéntia probatiónem indúcet super illum, donec tentet eum, et credat ánimæ illíus. *Eccli.* 4.

*Ant.* 2. D. Lætificábit illum et denudábit abscondita sua illi, et thesaurizábit super illum sciéntiam, et intellectum justítiæ. *Eccli.* 4.

℣. Deus meus, in te confído, non erubescam: ℟. Etenim universi qui sústinent te, non confundentur. *Ps.* 24.

Lectio i.

De libro Sapiéntiæ.

*Cap.* 6.

Clara est, et quæ nunquam marcescit sapiéntia, et fácilè vidétur ab his qui díligunt eam, et invenítur ab his qui quærunt illam. Præóccupat qui se concupiscunt, ut illis se prior ostendat. Qui de luce vigiláverit ad illam, non laborábit: assidentem

enim illam fóribus suis invéniet.

℟. Sapiéntiam amávi, et exquisívi à juventúte mea; et * Quæsívi sponsam mihi eam assúmere. ℣. Sapiéntia quæ desursum est, pudíca est, pacífica, modesta, plena frúctibus bonis. * Quæsívi. *Sap.* 8. *Jacob.* 3.

LECTIO II.

COGITARE ergo de illa, sensus est consummátus; et qui vigiláverit propter illam, citò secúrus erit. Quóniam dignos se, ipsa círcuit quærens, et in viis ostendit se illis hiláriter, et in omni providéntia occurrit illis. Inítium enim illíus veríssima est disciplínæ concupiscéntia. Cura ergo disciplínæ, diléctio est; et diléctio, custódia legum illíus est: custodítio autem legum consummátio incorruptiónis est: incorrúptio autem facit esse próximum Deo. Concupiscéntia itaque sapiéntiæ dedúcit ad regnum perpétuum.

℟. Ambulávit servus tuus in conspectu tuo in veritáte, et justítia, et recto corde tecum: * Custodisti ei, Dómine, misericórdiam tuam grandem. ℣. In sua generatióne cùm administrasset voluntáti Dei, * Custodisti ei. 3 *Reg.* 3. *Act.* 13.

LECTIO III. *Cap.* 8.

INTRANS in domum meam, conquiescam cum sapiéntia: non enim habet amaritúdinem conversátio illíus, nec tædium convictus illíus, sed lætítiam et gáudium. Hæc cógitans apud me, et commémorans in corde meo, quóniam immortálitas est in cognatióne sapiéntiæ, et in amicítia illíus delectátio bona, et in opéribus mánuum illíus honestas sine defectióne, et in certámine loquélæ illíus sapiéntia, et præclàritas in communicatióne sermónum ipsíus: circuíbam quærens, ut mihi illam assúmerem.

℟. Dóminus fuit cum eo, et * Erat in cunctis prósperè agens, habitavitque in domo Dómini sui. ℣. Joseph vir Maríæ, de qua natus est Jesus qui vocátur Christus; * Erat. Glória Patri. * Erat. *Gen.* 39. *Matth.* 1.

*IN II NOCTURNO.*

*Ant.* 4. d. Omnis ponderátio non est digna continentis ánimæ. *Eccli.* 26.

*Ant.* 6. F. Qui díligit cordis mundítiam, habébit amícum regem. *Prov.* 22.

*Ant.* 5. a. Tu scis, Dómine, quia mundam servávi ánimam meam ab omni concupiscéntia. *Tob.* 3.

℣. Oculi mei ad fidéles terræ; ℟. Ambulans in via immaculáta, hic mihi ministrábat. *Ps.* 100.

LECTIO IV.

Sermo sancti Bernardi Abbátis. *Hom.* 2 *super Missus, n.* 16.

CONJICE ex appellatióne, quâ, licèt dispensatóriâ, méruit honorári à Deo, ut pater Dei et dictus et créditus sit: cónjice et ex próprio vocá-

bulo, quod augmentum non dúbitas interpretári, quis et qualis homo fúerit iste Joseph. Simul et memento magni illíus quondam Patriarchæ vénditi in Ægypto : et scito ipsíus istum non solum vocábulum fuisse sortítum, sed et castimóniam adeptum, innocéntiam assecútum et grátiam. Síquidem ille Joseph, fraterna ex invídia vénditus et ductus in Ægyptum, Christi venditiónem præfigurávit : iste Joseph Herodiánam invídiam fúgiens, Christum in Ægyptum portávit. Ille dómino suo fidem servans, dóminæ nóluit commiscéri : iste dóminam suam, Dómini sui matrem, vírginem agnoscens, et ipse cóntinens, fidéliter custodívit.

℟. Custodívi vias Dómini, et ero immaculátus cum eo; * Et retríbuet mihi Dóminus secundùm justítiam meam, et secundùm puritátem mánuum meárum. ℣. Beáti mundo corde, quóniam ipsi Deum vidébunt. * Et retríbuet mihi Dóminus. *Ps.* 17. *Matth.* 5.

LECTIO V.

ILLI data est intelligéntia in mystériis somniórum : isti datum est cónscium fíeri atque partícipem cœléstium sacramentórum. Ille frumenta servávit non sibi, sed omni pópulo : iste panem vivum è cœlo servandum accépit, tam sibi quàm toti mundo. Non est dúbium quin bonus et fidélis homo fúerit iste Joseph, cui mater desponsáta est Salvatóris. Fidélis, inquam, servus et prudens, quem constítuit Dóminus suæ matris solátium, suæ carnis nutrítium, solum dénique in terris magni consílii coadjutórem sibi fidelíssimum.

℟. Fidélis servus et prudens, quem constítuit Dóminus super famíliam suam: * Amen dico vobis, super ómnia bona sua constítuet eum. ℣. Qui custos est dómini sui, glorificábitur. * Amen. *Matth.* 24. *Prov.* 27.

LECTIO VI.

DICITUR fuisse de domo David : verè enim de domo David ; verè de régia stirpe descendit vir iste Joseph, nóbilis génere, mente nobílior. Planè fílius David, non degénerans à patre suo David. Prorsus, inquam, fílius David, non tantùm carne, sed sanctitáte, sed devotióne : quem tanquam álterum David Dóminus invénit secundùm cor suum, cui tutò commítteret secretíssimum atque sacratíssimum sui cordis arcánum : cui, tanquam álteri David, incerta et occulta sapiéntiæ suæ manifestávit, et dedit illi non ignárum esse mystérii quod nemo príncipum hujus séculi agnóvit : cui dénique datum est quod multi reges et prophétæ, cùm vellent vidére, non vidérunt; audíre, et non audiérunt; non solùm vidére et audíre, sed étiam portáre,

dedúcere, amplecti, deosculári, nutríre et custodíre.

℟. Invénit Joseph grátiam coram dómino suo, et ministrábat ei; à quo * Præpósitus ómnibus, gubernábat créditam sibi domum, et universa quæ ei trádita fúerant. ℣. Fidélis erat in tota domo ejus tanquam fámulus. * Præpósitus ómnibus. Glória Patri. * Præpósitus ómnibus. *Genes.* 39. *Hebr.* 3.

## *IN III NOCTURNO.*

*Ant.* 3. *à*. Dóminus erat cum illo, et ómnia ópera ejus dirigébat. *Gen.* 39.

*Ant.* 7. *d.* Deus erípuit eum ex ómnibus tribulatiónibus ejus, et dedit ei grátiam in conspectu regis. *Act.* 7.

*Ant.* 1. D. Dixit rex ad Joseph: Numquid sapientiórem et consímilem tui invenire pótero? tu eris super domum meam. *Gen.* 41.

℣. Prævenisti eum, Dómine, ℟. In benedictiónibus dulcédinis. *Ps.* 20.

### Lectio vii.

Léctio sancti Evangélii secundùm Matthæum.

*Cap.* 1.

Cum esset desponsáta mater Jesu María Joseph; ántequam convenírent, inventa est in útero hábens de Spíritu sancto. Et réliqua.

Homília sancti Joannis Chrysóstomi.

*In Matth.* 4. *n.* 2, 3, 4.

Cum esset desponsáta mater Jesu María. Non dixit, Virgo, sed simplíciter Mater, ut sermo fácilè caperétur. Ideo cùm priùs præparasset auditórem ad áliquid eórum, quæ ex more véniunt, audiendum; et in hac cogitatióne retinuisset, tunc percellit rem admirandam, subjungens, his verbis: Antequam convenírent, inventa est in útero habens de Spíritu sancto. Non dixit, Antequam ducerétur in domum sponsi: intus enim jam erat. Habitábat et ipsa cum Josépho. Sed cur non ante sponsália concépit? Ut res occultarétur, et Virgo pravam omnem suspiciónem effúgeret. Quando enim ille, qui plusquam omnes zelotypiâ córripi póterat, videbátur eam non modò non tradúcere nec inhonoráre, sed étiam in consórtium accípere, ipsíque ministráre prægnanti; palàm est eum non sic factúrum, nisi persuásum habuisset eam ex Spíritu sancto concepisse; alióquin illam nec apud se retinuisset, nec in áliis suo ministério dignátus esset. Appósitè autem et illud adjécit, Inventa est in útero habens; id quod dici solet de rebus stupendis, quæ præter spem et expectatiónem áccidunt. Ne ígitur ultrà procédas, neque díxeris, Quómodo Spíritus sanctus id ex Vírgine operátus est? Si enim natúrâ operante nemo potest formatiónis modum explicáre, quómodo, Spíritu mirabíliter agente, potérimus hæc explanáre?

℟. Joseph fili David, noli timére accípere Maríam cónjugem tuam : * Quod enim in ea natum est, de Spíritu sancto est. ℣. Audíte, domus David : Ecce virgo páriet fílium; et vocábitur nomen ejus, Emmánuel : * Quod enim. *Matth.* 1. *Is.* 7.

LECTIO VIII.

JOSEPH autem vir ejus, cùm esset justus, inquit, et nollet eam tradúcere, vóluit occultè dimíttere eam. Justum hìc, omni virtúte præditum dicit; estque justítia omnis virtus : et hoc máximè sensu Scriptúra justítiæ voce útitur. Justus ergo cùm esset, id est, benignus, moderátus, vóluit occultè dimíttere eam. Nostis quantus morbus sit zelotypia. Attamen ita erat ab hoc ánimi morbo liber, ut ne in mínimis quidem vellet Vírgini mœstítiam inferre. Quia ergo illam intus apud se retinére per legem non licére videbátur, tradúcere autem illam, et in judícium tráhere, id necessáriò erat ad mortem tráhere; neutrum fecit, sed supra legem se gérere cœpit. Oportébat enim, jam adveniente grátiâ, multa signa adesse sublímis hujusce institúti. Quemádmodum enim sol, nondum rádios ostendens, éminus tamen partem máximam orbis illustrat; sic quoque Christus ex útero illo oritúrus, ántequam egrederétur, orbem totum illuminávit. Idcirco vel ante partum prophétæ exultábant, et mulíeres futúra prædicébant, et Joannes nondum è vulva egressus, ab útero exultábat. Hìc itaque multam Joseph ostendit philosóphiam : neque enim accusávit illam, neque exprobrávit illi, sed dimíttere tantùm cogitábat.

℟. Exurgens Joseph à somno, * Fecit sicut præcépit ei Angelus Dómini, et accépit cónjugem suam. ℣. Mens justi meditátur obediéntiam. * Fecit. *Matth.* 1. *Prov.* 15.

*Lectio ix de Evangelio et Homilia Feriæ occurrentis.*

℟. Non cognoscébat eam Joseph, donec péperit fílium suum primogénitum ; * Et † Vocávit nomen ejus, Jesum. ℣. Concépit et péperit fílium; et dixit Dóminus : Voca nomen ejus : * Et vocávit. Glória Patri. † Vocávit. *Matth.* 1. *Is.* 8.

*Dicitur* Te Deum.

℣. *Sacerd.* Constítuit eum dóminum domûs suæ, ℟. Et príncipem omnis possessiónis suæ. *Ps.* 104.

AD LAUDES.

*Psalmi de Dominica.*

*Ant.* 7. d. Ascendit Joseph à Galilæa in Béthleem, eo quod esset de domo et família David, ut profiterétur cum María. *Luc.* 2.

*Ant.* 3. a. Venérunt pastóres, et invenérunt Maríam et Joseph, et Infantem pósitum in præsépio. *Luc.* 2.

*Ant.* 2. D. Tulérunt Jesum in Jerúsalem parentes ejus, ut sísterent eum Dómino; et erant mirantes super his quæ

dicebantur de illo; et benedixit illis Símeon. *Luc.* 2.

CANTICUM. *Sap.* 8.

SAPIENTIAM amávi et exquisívi à juventúte mea, * et amátor factus sum formæ illíus.

Generositátem illíus gloríficat * contubérnium habens Dei.

Sed et ómnium Dóminus diléxit illam; * doctrix enim est disciplínæ Dei et electrix óperum illíus.

Et si divítiæ appetuntur in vita, quid sapiéntiâ locuplétius, * quæ operátur ómnia?

Si autem sensus operàtur :* quis horum quæ sunt, magis quàm illa est ártifex?

Et si justítiam quis díligit, * labóres ejus magnas habent virtútes.

Sobrietátem enim et prudéntiam docet, et justítiam et virtútem * quibus utílius nihil est in vita homínibus.

*Ant.* 1. D. Angelus Dómini appáruit in somnis Joseph, dicens : Surge, et áccipe Púerum et matrem ejus, et fuge in Ægyptum. *Matth.* 2.

*Ant.* 6. F. Consurgens Joseph accépit Púerum et matrem ejus nocte, et secessit in Ægyptum; et erat ibi usque ad óbitum Heródis. *Matth.* 2.

CAPITULUM. *Sap.* 6.

QUID est sapiéntia, et quemádmodum facta sit réferam, et non abscondam à vobis sacramenta Dei; sed ab inítio nativitátis investigábo, et ponam in lucem sciéntiam illíus, et non præteríbo veritátem.

HYMNUS. *S. V.*

MATRIS intactæ venerande conjux,
Testis et custos nivei pudóris,
Quid Deo plenam meditáris anceps
Línquere sponsam?

Anxium cœlo tibi missus Ales
Firmat : hinc Virgo tibi visa major;
Mente sedátâ, modò nascitúrum
Numen adóras.

Vix Puer natus; redit ecce præpes
Núntius patri : Fuge, dixit, Infans
Quæritur : matrem Puerumque tutas
Transfer in oras.

Tu nihil contra; per opáca noctis
Prótinus matrem Puerumque transfers :
Dírigit gressus, aperitque calles,
Dum silet Infans.

Ora mox solvet; Solymas per urbes
Quem dolens quæres, comitante matre,
Hunc, senes inter, Puerum stupébis
Mira loquentem.

Anxias mentes, tenebrisque mersas
Christus illustret, Patris ipse splendor :
Nos inoffenso pede ducat astris,
Sémita factus.

Nostra te summum celebrent Parentem

Ora, te summo Genitum Parente :
Par sit ambórum tibi laus per omne,
Spíritus, ævum. Amen.

℣. Lex Dei ejus in corde ipsíus, ℟. Et non supplantabuntur gressus ejus. *Ps.* 36.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 4. E. Angelus Dómini appáruit in somnis Joseph in Ægypto, dicens : Surge et áccipe Púerum et matrem ejus, et vade in terram Israel. *Matth.* 2.

Orémus. ORATIO.

DEUS, qui beátum Joseph Unigénito tuo nutrítium, et Vírgini matri custódem providisti : ejus méritis nobis concéde, ut post laboriósæ vitæ agónem, morte justórum in amplexu tuo moriámur; Per eumdem.

*Fit Commemoratio Feriæ.*

AD HORAS, *Psàlmi de Dominica. In fine Hymnorum, dicitur sequens Doxologia :*

Qui sponte Joseph súbderis,
Jesu, tibi sit glória,
Cum Patre, cumque Spíritu
In sempiterna sécula.
Amen.

## AD PRIMAM.

*Non dicitur Symbol.* Quicumque.

*Ant.* 7. d. Ascendit Joseph.

CANON.

Ex sancto Petro Damiáno.

*De Cœlib, Sacerd. c.* 3.

NE sufficere videátur, ut tantúmmodo virgo sit mater Fílii Dei; Ecclésiæ fides est, ut virgo fúerit et is, qui simulátus est pater. Si ígitur Redemptor noster tantópere dilexit flóridi pudóris integritátem, ut non modò de virgíneo útero nascerétur, sed étiam à nutrítio virgíneo tractarétur, et hoc cùm adhuc párvulus vagíret in cunis; à quibus nunc, óbsecro, tractári vult corpus suum, cùm jam immensus regnat in cœlis?

## AD TERTIAM.

*Ant.* 3. à. Venérunt.

CAPITULUM. 1 *Joan.* 4.

NOS vídimus, et testificámur quóniam Pater misit Fílium suum Salvatórem mundi.

℟ *br.* Adimplébis me lætítiâ * Cum vultu tuo, Dómine. Adimplébis me. ℣. Delectatiónes in déxtera tua * usque in finem, * Cum vultu. Glória. Adimplébis me.

℣. Providébam Dóminum in conspectu meo semper; ℟. Quóniam à dextris est mihi, ne commóvear. *Ps.* 15.

## AD SEXTAM.

*Ant.* 2. D. Tulérunt.

CAPITULUM. *Eccli.* 35.

OBLATIO justi impinguat altáre; et odor suavitátis est in conspectu Altíssimi. Sacrifícium justi acceptum est, et memóriam ejus non obliviscétur Dóminus.

℟ *br.* Introíbo in domum tuam * In holocaustis. Introíbo. ℣. Reddam tibi * vota mea, * In. Glória. Introíbo. *Ps.* 65.

℣. Te decet hymnus, Deus, in Sion; ℟. Et tibi reddétur votum in Jerúsalem. *Ps.* 64.

## AD NONAM.

*Ant.* 6. F. Consurgens.

CAPITULUM. *Sap.* 10.

PROFUGUM justum sapiéntia deduxit per vias rectas, et ostendit illi regnum Dei, et dedit illi sciéntiam sanctórum : honestávit illum in labóribus, et complévit labóres illíus.

℞ *br.* Exquisívi Dóminum, * Et exaudívit me. Exquisívi. ℣. Et ex ómnibus tribulatiónibus meis * erípuit me, * Et exaudívit me. Glória. Exquisívi. *Ps.* 33.

℣. Tenuisti, Dómine, manum déxteram meam; ℞. Et in voluntáte tua deduxisti me. *Ps* 72.

## AD II VESPERAS.

*Ps.* Dixit Dóminus, 18.

*Ant.* 1. f. Ibant parentes Jesu per omnes annos in Jerúsalem, in die solemni Paschæ. *Luc.* 2.

*Ps.* Beátus vir, 19.

*Ant.* 7 *d.* Ascendéntibus illis, remansit puer Jesus in Jerúsalem; et non cognovérunt parentes ejus. *Luc.* 2.

*Ps.* Laudáte, púeri, 19.

*Ant.* 2. D. Existimantes illum esse in comitátu, venérunt iter diéi; et requirébant eum inter cognátos et notos. *Luc.* 2.

*Ps.* Qui confídunt, 65.

*Ant.* 3. a. Non invenientes, regressi sunt in Jerúsalem; et invenérunt illum in templo, sedentem in médio doctórum. *Luc.* 2.

*Ps.* Dómine, non est exaltátum, 65.

*Ant.* 8. G. Dixit mater Jesu ad eum : Fili, quid fecisti nobis sic? ecce pater tuus et ego dolentes, quærebámus te. *Luc.* 2.

CAPITULUM. *Sap.* 1.

IN simplicitáte cordis quærite Dóminum, quóniam invenítur ab his qui non tentant illum; appáret autem eis qui fidem habent in illum.

HYMNUS. *C.*

QUOS pompa secli, quos opes
Fulgóre perstringunt suo,
Adeste : mundi próspera,
Auctóre magno, spérnite.

Joséphus en Christi pater,
Davídis augustum genus,
Vili tabernâ cónditus,
Labóre victum quæritat.

QUIN ipse, quin homo Deus,
Par Natus æterno Patri,
Amat, fabrílis ártifex,
Audíre fabri fílius.

Adæ nocentis ínnocens
Ultro gravem pœnam subit,
Docetque sontes víndicem
Placáre quâ possint Deum.

TU rector et custos domûs,
Joséphe, egénus ómnium,
Adesse nobis ómnia,
Si Christus adsit, áddoces.

Sit summa Patri glória,
Natóque, pro nobis egens
Qui factus est de dívite :
Par sit tibi laus, Spíritus.
Amen.

℣. Exquisívit te fácies mea, Dómine : ℞. Fáciem tuam, Dómine, requíram. *Ps.* 26.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 2. D. Descendit cum eis Jesus, et

venit Názareth; et erat súbditus illis. *Luc.* 2.

*Oratio ut suprà ad Laudes.*

*Fit Commemoratio Feriæ.*

---

¶ *Si hoc Festum transfertur post Pascha, Officium fit ut suprà, exceptis quæ sequantur.*

In I Vesperis, *additur semel* Allelúia *in fine uniuscujusque Antiphonæ.*

℟. Joseph, fili David, *quod est vij de Officio Noct.* 440, *cum duplici* Allelúia.

Ad Nocturnum, *additur* Allelúia *in fine Invitat.*

*Tres Psalmi è I Noct. Dominicæ, sub Ant. de I Noct. suprà* 436, *cuique addendo* Allelúia *semel.*

℣. Deus meus, *ibid.*

*Lectio j:* De libro Sapiéntiæ. Clara est, *etc.* 436.

℟. Fidélis servus, *suprà* 438.

*Lectio ij:* Sermo S. Bernardi, Cónjice, *etc.* 437, *duabus aliis omissis, cum* ℟. Exurgens Joseph, 440. *Lectio iij de Evang. cum sua Homilia, prior tantùm, et* ℟. Non cognoscébat, 440; *addendo bis* Allelúia *in fine* ℟℟℟.

*Ad ceteras Officii partes, additur* Allelúia *in fine Antiph. et* ℟℟℟ *br. juxta rubricam Temporis Paschalis; nec fit Commemoratio Feriæ.*



DIE 25.

# IN ANNUNTIATIONE
# ET INCARNATIONE DOMINI.

## SOLEMNE-MAJUS.

### IN I VESPERIS.

*Psalmi de Feria.*

*Ant.* 3. a. Dómine exercítuum, úsquequo tu non miseréberis Jerúsalem et úrbium Juda, quibus irátus es? *Zach.* 1.

*Ant.* 5. C. Exaudi, Dómine; placáre, Dómine; attende, et fac: ne moréris propter temetipsum, Deus meus. *Dan.* 9.

*Ant.* 7. d. Da testimónium his qui ab inítio creatúræ tuæ sunt, et súscita prædicatiónes quas locúti sunt in nómine tuo. *Eccli.* 36.

*Ant.* 4. E. Dabis, Deus, veritátem Jacob, misericórdiam Abraham, quæ jurasti pátribus nostris à diébus antiquis. *Mich.* 7.

*Ant.* 1. g. Obsecro, Dómine, mitte quem missúrus es. *Exod.* 4.

*Capitulum.* Dan. 9.

SEPTUAGINTA hebdómades abbreviátæ sunt super pópulum tuum, et super urbem sanctam tuam, ut consummétur prævaricátio, et finem accípiat peccátum, et deleátur iníquitas, et adducátur justítia sempiterna, et impleátur vísio et prophetía, et ungátur Sanctus sanctórum.

℟. Audíte, domus David: Ecce virgo concípiet et páriet fílium; et * Vocábitur nomen ejus, Emmánuel. ℣. Habitábit cum homínibus: et ipsi pópulus ejus erunt; et ipse Deus cum eis erit eórum Deus. * Vocábitur. Glória Patri. * Vocábitur. *Is.* 7. *Apoc.* 21.

HYMNUS. *S. V.*

HÆC illa solemnis dies,
Dies salútis núntia,
Quà missa cœlo trístibus
Venére terris gáudia.

Uníus omnes crímine
Casu gravi lapsi sumus:
Ut ipse lapsos érigat,
Descendit in terras Deus.

QUI, Patris æterno sinu,
Æterna Proles náscitur,
Obnóxius fit témpori,
Sinum nec horret Vírginis.

Mortále corpus induit,
Orbi piando víctimam;
Ut innocenti sánguine
Scelus nocentûm díluat.

QUI cuncta complet númine,
Nostros se in artus cólligit:
Ut nos redúcat ad Deum,
Est ipse nobíscum Deus.

Mundo Redemptor qui venis,
Fili, tibi laus máxima,
Cum Patre : nec tibi minor
Laus, utriusque Spíritus.
Amen.

℣. Excita, Dómine, poténtiam tuam: ℟. Et veni, ut salvos fácias nos. *Ps.* 79.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 6. F. Lauda et lætáre, fília Sion; quia ecce ego vénio, et habitábo in médio tuî, ait Dóminus. *Zach.* 2.

*Oratio ut infrà ad Laudes.*

*Fit Commemoratio Feriæ.*

AD COMPLETORIUM.

*Psalmi de Feria.*

*Ant.* 4. d. Ego ad Dóminum aspíciam : expectábo Deum salvatórem meum. *Mich.* 7.

*Hymnus*, Virgo, *ut in Ordinario*, 124.

*Ad* Nunc dimittis. *Ant.* 5. a. Vidébit omnis caro salutáre Dei. *Luc.* 3.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invit.* Verbum caro factum est : *. Veníte, adorémus. *Joan.* 1.

HYMNUS *S. V.*

Cœlestis Ales núntiat
Implenda mox mystéria :
Virtúte fœcundâ Deus
Illapsus implet Vírginem.

Qualis stupendo glória
Te, Virgo, de partu manet!
Conceptus in tuo sinu,
Natus Deo nunc est tuus.

De virgináli sánguine,
Quem nulla labes ínficit,
Fingente sancto Spíritu,
Christi caro compíngitur.

Nobis per hanc mortálibus
Lactescit esca Cœlitum :
Nos pascit infantes homo,
Qui pascit Angelos Deus.

Mundo Redemptor qui venis,
Fili, tibi laus máxima,
Cum Patre : nec tibi minor
Laus, utriusque Spíritus.
Amen.

*Psalmi de Officio parvo B. M.*

*IN I NOCTURNO.*

*Ant.* 8. G. Missus est Angelus Gábriel ad Maríam vírginem desponsátam Joseph. *Luc.* 1.

*Ant.* 1. f. Ingressus Angelus ad eam, dixit : Ave, grátiâ plena; Dóminus tecum : benedicta tu in muliéribus. *Luc.* 1.

*Ant.* 2. D. Cùm audisset María, turbáta est in sermóne ejus, et cogitábat qualis esset ista salutátio. *Luc.* 1.

℣. Dómine, audívi auditiónem tuam, ℣. Et tímui. *Habac.* 3.

LECTIO I.

De Isaía Prophéta.

*Cap.* 7.

Adjecit Dóminus loqui ad Achaz, dicens : Pete tibi signum à Dómino Deo tuo in profundum inferni, sive in excelsum suprà. Et dixit Achaz : Non petam, et non tentábo Dóminum. Et dixit: Audíte ergo, domus David : Numquid parum vobis est molestos esse homínibus, quia molesti estis et Deo meo? Propter hoc dabit Dóminus ipse vobis signum :

Ecce virgo concípiet, et páriet fílium; et vocábitur nomen ejus, Emmánuel. Bútyrum et mel cómedet, ut sciat reprobáre malum, et elígere bonum.

℟. Ne tímeas, María; invenisti enim grátiam apud Deum: * Ecce concípies in útero, et páries fílium. ℣. Hoc à Dómino Deo exívit, ut mirábile fáceret consílium. * Ecce concípies. *Luc.* 1. *Is.* 28.

Lectio II. *Cap.* 11.

Et egrediétur virga de radíce Jesse, et flos de radíce ejus ascendet: et requiescet super eum Spíritus Dómini; spíritus sapiéntiæ et intellectûs, spíritus consílii et fortitúdinis, spíritus sciéntiæ et pietátis: et replébit eum spíritus timóris Dómini. Non secundùm visiónem oculórum judicábit, neque secundùm audítum áurium árguet; sed judicábit in justítia páuperes, et árguet in æquitáte pro mansuétis terræ: et percútiet terram virgâ oris sui; et spíritu labiórum suórum interfíciet ímpium. Et erit justítia cíngulum lumbórum ejus, et fides cinctórium renum ejus.

℟. Hic erit magnus, et Fílius Altíssimi vocábitur, et dabit illi Dóminus Deus sedem David patris ejus; * Et regni ejus non erit finis. ℣. Ecce dies véniunt, dicit Dóminus; et suscitábo David germen justum: et regnábit Rex; * Et regni ejus non erit finis. *Luc.* 1. *Jerem.* 23.

Lectio III. *Cap.* 35.

Lætabitur deserta et ínvia, et exultábit solitúdo, et florébit quasi lílium. Gérminans germinábit, et exultábit lætabunda et laudans: glória Líbani data est ei; decor Carméli et Saron: ipsi vidébunt glóriam Dómini, et decórem Dei nostri. Confortáte manus dissolútas, et génua debília roboráte. Dícite pusillánimis: Confortámini, et nolíte timére; ecce Deus vester ultiónem addúcet retributiónis; Deus ipse véniet, et salvábit vos. Tunc aperiéntur óculi cæcórum, et aures surdórum patébunt: tunc sáliet sicut cervus claudus; et aperta erit lingua mutórum: quia scissæ sunt in deserto aquæ, et torrentes in solitúdine: et quæ erat árida, erit in stagnum; et sítiens, in fontes aquárum.

℟. Vocábis nomen ejus, Jesum: * Ipse enim † Salvum fáciet pópulum suum à peccátis eórum. ℣. Fília Sion, rex Israel Dóminus in médio tuî: noli timére; * Ipse enim. Glória. † Salvum. *Matth.* 1. *Soph.* 3.

*IN II NOCTURNO.*

*Ant.* 3. *a.* Dixit María ad Angelum: Quómodo fiet istud, quóniam virum non cognosco? *Luc.* 1.

*Ant.* 8. *G.* Respondens Angelus, dixit ei: Spíritus sanctus supervéniet in te; et virtus Altíssimi obumbrábit tibi. *Luc.* 1.

*Ant.* 2. D. Quod nascétur

ex te Sanctum, vocábitur Fílius Dei. *Luc.* 1.

℣. Homo natus est in ea, ℟. Et ipse fundávit eam Altíssimus. *Ps.* 86.

*Benedictiones de B. Maria.*

LECTIO IV.

Sermo sancti Leónis Papæ. *De Nat. Dom.* 2. *c.* 1.

DEUS omnípotens et clemens, cujus natúra bónitas, cujus voluntas poténtia, cujus opus misericórdia est, statim ut nos diabólica malígnitas venéno suæ mortificávit invídiæ, prædestináta renovandis mortálibus suæ pietátis remédia inter ipsa mundi primórdia præsignávit; denúntians serpenti futúrum semen mulíeris, quod nóxii cápitis elatiónem suâ virtúte contéreret; Christum scílicet in carne ventúrum, Deum hominemque signíficans, qui natus ex Vírgine violatórem humánæ propáginis incorruptâ nativitáte damnáret.

℟. Ecce Elísabeth cognáta tua, et ipsa concépit fílium in senectúte sua; * Quia non erit impossíbile apud Deum omne verbum. ℣. Hoc tibi erit signum à Dómino, quia fáciet Dóminus verbum quod locútus est; * Quia. *Luc.* 1. *Is.* 38.

LECTIO V.

NAM quia gloriabátur diábolus hóminem suâ fraude deceptum divínis caruisse munéribus, et immortalitátis dote nudátum duram mortis subiísse senténtiam, seque in malis suis quoddam de prævaricatóris consórtio invenisse solátium; Deum quoque justè, severitátis exigente ratióne, erga hóminem quem in tanto honóre condíderat, antíquam mutasse senténtiam: opus fuit, dilectíssimi, secréti dispensatióne consílii, ut incommutábilis Deus, cujus voluntas non potest suâ benignitáte privári, primam pietátis suæ dispositiónem sacramento occultióre compléret; et homo diabólicæ iniquitátis versútiâ actus in culpam, contra Dei propósitum non períret.

℟. Dixit María ad Angelum; * Ecce ancilla Dómini; fiat mihi secundùm verbum tuum. ℣. Nunc ergo, Dómine, tu es Deus, et verba tua erunt vera: * Ecce. *Luc.* 1. 2 *Reg.* 7.

LECTIO VI.

ADVENIENTIBUS ergo tempóribus, dilectíssimi, quæ redemptióni hóminum fúerant præstitúta, ingréditur hæc ínfima Jesus Christus Dóminus noster, de cœli sede descendens, et à paterna glória non recédens, novo órdine, novâ nativitáte generátus. Novo órdine, quia invisíbilis in suis, visíbilis factus est in nostris; incomprehensíbilis vóluit comprehendi; ante témpora manens esse cœpit ex témpore; universitátis Dóminus servílem formam, obumbrátâ majestátis suæ dignitáte, suscépit; impassíbilis Deus non dedignátus est homo esse passíbilis, et immor-

tális mortis légibus subjacére. Novâ autem nativitáte génitus est, conceptus à vírgine, natus ex vírgine, sine patérnæ carnis concupiscéntia, sine matérnæ integritátis injúria; quia futúrum hóminum Salvatórem talis ortus decébat, qui et in se habéret humánæ substántiæ natúram, et humánæ carnis inquinaménta nescíret.

℟. Christi generátio sic erat: * Desponsáta María Joseph invénta est in útero habens de Spíritu sancto. ℣. Creávit Dóminus novum super terram: Fémina circúmdabit virum. * Desponsáta. Glória. * Desponsáta. *Matth.* 1. *Jerem.* 31.

*IN III NOCTURNO.*

*Ant.* 6. F. Quod in ea natum est, de Spíritu sancto est; páriet autem fílium. *Matth.* 1.

*Ant.* 4. f. Relíquiæ fratrum ejus converténtur ad fílios Israel; et erit iste pax. *Mich.* 5.

*Ant.* 5. C. Hoc totum factum est, ut adimplerétur quod dictum est per Prophétam: Ecce virgo in útero habébit, et páriet fílium. *Matth.* 1.

℣. Recordátus est Dóminus misericórdiæ suæ, ℟. Et veritátis suæ dómui Israel. *Ps.* 97.

LECTIO VII.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Lucam. *Cap.* 1.

In illo témpore; Missus est Angelus Gábriel à Deo in civitátem Galilææ, cui nomen Názareth, ad vírginem desponsátam viro cui nomen erat Joseph, de domo David; et nomen vírginis, María. Et réliqua.

Homília sancti Ambrósii Epíscopi.

*In Luc. l.* 2. *n.* 8.

Disce vírginem móribus, disce vírginem verecúndiâ, disce vírginem oráculo, disce mystério. Trepidáre vírginum est, et ad omnes viri ingressus pavére, omnes viri affátus veréri. Discant mulíeres propósitum pudóris imitári. Sola in penetrálibus quam nemo virórum vidéret, solus Angelus repertíret: sola sine cómite, sola sine teste, ne quo degéneri depravarétur affátu, ab Angelo salutátur. Soli Maríæ hæc salutátio servabátur: bene enim sola grátiâ plena dícitur, quæ sola grátiam quam nulla ália merúerat, consecúta est, ut grátiæ replerétur auctóre.

℟. Benedícta es tu, fília, à Dómino Deo excelso præ ómnibus muliéribus super terram. * Benedíctus Dóminus, quia hódie nomen tuum ita magnificávit, ut non recédat laus tua de ore hóminum. ℣. Benedícta tu inter mulíeres, et benedíctus fructus ventris tui: * Benedíctus. *Judith* 13. *Luc* 1.

LECTIO VIII. *n.* 15.

Vírginem párere divíni est signum mystérii, non humáni. Tanti namque mandáti mystérium, non hóminis fuit, sed Angeli ore promendum.

Hódie primùm audítur : Spíritus sanctus supervéniet in te. Et audítur, et créditur. Dixit autem María : Ecce ancilla Dómini, contingat mihi secundùm verbum tuum. Vide humilitátem, vide devotiónem. Ancillam se dicit Dómini, quæ mater elígitur : nec repentíno exaltáta promisso est. Simul ancillam dicendo, nullam sibi prærogatívam tantæ grátiæ vindicávit quæ fáceret quod juberétur : mitem enim humilemque paritúra, humilitátem débuit étiam ipsa præferre.

℟. Suscépit Deus Israel púerum suum, recordátus misericórdiæ suæ ; * Sicut locútus est ad patres nostros, Abraham et sémini ejus in sécula. ℣. In me ancilla sua adimplévit Dóminus misericórdiam suam : * Sicut. *Luc.* 1. *Judith* 13.

*Lectio ix de Evangelio et Homilia Feriæ occurrentis.*

℟. Beáta quæ credidisti, quóniam * Perficientur ea quæ dicta sunt tibi à Dómino. ℣. Non est Deus, quasi homo, ut mentiátur. Dixit ergo, et non fáciet? locútus est, et non implébit? * Perficientur. Glória Patri. * Perficientur. *Luc.* 1. *Num.* 23.

*Dicitur* Te Deum.

℣ *Sacerdot.* In humilitáte nostra memor fuit nostrî Dóminus, ℟. Et redémit nos ab inimícis nostris. *Ps.* 135.

AD LAUDES.

*Psalmi de Dominica.*

*Ant.* 1. g. In princípio erat Verbum, et Verbum erat apud Deum, et Deus erat Verbum. *Joan.* 1.

*Ant.* 7. ç. Omnia per ipsum facta sunt : et sine ipso factum est nihil, quod factum est. *Joan.* 1.

*Ant.* 5. a. In mundo erat, et mundus per ipsum factus est, et mundus eum non cognóvit : in própria venit, et sui eum non recepérunt. *Joan.* 1.

CANTICUM. *Isai.* 52.

QUAM pulcri super montes * pedes annuntiantis et prædicantis pacem ;

Annuntiantis bonum, prædicantis salútem, * dicentis Sion : Regnábit Deus tuus!

Vox speculatórum tuórum : * levavérunt vocem, simul laudábunt ;

Quia óculo ad óculum vidébunt, * cùm convérterit Dóminus Sion.

Gaudéte et laudáte simul, deserta Jerúsalem ; * quia consolátus est Dóminus pópulum suum, redémit Jerúsalem.

Parávit Dóminus bráchium sanctum suum * in óculis ómnium géntium.

Et vidébunt omnes fines terræ * salutáre Dei nostri.

*Ant.* 6. C. Quotquot recepérunt eum, dedit eis potestátem fílios Dei fieri, his qui credunt in nómine ejus. *Joan.* 1.

*Ant.* 8. G. Verbum caro factum est, et habitávit in nobis ; et vídimus glóriam ejus. *Joan.* 1.

CAPITULUM. *Philip.* 2.

CUM in forma Dei esset, non rapínam arbitrátus est esse se æquálem Deo; sed semetipsum exinanívit formam servi accípiens, in similitúdinem hóminum factus, et hábitu inventus ut homo.

HYMNUS. *S. V.*

PULSUM supernis sédibus,
Umbris tot annos óbsitum,
Cœlestis ignárum viæ,
Errábat humánum genus.

Cœlestis en Rex cúriæ,
Ut monstret ad cœlum viam
Secumque ducat éxules,
Se sponte fecit éxulem.

SE déviis præbet ducem,
Vires dat ambulántibus:
Est ipse quà ducit via;
Quò ducit, ipse términus.

Deus, supréma Véritas,
Umbráta velo córporis,
Puris videnda méntibus,
Lustra tuo nos lúmine.

ET tu, tuórum sis memor,
Quæ, dum modesto péctore
Te dicis ancillam Dei,
Regína mundi díceris.

¶ Mundo Redemptor qui venis,
Fili, tibi laus máxima,
Cum Patre: nec tibi minor
Laus, utriusque Spíritus.
Amen.

℣. Quid est homo, quòd memor es ejus? ℟. Aut fílius hóminis, quóniam vísitas eum? *Ps.* 8.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 2. D. Visitávit nos Oriens ex alto, illumináre his qui in ténebris et in umbra mortis sedent. *Luc.* 1.

Orémus. ORATIO.

DEUS, qui de beátæ Maríæ Vírginis útero Verbum tuum, Angelo nuntiante, carnem suscípere voluisti: præsta supplícibus tuis, ut qui verè eam genitrícem Dei crédimus, ejus apud te intercessiónibus adjuvémur; Per eumdem.

*Fit Commemoratio Feriæ.*

AD HORAS, *dicitur Doxologia*: ¶. Mundo Redemptor, *suprà.*

*Psalmi de Dominica.*

AD PRIMAM.

*Ant.* 1. g. In princípio.

*In* ℟ *br.* ℣. Qui natus es * de María Vírgine.

CANON.

Ex Concílio Toletáno décimo. 656. *c.* 1.

NATIVITATIS Domínicæ sacrum, quo evidenter de útero virgináli Verbum pródiit caro factum, absque dúbio servat témporis cursum et speciále diéi monimentum. Si ergo Nativitátis incarnáti hujus Verbi dies in toto terrárum orbe ab omni Ecclésia concórditer celebrétur, cur non festívitas gloriósæ Matris ejus eádem observántiâ similíque habeátur honóre? Nam quid est festum Matris, nisi incarnátio Verbi? cujus festum ita debet esse solemne, sicut est ejusdem nativitátis Verbi.

AD TERTIAM.

*Ant.* 7. ç. Omnia.

CAPITULUM. *Ephes.* 1.

PROPOSUIT Deus in dispensatióne plenitúdinis témporum instauráre ómnia in

Christò, quæ in cœlis et quæ in terra sunt, in ipso.

℞ *br.* Deus rex noster * Operátus est salútem. Deus. ℣. In médio * terræ * Operátus est. Glória. Deus. *Ps.* 73.

℣. Tu es ipse Rex meus, et Deus meus, ℞. Qui mandas salútes Jacob. *Ps.* 43.

AD SEXTAM.

*Ant.* 5. a. In mundo.

CAPITULUM. 1 *Joan.* 4.

In hoc est cáritas, non quasi nos dilexérimus Deum, sed quóniam ipse prior dilexit nos, et misit Fílium suum propitiatiónem pro peccátis nostris.

℞ *br.* Redemptiónem misit Dóminus * Pópulo suo. Redemptiónem. ℣. Mandávit in æternum * testamentum suum * Pópulo suo. Glória. Redemptiónem. *Ps.* 110.

℣. Confiteantur Dómino misericórdiæ ejus, ℞. Et mirabília ejus fíliis hóminum. *Ps.* 106.

AD NONAM.

*Ant.* 8. G. Verbum.

CAPITULUM. 1 *Tim.* 3.

Manifeste magnum est pietátis sacramentum quod manifestátum est in carne, justificátum est in spíritu, appáruit Angelis, prædicátum est géntibus, créditum est in mundo, assumptum est in glória.

℞ *br.* Dómini * Est assúmptio nostra. Dómini. ℣. Et Sancti Israel * regis nostri, * Est. Glória. Dómini. *Ps.* 88.

℣. Dóminus virtútum nobiscum, ℞. Susceptor noster Deus Jacob. *Ps.* 45.

AD II VESPERAS.

*Psalmi de Officio parvo B. M.*

*Ant.* 1. f. Quæ ad patres nostros repromíssio facta est, hanc Deus adimplévit fíliis nostris. *Act.* 13.

*Ant.* 4. E. Ubi venit plenitúdo témporis, misit Fílium suum factum ex mulíere. *Gal.* 4.

*Ant.* 3. a. Qui sanctíficat, et qui sanctificantur, ex uno omnes; propter quam causam non confúnditur fratres eos vocáre. *Hebr.* 2.

*Ant.* 6. F. Nusquam Angelos apprehendit, sed semen Abrahæ; unde débuit per ómnia frátribus similári. *Hebr.* 2.

*Ant.* 5. C. Participávit carni et sánguini, ut liberáret eos qui timóre mortis per totam vitam obnóxii erant servitúti. *Hebr.* 2.

CAPITULUM. 1 *Joan.* 4.

Deus cáritas est. In hoc appáruit cáritas Dei in nobis, quóniam Fílium suum unigénitum misit Deus in mundum, ut vivámus per eum.

*Hymnus*, Hæc illa, 445.

℣. Misericórdia et véritas obviavérunt sibi : ℞. Justítia et pax osculátæ sunt. *Ps.* 84.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 2. D. Pater misit Fílium suum Salvatórem mundi : nos ergo diligámus Deum, quóniam Deus prior dilexit nos. 1 *Joan.* 4.

*Oratio ut suprà ad Laudes.*

*Fit Commemoratio Feriæ.*

AD COMPLETORIUM.

*Psalmi et Capit. de Dominica. Reliqua ut heri*, 446.

# IN ANNUNTIATIONE
# ET INCARNATIONE DOMINI,
### TEMPORE PASCHALI.

IN I VESPERIS.

*Psalmi de Dominica.*

*Ant.* 3. a. Dómine exercítuum, úsquequo tu non miseréberis Jerúsalem et úrbium Juda, quibus irátus es? allelúia. *Zach.* 1.

*Ant.* 5. C. Exaudi, Dómine; plácare, Dómine: attende, et fac: ne moréris propter temetipsum, Deus meus, allelúia. *Dan.* 9.

*Ant.* 7. d. Da testimónium his qui ab inítio creatúræ tuæ sunt, et súscita prædicatiónes quas locúti sunt in nómine tuo, allelúia. *Eccli.* 36.

*Ant.* 4. E. Dabis, Deus, veritátem Jacob, misericórdiam Abraham, quæ jurasti pátribus nostris à diébus antíquis, allelúia. *Mich.* 7.

*Ant.* 1. g. Obsecro, Dómine, mitte quem missúrus es, allelúia. *Exod.* 4.

CAPITULUM. *Dan.* 9.

SEPTUAGINTA hebdómades abbreviátæ sunt super pópulum tuum, et super urbem sanctam tuam, ut consummétur prævaricátio, et finem accípiat peccátum, et deleátur iníquitas, et adducátur justítia sempiterna, et impleátur vísio, et prophetía, et ungátur Sanctus sanctórum.

℟. Audíte, domus David; Ecce virgo concípiet et páriet fílium; et * Vocábitur nomen ejus, Emmánuel, allelúia, allelúia. ℣. Habitábit cum homínibus: et ipsi pópulus ejus erunt; et ipse Deus cum eis erit eórum Deus. * Vocábitur. Glória. * Vocábitur. *Isai.* 7. *Apoc.* 21.

*Hymnus,* Hæc illa, 445.

℣. Excita, Dómine, poténtiam tuam; ℟. Et veni, ut salvos fácias nos. *Ps.* 79.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 6. F. Lauda et lætáre, fília Sion; quia ecce ego vénio, et habitábo in médio tui, ait Dóminus, allelúia. *Zach.* 2.

*Oratio ut infrà ad Laudes.*

*Fit Commemoratio Dominicæ in Albis tantùm.*

AD COMPLETORIUM.

*Psalmi de Dominica.*

*Ant.* 4. d. Ego ad Dóminum aspíciam: expectábo Deum salvatórem meum, allelúia. *Mich.* 7.

*Hymnus,* Virgo, 124.

*Ad* Nunc dimittis. *Ant.* 5. a. Vidébit omnis caro salutáre Dei, allelúia. *Luc.* 3.

AD NOCTURNUM.

*Invit.* Verbum caro factum est: * Veníte, adorémus, allelúia. *Joan.* 1.

*Hymn.* Cœlestis Ales. 446.

*Psalmi de I Nocturno Officii parvi B. M. V.*

*Ant.* 8. G. Missus est Angelus Gábriel ad Maríam vírginem desponsátam Joseph, allelúia. *Luc.* 1.

*Ant.* 1. f. Ingressus Angelus ad eam, dixit: Ave, grátiâ plena; Dóminus tecum: benedicta tu in muliéribus, allelúia. *Luc.* 1.

*Ant.* 2. D. Cùm audisset María, turbáta est in sermóne ejus, et cogitábat qualis esset ista salutátio, allelúia. *Luc.* 1.

℣. Dómine, audívi auditiónem tuam, ℟. Et tímui. *Habac.* 3.

*Benedictiones ut notantur pro Tempore Paschali,* 307.

LECTIO I.

De Isaía Prophéta.

*Cap.* 7.

ADJECIT Dóminus loqui ad Achaz, dicens: Pete tibi signum à Dómino Deo tuo in profundum inferni, sive in excelsum suprà. Et dixit Achaz: Non petam, et non tentábo Dóminum. Et dixit: Audíte ergo, domus David: Numquid parum vobis est molestos esse homínibus, quia molesti estis et Deo meo? Propter hoc dabit Dóminus ipse vobis signum; Ecce virgo concípiet, et páriet fílium: et vocábitur nomen ejus, Emmánuel. Bútyrum et mel cómedet, ut sciat reprobáre malum, et elígere bonum.

℟. Ne tímeas, María; invenisti enim grátiam apud Deum: * Ecce concípies in útero, et páries fílium, allelúia, allelúia. ℣. Hoc à Dómino Deo exívit, ut mirábile fáceret consílium. * Ecce. *Luc.* 1. *Is.* 28.

LECTIO II.

Sermo sancti Leónis Papæ.

*De Nat. Dom.* 2. *c.* 1.

DEUS omnípotens et clemens, cujus natúra bónitas, cujus volúntas poténtia, cujus opus misericórdia est, statim ut nos diabólica malígnitas venéno suæ mortificávit invídiæ, prædestináta renovandis mortálibus suæ pietátis remédia inter ipsa mundi primórdia præsignávit; denúntians serpenti futúrum semen mulíeris, quod nóxii cápitis elatiónem suâ virtúte contéreret; Christum scílicet in carne ventúrum, Deum hominemque signíficans, qui natus ex Vírgine, violatórem humánæ propáginis incorruptâ nativitáte damnáret. Adveniéntibus ergo tempóribus, dilectíssimi, quæ redemptióni hóminum fúerant præstitúta, ingréditur hæc ínfima Jesus Christus Dóminus noster, de cœlesti sede descendens, et à paterna glória non recédens, novo órdine, novâ nativitáte generátus. Novo órdine, quia invisíbilis in suis, visíbilis factus est in nostris; incomprehensíbilis vóluit comprehendi; ante témpora manens esse cœpit ex témpore; universitátis Dóminus servílem formam, obumbrátâ majestátis suæ dignitáte, suscépit; impassíbilis

Deus non dedignátus est homo esse passíbilis, et immortális mortis légibus subjacére. Novâ autem nativitáte génitus est, conceptus à vírgine, natus ex vírgine, sine paternæ carnis concupiscéntia, sine maternæ integritátis injúria; quia futúrum hóminum Salvatórem talis ortus decébat, qui et in se habéret humánæ substántiæ natúram, et humánæ carnis inquinamenta nescíret.

℟. Ecce Elísabeth cognáta tua, et ipsa concépit fílium in senectúte sua; * Quia non erit impossíbile apud Deum omne verbum, allelúia, allelúia. ℣. Hoc tibi erit signum à Dómino, quia fáciet Dóminus verbum quod locútus est; * Quia. *Luc.* 1. *Is.* 38.

Lectio III.

Léctio sancti Evangélii secundùm Lucam. *Cap.* 1.

In illo témpore; Missus est Angelus Gábriel à Deo in civitátem Galilææ, cui nomen Názareth, ad vírginem desponsátam viro cui nomen erat Joseph, de domo David; et nomen vírginis, María. Et réliqua.

Homília sancti Ambrósii Epíscopi.

*In Luc. l.* 2. *n.* 8, 15.

Disce vírginem móribus, disce vírginem verecúndiâ, disce vírginem oráculo, disce mystério. Trepidáre vírginum est, et ad omnes viri ingressus pavére, omnes viri affátus veréri. Discant mulieres propósitum pudóris imitári. Sola in penetrálibus quam nemo virórum vidéret, solus Angelus reperíret: sola sine cómite, sola sine teste, ne quo degéneri depravarétur affátu, ab Angelo salutátur. Soli Maríæ hæc salutátio servabátur: bene enim sola grátiâ plena dícitur, quæ sola grátiam quam nulla ália merúerat, consecúta est, ut grátiæ replerétur Auctóre. Vírginem párere divíni est signum mystérii, non humáni. Tanti namque mandáti mystérium, non hóminis fuit, sed Angeli ore promendum. Hódie primùm audítur: Spíritus sanctus supervéniet in te. Et audítur, et créditur. Dixit autem María: Ecce ancilla Dómini, contingat mihi secundùm verbum tuum. Vide humilitátem, vide devotiónem. Ancillam se dicit Dómini, quæ mater elígitur: nec repentíno exaltáta promisso est. Simul ancillam dicendo, nullam sibi prærogatívam tantæ grátiæ vindicávit quæ fáceret quod juberétur: mitem enim humilemque paritúra, humilitátem débuit étiam ipsa præferre.

℟. Beáta quæ credidisti, quóniam * Perficientur ea quæ dicta sunt tibi à Dómino, allelúia, allelúia. ℣. Non est Deus quasi homo, ut mentiátur. Dixit ergo, et non fáciet? locútus est, et non implébit? * Perficientur. Glória. * Perficientur. *Num.* 23.

℣. *Sacerd.* In humilitáte

nostra memor fuit nostrì Dóminus, ℟. Et redémit nos ab inimícis nostris. *Ps.* 135.

AD LAUDES.

*Psalmi de Dominica.*

*Ant.* 1. g. In princípio erat Verbum, et Verbum erat apud Deum, et Deus erat Verbum, allelúia. *Joan.* 1.

*Ant.* 7. ç. Omnia per ipsum facta sunt : et sine ipso factum est nihil, quod factum est, allelúia. *Joan.* 1.

*Ant.* 5. a. In mundo erat, et mundus per ipsum factus est, et mundus eum non cognóvit : in própria venit, et sui eum non recepérunt, allelúia. *Joan.* 1.

*Cantic.* Quàm pulcri, 450.

*Ant.* 6. *C.* Quotquot recepérunt eum, dedit eis potestátem filios Dei fieri, his qui credunt in nómine ejus, allelúia. *Joan.* 1.

*Ant.* 8. G. Verbum caro factum est, et habitávit in nobis; et vídimus glóriam ejus, allelúia. *Joan.* 1.

Capitulum. *Philip.* 2.

Cum in forma Dei esset, non rapínam arbitrátus est esse se æquálem Deo; sed semetipsum exinanívit formam servi accípiens, in similitúdinem hóminum factus, et hábitu inventus ut homo.

*Hymnus,* Pulsum, 451.

℣. Quid est homo, quòd memor es ejus? ℟. Aut filius hóminis, quóniam vísitas eum? *Ps.* 8.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 2. D. Visitávit nos Oriens ex alto, illumináre his qui in ténebris et in umbra mortis sedent, allelúia. *Luc.* 1.

Orémus. Oratio.

Deus, qui de beátæ Maríæ Vírginis útero Verbum tuum, Angelo nuntiante, carnem suscípere voluísti: præsta supplícibus tuis, ut qui verè eam genitrícem Dei crédimus, ejus apud te intercessiónibus adjuvémur; Per eumdem.

Ad Horas, *in fine Hymnorum non dicitur* Da Christe, *sed tantùm sequens Doxologia.*

Mundo Redemptor qui venis,
Fili, tibi laus máxima,
Cum Patre : nec tibi minor
Laus, utriusque Spíritus.
Amen.

AD PRIMAM.

*Ant.* 1. g. In princípio.

*In* ℟ *br.* ℣. Qui natus es.

*Canon ut suprà* 451.

AD TERTIAM.

*Ant.* 7. ç. Omnia.

Capitulum. *Ephes.* 1.

Proposuit Deus in dispensatióne plenitúdinis témporum instauráre ómnia in Christo, quæ in cœlis et quæ in terra sunt, in ipso.

℟ *br.* Deus rex noster * operátus est salutem, * Allelúia. allelúia. Deus. * ℣. In médio * terræ. * Allelúia. Glória Patri. Deus. *Ps.* 73.

℣. Tu es ipse Rex meus, et Deus meus, ℟. Qui mandas salútes Jacob. *Ps.* 43.

AD SEXTAM.

*Ant.* 5. a. In mundo.

Capitulum. 1 *Joan.* 4.

In hoc est cáritas, non quasi nos dilexérimus Deum, sed quóniam

quóniam ipse prior dilexit nos, et misit Fílium suum propitiatiónem pro peccátis nostris.

℟ br. Redemptiónem misit Dóminus * pópulo suo, * Allelúia, allelúia. Redemptiónem. ℣. Mandávit in ætérnum * testaméntum suum. *Allelúia. Glória. Redemptiónem. *Ps.* 110.

℣. Confiteántur Dómino misericórdiæ ejus, ℟. Et mirabília ejus fíliis hóminum. *Ps.* 106.

AD NONAM.

*Ant.* 8. G. Verbum.

CAPITULUM. 1 *Tim.* 3.

MANIFESTE magnum est pietátis sacraméntum, quod manifestátum est in carne, justificátum est in spíritu, appáruit Angelis, prædicátum est géntibus, créditum est in mundo, assumptum est in glória.

℟ br. Dómini * est assúmptio nostra, * Allelúia, allelúia. Dómini. ℣. Et Sancti Israel * regis nostri. *Allelúia. Glória. Dómini. *Ps.* 88.

℣. Dóminus virtútum nobíscum, ℟. Susceptor noster Deus Jacob. *Ps.* 45.

AD II VESPERAS.

*Psalmi de Officio parvo B. M.*

*Ant.* 1. f. Quæ ad patres nostros repromíssio facta est, hanc Deus adimplévit fíliis nostris, allelúia. *Act.* 13.

*Ant.* 4. E. Ubi venit plenitúdo témporis, misit Fílium suum factum ex muliere, allelúia. *Gal.* 4.

*Ant.* 3. a. Qui sanctíficat, et qui sanctificántur, ex uno omnes; propter quam causam non confúnditur fratres eos vocáre, allelúia. *Hebr.* 2.

*Ant.* 6. F. Nusquam Angelos apprehendit, sed semen Abrahæ; unde débuit per ómnia frátribus similári, allelúia. *Hebr.* 2.

*Ant.* 5. C. Participávit carni et sánguini, ut liberáret eos qui timóre mortis per totam vitam obnóxii erant servitúti, allelúia. *Hebr.* 2.

CAPITULUM. 1 *Joan.* 4.

DEUS cáritas est. In hoc appáruit cáritas Dei in nobis, quóniam Fílium suum unigénitum misit Deus in mundum, ut vivámus per eum.

*Hymnus,* Hæc illa, 445.

℣. Misericórdia et véritas obviavérunt sibi: ℟. Justítia et pax osculátæ sunt. *Ps.* 84.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 2. D. Pater misit Fílium suum Salvatórem mundi: nos ergo diligámus Deum, quóniam Deus prior dilexit nos, allelúia. 1 *Joan.* 4.

*Oratio, ut suprà ad Laudes.*

AD COMPLETORIUM, *ut heri.*

¶ *Hoc Festum non habet Octavam.* ]

DIE 30.

## S. REGULI EPISCOPI

*Commemoratio.*

¶ *In Dominica tantùm,*

LECTIO IX.

REGULUS, qui primùm ab Usuardo Sacerdóte Parisiensi et Mónacho, témpore Cároli

Calvi, públicis Ecclésiæ fastis inscriptus est, ab eódem obiisse dícitur in Castro Silvanectensi, cujus primus Epíscopus habétur. Post eum septem numerantur Epíscopi usque ad Livánium, qui sub Clodovéo Magno, Concílio Aurelianensi primo subscripsit. Hujus témpore cùm sancti Pontíficis corpus revelátum esset, extructa est in honórem ejus, súmptibus Regis, ecclésia in qua póstea Judith, Cároli Calvi Imperatóris fília, dum ad ejus túmulum orábat, à fébribus liberáta est. ]

Ad Laudes, *Ant.* Ego sum. ℣. Elégit, xvj.

Orémus. Oratio.

Deus, qui ad géntium illuminatiónem, beátum Régulum Pontíficem prædicatiónis evangélicæ glóriâ decorasti: præsta, ut quos per ipsíus documenta esse donasti fidéles, meritórum imitatóres esse concédas; Per.

DIE 2 APRILIS.

## S. FRANCISCI DE PAULA.

¶ *Si hoc Festum in Quadragesima occurrat, non fit de eo nisi Commemoratio.*

Ad Nocturnum, *in Dominica, pro nona Lectione leguntur duæ sequentes in unam junctæ.*

*Si verò Tempore Paschali evenerit, de eo fit ritu Semiduplici ut in Communi Justorum.* ]

Ad Noct. *Lectio j de Script. occurr. è tribus fit una.*

Lectio ii.

Franciscus Paulæ in Calábria natus, à téneris annis solitúdinem dilígere ac jejúniis vacáre cœpit. Post áliquot peregrinatiónes in adolescéntia per Itáliam religiónis causâ susceptas, in pátriam reversus, ecclésiam prope Paulam ædificávit, ibíque novi Ordinis fundamenta jecit. Cùmque præ humilitáte ómnium mínimus habéri vellet, alumnos quoque suos Mínimos appellári vóluit. Quam inierat ab adolescéntia vitæ ratiónem, servávit cum illis, in labóribus, in vigíliis, innumerísque afflictatiónibus, ad últimam usque senectútem persevérans, et tantâ quidem asperitáte, ut rudi semper amictu, nudis plerumque pédibus incéderet, cubáret humi, ac semel tantùm in die, idque ad solis occásum, reficerétur, et ad panem et aquam vix áliquid quadragesimális obsónii adhibéret; quam consuetúdinem ut fratres et soróres sui Ordinis toto anni témpore retinérent, quarto eos voto astrinxit.

Lectio iii.

A Ludovico undécimo, Francórum Rege, propter miraculórum famam expetitus, jubente Sixto quarto, ad eum se cóntulit. Quem Rex magno cum honóre excépit in palátio Plexítio prope Turónos; eóque in loco monastérium illi construxit. Ibi Fran-

ciscus mortis suæ præscius, die Cœnæ Dómini inter Missárum solémnia, effúsis ubertim lácrymis, sacro Viático præmunítus, ac postrídie audítâ quam sibi prælegi optávit Dómini passióne, quâ horâ Christus ánimam pro nobis pósuit, eádem et ipse suam Christo réddidit, anno ætátis circiter nonagésimo, salútis millésimo quingentésimo-séptimo. Hunc miráculis illustrem Leo décimus in Sanctórum númerum ascripsit.

Ad Laudes, *Ant.* Qui facit.
℣. Proba me, xxxvij.

Orémus. Oratio.

Deus, humílium celsitúdo, qui beátum Franciscum Sanctórum tuórum glóriâ sublimasti: tríbue, quæsumus, ut ejus méritis et imitatióne promissa humílibus præmia felíciter consequámur; Per.

DIE

## SANCTI AMBROSII,

### EPISCOPI ET ECCLESIÆ DOCTORIS.

*Duplex-minus.*

¶ *Si in Quadragesima occurrat, transfertur semper post Pascha.*]

*De Communi Doctorum.*

Ad Nocturnum, *Lectio j de Scriptura occurrente; è tribus fit una.*

Lectio ii.

Ambrosius, patre Ambrósio Galliárum Præfecto, in Gálliis natus, liberálibus disciplínis Romæ excultus, in auditório præfectúræ Prætoriánæ summa cum laude causas dixit. Póstea Ligúriæ et Æmíliæ à Probo Præfecto Prætórii præpósitus, venit Mediolánum, ubi mórtuo Auxéntio Epíscopo Ariáno, cathólici et hærétici de successóre deligendo inter se dissidébant. Quare cùm ingressus ecclésiam Ambrósius multa ad sedandam seditiónem præclárè dixisset, derepente púero Ambrósium Epíscopum proclamante, universí pópuli vox erúpit, Ambrósium Epíscopum deposcentis. Recusante illo, et tantum onus váriis ártibus atque étiam fugâ declinante, ardens pópuli stúdium ad Valentiniánum Imperatórem delátum est, cui gratíssimum fuit à se delectos júdices ad sacerdótium postulári. Probo étiam jucundum fuit, qui Ambrósio proficiscenti quasi vatícinans díxerat: Vade, age non ut judex, sed ut epíscopus. Itaque Ambrósius baptizátus, (erat enim tantùm catechúmenus) susceptis intra septem dies ómnibus Ordínibus, octávo, qui fuit séptimus Decembris, Epíscopus consecrátus est. Tum prædia sua, usufructu Marcellínæ sorórí reserváto, dedit Ecclésiæ, cétera partítus inter Ecclésiam et páuperes. Fácilis erat ómnibus ad eum áditus. Litigántium causas summâ patiéntiâ et æquitáte dirimébat. Quóties illi áliquis ob percipiendam pœniténtiam lapsus suos confessus es-

set, ita flebat, ut et illum flere compélleret. Convívia quæ ad Mártyrum sepulcra fiébant, abrogávit. Clerum intra frugalitátis límites contínuit, et viduárum múnera accípere, nedum blandiméntis elícere, prohíbuit.

LECTIO III.

PLURIMOS Ariános, aliosque hæréticos convertit ad fidem, et claríssimum imprímis Ecclésiæ lumen Augustínum Christo péperit. Multa passus est à Justína Valentiniáni junióris matre, quam hærétici sedúxerant; eíque, ne ullæ iis basílicæ Medioláni traderentur, fórtiter óbstitit. Eâ occasióne institútum est, ut antiphónæ, psalmi, et hymni juxta morem Orientálium canerentur, ne pia plebs éxcubans in ecclésia, et cum Epíscopo mori paráta, mœróris tædio contabésceret. Tunc étiam Ambrósio divínitus indicátum est quo loco Mártyrum Gervásii et Protásii córpora delitéscerent. Egit apud Valentiniánum junióren, ne Symmacho Urbis Præfecto aram Victóriæ instaurandi fáceret potestátem. A Valentiniáno junióre missus ad Máximum interfectórem Gratiáni, eum à communióne summóvit. Theodósium Imperatórem, propter cædem Thessalónicæ factam, ingressu ecclésiæ prohíbuit. Cui cùm ille obténderet David quoque regem adúlterum et homicídam fuisse, respondit Ambrósius: Qui secútus es errantem, séquere pœniténtem. Quare Theodósius impósitam sibi ab eo públicam pœniténtiam humíliter egit; et quod erubescébant priváti, non erúbuit Imperátor. Máximis pro Ecclésia labóribus curisque perfunctus, multis étiam libris egrégiè conscriptis, morbo correptus est. Ei Honorátus Vercellensis Epíscopus corpus Dómini óbtulit: quod ubi accépit, emísit spíritum, anno Christi trecentésimo nonagésimo-séptimo, quarto die Aprílis in pervigílio Paschæ, episcopátûs autem vigésimo-tértio.

Orémus. ORATIO.

DEUS, qui beátum Ambrósium Pontíficem, Cathólicæ fídeî defensórem, et Apostólicæ fortitúdinis exemplum in Ecclésia tua posuisti: quæsumus, ut ipso pro nobis intercedente, mereámur errórum vitáre discrímina, et de veritáte nunquam erubéscere; Per Dóminum nostrum.

DIE 18.

## BEATÆ MARIÆ AB INCARNATIONE, VIDUÆ PARISINÆ.

*Semiduplex.*

*De Communi sanctarum Mulierum.*

LECTIO II.

MARIA ab Incarnatióne ortum hábuit Lutétiæ Parisiórum, nobílibus piisque parén-

tibus Nicoláo Avrillot, dómino de Champlatreux, ac Maríâ Luillier; et in baptismo Bárbaræ nomen accépit. Jam à téneris annis, in paterna domo haud dúbia futúræ sanctitátis specímina dedit. Póstea duodecennis puella in disciplinam trádita est matérteræ suæ, quæ in monastério régio Longi Campi propè Parísios religiónis vota emíserat, ibíque María, inconsultis paréntibus, religiósum hábitum suscípere decrévit; sed ubi primùm agnóvit consílium illud matri suæ minùs probári, à propósito suo statim recessit, oblatisque núptiis acquiévit; vérita scílicet ne paterno repugnans império, divínæ resísteret voluntáti. Petro Acarie nupta, décimo-octávo ætátis anno, in matrimónio ita se gessit, ut, teste sancto Francisco Salésio, ómnibus qui in século vivunt tanquam absolutíssimum christiánæ virtútis exemplum propóni possit. Etsi enim nihil magis optábat quàm oratióni aliisque piis áctibus vacáre, ómnia tamen cónjugis matrisve múnia fidéliter adimplévit. Tunc autem potíssimùm Maríæ virtus enítuit, cùm inter civílis belli tumultus viro primùm éxule, mox in cárcerem detrúso, ipsa domo ejecta, ómnibus bonis spoliáta remansit. Ad eam quippe inópiam redacta est, ut vix interdum habéret unde sibi liberisque panem émeret; illud étiam miséńimum áccidit, quod iter agens, cónjugis invisendi consolandíque grátiâ, ex equo delapsa, femur sibi frégerit. Attamen totâ spe in Deum erecta ánimum non despondit, et postquam conváluit, nulli pepercit labóri donec liberórum securitáti consúluit, virumque restítuit in libertátem.

LECTIO III.

REBUS ita compósitis, totam se dedit divíno cúltui augendo et propagando; atque auctoritáte, quâ apud príncipes viros plúrimùm valébat, effécit ut nova Religiosórum institúta in Gálliis stabilirentur, imprímis Ordo Carmelitárum excalceatárum. Quod ut assequerétur, postquam gravíssimos tum doctrínâ tum pietáte viros consuluisset, ex Hispánia accersívit venerábilem Annam à sancto Bartholomæo et áliquot sanctæ Therésiæ alumnas, quæ germánam régulæ formam afferrent. Plura, Deo favente, hujus institúti cœnóbia brevi témporis spátio cóndita fuérunt, eidemque Ordini tres ejus fíliæ nomen dedérunt. Viro autem vitâ functo, et ipsa in Ambianense monastérium, ejus óperâ fundátum, se recépit, ibíque Carmelitárum excalceatárum régulam professa est. Qua in occasióne insígne præbuit humilitátis exemplum: nam etsi ómnium fácilè parens erat ac magistra, id unum in votis

hábuit, et repétitis précibus consecúta est, ut inter soróres ínfimum locum tenéret, húmili moniális, ut vocant, Conversæ título gaudens ac ministério. Tanta in ea fuit obediéntia, ut suæ fíliæ, quæ in eódem cœnóbio superiorissæ múnere per áliquod tempus functa est, véluti céteræ moniáles, demissè obtemperáret. Post triénnium, superiórum jussu, evocáta Pontisáram, ad áliud ejusdem institúti monastérium, ab ipsa páriter fundátum, cùm ibi annum totum conversáta fuisset, diuturno gravissimóque morbo patientíssimè toleráto, sacramentis Ecclésiæ muníta, inter sodálium preces et lácrymas ánimam Deo réddidit, die décimâ - octávâ Aprilis, anno Dómini millésimo sexcentésimo octávo-décimo, ætátis suæ quinquagésimo - tértio. Mórtuam Deus mirabílibus signis illustrávit : quibus ritè probátis à Pio Papa sexto, inter Beátos annumeráta est, anno millésimo septingentésimo nonagésimo-primo. Paucis post annis, cùm in Gállia ómnia turbarentur, beátæ mulíeris relíquiæ, ne sacrílegi hómines eas violárent, abscónditæ fuérunt. Postquam autem tepéscere cœpit impiórum furor, sacrum corpus solemni pompâ Pontisáram relátum, in sacello Moniálium Carmelitárum depósitum est, ubi nunc fidélium veneratióne cólitur.

Orémus. ORATIO.

Deus, qui beátam Maríam ardenti honóris tui zelo, et mirábili in adversis fortitúdine roborasti; ejus intercessióne concéde, ut adversa ómnia fórtiter toleráre valeámus, et in sanctæ tuæ religiónis amóre persístere; Per Dóminum.

DIE 21.

SANCTÆ OPPORTUNÆ, VIRGINIS. *Simplex.*

*De Communi Virginum.*

LECTIO III.

OPPORTUNA, Chrodogangi Sagiensis Epíscopi et Mártyris soror, cùm in ecclésia illud ex Evangélio audisset : Vade, vende ómnia quæ póssides, et da paupéribus; abjectis seculáribus ornaméntis, cœnóbium in saltu Algiæ situm prope Almaniscas, quod Monasteríolum dicebátur, ingressa, religiónis velum episcopáli benedictióne consecrátum accépit. Ibi tantis virtútibus enítuit, ut reluctantem licèt, mónachæ unánimi consensu eam sibi præfécerint. Ex eo témpore, majóri abstinéntiâ et perpétuo cilício cœpit corpus affligere, pervígiles sæpe noctes in Dei láudibus ágere, fériâ quartâ et sextâ cibis ómnibus abstinére, áliis diébus hordeáceo pane uti et aquâ, adhíbitis Domínicâ propter diéi veneratiónem piscículis, soróribus necessária ómnia ínterim suppéditans. Mórtuo

Chrodogango, cùm possidendi Christi desidério magis incenderétur, apparuérunt illi sanctæ Vírgines Lucía et Cæcília, et imminentem mortem prænuntiárunt. Quare accepto Eucharístiæ sacramento, migrávit in cœlum. Sepulta est juxta fratris sepulcrum: ibíque Deus multas virtútes operátus est.

*Oratio*, Fidéles tuos, xliv.

*Fit Commemor. de Cruce.*

VESPERÆ *de sequenti.*

---

DIE 22.

IN INVENTIONE CORPORUM

# SS. DIONYSII,

RUSTICI ET ELEUTHERII,

MARTYRUM.

*Duplex-majus.*

## IN I VESPERIS.

*Ant.* 3. a. In bonis justórum exultábit cívitas, et benedictióne justórum exaltábitur, allelúia. *Prov.* 11.

*Ant.* 6. F. Imperantes in præsenti pópulo sanctíssima verba, glóriam adepti sunt; et in diébus suis habentur in láudibus, allelúia. *Eccli.* 44.

*Ant.* 8. G. Dedérunt se perículo, ut starent sancta et lex; et glóriâ magnâ glorificavérunt gentem, allelúia. 1 *Mach.* 14.

*Ant.* 7. d. Fílii eórum propter illos usque in æternum manent: semen eórum et glória eórum non derelinquétur, allelúia. *Eccli.* 44.

*Ant.* 1. f. Córpora ipsórum in pace sepulta sunt, et nomen eórum vivit in generatiónem et generatiónem, allelúia. *Eccli.* 44.

CAPITULUM. *Isai.* 66.

DICIT Dóminus: Ego consolábor vos, et in Jerúsalem consolabímini, et ossa vestra quasi herba germinábunt: et cognoscétur manus Dómini servis ejùs, et indignábitur inimícis suis.

℟. Mundus gaudébit, vos autem contristabímini; sed * Tristítia vestra vertétur in gáudium: et † Gáudium vestrum nemo tollet à vobis, allelúia, allelúia. ℣. Non erunt in memória prióra, et non ascendent super cor; sed gaudébitis et exultábitis usque in sempitérnum: * Tristítia. Glória. † Gáudium. *Joan.* 16. *Is.* 65.

HYMNUS.

O INVIDENDA Mártyrum,
O pœna felix! córporis
Quæ dura solvens víncula
Mortem domas, vitam paris!

Post longa vitæ tædia,
Post ínclytæ decus necis,
Cœlestis æternâ Patris
Fratres quiescunt in domo.

AT ossa creduntur solo,
Piis rigáta flétibus;
Semen bonum, multam suo
Frugem datúra témpore.

Quam nempe vivi sánxerant
Fuso cruóre Mártyres,
Hanc membra luci réddita
Tuentur et firmant fidem.

QUORUM triumphos pángimus,

Tenére da fidem, Deus;
Da quam triumphando duces
Signâre, nos viam sequi.
Sit laus Patri, laus Fílio,
Par sit tibi laus, Spíritus,
Qui præliantes róboras,
Palmisque donas Mártyres.
Amen.

℣. Judicábit Dóminus pópulum suum, ℟. Et in servis suis deprecábitur. *Ps.* 134.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 1 *D.* In servis suis miserébitur Dóminus, quia sánguinem servórum suórum ulciscétur, et vindictam retribuet in hostes eórum, allelúia. *Deut.* 32.

*Oratio ut infrà ad Laudes.*

## AD NOCTURNUM.

*Invit.* Sancti tui, Dómine, lætentur, * Allelúia. 2 *Paral.* 6.

*Hymnus.* S. V.

Ad sanctos cineres (pígnora Mártyrum
Sunt hæc plena Deo) cúrrite, cívitas:
Hic cunæ fidei: fúneris in sinu
Vitam pléniùs háusimus.
Hic, dum justa parant prælia Príncipes,
Flexis poplitibus, præsidium petunt,
Vestros ante pedes régia súpplices
Depónunt diadémata.
Quos sensére bonos rebus in árduis
Viventes, etiam post sua fúnera
Jungi Martyribus, dum veniat dies
Terris últimus, ámbiunt.
Hic, quot prodigiis se Deus ásserit!
Hic surdi patulis áuribus áudiunt:
Cæcis hic sua lux rédditur, et suus
Contractis vigor ártubus.
Patri máxima laus; máxima Fílio;
Amborumque sacro máxima Flámini,
Cui se ritè litans, fúnere spléndido
Triplex cónsecrat hóstia.
Amen.

*Psalmi tres de Feria sub Ant.* 8. G. Stabunt justi in magna constántia adversùs eos qui se angustiavérunt, et qui abstulérunt labóres eórum, allelúia. *Sap.* 5.

℣. Exaltatiónes Dei in gútture eórum, ℟. Ad faciendam vindictam in natiónibus. *Ps.* 149.

*Lectio j de Scriptura occurrente; è tribus fit una.*

℟. De his qui dórmiunt in terræ púlvere, fulgébunt qui ad justítiam erúdiunt multos, quasi stellæ * In perpétuas æternitátes, allelúia, allelúia. ℣. In his secunda mors non habet potestátem; sed erunt sacerdótes Dei et Christi, * In perpétuas. *Dan.* 12. *Apoc.* 20.

LECTIO II.

Post passiónem sanctórum Mártyrum Dionysii, Rústici, et Eleuthérii, cùm persecutóres córpora eórum in Séquanam projícere cogitárent, ut à fidélium conspectu et veneratióne subducerentur;

matróna quædam nondum fidélis, piè tamen in Deum affecta, per domésticos suos ea clam auferri, et sepultúræ mandári præcépit sexto ab urbe lápide, ubi per multos annos latuérunt. Cùm autem, ut in Actis passiónis eórum légitur, persecutiónis tepuisse vidisset furórem, locum tantórum ossa servantem, quà pótuit sollicitúdine, requisívit, atque inventum eminentis mausoléi constructióne signávit; ubi póstmodum Christiáni basílicam magno sumptu, cultúque eximio construxérunt, agente imprímis Genovéfà vírgine, quæ divínam inesse loco virtútem prædicábat, cujus ipsa circa energúmenos non semel testis fúerat; et quam fama deinceps, innúmeris in infirmos et débiles patrátis miráculis, latíssimè propagávit. Horum Mártyrum patrocínium Dagobertus præ céteris Francórum régibus ámbiens, sancta córpora è loco ubi háctenus jacúerant efferri jussit, ut magnificéntiùs reconderentur. Ad id autem usus est imprimis arte et óperà beáti Elígii, qui mausoléum elegántius fabricávit. In eam basílicam extrémo morbo labórans, è Spinógelo villa ad Séquanam est delátus: illucque post mortem corpus ejus relátum, juxta sanctórum Mártyrum túmulum sepultum est.

℟. Sit memória illórum in benedictióne, * Et ossa eórum púllulent de loco suo, allelúia, allelúia. ℣. Amodo jam, dicit Spíritus, ut requiescant à labóribus suis. * Et. *Eccli.* 46. *Apoc.* 14.

LECTIO III.

EXINDE non tantùm Gálliæ, sed et celerárum regiónum fidéles ac príncipes, sacras Dionysii et sociórum relíquias summo honóre prosequentes, eórum ædem spléndidis munéribus donisque cumulárunt. At verò, coortà civili tempestáte, quæ versùs séculi décimi-octávi finem thronum et altáre fúnditus evertit, cùm ímpii ac vesáni hómines, thesauris atque ópibus ecclésiæ expilátis, sacra ómnia violárent, beatórum Mártyrum ossa illórum áusibus subtracta fuérunt, et abscóndita. Postquam autem tepéscere cœpit impiórum furor, sacra pígnora, è loco ubi aliquándiu latúerant educta, sub majóri altári ecclésiæ parochiális in urbe San-Dionysiána collocáta sunt. Tandem Christianíssimus Rex Ludovícus octávus-décimus, à longo exílio redux, rerum potítus, et non minóri, quàm atávi Reges, pietáte erga sanctos Mártyres affectus, sacras eórum exúvias in capsis sumptu régio confectis repóni, et in antíqua sancti Dionysii basílica collocári jussit. Itaque, ómnibus pro translatióne parátis, Eminentíssimus Cardinális de Talleyrand-Périgord, jam Archiepíscopus Parisiensis electus, sacras relíquias

in eamdem basílicam solemni pompâ tránstulit, fériâ quartâ intra Octávam Ascensiónis, anno millésimo octingentésimo undevigésimo; præcedéntibus longo ágmine Ecclésiæ Præsúlibus, insígnibus viris, et áliis de Clero, innumeráque fidélium multitúdine.

℟. Fulgébunt justi, et tanquam scintillæ in arundinéto discurrent: * Judicábunt natiónes, et dominabuntur pópulis, allelúia, allel. ℣. Dóminus Deus illuminábit illos, et regnábunt in sécula seculórum: * Judicábunt. Glória Patri. * Judicábunt. *Sap.* 3. *Apoc.* 22.

¶ *Ubi festum SS. Martyrum ritu Solemni aut Annuali celebratur, secundæ Lectioni tertia in unam jungenda est; tertiaque erit de Evangelio cum sua Homilia, ut sequitur:*

Léctio sancti Evangélii secundùm Matthæum. *C.* 10.

In illo témpore; Dixit Jesus discípulis suis: Nolíte timére eos qui occídunt corpus, ánimam autem non possunt occídere. Et réliqua.

Homília sancti Joannis Chrysóstomi.

*In Matth.* 34 *al.* 35. *n.* 2.

Viden quómodo illos ómnibus superióres reddat? non curas modò, non maledicta, perícula, insídias, sed étiam mortem ómnium terribilíssimam contémnere docens; neque simplíciter mortem, sed étiam violentam. Neque dixit, Occidémini; sed cum magnificéntia totum declarávit, dicens: Nolíte timére ab iis qui occídunt corpus, ánimam autem non possunt occídere: sed pótiùs timéte eum qui potest et ánimam et corpus pérdere in gehennam: in contrárium vertens sermónem, uti semper facit. Quid enim sibi vult? Timétis mortem, ideóque ad prædicandum segnióres estis? Sed hac de causa pótiùs prædicáte, quia mortem timétis. Illud enim verè vos à morte erípiet. Nam etiamsi vos interemptúri sunt, melióorem tamen partem non superábunt, etiamsi id totis víribus conentur. Ideo non dixit, Animam autem non occídunt; sed, Non possunt occídere. Nam etiamsi velint, non superábunt. Itaque si supplícium times, illud longè grávius time. Viden quómodo non promittat se illos à morte liberatúrum esse, sed mori permittit, majóra largitúrus, quàm si id non permítteret? Longè enim majus est suadére ut mors spernátur, quàm à morte erúere. Mortem ergo despiciámus, etiamsi nondum ejus tempus advénerit: nam ad multò melióorem vitam resurrectúri sumus. At dices, corpus corrúmpitur? Et ídeo máximè gaudendum, quod mors corrumpátur et mortálitas péreat, non autem substántia córporis. Neque enim si conflári vidéres státuam, perníciem id díceres, sed melióorem matériæ usum; sic et de córpore cógita. ]

℣ *Sacerd.* Dómine, ut scuto bonæ voluntátis tuæ ℟. Coronasti nos. *Ps.* 5.

AD LAUDES.

*Ant.* 1. g. Fortes estis, et verbum Dei manet in vobis, et vicistis malignum, allelúia. 1 *Joan.* 2.

*Ant.* 8. c. Vos ex Deo estis, et vicistis; quóniam major est qui in vobis est, quàm qui in mundo, allelúia. 1 *Joan.* 4.

*Ant.* 2. D. Mórtui estis, et vita vestra est abscóndita cum Christo in Deo, allelúia. *Coloss.* 3.

*Canticum de Communi plurium Martyrum*, x.

*Ant.* 6. F. Cùm Christus apparúerit, vita vestra; tunc et vos apparébitis cum ipso in glória, allelúia. *Coloss.* 3.

*Ant.* 4. d. Sicut sócii passiónum estis, sic éritis et consolatiónis, allelúia. 2 *Cor.* 1.

CAPITULUM. 1 *Thess.* 4.

SI crédimus quod Jesus mórtuus est, et resurrexit; ita et Deus eos qui dormiérunt per Jesum, addúcet cum eo.

*Hymn.* O invidenda, 463.

℣. Dabis, Dómine, gáudium et lætítiam; ℟. Et exultábunt ossa humiliáta. *Ps.* 50.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 8. G. In virtúte Dei custodímini in salútem; ut probátio vestræ fídei multò pretiósior auro inveniátur in laudem, et glóriam, et honórem in revelatióne Jesu Christi, allelúia. 1 *Petr.* 1.

Orémus. ORATIO.

OMNIPOTENS sempiterne Deus, qui ad immortáles triumphos Dionysium, Rústicum, et Eleuthérium Mártyres tuos extulisti: da córdibus nostris dignam pro eórum sacra Inventióne lætítiam, ut quorum córpora pio amóre ampléctimur, eórum précibus adjuvémur; Per Dóminum.

AD PRIMAM.

*Ant.* 1. g. Fortes estis.

AD TERTIAM.

*Ant.* 8. c. Vos.

CAPITULUM. *Apoc.* 12.

IPSI vicérunt propter sánguinem Agni, et propter verbum testimónii sui, et non dilexérunt ánimas suas usque ad mortem; proptérea lætámini, cœli, et qui habitátis in eis.

℟ *br.* In Deo * faciémus virtútem, * Allelúia, allelúia. In Deo. ℣. Et ipse ad níhilum * dedúcet inimícos nostros. * Allelúia. Glória. In Deo. *Ps.* 107.

℣. In humilitáte nostra memor fuit nostri, ℟. Et redémit nos ab inimícis nostris. *Ps.* 135.

AD SEXTAM.

*Ant.* 2. D. Mórtui estis.

CAPITULUM. 2 *Cor.* 4.

SEMPER nos qui vívimus, in mortem trádimur propter Jesum, ut et vita Jesu manifestétur in carne nostra mortáli.

℟ *br.* Non discédimus à te, * vivificábis nos, * Allelúia, allelúia. Non. ℣. Et nomen tuum * invocábimus, * Allelúia. Glória Patri. Non. *Ps.* 79.

℣. Numquid narrábit áliquis in sepulcro misericórdiam tuam, ℟. Et veritátem tuam in perditióne. *Ps.* 87.

AD NONAM.

*Ant.* 4. d. Sicut sócii.

CAPITULUM. 1 *Cor.* 15.

Cum mortále hoc indúerit immortalitátem, tunc fiet sermo qui scriptus est: Absorpta est mors in victória.

℟ *br.* Oculi Dómini * super metuentes eum, * Allelúia, allelúia. Oculi. ℣. Ut érüat à morte * ánimas eórum. * Allelúia. Glória Patri. Oculi. *Ps.* 32.

℣. Deus noster, Deus salvos faciendi; ℟. Et Dómini Dómini éxitus mortis. *Ps.* 67.

AD II VESPERAS.

*Ant.* 1. a. Vidi eos qui vicérunt béstiam, habentes cítharas Dei, et cantantes cánticum Agni, allel. *Apoc.* 15.

*Ant.* 3. a. Allelúia: Salus, et glória, et virtus Deo nostro est; quia vera et justa judícia sunt ejus, allelúia. *Apoc.* 19.

*Ant.* 5. a. Exulta, cœlum, et sancti; quóniam judicávit Deus judícium vestrum, allelúia. *Apoc.* 18.

*Ant.* 7. *d.* Agnus vincet, quóniam Dóminus dominórum est, et Rex regum; et qui cum illo sunt, vocáti, electi, et fidéles, allelúia. *Apoc.* 17.

*Ant.* 4. *D.* Vidérunt illos inimíci eórum; et réliqui in timórem sunt missi, et dedérunt glóriam Deo cœli, allelúia. *Apoc.* 11.

CAPITULUM. *Apoc.* 20.

Vidi sedes, et sedérunt super eas, et judícium datum est illis; et ánimas decollatórum propter testimónium Jesu, et propter verbum Dei, et qui non adoravérunt béstiam neque imáginem ejus, nec accepérunt caractérem ejus in fróntibus aut in mánibus suis: et vixérunt, et regnavérunt cum Christo.

*Hymnus*, O invidenda Mártyrum, 463.

℣. Lætáti sumus pro diébus quibus nos humiliásti, ℟. Annis quibus vídimus mala. *Ps.* 89.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 5. C. Lætítia sempiterna super caput eórum; gáudium et lætítiam obtinébunt, et fúgiet dolor et gémitus, allelúia. *Is.* 35.

*Oratio ut suprà ad Laudes.*

*Fit Commem. S. Georgii, Martyris : Ant.* Ecce Deus. ℣. In Deo, iij. *Oratio,* Adesto, vj.

DIE 23.

## S. GEORGII MARTYRIS.

*Simplex.*

*De Communi unius Martyris.*

LECTIO III.

Georgius inter Orientáles Mártyres, Magni título commendátus, longo et multíplici certámine claruisse scríbitur. Sub ejus nómine insignis basílica ab Imperatóribus christiánis ejus túmulo superstructa est in Palæstína,

Lyddam inter et Rámulam: unde fama ejus propter collátam multis peregrinántibus opem, in Occidentem pervásit. Hanc célebrat per Itáliam Gregórius Magnus in Epístolis: et in Gállia latè jam suâ ætáte percrebuisse mémorant Gregórius Turonensis in libro de Miráculis, et Venántius Fortunátus in Carmínibus. Antiquiórem étiam intra Parisiórum fines nóminis ejus venerationem testantur, tum cœnóbium, quod apud Calam in ejus honórem extructum à beáta Clotilde sancta Bathildis instaurávit; tum consecrátæ per sanctum Pontíficem Germánum ejusdem relíquiæ quas in ara occidentáli suburbánæ basílicæ sancti Vincéntii recónditas fuisse, à Gislemáro, in vita sancti Droctovéi, tráditur.

*Oratio*, Adesto, vj.

*Commemoratio de Cruce.*

DIE 25.

## S. MARCI EVANGELISTÆ.

*Duplex-majus.*

### IN I VESPERIS.

*Ant.* 1. *f.* Quàm speciósi pedes evangelizántium pacem, evangelizántium bona! allelúia. *Rom.* 10.

*Ant.* 7. *d.* Vox speculatórum: levavérunt vocem, simul laudábunt; quia consolátus est Dóminus pópulum suum, allelúia. *Is.* 52.

*Ant.* 6. F. Primus ad Sion dicet: Ecce adsunt; et Jerúsalem Evangelistam dabo, allelúia. *Is.* 41.

*Ant.* 4. E. Ostendit vobis pactum suum quod præcépit ut facerétis, et verba scripsit, allelúia. *Deut.* 4.

*Ant.* 8. G. Consummábitur mystérium Dei, sicut evangelizávit per servos suos, allelúia. *Apoc.* 10.

CAPITULUM. *Ephes.* 4.

CHRISTUS dedit quosdam quidem Apóstolos, quosdam autem Prophétas, álios verò Evangelistas, álios autem Pastóres, et Doctóres, ad consummatiónem Sanctórum in opus ministérii, in ædificatiónem córporis Christi.

℟. Implétum est tempus, et appropinquávit regnum Dei: * Pœnitémini, et † Crédite Evangélio, allelúia, allelúia. ℣. Ecce super montes pedes evangelizantis et annuntiantis pacem. * Pœnitémini. Glória Patri. † Crédite. *Marc.* 1. *Nahum* 1.

HYMNUS. *S. V.*

CHRISTI perennes núntii,
Retecta qui cœléstibus
Scriptis Dei mystéria
Totum per orbem spárgitis;

Olim sub umbris cóndita
Vates sacri quæ víderant,
Umbris procul cedéntibus,
Vidistis hæc pleno die.

HUMANA quæ tulit Deus,
Divína quæ gessit homo,
Seris legenda pósteris
Dictante scripsistis Deo.

LOCO remótos, témpore,
Vos rexit idem Spíritus:

Vestris adhuc in páginis
Nobis loqui non désinit.
Uni sit et trino Deo
Supréma laus, summum decus,
De nocte qui nos ad suæ
Lumen vocávit glóriæ.
Amen.

℣. Dóminus dabit verbum evangelizántibus ℟. Virtúte multâ. *Ps.* 67.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 5. C. Exalta in fortitúdine vocem tuam, qui evangelízas Jerúsalem: exalta, noli timére. Ecce bráchium Dómini dominábitur, allelúia. *Is.* 40.

*Oratio ut infrà ad Laudes.*

AD NOCTURNUM.

*Invit.* Deum qui vocávit nos in fide veritátis per Evangélium, * Veníte, adorémus, allelúia. 2 *Thess.* 2.

*Hymnus*, Christi perennes núntii, *ut suprà.*

*Super Psalmos de Feria, Ant.* 1. a. In circúitu sedis quátuor animália réquiem non habébant, cùm darent glóriam et honórem sedenti super thronum, allelúia. *Apoc.* 4.

℣. In templo ejus dicent glóriam, ℟. Et sedébit Dóminus rex in æternum. *Ps.* 28.

*Lectio j de Scriptura occurrente; è tribus fit una.*

℟. Super montem excelsum ascénde tu, qui evangelízas Sion: * Dic civitátibus Juda: Ecce Deus vester, allelúia, allelúia. ℣. Séquere me, vade, et annúntia regnum Dei: * Dic. *Is.* 40. *Luc.* 9.

LECTIO II.

Ex libro sancti Hierónymi Presbyteri, de Scriptóribus Ecclesiásticis. *c.* 18.

MARCUS discípulus et interpres Petri, juxta quod Petrum referentem audíerat, rogátus Romæ à frátribus, breve scripsit Evangélium. Quod cùm Petrus audisset, probávit, et Ecclésiæ legendum suâ auctoritáte dedit, sicut scribunt Clemens in sexto Hypotypó[illegible] libro, et Pápias Hierapolitánus Epíscopus. Méminit hujus Marci et Petrus in Epístola prima, sub nómine Babylónis figuráliter Romam signíficans: Salútat vos Ecclésia quæ est in Babylóne coelecta, et Marcus fílius meus.

℟. Misit me Christus evangelizáre, non in sapiéntia verbi, ut non evacuétur crux Christi. * Nonne stultam fecit Deus sapiéntiam hujus mundi? allelúia, allelúia. ℣. Ubi litterátus, ubi legis verba pónderans, ubi doctor parvulórum? * Nonne. 1 *Cor.* 1. *Is.* 33.

LECTIO III.

ASSUMPTO ítaque Evangélio quod ipse confécerat, perrexit in Ægyptum: et primus Alexandríæ Christum annúntians, constítuit Ecclésiam tantâ doctrínâ et vitæ continéntiâ, ut omnes sectatóres Christi ad exemplum suí cógeret. Dénique Philo disertíssimus Judæórum, videns Alexandríæ primam Ecclésiam adhuc judaizantem,

quasi in laudém gentis suæ librum super eórum conversatióne scripsit. Et quómodo Lucas narrat Jerosólymæ credentes ómnia habuisse commúnia; sic et ille quod Alexandríæ sub Marco fíeri doctóre cernébat, memóriæ trádidit. Mórtuus est autem octávo Nerónis annó, et sepultus Alexandríæ, succedente sibi Aniáno.

℟. Manifestáta est nunc grátia Dei per illuminatiónem salvatóris nostri Jesu Christi, * Qui destruxit quidem mortem, illuminávit autem vitam et incorruptiónem † Per Evangélium in quo pósitus sum ego prædicátor, allelúia, allelúia. ℣. Ascendit super cœlum cœli, ecce dabit voci suæ vocem virtútis; * Qui. Glória. † Per. 2 *Tim.* 1. *Ps.* 67.

℣ *Sacerdot.* Eructávit cor meum verbum bonum: ℟. Dico ego ópera mea Regi. *Ps.* 44.

AD LAUDES.

*Ant.* 1. f. Sermónem feci de ómnibus quæ cœpit Jesus fácere et docére, usque in diem quâ assumptus est, allelúia. *Act.* 1.

*Ant.* 2. D. Visum est mihi, assecúto ómnia à princípio diligenter, ex órdine scríbere, allelúia. *Luc.* 1.

*Ant.* 3. a. Notum mihi factum est sacramentum, sicut scripsi; prout potestis legentes intellígere prudéntiam meam in mystério Christi, allelúia. *Ephes.* 3.

CANTICUM. *Is.* 66.

PONAM in géntibus signum,* et mittam ex eis, qui salváti fúerint, ad gentes in mare;

In Africam, et Lydiam tendentes sagittam; * in Itáliam, et Græciam, ad Insulas longè:

Ad eos, qui non audiérunt de me, * et non vidérunt glóriam meam.

Et annuntiábunt glóriam meam géntibus, * et addúcent omnes fratres vestros de cunctis géntibus donum Dómino, ad montem sanctum meum Jerúsalem.

Quómodo si ínferant fílii Israel munus in vase mundo, * in domum Dómini.

Et assúmam ex eis in Sacerdótes, et Levítas, * dicit Dóminus.

Quia sicut cœli novi, et terra nova, quæ ego fácio stare coram me, dicit Dóminus;* sic stabit semen vestrum, et nomen vestrum.

*Ant.* 4. E. In fide veritátis Deus vocávit vos per Evangélium nostrum, in acquisitiónem glóriæ Dómini nostri Jesu Christi, allelúia. 2 *Thess.* 2.

*Ant.* 5. a. Evangélii factus sum minister, secundùm donum grátiæ Dei, allelúia. *Ephes.* 3.

CAPITULUM. *Josue* 1.

NON recédat volúmen legis hujus ab ore tuo; sed meditáberis in eo diébus ac nóctibus, ut custódias et fácias ómnia quæ scripta sunt, in

eo: tunc díriges viam tuam, et intélliges eam.

HYMNUS. *S. V.*

SINÆ sub alto vértice,
Cœlo tonante, lex data,
Inter tubas et fúlgura
Præsens miuabátur Deus.

Nunc, temperáto Número,
Per vela carnis blándiùs
Amat vidéri, lánguidis
Se lumen aptans sénsibus.

INSCULPTA saxo lex velus
Præcepta, non vires dabat:
Inscripta cordi lex nova
Quidquid jubet dat éxequi.

Scripsistis hanc fidâ manu:
Hanc voce, voci cónsonis
Hanc prædicastis móribus:
Signastis hanc et sánguine.

APFLANTE divo Spíritu,
Quæ verba vitæ tráditis,
Hæc ille nostris ímprimat
Delenda nunquam córdibus.

Uni sit et trino Deo
Supréma laus, summum decus,
De nocte qui nos ad suæ
Lumen vocávit glóriæ.
Amen.

℣. Declarátio sermónum tuórum illúminat, ℟. Et intellectum dat párvulis. *Ps.* 118.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 6. F. Mihi data est grátia hæc, in géntibus evangelizáre investigábiles divítias Christi, et illumináre omnes, allelúia. *Ephes.* 3.

Orémus. ORATIO.

DEUS, qui beátum Marcum Evangelistam tuum evangélicæ prædicatiónis grátiâ sublimasti: tribue, quæsumus, ejus nos semper et eruditióne profícere, et oratióne defendi; Per Dóminum.

AD PRIMAM.

*Ant.* 1. f. Sermónem feci.

AD TERTIAM.

*Ant.* 2. D. Visum est mihi.

CAPITULUM. *Hebr.* 2.

QUOMODO nos effugiémus, si tantam neglexérimus salútem? quæ cùm inítium accepisset enarrári per Dóminum, ab eis qui audiérunt in nos confirmáta est, contestante Deo signis, et portentis, et váriis virtútibus, et Spíritûs sancti distributiónibus.

℟ *br.* Quanta audívimus, * et cognóvimus, * Allelúia, allelúia. Quanta. ℣. Et patres nostri * narravérunt nobis! *Allelúia. Glória Patri. Quanta. *Ps.* 77.

℣. Patres nostri annuntiavérunt nobis ℟. Opus quod operátus es in diébus eórum. *Ps.* 43.

AD SEXTAM.

*Ant.* 3. a. Notum.

CAPITULUM. 2 *Cor.* 2.

NON sumus sicut plúrimi, adulterantes verbum Dei; sed ex sinceritáte, sed sicut ex Deo, coram Deo, in Christo lóquimur.

℟ *br.* Ecce lábia mea * non prohibébo, * Allelúia, allelúia. Ecce lábia. ℣. Dómine, * tu scisti. * Allelúia. Glória. Ecce.

℣. Justítiam tuam non abscondi in corde meo: ℟. Veritátem tuam et salutáre tuum dixi. *Ps.* 39.

AD NONAM.

*Ant.* 5. a. Evangélii.

CAPITULUM. 1 *Thess.* 2.

Sicut probáti sumus à Deo, ut crederétur nobis Evangélium, ita lóquimur, non quasi homínibus placentes, sed Deo qui probat corda nostra.

℟. br. Elóquia Dómini, * elóquia casta, * Allelúia, allelúia. Elóquia. ℣. Argentum * igne examinátum. * Allelúia. Glória. Elóquia. *Ps.* 11.

℣. Ignítum elóquium tuum vehementer; ℟. Et servus tuus diléxit illud. *Ps.* 118.

## AD II VESPERAS.

*Ant.* 4. E. Pervénimus ad vos in Evangélio Christi; spem habentes crescentis fídei vestræ in vobis magnificári, allelúia. 2 *Cor.* 10.

*Ant.* 7. ç. Cúpidè volebámus trádere vobis, non solùm Evangélium Dei, sed étiam ánimas nostras, allelúia. 1 *Thess.* 2.

*Ant.* 1. a. Spem quæ repósita est vobis in cœlis, audístis in verbo veritátis Evangélii quod pervénit ad vos, allelúia. *Coloss.* 1.

*Ant.* 2. D. Dignè Evangélio conversámini, in uno spíritu unánimes, collaborantes fídei Evangélii; quia vobis donátum est ut in Christum credátis, allelúia. *Philip.* 1.

*Ant.* 3. a. Glória, honor, et pax omni operanti bonum in die cùm judicábit Deus occulta hóminum, secundùm Evangélium meum, allelúia. *Rom.* 2.

CAPITULUM. *Baruch* 4.

Hic liber mandatórum Dei, et lex quæ est in ætemum: omnes qui tenent eam, pervénient ad vitam; qui autem dereliquérunt eam, in mortem.

*Hymnus*, Christi, 469.

℣. Suscitávit Dóminus testimónium in Jacob, ℟. Et legem pósuit in Israel. *Ps.* 77.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 1. J. Quod audívimus de verbo vitæ, annuntiámus vobis; ut et vos societátem habeátis nobiscum, et societas nostra sit cum Patre et cum Fílio ejus Jesu Christo, allelúia. 1 *Joan.* 1.

*Oratio ut suprà ad Laudes.*

*Fit Commem. sancti Cleti, Ant.* Ecce. ℣. In Deo, iij. *Oratio ut infrà.*

DIE 26.

# SANCTI CLETI,

## PAPÆ ET MARTYRIS.

*Semiduplex.*

*De Comm. unius Martyris.*

LECTIO II.

Post beátum Petrum, sedem Románam ténuit Linus: huic autem successit qui ab Irenæo et apud Græcos Anaclétus vocátur; ab Epiphánio autem et à plerísque Latinórum Cletus dícitur, et in antíquis Románæ Ecclésiæ Calendáriis ab Anacléto prorsus distínguitur. Illum cum Lino à beáto Petro, dum víveret, in partem sollicitúdinis áliquam assumptum fuisse, commú-

nis est apud véteres senténtia. A Lini morte, sub imperatóribus Tito et Domitiáno, Románam rexit Ecclésiam. Cui cùm duódecim annis præfuisset, secundâ post Nerónem persecutióne, gloriósi martyrii corónam adeptus est. Et quidem in Cánone Missæ recensétur inter Mártyres, ritu antiquíssimo. Successórem hábuit sanctum Clementem.

LECTIO III.

Ex libro sancti Cypriáni de Unitáte Ecclésiæ.

LOQUITUR Dóminus ad Petrum : Pasce oves meas. Super illum unum ædíficat Ecclésiam suam, et illi pascendas mandat oves suas. Et quamvis Apóstolis ómnibus parem potestátem tríbuat, tamen ut unitátem manifestáret, unitátis ejusdem orígi nem ab uno incipiéntem suâ auctoritáte dispósuit. Hoc erant útique et céteri Apóstoli quod fuit Petrus, pari consórtio honóris et potestátis; sed exórdium ab unitáte profíciscitur, et primátus Petro datur, ut una Christi Ecclésia et cathédra una monstrétur. Hanc Ecclésiæ unitátem qui non tenet, tenére se fidem credit? Qui Ecclésiæ renítitur et resistit; qui cathédram Petri, super quem fundáta est Ecclésia, déserit, in Ecclésia se esse confídit? Quómodo solis multi rádii, sed lumen unum; et rami árboris multi, sed robur unum tenáci radíce fundátum; et cùm de fonte uno rivi plúrimi défluunt, numerósitas licèt diffúsa videátur exundantis cópiæ largitáte, únitas tamen servátur in orígine. Avelle rádium solis à córpore, divisiónem lucis únitas non capit. Ab árbore frange ramum, fractus germináre non póterit. A fonte præcíde rivum, præcísus arescit. Sic et Ecclésia Dómini luce perfúsa, per orbem totum rádios suos pórrigit. Unum tamen lumen est, quod ubíque diffúnditur, nec únitas córporis separátur. Ramos suos in universam terram cópiâ ubertátis extendit; profluentes lárgiter rivos látiùs expandit. Unum tamen caput est, et origo una, et una mater fœcunditátis succéssibus copiósa. Illíus fœtu náscimur, illíus lacte nutrímur, spíritu ejus animámur. Adulterári non potest sponsa Christi, incorrupta est et pudíca. Unam domum novit, uníus cubículi sanctitátem casto pudóre custódit. Hæc nos Deo servat; hæc fílios regno quos generávit assignat. Nec perveníet ad Christi præmia, qui relinquit Ecclésiam Christi. Aliénus est, profánus est, hostis est. Habére jam non potest Deum patrem, qui Ecclésiam non habet matrem.

Orémus. ORATIO.

OMNIPOTENS sempitérne Deus, qui beátum Cletum Apostólici principátûs prærogatívâ conspícuum, martyrii corónâ illustriórem effecisti; da Ecclésiæ tuæ ejus patrocí-

niis adjuvári, cujus labóribus exculta flóruit, et sánguine crevit fœcundáta; Per.

VESPERÆ *à Capit. de sequenti.*

*Or.* Deus, cujus grátia, vj.

*Fit Commem. sancti Cleti, Ant.* Justum. ℣. Posuisti, vij. *Oratio ut suprà.*

DIE 27.

## SANCTI POLYCARPI,

### EPISCOPI ET MARTYRIS.

*Semiduplex.*

*De Comm. unius Martyris.*

LECTIO II.

Ex libro sancti Hierónymi Presbyteri, de Scriptóribus Ecclesiásticis. *c.* 27.

POLYCARPUS Joannis Apóstoli discípulus, et ab eo Smyrnæ Epíscopus ordinátus, totíus Asiæ princeps fuit; quippe qui nonnullos Apostolórum et eórum qui víderant Dóminum, magistros habúerit, et víderit. Hic propter quasdam super die Paschæ quæstiónes, sub Imperatóre Antoníno Pio, Ecclésiam in Urbe regente Aniceto, Romam venit; ubi plúrimos credéntium, Marciónis et Valentíni persuasióne deceptos reduxit ad fidem. Cùmque ei fortúitò óbviam fuisset Márcion, et díceret: Cognoscis nos? respondit: Cognosco primogénitum sátanæ. Póstea verò, regnante Marco Antoníno, et Lúcio Aurélio Cómmodo, quartâ post Nerónem persecutióne, Smyrnæ sedente Procónsule, et universo pópulo in amphitheátro adversùs eum personante, igni tráditus est. Scripsit ad Philippenses valde útilem Epístolam, quæ usque hódie in Asiæ conventu légitur.

LECTIO III.

Ex Epístola Ecclésiæ Smyrnensis ad Ecclésias Ponti.

*Euseb. Hist. eccl. l.* 4.

ALACRITER et própere pergébat ad stádium Polycarpus; aiente verò Procónsule: Jura, et dimitto te, convícium fac Christo; Polycarpus respondit: Octoginta et sex anni sunt ex quo sérvio ei, nec ullâ me affécit injúriâ; et quómodo possum convícia dícere adversùs Regem meum qui me salvum fecit? Urgente rursus illo, ac inquiente: Jura per Génium Cæsaris, respondit: Si ambitiósè contendis, ut jurem per Cæsaris, ut tu vocas, Génium; símulas autem te ignoráre quis sim, palàm audi: Christiánus sum. Tunc plácuit illis, ut vivum Polycarpum ignis exúreret. Quando autem rogus apparátus est, cùm clavis affigendus esset, dixit: Sínite me sic; qui enim mihi dat ignem pati, dabit et sine vestra ex clavis cautióne immótum in pyra permanére. Illi ergo non quidem clavis defixérunt, sed ligavérunt eum. Hic verò mánibus post tergum pósitis, ac revinctus tanquam áries insignis ex magno grege delectus qui gratíssimum holocaustum offerrétur, cœlum contúitus, dixit;

Pater unigéniti et benedicti Filii tui Jesu Christi, benedico te, qui me ad hanc horam perdúcere dignátus es, ut partem cáperem in consórtio Mártyrum in cálice Christi tui ad resurrectiónem vitæ ætérnæ, ánimæ simul et córporis; inter quos, quæso, suscípiar hódie coram te tanquam hóstia pinguis et accepta. Cùmque precatiónem complesset, ministri ignem accendérunt. Cùm verò ingens flamma emicasset, ignis fórnicis spéciem præbens, tanquam navis velum à vento replétum atque sinuátum úndique circúmdedit Mártyris corpus. Cernentes autem ímpii corpus flammis non posse consúmi, confectórem própiùs accédere, ensemque altè in corpus adígere jussérunt : quo facto, tanta vis sánguinis effluxit, ut ignis prorsus extinguerétur. Ossa ipsius gemmis pretiosíssimis carióra, et quólibet auro purióra, ubi decébat, condídimus. Quo in loco nobis; ut fieri póterit, congregátis, concédet Deus natálem ejus martyrii diem cum gáudio et hilaritáte celebráre.

*Or.* Deus cujus grátia, vj.

DIE 29.

## S^TÆ^ MARIÆ EGYPTIÆ.

*Semiduplex.*

*Pridie* AD VESPERAS.

CAPITULUM. *Isai.* 54.

Noli timére, quia non confundéris neque erubesces; non enim te pudébit, quia confusiónis adolescéntiæ tuæ oblivisceris.

HYMNUS. *S. V.*

O vos cum citharis júngite cantus,
Cœtus angelici fémina sacris
Quondam pulsa adytis, débita cœlo,
Nunc ad sidereas tránsvolat arces.

Sacris quæ repulit lóngiùs arcens
Templi liminibus crímine fœdam,
Hæc est illa manus quæ modò amíca
Ablútam lacrymis ádmovet aris.

Hæc olim tenebris óbsita densis,
Jam cœlo nova lux áddita fulget,
Et monstrat faciles prævia portus
Passis naufragium triste pudóris.

Quæ non divus amor péctora mutat!
Ut cœli radius fulsit ab alto,
Urbes, seque fugit : nulla sat altos,
Quò se condat, habet silva recessus.

Illi pro thalamo frígida rupes,
Lautis pro dapibus gráminis herba :
Nec soles calidos veste repellit,
Nec duras hiemes péllibus arcet.

Patri máxima laus : máxima Nato :
Sit laus æqua tibi, Spíritus alme,

Qui, dum sacrilegum pellis amórem,
Puros insinuas córdibus ignes. Amen.

℣. Miserátor et miséricors Dóminus : ℟. Longánimis et multùm miséricors. *Ps.* 102.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 7. G. Revértere, aversátrix, ait Dóminus, et non avertam fáciem meam; quia sanctus ego sum, et non irascar in perpétuum, allelúia. *Jer.* 3.

*Oratio ut infrà ad Laudes.*

AD NOCTURNUM.

*Invit.* Venit Dóminus vocáre peccatóres ad pœniténtiam : * Veníte, adorémus, allelúia. *Luc.* 5.

*Hymnus,* O vos, *ut suprà.*

*Psalmi de Feria sub sola Ant.* 2. D. Prosternens se Dómino, clamábat, dicens: Súbveni, quæso te, mihi, Dómine Deus meus, allelúia. *Judith* 9.

℣. Propter nomen tuum, Dómine, propitiáberis peccáto meo ; ℟. Multum est enim. *Ps.* 24.

*Lectio j de Scriptura occurrente; è tribus fit una.*

℟. Si revérteris ait Dóminus, ad me convértere, non commovéberis : * Lava à malítia cor tuum, ut salva fias, allelúia, allelúia. ℣. Ego quos amo, árguo et castígo; æmuláre ergo, et pœniténtiam age : * Lava. *Jerem.* 4. *Apoc.* 3.

LECTIO II.

MARIA Ægyptia duodecennis témpore Justíni Imperatóris, relictis paréntibus, Alexandríam venit; fuitque per annos septémdecim in ea civitáte peccátrix. Cùm autem Jerosólymam profecta, Calváriæ templum in festo Exaltatiónis sanctæ Crucis íngredi tentasset, ter divínitus repulsa, in átrio coram imágine Deíparæ Vírginis vovit pœniténtiam, si licéret sibi vivíficum Crucis lignum vidére et adoráre. Moxque templum ingressa, vidit et adorávit. Inde sumpto trium panum viático, perceptáque Eucharístiâ in Oratório sancti Joannis, ad ripam Jordánis ultra flumen in vastíssimam solitúdinem secessit.

℟. Ibat post amatóres suos, et meî obliviscebátur, dicit Dóminus : ecce ego lactábo eam, * Et ducam in solitúdinem, et loquar ad cor ejus, allelúia, allelúia. ℣. Vocábo non dilectam, dilectam; et non misericórdiam consecútam, misericórdiam consecútam ; * Et ducam. *Os.* 2. *Rom.* 9.

LECTIO III.

IBI, consumpto viático, detritisque véstibus, ignóta permansit annis quadraginta septem, donec ad torrentem quemdam occurrit ei Zózimas Présbyter à quo obtínuit ut véspere in Cœna Dómini in adversam Jordánis ripam afferret sibi corpus et sánguinem Dómini, quorum participatióne tot annos carúerat. Condicto die accessit ad eumdem locum

Zózimas, quò et María pervénit; recitatóque Symbolo et Oratióne Domínicâ, ut moris erat, accepto étiam pacis ósculo, divína dona suscépit, rursumque precáta est Zózimam, ut anno recurrente, ad eumdem torrentem veníret. Qui cùm eò accessit, conspexit corpus ejus jacens in terra, in qua scripta hæc legit: Sépeli, Abba Zózima, míseræ Maríæ corpúsculum; redde terræ quod suum est, et púlveri ádjice púlverem, orans Deum pro me quæ mórior nocte salutíferæ Passiónis, post divínæ et sacræ Cœnæ communiónem. Pio voto obtémperans Zózimas, corpus beátum in ipso loco terræ mandávit. Hic póstea vitam ejus scripsit, per quam memóriæ ejus venerátio per Orientem et Occidentem propagáta est.

℟. Remittuntur tibi peccáta; * Fides tua te salvam fecit: † Vade in pace, allelúia, allelúia. ℣. Delévi ut nubem iniquitátes tuas, et quasi nébulam peccáta tua. * Fides. Glória Patri. † Vade in pace, allelúia, allelúia. *Luc.* 7. *Is.* 44.

℣ *Sacerd.* Veníte, audíte, et narrábo, omnes qui timétis Deum, ℟. Quanta fecit ánimæ meæ. *Ps.* 65.

## AD LAUDES.

*Ant.* 1. a. Quis Deus símilis tuî, qui aufers iniquitátem, et transis peccátum reliquiárum hæreditátis tuæ? allelúia. *Mich.* 7.

*Ant.* 3. c. Tu Dóminus Deus meus: postquam convertisti me, egi pœniténtiam, allelúia. *Jerem.* 31.

*Ant.* 8. G. Ostendisti mihi, et erúbui, quóniam sustínui oppróbrium adolescéntiæ meæ, allelúia. *Jerem.* 31.

CANTICUM. *Thren.* 3.

RECORDARE, Dómine, paupertátis et transgressiónis meæ, * absínthii et fellis.

Memóriâ memor ero, * et tabescet in me ánima mea.

Hæc récolens in corde meo, * ídeo sperábo.

Misericórdiæ Dómini quia non sumus consumpti; * quia non defecérunt miseratiónes ejus.

Pars mea Dóminus, dixit ánima mea; * proptérea expectábo eum.

Bonus est Dóminus sperántibus in eum, * ánimæ quærenti illum.

Bonum est præstolári cum siléntio * salutáre Dei.

*Ant.* 4. E. Recogitábo tibi omnes annos meos in amaritúdine ánimæ meæ: corrípies me, et vivificábis me, Dómine, allelúia. *Is.* 38.

*Ant.* 2. D. Liberasti me de perditióne; proptérea confitébor, et benedícam nómini Dómini, allelúia. *Eccli.* 51.

CAPITULUM. *Sap.* 11.

MISERERIS ómnium, quia ómnia potes, et dissímulas peccáta hóminum propter pœniténtiam; díligis enim

ómnia quæ sunt, et nihil odisti eórum quæ fecisti.

HYMNUS. – *S. V.*

ULTRIX ipsa suos sævit in artus,
Per quos et potuit pulcra placére:
Deformis macies incubat ori;
Sed formam melior grátia pensat.

In pœnam scelerum sæpe recursant
Importúna malæ gáudia vitæ:
Sed versans animo débita noxis
Tot tormenta, graves cómprimit æstus.

JAM tu digna polo, désere terras;
Placasti lacrymis Núminis iram:
Jam tu pasta sacro córpore Christi,
Æternæ capias pábula mensæ.

Patri máxima laus, máxima Nato:
Sit laus æqua tibi, Spíritus alme,
Qui, dum sacrilegum pellis amórem,
Puros insinuas córdibus ignes. Amen.

℣. Ad me, Deus meus, ánima mea conturbáta est; ℟. Proptérea memor ero tuî de terra Jordánis. *Ps.* 41.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 1. J. Miseratiónum Dómini recordábor; laudem Dómini super ómnibus quæ réddidit, et super multitúdinem bonórum quæ largítus est secundùm indulgéntiam suam, allelúia. *Is.* 63.

Orémus. ORATIO.

LARGIRE nobis, miséricors Deus, ut beáta María, quæ te super ómnia diligendo, suórum accépit véniam delictórum, pœniténtiæ salutáris donum nobis obtíneat; Per Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum.

AD PRIMAM.

*Ant.* 1. a. Quis Deus.

AD TERTIAM.

*Ant.* 3. c. Tu Dóminus.

CAPITULUM. *Is.* 54.

DOMINABITUR tuî qui fecit te; Dóminus exercítuum nomen ejus, et redemptor tuus Sanctus Israel, Deus omnis terræ vocábitur; quia ut mulierem derelictam et mœrentem spíritu vocávit te Dóminus.

℟ *br.* Dicam Deo : * Susceptor meus es, * Allelúia, allelúia. Dicam. ℣. Quare* oblítus es meî? * Allelúia. Glória. Dicam.

℣. Quare tristis es, ánima mea, et quare conturbas me? ℟. Spera in Deo, quóniam adhuc confitébor illi. *Ps.* 41.

AD SEXTAM.

*Ant.* 8. G. Ostendisti mihi.

CAPITULUM. *Jerem.* 31.

HÆC dicit Dóminus: Quiescat vox tua à ploratu, et óculi tui à lácrymis; quia est merces óperi tuo, ait Dóminus.

℟ *br.* Deus vitam meam * annuntiávi tibi, * Allelúia, allelúia. Deus. ℣. Posuisti

lácrymas meas * in conspectu tuo. * Allelúia. Glória. Deus. *Ps.* 55.

℣. Discédite à me omnes qui operámini iniquitátem: ℟. Quóniam exaudívit Dóminus vocem fletûs mei. *Ps.* 6.

AD NONAM.

*Ant.* 2. D. Liberasti me.

Capitulum. *Tob.* 13.

Convertimini, peccatóres, et fácite justítiam coram Deo, credentes quod fáciat vobiscum misericórdiam suam; ego autem et ánima mea in eo lætábimur.

℟ *br.* Noli oblivisci, ánima mea, * retributiónes Dómini, * Allelúia, allelúia. Noli. ℣. Qui propitiátur * ómnibus iniquitátibus tuis. * Allelúia. Glória Patri. Noli. *Ps.* 102.

℣. Exultábunt lábia mea, cùm cantávero tibi, ℟. Et ánima mea quam redemisti. *Ps.* 70.

AD II VESPERAS.

*Ant.* 1. *a.* Venit Fílius hóminis quærere et salvum fácere quod períerat, allelúia. *Luc.* 19.

*Ant.* 3. à. Vadit ad ovem quæ períerat, donec invéniat eam, allelúia. *Luc.* 15.

*Ant.* 6. F. Cùm invénerit eam, impónit in húmeros suos gaudens, allelúia. *Luc.* 15.

*Ant.* 4. E. Dico vobis; gaudet super eam magìs quàm super nonaginta novem quæ non erravérunt, allelúia. *Matth.* 18.

*Ant.* 5. a. Ita dico vobis; gáudium erit coram Angelis Dei super uno peccatóre pœniténtiam agente, allelúia. *Luc.* 15.

Capitulum. *Eccli.* 17.

Deus pœniténtibus dedit viam justítiæ, et confirmávit deficientes sustinére, et destinávit illis sortem veritátis.

*Hymnus*, O vos, 476.

℣. Glorificábo nomen tuum in æternum; ℟. Quia misericórdia tua magna est super me. *Ps.* 85.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 4. f. Ubi abundávit delictum, superabundávit grátia; ut sicut regnávit peccátum in mortem, ita et grátia regnet per justítiam in vitam ætermam, allelúia. *Rom.* 5.

*Oratio ut suprà ad Laudes.*

*Fit Commem. de sequenti.*

*Ant.* Ecce. ℣. In Deo, iij.

*Oratio ut infrà.*

DIE 30.

## SANCTI EUTROPII,

EPISCOPI ET MARTYRIS.

*Simplex.*

*De Comm. unius Martyris.*

Lectio III.

Eutropius Epíscopus, in Gállias ad prædicandam fidem missus, post adimplétum ritè munus, apud Sántonas, illíso ab incrédulis cápite, Martyr occúbuit; et, ob instantem persecutiónem, loco minùs digno sepultus est. Cùmque témporum lapsu nulla

nullà nisi nóminis ejus et sanctitátis superesset memória, à fidélibus ut Sanctus tantùm, non ut Martyr, habebátur; donec eum pro Christo sánguinem fudisse sic fuit revelátum. Palládius, Santonensis Epíscopus, qui Concílio Parisiensi quarto, et Matisconensi secundo intérfuit, in ejus honórem circa annum Dómini sexcentésimum basílicam extruxit; ad quam convocátis Abbátibus, dum è túmulo sacras Eutrópii relíquias honorificéntiùs collocandas transferret, duo ex illis Abbátibus, amóto opertório, conspexérunt ictu secúris illísum caput. Quibus étiam nocte sequenti idem Sanctus appáruit, dicens: Scitóte me per eam cicatrícem, quam vidistis in cápite, martyrium consummasse. Ex eóque, quod Martyr esset, innótuit pópulis, quia non áderat história passiónis. Hujus memória in Parisiensi Ecclésia ad annum millésimum ducentésimum nonagésimum-sextum in grátiam Philippi Pulcri Francórum Regis et Joannæ Regínæ, apud quos singuláris erat sancti Mártyris venerátio, ex statúto Capítuli consecráta est.

Orémus. ORATIO.

DEUS, qui per beátum Eutrópium Mártyrem tuum atque Pontíficem infidéles pópulos de ténebris ad lucem veritátis veníre tribuisti: da nobis, ejus intercessióne, in fide stábiles, et à spe Evangélii quod prædicávit immóbiles permanére; Per Dóminum.

*Commemoratio de Cruce.*

DIE 1 MAII.

SS. APOSTOLORUM

# PHILIPPI ET JACOBI.

*Duplex-majus.*

IN I VESPERIS.

*Ant.* 3. a. Vóluit Jesus exíre in Galilæam, et invénit Philippum, et dicit ei: Séquere me, allelúia. *Joan.* 1.

*Ant.* 1. f. Invénit Philippus Nathánael, et dicit ei: Quem scripsit Móyses in lege, et Prophétæ, invénimus Jesum fílium Joseph à Názareth, allelúia. *Joan.* 1.

*Ant.* 8. G. Dixit ei Nathánael: A Názareth potest áliquid boni esse? Dicit ei Philippus: Veni et vide, allelúia. *Joan.* 1.

*Ant.* 7. d. Elégit Jesus, et Apóstolos nominávit Philippum, et Jacóbum Alphæi, allelúia. *Luc.* 6.

*Ant.* 2. D. Docébat eos in synagógis, ita ut mirarentur, et dícerent: Nonne hic est fabri fílius? et fratres ejus, Jacóbus et Joseph, et Simon, et Judas, allelúia. *Matth.* 13.

CAPITULUM. *Is.* 61.

SCIENT in géntibus semen eórum, et germen eórum in médio populórum: omnes qui víderint eos, cognoscent

illos, quia isti sunt semen cui benedixit Dóminus.

℟. Vidébunt glóriam meam; et ponam in eis signum, et mittam ex eis ad eos qui non audiérunt de me; * Et † Annuntiábunt glóriam meam géntibus, allelúia, allelúia. ℣. Manifestávi nomen tuum homínibus quos dedisti mihi de mundo : sicut tu me misisti, et ego misi eos; * Et annuntiábunt. Glória. † Annuntiábunt. *Is.* 66. *Joan.* 17.

HYMNUS. *C.*

Dum morte victor óbrutâ
Ab ínferis Christus redit,
Vos pángimus, diræ necis
Vitæque testes rédditæ.

Vobis datum præ céteris
Latus Magistri cíngere :
Vobis futúræ sédulus
Arcána credit glóriæ.

At, ille privátim suæ
Dum núntiat crucis probrum,
Cur horret humánus nimis,
Qui décipit sensus, amor?

Opórtuit Christum pati,
Qui póstea resúrgeret :
Illinc homo verus patet;
Hinc se probat verè Deum.

Illos magister qui doces,
Tu, Christe, tu nos érudi :
Si quid latet, tu détege;
Amáre da quod jam patet.

Uni sit et trino Deo
Supréma laus, summum decus,
De nocte qui nos ad suæ
Lumen vocávit glóriæ. Amen.

℣. Glória virtútis eórum tu es; ℟. Quia Dómini est assúmptio nostra. *Ps.* 88.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 6. F. Dixit Jesus Philippo : Si quis mihi ministrat, me sequátur; et ubi sum ego, illic et minister meus erit, allelúia. *Joan.* 12.

*Oratio ut infrà ad Laudes.*

AD NOCTURNUM.

*Invitat.* Christum Apostolórum Magistrum et Dóminum, * Veníte, adorémus, allelúia. *Joan.* 13.

HYMNUS. *C.*

Prædicta Christi mors adest;
At vos timóri párcite :
Nil inde, nil caros pius
Remittet in fratres amor.

Duráte fortes : írritos
Mundi tumultus spérnite :
Deo volente, túrbini
Seréna succédet dies.

Cœli perenne gáudium
Solábitur luctus breves;
Brevem triumphum séculi
Æternus óbruet dolor.

Qui carne frater in suo
Mortem perémit córpore,
Divinitátis vos suæ
Dignábitur consórtio.

Uni sit et trino Deo
Supréma laus, summum decus,
De nocte qui nos ad suæ
Lumen vocávit glóriæ. Amen.

*Ant. sola* 1. a. Cùm vidisset Jesus quia multitúdo máxima venit ad eum, dixit ad Philippum : Unde emémus panes, ut mandúcent hi? Hoc autem dicébat tentans eum; ipse enim sciébat quid esset factúrus, allelúia. *Joan.* 6.

℣. Edent páuperes et sa-

turabuntur; ℟. Et laudábunt Dóminum qui requírunt eum. *Ps.* 21.

*Lectio j de Scriptura occurrente; è tribus fit una.*

℟. Ecce fratres Jesu stabant foris quærentes loqui ei. Et extendens manum in discípulos suos, dixit: Ecce fratres mei. * Quicumque enim fécerit voluntátem Patris mei, ipse meus frater est, allelúia, allelúia. ℣. Narrábo nomen tuum frátribus meis; in médio Ecclésiæ laudábo te. * Quicumque enim. *Matth.* 12. *Ps.* 21.

LECTIO II.

PHILIPPUS Bethsáidæ natus, unus fuit ex iis qui primùm à Christo vocáti sunt; à quo cùm accepisset Nathánael venisse Messíam in lege et in Prophétis promissum, ad Dóminum deductus est. Hic in discipulórum órdine permansit, ille póstea in númerum duódecim Apostolórum cooptátus est. Quàm verò Christus ipsum familiáriter adhibéret, illud fácilè declárat, quod cùm in solitúdine hóminum multitúdinem páscere vellet, sic præ céteris illum affátus est: Unde emémus panes, ut mandúcent hi? Gentíles quoque Salvatórem vidére cupientes, ad Philippum accessisse leguntur. Is, accepto Spíritu sancto, in utráque Phrygia prædicávit, et Ecclésias constítuit, ex quibus prodiérunt viri Apostólici complúres, quorum præcipuè óperâ século sequenti res Christiána Lugdúni et Viennæ in Gálliis constitúta est. Tandem glorióso fine quiévit Philippus, et Hierápoli sepultus est. Caput ejus Joannes Dux Bitúrigum, auro gemmisque decorátum, donávit Ecclésiæ Parisiensi.

℟. Accessérunt quidam Gentíles ad Philippum, et rogábant eum, dicentes: Dómine, vólumus Jesum vidére. * Venit Philippus, et dicit Andréæ: Andréas rursum et Philippus dixérunt Jesu, allelúia, allelúia. ℣. Consilium pacis inter illos duos. * Venit. *Joan.* 12. *Zach.* 6.

LECTIO III.

JACOBUS, frater Dómini, cognomento Justus, de útero matris sanctus fuit, ut ait sanctus Hegesippus: vinum et síceram non bibit; carne abstínuit: nunquam tonsus est, nec unguento nec bálneo usus. Huic soli in sancta licébat ingredi: líneâ veste, non láneâ, induebátur: ei assidúitas orandi ita callum génibus obdúxerat, ut caméli pellem durítie imitarentur. Eum post Christi Ascensiónem Apóstoli Jerosolymórum Epíscopum creavérunt; ad quem étiam Petrus misit, qui nuntiáret se è cárcere ab Angelo eductum. Is nonaginta sex annos natus, cùm triginta annis illi Ecclésiæ sanctíssimè præfuisset, Christum Dei Fílium constantíssimè prædicans, à Judæis lapídibus primùm ap-

pétitur; mox in altíssimum templi locum adductus, inde præcipitátus est. Qui, confractis crúribus, jacens semivívus, manus tendébat ad cœlum, Deumque pro illórum salúte precabátur his verbis: Ignosce eis, Dómine, quia nésciunt quid fáciunt. Quâ in oratióne, fullónis fuste cápite gráviter percusso, ánimam Deo réddidit séptimo Nerónis anno; et juxta templum, ubi præcipitátus fúerat, sepultus est. Tradit Joséphus, tantæ eum sanctitátis fuisse, et celebritátis in pópulo, ut propter ejus necem créditum sit subversam esse Jerosólymam. Unam scripsit Epístolam, quæ de septem Cathólicis est. Ejus cáthedra, prióribus Ecclésiæ séculis, magno in honóre Jerosólymis est hábita.

℟. Etsi cognóvimus secundùm carnem Christum; sed nunc jam non nóvimus: * Vétera transiérunt; ómnia autem ex Deo, qui † Nos reconciliávit sibi per Christum, et dedit nobis ministérium reconciliatiónis, allelúia, allel. ℣. Dicit Dóminus: Ecce ego fácio nova, et nunc orientur; útique cognoscétis ea. * Vétera. Glória Patri. † Nos reconciliávit sibi per Christum, et dedit nobis. 2 *Cor.* 5. *Is.* 43.

℣ *Sacerd.* Exultent et læténtur qui quærunt te, ℟. Et dicant semper: Magnificétur Dóminus. *Ps.* 69.

## AD LAUDES.

*Ant.* 7. a. Dicit Jesu Philippus: Dómine, ostende nobis Patrem, et súfficit nobis, allelúia. *Joan.* 14.

*Ant.* 3. c. Dicit Philippo Jesus; Tanto témpore vobiscum sum, et non cognovistis me? Philippe, qui videt me, videt et Patrem, allelúia. *Joan.* 14.

*Ant.* 6. F. Quómodo tu dicis: Ostende nobis Patrem? Non créditis quia ego in Patre, et Pater in me est? allelúia. *Joan.* 14.

*Canticum*, Ponam, *ut in Festo S. Marci*, 471.

*Ant.* 4. *D.* Jesus occurrit muliéribus, et ait: Nolíte timére; ite, nuntiáte frátribus meis, ut eant in Galilæam; ibi me vidébunt, allelúia. *Matth.* 28.

*Ant.* 8. c. Visus est plus quàm quingentis frátribus simul: deinde visus est Jacóbo, deinde Apóstolis ómnibus, allelúia. 1 *Cor.* 15.

CAPITULUM. *Act.* 1.

PRÆBUIT Jesus seipsum vivum Apóstolis post passiónem suam in multis argumentis, per dies quadraginta appárens eis, et loquens de regno Dei: et convescens, præcépit eis ab Jerosólymis ne discéderent, sed expectárent promissiónem Patris.

HYMNUS. *S. V.*

REGNIS patérnis débitus
Cruóre quæ pandit suo,
Vos propter, hospes éxteras
Adhuc colit terras Deus.
Ignóta tardis méntibus,

Patére dat mystéria,
Per mille præsagas sui
Se détegens imágines.

En immolandus à Patre,
Suum ferens lignum puer:
En Agnus ille, sánguine
Qui tincta servat límina.

Amóris ô quæ pígnora!
Vobis oves credit suas:
Ligáre dat, dat sólvere,
Quæ solvit et ligat Deus.

Uni sit et trino Deo
Supréma laus, summum decus,
De nocte qui nos ad suæ
Lumen vocávit glóriæ. Amen.

℣. Memóriam abundántiæ suavitátis tuæ eructábunt; ℟. Et justítiâ tuâ exultábunt. *Ps.* 144.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 1. J. Apéruit illis sensum, ut intellígerent Scriptúras; et dixit eis: Sic oportébat Christum pati, et resúrgere à mórtuis: vos autem testes estis horum, allelúia. *Luc.* 24.

Orémus. Oratio.

Deus, qui nos ánnuâ Apostolórum tuórum Philippi et Jacóbi solemnitáte lætíficas; da nobis ipsórum précibus, in Unigéniti tui passióne et resurrectióne consórtium: ut parátam in domo tua mansiónem hæreditáte consequámur; Per eumdem.

AD PRIMAM.

*Ant.* 7. a. Dicit Jesus.

AD TERTIAM.

*Ant.* 3. c. Dicit.

Capitulum. 1 *Cor.* 2.

Oculus non vidit, nec auris audívit, nec in cor hóminis ascendit, quæ præparávit Deus iis qui díligunt illum: nobis autem revelávit Deus per Spíritum suum; Spíritus enim ómnia scrutátur, étiam profunda Dei.

℟ *br.* Hæc est generátio * quæréntium eum, *Allelúia, allelúia. Hæc est. ℣. Quæréntium* fáciem Dei Jacob, *Allelúia. Glória Patri. Hæc est. *Ps.* 23.

℣. Sicut óculi servórum in mánibus dominórum suórum, ℟. Ita óculi nostri ad Dóminum Deum nostrum. *Ps.* 122.

AD SEXTAM.

*Ant.* 6. F. Quómodo.

Capitulum. *Joan.* 5.

Scimus quóniam Fílius Dei venit, et dedit nobis sensum, ut cognoscámus verum Deum, et simus in vero Fílio ejus. Hic est verus Deus, et vita æterna.

℟ *br.* Credidérunt * verbis ejus, * Allelúia, allel. Credidérunt. ℣. Et laudavérunt* laudem ejus, * Allelúia. Glória. Credidérunt. *Ps.* 105.

℣. Annuntiavérunt ópera Dei, ℟. Et facta ejus intellexérunt. *Ps.* 63.

AD NONAM.

*Ant.* 8. c. Visus est.

Capitulum. *Act.* 10.

Præcepit nobis prædicáre pópulo, et testificári, quia ipse est qui constitútus est à Deo judex vivórum et mortuórum.

℟ *br.* Confitébimur tibi, * Deus, *Allelúia, allel. Confitébimur, ℣. Narrábimus *

mirabília tua, *Allelúia. Glória. Confitébimur. *Ps.* 74.

℣. Exultet terra à fácie Dómini, ℟. Quóniam venit judicáre terram. *Ps.* 95.

AD II VESPERAS.

*Ant.* 1. g. Jésus assumptus est, et ascendérunt (discípuli) ubi manébant Petrus et Joannes, Jacóbus et Andréas, Philippus et Jacóbus Alphæi, allelúia. *Act.* 1.

*Ant.* 2. D. Hi omnes erant perseverantes unanímiter in oratióne cum frátribus Jesu; et repléti sunt omnes Spíritu sancto, allelúia. *Act.* 1 *et* 2.

*Ant.* 3. à. Quidam de Judæa docébant fratres: Quia nisi circumcidámini, non potestis salvári; convenerúntque Apóstoli, allel. *Act.* 15.

*Ant.* 7. *d.* Cùm magna conquisítio fieret, respondit Jacóbus: Deus visitávit súmere ex Géntibus pópulum nómini suo; et huic concordant verba Prophetárum, allelúia. *Act.* 15.

*Ant.* 5. C. Notum à século est Dómino opus suum: propter quod ego júdico non inquietári eos qui ex Géntibus convertuntur ad Deum, allelúia. *Act.* 15.

CAPITULUM. *Ephes.* 3.

ALIIS generatiónibus non est ágnitum fíliis hóminum, sicuti nunc revelátum est sanctis Apóstolis ejus, et Prophétis in Spíritu: Gentes esse cohærédes, et concorporáles, et compartícipes promissiónis ejus in Christo Jesu per Evangélium.

HYMNUS. *S. V.*

NATUS Parenti rédditus
Non vos amícos déseret:
Sub imbre lapsum flámmeo
Infundet in vos Spíritum.

Hausto repléti Númine,
Terras in omnes líberi,
Christum tubis cœléstibus,
Christum Deum vulgábitis.

Non jam tenébit ámpliùs
Formído mortis ábditos;
Aperta non euntibus
Addent moras perícula.

Vos ante Reges fórtiter
Spernétis armátas neces:
Hæc nempe pro Christo mori
Supréma vobis glória.

ORATE, firma sit fides,
Et certa se spes érigat;
Illapsa nostris córdibus
Pellat timórem cáritas.

Uni sit et trino Deo
Supréma laus, summum decus,
De nocte qui nos ad suæ
Lumen vocávit glóriæ.
Amen.

℣. Annuntiavérunt justítiam ejus; ℟. Et vidérunt omnes pópuli glóriam ejus. *Ps.* 96.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 8. G. Jacóbus, et Cephas, et Joannes, qui videbantur columnæ esse, dextras dedérunt mihi et Bárnabæ societátis, ut nos in gentes, ipsi autem in circumcisiónem, allel. *Galat.* 2.

*Oratio ut suprà ad Laudes.*

*Deinde fit Commem. de sequenti: Ant.* Beátus qui excógitat. ℣. Beátus homo quem tu erudíeris, xix. *Oratio ut infrà.*

DIE 2.

## S. ATHANASII EPISCOPI,

### ET ECCLESIÆ DOCTORIS.

*Semiduplex.*

*De Communi Doctorum.*

LECTIO II.

ATHANASIUS Diáconus, ab Alexandro Epíscopo Alexandríno ductus ad Concílium Nicænum, Ariános ácriter impugnávit. Alexandro suffectus, Arium constanter ab Ecclésiæ communióne répulit; unde Eusébii Nicomediensis Epíscopi, aliorumque multórum in se ódium concitávit. Hi cum Meletiánis schismáticis inito consílio, suis calúmniis à Constantíno óptimo príncipe, sed nimium crédulo, impetrárunt ut Tréviros amandarétur, ubi à Maximíno Epíscopo honorificentíssimè exceptus est. Post óbitum Constantíni revocátus, íterum ab inimícis, tam apud Júlium Papam, quàm apud Constántium Imperatórem, est impetítus. Hujus auctoritáte coacta est Synodus apud Antiochíam, in qua depósitus est, et depósito Gregórius Cáppadox substitútus: sed à Júlio Papa in Synodo quinquaginta Episcopórum ínnocens declarátus, agente Constante Constántii germáno, in Synodo Sardicensi ex utróque império congregáta absólvitur, et sedi suæ restitúitur.

LECTIO III.

SUBLATO è vivis Constante, sex annis latére coactus est Athanásius, quòd eum Constántius íterum ab Ariánis circumvéntus ad necem quæreret. Post mortem verò Constántii Alexandríam reversus, Synodum hábuit cum Confessóribus, de recipiendis iis qui ab Ariánis decepti fúerant; tantáque prudéntiâ rem gravíssimam defíniit, ut Ecclésiam visus fúerit imminenti perículo eripuisse. Sed cùm idolórum cultóribus gravis esset, à Juliáno exagitátus, Alexandríæ delítuit, donec sedáta esset persecútio. Sub Joviáno cathólico príncipe pacíficè suam rexit Ecclésiam. Valens autem Joviáni successor, ab Eudóxio Ariáno baptizátus, Athanásium in paterno monumento quátuor menses delitéscere coégit. Tandem Alexandríam post tot labóres et tempestátes reversus, in pace quiévit; et anno episcopátûs sui quadragésimo sexto, Christi trecentésimo septuagésimo-tértio in léctulo suo mórtuus est.

Orémus. ORATIO.

PRÆSTA, quæsumus omnípotens Deus, ut excelléntiam Verbi tui, quam beátus Athanásius asséruit, et convenienter intellígere valeámus, et veráciter profitéri; Per eumdem Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum, qui tecum vivit et regnat in unitáte Spíritûs sancti Deus, per ómnia sécula seculórum.

DIE 3.

## IN FESTO INVENTIONIS SANCTÆ CRUCIS.

*Duplex-majus.*

### IN I VESPERIS.

*Ant.* 8. G. Radix Jesse, qui stat in signum populórum, ipsum gentes deprecabuntur; et erit sepulcrum ejus gloriósum, allelúja. *Is.* 11.

*Ant.* 2. D. Factus est principátus super húmerum ejus; et vocábitur nomen ejus, Deus, Fortis, allelúia. *Is.* 9.

*Ant.* 1. *g.* Levábit signum in natiónes, et congregábit prófugos Israel, allelúia. *Is.* 11.

*Ant.* 4. *D.* Dabit lignum fructum suum, et scient quia ego Dóminus, cùm contrívero caténas jugi eórum, allelúia. *Ezech.* 34.

*Ant.* 5. C. Exaltávi lignum húmile, et frondére feci lignum áridum; ego Dóminus locútus sum, et feci, allelúia. *Ezech.* 17.

CAPITULUM. *Galat.* 3.

CHRISTUS nos redémit de maledicto legis, factus pro nobis maledictum; quia scriptum est : Maledictus omnis qui pendet in ligno ; ut in géntibus benedíctio Abrahæ fíeret in Christo Jesu.

℟. Ecce levábo ad gentes manum meam, et ad pópulos exaltábo signum meum, et ásferent fílios tuos : * Erunt reges nutrítii tui, Sion, et regínæ nutríces tuæ, dicit Dóminus, † Allelúia, allelúia. ℣. Lucerna civitátis est Agnus, et ambulábunt gentes in lúmine ejus : et reges terræ ásferent glóriam suam, et honórem in illam. * Erunt reges. Glória Patri. † Allelúia. *Is.* 49. *Apoc.* 21.

HYMNUS. *S. V.*

TELLUS, tot annos quid tegis
Nostræ salútis pígnora?
Crux monte toto quæritur,
Ultro tuos pandas sinus.

Quid, dura fossóris manus,
Scrutáris alta víscera?
Celáre lignum sit pudor,
Quo nostra surgit glória.

EN illa gemma pérdita,
Inventa tot labóribus :
En qui latébat, érutus
Thesaurus agro pródiit.

Regína quæsítam Crucem,
Monstrante Christo, répperit :
Oblíta fastus régios,
Sceptro repertam prætulit.

CRUX sancta, Christi córporis
Virtus salúbrem te facit :
Contingit ut te mórtuus,
Vitæ prióri rédditur.

¶ Qui per Crucem nos líberas,
Jesu, tibi sit glória,
Cum Patre, cumque Spíritu,
In sempiterna sécula.
Amen.

℣. Notam fecisti in pópulis virtútem tuam : ℟. Redemisti in bráchio tuo pópulum tuum. *Ps.* 76.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 3. a. Sic scriptum est, et sic oportébat Christum pati, et resúrgere à mórtuis tértiâ die, et prædicári in nómine ejus pœniténtiam et remissiónem peccatórum in omnes gentes, allelúia. *Luc.* 24.

*Oratio ut infrà ad Laudes.*

*Fit Commem. S. Athanasii, Ant.* Qui docti. ℣. Beátus vir, xxiij. *Oratio ut suprà.*

AD COMPLET. *post strophen* Da, Christe, *Doxolog.* ¶ Qui per Crucem, *ut suprà.*

AD NOCTURNUM.

*Invit.* Jesum qui crucifixus est, * Veníte, adorémus, allelúia. *Matth.* 28.

HYMNUS. *S. V.*

SIGNUM novi Crux fœderis,
Crux orbis arca náufragi,
Cùm jam perímus, nos ratis
Portus refers in pátrios.

Telis rubentem flámmeis
Ultóris exarmas manum:
Placátur, ut te réspicit,
Iras et oblivíscitur.

LETALE si vulnus ferat
Infernus anguis mórsibus,
Læsi simul te víderint,
Repente tu medéberis.

Ara sub illa par Deo
Se consecrávit hóstia:
Hâc sede læsum Fílius
Placávit orátor Patrem.

Crux sancta, Crux amábilis,
Crux tincta Christi sánguine,
Hauríre da nos lárgiùs
Vitam, Dei de fúnere.

Qui per Crucem nos líberas
Jesu, tibi sit glória,
Cum Patre, cumque Spíritu,
In sempiterna sécula.
Amen.

*Ant. sola* 4. A. Cùm exaltavéritis Fílium hóminis, tunc cognoscétis quia ego sum, allelúia. *Joan.* 8.

℣. Exaltáre, Dómine, in virtúte tua: ℟. Cantábimus, et psallémus virtútes tuas. *Ps.* 20.

*Lectio j de Scriptura occurrente; è tribus fit una.*

℟. Nunc judícium est mundi, nunc princeps hujus mundi ejiciétur forràs; * Et ego si exaltátus fúero à terra, ómnia traham ad meipsum, allelúia, allelúia. ℣. Locútus est Dóminus ad Móysen: Fac serpentem æneum, et pone eum pro signo; qui percussus aspéxerit eum, vivet. * Et. *Joan.* 12. *Num.* 21.

LECTIO II.

Ex Epístola sancti Paulíni Epíscopi ad Sevérum.

*Epist.* 31.

HELENA regína venerábilis, ut venit Jerosólymam, Crucem Dómini studiosíssimè inquírere adorsa est. De loco tantùm passiónis cértior fieri stúduit. Jussit íllico, urgente sine dúbio conceptæ revelatiónis instinctu, in ipsum locum óperam fossiónis accingi. Paratáque mox cívium páriter et militári manu, brevì labórem istíus moli-

tiónis hausit; et contra spem ómnium, sed secundùm ipsíus tantùm Regínæ fidem, altâ egestióne reserátis terræ sínibus, ábditæ Crucis arcána patuérunt. Sed cùm tres páriter cruces, ut quondam fixæ Dómino et latrónibus stéterant, repertæ fuissent, gratulátio repertárum cœpit ánxiâ dubitatióne confundi, justo piórum metu, ne fórsitan aut pro Cruce Dómini patíbulum latrónis elígerent, aut salutáre lignum pro stípite latrónis abjiciendo violárent.

℟. Sicut Móyses exaltávit serpentem in deserto, * Ita exaltári oportet Fílium hóminis; ut omnis qui credit in ipsum, non péreat, sed hábeat vitam ætérnam, allelúia, allelúia. ℣. Móyses pósuit serpentem æneum pro signo; quem cùm percussi aspícerent, sanabantur: * Ita. *Joan.* 3. *Num.* 21.

LECTIO III.

Respexit pias fidéliter æstuántium curas Dóminus; et ipsi potíssimùm quæ tam piæ sollicitúdinis princeps erat, hujus consílii lumen infúdit, ut áliquem recèns mórtuum inquíri et inferri jubéret. Nec mora: verbum factum: cadáver illátum est: depónitur: jacenti una de crúcibus admovétur, et áltera; sed reórum ligna mors sprevit. Postrémò Domínicam Crucem prodit resurréctio, et ad salutáris ligni tactum morte prófugâ funus excussum, et corpus erectum est: tremefactisque viventibus, stetit mórtuus, et funéribus, ut Lázarus quondam, vínculis expedítus, íllico inter spectatóres suos redivívus incessit. Ita, ut décuit, experimento resurrectiónis, inventa et probáta Crux Christi est; dignéque mox ámbitu consecrátur, cónditâ in loco passiónis basílicâ, quæ arcáno pósitam sacrário Crucem servat. De eádem minúta sacri ligni ad magnam fidei et benedictiónis grátiam habéri datur.

℟. Christus passus est pro nobis: * Qui peccátum non fecit, peccáta nostra ipse pértulit in córpore suo super lignum; ut peccátis mórtui, justítiæ vivámus, allelúia, allelúia. ℣. Disciplína pacis nostræ super eum, et livóre ejus sanáti sumus; * Qui. Glória Patri. * Qui. 1 *Petr.* 2. *Is.* 53.

℣ *Sacerd.* Misericórdia et véritas obviavérunt sibi: ℟. Justítia et pax osculátæ sunt. *Ps.* 84.

AD LAUDES.

*Ant.* 7. ç. Christus mórtuus est pro peccátis nostris, et resurrexit tértiâ die secundùm Scriptúras, allelúia. 1 *Cor.* 15.

*Ant.* 2. D. Delens quod adversùs nos erat chirógraphum decréti quod erat contrárium nobis, et ipsum tulit de médio, affígens illud Cruci, allelúia. *Coloss.* 2.

*Ant.* 6. F. Complácuit per

eum reconciliáre ómnia in ipsum, pacíficans per sánguinem Crucis ejus, sive quæ in terris, sive quæ in cœlis sunt, allelúia. *Coloss.* 1.

CANTICUM. *Isai.* 49.

Ecce levábo ad gentes manum meam, * et ad pópulos exaltábo signum meum.

Et áfferent fílios tuos in ulnis, * et fílias tuas super húmeros portábunt.

Et erunt reges nutrítii tui, * et regínæ nutríces tuæ :

Vultu in terram demisso adorábunt te, * et púlverem pedum tuórum lingent.

Et scies quia ego Dóminus, * super quo non confundentur qui expectant eum.

Numquid tollétur à forti præda? * aut quod captum fúerit à robusto salvum esse póterit?

Quia hæc dicit Dóminus : Equidem et captívitas à forti tollétur, * et quod ablátum fúerit à robusto salvábitur.

Eos verò qui judicavérunt te, ego judicábo; * et fílios tuos ego salvábo.

Et sciet omnis caro, quia ego Dóminus salvans te, * et redemptor tuus, Fortis Jacob.

*Ant.* 5. a. Ipse est pax nostra, solvens inimicítias in carne sua, ut reconcíliet Deo per Crucem, allelúia. *Ephes.* 2.

*Ant.* 8. G. Verbum Crucis pereúntibus quidem stultítia est : iis autem qui salvi fiunt, id est, nobis, Dei virtus est, allelúia. 1 *Cor.* 1.

CAPITULUM. 1 *Cor.* 1.

Prædicamus Christum crucifixum, Judæis quidem scándalum, Géntibus autem stultítiam; ipsis autem vocátis Judæis, atque Græcis, Christum Dei virtútem, et Dei sapiéntiam.

HYMNUS. *S. V.*

Crux, sola languórum Dei
Pendentis in te cónscia,
Ejus dolóres íntimos,
Dic verba, dic suspíria.

Clavi pedes, clavi manus
Fixére duro stípiti :
Cinctum cruentis vépribus
In te recumbébat caput.

Cum morte luctantis Dei
Legis suprémos spíritus :
Christus tuo, volens mori,
Vitam relíquit in sinu.

Tu lectus in quo nos parit,
Suggestus è quo nos docet;
Olim tremendum sóntibus
Eris tribúnal Júdicis.

¶ Qui per Crucem nos líberas,
Jesu, tibi sit glória,
Cum Patre, cumque Spíritu,
In sempiterna sécula. Amen.

℣. Dícite in géntibus quia Dóminus regnávit à ligno;
℟. Judicábit pópulos in æquitáte. *Ps.* 95.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 1. D. Parébit signum Fílii hóminis in cœlo; et vidébunt Fílium hóminis venientem in núbibus cœli cum virtúte multa et majestáte, allelúia. *Matth.* 24.

Orémus. ORATIO.

Deus, qui in præclára salutíferæ Crucis Inventióne passiónis tuæ mirácula suscita-

sti : concéde, ut vitális ligni prétio, ætérnæ vitæ suffrágia consequámur; Qui vivis.

AD HORAS, *post strophen* Da, Christe, *Doxologia,* ¶ Qui per Crucem, *ut suprà.*

AD PRIMAM.

*Ant.* 7. c. Christus.

*In* ℟ *br.* ℣. Qui surrexisti * à mórtuis. *Matth.* 27.

AD TERTIAM.

*Ant.* 2. D. Delens.

CAPITULUM. *Act.* 5.

QUEM vos interemistis suspendentes in ligno, hunc príncipem et salvatórem Deus exaltávit déxterâ suâ, ad dandam pœniténtiam Israéli, et remissiónem peccatórum.

℟ *br.* Dóminus dominórum * memor fuit nostri, *Allelúia, allel. Dóminus. ℣. Et redémit nos * ab inimícis nostris. *Allelúia. Glória Patri. Dóminus. *Ps.* 135.

℣. Dicant qui redempti sunt à Dómino, ℟. Quóniam in séculum misericórdia ejus. *Ps.* 106.

AD SEXTAM.

*Ant.* 6. F. Complácuit.

CAPITULUM. *Ephes.* 1.

IN Christo habémus redemptiónem per sánguinem ejus, remissiónem peccatórum, secundùm divítias grátiæ ejus quæ superabundávit in nobis.

℟ *br.* Apud Dóminum * misericórdia, * Allelúia, allelúia. Apud. ℣. Et copiósa * apud eum redémptio, *Allelúia. Glória. Apud.

℣. Ipse rédimet Israel ℟. Ex ómnibus iniquitátibus ejus. *Ps.* 129.

AD NONAM.

*Ant.* 8. G. Verbum Crucis.

CAPITULUM. *Philip.* 2.

HUMILIAVIT semetipsum, factus obédiens usque ad mortem, mortem autem Crucis: propter quod et Deus exaltávit illum, et donávit illi nomen quod est super omne nomen.

℟ *br.* Minuisti eum * paulò minùs ab Angelis, * Allelúia, allelúia. Minuisti. ℣. Glória et honóre * coronasti eum. *Allelúia. Glória Patri. Minuisti. *Ps.* 8.

℣. De torrente in via bibet; ℟. Proptérea exaltábit caput. *Ps.* 109.

AD II VESPERAS.

*Ant.* 4. E. Christus crucifixus est ex infirmitáte, sed vivit ex virtúte Dei, allelúia. 2 *Cor.* 13.

*Ant.* 6. F. Nos infirmi sumus in illo; sed vivémus cum eo ex virtúte Dei, allelúia. 2 *Cor.* 13.

*Ant.* 2. D. Vetus homo noster simul crucifixus est, ut destruátur corpus peccáti, et ultrà non serviámus peccáto, allelúia. *Rom.* 6.

*Ant.* 1. D. Si complantáti facti sumus similitúdini mortis ejus, simul et resurrectiónis érimus, allelúia. *Rom.* 6.

*Ant.* 5. C. Si commórtui sumus, et convivémus: si sustinébimus, et conregnábimus, allelúia. 2 *Tim.* 2.

CAPITULUM. 1. *Petr.* 1.

NON corruptibílibus auro vel argento redempti estis de vana vestra conversatióne pa-

ternæ traditiónis, sed pretióso sánguine quasi Agni immaculáti Christi, et incontamináti.

*Hymnus,* Signum, 489.

℣. Omnis terra adóret te, et psallat tibi : ℟. Psalmum dicat nómini tuo. *Ps.* 65.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 7. G. Dignus est Agnus, qui occísus est, accípere virtútem, et sapiéntiam, et fortitúdinem, et honórem, et glóriam, et benedictiónem, allel. *Apoc.* 5.

*Oratio ut suprà ad Laudes.*

*Fit Commem. de sequenti.*

*Ant.* Exultávit. ℣. Averte, xlvj. *Oratio, ut infrà.*

DIE 4.

## SANCTÆ MONICÆ,

VIDUÆ. *Simplex.*

*De Comm. SS. Mulierum.*

LECTIO III.

MONICA, sancti Augustíni dupliciter mater, quia eum et mundo et cœlo péperit, Patrícium cónjugem, cui velut dómino semper servíerat, extrémo ejus vitæ témpore ad Christi fidem adduxit. Lapso in Manichæórum hæresim fílio, cùm pro ejus conversióne multis lácrymis Deum precarétur, audívit à quodam Epíscopo : Fíeri non potest ut fílius istárum lacrymárum péreat. Terrâ maríque illum secúta, Medioláni innótuit Ambrósio, qui Augustíno gratulátus est quòd eam matrem habéret. Ibi cùm ad memórias Sanctórum, sicut in Africa solébat, pultes cum pane et mero attulisset, atque ab ostiário prohiberétur; ubi hoc Epíscopum vetuisse cognóvit, tam piè obsecúta est, ut ipse mirarétur Augustínus quod tam fácilè accusátrix pótiùs consuetúdinis suæ, quàm disceptátrix illíus prohibitiónis effecta fuisset. Rédiens in Africam cum Augustíno, qui, ejurátâ hæresi, ab Ambrósio baptizátus fúerat; cùm ad Ostia Tiberína constitisset; sic fílium est allocúta : Fili, nullâ jam re delector in hac vita; quid hic fáciam adhuc, et cur hic sim néscio, jam consumptâ spe hujus séculi : unum erat propter quod in hac vita aliquántulum immorári cupiébam; ut te Christiánum Cathólicum vidérem, priusquam mórerer : cumulátiùs hoc mihi Deus meus præstitit, ut te étiam, contemptâ felicitáte terrénâ, servum ejus vídeam. Quinto pòst die in febrem íncidit; et astantem íntuens Augustínum cum fratre ejus Navígio: Ponétis hic, inquit, matrem vestram; illud autem vos rogo, ut ad altáre Dómini meminéritis meî. Die nono ægritúdinis suæ, ætátis anno quinquagésimo sexto, ánimam Deo réddidit. Tum Evódius, succinente totâ domo, cantáre cœpit Psalmum, Misericórdiam et judícium cantábo tibi, Dómine. Juxta sepulcrum pósito cadávere, priusquam deponerétur, oblátum est pro ea, ut refert

Augustínus, sacrifícium prétii nostri Deo ad ejus altáre, cui ipsa nullíus diéi prætermissióne servíerat, et unde nóverat dispensári víctimam sanctam quâ delétum est chirógraphum contrárium nobis.

Orémus. Oratio.

Deus, mœréntium consolátor, et in te sperántium salus, qui beátæ Mónicæ pias lácrymas in conversióne fílii sui Augustíni misericórditer suscepísti: da nobis, utriúsque intervéntu, peccáta nostra pœniténtiæ lácrymis elúere, et grátiæ tuæ indulgéntiam inveníre; Per Dóminum.

*Commemoratio de Cruce.*

Vesperæ *de Feria : à Capitulo de sequenti.*

DIE 5.

## SANCTI PII PAPÆ V.

*Semiduplex.*

*De Communi Pontificum.*

Lectio II.

Pius in óppido Insúbriæ, quod Boschum vocant, natus, sed è Bonónia oriúndus ex nóbili Ghisleriórum famílía, cùm quatuórdecim esset annórum, Ordinem Prædicatórum ingressus est. Erat in eo admirábilis patiéntia, profunda humílitas, summa vitæ austéritas, contínuum oratiónis stúdium, et reguláris observántiæ ac divíni honóris ardentíssimus zelus. Philosóphiæ verò ac theológiæ incumbens, ádeo in iis excélluit, ut illas docendi múnus magna cum laude per multos annos exercúerit. Sacras conciónes plúribus in locis cum ingenti auditórum fructu hábuit. A Paulo quarto, cui ob exímias virtútes caríssimus erat, ad Nepesínum et Sutrínum episcopátum promótus, et post biénnium inter Románæ Ecclésiæ Presbyteros Cardináles ascriptus fuit. Tum ad Ecclésiam Montis Regális in Subalpínis à Pio quarto translátus, cùm plures in eam abúsus irrepsisse cognovisset, totam diœcésim lustrávit, rebúsque compósitis, Romam reversus, gravíssimis expediendis negótiis applicátus, quod justum erat, apostólicâ libertáte et constántiâ decernébat.

Lectio III.

Mortuo autem Pio quarto præter ómnium expectatiónem electus Póntifex, nihil in vitæ ratióne, excepto exterióri hábitu, immutávit. Fuit in eo religiónis propagandæ perpétuum stúdium, in ecclesiástica disciplína restituenda indefessus labor, in extirpandis erróribus assídua vigilántia, in sublevandis egéntium necessitátibus indeficiens beneficéntia, in Sedis Apostólicæ júribus vindicandis robur invictum. Selímum Turcárum tyrannum, multis elátum victóriis, totamque Európam subígere moliéntem, ingenti comparátâ classe, ad Echínadas ínsulas, non tam armis, quàm fusis

ad Deum précibus, devicit. Quam victóriam eâ ipsâ horâ quâ obtenta fuit, Deo revelante, cognóvit, suisque familiáribus indicávit. Dum verò novam in ipsos Turcas expeditiónem moliréłur, in gravem morbum incidit, et acerbíssimis dolóribus patientíssimè tolerátis, ad extréma devéniens, cùm sacramenta de more suscepisset, ánimam Deo placidíssimè réddidit, anno millésimo quingentésimo septuagésimo-secundo, ætátis suæ sexagésimo-octávo, cùm sedisset annos sex, menses tres, dies viginti-quátuor. Corpus ejus in basilica sanctæ Mariæ ad Præsépe summâ fidélium veneratióne cólitur, multis à Deo ejus intercessióne patrátis miráculis. Quibus ritè probátis, à Clemente undécimo Pontífice máximo Sanctórum número ascriptus est.

Orémus. ORATIO.

Deus, qui ad conterendos Ecclésiæ tuæ hostes, et ad divinum cultum reparandum, beátum Pium Pontíficem máximum elígere dignátus es, fac nos ipsíus defendi præsídiis, et ita tuis inhærére obséquiis, ut ómnium hóstium superátis insídiis, perpétuâ pace lætémur; Per Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum, qui tecum vivit et regnat in unitáte Spíritûs sancti Deus, per ómnia sécula seculórum.

VESPERÆ *à Capitulo de sequenti.*

DIE 6.

## SANCTI JOANNIS APOSTOLI ANTE PORTAM LATINAM.

*Semiduplex.*

CAPITULUM. *Is.* 43.

Hæc dicit Dóminus : Noli timére, quia redémi te; meus es tu : cùm transíeris per aquas, tecum ero, et flúmina non opérient te : cum ambuláveris in igne, non comburéris; et flamma non ardébit in te.

HYMNUS. *S. V.*

Urbem Romuleam quis furor incitat?
Christi Discipulus, Cæsare júdice
Damnátus rapitur; nil venerábilis
Frontis canities movet.

In fervens olei conjicitur mare :
Nil æstus nocuit, flamma sed hóspiti
Parcit blanda suo : ceu pugil úngitur,
Hinc et fórtior éxilit.

Edicto steriles pulsus in insulas,
Exul tunc socio perfruitur Deo :
Hic ventúra videt, quæ calamo notans
Sublustri nebulâ tegit.

Sic nos Christus amet, sic doceat pati;
Discamusque mori, simus ut et necis
Sacræ participes : non aliis patet
Cœlum conditiónibus.

Patri máxima laus, máxima Fílio,
Amborumque sacro máxima Flámini:
Hæc est certa fides, fóntibus è tuis
Quam divínitus háusimus.
Amen.

℣. Impinguasti in óleo caput meum : ℟. Et calix meus inébrians quàm præclárus est. *Ps.* 22.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 3. a. Jesus ait Jacóbo et Joanni : Cálicem quem ego bibo bibétis; et baptismo quo ego baptízor baptizabímini, allelúia. *Marc.* 10.

*Oratio ut infrà ad Laudes.*

*Fit Commem. S. Pii: Ant.* Sacerdótes. ℣. Salvum, xviij. *Oratio ut suprà.*

AD NOCTURNUM.

*Invit.* Deum qui convertit luctum suórum in gáudium, * Veníte, adorémus, allelúia. *Jerem.* 31.

*Hymnus,* Urbem, *suprà.*

*Ant. sola* 8. c. Non ardébit in te flamma; quia ego Sanctus Israel, salvátor tuus : ego dilexi te, allelúia. *Is.* 43.

℣. Igne me examinasti, Dómine; ℟. Et non est inventa in me iníquitas. *Ps.* 16.

*Lectio j de Scriptura occurrente; è tribus fit una.*

℟. Nolíte timére : * Omnis qui confitébitur me coram homínibus, confitébor et ego eum coram Patre meo qui in cœlis est, allelúia, allelúia. ℣. Opera Dei reveláre et confitéri honoríficum est. * Omnis. *Matth.* 10. *Tob.* 12.

LECTIO II.

Ex libro sancti Hierónymi Presbyteri, adversùs Joviniánum. *Lib.* 1. *c.* 14.

Joannes unus ex discípulis, qui mínimus tráditur fuisse inter Apóstolos, et quem fides Christi vírginem repérerat, virgo permansit; et ídeo plus amatur à Dómino, et recumbit super pectus Jesu : et quod Petrus, qui uxórem habúerat, interrogáre non audet, illum rogat, ut interroget; et post resurrectiónem, nuntiante Maríâ Magdaléne quod Dóminus resurrexisset, uterque cucurrit ad sepulcrum; sed ille prævénit. Cùmque essent in navi, et piscarentur in lacu Genézareth, Jesus stabat in líttore; nec sciébant Apóstoli quem vidérent : solus virgo vírginem agnoscit, et dicit Petro : Dóminus est.

℟. Stetit Jesus in líttore; non tamen cognovérunt discípuli quia Jesus est. * Dixit discípulus ille quem diligébat Jesus, Petro : Dóminus est, allelúia, allelúia. ℣. Sapiéntia fácilè vidétur ab his qui díligunt eam. * Dixit discípulus. *Joan.* 21. *Sap.* 6.

LECTIO III.

Est Joannes, et Apóstolus, et Evangelista, et Prophéta : Apóstolus, quia scripsit ad Ecclésias ut magister : Evangelista, quia librum Evangélii cóndidit; quod, excepto Matthæo, álii ex duódecim Apóstoli non fecérunt : Prophéta; vidit enim in Patmos ínsula,

in qua fúerat à Domitiáno príncipe ob Dómini martyrium relegátus, Apocalypsim infiníta futurórum mystéria continentem. Refert autem Tertulliánus, quod Romæ missus in ferventis ólei dólium, púrior et vegétior exíverit quàm intráverit.

℟. Liberasti me, Deus, secundùm multitúdinem misericórdiæ nóminis tui à pressúra flammæ quæ circúmdedit me, * Et † In médio ignis non sum æstuátus, allelúia, allel. ℣. Dóminus mihi ástitit, et confortávit me, ut per me prædicátio impleátur; et liberátus sum de ore leónis, * Et. Glória. † In médio ignis non sum æstuátus, allelúia, allel. *Eccli.* 51. *Tim.* 4.

℣ *Sacerd.* Paulò minùs consummavérunt me in terra; ℟. Ego autem non derelíqui mandáta tua. *Ps.* 118.

AD LAUDES.

*Ant.* 2. D. Ego Joannes párticeps in tribulatióne, et regno, et patiéntia in Christo Jesu, allelúia. *Apoc.* 1.

*Ant.* 1. a. Fui in ínsula Patmos propter verbum Dei, et testimónium Jesu, allelúia. *Apoc.* 1.

*Ant.* 5. a. Audívi vocem magnam tanquam tubæ, dicentis: Quod vides, scribe in libro; et mitte septem Ecclésiis, allelúia. *Apoc.* 1.

*Canticum,* Ponam, *ut in Festo S. Marci,* 471.

*Ant.* 7. a. Dixit mihi Angelus: Oportet te íterum prophetáre géntibus, et pópulis, et linguis, et régibus multis, allelúia. *Apoc.* 10.

*Ant.* 6. F. Ego Joannes audívi et vidi hæc; et dicit mihi: Ne signáveris verba prophetíæ; tempus enim prope est, allelúia. *Apoc.* 22.

CAPITULUM. *Apoc.* 19.

CECIDI ante pedes Angeli, ut adorárem eum. Et dicit mihi: Vide ne féceris: conservus tuus sum, et fratrum tuórum habéntium testimónium Jesu: Deum adóra. Testimónium enim Jesu est Spíritus prophetíæ.

HYMNUS. *N. T.*

Jussu tyranni pro fide
Pulsus, Joannes, éxulas:
Fertur volátu líbero
Mens celsa supra sídera.

Illic revélat se tibi
Qui mórtuus vivit Deus,
Agnus salútis hóstia,
Et morte devictâ leo.

ARCANA te vatem docet
Regni sui mystéria:
Pandit cruóre Mártyrum
Ubíque spargendam fidem.

Uni sit et trino Deo
Supréma laus, summum decus,
De nocte qui nos ad suæ
Lumen vocávit glóriæ. Amen.

℣. In terra deserta appárui tibi, Deus meus, ℟. Ut vidérem virtútem tuam et glóriam tuam. *Ps.* 62.

*Ad* Benedíctus. *Ant.* 1. *D.* Dedit Jesus palàm fácere servis suis quæ oportet fíeri citò: et significávit mittens servo suo Joanni, qui testimónium perhíbuit verbo Dei, allelúia. *Apoc.* 1.

Orémus. Oratio.

Deus, qui cónspicis quia nos úndique mala nostra perturbant: præsta, quæsumus, ut beáti Joannis Apóstoli tui et Evangelistæ conféssio gloriósa nos prótegat; Per Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum.

AD PRIMAM.

*Ant.* 2. D. Ego Joannes.

AD TERTIAM.

*Ant.* 1. a. Fui.

Capitulum. *Eccli.* 51.

Liberasti me de perditióne, et eripuisti me de témpore iníquo; proptérea confitébor, et laudem dicam tibi, et benedícam nómini Dómini.

℟ *br.* Loquébar de testimóniis tuis * in conspectu regum, * Allelúia, allelúia. Loquébar. ℣. Et non * confundébar. * Allelúia. Glória. Loquébar. *Ps.* 118.

℣. Ecce lábia mea non prohibébo: ℟. Dómine, tu scisti. *Ps.* 39.

AD SEXTAM.

*Ant.* 5. a. Audívi.

Capitulum. *Is.* 50.

Dominus érigit mihi aurem, ut áudiam quasi magistrum. Dóminus Deus apéruit mihi aurem, ego autem non contradíco, retrorsum non ábii.

℟ *br.* Audiam quid loquátur in me * Dóminus Deus, * Allelúia, allelúia. Audiam. ℣. Quóniam loquétur pacem * in plebem suam. * Allelúia. Glória. Audiam. *Ps.* 84.

℣. Deus, docuisti me, et usque nunc pronuntiábo mirabília tua, ℟. Et usque in senectam et sénium. *Ps.* 70.

AD NONAM.

*Ant.* 6. F. Ego Joannes.

Capitulum. *Sap.* 7.

Quæcumque sunt absconsa et improvísa, dídici: ómnium enim ártifex dócuit me Sapiéntia; est enim in illa spíritus intelligéntiæ sanctus.

℟ *br.* Introíbo * in poténtias Dómini, * Allelúia, allelúia. Introíbo. ℣. Usque in altíssima * quæ fecisti magnália. * Allelúia. Glória. Introíbo. *Ps.* 70.

℣. Ecce veritátem dilexisti, Dómine; ℟. Incerta et occulta sapiéntiæ tuæ manifestasti mihi. *Ps* 50.

AD II VESPERAS.

*Ant.* 1. D. Quod vídimus óculis nostris, et manus nostræ contrectavérunt de verbo vitæ, annuntiámus vobis; ut et vos societátem habeátis nobiscum, allelúia. 1 *Joan.* 1.

*Ant.* 8. *G.* Sit vobiscum grátia, et pax à Deo Patre, et à Christo Jesu Fílio Patris, in veritáte et caritáte, allelúia. 2 *Joan.*

*Ant.* 4. d. Majórem non hábeo grátiam, quàm ut áudiam fílios meos in veritáte ambuláre, allelúia. 3 *Joan.*

*Ant.* 6. F. Qui de mundo sunt, de mundo loquuntur, et mundus eos audit: nos ex Deo sumus, allelúia. 1 *Joan.* 4.

*Ant.* 7. *d.* Qui novit Deum. audit nos: in hoc cognóscimus Spíritum veritátis, allelúia. 1 *Joan.* 4.

CAPITULUM. 1 *Joan.* 4.
QUISQUIS confessus fúerit quóniam Jesus est Fílius Dei, Deus in eo manet, et ipse in Deo: et nos cognóvimus, et credídimus caritáti quam habet Deus in nobis.

*Hymnus*, Urbem, 495.

℣. Nomen Dómini invocávi: ℟. Erípuit ánimam meam de morte. *Ps.* 114.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 5. C. In hoc cognóvimus caritátem Dei, quóniam ille ánimam suam pro nobis póşuit: et nos debémus pro frátribus ánimas pónere, allelúia. 1 *Joan.* 3.

*Oratio ut suprà ad Laudes.*

DIE 9.

# SANCTI GREGORII NAZIANZENI,

## EPISCÓPI ET ECCLESIÆ DOCTORIS.

*Semiduplex.*

*De Communi Doctorum.* *Oratio*, Omnípotens, xxij.

LECTIO II.
GREGORIUS, ob singulárem divinárum litterárum sciéntiam Theólogus appellátus, Arianzi in Cappadócia secúnda natus est, Gregório patre qui Nazianzénæ Ecclésiæ Epíscopus fuit, et Nonnâ matre quæ nondum in lucem éditum Deo consecrávit. Adoléscens, Cæsaréam primùm, deinde Alexandríam, hinc Athénas, discendi stúdio perrexit; ubi amicítiam iniit cum Basílio, et ab Atheniénsibus eloquéntiæ professor est designátus. In pátriam reversus anno ætátis trigésimo, baptizátus est. Tum Présbyter à patre invítus licet creátus, mox, ne ab eódem Epíscopus consecrarétur, fugit in Ponti solitúdinem, ubi cum Basílio monásticæ vitæ institúta cóndidit. Imperante Juliáno, Nazianzum venit, ubi patrem nonagenárium, qui deceptus ab Ariánis confessióni Ariminensi subscrípserat, addúxit ut subscriptiónem revocáret, eumque Mónachis, et magnæ gregis parti quæ ab ipso descíverat, reconciliávit. Sasimórum Ecclésiæ à Basílio præfectus, ne causa esset dissídii Basílium inter et Anthimum Tyanensem Epíscopum de Sasimórum óppido, episcopátu cessit; et postquam aliquándiu in nosocómio ægrótis ministrasset, Nazianzum in auxílium patris eâ conditióne venit, ut illo vitâ functo recéderet.

LECTIO III.
CONSTANTINOPOLIM ad restaurandam hujus civitátis ecclésiam missus, Ariános et Apollinaristas expugnávit: multísque ab hæresi ad fidem revocátis, lapídibus ob fidem Trinitátis appetítus, orat pro persecutóribus; et ut seditiósus tráhitur ad judícium, sed absólvitur. Tantis perfunctum labóribus Petrus Alexandrínus Constantinopoli-

tanórum Epíscopum per epístolas instítuit: at paulò post, mutáto consílio, ad eam sedem Máximum Cynicum, Clero et plebe repugnántibus, evexit. Convocátâ deinde Constantinopolitánâ Synodo, Máximus dejícitur; Gregórius verò confirmátur óperâ Melétii Antiochéni, ante adventum Timóthei Alexandríni, et Episcopórum Ægypti, aliorumque ex Macedónia: qui cùm adessent, negarentque citra suum consensum Constantinópoli dari Epíscopum potuisse, Gregórius in Concílio stúdio pacis se ábdicans, dixit: Si vobis ullo modo dissídii causa sum, Jonam Prophétam vitæ integritáte non súpero, projícite me in mare, et hæc tumúltuum procellæ conquiescent. Post hæc à Synodo discédens, cùm Nectárius ei substitútus esset, Arianzum se recépit: unde Cæsaréam profectus, in laudem Basílii nuper defuncti oratiónem fúnebrem hábuit. Dehinc Nazianzum Præsule orbátam aliquándiu administrávit; eíque Ecclésiæ ab hæresi expurgátæ præficiendum curávit Eulálium. Rus deinde secessit, ubi mónachi vitam agens, gravíssimas carnis tentatiónes oratiónibus, jejúniis ac vigíliis superávit. Demum, Theodósio imperante, decessit; multis super ægros et energúmenos patrátis in vita miráculis.

DIE 11.

## SANCTI MAMERTI, EPISCOPI. *Simplex.*

*De Communi Pontificum.*

LECTIO III.

Mamertus Hílari Papæ tempóribus circa annum quadringentésimum sexagésimum-secundum Viennensis epíscopus, ipsâ resurrectiónis Domínicæ vigíliâ, deflagrante regális palátii arce, cùm cives facultátibus suis domibusque metuentes ex ecclésia discessissent, ipse solus in ea remansit, et lácrymis et oratiónibus incéndium extínguere méruit. Sed jam ántea ferè per anni spátium frequentes terræ motus plures ejusdem civitátis domos et basílicas concússerant, insóliti quoque sónitus nocturni, et lupi, ursi, et cervi per urbem oberrantes exitiále quiddam ac ferále minitabantur. Quæ flagella ut avérteret, eádem nocte, cívibus post extinctum incéndium ad ecclésiam reversis, ánimo concépit institúere Litánias usitátis sanctióres. Has póstea indixit tríduo ante Ascensiónem celebrandas in jejúniis, compunctióne cordis et eleemósynis, ad quas universis fidélibus concurréntibus, coorta cessávit calámitas. Eas supplicatiónes mox totâ Gálliâ præscriptas et observátas, Roma ipsa

Leónis Papæ tértii auctoritáte amplexa est.

Orémus. ORATIO.

CLAMANTES ad te, quæsumus Dómine, dignanter exaudi: ut sicut ad preces beáti Pontíficis tui Mamerti pópulo in afflictióne pósito pepercisti; ita et nobis, ejus intercessióne, in omni tribulatióne succurras; Per Dóminum.

*Commemoratio de Cruce.*

DIE 16.

## SANCTI HONORATI,

EPISCOPI. *Simplex.*

*De Communi Pontificum.*

LECTIO III.

HONORATUS, in vico qui Portus ad Suminam dictus est illústribus natus paréntibus, post mortem Beáti suscépit episcopátum Ambianensem, regnante Childeberto. Sanctórum Fusciáni, Victoríci et Gentiáni córpora, tértio ab urbe milliário inventa, in basílicam cathedrálem tránstulit. Cùm autem apud Portum óptimi Pontíficis partes adimpléret, in médio labórum cursu ereptus est, et ibi sepultus. Quo ex loco licèt póstea translátus fúerit ad majórem ecclésiam, eò tamen non désinunt peregríni súpplices concúrrere.

Orémus. ORATIO.

PRÆSTA, quæsumus omnípotens Deus, ut ad te toto corde confugientes, intercedente beáto Honoráto Pontífice, pietátis tuæ indulgéntiam consequámur; Per Dóminum.

*Commemoratio de Cruce.*

DIE 19.

## SANCTI YVONIS,

PRESBYTERI. *Semiduplex.*

*De Communi Presbyterorum.*

LECTIO II.

YVO in diœcési Trecorensi nobílibus paréntibus natus, Lutétiæ Parisiórum, deinde Auréliæ litteris operam dedit. Ibi, ut inter lúbricos adolescéntiæ ímpetus, castam in casto córpore mentem serváret, à vino et cárnibus cœpit abstinére, idque per totum vitæ tempus, pane sæpius et aquâ contentus, observávit. Judex ecclesiásticus ab Archidiácono Rhedonensi primùm; tum à duóbus Episcopis Trecorénsibus constitútus; ut spirituálibus exercítiis, et caritátis officiis totum se daret, munus abdicávit, unamque paróchiam per octo annos, álteram per annos decem sanctíssimè rexit. Singulári in páuperes, víduas, et órphanos affectu enítuit. Oratióni et verbi Dei prædicatióni vacábat assíduè. Tanta in eo erat dicendi vis, ut ipse Spíritus sanctus loquenti verba suggérere viderétur. Miráculis clarus obdormívit in Dómino, anno ætátis cir-

citer quinquagésimo; et post annos quátuor suprà quadraginta à Clemente sexto, instante Philippo Valésio, inter sanctos solémniter est relátus, anno Dómini millésimo trecentésimo quadragésimo-séptimo. Caput ejus asservátur in ecclésia olim cathédrali civitátis Trecorensis, ubi religiósè cólitur.

DE SANCTO CÆLESTINO

LECTIO III.

Cælestinus quintus, Petrus de Muróne ante pontificátum appellátus, piis paréntibus ex Apúlia oriundus, à téneris annis deserta pétiit. Tanta fuit ejus vitæ aspéritas, ut dies ferè noctesque ánimum oratiónibus et legendo Psaltério inténderet; et jejúniis, labóre mánuum ac cilício, adhíbitâ étiam caténâ férrea, corpus domáret. Cumque multi ad eum, tantæ sanctitátis famâ permóti, conflúerent, congregatiónem Cœlestinórum sub régula sancti Benedicti, statútis étiam arctióribus ádditis, instítuit. Post mortem Nicolái quarti, cùm Sedes Apostólica biénnio et ampliùs vacasset, ad pontificátum promótus est; cui se dignitáti imparem exístimans, post sex círciter menses eam abdicávit, ut rerum divinárum contemplatióni liberiùs vacáret. Cùmque deserta repéteret, deténtus, et in custódiam missus, patiéntiæ corónam felíci morte proméruit, anno ætátis octogésimo-quarto; quem miráculis conspícuum Clemens quintus Sanctórum número ascripsit. Nec multò pòst, ejus venerátio in Ecclésiam Parisiensem tránsiit, Cælestínis vixdum post annos quinque in urbe receptis.

Orémus. ORATIO.

Deus, qui beátum Yvónem Presbyterum, paupéribus patrem, víduis patrónum, pupillis tutórem providisti: da nobis, ejus intercessióne, simili caritáte flagráre, et sic spérnere temporália, quæ tránseunt, ut consequámur ætérna; Per Dóminum.

AD LAUDES, *pro Commem. S. Cælestini Papæ, Ant.* Ego sum. ℣. Elégit, xvj.

Orémus. ORATIO.

Deus, qui beátum Cælestínum ad summi pontificátûs ápicem sublimasti; quique illum humilitáti postpónere docuisti: concéde propítius, ut ejus exemplo cuncta mundi despicientes, promissa humílibus præmia cónsequi mereámur; Per Dóminum.

DIE 24.

## SS. DONATIANI ET ROGATIANI

MARTYRUM. *Simplex.*

*De Communi plurium Martyr.*

LECTIO III.

Donatianus et Rogatiánus fratres, Nannétis in Armórica propter Christi religiónem in persecutióne Diocletiáni et Maximiáni compre-

hensi sunt : ille ætáte matúrior, ac jam baptizátus; hic júnior, et catechúmenus tantùm. Quare Donatiánus, postquam interrogátus Christiánum se coram præside conféssus est, statim convictus desertæ religiónis públicæ, in cárcerem conjícitur. Rogatiánus verò blandítiis et illécebris tentátur, ne à deórum cultu témerè recéderet, aut baptisma Christianórum expéteret. Sed, cùm Præsidi in utróque consentíre constanter recusáret, in eamdem custódiam cum fratre detrúsus est; qui, cùm illum mœstum sensisset, quod sacro baptísmate nondum tinctus in mortis discrímine versarétur, et sacerdótis fuga omnem spem illíus suscipiendi præcidisset, orávit Dóminum, ut pura fides illi baptísmatis vicem præstáret, et sacramenti grátiam sánguinis obtinéret effúsio. Quo facto, cùm ambo postrídie ante præsidem deducti essent, eódem jubente, in catasta equúlei suspensi, crudéliter laniáti sunt. Sed nihilóminus Christum intrépidè confitentes, lánceâ militári perfossi; tandem, cæsis capítibus, martyrium consummavérunt. Horum précibus Nannéticam civitátem à Barbarórum obsidióne liberátam Clodovéi regis tempóribus, scribit sanctus Gregórius Turonensis Epíscopus. Nonnullæ sanctórum Mártyrum relíquiæ etiamnum in eádem civitáte asservantur,

*Oratio*, Deus, invisíbilis fortitúdo certántium, xj.

*Commemoratio de Cruce.*

VESPERÆ *de Feria : à Capitulo de sequenti. Or. ut infrà.*

---

DIE 25.

## S. AUGUSTINI EPISCOPI, ET ANGLORUM APOSTOLI.

*Simplex.*

*De Communi Pontificum.*

LECTIO III.

Augustinus, ut ait sanctus Gregórius Magnus, fuit in monastérii régula doctus, sacræ Scriptúræ sciéntiâ replétus, bonis, auctóre Deo, opéribus præditus. Ab eódem Gregório missus est ut Anglórum genti Evangélium prædicáret. In ínsulæ partem áppulit cujus tunc rex erat Æthelbertus. Cómites hábuit Mónachos Italos et Cléricos quosdam Gallos, qui fuérunt Italórum intérpretes, et óperis adjutóres. Augustíno duce, disseminátum est cum úbere fructu Evangélii semen, annuente Rege, sed in primis favente Berthâ, Chereberti Francórum regis filiâ, Æthelberti uxóre. Ipse Rex se Christi jugo subjécit. Interim repétiit Gállias Augustínus, ut sibi plures adjúngeret comministros; et ab Arelatensi Præsule Virgílio epíscopus est ordinátus. Ipso deinde in Angliam reverso, sedem suam Cantuáriæ fixit, adeóque propagáta est per totam regiónem illam relígio, ut vel uno

die hómines ad decem míllia fúerint ab eo baptizáti. In Galliárum Ecclésiis diversæ erant ab Ecclésia Romána consuetúdines. Super his consúluit Gregórium Magnum, qui respondit : Ex síngulis quibusque Ecclésiis quæ pia, quæ religiósa, quæ Deo plácita invenisset, hæc quasi in fascículum collecta apud Anglórum mentes in consuetúdinem depóneret. Tandem, ab idolórum cultu ad Christi fidem perductâ totâ fere Angliâ, circa annum sexcentésimum-séptimum in pace defunctus est.

Orémus. ORATIO.

DEUS, cujus ineffábili misericórdiâ beátus Póntifex Augustínus in géntibus evangelizávit investigábiles divítias Christi; da nos ejus intercessióne créscere in sciéntia tua; et in omni ópere bono fructificantes, secundùm Evangélii veritátem coram te ambuláre; Per eumdem.

*Commemoratio de Cruce.*

VESPERÆ *de Feria; à Capitulo de sequenti.*

DIE 26.

## S. PHILIPPI NERII,

PRESBYTERI. *Semiduplex.*

*De Communi Presbyterorum. Oratio,* Deus, qui in Ecclésiæ tuæ decus et subsídium, beátum Philippum verendo sacerdótii, etc. xxvij.

LECTIO II.

PHILIPPUS Nérius piis paréntibus Floréntiæ natus, ampla pátrui hæreditáte dimissâ, Romam se cóntulit, ubi pœniténtiæ et pietátis quibuscumque opéribus, philosóphiæ et theológiæ stúdium summa cum laude áddidit. Anno ætátis trigésimo-sexto, ex obediéntia Présbyter ordinátus, totum se tríbuens procurandæ animárum salúti, confessiónibus audiendis ad extrémum usque diem assíduus, innúmeros prope fílios Christo péperit; atque ut verbi divíni quotidiáno pábulo, sacramentórum frequéntiâ, et áliis enutrirentur pietátis exercitatiónibus, Oratórii congregatiónem instítuit.

LECTIO III.

NULLUM est caritátis offícium quo egénos et páuperes prosecútus non fúerit; álios cibis et vestimentis refíciens, hospítio álios excípiens; modò adolescéntibus, sive ad lítteras, sive ad artes discendas necessária subministrans auxília, modò religiónem íngredi voléntibus liberáliter subvéniens. Quàm autem altas in eo radíces égerit christiána humílitas, haud dúbiè asséruit tum summa illa quâ injúrias excépit patiéntia, tum ea invincíbilis constántia, quâ ecclesiásticas dignitátes, étiam primárias, non semel ultro oblátas, recusávit. Vigíliis, jejúniis et labóribus confectus, anno Christi millésimo quingentésimo nonagésimo-quinto, postquam sacrum máximâ spíritûs exultatióne

tatióne perégit, quâ horâ ipse prædíxerat, octogenárius obdormívit in Dómino. Quem Gregórius décimus-quintus miráculis clarum in Sanctórum númerum rétulit.

DIE 28.

## SANCTI GERMANI,

### PARISIENSIS EPISCOPI.

*Duplex-minus.*

*De Communi Pontificum.*

LECTIO II.

GERMANUS, apud Æduos honestis paréntibus natus, à sancto Scopilióne propinquo suo educátus est, cum quo ad matutínas preces ecclésiam, mille passus penè distantem, quâcumque áeris intempérie adíbat. Présbyter à sancto Agrippíno ordinátus, ex mónacho per Nectárium Agrippíni successórem factus est Abbas monastérii sancti Symphoriáni Augustodunensis. Eusébio Parisiórum Epíscopo mórtuo suffectus, nihil remísit de vitæ austeritáte quam in monastério égerat. Horâ noctis tértiâ ecclésiam ingressus, non recedébat ante dilúculum, céteris de Clero per tres vigílias sibi vicissim ad psallendum succedéntibus. Ita Deo erat intentus, ut de illo semper áliquid conferret in privátis collóquiis, lectiónes sacras ad mensam adhibéret; et dum iter ágeret, cursum canónicum nudo cápite étiam inter equitandum persólveret. Mira ejus in páuperes, máximè verò in servos captivosque redimendos, beneficéntia fuit: quod ei Childebertum regem ita conciliávit, ut ex régio ærário ad pias largitiónes ingentem ei pecúniam subministráret. Cùm autem Childebertus in gravem morbum apud Cellas in pago Melodunensi incidisset, rédditâ sibi à Germáno per impositiónem mánuum sanitáte, villam ipsam donávit matri ecclésiæ Parisiensi, quæ jam tum in honórem sanctæ Maríæ dedicáta erat.

LECTIO III.

ACCERSITUS à Clotário, qui, quòd eum contempsisset, à Deo percussus fúerat, illum, admótis vestimentis suis, sanávit. Caribertum reprehendit, qui uxóris sorórem dúxerat, eíque sacris interdixit. Sigebertum, implorátâ étiam per lítteras Brunichildis uxóris óperâ, deterrére conátus est à cæde Chilperíci fratris, suisque mónitis reluctantem brevì moritúrum prædixit. Profectus ad Synodum Bituricensem, in qua Felix est ordinátus, Judæum quemdam lucrátus est, ejusque cónjugem à dæmone obsessam liberávit, quæ mox unà cum multis áliis Judæis Christiánam fidem professa est. Augustodúni, in ordinatióne Syágrii, Florentíno, qui póstea Matisconensis Epíscopus fuit, óculi usum restítuit. Parísiis cùm ad basíli-

cam sanctórum Gervásii et Protásii orandi causâ accéderet, solo crucis signo occlúsas fores apéruit. Sedit in Concílio Parisiensi tértio et quarto, et in Turonensi secundo. Aliquot ante tránsitum diébus, per notárium hæc verba, Quinto Calendas Júnias, ad lectum suum scribi vóluit; quâ die cùm obiisset, apertus est qui latébat verbórum sensus. Corpus ejus sepultum est ad sanctum Vincéntium in oratório sancti Symphoriáni; et sub Pippíno, in majórem hujus monastérii basílicam translátum.

Orémus. Oratio.

Deus, Sanctórum tuórum splendor mirábilis, qui hunc diem beáti Germáni Pontíficis depositióne consecrasti: da Ecclésiæ tuæ in ejus natalítio exultanti, ut apud misericórdiam tuam exemplis ejus protegátur et méritis; Per Dóminum.

DIE 2 JUNII.

## SS. POTHINI EPISCOPI, BLANDINÆ VIRGINIS, ET SOCIORUM MARTYRUM.

*Semiduplex.*

*De Comm. plurium Martyrum.*

Lectio II.

Ex Epístola Ecclesiárum Viennensis et Lugdunensis, ad Ecclésias Asiæ et Phrygiæ.

*Euseb. Hist. Eccl. l. 5. c. 1.*

Beatissimus Pothínus, Ecclésiæ Lugdunensis Epíscopus, nonagenário major, ob córporis infirmitátem vix spíritum trahens, sed præ cupiditáte martyrii mirâ alacritáte ánimi firmátus, ad tribúnal trahebátur. Quò perlátus, prosequéntibus ipsum magistrátibus civitátis, et universâ plebe váriis eum clamóribus impetente, tanquam ipse Christus esset, egrégium édidit testimónium. Interrogátus à præside quisnam esset Christianórum Deus, respondit: Si dignus fúeris, cognosces. Post hæc inhumánè raptátus, et innúmeris plagis affectus est; cùm ii quidem qui própiùs astábant, cálcibus et pugnis illum contumeliósè appéterent; qui verò lóngiùs distábant, quidquid ad manum erat, in ipsum conjícerent; omnes dénique gravíssimi piáculi reos se exístimárent, nisi pro sua quisque parte ei petulanter insultárent. Quippe hoc modo injúriam deórum suórum ultúros se arbitrabantur. Exinde vix adhuc spirans, in cárcerem projectus est; tandemque, post bíduum, ánimam exhalávit. Matúrus verò neóphytus, et Sanctus Diáconus Viennensis cum Blandína ancilla, et Attalo, ducti sunt ad béstias in amphitheátrum. Et Matúrus quidem ac Sanctus consuéta illic flagrórum vérbera pertulérunt, et bestiárum ipsos trahéntium morsus, ipsam postrémò férream cáthedram; cui supérpósita Mártyrum membra

cùm torrerentur, illórum nares molestíssimus nidor implébat. Hi ergo máximo certámine perfuncti, tandem juguláti sunt. Blandína autem ad palum suspensa, béstiis objecta est. Quæ cùm in crucis spéciem suspensa cernerétur, Deoque intentíssimè supplicáret, máximam alacritátem addébat certántibus; quippe qui sub soróris persónâ cérnerent illum qui pro ipsis crucifixus est. Cùmque nulla tunc béstia corpus ejus attigisset, depósita ex stípite, rursus in cárcerem conjícitur, in áliud certámen reserváta.

LECTIO III.

Attalus quoque cùm per amphitheátrum circumducerétur, præcedente eum tabella, in qua latíno sermóne scriptum erat: Hic est Attalus Christiánus; præses, postquam civem Románum eum esse cómperit, redúci in custódiam jubet, lítteris ad Cæsarem datis de his qui inclúsi tenebantur. Ineunte ígitur solemni apud nos mercátu, præses addúci jubet Mártyres ad tribúnal, tanquam in theatráli pompa eos pópulis ostentans. Cùmque illos dénuo interrogasset, quicumque cives Románi reperti sunt, cápite truncávit; réliquos trádidit béstiis. Céterùm ingens glória accessit Christo per eos qui priùs quidem negáverant, tunc verò confitebantur fidem. Quibus exámini subjectis, Alexander natióne Phryx, professióne médicus, plures jam annos morátus in Gálliis, cùm illos ad fídei confessiónem nútibus hortarétur, cunctis qui tribúnal circúmdabant, tanquam partúriens videbátur. Instans íllico præses interrogávit eum quis esset. Qui cùm Christiánum se esse dixisset, irátus judex eum ad béstias damnávit. Postrídie ígitur unà cum Attalo ingressus est: nam et hunc præses béstiis íterum tradíderat. Ambo ítaque, cùm ómnia tormentórum génera in amphitheátro sustinuissent, gládio percussi sunt. Ultimo tandem spectaculórum die, Blandína rursus illáta est, unà cum Póntico adolescente quíndecim círciter annos nato. Et Pónticus quidem cuncta supplicia generósè perpessus, emísit spíritum. Beáta verò Blandína post flagra, post béstias, post sartáginem, retículo inclúsa, tauro objecta est, à quo diu in altum jactáta, tandem et ipsa instar víctimæ juguláta est. ¶ Item hâc ipsâ die, Diocletiáno et Maximiáno in Christiános sæviéntibus, pro Christi fide cápite truncáti sunt Marcellínus Ecclésiæ Románæ Présbyter, et Petrus Exorcista, quorum laudes célebrat in cármine à se scripto sanctus Dámasus Papa, et quotídie nomen in altáris sacrifício commemorátur.

Orémus. ORATIO.

Martyrum tuórum Pothíni Pontíficis, Blandínæ Virgi-

nis, et sociórum, solémnia recensentes; súpplices te, Dómine, deprecámur, ut in caritáte radicáti et fundáti, passiónes hujus témporis, amóre illíus glóriæ quæ revelanda est in nobis, invicto ánimo sustinére valeámus; Per Dóminum.

Ad Laudes, *pro Commemor. SS. Marcellini et Petri, Ant.* Datæ. ℣. In æternum, xij.

Orémus. Oratio.

Da nobis, omnípotens Deus, inter hujus vitæ discrímina, contínuum grátiæ tuæ præsídium; qui sanctis Martyribus Marcellíno et Petro fídei tuæ constántiam, ut hostem antíquum víncerent, contulisti; Per Dóminum.

Vesperæ *de sequenti.*

---

DIE 3.

## SANCTÆ CLOTILDIS,

FRANCORUM REGINÆ.

*Duplex-minus.*

---

### IN I VESPERIS.

*Antiphonæ de Communi sanctarum Mulierum,* xlv.

Capitulum. *Ephes.* 5.

Relinquet homo patrem et matrem suam, et adhærébit uxóri suæ; et erunt duo in carne una. Sacramentum hoc magnum est; ego autem dico, in Christo et in Ecclésia.

℟. Hæc dicit Dóminus Deus: Ecce ego levábo ad gentes manum meam, et ad pópulos exaltábo signum meum; * Et † Erunt reges nutrítii tui, Sion, et regínæ nutríces tuæ, allelúia, allelúia. ℣. Ambulábunt gentes in lúmine civitátis Dei, et reges terræ áfferent glóriam suam, et honórem in illam. * Et. Glória. † Erunt. *Is.* 49. *Apocal.* 21.

Hymnus.

Thure votívo sacra templa fument;
Te decus regni canimus, Clotildis:
Te genus nostrum didicit magistrâ
Crédere Christo.

Vana dum Regem simulácra fallunt
Quæ colis verum, pia sponsa, Numen,
Cállidas hostis malè blandientis
Détegis artes.

Quos paris natos, renuente sponso,
Hos Deo reddis, melióre partu;
Sicque te prolis duplici parentem
Nómine prodis.

Cónjugis mentem tenet obstinátus
Error, et densis fruitur tenébris:
Fers diem; vulsis potióra spinis
Sémina mandas.

Caritas urget, malè contumácem
Increpas audax: hominem. Deumque
Prædicas Christum, nece qui piávit
Crímina mundi.

Macte; sperátam Deus ipse præsens
Fert opem: vinces aliquando Regem;
Et jugo Christi fera corda, subdi
Néscia, subdes.
Corda qui flectis subigisque regum,
O Deus, nostras tibi subde mentes:
Sit tibi Patri, Genitóque, sancto
Laus et Amóri. Amen.

℣. Timébunt reges terræ glóriam tuam, Dómine; ℟. Et pópulus qui creábitur laudábit Dóminum. *Ps.* 101.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 8. *G.* Tu honorificéntia pópuli nostri; quia fecisti viríliter, et confortátum est cor tuum, allelúia. *Judith* 15.

*Oratio ut infrà ad Laudes.*

AD NOCTURNUM.

*Invitat.* Regem seculórum immortálem, * Veníte, adorémus, allelúia. 1 *Tim.* 1.

*Hymnus,* Thure votívo, *ut in I Vesperis.*

*Psalmi sub sola Ant.* Benedicta es, ℣, *et* ℟℟℟, *de Communi SS. Mulierum,* xlvij.

Lectio i *de Scriptura occurrente.*

Lectio ii.

Clotildis, Chilperíci regis fília, paréntibus à pátruo Gundobaldo Burgundiónum rege necátis, Clodovéo adhuc éthnico, ab ipso Gundobaldo in cónjugem trádita est. Quæ cùm primogénitum peperisset, eum, tolerante magis quàm approbante Clodovéo, baptizári jussit. Cùm autem infantis, cui nomen impósitum fúerat Ingoméres, in albis defuncti mortem ægrè ferret Clodovéus, ac baptismo imputáret, gráviter Clotildem objurgávit, ásserens deos pátrios, ob contemptum núminis sui irátos, sibi fílium eripuisse. At illa: Deo, inquit, omnipotenti, creatóri ómnium, grátias ago, qui me non usquequáque judicávit indignam ut de útero meo génitum regno suo dignarétur ascíre. Alterum fílium Regína cùm genuisset, hunc quoque baptizári vóluit; et appellátus est Clodoméres. Qui cùm ægrotáre cœpisset, affirmante Rege fore ut idem ei quod fratri contíngeret, matris précibus convåluit.

Lectio iii.

At Regína non cessábat hortári virum, ut, abjectâ idololatríâ, Deum verum cóleret. Sed ille superstitióni Francórum adhæsit, donec in expeditióne Alamánnica inclinátam cernens suórum áciem, monitórum cónjugis memor, auxílio Christi imploráto, de hóstibus triumphávit. Cui apud Remos læta uxor occurrens, ubi órdinem rei gestæ cognóvit, advocávit sanctum Remígium, à quo Clodovéus fidem edoctus, baptizátus est, et chrismate sacro inunctus. Post mortem Clodovéi, Turónos ádiit Clotildis: ibíque ad sepulcrum sancti Martíni summâ pietáte réliquum vitæ

exégit, pernox in vigíliis, eleemósynis, aliisque piis opéribus intenta, munífica erga ecclésias et monastéria. Clodoméris in bello Burgúndico occísi fílios, nepótes suos, Theodovaldum, Guntárium et Clodoaldum apud se educávit. Tandem plena diérum, Turónis migrávit ad Dóminum; et Parísios inter psalléntium choros transláta, sepulta est à fíliis Childeberto et Clotário régibus, ad latus Clodovéi, in sacrário basílicæ sancti Petri, dein sanctæ Genovéfæ dictæ, ubi religiósè colebátur. Exeunte verò século décimo-octávo, cùm ímpii sumpsissent principátum, et bellum Deo Sanctisque ejus fácerent, ossa beátæ Regínæ, cum áliis relíquiis, eórum furóri subtracta, ne violarentur, igne cremáta sunt. Quorum sacri cíneres piæ manus collegérunt, deíndeque, transactis luctuósis tempóribus, deposuérunt Parísiis, in ecclésia parochiáli sanctórum Lupi et Ægídii, in qua nunc honoríficè asservantur.

℣ *Sacerdotal.* Tu Dóminus altíssimus super omnem terram: ℟. Nimis exaltátus es super omnes deos. *Ps.* 96.

## AD LAUDES.

*Ant.* 2. D. Múlier fortis oblectat virum suum; et annos vitæ illíus in pace implébit, allelúia. *Eccli.* 26.

*Ant.* 1. D. Sanctificátus est vir infidélis per mulíerem fidélem, allelúia. 1 *Corint.* 7.

*Ant.* 8. c. Fecit quod bonum et plácitum erat in conspectu Dei, et subvertit altária peregríni cultûs, allelúia. 2 *Paral.* 14.

CANTICUM. *Judic.* 5.

QUI sponte obtulistis ánimas vestras ad perículum, * benedícite Dómino.

Audíte, reges, áuribus percípite, príncipes: * Ego sum, ego sum quæ Dómino canam, psallam Dómino Deo Israel.

Cessavérunt fortes in Israel, et quievérunt, * donec súrgeret mater in Israel.

Nova bella elégit Dóminus, * et portas hóstium ipse subvertit.

Ubi collísi sunt currus, et hóstium suffocátus est exércitus, * ibi narrentur justítiæ Dómini, et cleméntia in fortes Israel.

Salvátæ sunt relíquiæ pópuli, * Dóminus in fórtibus dimicávit.

Venérunt reges, et pugnavérunt: * de cœlo dimicátum est contra eos.

Benedicta inter mulíeres, * et benedicátur in tabernáculo suo.

*Ant.* 7. *d.* Ubi collísi sunt currus, et hóstium suffocátus est exércitus, ibi narrentur justítiæ Dómini, et cleméntia in fortes Israel, allelúia. *Judic.* 5.

*Ant.* 3. *d.* Manum suam apéruit ínopi, et palmas suas extendit ad páuperem, allelúia. *Prov.* 31.

CAPITULUM. *Judith* 13.

BENEDICTA tu à Deo tuo in omni tabernáculo Jacob, quóniam in omni gente, quæ audíerit nomen tuum, magnificábitur super te Deus Israel.

HYMNUS.

CUNCTA qui versas, Deus alme, nutu,
Te vocat Princeps prope victus: adsis,
Et tibi totam subigas in uno
Príncipe gentem.

Annuis voto, precibusque sanctæ
Cónjugis: sternit Clodovéus hostes,
Irruit terror, fugiunt relictis
Agmina castris.

REGIUM pectus tumidum triumpho
Gaudet irrisæ Crucis in trophæo:
Arma depónit novus ille Christi
Miles ab hoste.

Quis tibi sensus fuit, ô Clotildis!
Quem diu lusit scelerátus error,
Vir sacramento melióre sanctis
Se vovet aris.

TOTA gens, per te modò Christiána,
Se tibi debet: fidei jacentis
Prisca cœlesti redivíva rore
Sémina surgant.

Corda qui flectis subigisque Regum,
O Deus! nostras tibi subde mentes:
Sit tibi Patri, Genitóque, sancto
Laus et Amóri. Amen.

℣. Tu es Deus, qui facis mirabília. ℟. Notam fecisti in pópulis virtútem tuam. *Ps.* 76.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 6. F. Cùm invocasset ómnium rectórem et salvatórem Deum, convertit Deus spíritum Regis, allelúia. *Esther* 15.

Orémus. ORATIO.

RESPICE, quæsumus Dómine, ad Francórum benignus impérium: et quibus per devótam sanctæ Clotildis instántiam donum fídei contulisti, iisdem, per ejus intercessiónem, tríbue sincérum christiánæ pietátis affectum; Per Dóminum nostrum.

AD PRIMAM.

*Ant.* 2. D. Múlier fortis.

AD TERTIAM.

*Ant.* 1. D. Sanctificátus est.

CAPITULUM. 1 *Petr.* 3.

MULIERES súbditæ sint viris suis; ut et si qui non credunt verbo, per mulíerum conversatiónem sine verbo lucrifíant, considerantes in timóre castam conversatiónem vestram.

℟. *br.* Perambulábam * in innocéntia cordis mei, * Allelúia, allelúia. Perambulábam. ℣. In médio * domûs meæ. * Allelúia. Glória Patri. Perambulábam. *Ps.* 100.

℣. Propter innocéntiam suscepisti me, Dómine. ℟. Et confirmasti me in conspectu tuo in æternum. *Ps.* 40.

## AD SEXTAM.

*Ant.* 8. c. Fecit.

CAPITULUM. 1 *Mach.* 14.

JUSTITIAM et fidem conservávit genti suæ, et exquisívit omni modo exaltáre pópulum suum: et in diébus ejus prosperátum est in mánibus ejus, ut tollerentur gentes de regióne ipsórum.

℟. *br.* Ego in justítia * apparébo conspéctui tuo, * Allelúia, allelúia. Ego. ℣. Satiábor, * cùm apparúerit glória tua. * Allelúia.* Glória. Ego. *Ps.* 16.

℣. Glória et divítiæ in domo ejus; ℟. Et justítia ejus manet in séculum séculi. *Ps.* 111.

## AD NONAM.

*Ant.* 3. d. Manum suam.

CAPITULUM. *Job.* 29.

AURIS áudiens beatificábat me, et óculus videns testimónium reddébat mihi, eo quod liberassem páuperem vociferantem, et pupillum cui non esset adjútor.

℟ *brev.* Misericórdia tua, Dómine, * ante óculos meos est, * Allelúia, allelúia. Misericórdia. ℣. Et complácui * in veritáte tua. * Allelúia. Glória. Misericórdia. *Ps.* 25.

℣. Cognóvi quia fáciet Dóminus judícium inopis, ℟. Et vindictam páuperum. *Ps.* 139.

## AD II VESPERAS.

*Antiphonæ de Communi sanctarum Mulierum*, I.

CAPITULUM. *Eccli.* 39.

COLLAUDABUNT multi sapiéntiam ejus, et usque in séculum non delébitur: non recédet memória ejus, et nomen ejus requirétur à generatióne in generatiónem.

HYMNUS.

ORBATA conjux cónjuge príncipe,
Aulam relinquit: nunc sibi réddita,
Cadúca grandi mente spernens,
Corde Deum meditátur unum.

Qui sceptra patris júraque dívidunt,
Natos potenti consilio juvat;
Si fortè peccant, filiórum
Facta piat, sibi dura, mater.

ORTOS nepótes sánguine régio
Intaminátis móribus imbuit;
Monstrat perennes militando,
Christe, tibi, cumuláre palmas.

Pro gente supplex hóstia se vovet;
Ingens voluptas pauperiem pati,
Unusque mentem tangit ardor
Opprobrio crucis ebriári.

LAUS summa Patri, súmmaque Fílio;
Sit, sancte, compar laus tibi, Spíritus,
Per quem rebelles veritáti
Súbdere amant fera colla gentes. Amen.

℣. Anima mea Dómino vivet; ℟. Et semen meum sérviet ipsi. *Ps.* 21.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 8. G. Confirmávit omnes húmiles pópuli sui, et legem exqui-

sivit : sancta glorificávit, et multiplicávit vasa sanctórum, allelúia. 1 *Mach.* 14.

*Oratio ut suprà ad Laudes.*

DIE 6.

## SANCTI NORBERTI, EPISCOPI. *Semiduplex.*

*De Communi Pontificum.*

LECTIO II.

NORBERTUS Sanctis, Clíviæ óppido, in diœcési Coloniensi, nóbili prosápiâ ortus, cùm à prima ætáte Clero nomen dedisset, statim atque idóneos annos áttigit, Subdiáconus, média in aula necdum formátis ad gravitátem ecclesiásticam móribus, ordinátus est. Sed in tempestáte deprehensus, et ictu fúlminis ex equo dejectus, toto ánimo ad Deum conversus est. Tum relictâ Imperatóris aulâ, et majóribus, quos háctenus suscípere distúlerat, Ordínibus initiátus, verbi Dei prædicatiónem ferventi zelo ággredi cœpit. De quo tamen póstea, véritus ne quid illegítimè à se præsumptum esset, quòd uno die sacros diaconátûs et presbytérii Ordines contra Cánones suscepisset, à Gelásio Papa secundo, ignorántiam confessus, véniam pétiit, et regulárem demum Evangélici múneris confirmatiónem obtínuit. Abdicátis benefíciis ecclesiásticis, quibus abundábat, et património paupéribus erogáto, austeriórem vitam amplexus est. Innúmeros hæréticos ad fidem, peccatóres ad pœniténtiam, dissidentes ad concórdiam revocávit. Cùm esset Laudúni, à Bartholomæo Epíscopo rogátus ne ab ipsíus diœcési discéderet, desertum in ea locum, qui Præmonstrátus dicebátur, sibi delégit; ex quo totus Ordo, quem ibi sub régula sancti Augustíni instítuit, nomen accépit.

LECTIO III.

SACRAMENTARIAM et Adamíticam Tanchelíni hæresim Antuérpiæ grassantem, eò vocátus, profligávit : et qui multò antè oblátum sibi Cameracensem episcopátum recusáverat, ad Magdeburgensem archiepiscopátum póstea raptus, ecclesiásticam disciplínam, præsertimque sacrórum ministrórum cœlibátum constanter propugnávit. Remis in Concílio Innocéntium secundum egrégiè adjúvit; et Romam cum áliis Epíscopis profectus, schisma Petri Leónis compressit, Innocéntio suæ sedi réddito. Exactis in pontificátu annis ferè octo, ábiit ad Dóminum anno millésimo centésimo trigésimo-quarto; hunc que Gregórius décimus-tértius, anno millésimo quingentésimo octogésimo-secundo, in Sanctórum órdinem rétulit.

Orémus. ORATIO.

DA Ecclésiæ tuæ, miséricors Deus, ut mérita sancti Epíscopi Norberti pietátem tuam pro ipsa semper exórent, et

fructum in nobis labórum ejus custódiant; Per.

### DIE 8.

## SS. MEDARDI ET GILDARDI, Episcoporum, *Commem.*

LECTIO III.

Medardus apud Salentíacum in pago Veromanduensi natus, à paréntibus piè institútus, oblátus est Veromanduensi Epíscopo, ut in Clericórum númerum ascriberétur. Crescéntibus cum ætáte méritis et doctrínâ, ad altióres gradus ascendit. Présbyter consecrátus, Veromanduórum episcopátum, multórum assíduis précibus victus, regendum suscépit; ac sedem, eo quod Augusta Veromanduórum à Vándalis et Hunnis eversa esset, Novióme in óppido munito collocávit. Interim sanctus Eleuthérius, Tornacensis Epíscopus, móritur. Post cujus exéquias, cùm Clerus et pópulus Tornacensis Medardum sibi dari Epíscopum postulassent, sancto Remígio ceterisque provínciæ Epíscopis annuéntibus, Rege et procéribus suâ auctoritáte rem promovéntibus, utriusque Ecclésiæ curam suscépit, episcopális sedis honóre utríque serváto, quamvis Tornacenses ab eo témpore usque ad Simónem, per annos círciter sexcentos, non álios quàm Noviomenses Epíscopos habúerint. Flandros, gentem tunc ferócem, convertit ad Christum. Obiit anno salútis quingentésimo quinquagésimo-sexto: eumque Clotárius summo cum honóre apud Suessiónas sepelíri jussit; et basílicam ad ejus túmulum cœpit ædificáre, quam Sigebertus fílius ejus absolvit et ornávit. Unde relíquiæ áliquot Parísios, ad sanctum Medardum in subúrbio sancti Marcelli, allátæ sunt. ¶ In eumdem diem íncidit memória sancti Gildardi, metropóleos Rotomagensis Epíscopi, qui Concilio Aurelianensi primo, anno quingentésimo undécimo, subscripsit, et annis quíndecim in episcopátu transactis, óbiit, et sepultus est in sanctæ Maríæ basílica, quæ deinde, ob frequéntia ejus mirácula, ad sanctum Gildardum dicta est.

Ad Laudes, *pro eorum Commemor. Ant. sola* Ego sum. ℣. Beátus. *Oratio*, Deus, qui beátos Pontífices, xvj.

### DIE 10.

## SANCTI LANDERICI, PARISIENSIS EPISCOPI.

*Semiduplex.*

*De Communi Pontificum.*

LECTIO II.

Landericus in episcopátu Parisiensi successor Audoberto datus est, Clodovéo secundo rege. Inter céteras quibus enítuit boni pastóris dotes, præcípuo erga páupe-

res misericórdiæ affectu commendábilis fuit. Annónæ penúriâ pópulum affligente, omnem privátam supelléctilem, ipsa étiam sacra vasa in eórum subsídium distraxit, erogátâ síngulis panis alimóniâ, aliisque ad vitam necessáriis. Tráditur et juxta cathedrálem ecclésiam sanctæ Maríæ, nosocómium primus ædificasse, illudque censu quo pótuit dotasse. Ejus jussu Marculfus in diœcési Parisiensi Mónachus, fórmulas véteres, hoc est, instrumenta statis solemnibusque verbis concepta, et antíquitus in utráque jurisdictióne, ecclesiástica nimírum et civíli, usurpári sólita, collégit, novas compósuit, easque omnes libris duóbus compléxus, illi dedicávit. Postulante Clodovéo, monastério sancti Dionysii, ut quiéti Deo serviéntium consúleret, privilégium libertátis juxta morem ætátis illíus indulsit. Demum consummátis labóribus, migrávit in cœlum, et sepultus est in basílica sancti Germáni Autissiodorensis, olim sancti Germáni Téretis nuncupáta.

LECTIO III.

SUBROGATUS est illi Chrodobertus, qui cum sancto Audoéno Rotomagensi Epíscopo, post mortem Clodovéi regis, Bathildi regínæ à consíliis fuit, et propter insignem sapiéntiam inter próceres regni summam auctoritátem hábuit. Post multos annos, Mauricius, dictus de Solíaco, Landeríci corpus in capsa lígnea cóndidit; quam vetustáte consumptam reserávit Petrus de Ordeimonte Parisiórum Epíscopus, anno millésimo quadringentésimo octávo, décimo-sexto Calendas Octóbris; reperitque in ea cum óssibus et púlvere córporis, vestimentis ac linteamínibus, schedam in hæc verba conscriptam: Hæc sunt ossa beatíssimi Landeríci Parisiensis Epíscopi, sic repósita à venerábili Mauricio Parisiensi Epíscopo, et Remígio hujus ecclésiæ Decáno, anno ab Incarnatióne Dómini millésimo centésimo septuagésimo-primo, regnante Ludovíco qui duxit exércitum in Jerúsalem, summo Pontífice Alexandro; sed et duas álias schédulas, quarum quæ vetústior et penè corrósa, hæc verba continébat: Sancti Landeríci Epíscopi. Hinc Petrus ossa duo distracta ecclésiæ parochiáli sancti Landeríci donávit. Cétera verò in capsa argéntea, præmisso benedictiónis ritu, repósuit, præséntibus Ludovíco Duce Burbónis, Prælatorumque, mílitum ac pópuli magnâ multitúdine; ipsamque clausam, ponè majus altáre, hábitâ solemni processióne, collocávit.

Orémus. ORATIO.

DEUS, qui beátum Landerícum Pontíficem tuum, misericórdiæ viscéribus implevisti: quæsumus, ut quem

páuperum patrem tuâ grátiâ effecisti, benignum pro nobis intercessórem júgiter esse largiáris; Per Dóminum.

DIE 11.

## SANCTI BARNABÆ,

GENTIUM APOSTOLI.

*Duplex-minus.*

*Pridie* AD VESPERAS, *pro ejus Commem. Ant.* Joseph, qui cognominátus est Bárnabas ab Apóstolis, cùm habéret agrum, véndidit eum, et áttulit prétium, et pósuit ante pedes Apostolórum, allelúia. *Act.* 4.

℣. Beátus qui intélligit super egénum et páuperem : ℟. In die mala liberábit eum Dóminus. *Ps.* 40.

*Oratio ut infrà ad Laudes.*

AD NOCTURNUM.

*Invit.* Christum prædicátum géntibus, * Veníte, adorémus, allelúia. 1 *Tim.* 3.

HYMNUS. *S. V.*

CŒLO datur quiéscere,
Terris relictis, Bárnaba :
Solemnis hæc affert tuis
Finem dies labóribus.

Quem propter, agro vén-dito,
Opes cadúcas déseris,
Magno rependens fénore
En fundus ipse fit tuus.

Tu sacra per jejúnia,
Tu públicas inter preces,
Jubente sancto Spíritu,
Christi creáris núntius.

Quas non adis mundi pla-gas,
Pauli labórum párticeps!
Vos unus ambo spíritus,
Vos una junxit cáritas.

QUAM vestra gens Christi fidem
Luci rebellis réppulit,
Nil hæsitantes bárbaris
Portastis illam géntibus.

Fac, Christe, nostris se tuum
Cùm lumen offert méntibus,
Amóre ne noctis suæ
Cœleste donum réspuant.

UNI sit et trino Deo
Supréma laus, summum de-cus,
De nocte qui nos ad suæ
Lumen vocávit glóriæ. Amen.

*Psalmi de Feria sub sola Ant.* 3. c. Bárnabas apprehensum Saulum duxit ad Apóstolos : et narrávit illis quómodo in via vidisset Dóminum, et quia locútus est ei, allelúia. *Act.* 9.

℣. Nimis honorificáti sunt amíci tui, Deus : ℟. Nimis confortátus est principátus eórum. *Ps.* 138.

LECTIO I *de Scriptura occurrente; è duabus fit una.*

℟. Bárnabas hortabátur omnes in propósito cordis permanére in Dómino; * Quia erat vir bonus, et plenus Spíritu sancto et fide, allelúia, allelúia. ℣. Mónita salútis dabat eis, et consolabátur eos; * Quia. *Act.* 11. *Tob.* 1.

LECTIO II.

Ex Commentário sancti Joannis Chrysóstomi in Acta Apostolórum. *Hom.* 28.

BARNABAS et Saulus ordináti simul exiérunt : et cùm venis-

sent Salamínam, prædicábant verbum Dei in metrópoli Cypri. Per annum mansérunt Antiochíæ. Oportébat illò abíre, nec semper hìc sedére. Majóribus opus habébant doctóribus. Vide quómodo Seleúciæ non moras trahant, scientes à vicína civitáte multùm utilitátis accepisse Seleucienses; sed illìc étiam festínant ad ea quæ magis urgébant. Nam ut venérunt ad metrópolim ínsulæ, Procónsulem emendáre studébant. Quod autem non ex adulatióne dicátur, Erat cum Procónsule viro prudente, ex re ipsa disce quómodo non multis sermónibus opus habúerit, quómodo volúerit ipsos audíre. Et nihil quidem ad magum dictum, donec ille occasiónem daret. Quia enim álios attendentes vidébat, id unum ille in scopo habébat, ne princeps persuaderétur. Et cur non áliud signum fecit? Quia nullum huic par erat quod inimícum cáperet. Et statim credit Proconsul; non simplíciter, sed obstupescens. Vidit enim non hìc verba dari, neque falláciis rem agi. Vide quantum doctrínæ amórem hábuit.

℟. Proconsul Sérgius Paulus, accersítis Bárnabâ et Saulo, desiderábat audíre verbum Dei; sed * Resistébat illis Elymás magus, et cécidit in eum calígo. Proconsul autem, cùm vidisset factum, crédidit, admírans super doctrína Dómini, allelúia, allelúia.

℣. Pósuit Dóminus in eis verba signórum suórum, et prodigiórum in terra. * Resistébat illis. *Act.* 13. *Ps.* 104.

LECTIO III.

RURSUS Pergen venientes prætercurrunt álias civitátes: nam ad Pisídiæ metrópolim Antiochíam festinábant. Secúti sunt autem eos multi Judæi, et pii ádvenæ, quos allocúti, persuadébant eis ut manérent in grátia Dei. Videntes autem Judæi, repléti sunt zelo, contradicentes ac blasphemantes. Hoc ipsos clarióres reddébat, quod illi contradícerent. Cum fidúcia verò loquentes Bárnabas ac Paulus, dixérunt: Vobis oportébat primùm loqui verbum Dei; sed quóniam repéllitis illud, et indignos vos judicátis æternâ vitâ, ecce convértimur ad gentes. Nec dixit, Indigni estis; sed, Indignos vos judicátis; ut non onerósus sermo esset. Quia verò repulistis illud, inquit, non nos, (non enim in nos contumélia vestra vértitur) convértimur ad gentes. Multâ plenum mansuetúdine hoc verbum. Non dicunt, Derelínquimus vos, innuentes fíeri posse ut reverterentur. Et hoc non propter vestram contuméliam factum est, sic enim præceptum est nobis. Opórtet adíre gentes: verùm hoc non à nobis, sed à vobis factum est, quod à nobis fíeri oportébat. Sic enim, inquit, præcépit nobis Dóminus: Pósui te in lucem géntium,

ut sis in salútem; hoc est, in cognitiónem quæ sit ad salútem, non simplíciter géntium, sed ómnium géntium.

℟. Repléti zelo Judæi contradicébant his quæ dicebantur, blasphemantes. * Tunc constanter Paulus et Bárnabas dixérunt: Vobis oportébat primùm loqui verbum Dei; sed quóniam repéllitis illud, et indignos vos judicátis ætérnæ vitæ, ecce convértimur ad gentes, allelúia, allelúia. ℣. Dedérunt húmerum recedentem, et cervícem suam induravérunt, nec audiérunt. * Tunc. Glória Patri. * Tunc constanter. *Act.* 13. 2 *Esdr.* 9.

℣ *Sacerd.* Euntes ibant et flebant, mittentes sémina sua: ℟. Vénient cum exultatióne, portantes manípulos suos. *Ps.* 125.

## AD LAUDES.

*Ant.* 7. d. Bárnabas et Paulus, cùm constituissent per síngulas Ecclésias Presbýteros, et orassent cum jejunatiónibus, commendavérunt eos Dómino, in quem credidérunt, allelúia. *Act.* 14.

*Ant.* 8. c. Cùm venissent Antiochíam, unde erant tráditi grátiæ Dei, in opus quod complevérunt, retulérunt quanta fecisset Deus cum illis, et quia aperuisset géntibus óstium fídei, allelúia. *Act.* 14.

*Ant.* 6. F. Descendentes quidam de Judæa, docébant: Quia nisi circumcidámini, non potestis salvári. Facta est ergo disceptátio non mínima Paulo et Bárnabæ adversùs illos, allelúia. *Act.* 15.

CANTICUM. *Is.* 66.

Ponam in géntibus signum,* et mittam ex eis, qui salváti fúerint, ad gentes in mare;

In Africam, et Lydiam tendentes sagittam; * in Itáliam, et Græciam, ad Insulas longè:

Ad eos, qui non audiérunt de me, * et non vidérunt glóriam meam.

Et annuntiábunt glóriam meam géntibus, * et addúcent omnes fratres vestros de cunctis géntibus donum Dómino, ad montem sanctum meum Jerúsalem.

Quómodo si inferant fílii Israel munus in vase mundo, * in domum Dómini.

Et assúmam ex eis in Sacerdótes, et Levítas, * dicit Dóminus.

Quia sicut cœli novi, et terra nova, quæ ego fácio stare coram me, dicit Dóminus; * sic stabit semen vestrum, et nomen vestrum.

*Ant.* 1. a. Statútum est ut ascénderent Paulus et Bárnabas ad Apóstolos: illi ergo deducti ab Ecclésia, pertransíbant narrantes conversiónem géntium, allel. *Act.* 15.

*Ant.* 4. d. Cùm venissent Jerosólymam, suscepti sunt ab Ecclésia, et ab Apóstolis, et à senióribus, annuntiantes quanta Deus fecisset cum illis, allelúia. *Act.* 15.

CAPITULUM. *Act.* 15.

Tacuit omnis multitúdo, et audiébant Bárnabam, et

Paulum narrantes quanta Deus fecisset signa et prodígia in géntibus per eos.

Hymnus. *S. V.*

Quem misit in terras Deus,
Ut morte nos servet suâ,
Amóris hic fidos sui
Vos éligit vicários.

Occísus Agnus à lupis,
Vos misit agnos ad lupos:
Mores ferínos éxuunt,
Agni repente de lupis.

Quæ victimárum cædibus
Tellus madébat ímpiis,
Vestris eam sudóribus,
Vestro piastis sánguine.

Hoc rore facta pínguior,
Quot illa fructus prótulit!
Quæ, quanta surrexit seges!
Et ista nos seges sumus.

Quam si bonus respéxeris,
Qui das rigátis créscere;
Frumenta nos cœléstibus
Matúra condes hórreis.

Uni sit et trino Deo
Supréma laus, summum decus,
De nocte qui nos ad suæ
Lumen vocávit glóriæ.
Amen.

℣. Annúntient nomen Dómini, et laudem ejus in Jerúsalem, ℟. In conveniendo pópulos in unum. *Ps.* 101.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 1. *D.* Jacóbus, Cephas et Joannes dextras dedérunt mihi et Bárnabæ societátis; ut nos in gentes, ipsi autem in circumcisiónem: tantùm ut páuperum mémores essémus, allelúia. *Gal.* 2.

Oremus. Oratio.

Deus, qui beátum Bárnabam, plenum fide et Spíritu sancto, ad opus conversiónis Géntium assúmere dignátus es: concéde propítius, ut mémores labóris et caritátis ejus, dignè Evangélio Christi, quod prædicávit, conversári mereámur; Per eumdem..... in unitáte ejusdem Spíritûs sancti Deus.

AD PRIMAM.

*Ant.* 7. d. Bárnabas.

AD TERTIAM.

*Ant.* 8. c. Cùm venissent.

Capitulum. *Rom.* 9.

Gentes quæ non sectabantur justítiam, apprehendérunt justítiam; justítiam autem quæ ex fide est. Israel verò, sectando legem justítiæ, in legem justítiæ non pervénit. Quare? Quia non ex fide, sed quasi ex opéribus.

℟ *br.* Elégit nobis Dóminus * hæreditátem suam, * Allelúia, allel. Elégit. ℣. Subjécit pópulos nobis * et gentes. * Allelúia. Glória. Elégit. *Ps.* 46.

℣. In conspectu géntium revelávit justítiam suam: ℟. Recordátus est misericórdiæ suæ. *Ps.* 97.

AD SEXTAM.

*Ant.* 6. F. Descendentes.

Capitulum. *Galat.* 2.

Subintroierunt falsi fratres exploráre libertátem nostram quam habémus in Christo Jesu, ut nos in servitútem redígerent, quibus neque ad horam céssimus subjectióne, ut véritas Evangélii permáneat apud vos.

℟ *br.* Iníquè non égimus * in testamento tuo, Dómine,

* Allelúia, allelúia. Iníquè. ℣. Et non recessit retro * cor nostrum. * Allelúia. Glória. Iníquè. *Ps.* 43.

℣. Confirmáta est super nos misericórdia Dómini. ℟. Et véritas ejus manet in ætérnum. *Ps.* 116.

AD NONAM.

*Ant.* 4. d. Cùm venissent.

CAPITULUM. 2 *Cor.* 4.

ABDICAMUS occulta dedécoris, non ambulantes in astútia, neque adulterantes verbum Dei; sed in manifestatióne veritátis commendantes nosmetipsos ad omnem consciéntiam hóminum coram Deo.

℟ *br.* In Deo * laudábimur totâ die, * Allelúia, allelúia. In Deo. ℣. Et in nómine tuo * confitébimur in séculum. * Allelúia. Glória. In Deo. *Ps.* 43.

℣. Narrantes laudes Dómini, et virtútes ejus, ℟. Et mirabília ejus quæ fecit. *Ps.* 77.

AD II VESPERAS.

*Ant.* 8. G. Plácuit Apóstolis et senióribus viros míttere Antiochíam cum Paulo et Bárnaba, scribentes per manus eórum, allelúia. *Act.* 15.

*Ant.* 3. c. Descendérunt Antiochíam; et congregátâ multitúdine, tradidérunt epístolam; quam cùm legissent, gavísi sunt super consolatióne, allelúia. *Act.* 15.

*Ant.* 7. c. Paulus et Bárnabas demorabantur Antiochíæ, docentes et evangelizantes cum áliis plúribus verbum Dómini, allelúia. *Act.* 15.

*Ant.* 6. C. Dixit ad Bárnabam Paulus: Revertentes visitémus fratres, quibus prædicávimus verbum Dómini, allelúia. *Act.* 15.

*Ant.* 2. D. Bárnabas, assumpto Marco, navigávit in Cyprum; Paulus verò, electo Silâ, perambulábat Syriam, allelúia. *Act.* 15.

CAPITULUM. 2 *Cor.* 2.

DEO grátias qui semper triumphat nos in Christo Jesu, et odórem notítiæ suæ manifestat per nos in omni loco.

*Hymnus,* Cœlo datur quiéscere, 516.

℣. Dedisti nos tanquam oves escárum; ℟. Et in géntibus dispersisti nos. *Ps.* 43.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 1. D. Bárnabas et Paulus tradidérunt ánimas suas pro nómine Dómini nostri Jesu Christi, allelúia. *Act.* 15

*Oratio,* Deus, qui beátum Bárnabam, plenum fide et Spíritu sancto, etc. *ut suprà ad Laudes.*

DIE 14.

SS. RUFINI ET VALERII,

MARTYRUM, *Commemor.*

AD LAUDES, *Ant.* Beáti qui persecutiónem patiuntur propter justítiam; quóniam ipsórum est regnum cœlórum, allelúia. *Matth.* 4.

℣. Multæ tribulatiónes jus-

tórum : ℟. Et de ómnibus his liberábit eos Dóminus. *Ps.* 33.

Orémus. ORATIO.

DEUS, qui sanctis Martyribus tuis Rufíno et Valério dedisti piæ confessiónis inter tormenta virtútem ; largíre nobis inter hujus mundi tentamenta constántiam veritátis ; ut sicut illos sanctus Spíritus roborando cœlestem provexit ad glóriam, ita nos júgiter tuâ grátiâ gubernando ad misericórdiam perdúcat ætернam ; Per Dóminum.

DIE 15.

## SS. FERREOLI ET FERRUTIONIS MARTYRUM,

*Commemoratio.*

AD LAUDES, *Ant.* Beáti. ℣. Multæ, *suprà.*

Orémus. ORATIO.

DEUS invisibilis fortitúdo certántium, adesto, quæsumus, nobis supplicántibus : ut qui hodiernâ die sanctórum Mártyrum tuórum Ferréoli et Ferrutiónis gloriósum triumphum recólimus, eórum méritis et précibus, contra spirituália nequítiæ muniámur ; Per Dóminum.

DIE 16.

## S. JOANNIS FRANCISCI REGIS, PRESBYTERI, *Commemor.*

AD LAUDES, *Ant.* Euge. ℣. Sacerdótes, xxvj. *Verna.*

Orémus. ORATIO.

DEUS, qui ad plúrimos pro salúte animárum perferendos labóres beátum Joannem Franciscum Presbyterum mirábili caritáte et invictâ patiéntiâ decorasti : concéde propítius, ut ejus exemplis instructi, et intercessiónibus adjúti, ætернæ vitæ præmia consequámur ; Per Christum.

*Pro Commemorat. SS. Cyrici et Julittæ, Ant.* Datæ sunt illis singulæ stolæ albæ ; et dictum est illis ut requiéscerent, donec compleantur conservi eórum, qui interficiendi sunt sicut et illi. *Apoc.* 6.

℣. In æternum exultábunt, ℟. Et habitátis in eis. *Ps.* 5.

Orémus. ORATIO.

PIETATEM tuam, Dómine, súpplices deprecámur : ut dum sanctórum Cyrici et Julittæ matris ejus passiónem cólimus, peccatórum véniam consequámur ; Per Dóminum nostrum.

DIE 17.

## S. AVITI ABBATIS,

*Commemoratio.*

AD LAUDES, *Ant.* Ecce ego et púeri mei, quos dedit mihi Dóminus in signum et in portentum Israel à Dómino exercítuum, qui hábitat in monte Sion, allelúia. *Is.* 8.

℣. Veníte, fílii, audíte me : ℟. Timórem Dómini docébo vos. *Ps.* 33.

Orémus. Oratio.

Deus, bonórum óperum auctor et remunerátor, qui in beáto Avíto Abbáte humilitátis et pœniténtiæ nobis exemplar ostendisti : da, quæsumus, ut angustam viam, per quam ille præcessit, fidéliter insistentes, ad cœleste regnum pervenire mereámur; Per Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum, qui tecum vivit et regnat in unitáte Spíritûs sancti Deus, per ómnia sécula seculórum.

DIE 18.

## SANCTÆ MARINÆ,

### Virginis,

*Commemoratio.*

---

Ad Laudes, *Ant.* Exultábit. ℣. Sitívit. *Oratio,* Deus, qui habitáculum, xliij.

DIE 19.

SS. MARTYRUM

## GERVASII ET PROTASII

*Commemoratio.*

---

Ad Laudes, *Ant.* Beáti. ℣. Multæ, 520.

Orémus. Oratio.

Martyrum tuórum, Dómine, Gervásii et Protásii palmas ánnuâ celebratióne venerantes, súpplices te rogámus, ut quos cœlesti glóriâ sublimasti, nobis pérpeti suffrágio concédas subvenire; Per Christum.

*Pro Commem. S. Romualdi: Ant.* Ecce ego. ℣. Veníte, 521.

Orémus. Oratio.

Da nobis, quæsumus, Deus noster, beáti Abbátis Romualdi intercessiónibus sublevári : ut per quem servis tuis perfectiónis evangélicæ documenta donasti, per eum nobis subsídia perpétuæ salútis impendas; Per Dóminum.

# COMMUNE SANCTORUM.

## PARS VERNA.

*In Festis Sanctorum, omnia quæ non habentur in Proprio, sumuntur de eo* Communi *ad quod refertur Sanctus iste, de quo fit Officium. In Quadragesima, sicubi fortè celebretur aliquod Festum Duplex-majus aut suprà, quod non extet in Proprio Sanctorum; pro Officio Nocturno recurrendum erit ad Commune Sanctorum partis Hiemalis: in hac enim parte Verna, Officium cujusque Communis ponitur duntaxat pro Tempore Paschali. Notandum insuper, quod in Quadragesima non fit de ulla Octava. In Antiphonis autem, quæ pro Commemorationibus usurpantur, omittendum* Allelúia.

*Ad* I Vesperas, *et ad* Completorium *quod eas sequitur, Psalmi dicuntur de Feria in omni Festo, cujuscumque sit ritûs. Antiphonæ Completorii propriæ, et Doxologia, dicuntur tantùm in Festis Solemnibus et suprà. Sed Doxologiæ præmittitur Strophe* Da, Christe, nos tecum mori, *(ut in Proprio Temporis Paschalis) quæ dicitur etiam ad Horas minores, nunquam verò in Vesperis, Nocturno, et Laudibus.*

Officium Nocturnum *cujuslibet Festi (quicumque sit ejus gradus) unicum duntaxat habet Nocturnum, tribus constans Psalmis, totidem Lectionibus et Responsoriis. In Solemnibus et suprà, tres Psalmi de Dominica, vel proprii, dicuntur sub tribus Antiphonis, et Lectio de Scriptura est propria. Duplicia verò et infrà unam tantùm habent Antiphonam super Psalmos feriales, prout notatur in unoquoque Communi. Lectiones de Scriptura occurrente, in Duplicibus et Semiduplicibus, contrahuntur in unam; in Simplicibus autem in duas. Lectiones ij et iij in Semiduplicibus et suprà, et iij in Simplicibus, habentur in Proprio.*

*Canticum* Te Deum, *cum ℣ Sacerdotali, dicitur in omnibus Festis, etiam Simplicibus.*

*Ad* Laudes, *in Solemnibus et suprà, Psalmi sunt de Dominica; in Duplicibus autem et infrà, dicuntur de Feria; sed post tertium Psalmum, dicitur semper Canticum appositum in unoquoque Communi. Præterea notandum, quod intra Octavas, et in Festis Simplicibus, Psalmi cum Cantico dicuntur sub unica Antiphona, quæ est quarta de Laudibus.*

*Ad* Horas, *post Psalmos, qui sunt de Dominica vel de Feria, prout dicti sunt in Laudibus, Antiphonæ Laudum usurpantur hoc ordine: prima sci-*

*licet ad Primam, secunda ad Tertiam, tertia ad Sextam, quinta ad Nonam; quarta verò prætermittitur. In Solemnibus et suprà, in Hymno inseritur Doxologia propria, quæ extat in quolibet Communi, cum Strophe* Da, Christe, *ut jam dictum est.*

*Ad* II VESPERAS, *Psalmi proprii dicuntur in Solemnibus et suprà; in Duplicibus et infrà Psalmi sunt de Feria.*

*Ad* COMPLETORIUM, *Psalmi sunt de Dominica aut de Feria, prout dicti fuerunt ad Horas. Antiphonæ propriæ et Doxologia non dicuntur, nisi in Solemnibus et suprà, et intra Octavas.*

# COMMUNE APOSTOLORUM.

¶ *Cùm Officia Apostolorum, in hac Breviarii parte, reposita sint in integro suis propriis locis, hìc tantùm habentur ea quæ in Solemnibus et suprà addenda sunt.*

*In Festo Apostoli vel Evangelistæ, quod fit ritu Solemni aut suprà,* AD NOCTURNUM *dicuntur Psalmi* Cœli enarrant, *cum sua divisione,* 38. Eructavit, 106. Omnes gentes, 32: *sub tribus Antiphonis; prima scilicet et secunda è I Vesperis Festi; tertia verò erit ea quæ ponitur pro Nocturno ejusdem Festi.*

AD HORAS, *Doxologia:*

Uni sit et trino Deo
Supréma laus, summum decus,
De nocte qui nos ad suæ
Lumen vocávit glóriæ. Amen.

## AD II VESPERAS.

*Psalmi,* Dixit Dominus, 18. Laudate pueri, 19. Credidi, 78. In convertendo, 36. Domine probasti me *cum sua divisione,* 94.

## AD COMPLETORIUM.

*Ant.* 1. a. Vos estis lux mundi: lúceat lux vestra coram homínibus, allelúia. *Matth.* 5.

*Ad Hymnum, Doxologia* Uni sit, *etc. ut suprà.*

*Ad* Nunc dimittis. *Ant.* 3. E. Vox speculatórum Sion: parávit Dóminus bráchium sanctum suum in óculis ómnium géntium, allel. *Is.* 52.]

# COMMUNE UNIUS MARTYRIS.

## IN I VESPERIS.

*Ant.* 8. G. Fortitúdo símplicis via Dómini: justus in æternum non commovébitur, allelúia. *Prov.* 10.

*Ant.* 4. E. Qui timet Dóminum, nihil trepidábit, et non pavébit: quóniam ipse est spes ejus, allel. *Eccli.* 34.

*Ant.* 3. a. Qui audit sapién-

tiam, permanébit confídens; quóniam in tentatióne ámbulat cum eo, et in primis éligit eum, allelúia. *Eccli.* 4.

*Ant.* 6. *C.* Timórem, et metum, et probatiónem indúcet super illum, donec credat ánimæ illíus; et firmábit illum, allelúia. *Eccli.* 4.

*Ant.* 1. D. In tentatióne Deus illum conservábit, et liberábit à malis; et non illidétur quasi in procella navis, allelúia. *Eccli.* 33.

CAPITULUM. *Josue* 1.

Ecce præcípio tibi: Confortáre, et esto robustus. Noli metúere, et noli timére, quóniam tecum est Dóminus Deus tuus.

¶ *In Duplicibus et suprà:*

℟. Labóra sicut bonus miles Christi Jesu; * Nam et qui certat in agóne, † Non coronátur nisi legítimè certáverit, allelúia, allelúia. ℣. Esto vir fortis, et præliáre bella Dómini; * Nam. Glória. † Non. 2 *Tim.* 2. 1 *Reg.* 18.]

HYMNUS. *S. V.*

Ex quo, salus mortálium,
Fluxit sacer Dei cruor:
Homo redemptus æmulum
Deo litávit sánguinem.

Non jam crucis Christi pudet:
Quin surgit ingens glória
Deum fatéri mórtuum,
Pro mórtuo mori Deo.

Hoc iste plenus spíritu
Ridet minas, ridet neces;
Tuáque fretus dexterâ,
Tibi, Redemptor, mílitat.

Paráta spectans præmia,
Secúrus ad pœnas volat:
Sic pugnat, ut speret mori,
Et morte mortem víncere.

Unus tot armátas manus
Stupente lassat júdice;
Et tortus ipsis, qui cadit,
Torquéntibus fit fórtior.

Da, Christe, tanti mílitis
Æquáre facta fórtia:
Da sustinére pro tuo,
Quodcumque durum, nómine.

¶ Fortem corónans mílitem,
Jesu, tibi sit glória,
Cum Patre, cumque Spíritu,
In sempiterna sécula. Amen.

℣. In Deo sperávi; ℟. Non timébo quid fáciat mihi caro. *Ps.* 55.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 8. G. Ecce Deus salvátor meus, fiduciáliter agam; et non timébo; quia fortitúdo mea et laus mea Dóminus, et factus est mihi in salútem, allel. *Is.* 12.

¶ *In Solemnibus et suprà*, AD COMPLETORIUM. *Ant.* 3. *d.* Qui séquitur me, non ámbulat in ténebris, sed habébit lumen vitæ, dicit Dóminus, allelúia. *Joan.* 8.

*Doxologia,* ¶ Fortem, *ut in I Vesperis.*

*Ad* Nunc dimittis. *Ant.* 6. C. Ego ad Dóminum aspíciam: expectábo Deum salvatórem meum, allelúia. *Mich.* 7.]

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invitat.* Deum patiéntiæ et solátii, * Veníte, adorémus, allelúia. *Rom.* 15.

HYMNUS. *S. V.*

Felix morte tuâ, qui cruciátibus

Cœlo difficilem rúmpere amas viam,
Et signáre cruóre,
Quam Christo dederas, fidem!

Pœnis victa quibus deficeret fides,
Tu pœnas avidâ mente præóccupas:
Cui non súfficit una,
Ambis innumeras neces.

Te pro lege sua magnanimum mori,
Te Christus pugilem spectat ab æthere:
Ne succúmbere possis,
Tecum prælia sústinet.

Et nos delicias, vana per ótia,
Gens infída Deo, quærimus ánxii:
Quid torpémus? inertes
Sanguis Mártyris éxcitat.

Semper máxima laus ingenito Patri:
Semper laus genito máxima Fílio:
Sacri nexus amóris,
Sit laus par tibi, Spíritus.
Amen.

---

¶ *In Solemnibus et suprà*, *Psal.* Domine, quid multiplicati sunt, 2. In Domino confido, 66. Usquequo, Domine, 51.

*Ant.* 5. a. Scio ópera tua, et labórem, et patiéntiam tuam; et quia sustinuisti propter nomen meum, et non defecisti, allelúia. *Apoc.* 2.

*Ant.* 4. d. Scient omnes quia ego dilexi te: quóniam servasti verbum patiéntiæ meæ, et ego servábo te ab hora tentatiónis, allelúia. *Apoc.* 3.

*Ant.* 3. c. Qui vícerit, *infrà.*

---

*In Duplicibus et infrà*, *Psalmi sub sola Ant.* 3. c. Qui vícerit, et custodíerit usque in finem ópera mea, dabo illi potestátem super gentes, sicut et ego accépi à Patre meo, allelúia. *Apoc.* 2.

℣. In die tribulatiónis éruam te, ℟. Et honorificábis me. *Ps.* 49.

℟ *j.* Qui volúerit ánimam suam salvam fácere, perdet eam; * Qui autem perdíderit ánimam suam propter me et Evangélium, salvam fáciet eam, allelúia, allelúia. ℣. Erit tibi ánima tua in salútem, quia in me habuisti fidúciam, ait Dóminus. * Qui autem. *Marc.* 8. *Jerem.* 39.

℟ *ij.* Esto fidélis usque ad mortem, et dabo tibi corónam vitæ: * Qui vícerit, non lædétur à morte secunda, allelúia, allelúia. ℣. Usque ad mortem certa pro justítia, et Deus expugnábit pro te inimícos tuos: * Qui vícerit. *Apoc.* 2. *Eccli.* 4.

℟ *iij.* Qui vícerit, fáciam illum columnam in templo Dei mei; * Et foràs non egrediétur ámpliùs: et † Scribam super eum nomen Dei mei, et nomen civitátis novæ Jerúsalem, allelúia, allelúia. ℣. Plantábo eum, et non turbábitur ámpliùs; nec addent fílii iniquitátis, ut afflígant eum sicut priùs. * Et. Glória. † Scribam. *Apoc.* 3. 2 *Reg.* 7.

℣ *Sacerd.* Cantábo, Dó-

mine, fortitúdinem tuam: ℟. Et exultábo mane misericórdiam tuam. *Ps.* 58.

AD LAUDES.

*Ant.* 3. à. Dóminus mecum est, quasi bellátor fortis: idcirco qui persequuntur me, cadent, et infirmi erunt, allelúia. *Jerem.* 20.

*Ant.* 1. f. Circumdedérunt me úndique, et non erat qui adjuváret: memorátus sum misericórdiæ tuæ, Dómine, quóniam éruis sustinentes te, allelúia. *Eccli.* 51.

*Ant.* 2. D. Bonus Dóminus, et confortans in die tribulatiónis, et sciens sperantes in se, allelúia. *Nahum* 1.

CANTICUM. *Eccli.* 51.

CONFITEBOR tibi, Dómine rex, * et collaudábo te Deum salvatórem meum.

Confitébor nómini tuo; * quóniam adjútor et protector factus es mihi,

Et liberasti corpus meum à perditióne, à láqueo linguæ iníquæ, et à lábiis operántium mendácium; * et in conspectu astántium factus es mihi adjútor.

Et liberasti me secundùm multitúdinem misericórdiæ nóminis tui, * à rugiéntibus, præparátis ad escam,

De mánibus quæréntium ánimam meam, * et de portis tribulatiónum, quæ circumdedérunt me.

*Ant.* 4. A. Cantáte Dómino, laudáte Dóminum; quia liberávit ánimam páuperis de manu malórum, allelúia. *Jerem.* 20.

*Ant.* 7. d. Eripuisti me de témpore iníquo; propterea confitébor, et laudem dicam tibi, et benedícam nómini Dómini, allelúia. *Eccli.* 51.

CAPITULUM. *Apoc.* 3.

QUI vícerit, vestiétur vestimentis albis: et non delébo nomen ejus de libro vitæ: et confitébor nomen ejus coram Patre meo, et coram Angelis ejus.

HYMNUS. *S. V.*

JAM non te lacerant carnificum manus,
Inter qui recubas cœlituum choros:
Nunc pro cárcere cæco
Fulgentes habitas domos.

Non jam vincla manus, non cohibent pedes;
Tu liber superûm regna perámbulas:
Quot plagis laniátus,
Cœlo tot radiis nites.

Nec te dira fames, nec sitis ampliùs,
Nec probrósa premit te modò núditas:
Nunc te lúmine puro
Pascit Christus et índuit.

Sic tu Martyribus dexter ades, Deus,
Ut quos mors perimit, glória víndicet;
Confundisque tyrannum,
Dum quos déprimit, élevas.

SEMPER máxima laus ingenito Patri:
Semper laus genito máxima Fílio:
Sacri nexus amóris
Sit laus par tibi, Spíritus.
Amen.

℣. Adjútor meus, tibi

psallam; ℟. Quia Deus susceptor meus es. *Ps.* 58.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 1. D. Bonum certámen certávi, cursum consummávi, fidem servávi: in réliquo repósita est mihi coróna justítiæ. (Allelúia.) 2 *Tim.* 4.

*Pro Martyre Pontifice.*

Orémus. Oratio. 1.

Omnipotens sempiterne Deus, qui in ómnium Sanctórum tuórum es virtúte mirábilis: da nobis in festivitáte beáti *N.* cum gratiárum actióne lætári; qui Fílii tui Martyr et Póntifex, quod ministério gessit, testimónio comprobávit; et quod prædicávit ore, confirmávit exemplo; Per eumdem Dóminum nostrum.

Orémus. Oratio. 2.

Deus, cujus grátia beátum *N.* Pontíficem tuum in sacerdótium elégit, doctrína ad prædicandum erúdiit, poténtia ad perseverandum confirmávit: da nobis ex ejus imitatióne pópulum christiánum et instrúere vivendi exemplo, et confirmáre patiendo; Per Dóminum.

*Pro Martyre Sacerdote.*

Orémus. Oratio.

Deus, à quo constántiam fides, et virtútem sumit infírmitas: quæsumus, ut beáti *N.* Sacerdótis et Mártyris tui exemplo et précibus, quidquid in persecutiónibus sævum est, quidquid in morte terríbile, fácias nos tui nóminis confessióne superáre; Per Dóminum.

*Pro Martyre tantùm.*

Orémus. Oratio. 1.

Adesto, Dómine, supplicatiónibus nostris; ut qui beáti Mártyris tui *N.* natalítiis gloriámur, nec minis injustè persequéntium, nec ullis perturbémur adversis; Per.

Orémus. Oratio. 2.

Da nobis, quæsumus Dómine, intercedente beáto *N.* Mártyre tuo, in tua fide sinceritátem et constántiam; ut in caritáte divína firmáti, nullis tentatiónibus ab ejus integritáte divellámur; Per Dóminum.

¶ *In Solemnibus et suprà,* ad Horas, *dicitur sequens Doxologia:*

Fortem corónans mílitem,
Jesu, tibi sit glória,
Cum Patre, cumque Spíritu,
In sempiterna sécula.
Amen. ]

AD PRIMAM.

*Ant.* 3. à. Dóminus.

AD TERTIAM.

*Ant.* 1. f. Circumdedérunt.

Capitulum. *Isai.* 41.

Erunt quasi non sint, et véluti consúmptio, hómines bellantes adversùm te; quia ego Dóminus Deus tuus apprehendens manum tuam, dicensque tibi: Ne tímeas, ego adjúvi te.

℟ *breu.* In Deo salutáre meum, * et glória mea, * Allelúia, allel. In Deo. ℣. Deus auxílii mei, * et spes mea in Deo est. * Allelúia. Glória. In Deo. *Ps.* 61.

℣. Deus meus adjútor meus; et sperábo in eum:

℟. Protector meus, et cornu salútis meæ. *Ps.* 17.

AD SEXTAM.

*Ant.* 2. D. Bonus Dóminus.

CAPITULUM. 2 *Tim.* 1.

PATIOR, sed non confundor: scio enim cui crédidi; et certus sum quia potens est depósitum meum serváre in illum diem.

℟ *br.* Si consistant adversùm me castra, * non timébit cor meum, * Allelúia, allelúia. Si consistant. ℣. Si exurgat adversùm me prælium, * in hoc ego sperábo. * Allelúia. Glória. Si consistant. *Ps.* 26.

℣. Dóminus mihi adjútor, ℟. Non timébo quid fáciat mihi homo. *Ps.* 117.

AD NONAM.

*Ant.* 7. d. Eripuisti me.

CAPITULUM. *Tob.* 3.

POST tempestátem tranquillum facis, Dómine; et post lacrymatiónem et fletum, exultatiónem infundis. Sit nomen tuum, Deus Israel, benedictum in sécula.

℟ *br.* Factus es, Dómine, * susceptor meus, * Allelúia, allelúia. Factus es. ℣. Et refúgium meum * in die tribulatiónis. * Allelúia. Glória. Factus es. *Ps.* 58.

℣. Tu, Dómine, adjuvisti me, ℟. Et consolátus es me. *Ps.* 85.

AD II VESPERAS.

¶ ***In Solemnibus et suprà, Psalmi,*** Dixit Dominus, 18. Beatus vir, 19. Credidi, 78. Ad Dominum, 49. Levavi, 35.]

*Ant.* 8. G. Propter opus Christi usque ad mortem accessit, tradens ánimam suam, allelúia. *Philip.* 2.

*Ant.* 3. a. Patienter sústinens, destinávit non admíttere illícita propter vitæ amórem, allelúia. 2 *Mach.* 6.

*Ant.* 7. a. Divítias æstimans impropérium Christi, aspiciébat in remuneratiónem, allelúia. *Hebr.* 11.

*Ant.* 5. C. Gloriosíssimam mortem magìs quàm odíbilem vitam complectens, voluntáriè præíbat ad supplícium, allelúia. 2 *Mach.* 6.

*Ant.* 1. D. Hoc modo vitâ decessit, universæ genti memóriam mortis suæ ad exemplum virtútis et fortitúdinis derelinquens, allel. 2 *Mach.* 6.

CAPITULUM. *Jac.* 1.

BEATUS vir qui suffert tentatiónem; quóniam cùm probátus fúerit, accípiet corónam vitæ, quam repromísit Deus diligéntibus se.

*Hymnus*, Ex quo salus mortálium, iij.

℣. Posuisti, Dómine, in cápite ejus corónam ℟. De lápide pretióso. *Ps.* 20.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 4. *D.* Justum non derelíquit Deus, donec afferret illi poténtiam adversùs eos qui eum deprimébant; et dedit illi claritátem ætemam, allel. *Sap.* 10.

*Oratio ut ad Laudes.*

# COMMUNE PLURIUM MARTYRUM.

IN I VESPERIS.

*Ant.* 2. D. Venit hora, ut omnis qui intérficit vos, arbitrétur obséquium se præstáre Deo, allelúia. *Joan.* 16.

*Ant.* 3. c. Injícient vobis manus suas, et persequentur, trahentes ad reges et præsides propter nomen meum, allelúia. *Luc.* 21.

*Ant.* 4. D. Tradet autem frater frátrem in mortem; et insurgent fílii in parentes, et morte eos affícient, allelúia. *Matth.* 10.

*Ant.* 1. D. Eritis ódio ómnibus propter nomen meum; qui autem perseveráverit usque in finem, hic salvus erit, allelúia. *Matth.* 10.

*Ant.* 8. G. Dabo vobis os et sapiéntiam, cui non póterunt resístere et contradícere omnes adversárii vestri, allelúia. *Luc.* 21.

CAPITULUM. 1 *Petr.* 4.

Si exprobrámini in nómine Christi, beáti éritis; quóniam quod est honóris, glóriæ, et virtútis Dei, et qui est ejus Spíritus, super vos requiescit.

¶ *In Duplicibus et suprà:*

℟. Mundus gaudébit, vos autem contristabímini; sed tristítia vestra vertétur in gáudium: * Et gáudium vestrum nemo tollet à vobis, † Allelúia, allelúia. ℣. Ego consolábor vos, et consolabímini. Vidébitis, et gaudébit cor vestrum: * Et gáudium. Glória. † Allelúia. *Joan.* 16. *Is.* 66. ]

HYMNUS. C.

Christi Martyribus débita nos decet,
Virtútis memores, prómere cántica;
Quos nec blanditiis, nec potuit minis
Fallax vincere séculum.

Cœlestis Patriæ mens inhians bonis,
Mundi spernit opes flúxaque gáudia;
Vitæ quin etiam, præ Domini lucro,
Jactúram facilem putant.

Non vultus metuunt carnificum truces:
Fœtas suppliciis despiciunt manus;
Enses, flagra, rotas, ómnia pérpeti
Victrix edocuit fides.

O incredibilem vim patiéntiæ!
Non, artus laceros qui cruciat dolor,
Extorquet gemitum, non querimóniam
Agnis mítibus élicit.

Ergo nunc propior, Christe, tibi sedet
Palmis turba nitens usque viréntibus,
Victorumque gerens præmia, nóbiles,
Multo sánguine láureas.

Sit laus summa Patri, súmmaque Filio :
Sit par, sancte, tibi glória, Spíritus,
Cujus præsidio prælia sústinent,
Contemptà nece, Mártyres.
Amen.

℣. Viríliter ágite, et confortétur cor vestrum, ℟. Omnes qui sperátis in Dómino. *Ps.* 30.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 8. G. Cùm vos óderint hómines, et exprobráverint propter Fílium hóminis, gaudéte et exultáte : ecce enim merces vestra multa est in cœlo, allelúia. *Luc.* 6.

¶ *In Solemnibus et suprà,* AD COMPLETORIUM. *Ant.* 2. A. Complebuntur dies luctûs tui, Sion : non óccidet ultrà sol tuus : pópulus tuus omnes justi, allelúia. *Is.* 60.

*Doxol.* ¶ Sit laus, *infrà.*

*Ad* Nunc dimittis. *Ant.* 3. E. Sérvient Deo servi ejus, et vidébunt fáciem ejus; et nomen ejus in fróntibus eórum, allelúia. *Apoc.* 22.]

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invitat.* Dóminum legítimè certantes coronantem, * Veníte, adorémus, allelúia. 2 *Tim.* 2.

HYMNUS. *S. V.*

FORTES cadendo Mártyres,
Quos empta fuso sánguine
Cœlestis ornat púrpura,
Junctis canámus vócibus.

Acti procellis ómnibus,
Sui cruóris flúmine
Vehuntur, et Christo duce.
Portus beátos óccupant.

SÆVIT tyrannus, állicit :
Temnunt minas, temnunt preces :
Deum minantem dum timent,
Dum munerantem díligunt.

Quem lictor insánus sitit,
Quem cæcus effundit furor.
Amor sacerdos pródigum
Christo cruórem cónsecrat.

ET ille mixtus sánguini
Quem fudit in ligno Deus,
Fundéntibus placábilem
Oráre non cessat Deum.

Impléri vos omnes decet
Passo Deo quod défuit :
Per tot neces læso Patri
Fit plena Christus hóstia.

¶ SIT laus Patri, laus Filio;
Par sit tibi laus, Spíritus,
Qui prælíantes róboras
Palmisque donas Mártyres.
Amen.

¶ *In Solemn. et suprà, Ps.* Verba mea, 5. Beati quorum, 31. Exultate justi, *cum sua div.* 67.]

*Ant.* 7. b. In mortem, *infrà.*

*Ant.* 3. b. Paráti sumus mori, magìs quàm pátrias Dei leges prævaricári, allelúia. 2 *Mach.* 7.

*Ant.* 6. F. Propítius sit nobis Deus : non est nobis útile relínquere legem et justítias Dei, ut eámus álterà vià, allelúia. 1 *Mach.* 2.]

*In Duplicibus et infrà, Psalmi sub sola Ant.* 7. b. In mortem trádimur propter Jesum, ut et vita Jesu manifestétur in carne nostra mortáli, allelúia. 2 *Cor.* 4.

℣. In Deo faciémus virtútem; ℟. Et ipse ad níhilum dedúcet tribulantes nos. *Ps.* 59.

℟. *j.* Absit à nobis, ut relinquámus Dóminum, et serviámus diis aliénis : * Dómino Deo nostro serviémus, et obedientes érimus præceptis ejus, allelúia, allelúia. ℣. Etsi sunt qui dicantur dii, sive in cœlo, sive in terra ; nobis tamen unus Deus. * Dómino. *Josue* 24. 1 *Cor.* 8.

℟. *ij.* Dóminus Deus aspíciet veritátem, et consolábitur in nobis. * Pótius est ab homínibus morti datos spem expectáre à Deo, íterum ab ipso resuscitandos, allelúia, allelúia. ℣. Sicut abundant passiónes Christi in nobis, ita et per Christum abundat consolátio nostra.* Pótius est. 2 *Mach.* 7. 2 *Cor.* 1.

℟. *iij.* Exhibeámus nosmetipsos sicut Dei ministros, in multa patiéntia, in tribulatiónibus, * In necessitátibus, in angústiis, in plagis, in carcéribus, allelúia, allelúia. ℣. Omnes qui placuérunt Deo, per multas tribulatiónes transiérunt fidéles; * In. Glória. * In. 2 *Cor.* 6. *Judith* 8.

℣. *Sacerd.* Salvasti nos, Dómine, de affligéntibus nos; ℟. Et in nómine tuo confitébimur in séculum. *Ps.* 43.

## AD LAUDES.

*Ant.* 8. G. Datum est béstiæ bellum fácere cum sanctis, et víncere eos, allel. *Apoc.* 13.

*Ant.* 7. *d.* Elegérunt magis mori, et noluérunt infríngere legem Dei sanctam ; et trucidáti sunt, allelúia. 1 *Mach.* 1.

*Ant.* 1. f. Si coram homínibus tormenta passi sunt, spes illórum immortalitáte plena est, allelúia. *Sap.* 3.

CANTICUM. *Apoc.* 7.

Hi, qui amicti sunt stolis albis, qui sunt? * et unde venérunt?

Hi sunt qui venérunt de tribulatióne magna, * et lavérunt stolas suas, et dealbavérunt eas in sánguine Agni.

Ideo sunt ante thronum Dei, * et sérviunt ei die ac nocte in templo ejus :

Et qui sedet in throno, * habitábit super illos.

Non esúrient, neque sítient ámpliùs; * nec cadet super illos sol, neque ullus æstus.

Quóniam Agnus, qui in médio throni est, reget illos; * et dedúcet eos ad vitæ fontes aquárum :

Et absterget Deus omnem lácrymam * ab óculis eórum.

*Ant.* 2. D. In paucis vexáti, in multis bene disponentur: quóniam Deus tentávit eos, et invénit illos dignos se, allelúia. *Sap.* 3.

*Ant.* 7. d. Tanquam aurum in fornáce probávit illos; et quasi holocausti hóstiam accépit illos; et in témpore erit respectus illórum, allelúia. *Sap.* 3.

CAPITULUM. *Jac.* 1.

Omne gáudium existimáte, fratres mei, cùm in tentatiónes várias incidéritis : scientes quod probátio fídei vestræ patiéntiam operátur; patiéntia autem opus perfectum habet.

HYMNUS. *S. V.*

QUAM, Christe, signasti viam
Primus, profúso sánguine,
Per hanc tui te fórtiter
Ducem sequuntur mílites.

Fossus manus, fossus pedes,
Ovans ad astra tránsvolas;
Et membra trunci Mártyres
Addunt triumpho se tuo.

OMNES in ostro spléndidi
Tuum tribúnal ámbiunt:
Accepta monstrant vúlnera,
Et per tot ora súpplicant.

Audíre si nos réspuis,
Quos críminum moles gravat;
Audi tuos, qui sánguinem
Fudére pro te, Mártyres.

FAC, si tyrannus déficit,
Ne blandiendo mólliùs
Frangat voluptas péctora,
Ipsis tyrannis sævior.

¶ Sit laus Patri, laus Fílio;
Par sit tibi laus, Spíritus,
Qui præliantes róboras,
Palmisque donas Mártyres.
Amen.

℣. Multæ tribulatiónes justórum; ℟. Et de ómnibus his liberábit eos Dóminus. *Ps.* 33.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 1. J. Beáti qui persecutiónem patiuntur propter justítiam; quóniam ipsórum est regnum cœlórum, allelúia. *Matth.* 5.

Orémus. ORATIO. 1.

DEUS invisíbilis fortitúdo certántium, adesto, quæsumus, nobis supplicántibus; ut qui hodiernâ die sanctórum Mártyrum tuórum *N.* et *N.* gloriósum triumphum recólimus, eórum méritis et précibus contra spirituália nequítiæ muniámur; Per Dóminum.

Orémus. ORATIO. 2.

OMNIPOTENS sempiterne Deus, qui in sanctórum tuórum córdibus flammam tuæ dilectiónis accendis: da méntibus nostris eamdem fídei caritatisque virtútem; ut Mártyrum tuórum *N.* et sociórum, quorum gaudémus victóriis, proficiámus exemplis; Per Dóminum.

¶ *In Solemnibus et suprà,* AD HORAS, *Doxologia,* ¶ Sit laus. *ut in Laudibus.*]

AD PRIMAM.

*Ant.* 8. G. Datum est.

AD TERTIAM.

*Ant.* 7. *d.* Elegérunt.

CAPITULUM. *Sap.* 3.

JUSTORUM ánimæ in manu Dei sunt, et non tanget illos tormentum mortis. Visi sunt óculis insipiéntium mori, et æstimáta est afflíctio éxitus illórum; et quod à nobis est iter, extermínium: illi autem sunt in pace.

℟. *br.* Custódit Dóminus * ánimas sanctórum suórum, * Allelúia, allelúia. Custódit. ℣. De manu peccatóris * liberábit. * Allelúia. Glória. Custódit. *Ps.* 96.

℣. Dóminus loquétur pacem in plebem suam, ℟. Et super sanctos suos. *Ps.* 84.

AD SEXTAM.

*Ant.* 1. f. Si coram.

CAPITULUM. 2 *Cor.* 4.

QUOD in præsenti est momentáneum et leve tribulatiónis nostræ, supra modum in sublimitáte æternum glóriæ pondus operátur in nobis, non contemplántibus

nobis quæ videntur, sed quæ non videntur: quæ enim videntur, temporália sunt; quæ autem non videntur, ætérna sunt.

℟ *br.* Probásti nos, Deus, * et eduxísti nos in refrigérium, * Allelúia, allelúia. Probásti. ℣. Igne nos examinásti * sicut examinátur argentum. * Allelúia. Glória. Probásti. *Ps.* 65.

℣. Lætáti sumus pro diébus quibus nos humiliásti, ℟. Annis quibus vídimus mala. *Ps.* 89.

## AD NONAM.

*Ant.* 7. d. Tanquam aurum.

CAPITULUM. *Isai.* 9.

LÆTABUNTUR coram te, sicut qui lætantur in messe, sicut exultant victóres captâ prædâ, quando dívidunt spólia.

℟ *br.* Qui séminant in lácrymis, * in exultatióne metent, * Allelúia, allelúia. Qui. ℣. Euntes ibant et flebant, * mittentes sémina sua. * Allelúia. Glória. Qui.

℣. Venientes vénient cum exultatióne, ℟. Portantes manípulos suos. *Ps.* 125.

## AD II VESPERAS.

¶ *In Solemnibus et suprà, Psalmi*, Dixit Dominus, 18. Credidi, 78. Nisi quia, 35. Qui confidunt, 65. In convertendo, 36.]

*Ant.* 2. D. Vidi ánimas interfectórum propter verbum Dei, et propter testimónium quod habébant, allel. *Apoc.* 6.

*Ant.* 4. *D.* Stabant ante thronum in conspectu Agni; et palmæ in mánibus eórum, allelúia. *Apoc.* 7.

*Ant.* 8. G. Venérunt de tribulatióne magna, et lavérunt stolas suas, et dealbavérunt eas in sánguine Agni, allelúia. *Apoc.* 7.

*Ant.* 1. D. Ante thronum Dei sunt, et sérviunt ei die ac nocte in templo ejus: et qui sedet in throno, habitábit super illos, allel. *Apoc.* 7.

*Ant.* 3. a. Non esúrient, neque sitient ámpliùs: nec cadet super illos sol, neque ullus æstus, allel. *Apoc.* 7.

CAPITULUM. *Apoc.* 21.

ABSTERGET Deus omnem lácrymam ab óculis eórum, et mors ultrà non erit; neque luctus, neque clamor, neque dolor erit ultrà, quia prima abiérunt.

*Hymnus*, Christi Martyribus, *ut in I Vesperis*, viij.

℣. In ætérnum exultábunt, ℟. Et habitábis in eis. *Ps.* 5.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 8. *G.* Datæ sunt illis síngulæ stolæ albæ; et dictum est illis ut requiéscerent, donec compleantur conservi eórum, qui interficiendi sunt sicut et illi, allelúia. *Apoc.* 6.

*Oratio ut ad Laudes.*

# COMMUNE PONTIFICUM.

IN I VESPERIS.

*Ant.* 3. a. Suscitábo mihi sacerdótem fidélem, qui juxta cor meum et ánimam meam fáciet, allelúia. 1 *Reg.* 2.

*Ant.* 8. *G.* Elégi eum ex ómnibus mihi in sacerdótem, ut ascénderet ad altáre meum, et adoléret mihi incensum, allelúia. 1 *Reg.* 2.

*Ant.* 2. D. Ædificábo ei domum fidélem; et ambulábit coram Christo meo cunctis diébus, allel. 1 *Reg.* 2.

*Ant.* 5. C. Erit ipsi pactum sacerdótii sempiternum, quia zelátus est pro Deo suo, et expiávit scelus filiórum Israel, allelúia. *Num.* 25.

*Ant.* 1. f. Quemcumque elégerit Dóminus, ipse erit sanctus, allelúia. *Num.* 16.

CAPITULUM. *Hebr.* 5.

Nec quisquam sumit sibi honórem, sed qui vocátur à Deo, tanquam Aaron. Sic et Christus non semetipsum clarificávit ut póntifex fíeret, sed qui locútus est ad eum: Fílius meus es tu, ego hódie génui te; quemádmodum et in álio loco dicit: Tu es sacerdos in æternum secundùm órdinem Melchísedech.

¶ *In Duplicibus et suprà:*

℟. Locútus es sanctis tuis, Dómine, et dixisti: Invéni servum meum, * Oleo sancto meo unxi eum: † Manus mea auxiliábitur ei, allelúia, allelúia. ℣. Huic Deus testimónium pérhibens, dixit: Invéni virum secundùm cor meum; * Oleo. Glória Patri. † Manus. *Ps.* 88. *Act.* 13.]

HYMNUS. *G. Ep. S.*

Christe, Pastórum caput atque princeps,
Præsulis festam veneráta lucem,
Débitis supplex tua templa votis
Turba frequentat.

Ille non vano tenuit tremendam
Spíritu sedem, proprio nec ausu:
Sed sacrum jussus, Domino vocante,
Sumpsit honórem.

Strenuum bello pugilem superni
Chrísmatis pleno tuus unxit intus
Spíritus cornu, posuitque sanctam
Páscere gentem.

Fit gregis pastor, pater atque forma;
Lætus impendit sua, seque; servus
Omnium, curis gravis, omnibusque
Omnia factus.

Pro reis orat, reficit gementes,
Erigit lapsos, tenebrasque pellit,
Fit potens verbo, docet alta, pravum

Cónterit hostem.
Fac ut illíus precibus juvémur,
Christe; fac Patrem, pariterque tecum
Spíritum jugi celebrémus hymno
Omne per ævum. Amen.

℣. Beátus quem elegisti et assumpsisti : ℟. Inhabitábit in átriis tuis. *Ps.* 64.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 4. f. Elégit ipsum Dóminus ab omni vivente, offerre sacrificium Deo, incensum et bonum odórem pro pópulo suo, allelúia. *Eccli.* 45.

¶ *In Solemnibus et suprà,* AD COMPLETORIUM. *Ant.* 3. *à.* Die noctúque fugiébat somnus ab óculis meis pro grégibus tuis, Dómine, allelúia. *Gen.* 31.

*Doxologia* ¶ Supréme, *infrà ad Laudes.*

*Ad* Nunc dimittis. *Ant.* 7. G. Cùm vénerit Dóminus, et pulsáverit, beáti servi quos invénerit vigilantes, allelúia. *Luc.* 12.]

## AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invitat.* Christum Pastórum Príncipem, * Veníte, adorémus, allel. 1 *Petr.* 5.

HYMNUS. *S. V.*

CHRISTE, decréto Patris institútus
Póntifex summo, tibi, qui fidéles
Quos legis, formas populis regendis
Ipse ministros :
Hunc juvat festo celebráre cantu,
Qui licèt magnis meritis abundans,
Flens et invítus, duce te, tremendum
Sumpsit honórem.
NOVERAT quantis pateat periclis
Ille, qui summos apices adeptus,
Omnium curas, sibi raptus uni,
Sústinet omnes.
Fécerat fervens amor inquiétum :
Quò gregis cari pia cura poscit,
Advolat promptus : mora non euntem
Ulla retardat.
DUX iter, vitâ præeunte monstrat;
Cómprobat factis sua dicta magnis;
Et domum sanctam bene olente Christi
Implet odóre.
Lux erat cæco, columen labanti,
Una spes lapso, misero levámen,
Próvidus cunctis pater, omnibusque
Omnia factus.
CHRISTE, Pastórum bonus ipse Pastor,
Qui greges pascis proprio cruóre,
Fac ut ætérnæ subeant opima
Páscua vitæ. Amen.

---

¶ *In Solemnibus et suprà, Psalmi,* Domine, Dominus noster, 30. Exaudiat, 67. Domine, in virtute tua, 62.

*Ant.* 2. D. Vocávit eum, Dóminus, et ait : Vidi afflictiónem pópuli mei ; veni, et mittam te, ut edúcas pópulum meum, allel. *Exod.* 3.

*Ant.* 1. g. Dixit ad Deum : Quis sum ego, ut vadam et edúcam fílios Israel? Qui dixit ei : Ego ero tecum, allelúia. *Exod.* 3.

*Ant.* 8. G. Vade in hac fortitúdine tua, et liberábis Israel : scito quod míserim te, allelúia. *Judic.* 6.

---

*In Duplicibus et infrà, Psalmi sub sola Ant.* 1. a. Páscite qui in vobis est gregem Dei; et cùm apparúerit Princeps pastórum, percipiétis immarcescíbilem glóriæ corónam, allelúia. 1 *Petr.* 5.

℣. Súscitans Dóminus à terra ínopem; ℟. Ut cóllocet eum cum princípibus pópuli sui. *Ps.* 112.

℟ *j.* Quis est fidélis servus et prudens, quem constítuit dóminus suus super famíliam suam, ut det illis cibum in témpore? * Beátus ille servus, quem, cùm vénerit dóminus ejus, invénerit sic facientem, allelúia, allelúia. ℣. A dómino suo præpósitus ómnibus, gubernábat créditam sibi domum : * Beátus. *Matth.* 24. *Genes.* 39.

℟ *ij.* Dóminus supra ómnia quæ póssidet, constítuet illum : * Omni autem cui multum datum est, multum quærétur ab eo; et cui commendavérunt multum, plus petent ab eo, allelúia, allelúia. ℣. In manu Dei potestas terræ, et útilem rectórem suscitábit in tempus super illam : * Omni autem. *Luc.* 12. *Eccli.* 10.

℟ *iij.* Euge, serve bone et fidélis; quia super pauca fuisti fidélis, super multa te constítuam : * Intra in gáudium Dómini tui, allelúia, allelúia. ℣. Super pópulum meum constítui te: sapiéntia et sciéntia data sunt tibi; et glóriam dabo tibi : * Intra. Glória. * Intra. *Matth.* 25. 2 *Paral.* 1.

℣ *Sacerd.* Domus Aaron; benedícite Dómino : ℟. Domus Levi, benedícite Dómino. *Ps.* 134.

## AD LAUDES.

*Ant.* 7. a. Qui intrat per óstium, pastor est óvium : huic ostiárius áperit; et oves vocem ejus áudiunt, allelúia. *Joan.* 10.

*Ant.* 2. D. Próprias oves vocat nominátim, et edúcit eas, et ante eas vadit, allelúia *Joan.* 10.

*Ant.* 7. d. Oves illum sequuntur, quia sciunt vocem ejus; aliénum autem non sequuntur, sed fúgiunt ab eo, allelúia. *Joan.* 10.

CANTICUM. *Eccli.* 50.

SACERDOS magnus, in ascensu altáris sancti, * glóriam dedit sanctitátis amictum.

In accipiendo autem partes de manu Sacerdótum, * et ipse stans juxta aram.

Et circa illum coróna fratrum, * quasi plantátio cedri in monte Líbano;

Sic circa illum stetérunt

quasi rami palmæ, * et omnes fílii Aaron in glória sua.

Oblátio autem Dómini in mánibus ipsórum, * coram omni synagóga Israel.

Et consummatióne fungens in ara, * amplificáre oblatiónem excelsi Regis,

Porrexit manum suam in libatióne, * et libávit de sánguine uvæ.

Effúdit in fundamento altáris odórem divínum * excélso Príncipi.

*Ant.* 6. F. Si perdíderit unam ex óvibus, pastor vadit ad illam donec invéniat eam; et cùm invénerit, impónit in húmeros suos gaudens, allelúia. *Luc.* 15.

*Ant.* 8. G. Fur venit ut perdat; mercenárius videt lupum, et fugit: bonus pastor ánimam suam dat pro óvibus suis, allel. *Joan.* 10.

CAPITULUM. 1 *Petr.* 5.

PASCITE qui in vobis est gregem Dei, providentes non coactè, sed spontáneè secundùm Deum; neque turpis lucri grátiâ, sed voluntáriè; neque ut dominantes in Cleris, sed forma facti gregis ex ánimo.

HYMNUS. *G. Ep. S.*

JESU, Sacerdótum decus,
In hac die, quâ glóriâ
Sanctum corónas Præsulem,
Votis adesto súpplicum.

Sui probátus præmium
Amóris, ut pignus tui,
A Patre tráditos tibi
Accépit agnos páscere.

Hos novit, et præit vocans
In tuta quemque páscua,
Victumque præbet: áudiunt,
Sequuntur, et vivunt oves.

Quam sentit errantem jugis,
Hanc nocte quærit ac die;
Et gaudet inventam suo
Portans ovíli réddere.

ARCET frementes béstias,
Lupi retundit ímpetus,
Dolosque fallit, vel mori
Caro parátus pro grege.

Offert frequentem víctimam
Cum plebe Pastor ínnocens:
Secumque devótum gregem
Pius sacerdos ímmolat.

¶ SUPREME Christe Póntifex,
Jugis tibi sit glória,
Cum Patre, cumque Spíritu,
In sempiterna sécula. Amen.

℣. Elégit Dóminus servum suum, ℟. Páscere hæreditátem suam. *Ps.* 77.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 1. D. Ego sum óstium: per me si quis introíerit, salvábitur; et ingrediétur, et egrediétur, et páscua invéniet, allelúia. *Joan.* 10.

Orémus. ORATIO. 1.

DEUS, qui pópulis tuis indulgéntiâ cónsulis, et amóre domináris, quique illis regendis vicários caritátis tuæ præficis ministros: da, quæsumus, intercedente beáto *N.* Pontífice, Spíritum sapiéntiæ, quibus præesse dedisti Ecclésiæ tuæ; ut de profectu sanctárum óvium fiant gáudia æterna pastórum; Per... in unitáte ejusdem.

Orémus. ORATIO. 2.

DEUS, fidélium lumen et Pastor animárum, qui beá-

tum *N.* Epíscopum in Ecclésia posuisti, ut oves tuas verbo pásceret, et informáret exemplo : da nobis ejus intercessióne, et fidem serváre quam verbo dócuit, et viam sequi quam exemplo monstrávit; Qui vivis.

*Si plures sint Pontifices.*

Orémus. ORATIO.

DEUS, qui beátos Pontífices *N.* et *N.* ad pascendum pópulum tuum, spíritu veritátis et dilectiónis implevisti : præsta, ut quorum festivitátem venerando ágimus, eórum imitatióne proficiámus, et intercessióne sublevémur; Per Dóminum.

¶ *In Solemnibus et suprà,* AD HORAS, *Doxologia,* ¶ Supréme, *ut in Laudibus.*]

## AD PRIMAM.

*Ant.* 7. a. Qui intrat.

## AD TERTIAM.

*Ant.* 2. D. Próprias oves.

CAPITULUM. *Prov.* 27.

DILIGENTER agnosce vultum pécoris tui, tuosque greges considera; non enim habébis júgiter potestátem; sed coróna tribuétur in generatiónem et generatiónem.

℟ *br.* Deus protector meus,* in ipso sperávi,* Allelúia, allelúia. Deus. ℣. Qui subdit * pópulum meum sub me. * Allelúia. Glória. Deus. *Ps.* 143.

℣. Nisi Dóminus custodíerit civitátem, ℟. Frustra vígilat qui custódit eam. *Ps.* 126.

## AD SEXTAM.

*Ant.* 7. d. Oves.

CAPITULUM. *Jer.* 3.

INTRODUCAM vos in Sion, et dabo vobis pastóres juxta cor meum; et pascent vos sciéntiâ et doctrínâ.

℟ *br.* Deduxit eos * in viam rectam, * Allelúia, allelúia. Deduxit eos. ℣. Ut irent * in civitátem habitatiónis. * Allelúia. Glória. Deduxit eos. *Ps.* 106.

℣. Abstulit sicut oves pópulum suum, ℟. Et deduxit eos in spe. *Ps.* 77.

## AD NONAM.

*Ant.* 8. G. Fur venit.

CAPITULUM. *Act.* 20.

ATTENDITE vobis, et universo gregi, in quo vos Spíritus sanctus pósuit epíscopos régere Ecclésiam Dei, quam acquisívit sánguine suo.

℟ *br.* Pavit eos * in innocéntia cordis sui, * Allelúia, allelúia. Pavit eos. ℣. Et in intelléctibus mánuum suárum * deduxit eos. * Allelúia. Glória. Pavit. *Ps.* 77.

℣. Nos pópulus tuus et oves páscuæ tuæ, ℟. Confitébimur tibi in séculum. *Ps.* 78.

## AD II VESPERAS.

¶ *In Solemnibus et suprà, Psalmi de Dominica, excepto ultimo, cujus loco dicitur* Memento *cum sua divisione,* 110.]

*Ant.* 3. a. Ecclésiæ factus sum ego minister secundùm dispensatiónem Dei, quæ data est mihi in vos, ut ímpleam verbum Dei, allelúia. *Col.* 1.

*Ant.* 4. E. Scitis quómodo nihil subtráxerim utílium, quóminus annuntiárem vo-

bis, et docérem vos públicè, et per domos, allel. *Act.* 20.

*Ant.* 1. D. Mundus sum à sánguine ómnium; non enim subterfúgi quóminus annuntiárem omne consílium Dei vobis, allelúia. *Act.* 20.

*Ant.* 8. G. Nihil véreor, nec fácio ánimam meam pretiosiórem quàm me, dúmmodo consummem cursum meum, et ministérium verbi quod accépi à Dómino Jesu, allelúia. *Act.* 20.

*Ant.* 7. ç. Absit à me hoc peccátum in Dóminum, ut cessem oráre pro vobis; et docébo vos viam bonam et rectam, allelúia. 1 *Reg.* 12.

CAPITULUM. *Act.* 20.

NOCTE et die non cessávi, cum lácrymis monens unumquemque vestrûm: et nunc commendo vos Deo, et verbo grátiæ ipsíus, qui potens est ædificáre, et dare hæreditátem in sanctificátis ómnibus.

*Hymnus*, Christe, xiij.

℣. Salvum fecit Dóminus Christum suum: ℟. Exáudiet illum de cœlo sancto suo. *Ps.* 19.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 5. C. Sacerdótes tui induantur salútem: Dómine Deus, ne avérteris fáciem Christi tui: memento misericordiárum servi tui, allelúia. 2 *Paral.* 6.

# COMMUNE DOCTORUM.

## IN I VESPERIS.

*Ant.* 4. E. A Deo profecta est sapiéntia: et in ore fidéli abundábit; et dominátor dabit eam illi, allel. *Eccli.* 15.

*Ant.* 5. C. Denudábit absconsa sua illi, et thesaurizábit super illum sciéntiam et intellectum justítiæ, allelúia. *Eccli.* 4.

*Ant.* 8. G. Firmábitur in illo, et non flectétur; et continébit illum, et non confundétur; et exaltábit illum apud próximos suos, allel. *Eccli.* 15.

*Ant.* 3. a. In médio Ecclésiæ apériet os ejus, et adimplébit illum spíritu sapiéntiæ et intellectûs, allel. *Eccli.* 15.

*Ant.* 1. D. Stolâ glóriæ véstiet illum; et nómine æterno hæreditábit illum, allelúia. *Eccli.* 15.

CAPITULUM. *Eccli.* 51.

ANIMAM meam direxi ad sapiéntiam, et in agnitióne invéni eam: possédi cum ipsa cor ab inítio; propter hoc non derelinquar.

¶ *In Duplicibus et suprà:*

℟. Dóminus dat sapiéntiam sapiéntibus, et sciéntiam intelligéntibus disciplinam: * Ipse revélat profunda et abscóndita, et † Lux cum eo est, allelúia, allel. ℣. Spíritus ómnia scrutátur, étiam profunda Dei. * Ipse. Glória. † Lux. *Dan.* 2. 1 *Cor.* 2.]

HYMNUS. *S. V.*

O QUI perpetuus nos monitor doces,

Vox æterna Patris, Christe, vicários
Doctóres, patrias cùm remeas domos
Nobis quàm bene súppetis!
Hi semper vigilant ne quid adúlterum
Corrumpat fidei virgineum decus:
Lædi vel leviter non patitur fides,
His custódibus íntegra.
Infames abolent relliquias deûm:
Erróres abigunt, crímina dédocent:
Christo restituunt, quos malè crédulos
Mendax lúserat hæresis.
Patrum canitiem, tot venerábiles
Rugas objiciunt, unde nitet fides:
Quæ sunt prisca, docent; quæ nova, súbruunt:
Servant depositum Dei.
Sit supréma tibi glória, Véritas,
Quæ per scripta Patrum, quando foris sonas,
Mentes interiùs muta doces, simul
Et te córdibus ínseris.
Amen.

℣. Beátus homo quem tu erudíeris, Dómine, ℟. Et de lege tua docúeris eum. *Ps.* 93.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 7. G. Beátus qui excógitat vias sapiéntiæ in corde suo, vadens post illam quasi investigátor: protegétur sub tégmine illíus à fervóre, et in glória ejus requiescet, allelúia. *Eccli.* 14.

¶ *In Solemnibus et suprà,* AD COMPLETORIUM. *Ant.* 3. *a.* Dedit illi Dóminus in præceptis suis potestátem docére Jacob testimónia, et in lege sua lucem dare Israel, allelúia. *Eccli.* 45.

*Doxologia,* ¶ Qui vera lux es méntium, *infrà* xxij.

*Ad* Nunc dimittis. *Ant.* 6. *C.* Qui vigiláverit propter sapiéntiam, citò secúrus erit; quóniam dignos se ipsa círcuit quærens, et in viis ostendit se illis hiláriter, allelúia. *Sap.* 6.]

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invitat.* Fontem sapiéntiæ Dóminum, * Veníte, adorémus, allelúia. *Eccli.* 1.

HYMNUS. *S. V.*

Jam nunc, quæ numeras tot tibi víndices,
Effer sidereum Relligio caput:
Quot sunt mota tibi prælia, nóbiles
Tot nectis tibi láureas.
Cùm per mille neces impietas furit,
Oppónis valido péctore Mártyres:
Cùm per mille dolos décipit hæresis,
Doctóres tibi súscitas.
Quando sparsa lues úndique críminum,
Hi gliscens vitium prótinus ámputant:
Quando plúrima nox méntibus íncubat,
Hi plenum revehunt diem.
Firmant instabiles, et dubios regunt:
Monstrant tuta procul líttora náufragis:

Nobis, qui vehimur cæca per
æquora,
Lucent perpetuæ faces.
Quæ dixére tuis cónsona
sénsibus,
Nostris illa, Deus, córdibus
ímprimas :
Quos terris colimus, quos se-
quimur duces,
Fac nos móribus ássequi.
Sit supréma tibi glória,
Véritas,
Quæ per scripta Patrum,
quando foris sonas,
Mentes interiùs muta doces,
simul
Et te córdibus ínseris. Amen.

¶ *In Solemnibus et suprà, Psalmi,* Beatus vir, 1. Salvum me fac, Domine, 80. Cœli enarrant *cum sua divisione,* 38.

*Ant.* 3. a. Sapiéntia non est multis manifesta ; quibus autem cógnita est, pérmanet usque ad conspectum Dei, allelúia. *Eccli.* 6.

*Ant.* 4. E. Os prudentis quæritur in ecclésia, et verba illíus cogitábunt in córdibus suis, allelúia. *Eccli.* 21.

*Ant.* 5. a. Sciéntia sapientis tanquam inundátio abundábit, et consílium illíus sicut fons vitæ pérmanet, allelúia. *Eccli.* 21.]

---

*In Duplicibus et infra, Psalmi sub sola Ant.* 8. *G.* Apéruit discípulis sensum Dóminus, ut intellígerent Scriptúras, et dixit eis : Quóniam sic scriptum est, et sic oportébat Christum pati, et resúrgere, allelúia. *Luc.* 24.

℣. Tu, Dómine, veritátem dilexisti : ℟. Incerta et occulta sapiéntiæ tuæ manifestasti mihi. *Ps.* 50.

℟ *j.* Super salútem et spéciem dilexi sapiéntiam ; * Et propósui pro luce habére illam : venérunt autem mihi ómnia bona páriter cum illa, allelúia, allelúia. ℣. Quæ desursum est sapiéntia, pudíca est, pacífica, plena misericórdiâ et frúctibus bonis ; * Et. *Sap.* 7. *Jac.* 3.

℟ *ij.* Optávi, et datus est mihi sensus ; et invocávi, et venit in me Spíritus sapiéntiæ : et præpósui illam regnis et sédibus, * Et divítias nihil esse duxi in comparatióne illíus, allelúia, allelúia. ℣. Exístimo ómnia detrimentum esse propter eminentem sciéntiam Jesu Christi Dómini mei; * Et. *Sap.* 1. *Philip.* 3.

℟ *iij.* Sapiéntia bonórum ómnium mater est; quam sine fictióne dídici, et sine invídia commúnico : infinítus enim thesaurus est ; * Quo qui usi sunt, † Partícipes facti sunt amicítiæ Dei, allelúia, allelúia. ℣. Bonus homo de bono thesauro cordis sui profert bonum ; * Quo. Glória Patri. † Partícipes. *Sap.* 7. *Luc.* 6.

℣ *Sacerd.* Os meum annuntiábit justítiam tuam, ℟. Totâ die salutáre tuum. *Ps.* 70.

AD LAUDES.

*Ant.* 2. D. Dóminus dedit mihi linguam erudítam, ut sciam sustentáre eum qui lassus est, verbo, allel. *Is.* 50.

*Ant.* 6. F. Sermo meus non

in persuasibílibus humánæ sapiéntiæ verbis; sed in ostensióne Spíritûs, et virtútis, allelúia. 1 *Cor.* 2.

*Ant.* 3. c. Auxílio adjútus Dei sto, testíficans minóri atque majóri; nihil extrà dicens, quàm ea quæ Prophétæ locúti sunt, allelúia. *Act.* 26.

CANTICUM. *Eccli.* 15.

CIBABIT illum Deus pane vitæ et intellectûs; * et aquâ sapiéntiæ salutáris potábit illum:

Et firmábitur in illo, et non flectétur; * et continébit illum, et non confundétur.

Et exaltábit illum apud próximos suos, * et in médio Ecclésiæ apériet os ejus.

Et adimplébit illum spíritu sapiéntiæ et intellectûs, * et stolâ glóriæ véstiet illum.

Jucunditátem et exultatiónem thesaurizábit super illum: * et nómine æterno hæreditábit illum.

*Ant.* 4. f. Non judicávi me scire áliquid inter vos, nisi Jesum Christum, et hunc crucifixum, allelúia. 1 *Cor.* 2.

*Antiph.* 5. a. Si nóverim mystéria ómnia, et omnem sciéntiam; caritátem autem non habúero, nihil sum, allelúia. 1 *Cor.* 13.

CAPITULUM. *Sap.* 7.

MIHI dedit Deus dícere ex senténtia, et præsúmere digna horum quæ mihi dantur; quóniam ipse sapiéntiæ dux est, et sapiéntium emendátor: in manu enim illíus, et nos, et sermónes nostri, et omnis sapiéntia, et óperum sciéntia et disciplína.

HYMNUS. *S. V.*

Vos succensa Deo spléndida lúmina:
Vos sal, nos homines quo sapimus Deum;
Ævum, puri animo, móribus íntegri,
Quo condímur in álterum.

Per vos Relligio, tútaque Véritas.
Per vos virgineis fulget honóribus:
Per vos Christus amat pándere dívites
Thesauros sapiéntiæ.

Vestris unda fluit pura canálibus;
Christi floret ager; munda nitet seges:
Lac aptum pueris, et solidum viris
Cauti sufficitis cibum.

Hi sunt, summe Deus, qui tibi mílitant;
Hi sunt, qui stabiles ædificant domos:
Unâ docta cohors arma tenet manu,
Muros cónstruit álterâ.

Vicistis stygias vos quibus hæreses,
Hæc nos accipimus tela supérstites:
His pugnámus adhuc, nec dubio éxitu;
His armis quoque víncimus.

Sit supréma tibi glória, Véritas,
Quæ per scripta Patrum quando foris sonas,
Mentes interiùs muta doces, simul
Et te córdibus ínseris. Amen.

℣. Annuntiávi justítiam tuam in ecclésia magna; ℟. Ecce lábia mea non prohibébo : Dómine, tu scisti. *Ps.* 39.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 1. J. Sapiéntia et fortitúdo Dómini sunt : tibi, Deus, confíteor, teque laudo; quia sapiéntiam et fortitúdinem dedisti mihi, allelúia. *Dan.* 2.

Orémus. ORATIO. 1.

OMNIPOTENS ætterne Deus, qui Ecclésiæ tuæ fílios, sicut non cessas erudíre, ita non désinis adjuváre : da fidélibus tuis, intercessióne beáti *N.* quem eis ætternæ salútis ministrum tribuisti, ut, te miserante, sciéntiam recta faciendi, et virtútem cápiant exequendi; Per Dóminum.

Orémus. ORATIO. 2.

EXCITA, Dómine, intercedente beáto *N.* tuórum corda fidélium; ut sacris intenta doctrínis, stúdeant et amáre quod amávit, et ópere exercére quod dócuit; Per.

¶ *In Solemnibus et suprà,* AD HORAS, *Doxologia :*

Qui vera lux es méntium,
Jesu, tibi sit glória,
Cum Patre, cumque Spíritu,
In sempiterna sécula.
Amen. ]

AD PRIMAM.

*Ant.* 2. D. Dóminus.

AD TERTIAM.

*Ant.* 6. F. Sermo meus.

CAPITULUM. 1 *Cor.* 12.

UNICUIQUE datur manifestátio Spíritûs ad utilitátem : álii quidem per Spíritum datur sermo sapiéntiæ : álii autem sermo sciéntiæ secundùm eumdem Spíritum.

℟ *br.* Da mihi intellectum, * et scrutábor legem tuam, * Allelúia, allel. Da mihi. ℣. Státue servo tuo * elóquium tuum, Dómine. * Allelúia. Glória. Da mihi. *Ps.* 118.

℣. Os meum loquétur sapiéntiam, ℟. Et meditátio cordis mei prudéntiam. *Ps.* 48.

AD SEXTAM.

*Ant.* 3. c. Auxílio.

CAPITULUM. 2 *Joan.* 9.

OMNIS qui recédit, et non pérmanet in doctrína Christi, Deum non habet : qui pérmanet in doctrína, hic et Patrem et Fílium habet.

℟ *br.* Viam veritátis elégi, * judícia tua non sum oblítus, * Allelúia, allelúia. Viam. ℣. Adhæsi * testimóniis tuis, Dómine. * Allelúia. Glória. Viam.

℣. A judíciis tuis non declinávi; ℟. Quia tu legem posuisti mihi. *Ps.* 118.

AD NONAM.

*Ant.* 5. a. Si nóverim.

CAPITULUM. 2 *Tim.* 4.

TESTIFICOR coram Deo et Jesu Christo; prædica verbum; insta opportúnè, importúnè; árgue, óbsecra, íncrepa in omni patiéntia et doctrína.

℟ *br.* Veritátem tuam * et salutáre tuum dixi, * Allelúia, allel. Veritátem. ℣. Non abscondi misericórdiam tuam, * et veritátem tuam. * Allelúia. Glória. Veritátem. *Ps.* 39.

℣. Pronuntiávi ómnia ju-

dicia oris tui : ℟. In via testimoniórum tuórum delectátus sum. *Ps.* 118.

AD II VESPERAS.

¶ *In Solemnibus et suprà, Psalmi de Dominica, excepto ultimo, cujus loco dicitur* In convertendo, 36.]

*Ant.* 1. f. Fuit gratus Deo, erudítus omni sapiéntiâ; et erat potens in verbis et in opéribus suis, allel. *Act.* 7.

*Ant.* 5. C. Juxta manum Dei sui bonam super se, parávit cor suum, ut investigáret legem Dómini, et fáceret, et docéret, allelúia. 1 *Esdr.* 7.

*Ant.* 8. c. Postquam se ámpliùs dedit ad diligéntiam lectiónis legis et prophetárum, vóluit et ipse scríbere quæ ad doctrínam et sapiéntiam pértinent, allel. *Prolog. Eccli.*

*Ant.* 3. a. Cùm esset sapientíssimus, dócuit pópulum : quæsívit verba utília, et conscripsit sermónes rectíssimos ac veritáte plenos, allelúia. *Eccles.* 12.

*Ant.* 4. E. Sapiéntiam ejus enarrábunt gentes; et laudem ejus enuntiábit Ecclésia, allelúia. *Eccli.* 39.

CAPITULUM. *Prov.* 3.

BEATUS homo qui invénit sapiéntiam, et qui áffluit prudéntiâ : mélior est acquisítio ejus negotiatióne argenti et auri primi; et puríssimi fructus ejus : pretiósior est cunctis ópibus; et ómnia quæ desiderantur huic non valent comparári.

*Hymnus,* O qui, xviij.

℣. Beátus vir qui dispónet sermónes suos in judício, ℟. In æternum non commovébitur. *Ps.* 111.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 6. F. Qui docti fúerint, fulgébunt quasi splendor firmamenti; et qui ad justítiam erúdiunt multos, quasi stellæ in perpétuas æternitátes, allelúia. *Dan.* 12.

# COMMUNE PRESBYTERORUM.

IN I VESPERIS.

*Ant.* 7. a. Locútus est Dóminus: Sanctificábor in iis qui appropinquant mihi : et in conspectu omnis pópuli glorificábor, allelúia. *Levit.* 10.

*Ant.* 3. a. Ingrediuntur tabernáculum fœderis, ut sérviant mihi pro Israel, et orent pro eis, ne sit in pópulo plaga, allelúia. *Num.* 18.

*Ant.* 4. D. Holocausta eórum, et víctimæ eórum placébunt mihi super altári meo, allelúia. *Is.* 56.

*Ant.* 5. C. Invocábunt nomen meum super fílios Israel, et ego benedícam eis, allelúia. *Num.* 6.

*Ant.* 1. g. Inebriábo ánimam Sacerdótum pinguédine, et pópulus meus bonis

adimplébitur, allelúia. *Jerem.* 31.

CAPITULUM. *Num.* 16.

NOTUM fáciet Dóminus qui ad se pertíneant, et sanctos applicábit sibi; et quos elégerit, appropinquábunt ei.

¶ *In Duplicibus et suprà.*

℟. Sacerdótes sancti erunt Deo suo, et non pólluent nomen ejus. * Qui habúerit máculam, non ófferet panes Deo suo, nec accédet ad ministérium, allelúia, allelúia. ℣. Sóbrii sint, pudíci, prudentes, sani in fide, in dilectióne, in patiéntia. * Qui. Glória Patri. * Qui. *Levit.* 21. *Tit.* 2.]

HYMNUS.

QUANTIS micas honóribus,
Cœlo Sacerdos áddite,
Cùm, præmiórum pródigus,
Totum tibi dat se Deus!

Partis labóre plúrimo
Quot clarus es virtútibus,
Tot fulgurantem glóriâ
Ornant corónæ vérticem.

Quos parturisti Númini,
Te fílii nunc ámbiunt;
Tuóque lætis cántibus
Certant triumpho pláudere.

Christus tuum fit præmium,
Quem consecrasti víctimam;
Dehinc aperto Númine
Te pascet esca Cœlitum.

ADHUC sacerdos, hóstiam
Gratam Deo, nos dévove;
Undique mersos náufragis,
Duc ad salútis líttora.

¶ Jesu, Sacerdótum decus,
Jugis tibi sit glória,
Cum Patre, cumque Spíritu,
In sempiterna sécula. Amen.

℣. Stabit in loco sancto Dómini, ℟. Innocens mánibus et mundo corde. *Ps.* 23.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 8. G. Quasi thus ardens in igne, in ascensu altáris sancti, glóriam dedit sanctitátis amictum, allelúia. *Eccli.* 50.

¶ *In Solemnibus et suprà,* AD COMPLETORIUM. *Ant.* 6. C. Flebam super eo qui afflictus erat, et compatiebátur ánima mea páuperi, allelúia. *Job* 30.

*Doxol.* ¶ Jesu Sacerdótum decus, *ut suprà.*

*Ad* Nunc dimittis. *Ant.* 1. D. Nocte et die non cessávi cum lácrymis monens unumquemque, allelúia. *Act.* 20.]

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invitat.* Sacerdótem in ætérnum Jesum Christum Dóminum, * Veníte, adorémus, allelúia. *Hebr.* 6.

HYMNUS.

JAM satis fluxit cruor hostiárum,
Prístinæ cessent holocausta legis:
Christe, quos formas, melióra libant
Sacra ministri.

Elicit flammas Elias ab alto,
Mysta nunc major jubet, et potenti
Obsequens verbo Deus astat aris,
Hóstia factus.

PINGUE libámen, novus et Sacerdos,
Orbe jam toto Deus immolátur:
Se manu nostrâ litat incruento
Fúnere Christus.

Tale nil priscis Patribus tribútum,

Angelis

Angelis nusquam data par potestas :
Se manu nostrâ Deus ipse cunctis
Præbet in escam.
CHRISTE, fac semper tua sacra puro
Corde tractémus, manibusque puris :
Cáritas aptos tua nos tremendis
Applicet aris.
Lúminis splendor, Patris una proles,
Christe, te pronus venerétur orbis,
Qui sacerdótes per Amóris almi
Flamen inungis. Amen.

¶ *In Solemnibus et suprà, Psalmi,* Domine, Dominus noster, 30. Exaudiat, 67. Domine in virtute tua, 62.

*Ant.* 3. à. Hæc dicit, *infrà.*

*Ant.* 1. g. Implévi eum Spíritu Dei, sapiéntiâ et intelligéntiâ, et sciéntiâ in omni ópere, allelúia. *Exod.* 31.

*Ant.* 7. d. Juxta cor meum et ánimam meam fáciet; et ambulábit coram Christo meo cunctis diébus, allel. 1 *Reg.* 2.]

---

*In Duplicibus et infrà, Psalmi sub sola Ant.* 3. à. Hæc dicit Dóminus : Elégi eum mihi in sacerdótem, ut ascénderet ad altáre meum, allelúia. 1 *Reg.* 2.

℣. Servábo illi misericórdiam meam, ℟. Et testamentum meum fidéle ipsi. *Ps.* 88.

℟ *j.* Dóminum elegisti, ut sit tibi Deus, et ámbules in viis ejus, et custódias cæremónias illíus, et * Dóminus elégit te, ut sis ei, et fáciat te in laudem, et nomen, et glóriam suam, allelúia, allel. ℣. Noli neglígere grátiam quæ in te est, quæ data est tibi, cum impositióne mánuum. * Dóminus. *Deut.* 26. 1 *Tim.* 4.

℟ *ij.* Quia sanctus es Dómino Deo tuo, te elégit Dóminus. * Et scies quia Dóminus Deus tuus, ipse est Deus fortis et fidélis, custódiens pactum et misericórdiam diligentibus se, allelúia, allelúia. ℣. Vigíla, in ómnibus labóra, opus fac evangelistæ, ministérium tuum imple. * Et scies. *Deut.* 7. 2 *Tim.* 4.

℟ *iij.* Prædica verbum, insta opportúnè, importúnè : * Argue, óbsecra, íncrepa in omni patiéntia, et doctrína, allelúia, allelúia. ℣. Discurre, festína, súscita amícum tuum : ne déderis somnum óculis tuis. * Argue. Glória. * Argue. 2 *Tim.* 4. *Prov.* 6.

℣ *Sacerd.* Benedícite, Sacerdótes Dómini, Dómino; ℟. Laudáte et superexaltáte eum in sécula. *Dan.* 3.

AD LAUDES.

*Ant.* 7. a. Vir Dei es tu, et verbum Dómini in ore tuo verum est, allelúia. 3 *Reg.* 17.

*Ant.* 2. D. Ecce docuisti multos : et manus lassas roborasti : vacillantes confirmavérunt sermónes tui, allelúia. *Job* 4.

*Ant.* 6. F. Scriptus es in judíciis témporum leníre iracúndiam Dómini, allelúia. *Eccli.* 48.

CANTICUM. *Malach.* 2.

PACTUM meum fuit cum eo, vitæ et pacis : * et dedi ei timórem, et tímuit me, et à fácie nóminis mei pavébat.

Lex veritátis fuit in ore ejus; * et iníquitas non est inventa in lábiis ejus.

In pace et in æquitáte ambulávit mecum, * et multos avertit ab iniquitáte.

Lábia enim Sacerdótis custódient sciéntiam; et legem requírent ex ore ejus; * quia ángelus Dómini exercítuum est.

*Ant.* 7. d. Tu assecútus es doctrínam, fidem, longanimitátem, dilectiónem, patiéntiam, allelúia. 2 *Tim.* 3.

*Ant.* 8. G. Beátus ille servus, quem, cùm vénerit dóminus ejus, invénerit sic facientem : super ómnia bona sua constítuet eum, allelúia. *Matth.* 24.

CAPITULUM. 1 *Tim.* 5.

QUI bene præsunt Presbyteri, dúplici honóre digni habeantur; máximè qui labórant in verbo et doctrína.

HYMNUS.

O SACERDOTUM veneranda jura!
Ceu vices Christi teneant, salútis
Arbitri, claudunt, reserantque nobis
Atria cœli.

Omne pendentes scelus in statéra,
Cùm reum solvunt, Deus ipse solvit;
Cùm ligant sontem, Deus ipse sontis
Víncula nectit.

QUAM manus morbis adhibent perítas!
Cùm secant, semper pia dextra cædit;
Cùm fovent, semper pia lenit ungens
Vúlnera dextra.

Verba dum promunt, populus fidélis
Excipit vocem, cupidus docéri;
Nempe divínæ sacra verba legis
Mente recondunt.

IRRUENS prompti cohibére fulmen,
Stant ab adverso, Dominumque placant,
Víndices in nos quoties ab alto
Dépluit iras.

Dum Sacerdótes tua sacra tractant,
Christe, fac sacris quibus applicasti,
Cónsonent mores, populíque fiat
Forma Sacerdos.

LUMINIS splendor, Patris una proles,
Christe, te pronus venerétur orbis,
Qui Sacerdótes per Amóris almi
Flamen inungis. Amen.

℣. Sacerdótes ejus índuam salutári; ℟. Et sancti ejus exultatióne exultábunt. *Ps.* 131.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 1. D. Euge, serve bone et fidélis: quia super pauca fuisti fidélis, super multa te constituam; intra in gáudium dómini tui. (Allelúia.) *Matth.* 25.

Orémus. Oratio. 1.
Domine Deus omnípotens, qui fámulum tuum *N.* ut sacerdótio tibi fungerétur, à pópulo segregasti: ejus nos intercessióne à peccatóribus ségrega; ut secundùm vocatiónem nostram, gens sancta, et regále sacerdótium coram te efficiámur; Per.

Orémus. Oratio. 2.
Deus, qui in Ecclésiæ tuæ decus et subsídium, beátum *N.* verendo sacerdótii ministério decorasti: præsta ut per quem pópulus tuus Evangélii verbum, et Domínici córporis sacramentum suscépit, ejus patrocínio dignos utriusque fructus percípiat; Per eumdem.

¶ *In Solemnibus et suprà,* ad Horas, *Doxologia:*

Jesu, Sacerdótum decus,
Jugis tibi sit glória,
Cum Patre, cumque Spíritu,
In sempiterna sécula.
Amen.]

AD PRIMAM.

*Ant.* 7. a. Vir Dei.

AD TERTIAM.

*Ant.* 2. D. Ecce.

Capitulum. 1 *Tim.* 4.
Attende tibi, et doctrínæ: insta in illis; hoc enim fáciens, et teipsum salvum fácies, et eos qui te áudiunt.

℟ *br.* Os meum annuntiábit * justítiam tuam, Dómine, * Allelúia, allel. Os. ℣. Pronuntiábo * mirabília tua, * Allelúia. Glória. Os. *Ps.* 70.

℣. Ecce lábia mea non prohibébo, ℟. Dómine, tu scisti. *Ps.* 39.

AD SEXTAM.

*Ant.* 6. F. Scriptus es.

Capitulum. 1 *Tim.* 1.
Gratias ago ei, qui me confortávit, Christo Jesu Dómino nostro, quia fidélem me existimávit, ponens in ministério.

℟ *br.* Tríbuat tibi * secundùm cor tuum, * Allelúia, allelúia. Tríbuat. ℣. Impleat Dóminus * omnes petitiónes tuas, * Allelúia. Glória. Tríbuat.

℣. Memor sit omnis sacrifícii tui; ℟. Et holocaustum tuum pingue fiat. *Ps.* 19.

AD NONAM.

*Ant.* 8. G. Beátus.

Capitulum. 1 *Tim.* 3.
Qui bene ministráverint, gradum bonum sibi acquírent, et multam fidúciam in fide, quæ est in Christo Jesu.

℟ *br.* Hic accípiet * benedictiónem à Dómino, * Allelúia, allelúia. Hic. ℣. Et misericórdiam à Deo * salutári suo; * Allelúia. Glória. Hic. *Ps.* 23.

℣. Beátus quem elegisti, et assumpsisti; ℟. Inhabitábit in átriis tuis. *Ps.* 64.

AD II VESPERAS.

¶ *In Solemnibus et suprà, Psalmi de Dominica, excepto ultimo, cujus loco dicitur* Memento, 110.]

*Ant.* 3. a. Fidélis servus et prudens, quem constítuit Dóminus super família suam, allelúia. *Matth.* 24.

*Ant.* 4. E. De omni corde suo laudávit Dóminum: et dedit in celebratiónibus decus, allelúia. *Eccli.* 47.

*Ant.* 1. D. Obtulit holocausta super altáre; odoratusque est Dóminus odórem suavitátis, allelúia. *Gen.* 8.

*Ant.* 6. F. Confirmávit omnes húmiles pópuli sui, et legem exquisívit, et ábstulit omnem iníquum et malum : sancta glorificávit, allelúia. 1 *Mach.* 14.

*Ant.* 7. *d.* Cógnitus est in verbis suis fidélis; et invocávit Dóminum omnipotentem, in oppugnando hostes circumstantes úndique, in oblatióne Agni invioláti, allelúia. *Eccli.* 46.

Capitulum. *Eccli.* 45.

Beatificavit illum Deus in glória, et circumcinxit eum zonâ glóriæ, et índuit eum stolam glóriæ, et coronávit eum in vasis virtútis.

*Hymnus*, Quantis micas, *ut in I Vesperis*, xxiv.

℣. Dómine, dilexi decórem domûs tuæ : ℟. Et locum habitatiónis glóriæ tuæ. *Ps.* 25.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 5. C. Ubi sum ego, illic et minister meus erit. Si quis mihi ministráverit, honorificábit eum Pater meus, allel. *Joan.* 12.

# COMMUNE ABBATUM,

## MONACHORUM, CŒNOBITARUM,

## ET ANACHORETARUM.

IN I VESPERIS.

*Ant.* 2. D. Quid prodest hómini, si mundum universum lucrétur, ánimæ verò suæ detrimentum patiátur? Allelúia. *Matth.* 16.

*Ant.* 8. c. Si vis perfectus esse, vade, vende quæ habes, et da paupéribus; et habébis thesaurum in cœlo, allelúia. *Matth.* 19.

*Ant.* 6. F. Nemo est qui relíquerit domum, aut agros propter me, qui non accípiat cénties tantùm in témpore hoc, et in século futúro vitam æternam, allelúia. *Marc.* 10.

*Ant.* 3. b. Salva ánimam tuam : noli respícere post tergum; salvum te fac, ne péreas, allelúia. *Genes.* 19.

*Ant.* 7. c. Séquere me, et dimitte mórtuos sepelíre mórtuos suos, allel. *Matth.* 8.

Capitulum. 2 *Cor.* 6.

Exite de médio eórum, et separámini, dicit Dóminus, et immundum ne tetigéritis : et ego recípiam vos; et ero vobis in patrem, et vos éritis mihi in filios.

¶ *In Duplicibus et suprà :*

℟. Susceptor meus es tu, Dómine, et in verbum tuum supersperávi; * Declináte à me, malígni, et † Scrutábor mandáta Dei mei, allelúia, allelúia. ℣. Magister, sequar

te quocumque íeris. * Declináte. Glória. † Scrutábor. *Ps.* 118. *Matth.* 8.]

Hymnus. *S. V.*

Felices nemorum pángimus íncolas,
Certo consilio quos Deus ábdidit,
Ne contágio secli
Mores læderet íntegros.

Ut te possideant, quem sitiunt Deum,
Urbes, regna, suos, se quoque déserunt:
Totus víluit orbis,
Dum cœléstia cógitant.

Nudi, prompti, alacres, líberi ab ómnibus,
Ad luctam pugiles óciùs ádvolant;
Ut vastum mare tranent,
Prudentes onus éxuunt.

Æternas ut opes, cértaque gáudia
Secúri rapiant, ómnia lúdicra
Sano péctore temnunt,
Confísi melióribus.

Illis summa fuit glória, déspici;
Illis divitiæ, pauperiem pati;
Illis summa voluptas,
Longo supplicio mori.

Fac nos, summe Deus, quæ patimur mala,
In pœnam scelerum ferre libéntiùs;
Et, tellúre relictâ,
Immortália quærere.

Æternus sit honos ingenito Patri;
Sit par unigenæ glória Fílio:
Sacri nexus amóris,
Laus compar tibi, Spíritus.
Amen.

*Si sit Abbas,* ℣. Potens in terra erit semen ejus: ℟. Generátio rectórum benedicétur. *Ps.* 111.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 8. G. Egrédere de cognatióne tua, et de domo patris tui: et veni in terram quam monstrábo tibi: faciamque te in gentem magnam, et benedícam tibi, allelúia. *Genes.* 12.

*Si non sit Abbas,* ℣. In umbra alárum tuárum sperábo, ℟. Donec tránseat iníquitas. *Ps.* 56.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 4. D. Reliquisti parentes tuos: plenam mercédem recípias à Dómino Deo, ad quem venisti, et sub cujus confugisti alas, allelúia. *Ruth* 2.

¶ *In Solemnibus et suprà,* AD COMPLETORIUM: *Ant.* 4. c. Qui hábitant in deserto, secúri dórmient in sáltibus; et ponam eos in circúitu collis mei benedictiónem, allelúia. *Ezech.* 34.

*Doxologia,* Æterna laus, *infrà* xxxij.

*Ad* Nunc dimittis. *Ant.* 2. A. Habitábit in solitúdine judícium; et erit opus justítiæ pax, et cultus justítiæ siléntium, et secúritas usque in sempiternum, allel. *Is.* 32.]

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invitat.* Remuneratórem inquiréntibus se, Deum, * Veníte, adorémus, all. *Hebr.* 11.

*Hymnus,* Felíces, *ut in I Vesperis.*

---

¶ *In Solemnibus et suprà, Psalmi,* Beatus vir, 1. Domine, ne in furore.... Miserere, 36.

Exaudi, Domine *cum sua divisione,* 101.

*Ant.* 3. c. Ecce nos relíquimus ómnia, et secúti sumus te, allelúia. *Matth.* 19.

*Ant.* 7. c. Esurímus, et sitímus, et nudi sumus, et laborámus operantes mánibus nostris, allelúia. 1 *Cor.* 4.

*Ant.* 2. D. Non defícimus, *infrà.*]

---

*In Duplicibus et infrà, Psalmi sub sola Ant.* 2. D. Non defícimus : sed licèt is qui foris est, noster homo corrumpátur; tamen is qui intus est, renovátur de die in diem, allelúia. 2 *Cor.* 4.

℣. Rédimit Dóminus de intéritu vitam tuam : ℟. Renovábitur ut áquilæ juventus tua. *Ps.* 102.

℟ *j.* Exeámus ad Jesum extra castra, impropérium ejus portantes; * Non enim habémus hic manentem civitátem, sed futúram inquírimus, allelúia, allelúia. ℣. Peregríni sumus coram te, Deus: dies nostri quasi umbra super terram; * Non. Glória. * Non enim. *Hebr.* 13. 1 *Paral.* 29.

℟ *ij.* Non secundùm carnem ambulámus, sed secundùm spíritum; quóniam sapiéntia carnis inimíca est Deo : * Qui autem in carne sunt, Deo placére non possunt, allelúia, allelúia. ℣. Excelsus Deus, et hábitans cum contríto et húmili spíritu; ut vivíficet spíritum humílium, et vivíficet cor contritórum: * Qui autem. *Rom.* 8. *Is.* 57.

℟ *iij.* Quæ mihi fuérunt lucra, hæc arbitrátus sum propter Christum detrimenta; * Ut invéniar in illo habens justítiam quæ ex fide est, configurátus morti ejus, allelúia, allelúia. ℣. Elégi abjectus esse in domo Dei mei, magìs quàm habitáre in tabernáculis peccatórum; * Ut. Glória. * Ut. *Philip.* 3. *Ps.* 83.

℣ *Sacerd.* Benedícite, sancti, et húmiles corde, Dómino : ℟. Laudáte, et superexaltáte eum in sécula. *Dan.* 3.

AD LAUDES.

*Ant.* 7. d. Perféctio tua, Dómine, et doctrína tua viro sancto tuo, qui dixit patri suo et matri suæ : Néscio vos; et frátribus suis : Ignóro vos, allelúia. *Deut.* 33.

*Ant.* 1. *g.* Non sedi in concílio ludéntium; solus sedébam, quóniam comminatióne replesti me, allel. *Jer.* 15.

*Ant.* 3. b. Exui me stolà pacis, índui autem me sacco obsecratiónis; et venit mihi gáudium à Sancto, allelúia. *Baruch* 4.

CANTICUM. *Is.* 35.

Scissæ sunt in deserto aquæ, * et torrentes in solitúdine.

Et quæ erat árida, erit in stagnum, * et sítiens in fontes aquárum.

In cubílibus, in quibus priùs dracónes habitábant, * oriétur viror cálami et junci.

Et erit ibi sémita et via, et via sancta vocábitur : * non transibit per eam pollútus.

Et hæc vobis erit directa

via; * ita ut stulti non errent per eam.

Non erit ibi leo, et mala béstia non ascendet per eam,* nec inveniétur ibi.

Et ambulábunt qui liberáti fúerint; * et redempti à Dómino convertentur.

Et vénient in Sion cum laude; * et lætítia sempiterna super cápita eórum.

Gáudium et lætítiam obtinébunt; * et fúgiet dolor et gémitus.

*Ant.* 4. a. Mihi mundus crucifixus est, et ego mundo, allelúia. *Galat.* 6.

*Ant.* 8. *G.* In voce laudis immolábo tibi: quæcumque vovi, reddam pro salúte Dómino, allelúia. *Jonæ* 2.

CAPITULUM. *Isai.* 51.

CONSOLABITUR Dóminus Sion, et consolábitur omnes ruínas ejus: et ponet desertum ejus quasi delícias, et solitúdinem ejus quasi hortum Dómini. Gáudium et lætítia inveniétur in ea, gratiárum áctio, et vox laudis.

### PRO ABBATE, MONACHO, ET COENOBITA.

HYMNUS. *S. V.*

O PULCRAS acies, cástraque fórtia,
Quæ spes, una fides, unus amor regit!
Omnes lege sub una,
Uno sub duce mílitant.

Heu! quantis rapiunt astra labóribus!
Pulsant perpetuis quéstibus æthera;
Per jejúnia longa
Vires córporis átterunt.

VOTIS unanimes, vi quoque flétuum
Instant, et socias ingeminant preces,
Et concórdibus armis
Vim cœlo simul ínferunt.

Hæc vis grata Deo; sic amat óptimus
Vinci per lacrymas, per gemitus, Pater;
Sic duris reserátur
Cœlum conditiónibus.

FERVENT quando die cuncta tumúltibus,
Altum turba silet; cétera dum tacent,
Hi per cántica rumpunt
Noctis longa siléntia.

Exercet vigiles continuus labor;
Incumbunt operi non resides manus;
Tellus culta colónis
Victum suppeditat suis.

QUIN regína suî mens quoque súbditur,
Rectorisque studet nútibus óbsequi;
Nil servat sibi juris,
Capto liberior jugo.

Æternus sit honos ingenito Patri;
Sit par unigenæ glória Fílio:
Sacri nexus amóris,
Laus compar tibi, Spíritus.
Amen.

### PRO ANACHORETA ET SOLITARIO.

HYMNUS. *S. V.*

QUID tu, relictis úrbibus,
Mortálium consórtia
Timens fugis? quid tu vides?
Solusque tecum cógitas?

Mentis volátu líbero,
Percurris æternas domos;

Et quæ negas mortálibus,
Transfers Deo commércia.

Præsens choris cœléstibus,
Sacro quiétus ótio,
Totus tuendo Númini,
Totus colendo tu vacas.

Quàm pura, qui te díligunt,
O Christe, libant gáudia!
Te propter antris ábditos
Sinu recondis in tuo.

Ætérna laus et glória
Uni sit et trino Deo,
Terréna qui calcántibus
Se pródigus dat præmium.
Amen.

*Si sit Abbas*, ℣. Veníte, fílii; audíte me: ℟. Timórem Dómini docébo vos. *Ps*. 33.

*Ad* Benedictus. *Ant*. 1. *D*. Ecce ego et púeri mei, quos dedit mihi Dóminus in signum et in portentum Israel à Dómino exercítuum, qui hábitat in monte Sion. (Allelúia.) *Is*. 8.

Orémus. Oratio. 1.

Deus, cujus múnere beátus *N*. Abbas Christum páuperem sequi, et húmilem corde usque in finem perseverávit imitári: da cunctis sémitam mandatórum tuórum ingressis, ut nec retrò aspíciant, nec in via hæreant; sed ad te sine offensióne currentes, vitam ætérnam apprehendant; Per eumdem.

Orémus. Oratio. 2.

Da nobis, quæsumus, Deus noster, beáti Abbátis *N*. intercessiónibus sublevári: ut per quem servis tuis perfectiónis evangélicæ documenta donasti, per eum nobis subsídia perpétuæ salútis impendas; Per Dóminum.

*Si non sit Abbas*, ℣. Clamávi ad te, Dómine, dixi: Tu es spes mea, ℟. Pórtio mea in terra vivéntium. *Ps*. 141.

*Ad* Benedictus. *Ant*. 5. C. Pars mea Dóminus, dixit ánima mea. Bonus est Dóminus ánimæ quærenti illum. Bonum est præstolári cum siléntio salutáre Dei. (Allelúia.) *Thren*. 3.

Orémus. Oratio. 1.

Omnipotens sempitérne Deus, terréna pro te calcántium merces magna nimis: da nobis, exemplo et intercessióne beáti *N*. cujus hódie tránsitum celebrámus, temporália ómnia despícere, et ad ætérna, totà mentis intentióne, festináre; Per Dóminum nostrum.

Orémus. Oratio. 2.

Quærentium te, Dómine, salvátor et custos, qui beáto *N*. ne párticeps esset coinquinatiónis, renuntiáre século, et sub alas tuas confúgere tribuisti: ejus intercessióne da pópulo tuo diabólica vitáre contágia, et te solum Dóminum purâ mente sectári; Qui vivis.

¶ *In Solemnibus et suprà*, ad Horas, *Doxologia:*

Ætérna laus et glória
Uni sit et trino Deo,
Terréna qui calcántibus
Se pródigus dat præmium.
Amen.]

## AD PRIMAM.

*Ant*. 7. d. Perféctio.

AD TERTIAM.

*Ant.* 1. *g.* Non sedi.

CAPITULUM. 1 *Joan.* 2.

Si quis díligit mundum, non est cáritas Patris in eo; quóniam omne quod est in mundo, concupiscéntia carnis est, et concupiscéntia oculórum, et supérbia vitæ, quæ non est ex Patre, sed ex mundo est. Et mundus transit, et concupiscéntia ejus; qui autem facit voluntátem Dei, manet in æternum.

℟ *br.* Elongávi fúgiens: * mansi in solitúdine, * Allelúia, allel. Elongávi. ℣. Quóniam vidi iniquitátem * et contradictiónem in civitáte. * Allelúia. Glória. Elongávi. *Ps.* 54.

℣. Confíge timóre tuo carnes meas; ℟. A judíciis enim tuis tímui. *Ps.* 118.

AD SEXTAM.

*Ant.* 3. b. Exuì me.

CAPITULUM. *Hebr.* 12.

Omnis disciplína in præsenti quidem vidétur non esse gáudii, sed mœróris; póstea autem fructum pacatíssimum exercitátis per eam, reddet justítiæ.

℟ *br.* Propter verba labiórum tuórum * ego custodívi vias duras, * Allelúia, allel. Propter. ℣. Pérfice gressus meos * in sémitis tuis. * Allelúia. Glória Patri. Propter. *Ps.* 16.

℣. Induébar cilício: ℟. Humiliábam in jejúnio ánimam meam. *Ps.* 34.

AD NONAM.

*Ant.* 8. *G.* In voce laudis.

CAPITULUM. *Eccli.* 51.

Videte óculis vestris quia módicùm laborávi, et invéni mihi multam réquiem. Assúmite disciplínam in multo número argenti, et copiósum aurum possidéte in ea. Lætétur ánima vestra in misericórdia ejus; et non confundémini in laude ipsíus.

℟ *br.* Séptíes in die * laudem dixi tibi, * Allelúia, allelúia. Sépties. ℣. Super judícia * justítiæ tuæ. * Allelúia. Glória. Sépties.

℣. Cantábiles mihi erant justificatiónes tuæ, ℟. In loco peregrinatiónis meæ. *Ps.* 118.

AD II VESPERAS.

¶ *In Solemnibus et suprà, Psalmi,* Dixit Dominus, 18. Levavi, 35. Ad te levavi, 64. Qui confidunt, 65. Voce... voce meà ad Dominum, 50.]

*Ant.* 2. D. Sumus húmiles in universa terra, Dómine: sed in ánimo contríto et spíritu humilitátis suscipiámur; quóniam non est confúsio confidéntibus in te, allelúia. *Dan.* 3.

*Ant.* 8. G. Non derelínquimur, semper mortificatiónem Jesu in córpore nostro circumferentes; ut et vita Jesu manifestétur in carne nostra mortáli, allelúia. 2 *Corinth.* 4.

*Ant.* 6. F. Quasi morientes, et ecce vívimus; quasi tristes, semper autem gaudentes; tanquam nihil habentes, et ómnia possidentes, allelúia. 2 *Cor.* 6.

*Ant.* 7. d. Omnes unáni-

...

mes, compatientes, fraternitátis amatóres, misericordes, modesti, húmiles, allelúia. 1 *Petr.* 3.

*Ant.* 4. *D.* Teneámus spei nostræ confessiónem indeclinábilem, (fidélis enim est qui repromísit) et considerémus ínvicem in provocatiónem caritátis et bonórum óperum, allelúia. *Hebr.* 10.

CAPITULUM. *Deut.* 7.

DOMINUS Deus ipse est fortis et fidélis, custódiens pactum et misericórdiam diligéntibus se, et his qui custódiunt præcepta ejus in mille generatiónes.

*Hymnus,* Felíces nemorum, xxix.

*Si sit Abbas,* ℣. Justus ut palma florébit, ℟. Sicut cedrus Líbani multiplicábitur. *Ps.* 91.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 1. D. Atténdite ad patrem vestrum, qui sequímini quod justum est, et quæritis Dóminum: quia unum vocávi eum, et benedixi ei, et multiplicávi eum, allelúia. *Is.* 51.

*Si non sit Abbas,* ℣. Plantáti in domo Dómini, florébunt; ℟. Ut annúntient quóniam rectus Dóminus. *Ps.* 91.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 3. E. Scimus quóniam si terrestris domus nostra dissolvátur, ædificatiónem ex Deo habémus æternam in cœlis: nam et in hoc ingemíscimus, habitatiónem nostram quæ de cœlo est, superíndui cupientes, allelúia. 2 *Cor.* 5.

# COMMUNE JUSTORUM.

IN I VESPERIS.

*Ant.* 7. a. Dicébat Jesus ad omnes: Si quis vult post me veníre, ábneget semetipsum, et tollat crucem suam quotídie, et sequátur me, allelúia. *Luc.* 9.

*Ant.* 2. D. Dico vobis: Nisi abundáverit justítia vestra plusquam Scribárum et Pharisæórum, non intrábitis in regnum cœlórum, allelúia. *Matth.* 5.

*Ant.* 6. *C.* Nisi conversi fuéritis, et efficiámini sicut párvuli, non intrábitis in regnum cœlórum, allelúia. *Matth.* 18.

*Ant.* 8. G. Non omnis qui dicit mihi: Dómine, Dómine, intrábit in regnum cœlórum; sed qui facit voluntátem Patris mei qui in cœlis est, ipse intrábit in regnum cœlórum, allelúia. *Matth.* 7.

*Ant.* 4. *D.* Conténdite intráre per angustam portam; quia multi, dico vobis, quærent intráre, et non póterunt, allelúia. *Luc.* 13.

CAPITULUM. *Eccli.* 2.

QUI timétis Dóminum, crédite illi; et non evacuábitur merces vestra. Qui timétis Dóminum, speráte in illum: et in oblectatiónem véniet vo-

bis misericórdia. Qui timétis Dóminum, dilígite illum: et illuminabuntur corda vestra.

¶ *In Duplicibus et suprà.*

℟. Qui timent Dóminum, non erunt incredíbiles verbo illíus; et * Qui díligunt illum, conservábunt viam illíus, allelúia, allel. ℣. Plenitúdo legis est diléctio. * Qui. Glória Patri. * Qui. *Eccli.* 2. *Rom.* 13.]

HYMNUS. *G. Ep. S.*

SUMMI pusillus grex Patris,
Timóre mentem sólvite;
Sui paternus vos amor
Vult esse regni cómpotes.

En regnat inter cœlites,
Qui vixit olim século
Ignótus, exósus sibi;
Qui pauper, et sciens pati.

ANGUSTA pœniténtiæ
Ingressus, et viam crucis,
Per dura Christum prælia,
Per damna non timet sequi.

Carnem terit jejúniis;
Linguam domat siléntio:
In páuperum, parcus sibi,
Abscondit et spargit sinu.

SAPORE verbi páscitur;
Totóque legem péctore
Scrutátus, orat pérvigil;
Mens celsa versátur polo.

Hâc surgit ad cœlum viâ:
Et nos eâdem da, Pater,
Da, Nate, da cum Spíritu,
Ad te veníre sémitâ.

Amen.

℣. Sperent in te qui novérunt nomen tuum; ℟. Quóniam non dereliquisti quærentes te, Dómine. *Ps.* 9.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 1. J. Qui confídunt in Dómino, intélligent veritátem: et fidéles in dilectióne acquiescent illi; quóniam donum et pax est electis ejus, allel. *Sap.* 3.

¶ *In Solemnibus et suprà,* AD COMPLETORIUM. *Ant.* 2. A. Vigiláte, et estóte paráti; quia quâ nescítis horâ Fílius hóminis ventúrus est, allelúia. *Matth.* 24.

*Doxol.* ¶ Fons sanctitátis, *infrà* xxxvij.

*Ad* Nunc dimittis. *Ant.* 6. C. Oculus non vidit, Deus, absque te, quæ præparasti expectántibus te, allel. *Is.* 62.]

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invitat.* Diligentem justos Dóminum, * Veníte, adorémus, allelúia. *Ps.* 145.

HYMNUS. *S. V.*

NON parta solo sánguine
Ornat beátos púrpura:
Sunt incruenta, quæ suos
Habent triumphos, prælia.

Non iste flammas, non cruces,
Non sensit uncos péctines:
Crudélis et durus sibi
Se morte lentâ cónficit.

SI lictor illi défuit,
Si vincla, fustes, úngulæ;
Paráta pro Christo mori
Hoc supplet omne cáritas.

Corpus subégit cástitas,
Et líberam mentem fides;
Amor supernis ígnibus
Totam litávit hóstiam.

VENIS apertis ómnibus,
Qui vellet ultro crúmpere,
Fraudátus optátâ viâ,
It fusus in fletum cruor.

Da, Christe, sic nos vívere,
Discámus ut semper mori:
Da, post brevis vitæ dies,
Vitæ perennis gáudia.

Fons sanctitátis, ô Deus,
Æterna Justórum quies,
Honor tibi, laus, glória,
Nunc et per omne séculum.
Amen.

¶ *In Solemnibus et suprà, Psalmi,* Beatus vir, 1. Verba mea, 57. Domine, Dominus noster, 30.

*Ant.* 8. G. Turris fortíssima nomen Dómini : ad ipsum currit justus, et exaltábitur, allelúia. *Prov.* 18.

*Ant.* 6. F. Deridétur justi simplícitas : lampas contempta apud cogitatiónes divitum, paráta ad tempus statútum, allelúia. *Job* 12.

*Ant.* 5. a. Benedíctio Dei in mercédem justi festínat, et in hora velóci processus illíus fructíficat, allelúia. *Eccli.* 11.]

*In Duplicibus et infrà, Psalmi sub sola Ant.* 2. D. Beáti qui lugent; quóniam ipsi consolabuntur, allelúia. *Matth.* 5.

℣. In nómine tuo exultábunt justi, Dómine, ℟. Et in justítia tua exaltabuntur. *Ps.* 88.

℟ *j.* Omnis qui venit ad me, et audit sermónes meos, et facit eos, ostendam vobis cui símilis sit : * Símilis est hómini ædificanti domum, qui † Fodit in altum, et pósuit fundamentum super petram, allelúia, allel. ℣. Beátus homo, cui donátum est habére timórem Dei : qui tenet illum, cui assimilábitur? * Símilis. *Luc.* 6. *Eccli.* 25.

℟ *ij.* Quàm magnus qui invénit sapiéntiam et sciéntiam ! sed * Non est super timentem Dóminum, allelúia, allel. ℣. Mundémus nos ab omni inquinamento carnis et spíritûs, perficientes sanctificatiónem in timóre Dei. * Non est. *Eccli.* 25. 2 *Cor.* 7.

℟ *iij.* Sapiéntia justum deduxit per vias rectas, et ostendit illi regnum Dei; et * Dedit illi sciéntiam sanctórum : † Honestávit illum in labóribus, et complévit labóres illíus, allelúia, allel. ℣. Regnum Dei justítia est, et pax in Spíritu sancto : qui in hoc servit Christo, placet Deo. * Dedit. Glória. † Honestávit. *Sap.* 10. *Rom.* 14.

℣ *Sacerd.* Benedícite, servi Dómini, Dómino ; ℟. Laudáte et superexaltáte eum in sécula. *Dan.* 3.

## AD LAUDES.

*Ant.* 1. f. Ante Dóminum, qui elégit me, vílior fiam plusquam factus sum ; et ero húmilis in óculis meis, allelúia. 2 *Reg.* 6.

*Ant.* 8. c. Semper quasi tumentes super me fluctus tímui Deum, et pondus ejus ferre non pótui, allel. *Job* 31.

*Ant.* 4. d. A mandátis labiórum ejus non recessi, et in sinu meo abscondi verba oris ejus, allelúia. *Job* 23.

CANTICUM. *Prov.* 10 *et* 11.

BENEDICTIO Dómini super caput justi : * os autem impiórum óperit iníquitas.

Memória justi cum láudibus : * et nomen impiórum putrescet.

Opus justi ad vitam; * fructus autem ímpii ad peccátum.

Argentum electum, lingua justi : * cor autem impiórum pro níhilo.

Quasi tempestas tránsiens non erit ímpius : * justus autem quasi fundamentum sempiternum.

Timor Dómini appónet dies : * et anni impiórum breviabuntur.

Expectátio justórum lætítia : * spes autem impiórum períbit.

Non próderunt divítiæ in die ultiónis : * justítia autem liberábit à morte.

Justítia símplicis díriget viam ejus : * et in impietáte sua córruet ímpius.

Justítia rectórum liberábit eos : * et in insídiis suis capientur iníqui.

*Ant.* 5. a. Ambulávit pes meus iter rectum : zelátus sum bonum, et non confundar, allelúia. *Eccli.* 51.

*Ant.* 3. *á.* Donec súperest hálitus in me, non loquentur lábia mea iniquitátem, nec lingua mea meditábitur mendácium, allelúia. *Job* 27.

CAPITULUM. 2 *Cor.* 1.

GLORIA nostra hæc est, testimónium consciéntiæ nostræ, quòd in simplicitáte cordis et sinceritáte Dei, et non in sapiéntia carnáli, sed in grátia Dei conversáti sumus in hoc mundo.

HYMNUS. *S. V.*

QUI te, Deus, sub íntimo
Amans recépit péctore.
Non ille terras ámpliùs
Suspírat, oblítus suî.

Quid ergo gaudes néctere
Tristes moras amántibus?
Terris retardas éxules,
Cives polo quos déstinas.

Hinc fervet in dies amor;
In vota toti díffluunt :
Ad astra festinántibus
Fit pœna vita lóngior.

Vix iste tardi córporis
Pondus molestum sústinet;
Præ mortis óccupat diem,
Ardens Deo se júngere.

¶ FONS sanctitátis, ô Deus,
Æterna Justórum quies,
Honor tibi, laus, glória,
Nunc et per omne séculum.
Amen.

℣. Proba me, Deus, et vide si via iniquitátis in me est; ℟. Et deduc me in via æterna. *Ps.* 138.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 1. D. Qui facit veritátem, venit ad lucem, ut manifestentur ópera ejus; quia in Deo sunt facta. (Allelúia.) *Joan.* 3.

Orémus. ORATIO.

FAC, quæsumus, Dómine Deus noster, intercedente beáto *N.* pópulum tuum in tua dilectióne ambuláre; quia perpétua est et plena felícitas, si bonórum ómnium serviámus auctóri; Per Dóminum.

¶ *In Solemnibus et suprà,* AD HORAS, *Doxologia,* ¶ Fons sanctitátis, *ut in Laudibus.*]

## AD PRIMAM.

*Ant.* 1. f. Ante Dóminum.

## AD TERTIAM.

*Ant.* 8. c. Semper.

CAPITULUM. *Philip.* 2.

Cum metu et tremóre vestram salútem operámini; Deus est enim qui operátur in vobis et velle et perfícere, pro bona voluntáte.

℟ *br.* Convertantur mihi * timentes te, Dómine, * Allelúia, allelúia. Convertantur. ℣. Et qui novérunt * testimónia tua, * Allelúia. Glória. Convertantur.

℣. Párticeps ego sum ómnium timéntium te, ℟. Et custodiéntium mandáta tua. *Ps.* 118.

## AD SEXTAM.

*Ant.* 4. d. A mandátis.

CAPITULUM. *Jac.* 1.

Qui perspéxerit in legem perfectam libertátis, et permánserit in ea, non audítor obliviósus factus, sed factor óperis; hic beátus in facto suo erit.

℟ *br.* Lucerna pédibus meis * verbum tuum, Dómine, * Allelúia, allelúia. Lucerna. ℣. Et lumen * sémitis meis, * Allelúia. Glória. Lucerna.

℣. Servávi mandáta tua et testimónia tua; ℟. Quia omnes viæ meæ in conspectu tuo. *Ps.* 118.

## AD NONAM.

*Ant.* 3. *a.* Donec súperest.

CAPITULUM. *Eccli.* 15.

Justitia longè abest à supérbia et dolo: viri mendáces non erunt illíus mémores; et viri veráces invenientur in illa, et successum habébunt usque ad inspectiónem Dei.

℟ *br.* Justítia tua, Dómine, * justítia in æternum, * Allelúia, allelúia. Justítia tua. ℣. Et lex tua, * véritas; * Allelúia. Glória. Justítia tua.

℣. Ne áuferas de ore meo verbum veritátis usquequáque; ℟. Quia in judíciis tuis supersperávi. *Ps.* 118.

## AD II VESPERAS.

¶ *In Solemnibus et suprà, Psalmi,* Dixit Dominus, 18. Beatus vir, 19. Laudate, pueri 19. Qui confidunt, 65. Domine, non est exaltatum, 65.]

*Ant.* 6. F. Ecce verè Israelíta, in quo dolus non est, allelúia. *Joan.* 1.

*Ant.* 4. f. Erat vir simplex, et rectus, ac timens Deum, et recédens à malo, allel. *Job* 1.

*Ant.* 1. D. Custodívit ánimam suam, et memor fuit Dómini in toto corde suo, allelúia. *Tob.* 1.

*Ant.* 3. a. Non prætériit de universis mandátis, nec unum quidem verbum quod jússerat Dóminus, allelúia. *Josue* 11.

*Ant.* 5. C. Immóbilis in Dei timóre permansit, agens grátias Deo ómnibus diébus vitæ suæ, allelúia. *Tob.* 2.

CAPITULUM. *Galat.* 6.

Fratres, quæ semináverit homo, hæc et metet. Quóniam qui séminat in carne sua, de carne et metet corruptiónem: qui autem séminat in spíritu, de spíritu metet vitam ætternam.

*Hymnus ut in I Vesp.* xxxv.

℣. Innocens mánibus et

mundo corde, ℟. Hic accípiet benedictiónem à Dómino. *Ps.* 23.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 7. G. Tu fecisti, Dómine, cum servo tuo misericórdiam magnam, sicut ambulávit in conspectu tuo in veritáte, et justítia, et recto corde tecum. allelúia. 3 *Reg.* 3.

# COMMUNE VIRGINUM.

## IN I VESPERIS.

*Ant.* 3. a. Quid Dómini bonum est, et quid pulcrum ejus, nisi frumentum electórum, et vinum gérminans vírgines? Allelúia. *Zach.* 9.

*Ant.* 6. F. Laudábunt, et cónfluent ad bona Dómini; et ultrà non esúrient: tunc lætábitur virgo in choro, allelúia. *Jerem.* 31.

*Ant.* 5. a. Non dicat: Ecce ego lignum áridum; quia hæc dicit Dóminus: Qui tenúerint fœdus meum, dabo eis in domo mea locum, allel. *Is.* 56.

*Ant.* 1. D. Dabo eis nomen mélius à fíliis et filiábus: nomen sempiternum dabo eis, quod non períbit, allelúia. *Is.* 56.

*Ant.* 7. a. Non omnes cápiunt verbum istud, sed quibus datum est, allelúia. *Matthæi* 19.

Capitulum. 1 *Cor.* 7.

Unusquisque próprium donum habet ex Deo: álius quidem sic, álius verò sic. Dico autem non nuptis, et víduis: Bonum est illis, si sic permáneant.

¶ *In Duplicibus, et suprà:*

℟. Nescítis quóniam córpora vestra membra sunt Christi? membra vestra templum sunt Spíritûs sancti, qui in vobis est. * Glorificáte, et † Portáte Deum in córpore vestro, allelúia, allel. ℣. Ponam tabernáculum meum in médio vestrî: ambulábo inter vos, et ero Deus vester: * Glorificáte. Glória. † Portáte. 1 *Cor.* 6. *Levit.* 26.]

*Pro Virgine et Martyre*

Hymnus. *S. V.*

O vos cum citharis dulce sonántibus,
Cœtus Angelici, dícite Vírginem;
Nunc aptáte tubas, súmite tympana,
Christi dícite Mártyrem.

Vestris illa fuit débita cœtibus,
Quæ mortális adhuc, nóbilis æmula,
Ut vos exprimeret, dedidicit genus,
Virgo córporis ímmemor.

Quid non cogis, amor? Fórtiter ámbiit
Sponso virgineum fúndere sánguinem:
Obliti meminit tunc bene córporis,
Præclárae sitiens necis.

Sic quâ parte minor, vos superéminet,

Immortále genus, quæ potuit mori,
Et per damna sui córporis, íntegram
Testári Domino fidem.
PATRI máxima laus, máxima Fílio,
Amborumque sacro máxima Flámini,
Cujus præsidio prælia sústinent,
Spreto fúnere, Vírgines. Amen.

℣. Deus præcinxit me virtúte, ℟. Et pósuit immaculátam viam meam. *Ps.* 17.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 4. E. Infirma mundi elégit Deus, ut confundat fórtia; ut non gloriétur omnis caro in conspectu ejus, allel. 1 *Cor.* 1.

*Si non sit Martyr,*

HYMNUS.

Vos ô virginei cum citharis chori,
Agni deliciæ, pars gregis óptima,
Sponsum virgineo progenitum sinu
Puris tóllite láudibus.
Hæc est sacra dies, óbvia quâ suo
Cum plena rutilans lámpade júngitur
Sponso, stansque throno próxima, cóncinit
Virgo cántica Vírgini.
Solo digna Deo cónjuge, réspuit
Mortáles thalamos; ut semel óbligat
Sese fida suo, quem bene déperit,
Ultro se Deus óbligat.
Purum ne maculent pectus imágines,
In se tota sui córporis immemor
Mens sese recipit; nil oculi vident,
Surdis nil sonat áuribus.
ÆGRO vix sua sunt pábula córpori,
Ardet mille modis ante diem mori:
Quidquid mors rapiet, jam sibi præripit;
Unus fit Deus ómnia.
Fac, ô Christe, tuæ Vírginis æmulos
Hâc nos ire tibi, quâ graditur, viâ:
Qui gens sancta sumus, móribus íntegris
Fac soli tibi vívere.
DA te, summe Pater, tóllere láudibus:
Da te, Christe, sequi, láurea Vírginum;
Fac incensa tuis, Spíritus, árdeant
Flammis frígida péctora. Amen.

℣. Audi, fília, et vide; et inclína aurem tuam: ℟. Obliviscere pópulum tuum, et domum patris tui. *Ps.* 44.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 8. G. Complácuit Dómino in te: et gaudébit super te Deus tuus, allelúia. *Is.* 62.

¶ *In Solemnibus et suprà*, AD COMPLETORIUM. *Ant.* 2. A. Ego dilecto meo; et ad me convérsio ejus, allel. *Cant.* 7.

*Doxologia*, Æterne Sponse. *infrà*, xliv.

*Ad* Nunc dimittis. *Ant.* 3. E. Vox dilecti mei pulsantis:

Aperi mihi, soror mea, immaculáta mea, allel. *Cant.* 5.]

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invitat.* Agnum quem sequuntur Vírgines, * Veníte, adorémus, allelúia. *Apoc.* 14.

*Pro Virgine et Martyre*

HYMNUS. *S. V.*

VIRGINUM robur, Deus, atque custos:
Sexus imbellis, medios per enses,
Dum faves, quas non superat viríli
Péctore mortes!

Pro tuis aris animósa Virgo
Molle dat pœnis laceráre corpus;
Non suos sentit, memor, ô! tuórum,
Christe, dolórum.

NON graves plagæ, validi nec ictus
Integram possunt violáre mentem;
Quin sacri crescit magis obstinátus
Ardor amóris.

Sponsa dilecto placitúra Sponso,
Déspicit ruptum laniáta corpus:
Est suus truncis honor, et venustas
Est sua membris.

OMNIS à recto fluit ille splendor:
Christe, sic olim cruce tensus altâ,
Obsequens Patri, laceros placébas
Hórridus artus.

Summa laus Patri, genitóque Verbo;
Et tibi compar, utriusque Nexus:
Fac tibi semper placeámus uni
Móribus æquis.
Amen.

*Si non sit Martyr,*

HYMNUS. *S. V.*

CŒLESTIS aula pánditur:
En Sponsus; omnes óbviæ
Exíte Sponso vírgini,
Exíte, sponsæ Vírgines.

Hæc nuptiális est dies,
Quæ, longa post suspíria,
Dat ómnibus, dat síngulis
Jam plénius frui Deo.

QUÆ casta vobis gáudia,
Quos afflet ignes, dícite:
Ab ore cujus púrior
Torrens voluptas éffluit.

Hunc propter unum víluit
Superba regum púrpura:
Dotáta quæ sponso Deo,
Quid virgo terris ámbiat?

O VIRGINALES núptiæ,
Per quas caro fit spíritus!
O dulce vinclum, júngitur
Quo mens Deo, menti Deus!

Sit laus Patri, laus Fílio;
Sit par tibi laus, Spíritus,
Divína qui perénnibus
Firmas sigillis fœdera.
Amen.

---

¶ *In Solemnibus et suprà, Psalmi,* Domine, Dominus noster, 30. Cœli enarrant *cum sua div.* 38. Domini est terra, 41.]

*Ant.* 6. F. Grátia cum ómnibus qui díligunt Dóminum nostrum Jesum Christum in incorruptióne, allel. *Ephes.* 6.

*Ant.* 3. *a.* Incorrúptio facit esse próximum Deo, allelúia. *Sap.* 6.

*Ant.* 1. a. Omnis ponderátio non est digna continentis ánimæ, allel. *Eccli.* 26.]

*In Duplicibus et infrà, Psalmi sub sola Ant.* 7. d. Cantábant quasi cánticum novum ante sedem; vírgines enim sunt, allelúia. *Apoc.* 14.

℣. Collaudáte cánticum, et benedícite Dóminum: ℟. Date nómini ejus magnificéntiam, et confitémini illi. *Cant. Eccli.* 39.

℟ *j.* O quàm pulcra est casta generátio cum claritáte! * Immortális est enim memória illíus; quóniam et apud Deum nota est, et apud hómines, allelúia, allel. ℣. Relígio munda apud Deum et Patrem, hæc est: immaculátum se custodíre ab hoc século. * Immortális. *Sap.* 4. *Jac.* 1.

℟ *ij.* Felix est stérilis; * Et incoinquináta habébit fructum in respectióne animárum sanctárum, allelúia, allelúia. ℣. Deus reddet iis, qui secundùm patiéntiam boni óperis incorruptiónem quærunt, vitam æternam; * Et. *Sap.* 3. *Rom.* 2.

℟ *iij.* Dábitur illi sors in templo Dei acceptíssima; * Bonórum enim labórum gloriósus est fructus, et quæ non cóncidat radix sapiéntiæ, allelúia, allelúia. ℣. Beáti mundo corde, quóniam ipsi Deum vidébunt; * Bonórum. Glória. * Bonórum. *Sap.* 3. *Matth.* 5.

℣ *Sacerd.* Cantábo tibi, Dómine: ℟. Psallam, et intélligam in via immaculáta. *Ps.* 100.

## AD LAUDES.

*Ant.* 1. g. Dilectus meus descendit in hortum suum ad aréolam arómatum, ut lília cólligat, allelúia. *Cant.* 6.

*Ant.* 5. a. Invéni quem díligit ánima mea: ténui eum, nec dimittam, allel. *Cant.* 3.

*Ant.* 2. D. Ego dilecto meo, et dilectus meus mihi, qui páscitur inter lília, allelúia. *Cant.* 6.

CANTICUM. *Is.* 61.

GAUDENS gaudébo in Dómino, * et exultábit ánima mea in Deo meo:

Quia índuit me vestimentis salútis; * et indumento justítiæ circúmdedit me,

Quasi sponsum decorátum coróna, * et quasi sponsam ornátam monílibus suis.

Sicut enim terra profert germen suum, * et sicut hortus semen suum gérminat;

Sic Dóminus Deus germinábit justítiam, * et laudem coram universis géntibus.

*Ant.* 6. *C.* Dilectus meus ordinávit in me caritátem: fulcíte me flóribus, stipáte me malis, allelúia. *Cant.* 2.

*Ant.* 3. a. Sub umbra illíus quem desideráveram, sedi: et fructus ejus dulcis gútturi meo, allelúia. *Cant.* 2.

CAPITULUM. *Sap.* 8.

UT scivi quóniam áliter non possem esse cóntinens, nisi Deus det; et hoc ipsum erat sapiéntiæ, scire cujus esset

hoc donum, ádii Dóminum, et deprecátus sum illum.

*Pro Virgine et Martyre*

HYMNUS. *S. V.*

Quid sacram, Virgo, generósa Martyr,
Ambiunt frontem duplices corónæ?
Nempe non unum gemino reportas
Hoste triumphum.

Móllior fregit neque te voluptas;
Impotens flexit neque te tyrannus:
Tu graves pœnas, pariterque blandos
Vincis amóres.

Liliis Sponsus recubat, rosisque;
Tu, tuo semper bene fida Sponso,
Et rosas Martyr, simul et dedisti
Lília Virgo.

Summa laus Patri, genitóque Verbo;
Et tibi compar, utriusque Nexus:
Fac tibi semper placeámus uni
Móribus æquis. Amen.

℣. Hæréditas immaculatórum in æternum erit: ℟. Non confundentur in témpore malo. *Ps.* 36.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 5. C. Factus est Dóminus firmamentum meum; liberávit me, quia complácui ei: secundùm mundítiam mánuum meárum reddet mihi. (Allel.) 2 *Reg.* 22.

Orémus. ORATIO. 1.

Deus, qui inter cétera poténtiæ tuæ mirácula, étiam in sexu frágili victóriam martyrii contulisti: concéde propítius, ut qui beátæ *N.* Virginis et Mártyris tuæ natalítia cólimus, per ejus ad te exempla gradiámur; Per Dóminum.

Orémus. ORATIO. 2.

Omnipotens sempiterne Deus, cujus múnere beáta *N.* virginitátis et martyrii palmam adepta est: da nobis ejus précibus, ita córporis ac mentis serváre puritátem, ut nec blandítiis carnis, nec malórum acerbitáte vincámur; Per Dóminum.

*Si non sit Martyr,*

HYMNUS. *G. Ep. S.*

Non vana dilectum gregem
Pavêre mundi gáudia,
Nec pura fallax péctora
Imágo lusit séculi.

Sed hæc tuárum própria
Sunt, Christe, sponsárum bona,
Te semper, et tecum tuis
In te potíri gáudiis.

Castis vicissim tu tibi
In córdibus thorum struis,
Interque flammas íntimo
Amans quiescit in sinu.

Hic unus est sponsis amor,
Unusque tecum spíritus;
Beasque Sponsus síngulas,
In teque transformas, Deus.

Te deprecámur súpplices,
Nostris ut addas sénsibus,
Nescíre prorsus ómnia
Corruptiónis vúlnera.

Sit laus Patri, laus Fílio;
Sit par tibi laus, Spíritus,
Divína qui perénnibus
Firmas sigillis fœdera.
Amen.

℣. Sitívit in te ánima mea:

℟. Quàm multiplíciter tibi caro mea! *Ps.* 62.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 7. G. Exultábit ánima mea in Deo meo: quia índuit me vestimentis salútis, quasi sponsam ornátam monílibus suis. (Allelúia.) *Is.* 61.

Orémus. Oratio. 1.

Deus, qui habitáculum tuum in corde pudíco constituisti: concéde, ut qui fidélis sponsæ tuæ *N.* puritátem húmili venerámur obséquio, piæ conversatiónis sequámur exemplo; Per Dóminum.

Orémus. Oratio. 2.

Fideles tuos, quæsumus Dómine, intercedente beátâ *N.* Vírgine tuâ, córpore et mente purífica; ut tuâ inspiratióne compuncti, nóxias delectatiónes vitáre præváleant; atque ut eárum non capiantur illécebris, tuâ semper suavitáte pascantur; Per Dóminum.

¶ *In Solemnibus et suprà,* ad Horas, *Doxologia:*

Æterne Sponse Vírginum,
Jesu, tibi sit glória,
Cum Patre, cumque Spíritu,
In sempiterna sécula. Amen.]

AD PRIMAM.

*Ant.* 1. g. Dilectus meus.

AD TERTIAM.

*Ant.* 5. a. Invéni.

Capitulum. 1 *Cor.* 7.

De virgínibus præceptum Dómini non hábeo; consílium autem do, tanquam misericórdiam consecútus à Dómino, ut sim fidélis.

℟ *br.* Lætétur mons Sion: * exultent fíliæ Judæ, * Allelúia, allel. Lætétur. ℣. Propter judícia tua, * Dómine. * Allelúia. Glória. Lætétur. *Ps.* 47.

℣. Audívit, et lætáta est Sion; ℟. Et exultavérunt fíliæ Judæ. *Ps.* 96.

AD SEXTAM.

*Ant.* 2. D. Ego.

Capitulum. 1 *Cor.* 7.

Mulier innupta, et virgo, cógitat quæ Dómini sunt, ut sit sancta córpore et spíritu.

℟ *br.* Quid mihi est in cœlo, * et à te quid vólui super terram? * Allelúia, allelúia. Quid. ℣. Deus cordis mei, * et pars mea Deus in ætérnum: * Allelúia. Glória Patri. Quid. *Ps.* 72.

℣. Concupiscit, et déficit ánima mea in átria Dómini: ℟. Cor meum et caro mea exultavérunt in Deum vivum. *Ps.* 83.

AD NONAM.

*Ant.* 3. a. Sub umbra.

Capitulum. 2 *Cor.* 11.

Æmulor vos Dei æmulatióne: despondi enim vos uni viro vírginem castam exhibére Christo.

℟ *br.* Afferentur Regi vírgines * in lætítia et exultátióne, * Allelúia, allelúia. Afferentur. ℣. Adducentur * in templum Regis, * Allelúia. Glória. Afferentur.

℣. Delectavérunt te fíliæ regum, ℟. In honóre tuo. *Ps.* 44.

AD II VESPERAS.

¶ *In Solemnibus et suprà, Psalmi ut in Officio parvo beatæ Mariæ Virginis.*

*Ant.* 4. *D.* Vírgines accipientes lámpades suas, exiérunt óbviam sponso et sponsæ, allelúia. *Matth.* 25.

*Ant.* 3. a. Prudentes accepérunt óleum in vasis suis cum lampádibus, et ornavérunt lámpades suas, allelúia. *Matthæi* 25.

*Ant.* 7. d. Médiâ nocte clamor factus est : Ecce sponsus venit, exíte óbviam ei, allelúia. *Matth.* 25.

*Ant.* 2. D. Venit sponsus; et quæ parátæ erant, intravérunt cum eo ad núptias, allelúia. *Matth.* 25.

*Ant.* 1. D. Vírgines sequuntur Agnum quòcumque íerit : sine mácula enim sunt ante thronum Dei, allel. *Apoc.* 14.

CAPITULUM. 2 *Cor.* 11.

REGNAVIT Dóminus Deus noster omnípotens : gaudeámus, et exultémus, et demus glóriam ei: quia venérunt núptiæ Agni, et uxor ejus præparávit se.

*Pro Virgine et Martyre, Hymnus,* O vos, *ut in I Vesperis,* xxxix.

℣. Conféssio et pulcritúdo in conspectu Dei : ℟. Sanctimónia et magnificéntia in sanctificatióne ejus. *Ps.* 95.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 8. *G.* Casta generátio in perpétuum coronáta triumphat, incoinquinatórum certáminum præmium vincens, allelúia. *Sap.* 4.

*Si non sit Martyr,*

HYMNUS. *Mur.*

O VIRGO, pectus cui sacrum,
Amóris expers ímprobi,
Intus suis ardóribus
Sanctus perussit Spíritus!

Non te voluptas dúlcibus
Fallax venénis mólliit,
Solas amantem pérsequi
Cœlestis Agni núptias.

Sic ille natus Vírgine
Suo decóre céperat,
Ut ejus ardens ígnibus
Mundána cuncta témneres.

Beáta cui nunc, Cœlitum
Inter canéntium choros,
Cœlo licet perénnibus
Sponsi potíri gáudiis.

ÆTERNE Sponse Vírginum,
Jesu, tibi sit glória
Cum Patre; cumque Spíritu,
In sempiterna sécula. Amen.

℣. Vírgines laudent nomen Dómini; ℟. Quia exaltátum est nomen ejus solíus. *Ps.* 148.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 1. f. In resurrectióne neque nubent, neque nubentur; sed erunt sicut Angeli Dei in cœlo, allelúia. *Matth.* 22.

# COMMUNE SANCTARUM MULIERUM.

## IN I VESPERIS.

*Ant.* 6. F. Dómine, qui habes ómnium sciéntiam, tu scis quod nunquam lætáta sit ancilla tua nisi in te, Dómine Deus, allelúia. *Esther* 14.

*Ant.* 2. D. Ad te, Dómine, óculos meos dírigo : tu scis

quia mundam servávi ánimam meam ab omni concupiscéntia, allelúia. *Tob.* 3.

*Ant.* 8. c. Nunquam cum ludéntibus míscui me: neque cum his, qui in levitáte ámbulant, partícipem me præbui, allelúia. *Tob.* 3.

*Ant.* 3. a. Dómine Pater, omne desidérium averte à me, et ánimæ irreverenti et infrunítæ ne tradas me, allelúia. *Eccli.* 23.

*Ant.* 5. C. Adjuva me ancillam tuam, nullum áliud auxílium habentem, nisi te, Dómine, qui nosti quia óderim glóriam iniquórum, allelúia. *Esther* 14.

CAPITULUM. *Ephes.* 5.

RELINQUET homo patrem et matrem suam, et adhærébit uxóri suæ; et erunt duo in carne una. Sacramentum hoc magnum est; ego autem dico in Christo et in Ecclésia. Verúmtamen et vos sínguli unusquisque uxórem suam sicut seipsum díligat: uxor autem tímeat virum suum.

¶ *In Duplicibus, et suprà:*

℟. Virum, Dómine, cum timóre tuo, non cum libídine mea consensi suscípere: * Sit nomen tuum, Deus Israel, benedictum in sécula, allelúia, allelúia. ℣. Non vocávit nos Deus in immundítiam, sed in sanctificatiónem. * Sit. Glória. * Sit nomen tuum. *Tob.* 3. 1 *Thess.* 4. ]

HYMNUS. *G. Ep. S.*

AD núptias Agni Pater
Matres et innuptas vocat;
O te beátam, cui thorus
Interque sponsas sors datur!

Lex nuptiárum cáritas;
Dos magna, paupertas, tibi,
Calcáre falláces opes,
Cadúca corde spérnere.

TE multus oblectat labor,
Fusæque jejúnam preces:
Te pœnitentem lácrymæ,
Te cura páuperum juvat.

Quàcumque confixam sibi,
Per probra sponsam, per cruces
Trahit Magister; et sequi
Despecta gaudes, et pati.

BEATA quæ sponso Deo
Castis adhæret vínculis:
Sic corpus unum póssumus.
Sic unus esse spíritus.

Hoc præstet, almo cum Patre,
Natóque, nobis Spíritus,
Qui trinus ac unus Deus
Regnat per omne séculum.
Amen.

*Si sit Martyr,* ℣. Factus es spes mea, Dómine: ℟. Turris fortitúdinis à fácie inimíci. *Ps.* 60.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 4. *D.* Deus cœlórum, exaudi me deprecantem, et de tua misericórdia præsumentem; ut gentes agnoscant quia tu es Deus, et non est álius præter te, allelúia. *Judith* 9.

*Si non sit Martyr,* ℣. Averte óculos meos ne vídeant vanitátem: ℟. In via tua vivífica me. *Ps.* 118.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 1. A. Exultávit cor meum in Dómino, et dilatátum est os meum; quia lætáta sum in salutári tuo, allelúia. 1 *Reg.* 2.

Completorium. *Ant.* 2. A. Gustávit, et vidit quia bona est negotiátio ejus: non extinguétur in nocte lucerna ejus, allelúia. *Prov.* 31.

*Doxologia,* ¶ Agni vocans *infrà.*

*Ad* Nunc dimittis. *Ant.* 1. D. Indue te decóre sempiternæ glóriæ; Deus enim ostendet splendórem suum in te, allelúia. *Baruch* 5.]

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invitat.* Deum in quo sperant sanctæ mulíeres, * Veníte, adorémus, allelúia. 1 *Petr.* 3.

Hymnus. *S. V.*

Adeste, sanctæ Cónjuges:
En illa fortis Fémina,
Ornáta quæ virtútibus
Inter triumphat Cœlites.

Blandos ut hostes vínceret,
Hanc fortitúdo véstiit:
Ut prosit intuéntibus,
Cœlestis ornávit decor.

Non vana pompa séculi
Sensus fefellit, nec malis
Gliscens voluptas ártibus
Viríle pectus mólliit.

Non illa luxu véstium,
Non crine torto spléndui :
Cultu nitens sed símplice,
Puris placébat móribus.

Se sub serénis vúltibus
Austéra virtus óccùlit:
Timet vidéri, ne suum,
Dum prodit, amittat decus.

Pascenda cœlesti cibo,
Sacris studébat lítteris;
Templo frequens, sed sédula
Redíbat ad curam domûs.

¶ Agni vocans ad núptias,
Tibi, Pater, sit glória:
Laus utriusque Flámini.
Amen.

---

¶ *In Solemnibus et suprà, Psalmi*, Cœli enarrant *cum sua divis.* 38. Dominus regit me, 76. Ad te, Domine, clamabo, 5.]

*Ant.* 1. a. Inítium sapiéntiæ timor Dómini, et cum electis féminis gráditur, allelúia. *Eccli.* 1.

*Ant.* 2. D. Sápiens múlier ædíficat domum: múlier gratiósa invéniet glóriam, allelúia. *Prov.* 14.

*Ant.* 8. G. Benedicta es, *infrà.*]

---

*In Duplicibus et infrà, Psalmi sub sola Ant.* 8. G. Benedicta es à Dómino: scit enim omnis pópulus mulíerem te esse virtútis, allel. *Ruth* 3.

℣. Benedícat te Dóminus ex Sion; ℟. Et vídeas bona Jerúsalem ómnibus diébus vitæ tuæ. *Ps.* 127.

℟ *j.* Multæ fíliæ congregavérunt divítias, tu supergressa es universas. * Fallax grátia, et vana est pulcritúdo: múlier timens Dóminum ipsa laudábitur, allelúia, allelúia. ℣. In incorruptibilitáte modesti spíritûs, qui est in conspectu Dei lócuples, sanctæ mulíeres ornábant se. * Fallax. *Prov.* 31. 1 *Petr.* 3.

℟ *ij.* Fecisti viríliter, et confortátum est cor tuum, eo quod castitátem amáveris: * Ideo et manus Dómini confortávit te, et ídeo eris bene-

dicta in æternum, allelúia, allelúia. ℣. O múlier, magna est fides tua!* Ideo. *Judith* 15. *Matth.* 15.

℟ *iij.* Omnia quæ locúta es, vera sunt; et non est in sermónibus tuis ulla reprehénsio : * Nunc ergo † Ora pro nobis, quóniam múlier sancta es, et timens Deum, allelúia, allelúia. ℣. Fides tua te salvam fecit. * Nunc. Glória Patri. † Ora. *Judith* 8. *Luc.* 7.

℣ *Sacerd.* Glorificábo nomen tuum in æternum : ℟. Quia misericórdia tua magna est super me. *Ps.* 85.

AD LAUDES.

*Ant.* 1. a. Sicut sol óriens mundo in altíssimis Dei, sic mulíeris bonæ spécies in ornamentum domûs ejus, allelúia. *Eccli.* 26.

*Ant.* 2. D. Múlier fortis oblectat virum suum; et annos vitæ illíus in pace implébit, allelúia. *Eccli.* 26.

*Ant.* 3. c. Múlier sensáta, et tácita : non est immutátio erudítæ ánimæ, allelúia. *Eccli.* 26.

CANTICUM. *Prov.* 31.

MULIEREM fortem quis invéniet? * procul et de últimis fínibus prétium ejus.

Confídit in ea cor viri sui,* et spóliis non indigébit.

Reddet ei bonum, et non malum, * ómnibus diébus vitæ suæ.

Quæsívit lanam et linum,* et operáta est consílio mánuum suárum.

Facta est quasi navis institóris, * de longè portans panem suum.

Et de nocte surrexit, * deditque prædam domésticis suis, et cibária ancillis suis.

Considerávit agrum, et emit eum; * de fructu mánuum suárum plantávit víneam.

Accinxit fortitúdine lumbos suos, * et roborávit bráchium suum.

Gustávit et vidit quia bona est negotiátio ejus : * non extinguétur in nocte lucerna ejus.

Manum suam misit ad fórtia, * et dígiti ejus apprehendérunt fusum.

Manum suam apéruit ínopi, * et palmas suas extendit ad páuperem.

Date ei de fructu mánuum suárum; * et laudent eam in portis ópera ejus.

*Ant.* 4. d. Os suum apéruit sapiéntiæ, et lex cleméntiæ in lingua ejus, allelúia. *Proverb.* 31.

*Ant.* 5. a. Non discedébat de templo, jejúniis et obsecratiónibus sérviens nocte ac die, allelúia. *Luc.* 2.

CAPITULUM. 1 *Petr.* 3.

MULIERES súbditæ sint viris suis; ut et si qui non credunt verbo, per mulíerum conversatiónem sine verbo lucrifiant, considerantes in timóre castam conversatiónem vestram.

HYMNUS. *S. V.*

ARDET Deo quæ Fémina.
Latére frustra cógitat :
Quot índigos hæc súblevat,
Tot próditur præcónibus.

Prodesse

Prodésse quærit ómnibus,
Curis honestis ánxia:
Patróna custos vírginum,
Secunda mater órphanis.

Pannis latentem vílibus
Christum fovébat hóspitem:
Quas dura subtraxit sibi,
Opes refundit pródiga.

Pacem domi, pacem foris
Alto colit siléntio:
Lites amat compónere,
Ut una mens sit ómnibus.

¶ Agni vocans ad núptias,
Tibi, Pater, sit glória;
Sit æqua Nato, nec minor
Laus utriusque Flámini.
Amen.

*Si sit Martyr,* ℣. Adhæsit ánima mea post te, Deus meus: ℟. Me suscépit déxtera tua. *Ps.* 62.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 1. J. Invocávi Dóminum patrem Dómini mei, ut non derelinquat me in die tribulatiónis meæ; et exaudíta est orátio mea. (Allelúia.) *Eccli.* 51.

Orémus. Oratio.

Deus, cujus grátiâ virtus in infirmitáte perfícitur: largíre nobis beátæ *N.* Mártyris tuæ passiónem recoléntibus; ut quæ à te accépit ut vínceret, à te quoque vincendi grátiam nobis obtíneat; Per Dóminum nostrum.

*Si non sit Martyr,* ℣. Humiliábam ánimam meam, ℟. Et orátio mea in sinu meo convertétur. *Ps.* 34.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 6. F. Orátio humiliantis se nubes penetrábit; et non discédet, donec Altíssimus aspíciat. (Allelúia.) *Eccli.* 35.

*Verna.*

Orémus. Oratio.

Tuorum corda fidélium, Deus miserátor, illustra: et beátæ *N.* précibus ac méritis, fac nos terréna despícere, et amáre cœléstia; Per.

*Si sit Vidua,* Oratio.

Deus, in quem sperat omnis ánima quæ longè à te éxulans in terris se verè víduam sentit ac desolátam: tríbue nobis, quæsumus, ut exemplo beátæ *N.* nocte ac die obsecratiónibus et oratiónibus instantes, cœléstium consolatiónum mereámur esse partícipes; Per Dóminum.

¶ *In Solemnibus et suprà,* ad Horas, *Doxologia,* ¶ Agni vocans, *ut in Laudibus.* ]

AD PRIMAM.

*Ant.* 1. a. Sicut sol.

AD TERTIAM.

*Ant.* 2. D. Múlier fortis.

Capitulum. *Ephes.* 5.

Mulieres viris suis súbditæ sint, sicut Dómino; quóniam vir caput est mulíeris, sicut Christus caput est Ecclésiæ, ipse salvátor córporis ejus.

℟ *br.* Doce me fácere voluntátem tuam, * quia Deus meus es tu, * Allelúia, allelúia. Doce me. ℣. Spíritus tuus bonus * dedúcet me: * Allelúia. Glória. Doce me. *Ps.* 142.

℣. Ab omni via mala prohíbui pedes meos; ℟. Ut custódiam verba tua. *Ps.* 118.

AD SEXTAM.

*Ant.* 3. c. Múlier.

Capitulum. 1 *Tim.* 2.

Mulier in siléntio discat cum omni subjectióne. Docére

autem mulíeri non permitto, neque dominári in virum, sed esse in siléntio.

℟ *breve.* Custódiam vias meas, * ut non delinquam in lingua mea, * Allelúia, allelúia. Custódiam. ℣. Pósui ori meo * custódiam; * Allelúia. Glória. Custódiam. *Ps.* 38.

℣. Apud me orátio Deo vitæ meæ : ℟. Dicam Deo : Susceptor meus es. *Ps.* 41.

AD NONAM.

*Ant.* 5. a. Non discedébat.

CAPITULUM. 1 *Tim.* 2.

Volo oráre mulíeres in hábitu ornáto, cum verecúndia et sobrietáte ornantes se, et non in tortis crínibus, auro, aut margarítis, vel veste pretiósâ; sed quod decet mulíeres, promittentes pietátem per ópera bona.

℟ *brev.* Expectávi Dóminum, * et intendit mihi, * Allelúia, allelúia. Expectávi. ℣. Et exaudívit * preces meas, * Allelúia. Glória. Expectávi. *Ps.* 39.

℣. Veníte, et vidéte ópera Dei, ℟. Qui pósuit ánimam meam ad vitam. *Ps.* 65.

AD II VESPERAS.

¶ *In Solemnibus et suprà, Psalmi,* Dixit Dominus, 18. Laudate pueri, 19. Ad te levavi, 64. Nisi quia Dominus, 35. Beati omnes, 110.]

*Ant.* 2. D. In ancilla sua adimplévit Dóminus misericórdiam suam, allelúia. *Judith* 13.

*Ant.* 4. E. Erat hæc in ómnibus famosíssima, quóniam timébat Dóminum valde; nec erat qui loquerétur de illa verbum malum, allelúia. *Judith* 8.

*Ant.* 7. c. Considerávit sémitas domûs suæ, et panem otiósa non comédit, allelúia. *Prov.* 31.

*Ant.* 1. D. Fílios educávit, hospítio recépit, sanctórum pedes lavit, tribulatiónem patiéntibus subministrávit, omne opus bonum subsecúta est, allelúia. 1 *Tim.* 5.

*Ant.* 6. F. Surrexérunt fílii ejus, et beatíssimam prædicavérunt : vir ejus, et laudávit eam, allelúia. *Prov.* 31.

CAPITULUM. 1 *Tim.* 2.

Mulier salvábitur per filiórum generatiónem, si permánserit in fide, et dilectióne, et sanctificatióne cum sobrietáte.

HYMNUS. *S. V.*

O jam beáta, quæ suo
Tandem solúta córpore,
Vinclis perennióribus
Uni Deo conjúngitur!

Per quos gradus cœlum petit,
Hâc ire vos omnes docet,
Junctæ jugáli vínculo,
Et vos solútæ cónjuges.

Insignis et nos Féminæ
Sequi decet vestígia,
Magnum vel ipsis quæ fuit
Virtútis exemplum viris.

Queis arsit illa, fac, Deus,
Flagrémus et nos ígnibus;
Eóque, quo te vis coli,
Amóre fac mens te colat.

Agni vocans ad núptias,
Tibi, Pater, sit glória;
Sit æqua Nato, nec minor

Laus utriusque Flámini.
Amen.

*Si sit Martyr,* ℣. Vídeant qui óderunt me, et confundantur; ℟. Quóniam tu, Dómine, adjuvisti me. *Ps.* 85.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 3. a. Confitébor nómini tuo, Dómine; quóniam adjútor et protector factus es mihi, et liberasti corpus meum à perditióne, allelúia. *Eccli.* 51.

*Si non sit Martyr,* ℣. Anima mea Dómino vivet; ℟. Et semen meum sérviet ipsi. *Ps.* 21.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 5. C. Fortitúdo et decor indumentum ejus: date ei de fructu mánuum suárum; et laudent eam in portis ópera ejus, allelúia. *Prov.* 31.

# OFFICIUM B. MARIÆ IN SABBATO.

## SIMPLEX.

*Prætermittitur hoc Officium ubi occurrit Festum Semiduplex et suprà, intra Octavas quascumque, in quibuslibet Vigiliis, et in Feriis quæ excludunt Festa Simplicia.*

*Quando autem Sabbato non fit Officium de Beata, de ipsa tamen fit Commemoratio, ad Laudes duntaxat, in Duplicibus-minoribus et infrà: quæ Commemoratio omittitur intra Octavas Festorum Annualium Domini, et in diebus quibus fiunt Suffragia.*

*Si Feriâ VI occurrat Festum Semiduplex, Duplex aut Solemne-minus, (nisi sit de ipsa B. Maria) ad Vesperas fit Commem. de Beata, modò de ea postridie fiat Officium; et in Hymno Completorii dicitur Doxol.* Qui natus es, *infrà* liv, *nisi Festum Doxol. habeat propriam.*

*De Festo Simplici occurrente fiet Comm. ad Laudes tantùm.*

### IN VESPERIS FERIÆ VI.

CAPITULUM. *Genes.* 3.

Ait Dóminus Deus ad serpentem: Inimicítias ponam inter te et mulíerem, et semen tuum et semen illíus: ipsa cónteret caput tuum.

HYMNUS.

Ave, maris stella,
Dei mater alma,
Atque semper virgo,
Felix cœli porta.

Sumens illud Ave
Gabriélis ore,
Funda nos in pace,
Mutans Evæ nomen.

Solve vincla reis,
Profer lumen cæcis,
Mala nostra pelle,
Bona cuncta posce.

Monstra te esse matrem;
Sumat per te preces,
Qui pro nobis natus
Tulit esse tuus.

Virgo singuláris,
Inter omnes mitis,
Nos culpis solútos,
Mites fac et castos.

Vitam præsta puram,
Iter para tutum;
Ut videntes Jesum,
Semper collætémur.

Sit laus Deo Patri,
Summum Christo decus,
Spirítui compar;
Tribus honor unus. Amen.

℣. Deus operátus est salútem in médio terræ: ℟. Tu confregísti cápita dracónis. *Ps.* 73.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 1. f. Benedíctus Dóminus qui te diréxit in vúlnera cápitis príncipis inimicórum nostrórum, allelúia. *Judith* 13.

*Oratio ut infrà ad Laudes.*

*Commemoratio de Cruce pro tempore Paschali.*

Completorium, *ut in Tempore Paschali. Hymnus,* Virgo, Dei génitrix, *in Ordinario Breviarii,* 124.

## AD NOCTURNUM.

*Invitator.* Jesum de María natum, * Veníte, adorémus, allelúia.

### Hymnus.

O quam glorificâ luce coruscas,
Stirpis Davídicæ régia proles;
Sublímis résidens, virgo María,
Supra Cœligenas ætheris omnes!

Tu cum virgíneo mater honóre
Cœlórum Dómino péctoris aulam
Sacris viscéribus casta dedísti:
Humános Deus hinc índuit artus.

Quem cunctus venerans orbis adórat,
Cui nunc ritè genu fléctitur omne;
A quo, te précibus subveniente,
Ætérni pétimus gáudia regni.

Divínæ Sóboli qui dare matrem
In terris vóluit, glória Patri:
Cujus Virgo parens, glória Nato:
Quo fœcunda, tibi glória, Flamen. Amen.

*Psalmi de Sabbato notati in Proprio de Tempore sub sola Ant.* 1. a. Ave, grátiâ plena; Dóminus tecum: benedícta tu in muliéribus, allelúia. *Luc.* 1.

℣. Descéndet sicut plúvia in vellus: ℟. Et replébitur majestáte ejus omnis terra. *Ps.* 71.

Pater noster, etc.

*Absolutio et Benedictiones de Tempore Paschali.*

*Lectiones j et ij de Scriptura occurrente.*

℟. *j.* Benedícam ei, et ex illa dabo fílium cui benedictúrus sum: * Constítuam pactum meum illi in fœdus sempitérnum, allelúia, allelúia. ℣. Hic erit magnus, et Fílius Altíssimi vocábitur; et regnábit in domo Jacob in

æternum. * Constítuam pactum. *Genes.* 17. *Luc.* 1.

℟. *ij.* Quod in ea natum est, de Spíritu sancto est: páriet autem fílium: * Ipse salvum fáciet pópulum suum à peccátis eórum, allelúia, allelúia. ℣. Benedictiónem ómnium géntium dedit illi Dóminus. * Ipse. *Matth.* 1. *Eccli.* 44.

*Lectio iij secundùm mensem, infrà* lv.

℟. *iij.* Deus ex sémine David * Secundùm promissiónem eduxit Israel salvatórem Jesum, allelúia, allel. ℣. Jurávit Dóminus David veritátem: De fructu ventris tui ponam super sedem tuam. * Secundùm. Glória. * Secundùm. *Act.* 13. *Ps.* 131.

*Dicitur* Te Deum.

℣ *Sacerd.* Confiteantur tibi pópuli, Deus: ℟. Terra dedit fructum suum. *Ps.* 66.

AD LAUDES.

*Psalmi de Sabbato, cum Cantico sequenti.*

CANTICUM. *Judith* 16.

INCIPITE Dómino in tympanis: * cantáte Dómino in cymbalis.

Moduláminí illi psalmum novum: * exaltáte, et invocáte nomen ejus.

Dóminus cónterens bella: * Dóminus nomen est illi.

Qui pósuit castra sua in médio pópuli sui, * ut eríperet nos de manu ómnium inimicórum nostrórum.

Venit Assur ex móntibus ab Aquilóne, * in multitúdine fortitúdinis suæ:

Cujus multitúdo obturávit torrentes, * et equi eórum cooperuérunt valles.

Dixit se incensúrum fines meos, * et júvenes meos occisúrum gládio,

Infantes meos dare in prædam, * et vírgines in captivitátem.

Dóminus autem omnípotens nócuit eum, et trádidit eum in manus féminæ, * et confódit eum.

*Ant. sola.* 4. A. Benedicta tu inter mulíeres, et benedictus fructus ventris tui, allelúia. *Luc.* 1.

CAPITULUM. *Jer.* 31.

CREAVIT Dóminus novum super terram: Fémina circúmdabit virum.

HYMNUS. *S. V.*

NUNC auróra, novæ núntia lucis,
Tristes orbe procul díssipat umbras.
O quàm lucidior, nocte sepultis
Portans ipsa diem, Virgo, refulges!

O quæ nunc habitas lúcida regna.
Mittas inde tuæ múnera lucis:
Te si terra dedit munus olympo,
Quæ non dona memor reddet olympus?

INTER perpetuos Núminis haustus,
O Regína, tibi sánguine junctum
Ne dedisce genus: nostra fuisti,
Summi facta parens, Virgo, Tonantis.

Divínæ Soboli qui dare matrem
In terris voluit, glória Patri :
Cujus Virgo parens, glória Nato :
Quo fœcunda, tibi glória, Flamen. Amen.

℣. Recordátus est Dóminus misericórdiæ suæ, ℟. Et veritátis suæ dómui Israel. *Ps.* 97.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 3. à. Beáta quæ credidisti; quóniam perficientur ea quæ dicta sunt tibi à Dómino, allelúia. *Luc.* 1.

Orémus. Oratio.

Deus, qui per resurrectiónem Fílii tui Dómini nostri Jesu Christi mundum lætificáre dignátus es : præsta, quæsumus, ut per ejus genitrícem Vírginem Maríam perpétuæ capiámus gáudia vitæ; Per eumdem.

*Commemoratio de Cruce pro tempore Paschali.*

Ad Horas. *post* Da Christe, *Doxologia :*

Qui natus es de Vírgine,
Jesu, tibi sit glória,
Cum Patre, cumque Spíritu,
In sempiterna sécula.
Amen.

AD PRIMAM.

*Ant.* 2. D. Fílius Dei factus est ei ex sémine David secundùm carnem, allel. *Rom.* 1.

*In* ℟ *br.* ℣. Qui natus es * de María vírgine. *Matth.* 1.

AD TERTIAM.

*Ant.* 4. d. De María natus est Jesus, qui vocátur Christus, allelúia. *Matth.* 1.

Capitulum. *Isai.* 7.

Dabit Dóminus ipse vobis signum : Ecce Virgo concípiet, et páriet fílium; et vocábitur nomen ejus, Emmánuel.

℟ *br.* Deus in médio ejus; * non commovébitur, * Allelúia, allelúia. Deus. ℣. Adjuvábit eam * mane dilúculo : * Allelúia. Glória Patri. Deus. *Ps.* 45.

℣. Elégit eam Dóminus ℟. In habitatiónem sibi. *Ps.* 131.

AD SEXTAM.

*Ant.* 7. d. Péperit fílium másculum, qui rectúrus erat omnes gentes, allel. *Apoc.* 12.

Capitulum. *Mich.* 5.

Egredietur qui sit dominátor in Israel, et egressus ejus ab inítio, à diébus æternitátis. Propter hoc dabit eos usque ad tempus in quo partúriens páriet; et relíquiæ fratrum ejus convertentur ad fílios Israel.

℟ *br.* Homo * natus est in ea, * Allelúia, allelúia. Homo. ℣. Et ipse fundávit eam * Altíssimus. * Allelúia. Glória. Homo. *Ps.* 86.

℣. Ipse tanquam sponsus ℟. Procédens de thálamo suo. *Ps.* 18.

AD NONAM.

*Ant.* 1. *g.* Beátus venter qui te portávit, et úbera quæ suxisti, allelúia. *Luc.* 11.

Capitulum. *Galat.* 4.

Ubi venit plenitúdo témporis, misit Deus Fílium suum, factum ex mulíere, factum sub lege; ut eos qui sub lege erant redímeret, ut adoptió-

nem filiórum reciperémus.

℟. *br.* Misericórdia et véritas * obviavérunt sibi, * Allelúia, allelúia. Misericórdia. ℣. Justítia et pax * osculátæ sunt; * Allelúia. Glória. Misericórdia.

℣. Véritas de terra orta est, ℟. Et justítia de cœlo prospexit. *Ps.* 84.

## LECTIONES
### PRO SINGULIS MENSIBUS.

**MENSE APRILI.**

LECTIO III.

Ex Apológia sancti Hierónymi pro libris adversùs Joviniánum. *Ep.* 30.

CHRISTUS virgo; mater vírginis nostri virgo perpétua, mater et virgo. Jesus enim clausis ingressus est óstiis; et in sepulcro ejus, quod novum et in petra duríssima fúerat excísum, nec ántea quis, nec póstea pósitus est. Hortus conclúsus, fons signátus: de quo fonte ille flúvius manat, juxta Joel, qui írrigat torrentem, vel fúnium, vel spinárum; fúnium peccatórum, quibus antè alligabámur; spinárum quæ suffocábant sementem patrisfamílias. Hæc est porta orientális, ut ait Ezéchiel, semper clausa et lúcida, opériens in se, vel ex se próferens Sancta sanctórum, per quam Sol justítiæ, et Póntifex noster secundùm órdinem Melchísedech, ingréditur et egréditur. Respóndeant mihi quómodo Jesus ingressus est clausis óstiis, cùm palpandas manus, et latus considerandum, et ossa carnemque monstráverit, ne véritas córporis phantasma putarétur; et ego respondébo, quomodo sancta María sit et mater et virgo.

**MENSE MAIO.**

LECTIO III.

Ex Epístola sancti Athanásii Epíscopi ad Epictétum.

HUMANUM natúrâ erat quod ex María pródiit, secundùm divínas Scriptúras, verumque erat Dómini corpus: verum, inquam, fuit, cùm idem atque nostrum extíterit. Soror étenim nostra est María; omnes quippe ex Adam orti sumus. Nam postquam à mórtuis surrexisset, cùm quidam existimárent se non in córpore ex María génito Dóminum aspícere, sed illíus loco spíritum vidére, dixit ille: Palpáte me, et vidéte quia spíritus carnem et ossa non habet, sicut me vidétis habére. Non dixit, ut me vidétis carnem et ossa esse; sed, habére: ne ipsummet Verbum in res illas transformátum fuisse censerétur; sed illas et ante mortem et post resurrectiónem habére crederétur.

# OFFICIUM PARVUM

# BEATÆ MARIÆ VIRGINIS.

*Non dicitur quoties fit Officium Semiduplex, aut suprà, nec intra Octavas, nec tempore Passionis, nec quando Officium dici est de Beata.*

*Singulæ Horæ hujus Officii dicuntur hoc modo: Officium Nocturnum, Laudes et Vesperæ dicuntur intra Suffragia; (et tunc omittitur Commemoratio de Beatâ) Prima, post Primam diei, ante Officium Capituli: Tertia, post* Benedicámus *Tertiæ; et sic de ceteris Horis.*

## AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invitator.* Jesum de María natum, * Veníte, adorémus. *Matth.* 1.

*Hymn.* O quàm glorificâ, lij.

*In Festis B. Mariæ dicuntur in Nocturnis novem sequentes Psalmi, cum Antiphonis propriis.*

*In Officio autem parvo dicuntur tantùm tres Psalmi, secundùm ordinem Feriarum, ut infrà notatur.*

### IN I NOCTURNO.

#### Feria II et V.

PSALMUS 8.

DOMINE Dóminus noster, * quàm admirábile est nomen tuum in universa terra!

Quóniam eleváta est magnificéntia tua * super cœlos.

Ex ore infántium et lacténtium perfecisti laudem propter inimícos tuos, * ut déstruas inimícum et ultórem.

Quóniam vidébo cœlos tuos, ópera digitórum tuórum; * lunam et stellas, quæ tu fundasti:

Quid est homo, quod memor es ejus? * aut filius hóminis, quóniam vísitas eum?

Minuisti eum paulò minùs ab Angelis, glóriâ et honóre coronasti eum, * et constituisti eum super ópera mánuum tuárum.

Omnia subjecisti sub pédibus ejus, * oves et boves universas, ínsuper et pécora campi,

Vólucres cœli, * et pisces maris qui perámbulant sémitas maris.

Dómine Dóminus noster, * quàm admirábile est nomen tuum in universa terra!

PSALMUS 18.

CŒLI enarrant glóriam Dei, * et ópera mánuum ejus annúntiat firmamentum.

Dies diéi eructat verbum, * et nox nocti índicat sciéntiam.

Non sunt loquélæ, neque

sermónes, * quorum non audiantur voces eórum.

In omnem terram exívit sonus eórum, et in fines orbis terræ verba eórum : * in sole pósuit tabernáculum suum.

Et ipse tanquam sponsus procédens de thálamo suo; * exultávit ut gigas ad currendam viam.

A summo cœlo egréssio ejus, et occursus ejus usque ad summum ejus; * nec est qui se abscondat à calóre ejus.

Lex Dómini immaculáta, convertens ánimas : * testimónium Dómini fidéle, sapiéntiam præstans párvulis.

Justítiæ Dómini rectæ, lætificantes corda : * præceptum Dómini lúcidum, illúminans óculos.

Timor Dómini sanctus, pérmanens in séculum séculi : * judícia Dómini vera, justificáta in semetipsa.

Desiderabília super aurum et lápidem pretiósum multum, * et dulcióra super mel et favum.

Etenim servus tuus custódit ea : * in custodiendis illis retribútio multa.

Delicta quis intélligit? * ab occultis meis munda me, et ab aliénis parce servo tuo.

Si meî non fúerint domináti, * tunc immaculátus ero, et emundábor à delicto máximo.

Et erunt ut compláceant elóquia oris mei, * et meditátio cordis mei in conspectu tuo semper.

Dómine, adjútor meus, * et redemptor meus.

PSALMUS 44.

ERUCTAVIT cor meum verbum bonum : * dico ego ópera mea regi.

Lingua mea * cálamus scribæ velóciter scribentis.

Speciósus formâ præ filiis hóminum : diffúsa est grátia in lábiis tuis; * proptérea benedixit te Deus in æternum.

Accíngere gládio tuo super femur tuum, * Potentíssime.

Spécie tuâ et pulcritúdine tuâ intende, * prósperè procéde,

Et regna propter veritátem, et mansuetúdinem, et justítiam; * et dedúcet te mirabíliter déxtera tua.

Sagittæ tuæ acútæ, pópuli sub te cadent, * in corda inimicórum regis.

Sedes tua, Deus, in séculum séculi : * virga directiónis, virga regni tui.

Dilexisti justítiam, et odisti iniquitátem; * proptérea unxit te, Deus, Deus tuus, óleo lætítiæ præ consórtibus tuis.

Myrrha, et gutta, et cásia à vestimentis tuis, à dómibus ebúrneis; * ex quibus delectavérunt te fíliæ regum in honóre tuo.

Astitit regina à dextris tuis in vestitu deauráto, * circúmdata varietáte.

Audi, fília, et vide, et inclina aurem tuam; * et obliviscere pópulum tuum, et domum patris tui :

Et concupiscet rex decórem

tuum; * quóniam ipse est Dóminus Deus tuus; et adorábunt eum.

Et fíliæ Tyri in munéribus: * vultum tuum deprecabuntur omnes dívites plebis.

Omnis glória ejus fíliæ regis ab intus: * in fímbriis áureis, circumamicta varietátibus.

Adducentur regi vírgines post eam: * próximæ ejus afferentur tibi.

Afferentur in lætítia et exultatióne; * adducentur in templum regis.

Pro pátribus tuis nati sunt tibi fílii: * constítues eos príncipes super omnem terram.

Mémores erunt nóminis tui * in omni generatióne et generatiónem.

Proptérea pópuli confitebuntur tibi in æternum, * et in séculum séculi.

*Ant.* 1. a. Ave, grátiâ plena; Dóminus tecum: benedicta tu in muliéribus. *Luc.* 1.

℣. Audi, fília, et vide, et inclína aurem tuam; ℟. Et concupiscet rex decórem tuum. *Ps.* 44.

Pater noster, etc.

*Lectiones infrà*, lxj.

*IN II NOCTURNO.*

*Feriâ III et VI.*

PSALMUS 45.

DEUS noster refúgium et virtus; * adjútor in tribulatiónibus quæ invenérunt nos nimis.

Proptérea non timébimus, dum turbábitur terra, * et transferentur montes in cor maris.

Sonuérunt et turbátæ sunt aquæ eórum: * conturbáti sunt montes in fortitúdine ejus.

Flúminis ímpetus lætíficat civitátem Dei: * sanctificávit tabernáculum suum Altíssimus.

Deus in médio ejus; non commovébitur: * adjuvábit eam Deus mane dilúculo.

Conturbátæ sunt gentes, et inclináta sunt regna: * dedit vocem suam, mota est terra.

Dóminus virtútum nobiscum; * suscéptor noster Deus Jacob.

Veníte, et vidéte ópera Dómini, quæ pósuit prodígia super terram, * áuferens bella usque ad finem terræ.

Arcum cónteret, et confringet arma; * et scuta combúret igni.

Vacáte, et vidéte quóniam ego sum Deus: * exaltábor in géntibus, et exaltábor in terra.

Dóminus virtútum nobiscum; * suscéptor noster Deus Jacob.

PSALMUS 71.

DEUS, judícium tuum regi da, * et justítiam tuam fílio regis;

Judicáre pópulum tuum in justítia, * et páuperes tuos in judício.

Suscípiant montes pacem pópulo, * et colles justítiam.

Judicábit páuperes pópuli, et salvos fáciet fílios páuperum, * et humiliábit calumniatórem.

Et permanébit cum sole et

ante lunam, * in generatióne et generatiónem.

Descendet sicut plúvia in vellus, * et sicut stillicídia stillántia super terram.

Oriétur in diébus ejus justítia, et abundántia pacis, * donec auferátur luna.

Et dominábitur à mari usque ad mare, * et à flúmine usque ad términos orbis terrárum.

Coram illo prócident Æthíopes, * et inimíci ejus terram lingent.

Reges Tharsis et ínsulæ múnera ófferent; * reges Arabum et Saba dona addúcent.

Et adorábunt eum omnes reges terræ: * omnes gentes sérvient ei;

Quia liberábit páuperem à potente, * et páuperem cui non erat adjútor.

Parcet páuperi et ínopi, * et ánimas páuperum salvas fáciet.

Ex usúris et iniquitáte rédimet ánimas eórum; * et honorábile nomen eórum coram illo.

Et vivet, et dábitur ei de auro Arábiæ, et adorábunt de ipso semper: * totâ die benedícent ei.

Et erit firmamentum in terra in summis móntium, superextollétur super Líbanum fructus ejus; * et florébunt de civitáte sicut fœnum terræ.

Sit nomen ejus benedictum in sécula: * ante solem pérmanet nomen ejus.

Et benedicentur in ipso omnes tribus terræ: * omnes gentes magnificábunt eum.

Benedictus Dóminus Deus Israel, * qui facit mirabília solus:

Et benedictum nomen majestátis ejus in æternum; * et replébitur majestáte ejus omnis terra: fiat, fiat.

PSALMUS 84.

Benedixisti, Dómine, terram tuam, * avertisti captivitátem Jacob.

Remisisti iniquitátem plebis tuæ, * operuisti ómnia peccáta eórum.

Mitigasti omnem iram tuam, * avertisti ab ira indignatiónis tuæ.

Converte nos, Deus salutáris noster, * et averte iram tuam à nobis.

Numquid in æternum irascéris nobis? * aut extendes iram tuam à generatióne in generatiónem?

Deus, tu conversus vivificábis nos; * et plebs tua lætábitur in te.

Ostende nobis, Dómine, misericórdiam tuam, * et salutáre tuum da nobis.

Audiam quid loquátur in me Dóminus Deus; * quóniam loquétur pacem in plebem suam;

Et super sanctos suos; * et in eos qui convertuntur ad cor.

Verúmtamen prope timentes eum salutáre ipsíus: * ut inhábitet glória in terra nostra.

Misericórdia et véritas obviavérunt sibi: * justítia et pax osculátæ sunt.

Véritas de terra orta est, * et justítia de cœlo prospexit.

Etenim Dóminus dabit benignitátem; * et terra nostra dabit fructum suum.

Justítia ante eum ambulábit, * et ponet in via gressus suos.

*Ant.* 8. c. Ecce concípies in útero, et páries fílium, et vocábis nomen ejus Jesum. *Luc.* 1.

℣. Sanctificávit tabernáculum suum Altíssimus: ℟. Deus in médio ejus. *Ps.* 45.

Pater noster, etc.

*Lectiones infrà*, lxj.

### *IN III NOCTURNO.*

*Feriâ IV et Sabbato.*

PSALMUS 86.

FUNDAMENTA ejus in móntibus sanctis: * díligit Dóminus portas Sion super ómnia tabernácula Jacob.

Gloriósa dicta sunt de te, * cívitas Dei.

Memor ero Rahab et Babylónis, * sciéntium me.

Ecce Alienígenæ et Tyrus, et pópulus Æthíopum, * hi fuérunt illic.

Numquid Sion dicet: Homo, et homo natus est in ea; * et ipse fundávit eam Altíssimus?

Dóminus narrábit, in scriptúris populórum et príncipum, * horum qui fuérunt in ea.

Sicut lætántium ómnium * habitátio est in te.

PSALMUS 96.

DOMINUS regnávit; exultet terra; * læténtur ínsulæ multæ.

Nubes et calígo in circúitu ejus; * justítia et judícium corréctio sedis ejus.

Ignis ante ipsum præcédet, * et inflammábit in circúitu inimícos ejus.

Illuxérunt fúlgura ejus orbi terræ: * vidit, et commóta est terra.

Montes sicut cera fluxérunt à fácie Dómini; * à fácie Dómini omnis terra.

Annuntiavérunt cœli justítiam ejus: * et vidérunt omnes pópuli glóriam ejus.

Confundántur omnes qui adórant sculptília, * et qui gloriántur in simulácris suis.

Adoráte eum, * omnes Angeli ejus.

Audívit, et lætáta est Sion: * et exultavérunt fíliæ Judæ propter judícia tua, Dómine.

Quóniam tu Dóminus altíssimus super omnem terram: * nimis exaltátus es super omnes deos.

Qui dilígitis Dóminum, odíte malum: * custódit Dóminus ánimas sanctórum suórum; de manu peccatóris liberábit eos.

Lux orta est justo, * et rectis corde lætítia.

Lætámini, justi, in Dómino, * et confitémini memóriæ sanctificatiónis ejus.

PSALMUS 97.

CANTATE Dómino cánticum novum, * quia mirabília fecit.

Salvávit sibi déxtera ejus, * et bráchium sanctum ejus.

Notum fecit Dóminus salutáre suum; * in conspectu

géntium revelávit justítiam suam.

Recordátus est misericórdiæ suæ, * et veritátis suæ dómui Israel.

Vidérunt omnes términi terræ * salutáre Dei nostri.

Jubiláte Deo, omnis terra :* cantáte, et exultáte, et psállite.

Psállite Dómino in cíthara,* in cíthara, et voce psalmi;

In tubis ductílibus, et voce tubæ córneæ : * jubiláte in conspectu regis Dómini.

Moveátur mare, et plenitúdo ejus; * orbis terrárum, et qui hábitant in eo.

Flúmina plaudent manu; simul montes exultábunt à conspectu Dómini, * quóniam venit judicáre terram.

Judicábit orbem terrárum in justítia, * et pópulos in æquitáte.

*Ant.* 2. D. Quod nascétur ex te Sanctum, vocábitur Fílius Dei. *Luc.* 1.

℣. Descendet sicut plúvia in vellus : ℟. Et replébitur majestáte ejus omnis terra. *Ps.* 71.

Pater noster, etc.

*Absolutio.* Deus memínerit testamenti sui quod locútus est, et exáudiat oratiónes nostras.

℟. Amen.

*Bened. de B. M. V.* 116.

LECTIO I. *Isai.* 7.

ADJECIT Dóminus loqui ad Achaz, dicens : Pete tibi signum à Dómino Deo tuo in profundum inferni, sive in excelsum suprà. Et dixit Achaz : Non petam, et non tentábo Dóminum. Et dixit : Audíte ergo, domus David : Numquid parum vobis est molestos esse homínibus, quia molesti estis et Deo meo? Propter hoc dabit Dóminus ipse vobis signum : Ecce Virgo concípiet, et páriet fílium; et vocabitur nomen ejus, Emmánuel. Tu autem.

℟. Benedícam, lij.

LECTIO II. *Gal.* 4.

QUANTO témpore hæres párvulus est, nihil differt à servo, cùm sit Dóminus omnium; sed sub tutóribus et actóribus est, usque ad præfinitum tempus à patre : ita et nos, cùm essémus párvuli, sub elementis mundi erámus servientes. At ubi venit plenitúdo témporis, misit Deus Fílium suum, factum ex muliere, factum sub lege; ut eos qui sub lege erant redímeret, ut adoptiónem filiórum reciperémus.

℟. Quod in ea, liij.

LECTIO III.

Sermo sancti Bernardi Abbátis. *In Nat. B. M. n.* 7.

AD Patrem verebáris accédere, Jesum tibi dedit mediatórem, hunc tibi fratrem María dedit. Sed fórsitan et in ipso majestátem vereáre divínam, quòd, licèt factus sit homo, mánserit tamen Deus. Advocátum habére vis et ad ipsum? Ad Maríam recurre : pura síquidem humánitas in María, non modò pura ab omni contaminatióne, sed et pura singularitáte natúræ. Nec dúbius díxerim, exaudiétur et ipsa pro reveréntia sua. Exáu-

diet útique matrem Fílius, et exáudiet Fílium Pater. Filíoli, hæc peccatórum scala, hæc mea máxima fidúcia est, hæc tota rátio spei meæ.

℟. Deus ex sémine, liij.

*Non dicitur* Te Deum.

℣ *Sacerd.* Confiteantur tibi pópuli, Deus: ℟. Terra dedit fructum suum. *Ps.* 66.

*Si Laudes non sequantur, dicitur hìc Oratio,* Concéde, *ut infrà ad Sextam,* lxiij.

## AD LAUDES.

*Ps.* Deus misereátur, 74. Dominus regnávit, decórem, 78. Jubiláte Deo... servíte, 8.

Canticum. *Zach.* 2.

Lauda et lætáre, fília Sion; * quia ecce ego vénio, et habitábo in médio tuî, ait Dóminus.

Et applicabuntur gentes multæ ad Dóminum in die illa, * et erunt mihi in pópulum, et habitábo in médio tuî.

Et scies quia Dóminus exercítuum * misit me ad te.

Et possidébit Dóminus Judam partem suam in terra sanctificáta; * et éliget adhuc Jerúsalem.

Síleat omnis caro à fácie Dómini, * quia consurrexit de habitáculo sancto suo.

*Ps.* Laudáte Dóminum in sanctis ejus, 44.

*Ant. sola,* Benedicta, *etc. Capit. Hymn.* ℣ *et Ant. ad* Benedictus, *ut suprà,* liij, liv.

Orémus. Oratio.

Deus, qui de beátæ Maríæ vírginis útero Verbum tuum, Angelo nuntiante, carnem suscípere voluisti: præsta supplícibus tuis, ut qui verè eam genitrícem Dei crédimus, ejus apud te intercessiónibus adjuvémur; Per eumdem.

*Fiunt Suffragia.*

## AD PRIMAM.

Hymnus.

Memento, salutis auctor,
Quod nostri quondam córporis,
Ex illibáta Vírgine
Nascendo, formam súmpseris.

María, mater grátiæ,
Mater misericórdiæ,
Tu nos ab hoste prótege,
Et horâ mortis súscipe.

Qui natus es de Vírgine,
Jesu, tibi sit glória,
Cum Patre, cumque Spíritu,
In sempiterna sécula. Amen.

*Psal.* Deus, in nómine, 85. Cantáte... omnis terra, 32. Laudáte Dóminum, 104. *sub sola Ant.* 2. D. Fílius Dei factus est ei ex sémine David secundùm carnem. *Rom.* 1.

Capitulum. *Isai.* 11.

Egredietur virga de radíce Jesse, et flos de radíce ejus ascendet, et requiescet super eum Spíritus Dómini.

℟ *br.* Semen ejus * In æternum manébit. Semen. ℣. Et thronus ejus sicut sol * in conspectu meo, * In. Glória. Semen. *Ps.* 88.

℣. Dominábitur à mari usque ad mare, ℟. Et usque ad términos orbis terrárum. *Ps.* 71.

Orémus. Oratio.

Protege, Dómine, fámulos tuos subsídiis pacis; et beátæ Maríæ semper vírginis patro-

cíniis confidentes, à cunctis hóstibus et perículis redde secúros; Per Dóminum.

AD TERTIAM.

*Hymnus,* Memento, *suprà.*

*Psalm.* Ad Dóminum, 49. Levávi, 35. Lætátus sum. 49. *Ant.* De María, *Capit. etc. ut suprà*, liv.

Orémus. Oratio.

Deus, qui salútis æternæ, beátæ Maríæ virginitáte fœcundâ, humáno géneri præmia præstitisti: tríbue, quæsumus, ut ipsam pro nobis intercédere sentiámus, per quam merúimus auctórem vitæ suscípere Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum; Qui tecum vivit.

AD SEXTAM,

*Hymn.* Memento, *suprà.*

*Psalm.* Ad te levávi, 64. Nisi quia, 35. Qui confidunt, 65. *Ant.* Péperit, *Capit. etc. ut suprà,* liv.

Orémus. Oratio.

Concede, mísericors Deus, fragilitáti nostræ præsídium, ut qui sanctæ Dei Genitrícis memóriam ágimus; intercessiónis ejus auxílio, à nostris iniquitátibus resurgámus; Per eumdem.

AD NONAM.

*Hymnus,* Memento, *suprà.*

*Psalm.* In convertendo, 36. Nisi Dóminus, 65. Beáti omnes, 110. *Ant.* Beátus, *Capit. etc. ut suprà,* liv.

Orémus. Oratio.

Famulorum tuórum, quæsumus Dómine, delictis ignosce; ut qui tibi placére de áctibus nostris non valémus, Genitrícis Fílii tui Dómini nostri intercessióne salvémur; Per eumdem.

AD VESPERAS.

Psalmus 109.

Dixit Dóminus Dómino meo: * Sede à dextris meis;

Donec ponam inimícos tuos * scabellum pedum tuórum.

Virgam virtútis tuæ emittet Dóminus ex Sion: * domináre in médio inimicórum tuórum.

Tecum princípium in die virtútis tuæ in splendóribus sanctórum: * ex útero ante lucíferum génui te.

Jurávit Dóminus, et non pœnitébit eum: * Tu es Sacerdos in æternum secundùm órdinem Melchísedech.

Dóminus à dextris tuis, * confrégit in die iræ suæ reges.

Judicábit in natiónibus, implébit ruínas; * conquassábit cápita in terra multórum.

De torrente in via bibet; * proptérea exaltábit caput.

Psalmus 112.

Laudate, púeri, Dóminum; * laudáte nomen Dómini.

Sit nomen Dómini benedictum, * ex hoc nunc, et usque in séculum.

A solis ortu usque ad occásum, * laudábile nomen Dómini.

Excelsus super omnes gentes Dóminus, * et super cœlos glória ejus.

Quis sicut Dóminus Deus noster, qui in altis hábitat, * et humília réspicit in cœlo et in terra?

Súscitans à terra ínopem, * et de stércore érigens páuperem.

Ut cóllocet eum cum princípibus, * cum princípibus pópuli sui.

Qui habitáre facit stérilem in domo, * matrem filiórum lætantem.

PSALMUS 121.

LÆTATUS sum in his quæ dicta sunt mihi: * In domum Dómini íbimus.

Stantes erant pedes nostri * in átriis tuis, Jerúsalem.

Jerúsalem quæ ædificátur ut cívitas, * cujus participátio ejus in idipsum.

Illuc enim ascendérunt tribus, tribus Dómini; * testimónium Israel, ad confiténdum nómini Dómini.

Quia illìc sedérunt sedes in judício, * sedes super domum David.

Rogáte quæ ad pacem sunt Jerúsalem; * et abundántia diligéntibus te.

Fiat pax in virtúte tua, * et abundántia in túrribus tuis.

Propter fratres meos et próximos meos, * loquébar pacem de te.

Propter domum Dómini Dei nostri, * quæsívi bona tibi.

PSALMUS 126.

NISI Dóminus ædificáverit domum, * in vanum laboravérunt qui ædíficant eam.

Nisi Dóminus custodíerit civitátem, * frustra vígilat qui custódit eam.

Vanum est vobis ante lucem súrgere: * súrgite postquam sedéritis, qui manducátis panem dolóris, cùm déderit dilectis suis somnum.

Ecce hæréditas Dómini, fílii; * merces, fructus ventris.

Sicut sagittæ in manu potentis, * ita fílii excussórum.

Beátus vir qui implévit desidérium suum ex ipsis; * non confundétur, cùm loquétur inimícis suis in porta.

PSALMUS 147.

LAUDA, Jerúsalem, Dóminum: * lauda Deum tuum, Sion;

Quóniam confortávit seras portárum tuárum, * benedixit fíliis tuis in te;

Qui pósuit fines tuos pacem, * et ádipe fruménti sátiat te;

Qui emittit elóquium suum terræ, * velóciter currit sermo ejus;

Qui dat nivem sicut lanam, * nébulam sicut cínerem spargit;

Mittit crystallum suam sicut buccellas: * ante fáciem frígoris ejus quis sustinébit?

Emittet verbum suum, et liquefáciet ea: * flabit spíritus ejus, et fluent aquæ.

Qui annúntiat verbum suum Jacob, * justítias et judícia sua Israel.

Non fecit táliter omni natióni; * et judícia sua non manifestávit eis.

*Ant.* 3. c. In me ancilla sua adimplévit Dóminus misericórdiam suam quam promísit dómui Israel. *Judith* 13.

Capitulum. *Eccli.* 24.

Qui creávit me, requiévit in tabernáculo meo; et dixit mihi : In Jacob inhábita, et in Israel hæreditáre, et in electis meis mitte radíces. Et sic in Sion firmáta sum.

*Hymn.* Ave, maris stella, xv.

℣. Anima mea exultábit in Dómino : ℟. Et delectábitur super salutári suo. *Ps.* 34.

*Ad* Magnificat. *Ant.* 8. G. Beátam me dicent omnes generatiónes; quia fecit mihi magna qui potens est, et sanctum nomen ejus. *Luc.* 1.

Orémus. Oratio.

Cordibus nostris, quæsumus Dómine, grátiam tuam benignus infunde; et intercedente sanctíssimâ Dei genitríce Maríâ, córpora nostra castitáte, et mentes nostras humilitáte et caritáte sanctífica; Per.

*Fiunt Suffragia.*

AD COMPLETORIUM.

*Ps.* Sæpe expugnavérunt, 94. De profundis, 65. Dómine, non est, 65. *sub sola Ant.* 5. a. In omni gente quæ audíerit nomen tuum, magnificábitur super te Deus Israel. *Judith* 13.

Hymnus.

Virgineis titulis matris quæ jungis honóres,
Hâc natos foveas nocte benigna tuos.
Fúlgida stella maris, secli dum mérgimur undis,
Sis lux in tenebris, et bene fida quies.
Si sopor obrépit, casti fac mater amóris,
Cor vigilans uno spiret amóre Dei.
Virgo Dei genitrix, propiùs res áspice nostras,
Plebis ames dici vita salusque tuæ.
Gloria summa Patri, compar sit glória Nato,
Ambórum, tibi par, Spíritus alme, decus. Amen.

Capitulum. *Judith* 13.

Nomen tuum Dóminus ita magnificávit, ut non recédat laus tua de ore hóminum, qui mémores fúerint virtútis Dómini in æternum.

℟ *br.* Vultum tuum * Deprecabuntur. Vultum tuum. ℣. Omnes dívites * plebis. * Deprecabuntur. Glória Patri. Vultum.

℣. Mémores erunt nóminis tui ℟. In omni generatióne et generatiónem. *Ps.* 44.

*Ad* Nunc dimittis. *Ant.* 4. E. Memoráre diérum humilitátis tuæ: et ínvoca Dóminum, et lóquere Regi pro nobis, et líbera nos de morte. *Esther* 15.

Orémus. Oratio.

Beatæ et gloriósæ semperque vírginis Maríæ, quæsumus Dómine, intercéssio gloriósa nos prótegat, et ad vitam perdúcat æternam; Per Dóminum.

---

TEMPORE PASCHALI.

*Si dicatur Officium parvum, fit ut suprà, addendo semel* Allelúia, *in fine Invitatorii et Antiphonarum; et bis* Allelúia, *in fine Responsoriorum etiam brevium.*

*Absol. et Bened. ut notatur*

*pro Tempore Paschali. Non dicitur* Te Deum.

*Dicitur, ad Laudes et Vesperas tantùm, Oratio,* Deus, qui per resurrectiónem, *ut suprà*, liv. *Non dicuntur Suffragia.*

---

PROSÆ DE BEATA.

INVIOLATA, íntegra et casta es, María:
Quæ es effecta fúlgida cœli porta.
O mater alma Christi caríssima,
Súscipe pia laudum præcónia.
Nostra ut pura péctora sint et córpora,
Te nunc flágitant devóta corda et ora.
Tua per precáta dulcísona,
Nobis concédas véniam per sécula.
O benigna! O benigna! O benigna!
Quæ sola invioláta permansisti.

℣. Véritas de terra orta est,
℟. Et justítia de cœlo prospexit. *Ps.* 84.

Orémus. ORATIO.

FAMULORUM tuórum, quæsumus Dómine, delictis ignosce; ut qui tibi placére de áctibus nostris non valémus, Genitrícis Fílii tui Dómini nostri intercessióne salvémur; Per eumdem.

---

TEMPORE PASSIONIS.

STABAT Mater dolorósa,
Juxta Crucem lacrymósa,
Dum pendébat Fílius.
Cujus ánimam gementem,
Contristátam et dolentem,
Pertransívit gládius.
O QUAM tristis et afflicta
Fuit illa benedicta
Mater Unigéniti!
Quæ mœrébat et dolébat,
Pia Mater, dum vidébat
Nati pœnas ínclyti.
QUIS est homo qui non fleret,
Christi Matrem si vidéret
In tanto supplício?
Quis posset non contristári,
Piam Matrem contemplári
Dolentem cum Fílio?
Pro peccátis suæ gentis
Vidit Jesum in tormentis,
Et flagellis súbditum.
Vidit suum dulcem natum
Morientem, desolátum,
Dum emísit spíritum.
EIA, Mater, fons amóris,
Me sentíre vim dolóris
Fac, ut tecum lúgeam.
Fac ut árdeat cor meum,
In amando Christum Deum,
Ut illi compláceam.
SANCTA Mater, istud agas,
Crucifixi fige plagas
Cordi meo válidè.
Tui nati vulneráti,
Tam dignáti pro me pati,
Pœnas mecum dívide.
FAC me piè tecum flere,
Crucifixo condolére,
Donec ego víxero.
Juxta crucem tecum stare,
Et me tibi sociáre
In planctu desídero.
VIRGO vírginum præclára,
Mihi jam non sis amára,
Fac me tecum plángere.
Fac ut portem Christi mortem,

Passiónis fac consortem,
Et plagas recólere.
Fac me plagis vulnerári,
Cruce hâc inebriári,
Ob amórem Fílii.
Ne flammis urar succensus,
Per te, Virgo, sim defensus,
In die judícii.
Fac me cruce custodíri,
Morte Christi præmuníri,
Confovéri grátiâ.
Quando corpus moriétur,
Fac ut ánimæ donétur
Paradísi glória. Amen.

℣. O vos omnes qui transítis per viam, ℟. Atténdite et vidéte si est dolor sicut dolor meus. *Thren.* 1.

ORATIO.

INTERVENIAT pro nobis, quæsumus Dómine Jesu, apud tuam cleméntiam, nunc et in hora mortis nostræ, beáta Virgo María mater tua, cujus ánimam, in hora Passiónis tuæ, dolóris gládius pertransívit; (Qui vivis et regnas Deus. ℟. Amen.)

*A Feria IV Majoris Hebdomadæ, omittitur ℣: et in Oratione non dicitur* Orémus, *nec conclusio.*

# PSALMI POENITENTIALES.

PSALMUS 6.

Domine, ne in furóre tuo árguas me, * neque in ira tua corrípias me.

Miserére mei, Dómine, quóniam infirmus sum :* sana me, Dómine, quóniam conturbáta sunt ossa mea.

Et ánima mea turbáta est valde; * sed tu, Dómine, úsquequo?

Convértere, Dómine, et éripe ánimam meam : * salvum me fac propter misericórdiam tuam.

Quóniam non est in morte, qui memor sit tuî : * in inferno autem quis confitébitur tibi?

Laborávi in gémitu meo; lavábo per síngulas noctes lectum meum : * lácrymis meis stratum meum rigábo.

Turbátus est à furóre óculus meus; * inveterávi inter omnes inimícos meos.

Discédite à me, omnes qui operámini iniquitátem;* quóniam exaudívit Dóminus vocem fletûs mei.

Exaudívit Dóminus deprecatiónem meam :* Dóminus oratiónem meam suscépit.

Erubescant et conturbentur vehementer omnes inimíci mei : * convertantur et erubescant valde velóciter.

PSALMUS 31.

Beati quorum remissæ sunt iniquitátes, * et quorum tecta sunt peccáta.

Beátus vir cui non imputávit Dóminus peccátum, * nec est in spíritu ejus dolus.

Quóniam tácui, inveteravérunt ossa mea; * dum clamárem totâ die.

Quóniam die ac nocte graváta est super me manus tua:* conversus sum in ærumna mea, dum confígitur spina.

Delictum meum cógnitum tibi feci; * et injustítiam meam non abscondi.

Dixi : Confitébor advérsùm me injustítiam meam Dómino; * et tu remisisti impietátem peccáti mei.

Pro hac orábit ad te omnis sanctus * in témpore opportúno.

Verúmtamen in dilúvio aquárum multárum, * ad eum non approximábunt.

Tu es refúgium meum à tribulatióne quæ circúmdedit me : * exultátio mea, érue me à circumdántibus me.

Intellectum tibi dabo, et ínstruam te in via hac quâ gradiéris : * firmábo super te óculos meos.

Nolíte fíeri sicut equus et mulus, * quibus non est intellectus.

In camo et fræno maxillas eórum constringe, * qui non appróximant ad te.

Multa flagella peccatóris : * sperantem autem in Dómino misericórdia circúmdabit.

Lætámini in Dómino, et

exultáte, justi; * et gloriámini, omnes recti corde.

Psalmus 37.

Dómine, ne in furóre tuo árguas me, * neque in ira tua corrípias me:

Quóniam sagittæ tuæ infixæ sunt mihi; * et confirmasti super me manum tuam.

Non est sánitas in carne mea à fácie iræ tuæ: * non est pax óssibus meis à fácie peccatórum meórum.

Quóniam iniquitátes meæ supergressæ sunt caput meum: * et sicut onus grave gravátæ sunt super me.

Putruérunt et corruptæ sunt cicatríces meæ, * à fácie insipiéntiæ meæ.

Miser factus sum et curvátus sum usque in finem: * totâ die contristátus ingrediébar.

Quóniam lumbi mei impléti sunt illusiónibus; * et non est sánitas in carne mea.

Afflictus sum et humiliátus sum nimis: * rugiébam à gémitu cordis mei.

Dómine, ante te omne desidérium meum; * et gémitus meus à te non est abscónditus.

Cor meum conturbátum est, dereliquit me virtus mea; * et lumen oculórum meórum, et ipsum non est mecum.

Amíci mei et próximi mei * adversùm me appropinquavérunt, et stetérunt.

Et qui juxta me erant, de longè stetérunt; * et vim faciébant qui quærébant ánimam meam.

Et qui inquirébant mala mihi, locúti sunt vanitátes, * et dolos totâ die meditabantur.

Ego autem tanquam surdus non audiébam, * et sicut mutus non apériens os suum.

Et factus sum sicut homo non áudiens, * et non habens in ore suo redargutiónes.

Quóniam in te, Dómine, sperávi: * tu exáudies me, Dómine Deus meus.

Quia dixi: Nequando supergáudeant mihi inimíci mei; * et, dum commoventur pedes mei, super me magna locúti sunt.

Quóniam ego in flagella parátus sum; * et dolor meus in conspectu meo semper.

Quóniam iniquitátem meam annuntiábo; * et cogitábo pro peccáto meo.

Inimíci autem mei vivunt, et confirmáti sunt super me; * et multiplicáti sunt qui odérunt me iniquè.

Qui retríbuunt mala pro bonis, detrahébant mihi: * quóniam sequébar bonitátem.

Ne derelinquas me, Dómine Deus meus, * ne discésseris à me.

Intende in adjutórium meum, * Dómine Deus salútis meæ.

Psalmus 50.

Miserere meî, Deus, * secundùm magnam misericórdiam tuam;

Et secundùm multitúdinem miseratiónum tuárum * dele iniquitatem meam.

Amplius lava me ab iniquitáte mea : * et à peccáto meo munda me :

Quóniam iniquitátem meam ego cognosco, * et peccátum meum contra me est semper.

Tibi soli peccávi, et malum coram te feci ; * ut justificéris in sermónibus tuis, et vincas cùm judicáris.

Ecce enim in iniquitátibus conceptus sum, * et in peccátis concépit me mater mea.

Ecce enim veritátem dilexisti : * incerta et occulta sapiéntiæ tuæ manifestasti mihi.

Asperges me hyssópo, et mundábor : * lavábis me, et super nivem dealbábor.

Audítui meo dabis gáudium et lætítiam ; * et exultábunt ossa humiliáta.

Averte fáciem tuam à peccátis meis ; * et omnes iniquitátes meas dele.

Cor mundum crea in me, Deus ; * et spíritum rectum ínnova in viscéribus meis.

Ne projícias me à fácie tua ; * et Spíritum sanctum tuum ne áuferas à me.

Redde mihi lætítiam salutáris tui ; * et spíritu principáli confirma me.

Docébo iníquos vias tuas : * et ímpii ad te convertentur.

Líbera me de sanguínibus, Deus, Deus salútis meæ ; * et exultábit lingua mea justítiam tuam.

Dómine, lábia mea apéries ; * et os meum annuntiábit laudem tuam.

Quóniam si voluisses sacrifícium, dedissem útique ; * holocaustis non delectáberis.

Sacrifícium Deo spíritus contribulátus : * cor contrítum et humiliátum, Deus, non despícies.

Benignè fac, Dómine, in bona voluntáte tua Sion, * ut ædificentur muri Jerúsalem.

Tunc acceptábis sacrifícium justítiæ, oblatiónes et holocausta ; * tunc impónent super altáre tuum vítulos.

### Psalmus 101.

Domine, exaudi oratiónem meam ; * et clamor meus ad te véniat.

Non avertas fáciem tuam à me : * in quacumque die tríbulor, inclína ad me aurem tuam.

In quacumque die invocávero te, * velóciter exaudi me ;

Quia defecérunt sicut fumus dies mei, * et ossa mea sicut crémium aruérunt.

Percussus sum ut fœnum, et áruit cor meum ; * quia oblítus sum comédere panem meum.

A voce gémitûs mei, * adhæsit os meum carni meæ.

Símilis factus sum pellicáno solitúdinis : * factus sum sicut nyctícorax in domicílio.

Vigilávi, * et factus sum sicut passer solitárius in tecto.

Totâ die exprobrábant mihi inimíci mei, * et qui laudábant me, adversùm me jurábant.

Quia cínerem tanquam panem manducábam, * et po-

tum meum cum fletu miscébam,

A fácie iræ et indignatiónis tuæ;* quia élevans allisisti me.

Dies mei sicut umbra declinavérunt; * et ego sicut fœnum árui.

Tu autem, Dómine, in æternum pérmanes: * et memoriále tuum in generatiónem et generatiónem.

Tu exurgens miseréberis Sion, * quia tempus miserendi ejus, quia venit tempus.

Quóniam placuérunt servis tuis lápides ejus, * et terræ ejus miserebuntur.

Et timébunt gentes nomen tuum, Dómine, * et omnes reges terræ glóriam tuam;

Quia ædificávit Dóminus Sion, * et vidébitur in glória sua.

Respexit in oratiónem humílium, * et non sprevit precem eórum.

Scribantur hæc in generatióne áltera: * et pópulus qui creábitur, laudábit Dóminum;

Quia prospexit de excelso sancto suo: * Dóminus de cœlo in terram aspexit;

Ut audíret gémitus compeditórum, * ut sólveret fílios interemptórum;

Ut annúntient in Sion nomen Dómini, * et laudem ejus in Jerúsalem,

In conveniendo pópulos in unum, et reges, * ut sérviant Dómino.

Respondit ei in via virtútis suæ: * Paucitátem diérum meórum núntia mihi.

Ne révoces me in dimídio diérum meórum: * in generatiónem et generatiónem anni tui.

Inítio tu, Dómine, terram fundasti: * et ópera mánuum tuárum sunt cœli.

Ipsi períbunt; * tu autem pérmanes:

Et omnes sicut vestimentum veterascent; * et sicut opertórium mutábis eos, et mutabuntur.

Tu autem idem ipse es, * et anni tui non defícient.

Fílii servórum tuórum habitábunt; * et semen eórum in séculum dirigétur.

Psalmus 129.

De profundis clamávi ad te, Dómine: * Dómine, exaudi vocem meam.

Fiant aures tuæ intendentes * in vocem deprecatiónis meæ.

Si iniquitátes observáveris, Dómine;* Dómine, quis sustinébit?

Quia apud te propitiátio est, * et propter legem tuam sustínui te, Dómine.

Sustínuit ánima mea in verbo ejus; * sperávit ánima mea in Dómino.

A custódia matutína usque ad noctem, * speret Israel in Dómino.

Quia apud Dóminum misericórdia, * et copiósa apud eum redémptio;

Et ipse rédimet Israel * ex ómnibus iniquitátibus ejus.

Psalmus 142.

Dómine, exaudi oratiónem meam: * áuribus pércipe ob-

secratiónem meam in veritáte tua; exaudi me in tua justítia.

Et non intres in judícium cum servo tuo; * quia non justificábitur in conspectu tuo omnis vivens.

Quia persecútus est inimícus ánimam meam: * humiliávit in terra vitam meam.

Collocávit me in obscúris sicut mórtuos séculi; * et anxiátus est super me spíritus meus: in me turbátum est cor meum.

Memor fui diérum antiquórum: meditátus sum in ómnibus opéribus tuis; * in factis mánuum tuárum meditábar.

Expandi manus meas ad te: * ánima mea sicut terra sine aqua tibi.

Velóciter exaudi me, Dómine; * defécit spíritus meus.

Non avertas fáciem tuam à me; * et símilis ero descendéntibus in lacum.

Audítam fac mihi mane misericórdiam tuam; * quia in te sperávi.

Notam fac mihi viam in qua ámbulem; * quia ad te levávi ánimam meam.

Eripe me de inimícis meis, Dómine; ad te confúgi: * doce me fácere voluntátem tuam, quia Deus meus es tu.

Spíritus tuus bonus dedúcet me in terram rectam: * propter nomen tuum, Dómine, vivificábis me in æquitáte tua.

Edúces de tribulatióne ánimam meam; * et in misericórdia tua disperdes inimícos meos.

Et perdes omnes qui tríbulant ánimam meam; * quóniam ego servus tuus sum.

*Ant.* Dómine, memor esto meî, et ne vindictam sumas de peccátis meis, neque reminiscáris delicta mea, vel parentum meórum. *Tob.* 3.

## LITANIÆ SANCTORUM.

Kyrie, eléison. Christe, eléison. Kyrie, eléison.
Christe, audi nos.
Christe, exaudi nos.
Pater de cœlis, Deus, miserére nobis.
Fili redemptor mundi, Deus, miserére nobis.
Spíritus sancte, Deus, miserére nobis.
Sancta Trínitas, unus Deus, miserére nobis.
Sancta María, ora pro nobis.
Sancta Dei Génitrix, ora.
Sancta Virgo vírginum, ora.
Sancte Míchael, ora.
Sancte Gábriel, ora.
Sancte Ráphael, ora.
Omnes sancti Angeli et Archángeli, oráte pro nobis.
Omnes sancti beatórum Spírituum órdines, oráte.
Sancte Joannes Baptista, ora.
Sancte Joseph, ora.
Sancte Jóachim, ora.
Omnes sancti Patriarchæ et Prophétæ, oráte.
Sancte Petre, ora pro nobis.
Sancte Paule, ora.
Sancte Andréa, ora.
Sancte Jacóbe, (*Zeb.*) ora.
Sancte Joannes, ora.
Sancte Thoma, ora.

Sancte,

Sancte Jacóbe, ora pro nobis.
Sancte Philippe, ora.
Sancte Bartholomæe, ora.
Sancte Matthæe, ora.
Sancte Simon, ora.
Sancte Thadæe, ora.
Sancte Matthía, ora.
Sancte Bárnaba, ora.
Sancte Luca, ora.
Sancte Marce, ora.
Omnes sancti Apóstoli et Evangelistæ, oráte.
Omnes sancti Discípuli Dómini, oráte.
Omnes sancti Innocentes, oráte pro nobis.
Sancte Stéphane, ora.
Sancte Clemens, ora.
Sancte Fabiáne, ora.
Sancte Laurenti, ora.
Sancte Vincenti, ora.
Sancte Irenæe cum sóciis tuis, ora.
Sancte Diónysi cum sóciis tuis, ora.
Sancti Agoarde et Agliberte, oráte pro nobis.
Sancti Cosma et Damiáne, oráte pro nobis.
Sancti Gervási et Protási, oráte pro nobis.
Sancte Præjecte, ora.
Sancte Justíne, ora.
Sancte Lucáne, ora.
Sancte Victor, ora.
Sancte Sebastiáne, ora.
Sancte Maurici cum sóciis tuis, ora.
Sancte Hippólyte cum sóciis tuis, ora.
Omnes sancti Mártyres, oráte pro nobis.
Sancte Silvester, ora.
Sancte Grégori, ora.
Sancte Ambrósi, ora.



Sancte Augustíne, ora pro nobis.
Sancte Hierónyme, ora.
Sancte Hilári, ora.
Sancte Martíne, ora.
Sancte Cæsari, ora.
Sancte Remígi, ora.
Sancte Nicoláe, ora.
Sancte Marcelle, ora.
Sancte Germáne, ora.
Sancte Landeríce, ora.
Sancte Ceraune, ora.
Sancte Gendulfe, ora.
Sancte Exúperi, ora.
Sancte Maglóri, ora.
Sancte Elígi, ora.
Sancte Francisce (*Salesi*), ora.
Omnes sancti Pontífices et Confessóres, oráte pro nobis.
Omnes sancti Doctóres, oráte pro nobis.
Sancte Antóni, ora.
Sancte Benedicte, ora.
Sancte Maure, ora.
Sancte Maturíne, ora.
Sancte Mederíce, ora.
Sancte Leufréde, ora.
Sancte Severíne, ora.
Sancte Clodoalde, ora.
Sancte Droctovæe, ora.
Sancte Fiácri, ora.
Sancte Bernarde, ora.
Sancte Domínice, ora.
Sancte Vincenti (*à Paulo*), ora.
Sancte Francisce, ora.
Sancte Ludovíce, ora.
Sancte Roche, ora.
Omnes sancti Sacerdótes et Levítæ, oráte pro nobis.
Omnes sancti Mónachi et Eremítæ, oráte pro nobis.
Sancta Anna, ora pro nobis.
Sancta María Magdaléne, ora pro nobis.

Sancta Thecla, ora pro nobis.
Sanctæ Perpétua et Felícitas, oráte pro nobis.
Sancta Agatha, ora.
Sancta Lucía, ora.
Sancta Agnes, ora.
Sancta Cæcília, ora.
Sancta Catharína, ora.
Sancta Anastásia, ora.
Sancta Genovéfa, ora.
Sancta Aurea, ora.
Sancta Opportúna, ora.
Sancta Therésia, ora.
Sancta Clotildis, ora.
Sancta Bathildis, ora.
Sancta Joanna (*Valesia*), ora.
Sancta Joanna Francisca, ora pro nobis.
Sancta María (*Ægyptia*), ora.
Omnes sanctæ Vírgines et Víduæ, oráte pro nobis.
Omnes Sancti et Sanctæ Dei, intercédite pro nobis.
Propítius esto, parce nobis, Dómine.
Propítius esto, exaudi nos, Dómine.
Ab omni malo, líbera nos, Dómine.
Ab omni peccáto, líbera.
Ab ira tua, líbera.
A subitánea et improvísa morte, líbera.
Ab insídiis diáboli, líbera.
Ab immundis cogitatiónibus, líbera.
A spíritu fornicatiónis, líbera.
Ab ira, et ódio, et omni mala voluntáte, líbera.
A fúlgure et tempestáte, líber.
A morte perpétua; líbera.
Per mystérium sanctæ Incarnatiónis tuæ, líbera.
Per Adventum tuum, líbera.
Per Nativitátem tuam, líbera nos, Dómine.
Per Baptismum et sanctum Jejúnium tuum, líbera.
Per Crucem et Passiónem tuam. líbera.
Per Mortem et Sepultúram tuam, líbera.
Per sanctam Resurrectiónem tuam, líbera.
Per admirábilem Ascensiónem tuam, líbera.
Per adventum Spíritûs sancti Paracléti, líbera.
In die judícii, líbera.
Peccatóres, te rogámus, audi nos.
Ut ad veram pœniténtiam nos perdúcere dignéris, te.
Ut remissiónem peccatórum nostrórum nobis dones, te.
Ut compunctiónem cordis, fontemque lacrymárum nobis dones, te.
Ut fidem, spem et caritátem nobis dones, te.
Ut Ecclésiam tuam sanctam régere et conserváre dignéris, te.
Ut Domnum Apostólicum, et omnes gradus Ecclésiæ in sancta religióne conserváre dignéris, te.
Ut Antístitem nostrum, et omnes congregatiónes illi commissas, in tuo sancto obséquio conserváre dignéris, te.
Ut Regem nostrum custodíre dignéris, te.
Ut inimícos sanctæ Ecclésiæ humiliáre dignéris, te.
Ut Régibus et Princípibus christiánis pacem et veram concórdiam donáre

dignéris, te rogámus, audi nos.

Ut cuncto pópulo christiáno pacem et unitátem largíri dignéris, te.

Ut nosmetipsos in tuo sancto servítio confortáre et conserváre dignéris, te.

Ut mentes nostras ad cœléstia desidéria érigas, te.

Ut ómnibus benefactóribus nostris sempiterna bona retríbuas, te.

Ut ánimas nostras, fratrum, propinquórum, et benefactórum nostrórum, ab æterna damnatióne erípias, te.

Ut fructus terræ dare et conserváre dignéris, te.

Ut ómnibus fidélibus defunctis réquiem æternam donáre dignéris, te.

Ut nos exaudíre dignéris, te.

Fili Dei, te.

Agnus Dei, qui tollis peccáta mundi, parce nobis, Dómine.

Agnus Dei, qui tollis peccáta mundi, exaudi nos, Dómine.

Agnus Dei, qui tollis peccáta mundi, miserére nobis.

Kyrie, eléison. Christe, eléison. Kyrie, eléison.

Pater noster, *secretò, usque ad* ℣ Et ne nos indúcas in tentatiónem; ℟. Sed líbera nos à malo.

℣. Dómine, non secundùm peccáta nostra fácias nobis: ℟. Neque secundùm iniquitátes nostras retríbuas nobis.

℣. Esto nobis, Dómine, turris fortitúdinis, ℟. A fácie inimíci.

℣. Orémus pro universa Ecclésia. ℟. Memor esto congregatiónis tuæ, quam possedisti ab inítio.

℣. Pro Papa nostro *N.* ℟. Notam fáciat, Dómine, fíliis hóminum glóriam magnificéntiæ regni tui.

℣. Pro Antístite nostro *N.* ℟. Dóminus conservet eum, et vivíficet eum.

℣. Pro Rege nostro *N.* ℟. Dómine, salvum fac Regem; et exaudi nos in die quâ invocavérimus te.

℣. Pro cuncto pópulo. ℟. Salvum fac pópulum tuum, Dómine, et bénedic hæreditáti tuæ.

℣. Pro benefactóribus nostris. ℟. Deus omnem grátiam abundáre fáciat in illis, et áugeat incrementa frugum justítiæ illórum.

℣. Pro frátribus nostris absséntibus. ℟. Bénefac, Dómine, bonis et rectis corde.

℣. Pro infirmis, afflictis, captívis, et peregrínis. ℟. Líbera eos, Deus, ex ómnibus tribulatiónibus suis.

℣. Pro cunctis fidélibus defunctis. ℟. Edúcat eos Dóminus in lucem, et vídeant justítiam ejus.

℣. Dómine, exaudi oratiónem meam; ℟. Et clamor meus ad te véniat.

PSALMUS 69.

DEUS, in adjutórium meum intende: * Dómine, ad adjuvandum me festína.

Confundantur, et reve-

reantur, * qui quærunt ánimam meam.

Avertantur retrorsum, et erubescant, * qui volunt mihi mala.

Avertantur statim erubescentes, * qui dicunt mihi: Euge, euge.

Exultent et lætentur in te omnes qui quærunt te; * et dicant semper: Magnificétur Dóminus, qui díligunt salutáre tuum.

Ego verò egénus et pauper sum: * Deus, ádjuva me.

Adjútor meus et liberátor meus es tu: * Dómine, ne moréris.

℣. Dómine, exaudi, etc.

℣. Dóminus vobiscum.

Orémus.

Deus, cui próprium est miseréri semper, et párcere: súscipe deprecatiónem nostram; ut nos, et omnes fámulos tuos quos delictórum caténa constringit, miserátio tuæ pietátis clementer absolvat.

Exaudi, quæsumus Dómine, súpplicum preces, et confiténtium tibi parce peccátis: ut páriter nobis indulgéntiam tríbuas benignus et pacem.

Ineffabilem nobis, Dómine, misericórdiam tuam clementer ostende; ut simul nos et à peccátis ómnibus éxuas, et à pœnis quas pro his merémur erípias.

Deus, qui culpas delinquéntium districtè feriendo pércutis, fletus quoque lugéntium non recúsas: quæsumus, ut qui pondus tuæ animadversiónis cognóvimus, pietátis tuæ grátiam sentiámus.

Deus ómnium fidélium pastor et rector, fámulum tuum *N.* quem pastórem Ecclésiæ tuæ præesse voluisti, propítius réspice; da ei, quæsumus, verbo et exemplo, quibus præest profícere, ut ad vitam, unà cum grege sibi crédito, pervéniat sempiternam.

Omnipotens sempiterne Deus, miserére fámulo tuo Pontífici nostro *N.* et dirige eum secundùm tuam cleméntiam in viam salútis ætemæ: ut, te donante, tibi plácita cúpiat, et totâ virtúte perfíciat.

Quæsumus, omnípotens Deus, ut fámulus tuus Rex noster *N.* qui tuâ miseratióne suscépit regni gubernácula, virtútum étiam ómnium percípiat incrementa: quibus decenter ornátus, vitiórum monstra devitáre, hostes superáre; et ad te, qui via, véritas et vita es, gratiósus váleat perveníre.

Deus, à quo sancta desidéria, recta consília et justa sunt ópera: da servis tuis illam, quam mundus dare non potest, pacem; ut et corda nostra mandátis tuis dédita, et, hóstium sublátâ formídine, témpora sint tuâ protectióne tranquilla.

Ure igne sancti Spíritûs renes nostros et cor nostrum,

Dómine; ut tibi casto córpore serviámus, et mundo corde placeámus.

Actiones nostras, quæsumus Dómine, aspirando præveni, et adjuvando proséquere; ut cuncta nostra orátio et operátio à te semper incípiat, et per te cœpta finiátur.

Fidelium, Deus, ómnium cónditor et redemptor, animábus famulórum famularumque tuárum remissiónem cunctórum tríbue peccatórum; ut indulgéntiam quam semper optavérunt, piis supplicatiónibus consequantur.

Omnipotens sempiterne Deus, qui vivórum domináris simul et mortuórum, omniumque miseréris, quos tuos fide et ópere futúros esse prænoscis: te súpplices exorámus, ut pro quibus effúndere preces decrévimus, quosque vel præsens séculum adhuc in carne rétinet, vel futúrum jam exútos córpore suscépit, intercedéntibus ómnibus Sanctis tuis, pietátis tuæ cleméntiâ, ómnium delictórum suórum véniam consequantur; Per Christum Dóminum nostrum.

℟. Amen.



# COMMENDATIO ANIMÆ

## ANTE DECESSUM.

*Primùm dicuntur Litaniæ breves in hunc modum:*

Kyrie, eléison. Christe, eléison. Kyrie, eléison.
Sancta María, ora pro eo [*vel* ea.]
Omnes sancti Angeli, oráte pro eo [*vel* ea.]
Sancte Abel, ora.
Omnis chorus Justórum, or.
Sancte Abraham, ora.
Sancte Joannes Baptista, ora.
Sancte Joseph, ora.
Omnes sancti Patriarchæ et Prophétæ, oráte.
Sancte Petre, ora.
Sancte Paule, ora.
Sancte Andréa, ora.
Sancte Joannes, ora.
Omnes sancti Apóstoli et Evangelistæ, oráte.
Omnes sancti Discípuli Dómini, oráte.
Omnes sancti Innocentes, oráte pro eo [*vel* ea.]
Sancte Stéphane, ora.
Sancte Laurenti, ora.
Sancte Diónysi cum sóciis tuis, oráte pro eo [*vel* ea.]
Omnes sancti Mártyres, oráte pro eo [*vel* ea.]
Sancte Silvester, ora.
Sancte Augustíne, ora.
Sancte Benedicte, ora.
Sancte Francisce, ora.
Omnes sancti Confessóres, oráte pro eo [*vel* ea.]
Sancta María Magdaléne, ora pro eo [*vel* ea.]
Sancta Thecla, ora.
Sancta Lucía, ora.
Sancta Genovéfa, ora.
Omnes sanctæ Vírgines, oráte pro eo [*vel* ea.]
Omnes Sancti et Sanctæ Dei, intercédite pro eo [*vel* ea.]
Propítius esto, parce ei, Dómine.
Propítius esto, ádjuva eum [*vel* eam,] Dómine.
Propítius esto, líbera eum [*vel* eam,] Dómine.
Ab ira tua, líbera.
A mala morte, líbera.
A potestáte diáboli, líbera.
A pœnis inferni, líbera.
Per Nativitátem tuam, líbera eum [*vel* eam,] Dómine.
Per Crucem et Passiónem tuam, líbera.
Per Mortem et Sepultúram tuam, líbera.
Per gloriósam Resurrectiónem tuam, líbera.
Per admirábilem Ascensiónem tuam, líbera.
Per grátiam Spíritûs sancti Paracléti, líbera.
In die judícii, líbera eum [*vel* eam,] Dómine.
Peccatóres, te rogámus, audi nos.

Ut ei parcas, te rogámus. Kyrie, eléison. Christe, eléison. Kyrie, eléison.

*Deinde, cùm in agone sui exitûs anxiatur anima, dicitur :*

PROFICISCERE, ánima christiána, de hoc mundo, In nómine Dei Patris omnipoténtis, qui te creávit : In nómine Jesu Christi Fílii Dei vivi, qui pro te passus est : In nómine Spíritûs sancti, qui in te effúsus est. Egrediénti de córpore áditus tibi páteat ad Sion montem, civitátem Dei viventis, Jerúsalem cœléstem, et multórum Angelórum frequéntiam, et Ecclésiam primitivórum qui conscripti sunt in cœlis. Exurgat Deus, et dissipéntur omnes potestátes tenebrárum; fúgiant cuncta spirituália nequítiæ in cœléstibus, et ovem pretióso Christi sánguine redemptam violáre non áudeant. Líberet te à cruciátu Christus, qui pro te crucifixus est. Líberet te ab æterna morte Christus, qui pro te mori dignátus est : ovem suam te bonus pastor agnoscat, atque in electórum suórum grege constítuat. Redemptórem tuum fácie ad fáciem vídeas; et præsens semper assistens manifestíssimam beátis óculis aspícias veritátem in sécula seculórum.

℟. Amen.

COMMENDAMUS tibi, Dómine, ánimam * fámuli tui [*vel* fámulæ tuæ ;] precamurque te, Dómine Jesu Christe, Salvátor mundi, ut propter quam ad terram misericórditer descendisti, eam in pace suscípias, et in sinu Abrahæ per manus sanctórum Angelórum collocáre dignéris. Agnosce, Dómine Jesu, creatúram tuam, per te renátam ex aqua et Spíritu sancto, consecrátam signo crucis tuæ, nutrítam córpore et sánguine tuo, et in Ecclésiæ tuæ sinu verbo veritátis instructam. Ne péreat prétium quod pro ejus æterna redemptióne persolvisti. Delicta juventútis ejus et ignorántias clementer indulge. Ne memíneris iniquitátum ejus antiquárum, quas suscitávit fervor mali desidérii : sed memento miseratiónum tuárum, et glóriæ nóminis tui. Licet enim peccáverit, tamen in te sperávit et crédidit, teque Deum et Salvatórem suum unà cum Patre et Spíritu sancto fidéliter adorávit.

℟. Amen.

*Ps.* Dómine, quid multiplicáti sunt, 2.

Glória Patri, etc.

Kyrie, eléison. Christe, eléison. Kyrie, eléison. Pater.

℣. Et ne nos indúcas, etc.

℟. Sed líbera nos à malo.

℣. Salvum me fac, Deus;

℟. Quóniam intravérunt aquæ usque ad ánimam meam.

℣. In multitúdine misericórdiæ tuæ exaudi me :

℟. In veritáte salútis tuæ.

℣. Eripe me de luto, ut non infígar : ℟. Líbera me

ab iis qui odérunt me, et de profundis aquárum.

℣. Non me demergat tempestas aquæ, neque absórbeat me profundum : ℟. Neque úrgeat super me púteus os suum.

℣. Exurge in adjutórium mihi : ℟. Dic ánimæ meæ : Salus tua ego sum.

℣. Fac mecum signum in bonum, ut vídeant qui odérunt me, et confundantur; ℟. Quóniam tu, Dómine, adjuvisti me, et consolátus es me.

Orémus.

Unigenite et dilecte Fili Dei vivi, qui pro redemptióne mundi voluisti in præsépio nasci, à Judæis reprobári, à Juda proditóre ósculo tradi, vínculis alligári, sicut Agnus ad víctimam duci, flagellis et cólaphis cædi, sputis fœdári, spinis coronári, cruci affígi, cum scelerátis deputári, et inter acerbíssimos dolóres expiráre : quæsumus ut per has sanctíssimas pœnas tuas, et per crucem ac mortem tuam, liberáre dignéris * fámulum tuum *N.* (fámulam tuam *N.*) à pœnis inferni, et perdúcere quò perduxisti latrónem tecum crucifixum; Qui cum Patre et Spíritu sancto vivis et regnas, Deus. ℟. Amen.

*Postea legitur de Passione Domini nostri Jesu Christi.*

Assumit Jesus Petrum, et Jacóbum, et Joannem secum; et cœpit pavére, et tædére, contristári, et mœstus esse. Tunc ait illis : Tristis est ánima mea usque ad mortem; sustinéte hic, et vigiláte mecum. Et progressus pusillum, pósitis génibus, orábat dicens : Pater, si vis, transfer cálicem istum à me : verúmtamen non mea voluntas, sed tua fiat. Appáruit autem illi Angelus de cœlo, confortans eum. Et prócidit super terram in fáciem suam, orans; et factus in agónia, prolíxiùs orábat, ut, si fieri posset, transíret ab eo hora. Et dixit : Abba, Pater, si possíbile est, tránseat à me calix iste : ómnia tibi possibília sunt; transfer cálicem hunc à me : sed non quod ego volo, sed quod tu. Et factus est sudor ejus sicut guttæ sánguinis decurrentis in terram.

*Ps.* Deus, in adjutórium, 8.

℣. Exaudi, Deus, oratiónem meam, et ne despéxeris deprecatiónem meam. ℟. Intende mihi, et exaudi me.

℣. Cor meum conturbátum est in me : ℟. Et formído mortis cécidit super me.

℣. Timor et tremor venérunt super me : ℟. Et contexérunt me ténebræ.

℣. Ego autem in te sperávi, Dómine; ℟. Dixi : Deus meus es tu; in mánibus tuis sortes meæ.

℣. Illúmina óculos meos, ne unquam obdórmiam in morte; ℟. Nequando dicat inimícus meus : Præválui adversùs eum.

℣. Custódi ánimam meam, et érue me: ℟. Non erubescam; quóniam sperávi in te.

Orémus.

Domine Jesu Christe, cleméntiam tuam humíliter implorámus, per illam ánimæ tuæ tristítiam usque ad mortem, et per agóniam quam instante passióne pertulisti, quando factus est sudor tuus sicut guttæ sánguinis decurrentis in terram: succurre * fámulo tuo [*vel* fámulæ tuæ] in agóne mortis * constitúto [*vel* constitútæ:] tuére * eum [*vel* eam] in hac hora contra diabólicos incursus: líbera *eum [*vel* eam] à mortis imminentis terróribus, et de peccatórum suórum consciéntia formidantem, fac * eum [*vel* eam] de misericórdiæ tuæ immensa largitáte * secúrum [*vel* secúram]; Qui vivis et regnas, Deus.

℟. Amen.

*Ps.* Voce meâ ad Dóminum clamávi, 50.

℣. Vide, Dómine, humilitátem meam et labórem meum: ℟. Et dimitte universa delicta mea.

℣. Dómine Deus miserátor et misericors, pátiens, et multæ misericórdiæ, et verax; ℟. Réspice in me, et miserére meî.

℣. Ne derelinquas me, Dómine Deus meus: ℟. Ne discésseris à me.

℣. Quis dabit mihi pennas sicut columbæ? ℟. Et volábo et requiescam.

℣. Moriátur ánima mea morte justórum: ℟. Et fiant novíssima mea horum simília.

Orémus.

Domine Jesu Christe, qui per os Prophétæ dixisti: In caritáte perpétua dilexi te; ídeo attraxi te, míserans: te súpplices deprecámur, per istam caritátem quâ dilexisti nos, ut omnes amaritúdines passiónum tuárum, quas pro nobis peccatóribus sustinuisti in cruce, offerre et osténdere dignéris Deo Patri pro ánima * fámuli tui [*vel* fámulæ tuæ] in hac hora exitûs ejus; quátenus cum ipsa misericórdiìs agátur, quàm ejus peccáta meruérunt; Qui cum eódem Deo Patre et Spíritu sancto vivis et regnas Deus.

℟. Amen.

*Finitis Psalmis et Orationibus, (vel etiam antequam finiantur,) si instet momentum exitûs animæ de corpore, legitur super moribundum quod sequitur de Passione Domini nostri Jesu Christi.*

Tenebræ factæ sunt in universam terram usque in horam nonam, et obscurátus est sol. Et circa horam nonam clamávit Jesus voce magnâ, dicens: Eli, Eli, lamma sabacthání? Hoc est: Deus meus, Deus meus, ut quid dereliquisti me? Póstea, sciens Jesus quia ómnia consummáta sunt, ut consummarétur Scriptúra, dixit: Sítio. Vas ergo erat pósitum acéto plenum. Et continuò cur-

...

rens unus ex eis, acceptam spóngiam implévit acéto, et impósuit arúndini, et dabat ei bíbere. Cùm ergo accepisset Jesus acétum, dixit : Consummátum est. Et íterum clamans voce magnâ, ait : Pater, in manus tuas commendo spíritum meum. Et hæc dicens, inclináto cápite, trádidit spíritum.

Orémus.

Memor esto, piíssime Dómine Jesu, illíus horæ in qua de cruce pendens, clamasti voce magnâ : Deus meus, Deus meus, ut quid dereliquisti me? et íterum : Pater, in manus tuas commendo spíritum meum; et hæc dicens expirasti. Per istam ergo pretiosíssimam mortem quæ vita nostra fuit, obsecrámus cleméntiam tuam, ut non derelinquas in hac hora * fámulum tuum [*vel* fámulam tuam,] cujus præter te nullus est auxiliátor álius; sed suscípere dignéris spíritum ejus, et introdúcere in regnum tuum, ubi te cum Deo Patre et Spíritu sancto perpétuâ caritáte díligat, et cum sanctis et electis in æternum cantet misericórdias tuas.

℟. Amen.

¶ *Finitâ præcedenti Oratione, et egressâ animâ, statim dicitur* ℟. In te, Dómine, sperávi, *cum versibus et Oratione, infrà.* ]

*Si autem adhuc anxiatur anima, recitantur sequentes Psalmi, vel eorum pars, prout necesse erit.*

*Ps.* Deus, Deus meus, réspice in me, 92.

*Ps.* Júdica, Dómine, nocentes me, 44.

*Ps.* Deus, in nómine tuo salvum me fac, 85.

*Ps.* Miserére meî, Deus,... quóniam in te confídit, 101.

*Ps.* In te, Dómine, sperávi, non confundar, 85.

*Ps.* Inclína, Dómine, 112.

*Ps.* Dómine, Deus salútis meæ, 104.

*Ps.* Qui hábitat in adjutório Altíssimi, 20.

*Ps.* Dómine, probasti me et cognovisti me, 94.

*Egressâ autem animâ, dicitur :* ℟. In te, Dómine, sperávi; non confundar in æternum : accélera ut éruas me : in manus tuas commendo spíritum meum : * Redemisti me, Dómine Deus veritátis; illustra fáciem tuam super * servum tuum [*vel* ancillam tuam;] * salvum [*vel* salvam] me fac in misericórdia tua. ℣. Dómine Jesu, súscipe spíritum meum : * Redemisti.

Kyrie, eléison. Christe, eléison. Kyrie, eléison. *Secretò*, Pater : *altâ voce*, ℣. Et ne nos, etc. ℟. Sed líbera nos à malo.

℣. Non intres in judícium cum * servo tuo [*vel* ancilla tua,] Dómine; ℟. Quia non justificábitur in conspectu tuo omnis vivens.

℣. Ne tradas béstiis ánimas confitentes tibi : ℟. Et ánimas páuperum tuórum ne obliviscáris in finem.

℣. Dómine, exaudi, etc.

℣. Dóminus vobiscum, etc.

Orémus.

Tibi, Dómine, commendámus ánimam * fámuli tui [*vel* fámulæ tuæ] *N.* ut * defunctus [*vel* defuncta] século, tibi vivat: et quæ per fragilitátem humánæ conversatiónis peccáta commísit, tu véniâ misericordíssimæ pietátis absterge; Per Christum Dóminum nostrum.

# OFFICIUM DEFUNCTORUM.

*Quælibet Hora sequentis Officii inchoatur absolutè.*

## AD VESPERAS.

Psalmus 114.

Dilexi; * quóniam exáudiet Dóminus vocem oratiónis meæ.

Quia inclinávit aurem suam mihi, * et in diébus meis invocábo.

Circumdedérunt me dolóres mortis, * et perícula inferni invenérunt me.

Tribulatiónem et dolórem invéni, et nomen Dómini invocávi.

O Dómine, líbera ánimam meam: * miséricors Dóminus, et justus, et Deus noster miserétur.

Custódiens párvulos Dóminus; * humiliátus sum, et liberávit me.

Convértere, ánima mea, in réquiem tuam; * quia Dóminus benefécit tibi;

Quia erípuit ánimam meam de morte, * óculos meos à lácrymis, pedes meos à lapsu.

Placébo Dómino * in regióne vivórum.

*In hoc Officio, in fine omnium Psalmorum et Canticorum, tantùm dicitur:*

Réquiem ætérnam dona eis, Dómine; * et lux perpétua lúceat eis.

*Ant.* 3. c. O Dómine, líbera ánimam meam.

Psalmus 119.

Ad Dóminum, cùm tribulárer, clamávi; * et exaudívit me.

Dómine, líbera ánimam meam à lábiis iníquis, * et à lingua dolósa.

Quid detur tibi, aut quid apponátur tibi, * ad linguam dolósam?

Sagittæ poténtis acútæ, * cum carbónibus desolatóriis.

Heu mihi, quia incolátus meus prolongátus est! habitávi cum habitántibus Cedar; * multùm íncola fuit ánima mea.

Cum his qui odérunt pacem, eram pacíficus: * cùm loquébar illis, impugnábant me gratis.

*Ant.* 2. D. Heu mihi, quia incolátus meus prolongátus est!

Psalmus 120.

Levavi óculos meos in montes, * unde véniet auxílium mihi.

Auxílium meum à Dómino, * qui fecit cœlum et terram.

Non det in commotiónem pedem tuum, * neque dormítet qui custódit te.

Ecce non dormitábit neque dórmiet, * qui custódit Israel.

Dóminus custódit te; Dóminus protéctio tua, * super manum déxteram tuam.

Per diem sol non uret te, * neque luna per noctem.

Dóminus custódit te ab omni malo: * custódiat ánimam tuam Dóminus.

Dóminus custódiat intróitum tuum et éxitum tuum, * ex hoc nunc, et usque in séculum.

*Ant.* 8. d. Auxílium meum à Dómino, qui fecit cœlum et terram.

PSALMUS 129.

De profundis clamávi ad te, Dómine: * Dómine, exaudi vocem meam.

Fiant aures tuæ intendentes * in vocem deprecatiónis meæ.

Si iniquitátes observáveris, Dómine; * Dómine, quis sustinébit?

Quia apud te propitiátio est, * et propter legem tuam sustínui te, Dómine.

Sustínuit ánima mea in verbo ejus; * sperávit ánima mea in Dómino.

A custódia matutína usque ad noctem, * speret Israel in Dómino.

Quia apud Dóminum misericórdia, * et copiósa apud eum redémptio;

Et ipse rédimet Israel * ex ómnibus iniquitátibus ejus.

*Ant.* 8. G. Si iniquitátes observáveris, Dómine; Dómine, quis sustinébit?

PSALMUS 137.

Confitebor tibi, Dómine, in toto corde meo, * quóniam audisti verba oris mei.

In conspectu Angelórum psallam tibi: * adorábo ad templum sanctum tuum;

Et confitébor nómini tuo super misericórdia tua et veritáte tua; * quóniam magnificasti super omne, nomen sanctum tuum.

In quacumque die invocávero te, exaudi me: * multiplicábis in ánima mea virtútem.

Confiteantur tibi, Dómine, omnes reges terræ, * quia audiérunt ómnia verba oris tui.

Et cantent in viis Dómini, * quóniam magna est glória Dómini:

Quóniam excelsus Dóminus, et humília réspicit, * et alta à longè cognoscit.

Si ambulávero in médio tribulatiónis, vivificábis me: * et super iram inimicórum meórum extendisti manum tuam, et salvum me fecit déxtera tua.

Dóminus retríbuet pro me: * Dómine, misericórdia tua in séculum: ópera mánuum tuárum ne despícias.

*Ant.* 2. D. Opera mánuum tuárum, Dómine, ne despícias.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 1. a.

Omne quod dat mihi Pater, ad me véniet; et eum qui venit ad me non ejíciam foràs. *Joan.* 6.

*Secretò,* Pater : *altâ voce,*

℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem; ℟. Sed líbera nos à malo.

℣. In memória ætérna erunt justi; ℟. Ab auditióne mala non timébunt.

℣. A porta ínferi ℟. Erue, Dómine, ánimas eórum.

℣. Credo vidére bona Dómini, ℟. In terra vivéntium.

PSALMUS 145.

LAUDA, ánima mea, Dóminum : * laudábo Dóminum in vita mea; psallam Deo meo quámdiu fúero.

Nolíte confídere in princípibus; * in fíliis hóminum, in quibus non est salus.

Exíbit spíritus ejus, et revertétur in terram suam : * in illa die períbunt omnes cogitatiónes eórum.

Beátus cujus Deus Jacob adjútor ejus, spes ejus in Dómino Deo ipsíus, * qui fecit cœlum et terram, mare, et ómnia quæ in eis sunt.

Qui custódit veritátem in séculum, facit judícium injúriam patiéntibus, * dat escam esuriéntibus.

Dóminus solvit compedítos : * Dóminus illúminat cæcos.

Dóminus érigit elísos : * Dóminus díligit justos.

Dóminus custódit ádvenas : pupillum et víduam suscípiet; * et vias peccatórum disperdet.

Regnábit Dóminus in sécula : * Deus tuus, Sion, in generatiónem et generatiónem.

Réquiem ætérnam, etc.

℣. Requiescant in pace. ℟. Amen.

℣. Dómine, exaudi oratiónem meam; ℟. Et clamor meus ad te véniat.

℣. Dóminus vobiscum; ℟. Et cum spíritu tuo.

*In depositione Pontificis.*

Orémus. ORATIO.

DEUS, qui inter apostólicos Sacerdótes fámulum tuum *N.* pontificáli fecisti dignitáte vigére : præsta, ut eórum quoque perpétuo aggregétur consórtio; Per Dóminum nostrum.

*In depositione Sacerdotis.*

ORATIO.

DEUS, qui inter dispensatóres mysteriórum tuórum, fámulum tuum *N.* ascríbere voluisti : tríbue, quæsumus, ut à carnis vínculis absolútus, cum iis qui bene ministráverint, partem recípere, et in gáudium tuum intráre mereátur; Per Dóminum.

*In depositione Defuncti.*

ORATIO.

*Pro Diacono, post litteram* N. *additur* Diáconi.

INCLINA, Dómine, aurem tuam ad preces nostras, quibus misericórdiam tuam súpplices deprecámur; ut ánimam fámuli tui *N.* quam de hoc século migráre jussisti, in pacis ac lucis regióne constítuas, et Sanctórum tuórum júbeas esse consortem; Per Dóminum.

*In depositione Defunctæ.*

ORATIO.

Quæsumus Dómine, pro tua pietáte miserére ánimæ fámulæ tuæ *N.* et à contágiis mortalitátis exútam, in ætérnæ salvatiónis partem restítue; Per Dóminum.

*In Anniversario.*

ORATIO.

Deus indulgentiárum, Dómine, da ánimæ * fámuli tui *N.* (Pontíficis, *vel* Sacerdótis) [*vel* fámulæ tuæ *N.*] cujus [*vel* animábus famulórum tuórum *N.* et *N.* quorum] [*vel* famulárum tuárum *N.* et *N.* quarum] anniversárium depositiónis diem commemorámus, refrigérii sedem, quiétis beatitúdinem, et lúminis claritátem; Per.

*In secundis Anniversariis et deinceps, addantur sequentes Orationes.*

*Pro Benefactoribus.*

ORATIO.

Deus, véniæ largítor, et humánæ salútis amátor: quæsumus cleméntiam tuam, ut nostræ congregatiónis fratres, propinquos, et benefactóres, qui ex hoc século transiérunt, beátâ Maríâ semper vírgine intercedente cum ómnibus Sanctis tuis, ad perpétuæ beatitúdinis consórtium perveníre concédas.

*Pro omnibus Defunctis.*

ORATIO.

Fidelium, Deus, ómnium cónditor et redemptor, animábus famulórum famularumque tuárum remissiónem cunctórum tríbue peccatórum: ut indulgéntiam quam semper optavérunt, piis supplicatiónibus consequantur; Qui vivis et regnas.

*Si aliud Officium non sequatur, dicitur:*

Requiescant in pace.

℟. Amen.

¶ *Privatim pro patre et matre.*

ORATIO.

Deus, qui nos patrem et matrem honoráre præcepisti: miserére clementer animábus patris mei ac matris meæ, eorumque peccáta dimitte; meque eos in ætérnæ claritátis gáudio fac vidére; Per Dóminum.]

## AD VIGILIAS.

*Vigiliæ dicuntur cum tribus Nocturnis in Depositione corporis, et in omnibus Anniversariis ritu duplici celebrandis. In iis verò, quæ ritu simplici fiunt, ubi dicitur unicum Nocturnum, Feriâ II et V dicitur primum; Feriâ III et VI secundum; Feriâ IV et Sabbato, tertium.*

### IN I NOCTURNO.

*Ps.* Verba mea, 57.

*Ant.* 7. ç. Dómine, deduc me in justítia tua: propter inimícos meos dírige in conspectu tuo viam meam.

*Ps.* Dómine, ne in furóre... Miserére meî, 36.

*Ant.* 8. G. Salvum me fac propter misericórdiam tuam; quóniam non est in morte qui memor sit tuî.

*Ps.* Usquequo, Dómine, 51.

*Ant.* 3. c. Illúmina óculos meos, ne unquam obdórmiam in morte.

℣. Ne tradas béstiis ánimas confiténtes tibi; ℟. Et ánimas páuperum tuórum ne obliviscáris in finem. *Ps.* 73.

*Secretò,* Pater : *altâ voce;* ℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem; ℟. Sed líbera nos à malo.

*Lectiones leguntur sine Absolutione, sine Benedictióne, et sine titulo.*

LECTIO I. *Job.* 7.

PARCE mihi, nihil enim sunt dies mei. Quid est homo, quia magníficas eum? aut quid appónis erga eum cor tuum? Vísitas eum dilúculo, et súbitò probas illum. Usquequo non parcis mihi, nec dimittis me ut glútiam salívam meam? Peccávi : quid fáciam tibi, ô custos hóminum? Quare posuisti me contrárium tibi, et factus sum mihimetipsi gravis? Cur non tollis peccátum meum? et quare non aufers iniquitátem meam? Ecce nunc in púlvere dórmiam; et si mane me quæsíeris, non subsistam. *In fine Lectionum nihil additur.*

℟. Defecérunt sicut fumus dies mei, et ossa mea sicut crémium aruérunt : * Dies mei sicut umbra declinavérunt, ℣. Quæ est vita nostra? Vapor est ad módicum parens. * Dies. *Ps.* 101. *Jac.* 4.

LECTIO II. *Job* 10.

TÆDET ánimam meam vitæ meæ : dimittam adversùm me elóquium meum, loquar in amaritúdine ánimæ meæ. Dicam Deo : Noli me condemnáre; índica mihi cur me ita júdices. Numquid bonum tibi vidétur, si calumniéris me, et ópprimas me opus mánuum tuárum, et consílium impiórum ádjuves? Numquid óculi cárnei tibi sunt? aut sicut videt homo, et tu vidébis? Numquid sicut dies hóminis dies tui, et anni tui sicut humána sunt témpora; ut quæras iniquitátem meam, et peccátum meum scrutéris? Et scias quia nihil ímpium fécerim, cum sit nemo qui de manu tua possit erúere. Manus tuæ fecérunt me, et plasmavérunt me totum in circúitu; et sic repente præcípitas me? Memento, quæso, quod sicut lutum féceris me, et in púlverem redúces me. Nonne sicut lac mulsisti me, et sicut cáseum me coagulasti? Pelle et cárnibus vestisti me, óssibus et nervis compegisti me. Vitam et misericórdiam tribuisti mihi, et visitátio tua custodívit spíritum meum.

℟. Peccávi valde; sed * Precor, Dómine, ut tránsferas iniquitátem servi tui, quia stultè egi nimis. ℣. Deus, propítius esto mihi peccatóri. * Precor. 2 *Reg.* 24. *Luc.* 18.

LECTIO III. *Job* 10.

QUARE de vulva eduxisti me? qui útinam consumptus essem, ne óculus me vidéret. Fuissem quasi non essem, de útero translátus ad túmulum.

Numquid non páucitas diérum meórum finiétur brevi? Dimitte ergo me, ut plangam páululùm dolórem meum, ántequam vadam, et non revertar, ad terram tenebrósam et opertam mortis calígine, terram misériæ et tenebrárum, ubi umbra mortis, et nullus ordo, sed sempiternus horror inhábitat.

℟. Ad Dóminum aspíciam; expectábo Deum salvatórem meum; consurgam cùm sédero in ténebris: * Iram Dómini portábo, quóniam peccávi ei. ℣. Flagellat Dóminus omnem fílium quem récipit: * Iram. *Mich.* 7. *Hebr.* 12.

*IN II NOCTURNO*

*Ps.* Dóminus regit me, 76.

*Ant.* 6. *F.* In médio umbræ mortis non timébo mala, quóniam tu mecum es, Dómine.

*Ps.* Ad te, Dómine, levávi ánimam meam, 31.

*Ant.* 8. G. Delicta juventútis meæ, et ignorántias meas ne memíneris, Dómine.

*Ps.* Dóminus illuminátio mea, 75.

*Ant.* 4. E. Credo vidére bona Dómini in terra vivéntium.

℣. Unam pétii à Dómino, hanc requíram; ℟. Ut inhábitem in domo Dómini. *Ps.* 26.

LECTIO IV. *Job* 13.

QUANTAS hábeo iniquitátes et peccáta, scélera mea et delicta ostende mihi. Cur fáciem tuam abscondis, et arbitráris me inimícum tuum? Contra fólium quod vento rápitur, ostendis poténtiam tuam, et stípulam siccam perséqueris. Scribis enim contra me amaritúdines, et consúmere me vis peccátis adolescéntiæ meæ. Posuisti in nervo pedem meum, et observasti omnes sémitas meas, et vestigia pedum meórum considerasti; qui quasi putrédo consumendus sum, et quasi vestimentum quod coméditur à tínea.

℟. Ecce ánimam meam porto in mánibus meis: * Etiamsi occíderit me, in ipso sperábo, et ipse erit Salvátor meus. ℣. Sive vívimus, sive mórimur, Dómini sumus. * Etiamsi. *Job.* 13. *Rom.* 13.

LECTIO V. *Job* 14.

HOMO natus de muliere, brevi vivens témpore, replétur multis miseriis. Qui quasi flos egréditur et contéritur. et fugit velut umbra, et nunquam in eódem statu pérmanet. Et dignum ducis super hujuscémodi aperíre óculos tuos, et addúcere eum tecum in judícium. Quis potest fácere mundum de immundo conceptum sémine? Nonne tu qui solus es? Breves dies hóminis sunt, númerus ménsium ejus apud te est; constituisti términos ejus, qui præteríri non póterunt. Recéde páululum ab eo, ut quiescat, donec optáta véniat sicut mercenárii dies ejus.

℟. Hi, qui cum pietáte dormitiónem accepérunt, óptimam habent repósitam grátiam. * Sancta ergo et salúbris

est cogitátio pro defunctis exoráre, ut à peccátis solvantur. ℣. Si quis superædíficat super fundamentum, et opus ejus árserit, detrimentum patiétur; ipse autem salvus erit, sic tamen quasi per ignem. * Sancta ergo. 2 *Mach.* 12. 1 *Cor.* 3.

Lectio vi. *Job* 14.

Quis mihi hoc tríbuat, ut in inferno prótegas me, et abscondas me, donec pertránseat furor tuus, et constítuas mihi tempus in quo recordéris meî? Putasne mórtuus homo rursum vivat? Cunctis diébus, quibus nunc mílito, expecto donec véniat immutátio mea. Vocábis me, et ego respondébo tibi: óperi mánuum tuárum pórriges déxteram. Tu quidem gressus meos dinumerasti: sed parce peccátis meis.

℟. Dómine omnípotens, Deus Israel, * Audi nunc oratiónem mortuórum Israel: noli meminisse iniquitátum patrum nostrórum; sed memento manûs tuæ et nóminis tui. ℣. Occísus es, Dómine, et redemisti nos Deo in sánguine tuo. * Audi. *Baruch* 3. *Apoc.* 5.

*IN III NOCTURNO.*

*Ps.* Dixi: Custódiam, 80.

*Ant.* 2. D. Amove à me plagas tuas, Dómine: áuribus pércipe lácrymas meas.

*Ps.* Beátus qui intélligit, 97.

*Ant.* 3. b. Numquid qui dormit, non adjíciet ut resurgat? Dómine, miserére meî, et resúscita me.

*Ps.* Quemádmodum, 61.

*Ant.* 8. G. Sitívit ánima mea ad Deum fortem, vivum: quando véniam et apparébo ante fáciem Dei?

℣. Quare tristis es, ánima mea; et quare conturbas me? ℟. Spera in Deo, quóniam adhuc confitébor illi. *Ps.* 41.

Lectio vii. *Job* 16 *et* 17.

Breves anni tránseunt; et sémitam per quam non revertar, ámbulo. Spíritus meus atteuuábitur, dies mei breviabuntur, et solum mihi súperest sepulcrum. Non peccávi, et in amaritudínibus morátur óculus meus. Líbera me, Dómine, et pone me juxta te; et cujusvis manus pugnet contra me.

℟. Scio quod Redemptor meus vivit, et in novíssimo die de terra surrectúrus sum, * Et in carne mea vidébo Deum meum. ℣. Oportet corruptíbile hoc indúere incorruptiónem, et mortále hoc indúere immortalitátem; * Et. *Job* 19. 1 *Cor.* 15.

Lectio viii. *Job* 17.

Dies mei transiérunt; cogitatiónes meæ dissipátæ sunt, torquentes cor meum. Noctem vertérunt in diem, et rursum post ténebras spero lucem. Si sustinúero, infernus domus mea est; et in ténebris stravi léctulum meum. Putrédini dixi: Pater meus es; Mater mea et soror mea, vérmibus. Ubi est ergo nunc præstolátio mea? et patiéntiam meam quis considerat?

℟. Qui dórmiunt in terræ púlvere, * Evigilábunt, álii

in vitam ætemam, et álii in oppróbrium, ut vídeant semper. ℣. Omnes quidem resurgémus, sed non omnes immutábimur : * Evigilábunt. *Dan.* 12. 1 *Cor.* 15.

Lectio ix. *Job* 19.

Pelli meæ, consumptis cárnibus, adhæsit os meum; et derelicta sunt tantúmmodo lábia circa dentes meos. Miserémini meî, miserémini meî, saltem vos amíci mei; quia manus Dómini tétigit me. Quare persequímini me sicut Deus, et cárnibus meis saturámini? Quis mihi tríbuat ut scribantur sermónes mei? Quis mihi det ut exarentur in libro stylo férreo et plumbi lámina, vel celte sculpantur in sílice? Scio enim quod Redemptor meus vivit, et in novíssimo die de terra surrectúrus sum : et rursum circúmdabor pelle meâ, et in carne mea vidébo Deum meum; quem visúrus sum ego ipse, et óculi mei conspectúri sunt, et non álius. Repósita est hæc spes mea in sinu meo.

℟. Líbera me, Dómine, ab iis qui odérunt me : non absórbeat me profundum, neque úrgeat super me púteus os suum : * Exaudi me, quóniam † Benigna est misericórdia tua : § Intende ánimæ meæ, et líbera eam. ℣. Dómine Deus, rex seculórum, solus pius es : * Exaudi me, quóniam benigna est misericórdia tua : intende ánimæ meæ, et líbera eam. ℣. Miserére meî, Dómine, fili David : Dómine, ádjuva me ; † Benigna est misericórdia tua : intende ánimæ meæ, et líbera eam. ℣. Propósuit te Deus propitiatiónem per fidem propter remissiónem delictórum: § Intende ánimæ meæ, et líbera eam. *Ps.* 68. *Apoc.* 15. *Matth.* 15. *Rom.* 3.

*Repetitur* ℟ Líbera *usque ad* ℣ Dómine.

¶ *Quando Vigiliæ celebrantur mane, prætermissis quæ sequuntur, continuò inchoantur Laudes.* ]

℣. Réquiem æternam dona eis, Dómine; ℟. Et lux perpétua lúceat eis.

℣. Requiescant in pace. ℟. Amen.

℣. Dómine, exaudi oratiónem meam; ℟. Et clamor meus ad te véniat.

℣. Dóminus vobiscum ; ℟. Et cum spíritu tuo.

Orémus.

Absolve, quæsumus Dómine, ánimam * fámuli tui *N.* (Pontíficis *vel* Sacerdótis, *vel* Diáconi) [*vel* fámulæ tuæ *N.*] [*vel* ánimas * famulórum tuórum *N* et *N.* *vel* famulárum tuárum *N* et *N*,] et ánimas ómnium fidélium defunctórum ab omni vínculo delictórum; ut in resurrectiónis glória, inter sanctos et electos tuos resuscitáti respírent; Per eum qui ventúrus est judicáre vivos et mórtuos, et séculum per ignem. ℟. Amen.

℣. Requiescant in pace. ℟. Amen.

AD LAUDES.

*Ps.* Miserére, 111.

*Ant.* 1. *g.* Secundùm mul-

titúdinem miseratiónum tuárum dele iniquitátem meam.

*Ps.* Te decet hymnus, 58.

*Ant* 8. G. Exaudi, Deus, oratiónem meam : ad te omnis caro véniet.

*Ps.* Dómine, exaudi... áuribus pércipe, 105.

*Ant.* 4. E. Propter nomen tuum, Dómine, vivificábis me.

Canticum. *Baruch* 3.

Domine omnípotens, Deus Israel, * ánima in angústiis, et spíritus ánxius clamat ad te:

Audi, Dómine, et miserére, quia Deus es miséricors;* et miserére nostrî, quia peccávimus ante te.

Quia tu sedes in sempiternum, * et nos períbimus in ævum?

Dómine omnípotens, Deus Israel, * audi nunc oratiónem mortuórum Israel,

Et filiórum ipsórum qui peccavérunt ante te, et non audiérunt vocem Dómini Dei sui : * et agglutináta sunt nobis mala,

Noli meminisse iniquitátum patrum nostrórum; * sed memento manûs tuæ, et nóminis tui in témpore isto :

Quia tu es Dóminus Deus noster; * et laudábimus te, Dómine.

*Ant.* 2. D. Miserére nostrî, Dómine; quia peccávimus ante te.

*Ps.* Laudáte Dóminum in sanctis ejus, 44.

*Ant.* 7. b. Omnis spíritus laudet Dóminum.

*Ad* Benedictus. *Ant.* 1. a. Ego sum resurréctio et vita : qui credit in me, etiamsi mórtuus fúerit, vivet; et omnis qui vivit et credit in me, non moriétur in æternum. *Joan.* 11.

Pater *et cetera ut suprà in Vesperis,* lxxxv, *excepto quod loco Psalmi* Lauda, *dicitur Ps.* De profundis, 65.

# PRÆPARATIO AD MISSAM

## PRO OPPORTUNITATE SACERDOTIS FACIENDA.

*Psal.* Quàm dilecta 76. Benedixisti, 41. Inclína, Dómine, *cum sua divis.* 112. Crédidi, 78. De profundis clamávi, 65.

*Ant.* Dómine, memor esto meî; et ne vindictam sumas de peccátis meis, neque reminiscáris delicta mea. *Tob.* 3.

Preces.

Kyrie, eléison. Christe, eléison. Kyrie, eléison.

Pater noster, etc.

℣. Et ne nos indúcas, etc.

℣. Ego dixi, Dómine, miserére meî : ℟. Sana ánimam meam, quia peccávi tibi. *Ps.* 40.

℣. Convértere, Dómine; úsquequo? ℟. Et deprecábilis esto super servos tuos. *Ps.* 89.

℣. Fiat misericórdia tua, Dómine, super nos, ℟. Quemádmodum sperávimus in te. *Ps.* 32.

℣. Sacerdótes tui induantur justítiam, ℟. Et sancti tui exultent. *Ps.* 131.

℣. Ab occultis meis munda me, Dómine, ℟. Et ab aliénis parce servo tuo. *Ps.* 18.

℣. Dómine, exaudi, etc.

Orémus.

Aures tuæ pietátis, mitíssime Deus, inclína précibus nostris, et grátiâ sancti Spíritûs illúmina cor nostrum; ut tuis mystériis dignè ministráre, teque æternâ caritáte dilígere mereámur.

Deus, cui omne cor patet, et omnis voluntas lóquitur, et quem nullum latet secrétum; purífica per infusiónem sancti Spíritûs cogitatiónes cordis nostri, ut te perfectè dilígere, et dignè laudáre mereámur.

Ure igne sancti Spíritûs renes nostros et cor nostrum, Dómine; ut tibi casto córpore serviámus, et mundo corde placeámus.

Mentes nostras, quæsumus Dómine, Paraclétus qui à te procédit illúminet, et indúcat in omnem, sicut tuus promísit Fílius, veritátem.

Adsit nobis, quæsumus Dómine, virtus Spíritûs sancti; quæ et corda nostra clementer expurget, et ab ómnibus tueátur adversis.

Deus, qui corda fidélium sancti Spíritûs illustratióne docuisti: da nobis in eódem Spíritu recta sápere, et de ejus semper consolatióne gaudére.

Conscientias nostras, quæsumus Dómine, visitando purífica; ut véniens Dóminus noster Jesus Christus Fílius tuus, parátam sibi in nobis invéniat mansiónem: Qui tecum vivit et regnat Deus. ℟. Amen.

---

## FORMULA INTENTIONIS.

*Gregorius Papa XIII concessit cuilibet Sacerdoti, hanc formulam devotè ante Missam recitanti, quinquaginta annorum Indulgentiam.*

Ego volo celebráre Missam, et confícere Corpus et Sánguinem Dómini nostri Jesu Christi, juxta ritum sanctæ Románæ Ecclésiæ, ad laudem omnipotentis Dei, totiusque Cúriæ triumphantis; ad utilitátem meam, totiusque Cúriæ militantis; pro ómnibus qui se commendavérunt oratiónibus meis in génere et in spécie, et pro felíci statu sanctæ Románæ Ecclésiæ. Amen.

Gáudium cum pace, emendatiónem vitæ, spátium veræ pœniténtiæ, grátiam et consolatiónem sancti Spíritûs, perseverántiam in bonis opéribus, tríbuat nobis omnípotens et miséricors Dóminus. Amen.

---

*Sacerdos dicat, cùm lavat manus.*

Da, Dómine, virtútem má-

nibus meis, ad abstergendam omnem máculam, ut sine pollutióne mentis et córporis váleam tibi servíre.

*Ad Amictum.*

Impóne, Dómine, cápiti meo gáleam salútis, ad expugnandos diabólicos incursus.

*Ad Albam.*

Dealba me, Dómine, et munda cor meum; ut in sánguine Agni dealbátus, gáudiis pérfruar sempiternis.

*Ad Cingulum.*

Præcinge me, Dómine, cíngulo puritátis, et extingue in lumbis meis humórem libídinis, ut máneat in me virtus continéntiæ et castitátis.

*Ad Manipulum.*

Mérear, Dómine, portáre manípulum fletûs et dolóris, ut cum exultatióne recípiam mercédem labóris.

*Ad Stolam.*

Redde mihi, Dómine, stolam immortalitátis, quam pérdidi in prævaricatióne primi parentis, et quamvis indignus accédo ad tuum sacrum Mystérium, mérear tamen gáudium sempiternum.

*Ad Casulam.*

Dómine, qui dixisti : Jugum meum suáve est, et onus meum leve; fac ut istud portáre sic váleam, quod cónsequar tuam grátiam. Amen.

## GRATIARUM ACTIO POST MISSAM.

*Ps.* Dóminus regit me, 76. Benedícam Dóminum, *cum sua divisione,* 77. Bénedic, ánima mea, Dómino, et ómnia, *cum sua divisione,* 62.

*Ant.* O quàm suávis est, Dómine, Spíritus tuus! qui, ut dulcédinem tuam in fílios demonstráres, pane suavíssimo de cœlo præstito, esurientes reples bonis, dívites dimittens inánes. *Sap.* 12 *et* 16. *Luc.* 1.

Preces.

Kyrie, eléison. Christe, eléison. Kyrie, eléison.

Pater noster, etc.

℟. Et ne nos indúcas, etc.

℣. Memóriam fecit mirabílium suórum miséricors et miserátor Dóminus : ℟. Escam dedit timéntibus se. *Ps.* 110.

℣. Quid est homo, quod memor es ejus? ℟. Aut fílius hóminis, quóniam vísitas eum? *Ps.* 8.

℣. Sicut ádipe et pinguédine repleátur ánima mea ; ℟. Et lábiis exultatiónis laudábit os meum. *Ps.* 62.

℣. Non nobis, Dómine, non nobis; ℟. Sed nómini tuo da glóriam. *Ps.* 113.

℣. Nunc dimittis servum tuum, Dómine, secundùm verbum tuum, in pace; ℟. Quia vidérunt óculi mei salutáre tuum. *Luc.* 2.

℣. Dómine, exaudi oratiónem meam; ℟. Et clamor meus ad te véniat. *Ps.* 101.

Orémus.

Visita, quæsumus Dómine, famíliam tuam: et corda sacris dicáta mystériis pervígili tuére pietáte; ut remédia salútis ætérnæ, quæ te miserante per-

cípiunt, te protegente custódiant.

Quæsumus, Dómine, Deus noster, ut quos divínâ tríbuis participatióne gaudére, humánis non sinas subjacére perículis.

Cognoscimus, Dómine, tuæ circa nos cleméntiæ largitátem: et ídeo fiduciáliùs implorámus, ut quos páscere non désinis imméritos, et dignè tibi servíre perfícias, et donis uberióribus prosequáris.

Majestatem tuam, Dómine, supplíciter exorámus, ne períre patiáris quibus tanta remédia providisti; sed cum divíni frequentatióne mystérii crescat nostræ salútis effectus.

Actiones nostras, quæsumus Dómine, aspirando præveni, et adjuvando proséquere; ut cuncta nostra orátio et operátio à te semper incípiat, et per te cœpta finiátur.

Adjuvet nos grátia tua, omnípotens Deus; ut qui offícium sacerdotále suscépimus, dignè ac devótè tibi in omni puritáte et consciéntia bona famulári valeámus: et si non póssumus in tanta innocéntia vitæ conversári ut debémus, concéde nobis tamen dignè flere mala quæ géssimus, et in spíritu humilitátis, ac bonæ voluntátis propósito tibi ferventiùs de cétero deservíre; Per Christum Dóminum nostrum.

℟. Amen.

# ABSOLUTIONIS FORMA
## IN SACRAMENTO POENITENTIÆ.

*Antequam confiteatur, Pœnitens dicit:* Benedic mihi, Pater, quia peccávi.

*Sacerdos subjungit:*

Dóminus sit in corde tuo, et in lábiis tuis; ut verè et íntegrè confiteáris ómnia peccáta tua; in nómine Patris, et † Fílii, et Spíritûs sancti. Amen.

*Deinde Pœnitens dicit:* Confíteor Deo, etc. *usque ad* meâ culpâ; *et post Confessionem reliqua prosequitur.*

*Tum Sacerdos, aperto capite, dicit:*

Misereatur tuî omnípotens Deus, et dimissis peccátis tuis, perdúcat te ad vitam ætérnam. Amen.

Indulgentiam, absolutiónem, † et remissiónem peccatórum tuórum tríbuat tibi omnípotens et miséricors Dóminus. Amen.

*Injunctâ verò pœnitentiâ, operto capite, dexterâ super caput Pœnitentis extensâ, eum absolvit hoc modo:*

Dominus noster Jesus Christus qui est summus Póntifex, per suam piíssimam misericórdiam, te absolvat; et ego,

auctoritáte ipsius, mihi, licèt indigníssimo, concessâ, absolvo te, in primis, ab omni vínculo excommunicatiónis, (suspensiónis) et interdicti. in quantum possum et índiges : Deinde, Ego te absolvo à peccátis tuis; in nómine Patris, et Fílii, † et Spíritûs sancti. Amen.

*Si Pœnitens si laicus, omittitur vox* suspensiónis.

*Deinde manum removens, aperto capite, subdit :* Pássio Dómini nostri Jesu Christi, mérita beátæ Maríæ Vírginis, et ómnium Sanctórum, suffrágia sanctæ Matris Ecclésiæ, quidquid boni féceris, et mali sustinúeris, váleant tibi in remissiónem peccatórum, augmentum grátiæ, et præmium vitæ æternæ. Amen.

*Urgente verò aliquâ gravi necessitate, in periculo mortis, breviter dicere poterit :*

Ego te absolvo ab ómnibus censúris et peccátis; in nómine Patris, et Filii, † et Spíritûs sancti. Amen.

## BENEDICTIO
### CUM INDULGENTIA PLENARIA IMPERTIENDA FIDELIBUS IN ARTICULO MORTIS CONSTITUTIS,
### Juxta formam à Benedicto Papa XIV traditam.

*Benedictio in Articulo mortis, cùm soleat impertiri post Sacramenta Pœnitentiæ, Eucharistiæ, et Extremæ Unctionis, illis Infirmis, qui vel illam petierint, dum sanâ mente et integris sensibus erant; seu verisimiliter petiissent, vel dederint signa contritionis; impertienda iisdem est, etiamsi postea linguæ ceterorumque sensuum usu sint destituti, aut in delirium vel amentiam inciderint. Excommunicatis verò, impœnitentibus, et qui in manifesto peccato mortali moriuntur, est omnino deneganda.*

*Sacerdos, ingrediendo cubiculum ubi jacet Infirmus, dicat :*

Pax huic dómui,

℟. Et ómnibus habitántibus in ea.

*Deinde Infirmum, cubiculum, et circumstantes aspergat Aquâ benedictâ, dicendo Antiphonam :*

Asperges me, Dómine, et mundábor; lavábis me, et super nivem dealbábor.

*Quod si ægrotus voluerit confiteri, audiat illum, et absolvat. Si confessionem non petat, excitet illum ad eliciendum actum contritionis; de hujus Benedictionis efficacia ac virtute, si tempus ferat, breviter admoneat; tum instruat atque hortetur, ut morbi incommoda ac dolores in anteactæ vitæ expiationem libenter perferat, Deoque sese paratum offerat ad ultro acceptandum quidquid ei placuerit, et mortem ipsam patienter obeundam in satisfactionem pœnarum, quas peccando promeruit. Tum piis ipsum verbis consoletur, in spem erigens, fore ut ex divinæ munificentiæ largitate eam pœnarum remis-*

*sionem, et vitam sit consecuturus æternam. Postea dicat :*

℣. Adjutórium nostrum † in nómine Dómini,

℟. Qui fecit cœlum et terram.

*Ant.* Ne reminiscáris, Dómine, delicta fámuli tui, [*vel* ancillæ tuæ] neque vindictam sumas de peccátis ejus.

Kyrie, eléison. ℟. Christe, eléison. Kyrie eléison.

*Secretò* Pater noster, etc.

℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem;

℟. Sed líbera nos à malo.

℣. Salvum fac servum tuum [*vel* ancillam tuam],

℟. Deus meus, sperantem in te.

℣. Dómine, exaudi oratiónem meam;

℟. Et clamor meus ad te véniat.

℣. Dóminus vobiscum;

℟. Et cum spíritu tuo.

Orémus.

Clementissime Deus, Pater misericordiárum, et Deus totíus consolatiónis, qui néminem vis períre in te credentem atque sperantem; secundùm multitúdinem miseratiónum tuárum réspice propítius fámulum tuum *N.* quem [*vel* fámulam tuam *N.* quam] tibi vera fides et spes christiána commendant. Vísita eum [*vel* eam] in salutári tuo; et per Unigéniti tui Passiónem et Mortem, ómnium ei delictórum suórum remissiónem et véniam clementer indulge; ut ejus ánima, in hora éxitûs sui, te júdicem propitiátum invéniat, et in sánguine ejusdem Fílii tui ab omni mácula ablúta, transíre ad vitam mereátur æternam; Per eumdem Christum Dóminum nostrum. ℟. Amen.

*Tunc facta ab Infirmo vel ab uno ex assistentibus Confessione generali,* Confíteor, etc. *Sacerdos dicat* Misereátur, etc. *deinde :*

Dominus noster Jesus Christus, Fílius Dei vivi, qui beáto Petro Apóstolo suo dedit potestátem ligandi atque solvendi, per suam piíssimam misericórdiam recípiat confessiónem tuam, et restítuat tibi stolam primam, quam in baptísmate recepisti; et ego, facultáte mihi ab Apostólica Sede tribúta, Indulgéntiam plenáriam et remissiónem ómnium peccatórum tibi concédo. In nómine Patris, et Fílii, † et Spíritûs sancti.

℟. Amen.

Per sacrosancta humánæ reparatiónis mystéria, remittat tibi omnípotens Deus omnes præsentis et futúræ vitæ pœnas, Paradísi portas apériat, et ad gáudia sempiterna perdúcat. ℟. Amen.

Benedícat te omnípotens Deus, Pater, et Fílius, † et Spíritus sanctus. ℟. Amen.

*Si verò Infirmus sit adeo morti proximus, ut neque confessionis generalis faciendæ, neque præmissarum precum recitandarum suppetat tempus, statim Sacerdos Benedictionem ei impertiatur, dicendo :* Dóminus noster, etc. *ut suprà.*

Ad

AD PETENDAM SPIRITUS SANCTI GRATIAM

HYMNUS.

VENI, creátor Spíritus,
Mentes tuórum vísita;
Imple supernâ grátiâ
Quæ tu creasti péctora.
Qui Paraclétus díceris,
Donum Dei altíssimi,
Fons vivus, ignis, cáritas,
Et spiritális únctio.
Tu septiformis múnere,
Dextræ Dei tu dígitus,
Tu ritè promissum Patris,
Sermóne ditans gúttura.
Accende lumen sénsibus,
Infunde amórem córdibus,
Infirma nostri córporis
Virtúte firmans pérpeti.
HOSTEM repellas lóngiùs,
Pacemque dones prótinus;
Ductóre sic te prævio
Vitémus omne nóxium.
Per te sciámus da Patrem,
Noscámus atque Fílium:
Te utriusque Spíritum
Credámus omni témpore.
SIT laus Patri, laus Fílio:
Par sit tibi laus, Spíritus,
Afflante quo mentes sacris
Lucent et ardent ígnibus.
Amen.

℣. Emitte Spíritum tuum, et creabuntur; ℟. Et renovábis fáciem terræ. *Ps.* 103.

Orémus. ORATIO.

DEUS, qui corda fidélium sancti Spíritûs illustratióne docuisti: da nobis in eódem Spíritu recta sápere, et de ejus semper consolatióne gaudére; Per Christum.

PRO GRATIIS DEO AGENDIS.

*Post Canticum* Te Deum, 118, *dicitur:*

℣. Benedicámus Patrem, et Fílium, cum sancto Spíritu; ℟. Laudémus et superexaltémus eum in sécula.

Orémus. ORATIO.

DEUS, cujus misericórdiæ non est númerus, et bonitátis infinítus est thesaurus: piíssimæ majestáti tuæ pro collátis donis grátias ágimus, tuam semper cleméntiam exorantes; ut qui peténtibus postuláta concédis, eosdem non déserens, ad præmia futúra dispónas; Per Christum.

# LITANIÆ SS. NOMINIS JESU.

KYRIE, eléison. Christe, eléison. Kyrie eléison.
Jesu, audi nos.
Jesu, exaudi nos.
Pater de cœlis, Deus, miserére nobis.
Fili redemptor mundi, Deus, miserére nobis.
Spíritus sancte, Deus, miserére nobis.
Sancta Trínitas, unus Deus, miserére nobis.
Jesu Fili Dei vivi, mis
Jesu splendor Patris, mis.
Jesu candor lucis ætermæ, miserére nobis.

Jesu Rex glóriæ, miserére nobis.
Jesu sol justítiæ, mis.
Jesu fili Maríæ Vírginis, miserére nobis.
Jesu amábilis, mis.
Jesu admirábilis, mis.
Jesu Deus fortis, mis.
Jesu Pater futúri séculi, miserére nobis.
Jesu magni consílii Angele, miserére nobis.
Jesu potentíssime, mis.
Jesu patientíssime, mis.
Jesu obedientíssime, mis.
Jesu mitis et húmilis corde, miserére nobis.
Jesu amátor castitátis, miserére nobis.
Jesu amátor noster, mis.
Jesu Deus pacis, mis.
Jesu auctor vitæ, mis.
Jesu exemplar virtútum, mis.
Jesu zelátor animárum, mis.
Jesu Deus noster, mis.
Jesu refúgium nostrum, mis.
Jesu pater páuperum, mis.
Jesu thesaurus fidélium, mis.
Jesu bone Pastor, mis.
Jesu lux vera, mis.
Jesu sapiéntia æterna, mis.
Jesu bónitas infiníta, mis.
Jesu via et vita nostra, mis.
Jesu gáudium Angelórum, miserére nobis.
Jesu rex Patriarchárum, miserére nobis.
Jesu magister Apostolórum, miserére nobis.
Jesu doctor Evangelistárum, miserére nobis.
Jesu fortitúdo Mártyrum, miserére nobis.
Jesu lumen Confessórum, miserére nobis.
Jesu púritas Vírginum, miserére nobis.
Jesu coróna Sanctórum ómnium, miserére nobis.
Propítius esto, parce nobis Jesu.
Propítius esto, exaudi nos Jesu.
Ab omni malo, líbera nos Jesu.
Ab omni peccáto, líbera.
Ab ira tua, líbera nos Jesu.
Ab insídiis diáboli, líbera.
A spíritu fornicatiónis, líbera nos Jesu.
A morte perpétua, líbera.
A neglectu inspiratiónum tuárum, líbera nos Jesu.
Per mystérium sanctæ Incarnatiónis tuæ, líbera.
Per Nativitátem tuam, líbera.
Per Infántiam tuam, líbera.
Per diviníssimam vitam tuam, líbera nos Jesu.
Per labóres tuos, líbera.
Per agóniam et Passiónem tuam, líbera nos Jesu.
Per Crucem et derelictiónem tuam, líbera nos Jèsu.
Per languóres tuos, líbera.
Per mortem et sepultúram tuam, líbera nos Jesu.
Per Resurrectiónem tuam, líbera nos Jesu.
Per Ascensiónem tuam, líbera nos Jesu.
Per gáudia tua, líbera.
Per glóriam tuam, líbera.
Agnus Dei, qui tollis peccáta mundi, parce nobis Jesu.
Agnus Dei, qui tollis peccáta mundi, exaudi nos Jesu.
Agnus Dei, qui tollis peccáta mundi, miserére nobis Jesu.

Jesu, audi nos.
Jesu, exaudi nos.

℣. Confitébimur tibi, Deus; ℟. Et invocábimus nomen tuum. *Ps.* 74.

Orémus. Oratio.

Domine Jesu, cujus Nomen nemo dícere potest, nisi in Spíritu sancto; concéde, quæsumus, ut in eódem Spíritu sacratíssimum Nomen tuum invocantes, salvos fácias à peccátis; Qui vivis et regnas cum Deo Patre, in unitáte ejusdem Spíritûs sancti Deus; per ómnia sécula.

# LITANIÆ BEATÆ MARIÆ VIRGINIS.

Kyrie, eléison. Christe, eléison. Kyrie, eléison.
Christe, audi nos.
Christe, exaudi nos.
Pater de cœlis, Deus, miserére nobis.
Fili redemptor mundi, Deus, miserére nobis.
Spíritus sancte, Deus, miserére nobis.
Sancta Trínitas, unus Deus, miserére nobis.
Sancta María, ora pro nobis.
Sancta Dei Génitrix, ora.
Sancta Virgo Vírginum, ora.
Mater Christi, ora.
Mater divínæ grátiæ, ora.
Mater puríssima, ora.
Mater castíssima, ora.
Mater invioláta, ora.
Mater intemeráta, ora.
Mater amábilis, ora.
Mater admirábilis, ora.
Mater Creatóris, ora.
Mater Salvatóris, ora.
Virgo prudentíssima, ora.
Virgo veneranda, ora.
Virgo prædicanda, ora.
Virgo potens, ora.
Virgo clemens, ora.
Virgo fidélis, ora.
Spéculum justítiæ, ora pro nobis.
Sedes Sapiéntiæ, ora.
Causa nostræ lætítiæ, ora.
Vas spirituále, ora.
Vas honorábile, ora.
Vas insigne devotiónis, ora.
Rosa mystica, ora.
Turris Davídica, ora.
Turris ebúrnea, ora.
Domus áurea, ora.
Fœderis arca, ora.
Jánua cœli, ora.
Stella matutina, ora.
Salus infirmórum, ora.
Refúgium peccatórum, ora.
Consolátrix afflictórum, ora.
Auxílium Christianórum, ora pro nobis.
Regína Angelórum, ora.
Regína Patriarchárum, ora.
Regína Prophetárum, ora.
Regína Apostolórum, ora.
Regína Mártyrum, ora pro nobis.
Regína Confessórum, ora pro nobis.
Regína Vírginum, ora pro nobis.
Regína Sanctórum ómnium, ora pro nobis.

Agnus Dei, qui tollis peccáta mundi, parce nobis, Dómine.

Agnus Dei, qui tollis peccáta mundi, exaudi nos, Dómine.

Agnus Dei, qui tollis peccáta mundi, miserére nobis.

Christe, audi nos.

Christe, exaudi nos.

℣. Ora pro nobis, sancta Dei Génitrix; ℟. Ut digni efficiámur promissiónibus Christi.

Orémus. Oratio.

Da, quæsumus Dómine, pópulo tuo inviolábilem fidei firmitátem: ut, qui Unigénitum tuum in tua tecum glória sempiternum, in veritáte nostri córporis natum de matre Vírgine confitentur, per ejusdem sanctíssimæ Vírginis intercessiónem, et à præséntibus liberentur adversis, et mansúris gáudiis inserantur; Per eumdem Christum Dóminum nostrum. ℟. Amen.

# BENEDICTIO MENSÆ.

### ANTE PRANDIUM.

Benedicite. ℟. Dóminus. Oculi ómnium in te sperant, Dómine; et tu das escam illórum in témpore opportúno: áperis tu manum tuam, et imples omne ánimal benedictióne. *Ps.* 144.

Glória Patri, et Fílio, et Spirítui sancto: Sicut erat in princípio, etc.

Kyrie, eléison. Christe, eléison. Kyrie, eléison.

*Secretò,* Pater, *usque ad* ℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem; ℟. Sed líbera nos à malo.

Orémus.

Benedic, Dómine, dona † tua, quæ de tua largitáte sumus sumptúri; Per Christum Dóminum nostrum.

℟. Amen.

*Si fiat lectio, Lector dicit:* Jube, domne, benedícere.

*Bened.* Mensæ cœlestis partícipes fáciat nos Rex ætérnæ glóriæ. ℟. Amen.

*In fine lectionis, dicitur:* Tu autem, Dómine, miserére nostri. ℟. Deo grátias.

### GRATIARUM ACTIO POST PRANDIUM.

Confiteantur tibi, Dómine, ómnia ópera tua; et Sancti tui benedícant tibi. *Ps.* 144.

Glória Patri, etc.

*Qui benedixit mensam, dicit:*

Agimus tibi grátias, omnípotens Deus, pro universis benefíciis tuis; Qui vivis et regnas in sécula seculórum. ℟. Amen.

*Deinde procedendo ad Ecclesiam, dicitur Ps.* Miserére 111. *Si verò non procedatur, dicitur Ps.* Laudáte Dóminum, omnes gentes, 104: *qui Psalmus*

*semper dicitur, quando absolvitur Gratiarum actio in loco refectionis.*

*In finè Psalmi dicitur* Glória Patri; *deinde* Kyrie, eléison. Christe, eléison. Kyrie, eléison.

*Secretò,* Pater, *usque ad* ℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem; ℟. Sed líbera nos à malo.

℣. Dispersit, dedit paupéribus; ℟. Justítia ejus manet in séculum séculi. *Ps.* 111.

℣. Benedícam Dóminum in omni témpore; ℟. Semper laus ejus in ore meo. *Ps.* 33.

℣. In Dómino laudábitur ánima mea; ℟. Audiant mansuéti, et lætentur. *Ps.* 33.

℣. Magnificáte Dóminum mecum; ℟. Et exaltémus nomen ejus in idipsum. *Ps.* 33.

℣. Sit nomen Dómini benedictum, ℟. Ex hoc nunc, et usque in séculum. *Ps.* 112.

Retribuere dignáre, Dómine, ómnibus nobis bona faciéntibus, propter nomen sanctum tuum, vitam ætérnam. ℟. Amen.

℣. Benedicámus Dómino. ℟. Deo grátias.

*Submissè.* Et fidélium ánimæ per misericórdiam Dei requiescant in pace.

℟. Amen.

## BENEDICTIO MENSÆ
### ANTE COENAM.

Benedicite. ℟. Dóminus. Edent páuperes, et saturabuntur; et laudábunt Dóminum qui requírunt eum: vivent corda eórum in séculum séculi. *Ps.* 21. Glória Patri, etc. Kyrie, eléison. Christe, eléison. Kyrie, eléison. *Secretò*, Pater noster: *altâ voce:* ℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem; ℟. Sed líbera nos à malo.

Orémus.

Benedic, Dómine, dona † tua, quæ de tua largitáte sumus sumptúri; Per Christum Dóminum nostrum. ℟. Amen.

*Ad lect. Bened.* Ad cœnam perpétuæ vitæ perdúcat nos Rex ætérnæ glóriæ.

℟. Amen.

## GRATIARUM ACTIO
### POST COENAM.

Memoriam fecit mirabílium suórum miséricors et miserátor Dóminus: escam dedit timéntibus se. *Ps.* 110.

Glória Patri, etc.

*Qui benedixit mensam, dicit:*

Benedictus Deus in donis suis, et sanctus in ómnibus opéribus suis; Qui vivit et regnat in sécula seculórum. ℟. Amen.

*Psalmus et reliqua, ut suprà, c.*

In Jejuniis, *ad refectionem fit Benedictio mensæ et Gratiarum actio, ut notatum est pro Cœna.*

¶ *Prædictus modus benedicendi Mensam, et agendi gratias, mutatur diebus infrà scriptis, ut sequitur:*

AD UTRAMQUE REFECTIONEM.

## FERIA IV, V ET VI MAJORIS HEBDOMADÆ.

BENEDICTIO.

Christus factus est pro nobis obédiens usque ad mortem. *Philip.* 2.

Pater, *totum secretò. Deinde, nihil dicendo, signo crucis benedicitur mensa; quæ benedictio Feriâ sextâ omittitur.*

*Ad lect. non datur benedictio, nec dicitur,* Tu autem:

GRATIARUM ACTIO.

Christus factus est pro nobis obédiens usque ad mortem, mortem autem crucis. *Philip.* 2.

*Ps.* Miserére, *sine* Glória Patri: *deinde* Pater, *totum secretò.*

Respice, quæsumus Dómine, super hanc famíliam tuam, pro qua Dóminus noster Jesus Christus non dubitávit mánibus tradi nocéntium, et crucis subíre tormentum; *secretò,* Qui tecum vivit, etc.

## SABBATO SANCTO.

BENEDICTIO.

Benedicite. ℟. Dóminus. Cùm transisset sábbatum, María Magdaléne, et María Jacóbi, et Salóme emérunt arómata, ut venientes úngerent Jesum, allelúia. *Marc.* 16.

*Non dicitur* Glória Patri.

Kyrie, eléison, *et reliqua, ut suprà,* c.

GRATIARUM ACTIO.

Vespere autem sábbati, quæ lucescit in prima sábbati, venit María Magdaléne, et áltera María, vidére sepulcrum, allelúia. *Matth.* 28.

Benedictus Deus, etc. cj.

*Psal.* Laudáte Dóminum, omnes gentes, (*sine* Glória Patri) 104. Kyrie. Pater. ℣. Dispersit, *et reliqua ut suprà,* cj.

## IN DIE S. PASCHÆ

*et usque ad prandium Sabbati sequentis inclusivè.*

BENEDICTIO.

Benedicite. ℟. Dóminus. Hæc dies quam fecit Dóminus; exultémus, et lætémur in ea, allelúia. *Ps.* 117.

Glória Patri; Kyrie, *et reliqua ut suprà,* c.

GRATIARUM ACTIO.

Hæc dies quam fecit Dóminus; exultémus, et lætémur in ea, allelúia. *Ps.* 117.

Glória Patri, *et reliqua omnia ut suprà,* cj; *excepto quod, loco Psalmi* Miserére, *dicitur Psalmus* Confitémini, 9.

## IN ASCENSIONE DOMINI

*et usque ad Vigiliam Pentecostes exclusivè.*

BENEDICTIO.

Benedicite. ℟. Dóminus. Ascendens Christus in altum, allelúia, captívam duxit captivitátem, allelúia. *Ephes.* 4.

Glória Patri; Kyrie, *et reliqua ut suprà,* c.

GRATIARUM ACTIO.

Ascendit Deus in júbilo, allelúia, et Dóminus in voce tubæ, allelúia. *Ps.* 46.

Glória Patri, *et reliqua omnia ut suprà.*, cj; *excepto quod, loco Psalmi* Miserére, *dicitur Psalmus* Omnes gentes, 32.

IN PENTECOSTE

*à Vigilia usque ad cœnam Sabbati sequentis exclusivè.*

BENEDICTIO.

Benedicite.' ℟. Dóminus. Spíritus Dómini replévit orbem terrárum, allelúia; et hoc quod cóntinet ómnia, sciéntiam habet vocis, allelúia. *Sap.* 1.

Glória Patri; Kyrie, *et reliqua ut suprà*, c.

GRATIARUM ACTIO.

Repleti sunt omnes Spíritu sancto, allelúia, et cœpérunt loqui, allelúia. *Act.* 2.

Glória Patri, *et reliqua omnia ut suprà*, cj; *excepto quod, loco Psalmi* Miserére, *dicitur Psal.* Magnus Dóminus, 107.

# ITINERARIUM.

*Viator, in ipso itineris ingressu, si solus fuerit, dicat quæ sequuntur, in singulari; si cum sociis, in plurali, ut sequitur:*

*In Cant.* Benedictus, 119.

*Ant.* 5. C. In viam pacis et prosperitátis dírigat nos omnípotens et miséricors Dóminus : et Angelus Ráphael comitétur nobiscum in via, ut cum pace, salúte et gáudio, revertámur ad própria.

PRECES.

Kyrie, eléison. Christe, eléison. Kyrie, eléison,

*Secretò,* Pater, *usque ad* ℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem; ℟. Sed líbera nos à malo.

℣. Salvos fac servos tuos, ℟. Deus meus, sperantes in te. *Ps.* 85.

℟. Mitte nobis, Dómine, auxílium de sancto; ℟. Et de Sion tuére nos. *Ps.* 19.

℣. Esto nobis, Dómine, turris fortitúdinis, ℟. A fácie inimíci. *Ps.* 60.

℣. Nihil profíciat inimícus in nobis, ℟. Et fílius iniquitátis non appónat nocére nobis. *Ps.* 88.

℣. Benedictus Dóminus die quotídie; ℟. Prósperum iter fáciat nobis Deus salutárium nostrórum. *Ps.* 67.

℣. Vias tuas, Dómine, demonstra nobis, ℟. Et sémitas tuas édoce nos. *Ps.* 24.

℣. Utinam dirigantur viæ nostræ ℟. Ad custodiendas justificatiónes tuas! *Ps.* 118.

℣. Erunt prava in directa, ℟. Et áspera in vias planas. *Is.* 40.

℣. Angelis suis Deus mandávit de te, ℟. Ut custódiant

te in ómnibus viis tuis. *Ps.* 90.

℣. Dómine, exaudi oratiónem meam; ℟. Et clamor meus ad te véniat.

Orémus.

Deus, qui fílios Israel per maris médium sicco vestígio ire fecisti, quique Magis iter ad te, stellâ duce, pandisti: tríbue nobis, quæsumus, iter prósperum, tempusque tranquillum; ut, Angelo tuo sancto cómite, ad eum quò pérgimus locum, ac demum ad æternæ salútis portum pervenire felíciter valeámus.

Deus, qui Abraham púerum tuum de Ur Chaldæórum eductum, per omnes suæ peregrinatiónis vias illæsum custodisti; quæsumus ut nos fámulos tuos custodíre dignéris: esto nobis, Dómine, in procinctu suffrágium, in via solátium, in æstu umbráculum, in plúvia et frígore tegumentum, in lassitúdine vehículum, in adversitáte præsídium, in lúbrico báculus, in naufrágio portus; ut, te duce, quò téndimus, prósperè perveniámus, et demum incólumes ad própria redeámus.

Adesto, quæsumus Dómine, supplicatiónibus nostris: et viam famulórum tuórum in salútis tuæ prosperitáte dispóne; ut inter omnes viæ et vitæ hujus varietátes, tuo semper protegámur auxílio.

Præsta, quæsumus omnípotens Deus, ut família tua per viam salútis incédat; et beáti Joannis Præcursóris hortamenta sectando, ad eum quem prædixit secúra pervéniat, Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum.

℟. Amen.

℣. Procedámus cum pace in nómine Dómini.

℟. Amen.

# CANONES.

## *De Jejunio et observantia Quadragesimali.*

### FERIA IV CINERUM.

Ex Decrétis synódicis Guillelmi Bauféti Epíscopi Parisiensis. *circa* 1309.

*Decr.* 9, *quod in eadem Ecclesia observatum testatur Guill. Arvernus Ep. Parisiensis,* 1230.

† Presbyteri Parochiános suos solémniter pœnitentes fáciant venire in cápite jejúnii ad Ecclésiam Cathedrálem; ut per Epíscopum solémniter ab Ecclésia ejiciantur, et simíliter in die Jovis próxima ante Pascha per Epíscopum Ecclésiæ reconcilientur.

### FERIA V POST CINERES.

Ex Capítulis sancti Martíni Bracarensis Epíscopi.

*Ante* 580. *cap.* 48.

Non líceat in Quadragésima natáles Mártyrum celebráre, sed tantùm Sábbato et Domínicâ pro eórum commemoratióne oblatiónes offerri: sed nec natalítia, neque núptias líceat in Quadragésima celebráre.

### FERIA SEXTA.

### IN V PLAGIS CHRISTI.

Ex Synodo Diœcesána Mediolanensi undécima, sub sancto Cárolo. 1584.

*Inter monit. de Off. div.*

In Quadragésima, Fériis sextis, pium religiosumque mœrórem ex acerbitáte passiónis Christi Dómini fidéles præ pietáte íntimè concípere, omníque devotiónis offício, atque ádeo salutáribus lácrymis exprímere debent. Quámobrem, illis sextis Fériis, ob memóriam passiónis Dómini nostri Jesu Christi, pópulus frequéntior convocétur ad orandum.

### SABBATO.

Ex Régula canónica sancti Chrodogangi Epíscopi Metensis. *Ante* 766. *c.* 20.

Licet omni témpore vita Christianórum simplex debet esse, máximè tamen religiósis méntibus cónvenit ut his (Quadragésimæ) diébus continéntiùs vivant, et sédulâ servitúte Deo adhærére contendant.

## DOMINICA PRIMA QUADRAGESIMÆ.

Ex Capituláribus Theodulfi Aurelianensis Epíscopi.

797. *can.* 37.

Jejunium (in Quadragésima) præter dies Domínicos qui jejúnio subtracti sunt, nullátenus resolvátur; quia isti dies décimæ sunt anni, quos cum omni religióne et sanctitáte transígere debémus. Hoc témpore non jejunáre, præ-

ceptum Dei transcéndere est. Præter infirmos ac párvulos, quisquis non jejunáverit, pœnam sibi acquírit. Eos dies Dóminus per semetipsum sacro jejúnio consecrávit.

### FERIA SECUNDA.

Ex Capituláribus Theodulfi Aurelianensis Epíscopi.
797. *c.* 38 *et* 43.

DIEBUS jejúnii eleemósyna facienda est; et cibum vel potum quo quisque uti débuit, si non jejunáret, paupéribus éroget. Penè non valet jejúnium, quod oratiónes, vigíliæ et eleemósynæ non commendant.

### FERIA TERTIA.

Ex Concílio Mediolanensi quinto, sub sancto Cárolo.
1579. *p.* 1. *tit.* 3.

ÆGROTI, cùm per invaletúdinem córporis jejunáre non possint, quodam íntimi ánimi dolóre gemitúque, ut sanctus Augustínus monet, cibum cápiant, pro eo quod, áliis jejunántibus, ipsi abstinére non possint. Cáveant autem, quod ex ejusdem sancti Augustíni senténtiâ cautum est, ne álios suo exemplo ad violandum jejúnium próvocent.

### FERIA QUARTA
#### QUATUOR TEMPORUM.

Ex Concílio Toletáno octávo. 653. *can.* 9.

QUISQUIS absque inevitábili necessitáte, absque fragilitátis evidenti languóre, seu étiam ætátis impossibilitáte, diébus Quadragésimæ usum cárnium præsúmpserit attentáre, non solùm reus erit resurrectiónis Domínicæ, verùm étiam aliénus ab ejusdem diéi sancta communióne.

### FERIA QUINTA.

Ex Concílio Mediolanensí quinto, sub sancto Cárolo.
1579. *p.* 1. *tit.* 3.

OMNI témpore à jocis christiánum hóminem abstinére cónvenit; at Quadragésimæ ac jejúnii témpore tantò diligéntiùs, quantò frequéntiùs studiosiùsque oratióni, abstinéntiæ, omníque pœniténtiæ géneri incumbendum est. Frequéntiùs ad Ecclésiam convéniat. Christiánus, divinis Officiis omni attentióne et religiósâ meditatióne assistat, Missæ sacrifício quotídie intersit, sacrisque conciónibus adsit.

## *De Sacramento Pœnitentiæ in genere.*

### FERIA SEXTA
#### QUATUOR TEMPORUM.

Ex Concílio Tridentíno.
1547. *Sess.* 6. *de Pœn. c.* 14.

DOCENDUM est christiáni hóminis pœniténtiam post lapsum multò áliam esse à baptismáli; eáque continéri, non modò cessatiónem à peccátis, et eórum detestatiónem, aut cor contrítum et humiliátum, verùm étiam eorumdem sacramentálem confessiónem saltem in voto, et suo témpore faciendam, et sacerdotálem absolutiónem;

itemque satisfactiónem per jejúnia, eleemósynas, oratiónes et ália pia spirituális vitæ exercítia.

## SABBATO QUATUOR TEMPORUM.

Ex Concílio Tridentíno.

1551. *Sess.* 14. *de Pœn. c.* 2.

PER Baptismum Christum induentes nova prorsus in illo effícimur creatúra, plenam et íntegram peccatórum ómnium remissiónem consequentes; ad quam tamen novitátem et integritátem per Sacramentum Pœniténtiæ, sine magnis nostris flétibus et labóribus, divínâ id exigente justítiâ, perveníre nequáquam póssumus; ut méritò Pœniténtia laboriósus quidam baptismus à sanctis Pátribus dictus fúerit. Est autem hoc Sacramentum Pœniténtiæ lapsis post Baptismum ad salútem necessárium, ut nondum regenerátis ipse Baptismus.

*De Contritione, et Confessione; item de Confessariorum officio.*

## DOMINICA SECUNDA QUADRAGESIMÆ.

Ex Concílio Tridentíno.

1547. *Sess.* 6. *de Just. c.* 5, 6.

QUI per peccáta à Deo aversi erant, disponuntur ad justítiam, dum excitáti divínâ grátiâ et adjúti, líberè moventur in Deum, credentes vera esse quæ divínitus reveláta et promissa sunt; et dum peccatóres se esse intelligentes, à divínæ justítiæ timóre, quo utíliter concutiuntur, ad consequendam Dei misericórdiam se convertendo, in spem eriguntur, fidentes Deum sibi propter Christum propítium fore, illumque tanquam omnis justítiæ fontem dilígere incípiunt: ac proptérea moventur adversùs peccáta per ódium áliquod et detestatiónem.

## FERIA SECUNDA.

Ex Concílio Tridentíno.

1551. *Sess.* 14. *de Pœn. c.* 4.

CONTRITIONEM imperfectam quæ Attrítio dícitur, quóniam vel ex turpitúdinis peccáti consideratióne, vel ex gehennæ et pœnárum metu commúniter concípitur, si voluntátem peccandi exclúdat cum spe véniæ, declárat (sancta Synodus) non solùm non fácere hóminem hypócritam et magis peccatórem, verùm étiam donum Dei esse, et Spiritûs sancti impulsum, non adhuc quidem inhabitantis, sed tantùm moventis; quo pœnitens adjútus, viam sibi ad justítiam parat. Et quamvis sine Sacramento Pœniténtiæ per se ad justificatiónem perdúcere peccatórem néqueat, tamen eum ad Dei grátiam in Sacramento Pœniténtiæ impetrandam dispónit.

### FERIA TERTIA.

Ex Declaratióne Cleri Gallicáni. 1700. *tit.* 1.

De dilectióne Dei, sicut ad Sacramentum Baptismi in adultis, ita ad Sacramentum Pœniténtiæ, quæ est labo-riósus baptismus, requisíta, ne necessáriam doctrínam omittámus; hæc duo imprímis ex sacrosancta Synodo Tridentína docenda esse dúximus. Primum, ne quis putet in utróque Sacramento requíri, ut præviam contritiónem eam quæ sit caritáte perfecta, et quæ cum voto Sacramenti, ántequam actu suscipiátur, hóminem Deo reconcíliet. Alterum, ne quis putet in utróque Sacramento secúrum se esse, si præter fidei et spei actus, non incípiat dilígere Deum tanquam omnis justítiæ fontem.

### FERIA QUARTA.

Ex Synodo Carnotensi. 1526. *tit.* 7.

Tempore Quadragesimáli sæpíssime admóneant Curáti Parochiános suos, et illos præcípuè qui per annum íntegrum distulérunt confitéri, ut témpore débito confiteantur, non differentes confessiónem, ut fáciunt pleríque, usque circa finem hebdómadæ sanctæ; ne propter eórum moram divínum impediátur Officium, aut minùs débitè compleátur: eis comminando quod si qui usque ad præfátos dies confitéri distúlerint, non admittantur ad confessiónem, nec ad Sacramentum, nisi post Festum Paschæ: quod fácere póterunt Curáti et eórum Vicárii, cessante perículo et scándalo.

### FERIA QUINTA.

Ex Concílio Mediolanensi primo, sub sancto Cárolo. 1565. *part.* 2. *tit.* 6.

In Confessáriis probandis hanc ratiónem hábeant Epíscopi, ut pii, bene moráti, docti, prudentes, patientes, de animárum salúte sollíciti, et fidéles custódes sint eórum quæ in confessióne dicuntur, provectâ étiam ætáte, præsertim illi quibus confessiónes mulíerum erunt audiendæ.

### FERIA SEXTA.

Ex Instructiónibus sancti Cároli de Pœniténtia, promulgátis auctoritáte Cleri Gallicáni.

*Inter Acta Mediolan. Eccles. part.* 4. *tit.* 9. 1656.

Necessaria ádmodum Sacerdótibus, qui in audiendis Pœniténtium confessiónibus versantur, Cánonum pœnitentiálium sciéntia. Etenim si ómnia quæ ad pœnitendi modum pértinent, non prudéntiâ solùm ac pietáte, sed justítiâ étiam metienda sunt; certè norma hæc è Canónibus pœnitentiálibus sumátur oportet. Sunt namque ii quasi régulæ quædam, quibus, cùm ad culpæ commissæ gravitátem rectè dignoscendam, tum ad imponendam pro illíus ratióne veram pœniténtiam, Confessárii ita diriguntur, ut ubi síngula et quæ ad peccáti magnitúdi-

nem, et quæ ad pœnitentis statum, conditiónem, ætátem, intimumque cordis contríti dolórem pértinent, accurátè perpénderint, tum demum pœniténtiam judício ac prudéntiâ suâ moderentur.

SABBATO.

Ex Concílio Lateranensi quarto.

1215. *tit.* 21.

Sacerdos sit discrétus et cautus, ut more períti médici superinfundat vinum et óleum vulnéribus sauciáti; diligenter inquírens et peccatóris circumstántias et peccáti, per quas prudenter intélligat quale illi consílium débeat exhibére, diversis experimentis utendo ad sanandum ægrótum.

## DOMINICA TERTIA QUADRAGESIMÆ.

Ex Synodo Carnotensi.

1526. *tit.* 7,

Presbyteri circa confessiónem sacramentálem máximam curam adhíbeant et cautélam; scílicet ut diligenter et cautè inquírant peccáta et circumstántias : ita tamen quod simplícibus persónis dent matériam confitendi, et sua peccáta detegendi, nec eos directe vel indirecte ínstruant ad malum. Si pro iis quos in confessióne audíerint Sacerdótes, prudentióre consílio indigúerint, illud absque ulla expressióne et nominatióne persónæ, cautè requírant.

FERIA SECUNDA.

Ex Synodo Trecensi.

1459.

Sacerdotes ne à confitente quærant nómina personárum cum quibus peccáverit, sed circumstántias quæ quandóque tantam aggravatiónem peccáti fáciunt; quia sine hoc de peccáti quantitáte non potest bene judicári. Debent semper pia gestáre víscera circa confitentes, exemplo beáti Ambrósii, de quo légitur quod quotiescumque áliquis lapsus in peccátum ante eum veniébat ob pœniténtiam percipiendam, ita flebat, ut pœnitentem flere compélleret.

FERIA TERTIA.

Ex Statútis synodálibus Odónis de Sollaco, Parisiensis Epíscopi.

*Circa* 1197. *c. de Confess.*

In confessióne hábeat Sacerdos vultum húmilem et óculos ad terram, nec fáciem respíciat confitentis; patienter áudiat quæ díxerit in spíritu lenitátis; et ei pro posse suo plúribus modis persuádeat ut confiteátur integrè : áliter dicat ei nihil valére (confessiónem.) In dúbiis cónsulat Epíscopum, aut sapientes viros, quorum consílio solvat secúriùs, aut liget.

FERIA QUARTA.

Ex Instructiónibus sancti Cároli de Pœniténtia.

*Act. Med. Eccl. p.* 3. *tit.* 4.

In Ecclésia, non in privátis ædibus, confessiónes áudiat

Confessárius, nisi ex causa necessária vel urgenti; quæ cùm incíderit, stúdeat in loco decentíssimo id præstáre. Mulíeres confiténtes ne áudiat extra sedem confessionálem, et nisi médio inter eum et mulíerem intercepto. Se in sedíli confessionáli ostendat de pœnitentis salúte paternè sollícitum, ita tamen ut nullo pénitus signo inspectántibus indicáre possit, se gravitáte fortasse scéleris alicújus commovéri.

### FERIA QUINTA.

Ex Statútis Stéphani de Pontécaro Parisiensis Epíscopi.

*Ante* 1508. *tit. de Pœnit.*

Si quidam ad confessiónem de crimínibus suis accésserint, asserentes se non posse abstinére, eórum confessiónes recipiátis, (ô Sacerdótes) et bonum consílium abstinendi et satisfaciendi distribuátis : et licèt vera pœniténtia non sit, et fructuósa quoad vitam æternam; tamen valébit, et póterit eis prodesse quoad multa, ut Deus citiùs illustret cor eórum ad pœniténtiam.

### FERIA SEXTA.

Ex Régulis sacramentálibus sancti Cároli, promulgátis auctoritáte Cleri Gallicáni. 1658.

Vídeat diligenter Confessárius ne quem absolvat, qui vel ódium, inimicitiamve depónere nolit, vel restitúere pro facultáte recúset aliénum, vel à statu peccáti mortális parátus non sit discédere, occasionemve símilis peccáti vitáre. Qua de re doctrínas probátas stúdeat rectè cognóscere, et secundùm eas sese gérere.

### SABBATO.

Ex Concílio Aquisgranensi. 816. *l.* 1, *c.* 37.

Pœniténtium causæ pensandæ sunt, et tunc ligandi atque solvendi potestas exercenda. Videndum est quæ culpa præcésserit, aut quæ sit pœniténtia secúta post culpam; ut quos omnípotens Deus per compunctiónis grátiam vísitat, illos Pastóris senténtia absolvat. Tunc enim vera est absolútio præsidentis, cùm superni arbítrium séquitur Júdicis.

## *De Satisfactione et Indulgentiis.*

### DOMINICA QUARTA QUADRAGESIMÆ.

Ex Concílio Lateranensi secundo.

1139. *can.* 22.

Quia inter cétera unum est quod sanctam máximè perturbat Ecclésiam, falsa vidélicet pœniténtia; ne falsis pœniténtiis ánimas décipi, et in infernum pértrahi patiantur (Presbyteri.) Falsam autem pœniténtiam esse constat, cùm, spretis plúribus, de uno solo pœniténtia ágitur; aut cùm sic ágitur de uno, ut non

discedátur ab álio; cùm pœnitens ab offício non recédit, quod sine peccáto agi nullâ ratióne prævalet; aut si ódium in corde gestétur, aut si offenso cuílibet non satis fiat, aut si offendenti offensus non indúlgeat, aut si arma quis contra justítiam gerat.

## FERIA SECUNDA.

Ex Concílio Tridentíno.
1563. *Sess.* 24. *de Reform.* *c.* 8.

Apostolus monet públicè peccantes palàm esse corripiendos. Quando ígitur ab áliquo públicè et in multórum conspectu crimen commissum fúerit, unde álios scándalo offensos commotosque fuisse non sit dubitandum; huic condignam pro modo culpæ pœniténtiam públicè injungi oportet: ut quos exemplo suo ad malos mores provocávit, suæ emendatiónis testimónio ad rectam rávocet vitam. Epíscopus tamen públicæ hoc pœniténtiæ genus in áliud secrétum póterit commutáre, quando ita magis judicáverit expedíre.

## FERIA TERTIA.

Ex Concílio Cabilonensi secundo.
813. *can.* 38.

Modus pœniténtiæ peccáta sua confiténtibus, aut per antiquórum Cánonum institutiónem, aut per sanctárum Scripturárum auctoritátem, aut per consuetúdinem ecclesiásticam impóni debet; repudiátis ac pénitus eliminátis libellis, qui dum pro peccátis grávibus leves quosdam et inusitátos impónunt pœniténtiæ modos, cónsuunt pulvillos, secundùm prophéticum sermónem, sub omni cúbito manûs, et fáciunt cervicália sub cápite universæ ætátis ad capiendas ánimas.

## FERIA QUARTA.

Ex Concílio Parisiensi sexto.
829. *l.* 1. *c.* 32, 46.

Sacerdotes qui aut múneris, aut amóris, aut timóris, aut certè favóris causâ, témpora modumque pœniténtiæ ad líbitum pœniténtium indícunt, áudiant quid Dóminus per Ezechiélem Prophétam terribíliter dicat: Erit manus mea super Prophétas qui decepérunt pópulum meum, dicentes: Pax, pax; et non est pax. Sacerdótibus illis est conféssio peccatórum facienda, à quibus subinde et modus pœniténtiæ capiátur, et à quibus secundùm canónicam institutiónem reconciliátio mereátur.

## FERIA QUINTA.

Ex Régulis sacramentálibus sancti Cároli, promulgátis auctoritáte Cleri Gallicáni.
1658.

In pœniténtia imponenda adhibébit Confessárius et prudéntiam et pietátem et justítiam: habébit ratiónem statûs, conditiónis, sexûs et ætátis. Vidébit ne ei qui in aliéna potestáte est, eam pœniténtiam injungat, quâ vel

præjudícium afferátur illíus juri qui pœnitentem in potestáte hábeat, neve eam quâ vel occásio detur spirituális ruínæ, vel pœnitentis alteriúsve peccátum détegi, vel áliquod scándalum suboríri, vel ipse pœnitens nímiùm deterréri, remissusve et tépidus reddi possit. Quámobrem talem impónet, qualem ab eo præstári posse júdicet. Considerábit autem ánimum mentemque pœnitentis, ac fletum, gémitum et lácrymas íntimi dolóris índices. Vidébit ne pro peccátis grávibus levíssimas pœniténtias impónat : id quod et Confessóribus et pœniténtibus periculósum est.

## FERIA SEXTA.

Ex Concílio Wormatiensi.

868. *can.* 25.

Pœnitentibus, secundùm differéntiam peccatórum, Sacerdótis arbítrio pœniténtiæ decernuntur. Debet ítaque Sacerdos in pœniténtia danda singulórum causas singulátim consideráre, oríginem quoque modumque culpárum, et affectus gemitusque delinquéntium diligenter examináre, manifestéque cognóscere; témporum étiam, et personárum, locórum quoque et ætátum qualitátes inspícere; ut étiam pro consideratióne locórum, ætátum vel témporum, seu pro qualitáte delictórum atque gemítuum uniuscujusque delinquentis, à sacris régulis óculos non reflectat.

## SABBATO.

Ex sancto Hierónymo apud Petrum Lombardum Epíscopum Parisiensem.

1159. *Sent. lib.* 4, *dist.* 20, *art.* 3.

Mensuram témporis in agenda pœniténtia non satis apertè præfígunt Cánones pro unoquóque crímine, ut de síngulis dicant quáliter unumquodque emendandum sit : sed magis in arbítrio Sacerdótis intelligentis relinquendum statuérunt; quia apud Deum non tantùm valet mensúra témporis, quantùm dolóris; nec abstinéntia tantùm cibórum, quantùm mortificátio vitiórum. Ideo témpora pœniténtiæ pro fide et conversatióne fidélium pœniténtium abbrevianda præcípiunt, et pro negligéntia (eorumdem) protelanda : pro quibusdam tamen culpis modi pœniténtiæ sunt impósiti.

# DOMINICA PASSIONIS.

Ex Concílio Tridentíno.

1551. *Sess.* 14. *de Pœn. c.* 8.

Magnopere à peccáto révocant, et quasi fræno quodam coercent satisfactóriæ pœnæ, cautioresque et vigilantióres in futúrum pœnitentes effíciunt : medentur quoque peccatórum relíquiis, et vitiósos hábitus malè vivendo comparátos contráriis virtútum actiónibus tollunt. Neque verò ita nostra est satisfáctio

hæc quam pro peccátis nostris exsólvimus, ut non sit per Christum Jesum, in quo merémur, in quo satisfácimus, facientes fructus dignos pœniténtiæ, qui ex illo vim habent, ab illo offeruntur Patri, et per illum acceptantur à Patre. Hábeant autem præ óculis Sacerdótes ut satisfáctio quam impónunt, non sit tantùm ad novæ vitæ custódiam et infirmitátis medicamentum, sed étiam ad præteritórum peccatórum vindictam et castigatiónem.

## FERIA SECUNDA.

Ex Concílio Cabilonensi secundo. 813. *can.* 36.

Peccata quæ ex indústria, aut cujúslibet libídinis explendæ causâ, idcirco fiunt ut eleemósynis redimantur, nequáquam eis rédimi possunt; quia qui hoc perpetrárunt, videntur Deum mercéde condúcere, ut eis impúnè peccáre líceat. Non ergo quis idcirco peccáre debet, ut eleemósynam fáciat; sed ídeo eleemósynam fácere debet, quia peccávit.

## FERIA TERTIA.

Ex Concílio Cabilonensi secundo. 813. *can.* 45.

A quibusdam qui Romam Turonumve et ália quædam loca sub prætextu oratiónis inconsultè péragrant, plúrimùm errátur. Sunt qui putant se impúnè aut peccáre, aut peccasse, quia hæc loca oratúri frequentant: sunt páuperes qui vel ídeo id fáciunt, ut majórem hábeant matériam mendicandi; tantùm vecordes, ut putent se sanctórum locórum solâ visióne à peccátis purgári. Qui verò peccáta sua Sacerdótibus, in quorum sunt Paróchiis, confessi sunt, et ab iis agendæ pœniténtiæ consílium accepérunt, si oratiónibus insistendo, eleemósynas largiendo, vitam emendando, mores componendo, Apostolórum límina, vel quorúmlibet Sanctórum, invísere desíderant; horum est devótio modis ómnibus collaudanda.

## FERIA QUARTA.

Ex Concílio Tridentíno.

1563. *Sess.* 25. *Decr. de Indulg.*

Cum potestas conferendi Indulgéntias à Christo Ecclésiæ concessa sit, atque hujúsmodi potestáte divínitus sibi tráditâ, antiquíssimis étiam tempóribus, illa usa fúerit; sacrosancta Synodus Indulgentiárum usum christiáno pópulo máximè salutárem, et sacrórum Conciliórum auctoritáte probátum, in Ecclésia retinendum esse docet et præcipit. In his tamen concedendis moderatiónem, juxta véterem et probátam in Ecclésia consuetúdinem, adhibéri cupit, ne nímiâ facilitáte ecclesiástica disciplína enervétur; et státuit pravos quæstus omnes pro his consequendis, unde plúrima in christiáno pópulo abúsuum causa fluxit, omníno abolendos esse.

## FERIA QUINTA.

Ex Concílio Cameracensi. 1565. *tit.* 22.

Quia per indiscrétas et supérfluas Indulgéntias claves Ecclésiæ contemnuntur, et pœnitentiális satisfáctio enervátur; ídeo ne quis ullas novas aut ignótas Indulgéntias pópulo commendet, et promerendas ófferat, nisi priùs ab Ordinário (loci Epíscopo) visitátæ fúerint et probátæ. Párochi étiam pópulum suum diligenter admóneant, ne circumforáneis quibusdam libellis témerè fidem adhíbeant, qui ex lévibus, vanis et superstitiósis causis exorbitantes Indulgéntias pollicentur, cùm Indulgéntiæ nónnisi ex piis et rationabílibus causis concédi débeant.

## FERIA SEXTA.

### IN COMPASSIONE BEATÆ MARIÆ VIRGINIS.

Ex Synodo Coloniensi. 1423. *can.* 11.

† Ad glóriam sanctæ et intemerátæ Vírginis Dei genitrícis, pro míseris peccatóribus Fílium suum crucifixum assíduè deprecantis, necnon ad honórem illíus angústiæ et dolóris, dum Redemptor noster Jesus Christus, expansis mánibus in ara crucis, pro salúte nostra immolátus, matrem suam benedictam dilectíssimo discípulo suo Joanni Evangelistæ commendávit; et præsertim ut profanórum hæreticórum perfídia retundátur, qui imágines ad laudem Crucifixi et gloriósæ Vírginis dedicátas combúrere mínimè formidárunt; Festum commemoratiónis præfátæ angústiæ et dolóris beátæ Maríæ Vírginis singulis annis celebrétur.

## SABBATO.

De Sermóne sancti Leónis Papæ. *Serm.* 44. *c.* 4.

Dum cóngruis purificatiónibus ad celebrandum Pascha Dómini útraque substántia præparátur, profutúra omni témpore consuetúdo nutrítur. Sevéra in súbditos impéria detumescant, cesset vindicta peccáti, et rei críminum ad hos dies pervenisse se gáudeant, in quibus à sanctis piisque Princípibus étiam publicárum austéritas remíttitur ultiónum : aboleantur ódia, defíciant simultátes; quóniam judícium Dei, sicut immítibus véhemens, ita erit misericórdibus clemens.

*De annua peccatorum Confessione, et Paschali Communione unicuique adulto præscriptis. De prima Communione, et requisitis ad sacræ Eucharistiæ perceptionem dispositionibus.*

## DOMINICA PALMARUM.

Ex Concílio Lateranensi quarto. 1215. *c.* 21.

Omnis utriusque sexûs fidélis, postquam ad annos discretiónis pervénerit, ómnia sua solus peccáta confiteátur fidéliter, saltem semel in anno, próprio Sacerdóti, et injunctam sibi pœniténtiam stúdeat pro víribus adimplére, suscípiens reverenter ad minùs in Pascha Eucharístiæ Sacramentùm, nisi fortè de consílio próprii Sacerdótis, ob áliquam rationábilem causam ad tempus ab ejus perceptióne dúxerit abstinendum. Alióquin et vivens ab ingressu ecclésiæ arceátur, et móriens christiánâ cáreat sepultúrâ. Si quis autem aliéno Sacerdóti volúerit, justa de causa, sua confitéri peccáta, licéntiam priùs obtíneat.

### FERIA SECUNDA.

Ex Concílio Remensi. 1583. *c.* 10 *et* 11.

Dolemus, tantam esse (quorumdam) Christianórum incúriam, ut semel tantùm in anno sumant Eucharístiæ subsídia. Quare Parœci et qui ad divíni verbi prædicatiónem asciscuntur, de frequentis communiónis antíquo usu, ejusdemque miris frúctibus et utilitáte dísserant; et fidélibus persuadére nitantur nullum esse modum aptiórem et compendiosiórem, quo Ecclésiæ Apostólicæ fácies nostro século rédeat.

### FERIA TERTIA.

Ex Concílio Cabilonensi secundo. 813. *càn.* 46.

In perceptióne córporis et sánguinis Domínici magna discrétio adhibenda est. Cavendum est enim, ne si nímiùm in longum differátur, ad perníciem ánimæ pertíneat, dicente Dómino: Nisi manducavéritis carnem Fílii hóminis, et bibéritis ejus sánguinem, non habébitis vitam in vobis. Si verò indiscrétè accipiátur, timendum est illud quod ait Apóstolus: Qui mandúcat et bibit indignè, judícium sibi mandúcat et bibit.

### FERIA QUARTA.

Ex Tractátu Jonæ, Aureliánensis Epíscopi, de institutióne laicáli. 830. *l.* 2. *c.* 18.

Sacrosanctum corpus et sánguinem Dómini nostri Jesu Christi, quidam reverenter et salúbriter, quidam indiscrétè et indignè percípiunt. Nonnulli tanti Sacramenti parti-

cipatióne ob reátuum suórum obligatiónem, Sacerdótis judício, méritò privantur. Item pleríque (quod valde periculósum et cóngruâ emendatióne dignum est) ab hoc Sacramento, partim incúriâ, partim desídiâ, ádeo se súbtrahunt, ut vix in anno, ex consuetúdine, potiusquam ex devotióne, id fáciant; nescientes aut scire nolentes quod sicut corpus sine cibo et potu, ita et ánima sine spirituáli cibo móritur. Quanti autem sit discríminis, nisi accipiátur, et quanti, si indiscrétè sumátur, Evangélica et Apostólica testimónia, et sanctórum Patrum dicta demonstrant.

## IN DIE SANCTO PASCHÆ.

Ex Concílio Matisconensi secundo. 583. *can.* 2.

†Pascha nostrum in quo summus Sacerdos et Póntifex pro nostris delictis, nullam habens obnoxietátem peccáti, immolátus est, debémus omnes festivíssimè cólere, et sédulæ observatiónis sinceritáte in ómnibus venerári, ut illis sanctíssimis diébus omnes simul coadunáti, hymnis paschálibus indulgentes, perseveratiónis nostræ præséntiam quotidiánis sacrifíciis ostendámus, laudantes Creatórem ac regeneratórem nostrum véspere, mane, et merídie.

### FERIA SECUNDA.

Ex Concílio Bituricensi. 1584. *tit. de Euchar. c.* 7.

Nemo ad diem Paschæ Eucharístiam ab álio quàm à próprio Párocho seu Curáto súmere præsúmat. Sacerdos qui contra hoc decrétum administrat, cujuscumque gradûs et órdinis fúerit, extraordináriè puniátur. Aliis quibúslibet diébus festis, commúnio ex licéntia Epíscopi, ejus Vicárii, aut Párochi, áliis in locis pro cujusque voto ab idóneo Sacerdóte concedátur.

### FERIA TERTIA.

Ex Concílio Mediolanensi sexto, sub sancto Cárolo. 1582. *tit.* 9.

Parochus, si Parochiálem habet qui ex morbo labórans, aliáve necessitáte verè impedítus, non potest sacro Paschæ témpore ad ecclésiam convenire, ubi sanctíssimam communiónem cum céteris percípiat, ad illum (etiamsi paucis antè diébus percéperit) ipse illo Pascháli témpore déferat.

### FERIA QUARTA.

Ex Concílio Tolosáno. 1590. *part.* 2. *c.* 5.

Quæ tanto animárum dispéndio in locis quibusdam increbuit serò nímiùm communicandi consuetúdo, sánctiùs erit immutanda. Adolescentesque ii, quos de sumendo mystério satis decérnere posse Párochi vel Confessárii judicárint, ad communiónem sunt (à Pá-

rochis) recipiendi, imò étiam impellendi.

FERIA QUINTA.

Ex Constitutiónibus Ecclésiæ Gallicánæ in Conventu Melodunensi.

A. 1579. *tit. de Euchar.*

AD frequentem communiónem cum fídei sinceritáte, spei confidéntiâ, caritátis ardóre, ac animárum puritáte, pópuli excitandi sunt. Júvenes primùm ad tanti Sacramenti sumptiónem admitti volentes, probentur; et per tempus áliquod, ántequam admittantur, ad fídei sinceritátem, usum et fructum tanti Sacramenti instituantur.

FERIA SEXTA.

Ex Concílio Tridentíno. 1551. *Sess.* 13. *de Eucharistia, can.* 7.

SI non decet ad sacras ullas functiónes quémpiam accédere, nisi sanctè; certè quò magis sánctitas et divínitas cœlestis (Eucharístiæ) Sacramenti viro christiáno comperta est, diligéntiùs cavére ille debet, ne absque magna reveréntia et sanctitáte ad id percipiendum accédat. Quare communicáre volenti revocandum est in memóriam Apóstoli præceptum : Probet seipsum homo. Ecclesiástica autem consuetúdo declárat eam probatiónem necessáriam esse, ut nullus sibi cónscius mortális peccáti, quantumvis sibi contrítus videátur, absque præmissa sacramentáli confessióne ad sacram Eucharístiam accédere débeat.

SABBATO.

Ex Concílio Toletáno undécimo. 675. *c.* 4.

DISCORDANTIUM fratrum oblatiónes, juxta antíqui Cánonis definitiónes, nullo modo recipiendas esse censémus. Antequam eos reconciliátio vera innectat, nullus eórum accédere ad altáre Dómini áudeat, vel grátiam communiónis sanctæ percípiat.

*De Sacrificio Missæ à Sacerdotibus ritè celebrando, et de pietate quâ fideles huic adstare debent.*

## DOMINICA IN ALBIS.

Ex Concílio Tridentíno. 1562. *Sess.* 22. *Decr. de observ. in Missa.*

SACROSANCTUM Missæ sacrifícium omni religiónis cultu ac veneratióne celebrétur. Cùm ígitur multa jam sive témporum vítio, sive hóminum incúriâ et improbitáte, irrepsisse videantur quæ à tanti sacrifícii dignitáte aliéna sunt, decernit sancta Synodus, ut Ordinárii (locórum Epíscopi) ea ómnia prohibére atque è médio tóllere sédulò curent ac teneantur, quæ vel avarítia, idolórum sérvitus, vel irreveréntia, quæ ab im-

pietáte vix sejuncta esse potest, vel superstítio veræ pietátis falsa imitátrix, induxit.

## FERIA SECUNDA.

Ex Concílio Parisiensi sexto. 829. *l.* 3. *c.* 6.

POSTHABITIS ædículis, quas usus inólitus Capellas appellat, basílicæ Deo dicátæ ad Missárum celebratiónem audiendam, et córporis et sánguinis Domínici perceptiónem sumendam, assíduè devotéque adeantur.

## FERIA TERTIA.

Ex Concílio Mediolanensi primo, sub sancto Cárolo. 1565. *part.* 2. *tit.* 5.

ORATORIORUM ædificatiónem aut usum, ne fácilè, sed magna de causa permittant Epíscopi. In eis autem designandis vel probandis hæc servent : Ne sint in interiórum ædium pártibus, in quibus dómini vel família frequéntiùs versentur, sed cómmodo et honesto loco, à cubículis, triclíniis et aula separáto : ad templi formam et régulam própius accédant : nec ita angusta sint, ut qui Missam audíerint, ad óstium aut fenestram stare cogantur; aut dénique ibi sacris interesse, ubi promíscuè profánum áliquod exerceátur. Cui autem id permissum fúerit, is eo ráriùs utátur; ne distracti hómines illâ commoditáte, Ecclésiam minùs frequentent, quod exemplo étiam nóceat áliis.

## FERIA QUARTA.

Ex Concílio Rotomagensi. 1591. *tit. de Episc. off. n.* 11.

MONEANTUR ab Epíscopo in sua promotióne Presbyteri, ut intra semestre, sine altérius cujuscumque licéntia, Missam primam célebrent, et deinceps répetant saltem ómnibus diébus Domínicis et Festis solémnibus. Si autem curam habúerint animárum, tam frequenter, ut suo múneri satisfáciant.

## FERIA QUINTA.

Ex Concílio Tridentíno. 1562. *Sess.* 22.

*Decr. de observ. in Missa.*

ILLIBERALES eleemosynárum exactiónes pótiùs quàm postulatiónes (pro celebrandis Missis) alíaque hujúsmodi, quæ à simoníaca labe, vel certè à turpi quæstu non longè absunt, omníno prohíbeant Ordinárii (locórum Epíscopi.) Deinde, ut irreveréntia vitétur, sínguli in suis diœcésibus interdícant ne cui vago et ignóto Sacerdóti celebráre líceat; neve patiantur privátis in dómibus, atque omníno extra ecclésiam et ad divínum tantùm cultum dedicáta oratória, ab eisdem Ordináriis designanda et visitanda, sanctum hoc sacrifícium à seculáribus aut reguláribus quibuscumque péragi, ac nisi priùs qui intersint, decenter compósito córporis hábitu, declaráverint se mente étiam ac devóto

cordis affectu, non solùm córpore, adesse.

### FERIA SEXTA.

Ex Concílio Lateranensi quarto. 1215. *c.* 17.

SUNT Presbyteri qui Missárum célebrant solémnia vix quater in anno ; et quod detérius est, interesse contemnunt : et si quando, dum hæc celebrantur, intersunt, Chori siléntium fugientes, intendunt extériùs collocutiónibus Laicórum ; dumque audítum ad indébitos sermónes effundunt, aures intentas non pórrigunt ad divína. Hæc ígitur et simília sub pœna suspensiónis pénitus inhibémus.

### SABBATO.

Ex Concílio Cameracensi. 1565. *tit.* 6. *c.* 1 *et* 2.

QUICUMQUE ad tremendum Missæ sacrifícium accésserit, is in primis mentem puram et attentam ad tanti Sacramenti mystérium perficiendum áfferat; nec nisi bonæ consciéntiæ testimónio prædítus, et Pœniténtiâ sacramentáli, si necesse fúerit, præparátus et probátus, ac débitâ oratióne priùs accommodátus, ad córporis et sánguinis Christi venerábile Sacramentum Deo Patri offerendum se cónferat. Valde præpósterum et indignum quod velint Sacerdótes à Láicis reveréntiam huic Sacramento exhibéri, nec ipsi tamen móribus et religióne suâ exhibendam declárent.

## DOMINICA II POST PASCHA.

Ex Concílio Tridentíno. 1562. *Sess.* 22.

*Decr. de observ. in Missa.*

CAVEANT Epíscopi, ne Sacerdótes áliis quàm débitis horis célebrent, néve ritus álios aut álias cærimónias et preces in Missárum celebratióne adhíbeant, præter eas quæ ab Ecclésia probátæ ac frequenti et laudábili usu receptæ fúerint. Dóceant pópulum quis sit, et à quo potíssimùm provéniat sanctíssimi hujus sacrifícii tam pretiósus ac cœlestis fructus : móneant étiam eumdem pópulum, ut frequenter ad suas paróchias, saltem diébus Domínicis et majóribus Festis, accédant.

### FERIA SECUNDA.

Ex Concílio Mediolanensi primo, sub sancto Cárolo. 1565. *part.* 2. *tit.* 5.

MISSÆ nec ante auróram nec post merídiem, nisi ex causa jure permissa, celebrentur. Ne Párochi cujusquam grátiâ, metúve, Missam (parochiálem) antícipent aut dífferant; sed illam eâ potíssimùm horâ célebrent, quæ pópulo magìs accommodáta sit.

### FERIA TERTIA.

Ex Epístola sancti Augustíni Epíscopi ad Januárium. *Circa* 400. *n.* 7 *et* 8.

LIQUIDÒ appáret, quando primùm accepérunt discípuli corpus et sánguinem Dómini,

non eos accepisse jejúnos. Numquid tamen proptérea calumniandum est univérsæ Ecclésiæ, quòd à jejúnis semper accípitur? Ex hoc enim plácuit Spirítui sancto, ut in honórem tanti Sacramenti, in os Christiáni priùs corpus Domínicum intráret, quàm céteri cibi. Nam ídeo per univérsum orbem mos iste servátur. Post cibos dedit Dóminus... Non præcépit quo deinceps órdine sumerétur, ut Apóstolis per quos Ecclésias dispositúrus erat, reserváret hunc locum. Cùm verò ait Apóstolus, de hoc Sacraménto loquens: Cétera, cùm vénero, dispónam, intélligi datur, et ab ipso ordinátum esse quod nullâ morum diversitáte variátur.

FERIA QUARTA.

Ex Concílio Parisiensi sexto. 829. *cap.* 48.

Irrepsit usus emendatióne dignus, quod nonnulli Presbyterórum sine ministris Missárum solémnia frequentent. Unde interrogandus hujúsmodi córporis et sánguinis Dómini solitárius consecrátor, quibus dicit: Dóminus vobíscum; et à quo illi respondétur: Et cum spíritu tuo; vel pro quibus: Meménto, Dómine.... et ómnium circumstántium, cùm nullus circumstet, dicit. Quæ consuetúdo, quia Apostólicæ et Ecclesiásticæ auctoritáti refragátur, provídeat unusquísque Episcopórum, ne in sua Paróchia quisquam Presbyterórum Missam solus celebráre præsúmat.

FERIA QUINTA.

Ex Concílio Mediolanensi sexto, sub sancto Cárolo. 1582. *tit.* 15.

Clericus qui in Missæ sacrifício ministrat, dum eam functiónem obit, ne Preces horárias, neve áliud quidquam de libro alióve Offício récitet; sed toto íntimæ pietátis stúdio ad ministérium attentus sit, quod tunc piè religioséque éxequi debet.

FERIA SEXTA.

Ex Statútis synodálibus Stéphani de Pontécaro, Parisiensis Epíscopi. 1508. *tit. de Horis dicendis.*

Cum nonnulli particulátim dicant Offícium aut oratiúnculas, álios audientes (Missam) aliquóties perturbantes, magis altè sequentes, aut progressus facientes, étiam témpore Epístolæ aut Evangélii, quæ sunt verba Christi, aut ejus núntii scílicet Apóstoli, nullusque ita audácior esset ad áliud inténdere, dum Princeps aut ejus núntius loquerétur; ídcirco injúngimus, ut dum ad divína accéditis, ad síngula quæ proferuntur et aguntur, attendátis; nec credátis vestras oratiúnculas melióres et efficacióres illis quas Ecclésia universális dicendas decrévit.

SABBATO.

Ex Concílio Aurelianensi quarto. 541. *c.* 4.

Nullus in oblatióne sacri cálicis nisi ex fructu víneæ, et

et hoc aquâ mixtum, offerre præsúmat; quia sacrilegum judicátur áliud offerri, quàm quod in mandátis sacratíssimis Salvátor instítuit.

## DOMINICA III POST PASCHA.

Ex Concílio Tridentíno. 1562. *Sess.* 22. *de Sacrificio Missæ, c.* 8.

Retento ubíque cujuscumque Ecclésiæ antíquo, et à sancta Romána Ecclésia, ómnium Ecclesiárum matre et magistra, probáto ritu, ne oves Christi esúriant, neque párvuli panem petant, et non sit qui frangat eis; mandat sancta Synodus Pastóribus et síngulis curam animárum geréntibus, ut frequenter inter Missárum celebratiónem, vel per se, vel per álios, ex iis quæ in Missa leguntur, áliquid expónant, atque inter cétera, sanctíssimi hujus sacrifícii mystérium áliquod declárent, præsertim Domínicis et Festis.

FERIA SECUNDA.

Ex Synodo Augustána. 1548. *can.* 18.

Ut nímia festinátio in Missæ lectióne aut celebratióne religiósas aures oculosque offendit; ita incóndita prolíxitas fastídium pótiùs génerat quàm devotiónem. Quapropter Sacerdótibus devótam mediocritátem commendámus.

FERIA TERTIA.

Ex Concílio Tridentíno. *De Sacrif. Missæ, c.* 5.

Cum natúra hóminum ea sit, ut non fácilè queat sine adminículis exterióribus ad rerum divinárum meditatiónem sustolli; proptérea pia mater Ecclésia ritus quosdam, ut scilicet quædam summissâ voce, ália verò elatióre in Missa pronuntiarentur, instítuit. Cæremónias item adhíbuit, ut mysticas benedictiónes, lúmina, thymiámata, vestes, aliaque id genus multa, ex Apostólica disciplína et traditióne, quâ majestas tanti sacrifícii commendarétur. Tu autem, Dómine, etc.

FERIA QUARTA.

Ex Statútis synodálibus Eustáchii de Belláio, Parisiensis Epíscopi. 1557. *c.* 22.

Presbyteri ad sanctum Dei altáre accedentes, cum reveréntia, devotióne et modéstia, clarè, distinctè et intelligíbili voce Missam attentè usque ad Cánonem legant: Cánonem verò submissióri voce legant, sed summâ religióne; ut qui sacris astant audiendis, ad devotiónem et pietátem inde moveantur.

FERIA QUINTA.

Ex Concílio Tridentíno. *De Sacrif. Missæ, c.* 6.

Optaret quidem sacrosancta Synodus, ut in síngulis Missis fidéles astantes non solùm spirituáli affectu, sed

sacramentáli étiam Eucharístiæ perceptióne communicárent, quò ad eos sanctíssimi hujus sacrifícii fructus ubérior proveníret. Nec tamen, si id non semper fiat, proptérea Missas illas, in quibus solus Sacerdos commúnicat, ut privátas et illícitas damnat, sed probat atque ádeo commendat, síquidem illæ quoque Missæ verè commúnes censéri debent; partim quòd in eis pópulus spirituáliter commúnicet; partim verò quòd à público Ecclésiæ ministro, non pro se tantùm, sed pro ómnibus fidélibus qui ad corpus Christi pértinent, celebrentur. Tu autem, Dómine, miserére nostri.

℟. Deo grátias.

FERIA SEXTA.

Ex Concílio Toletáno séptimo. 646. *c.* 2.

Censemus convenire ut, cùm à Sacerdótibus Missárum témpore sancta mystéria consecrantur, si ægritúdinis áccidat cujúslibet eventus, quo cœptum néqueat consecratiónis expléri ministérium, sit líberum Epíscopo vel Presbytero álteri consecratiónem éxequi offícii cœpti.

SABBATO.

Ex Concílio Aurelianensi primo. 511. *c.* 26.

Cum ad celebrandas Missas in Dei nómine convenítur, pópulus non antè discédat, quàm Missæ solémnitas compleátur; et ubi Epíscopus non fúerit, benedictiónem accípiat Sacerdótis.

*De verbi divini prædicatione.*

## DOMINICA IV

### POST PASCHA.

Ex Concílio Tridentíno.

1546. *Sess.* 5. *de Ref. c.* 2.

Quia Christiánæ reipúblicæ necessária est prædicátio Evangélii, et hoc est præcípuum Episcopórum munus; státuit sancta Synodus omnes Epíscopos et álios Ecclesiárum Prælátos tenéri per seipsos, si legítimè impedíti non fúerint, ad prædicandum sanctum Jesu Christi Evangélium.

FERIA SECUNDA.

Ex Concílio Aquisgranensi. 816. *can.* 15.

Præconis offícium súscipit quisquis ad sacerdótium accédit, ut ante adventum júdicis, qui terribíliter séquitur, ipse scílicet clamando gradiátur. Sacerdos ergo, si prædicatiónis est néscius, quam clamóris vocem datúrus est præco mutus?

FERIA TERTIA.

Ex Concílio Parisiensi sexto. *Lib.* 1. *c.* 31.

Evangelica prædicátio et ália divínæ servitútis execútio, non terrenárum pecuniá-

rum quæstu, nec cujúslibet altérius turpis lucri grátiâ, sed solíus Christi amóre à discípulis ejus est peragenda. Quisquis ígitur, sui quæstûs, non Dei causâ, Evangélicam prædicatiónem implet, longè se à discipulátu Christi sejungit. Quáliter autem à discípulis éxequi débeat, et Evangeliórum documenta et sanctórum Patrum monumenta testantur.

FERIA QUARTA.

Ex Concílio Toletáno.

1565. *Act.* 3. *c.* 3.

Quicumque prædicando verbo Dei ac docendæ plebi Christiánæ óperam déderint, prorsus à quæstiónibus difficílibus ac perplexis abstíneant, se ad captum auditórum eorumque ædificatiónem demittentes. Evangélium ipsum interpretatióne fácili, eáque commúni sanctórum Patrum atque orthodoxórum virórum consensu receptâ, auditóribus expónant, eosque toto stúdio instrúere conentur.

FERIA QUINTA.

Ex Concílio Aquisgranensi.

816. *L.* 1. *c.* 23.

Prima prudéntiæ virtus est, eam quam docére opórteat, existimáre persónam. Rúdibus pópulis, seu carnálibus, plana atque commúnia, non summa atque árdua prædicanda sunt; ne immensitáte doctrínæ opprimantur pótiùs quàm erudiantur.

FERIA SEXTA.

Ex Concílio Coloniensi primo.

1536. *Part.* 6. *c.* 25.

Concionatores Sanctórum históriis ne nimis diu immorentur : quin pótior pars Evangélio detur et Epístolæ explicandis. Quòd si fabulósa vidébitur história, ne attingant quidem; si verisímilis, léviter: éaque decerpant quæ imitanda videantur. Mirácula quoque ne impudéntiùs jactentur, nisi quæ Scriptúris pródita, aut à non lévibus Scriptóribus summa cum históriæ fide trádita fúerint.

SABBATO.

Ex Concílio Coloniensi primo.

1536. *Part.* 6. *c.* 15.

Erit Párochus in reprehendendis crimínibus véhemens atque acer : constitútus est enim ut annúntiet pópulo scélera eórum; sic tamen ut in suggesto vítia tantùm reprehendat, non persónas nominátim perstringat. Tu autem, Dómine, etc.

*De Rogationibus, aliisque Supplicationibus Processionis nomine designatis.*

## DOMINICA V POST PASCHA.

Ex Mónitis sancti Cároli de Processiónibus.

*Monito* 1.

DOMINICA Processiónis diem immediátè præcedenti, Párochus fidéles móneat de hujus die et occasióne. Unde eos ut intersint, Processionemque tam córpore quàm ánimo comitentur, efficáciter adhortábitur ; ut Deus ómnium preces, pro sua misericórdia, in animárum et córporum tam nostrórum quàm proximórum benefícium dignétur exaudíre : dicetque quantâ modéstiâ, devotióne et órdine hæ Processiónes celebrári débeant.

FERIA SECUNDA.

Ex Concílio Aurelianensi primo.

511. *can.* 27 *et* 28.

† ROGATIONES, id est, Litánias ante Ascensiónem Dómini, ab ómnibus Ecclésiis plácuit celebrári. Quo tríduo omnes abstíneant, et quadragesimálibus cibis utantur.

FERIA TERTIA.

Ex Concílio Cloveshoviensi secundo. 747. *can.* 16.

SECUNDUM morem, tres dies ante Ascensiónem Dómini in cœlos Missárum celebratióne venerentur. Cum timóre et tremóre, signo passiónis Christi, nostræque ætern æ redemptiónis, et Relíquiis Sanctórum ejus coràm portátis, omnis pópulus genuflectendo divínam pro delictis humíliter exóret indulgéntiam.

## IN VIGILIA ASCENSIONIS DOMINI.

Ex Synodo Augustána. 1548. *c.* 23.

POPULUM sédulò móneant Párochi, ne cæremónias religiosíssimè institútas in abúsum vertant aut superstitiónem; sed ipsis ad pietátem exercendam utantur, atque ut Processiónes sint graves, ordinátæ, honestæ, et Christiánâ religióne dignæ.

## IN ASCENSIONE DOMINI.

Ex Constitutiónibus Apostolórum. *Lib.* 5. *c.* 18.

† NUMERATIS quadraginta diébus à primo Domínico die, celebráte diem assumptiónis Dómini, quo die ascendit ad Deum, eumdemque Patrem suum à quo missus fúerat, ad cujus déxteram virtútis sedet, quique in consummatióne séculi véniet cum potestáte et glória multa, ad judicandum vivos et mórtuos.

*De Baptismo, ejusque cæremoniis.*

## FERIA SEXTA

### INTRA OCTAVAM ASCENSIONIS.

Ex Statútis synodálibus Eustáchii de Belláio, Parisiensis Epíscopi. 1557. *c.* 25.

BAPTISMUS, qui est prima tábula post naufrágium, primum ómnium Sacramentórum non imméritò constitúitur: per quem vetus homo noster crucifixus est, ut destruátur corpus peccáti, et ultrà non serviámus peccáto, et induámus novum hóminem, qui secundùm Deum creátus est in justítia et sanctitáte veritátis. Cùm verò párvulis semper immíneat perículum; cùm primùm nati sunt, deferantur ad Baptismum, solémniter baptizandi. Parentes autem moneantur, ubi timétur perículum, ne dífferant Baptismá propter Patrinórum protelatiónem: neque in dómibus privátis extra necessitátem, cùm ecclésia locus sit ad hoc destinátus, conferátur Baptismus.

### SABBATO.

Ex Régulis sacramentálibus sancti Cároli.

*Tit. de Bapt. art. ult.*

ADULTA ætáte, cùm quis Baptismum petit, sive Judæus ille sit, sive pagánus, sive álius, primò quærantur testimónia certa de ejus conditióne, anteacta vita, statúque omni; et hóminis voluntas diligenter explorétur, utrùm ex ánimo veráque pietáte Baptismum petat, utrùm peccatórum pœníteat, atque in pósterum abstinére státuat. Ad quæ si rectè piéque ánimo sit parátus, fídei doctrínâ et christiánæ vitæ institutiónibus accuráte erudiátur.

## DOMINICA

### INTRA OCTAVAM ASCENSIONIS.

Ex Epístola sancti Cælestíni Papæ ad Epíscopos Gálliæ. *Anno* 431. *n.* 13.

QUOD circa baptizandos in universo mundo sancta Ecclésia unifórmiter agit, non otióso contemplémur intúitu. Cùm ad regeneratiónis véniunt Sacramentum, non priùs fontem vitæ ádeunt, quàm exorcismis et exsufflatiónibus Clericórum spíritus ab eis immundus abigátur; ut tunc verè appáreat, quómodo princeps mundi hujus mittátur foràs, et quómodo priùs alligétur fortis, et deinceps vasa ejus diripiantur, in possessiónem transláta victóris, qui captívam ducit captivitátem, et dat dona homínibus. His ecclesiásticis régulis ómnium bonórum affectuum atque óperum quibus ab inítio fídei ad Deum ténditur, Deum profitémur auctórem. Quo úti-

que auxílio et múnere Dei, non aufertur líberum arbítrium, sed liberátur.

## FERIA SECUNDA.

Ex Statútis synodálibus Stéphani de Pontecáro Parisiensis Epíscopi.

1508. *Tit. de Bapt.*

Monemus Curátos seu eórum Presbyteros, ut ante magnam portam occidentálem eórum ecclésiæ, ut moris est, exorcizentur, et catechúmeni efficiantur púeri, ántequam ad fontes afferantur, et ecclésiam ingrediantur, nisi necéssitas propter áeris intempériem emérserit. Item, si baptizandi nésciant loqui, ut párvuli, muti et surdi, pro ipsis et loco ipsórum habeátis fidejussóres pro ipsis spondentes, qui tenebuntur respondére, et onus pro ipsis accípere, et fidem ipsos baptizátos docére.

## FERIA TERTIA.

Ex Concílio Coloniensi.

1536. *Part. 7. c. 4.*

Susceptores infantis, Patríni qui dicuntur, méritò admonentur, quod ipsi sint qui Ecclésiæ nómine et Ecclésiæ fide Christo párvulos ófferant per Baptismum, ac se propémodum pro párvulis fidejussóres constítuant; nómine párvuli respondentes: quem étiam postquam adoléverit, Symbolum simul et Oratiónem Domínicam edocére, atque vitam Christo, ac professióne in Baptismo factâ dignam, perpétuò ágere, saltèm ubi id necéssitas póscere vidébitur, cohortári non omittent. Proíndeque málumus illos déligi provectæ ætátis, quàm impúberis; ne videátur infans infantem offerre, ac sponsórem se pro álio constitúere, qui quod promittit non intélligat, ideóque multò minùs quod non intélligit docére queat.

## FERIA QUARTA.

Ex Instructiónibus sancti Cároli de Baptismo.

*Act. Mediolan. Eccles. part. 4. tit. 7.*

Sponsionis baptismális chirógraphum sanctè concéptum magnam vim habet in cœlo. Et verò, cùm harum sponsiónum (baptismálium) rátio diligentíssimè explicáta sit Cánone Concílii Parisiensis (sexti,) non aliénum est illíus verba exscríbere: « Constat ígitur unumquemque » fidélem Deo in Baptísmate » duárum pactiónum néxibus » se obligáre; álterâ quâ abre» nuntiáre diábolo, et ómni» bus opéribus et pompis ejus; » álterâ verò quâ se in Pa» trem, et Fílium, et Spíri» tum sanctum crédere profi» tétur. Unde étiam sub ejus» dem sanctæ Trinitátis invo» catióne, Baptísmatis grátiam » conséquitur. »

## FERIA QUINTA
### OCTAVA ASCENSIONIS.

Ex Concílio Parisiensi sexto.

829. *l.* 1. *c.* 10.

Abrenuntiare diábolo est pénitus eum respúere, eíque

contradícere, seque unumquemque ab eo alienáre. Opera ejus sunt, primùm supérbia, inítium omnis peccáti, et cétera vítia quæ ex radíce pródeunt supérbiæ. Pompa diáboli hæc est quæ pompa mundi, id est, ambítio, arrogántia, vana glória, omnis cujúslibet rei superflúitas in humánis úsibus. Hæc et his simília unusquisque fidélis témpore Baptísmatis rejécit, Christo se mancipávit, pactumque cum Deo fecit, ne ad ea quibus abrenuntiávit redíret. Verùm si jura humánæ pactiónis fírmiter conservantur, fíxiùs tamen atque fervéntiùs jura tanti pacti quæ cum Deo facta sunt, inviolabíliter sunt observanda.

FERIA SEXTA.

Ex utróque Concílio Coloniensi sub * Hermanno et ** Adolpho, et Régulis sacramentálibus sancti Cároli. ***

* 1536. *Part.* 7. *c.* 5. ** 1549. *inter censur. et decr. c.* 14. *** *Act. Mediol. p.* 4. *tit. de Bapt. art. ult.*

Docebunt Párochi pópulum, cur inúnctio fiat post Baptismi unctiónem in vértice; dénique quid signíficet amictus albus quo infans, seu álius baptizátus superindúitur... Et ut oratiónes et cæremóniæ solemnes, quæ témpore Pascháli et Pentecostes Baptismo adhibentur, hábeant res eis respondentes; statúimus ut pastóres et concionatóres adhortentur pópulum, ut párvulos natos instante festo Paschæ, servent baptizandos in vigíliam Paschæ, et natos festo Pentecostes instante, ad festum Pentecostes usque servent, si tamen nullum immíneat vitæ perículum...... Et quóniam dilátio Baptismi adulto cónvenit, póterit plerumque ad majórem Sacramenti cultum unum ex statis tempóribus Páschatis et Pentecostes (simíliter) expectári.

## SABBATO

### IN VIGILIA PENTECOSTES.

Ex Concílio Mediolanensi quinto, sub sancto Cárolo.

1579. *P.* 3. *tit. de Bapt.*

Religiosi institúti olim fuit diem Baptismi quotannis à fidélibus piè celebrári: quæ sanè institútio, cùm ad pietátis christiánæ cultum non parum adjumenti afferre possit, eam in usum revocári vehementer cúpimus. Itaque fidélium unusquisque quo die baptizátus est, quotannis ardentióri prece, eleemósynâ, si per facultátes potest, spiritalisque gáudii celebritáte récolat se, chirógrapho damnatiónis deléto, hæreditátis cœlestis partícipem in Christo factum esse. Eo potíssimum die sanctè se éxcitet ad præcláram illam sponsiónem et christiánam professiónem, quam in sacro lavácro per sponsóres solémniter édidit.

## *De Sacramento Confirmationis.*

### DIE SANCTO PENTECOSTES.

Ex Concílio Moguntíno. 1549. *Cap.* 17.

† In Sacramento Confirmatiónis, juxta Dómini promissiónem, Spíritum sanctum quo in Baptísmate ad peccáti emundatiónem signáti sumus, cum novo grátiæ múnere accípimus: vidélicet ut virtúte ejus contra sátanæ tentatiónes muniámur; ut grátiâ ejus ad méliùs capienda fídei mystéria illuminémur, ad confessiónem Christi fidúciam, et contra vítia robur accipiámus. Quæ ómnia Christus Dóminus per Spíritum sanctum quem missúrus erat, fidélibus conferenda disertè promísit. Ea verò, ut erant à Christo promissa, ipsis Apóstolis in die Pentecostes exhíbita Actus ipsórum satis testantur.

### FERIA SECUNDA.

Ex Concílio Parisiensi. 1528. *c.* 10. *tit. de Sacram. Confirm.*

Sacramentum Confirmatiónis ab Apóstolis légimus promulgátum, cùm ad Samarítas misérunt Petrum et Joannem, à quibus illi (licèt à Philippo Diácono ántea baptizáti) per impositiónem mánuum Spíritum sanctum accíperent. Quod ex Actis Apostolórum, apud Ephésios à Paulo, et à primitíva quondam Ecclésia légimus observátum. Unde et tunc impositiónis mánuum, et nunc Confirmatiónis appellátum est Sacramentum. Post Baptismum hoc Sacramento roborámur, cujus conferendi potestas Epíscopis à Christo concessa est.

### FERIA TERTIA.

Ex Epístola decretáli sancti Innocéntii Papæ ad Decéntium.

*Anno* 416. *cap.* 3.

De consignandis infántibus manifestum est non ab álio quàm ab Epíscopo fieri licére. Nam Presbyteri, licèt secundi sint Sacerdótes, pontificátûs tamen ápicem non habent. Hoc autem pontifícium solis debéri Epíscopis, ut vel consignent, vel Paraclétum Spíritum tradant, non solùm consuetúdo ecclesiástica demonstrat, verùm et illa léctio Actuum Apostolórum, quæ ásserit Petrum et Joannem esse directos, qui jam baptizátis tráderent Spíritum sanctum. Nam Presbyteris, sive extra Epíscopum, sive præsente Epíscopo, cùm baptizant, chrísmate baptizátos úngere licet, sed quod ab Epíscopo fúerit consecrátum; non tamen frontem ex eódem óleo signáre, quod solis debétur Epíscopis, cùm tradunt Spíritum Paraclétum.

FERIA QUARTA.

Ex Statútis synodálibus Odónis de Solíaco, Parisiensis Epíscopi.

*Circa* 1196. *c. de Bapt.*

Sacerdótes frequenter móneant pópulum ad Confirmatiónem puerórum : post Baptismum enim súscipi debet Sacramentum Confirmatiónis. Quòd si confirmandus adultus fúerit, priùs confiteátur, et póstea confirmétur. Item sæpe dicátur Láicis, ne expectent diu adventum Epíscopi pro Confirmatióne, sed ducant púeros ad eum.

FERIA QUINTA.

Ex Concílio Burdigalensi.

1583. *Tit.* 10.

Sanctum Confirmatiónis Sacramentum, ut ex nóminis ratióne constat, vim, robur et arma suppéditat adversùs vítia et infestíssimos animárum hostes, quorum sanè quò majóres sunt et acrióres ímpetus, eo diligéntiùs omnes Epíscopi hujus Sacramenti vim pópulo éxplicent, aut explicandum curent, et iis ómnibus qui nondum illud suscepérunt, administrent.

FERIA SEXTA.

Ex Concílio Mediolanensi quinto, sub sancto Cárolo.

1579. *Part.* 1. *tit.* 9.

Curet Epíscopus ac Párochus, ut qui turpe ridiculumve nomen habet, neque planè convéniens Christiáno hómini, sumat in Confirmatiónis Sacramento nomen alicújus qui veræ pietátis sanctæque religiónis laude flóruit; ut qui háctenus non ad normam Christi Dómini vitam instítuit, jam depósito véteri hómine et antíquâ socórdiâ, rursusque novo ac sancto suscepto nómine, virílem in sanctè agendo constántiam perpétuò deinceps præstet.

SABBATO.

Ex Concílio Mediolanensi quinto, sub sancto Cárolo.

1579. *Part.* 1. *tit.* 9.

Dum Sacramentum Confirmatiónis Epíscopus ministrat, non modò qui illud susceptúri sunt, quique eos ófferunt, sed omnes quicumque præsentes sacro illi ministério adsunt, sanctè piéque orent, ac summi ánimi attentióne spectent quod in ea solemni mystérii celebritáte perágitur. Tum verò secum réputent cœléstia illa Spíritûs sancti dona, quæ illíus Sacramenti virtúte fidélibus impertiuntur, imprimísque tácitâ meditatióne vídeant quas in illis ipsi progressiónes hábeant, anque vitam agant tantâ cœléstium donórum ubertáte dignam.

## IN FESTIS SOLEMNIBUS SS. PATRONORUM,

*ubi deest proprius Canon.*

Ex Concílio Mediolanensi tértio, sub sancto Cárolo. 1573. *tit.* 1.

Quo religiósiùs íncolæ uniuscujusque Paróchiæ festum diem colant illíus Sancti Sanctæve, cujus patrocínio parochiális ecclésia dicáta est, cohortatiónibus agat Párochus, ut ánimo piè répetant religiósas ejus sanctárum virtútum exercitatiónes, quarum méritis in cœlum ille vocátus, cùm sempiternâ glóriâ perfruátur, pro caritáte quâ abundat, eórum quorum salútis patrocínium suscépit, preces Deo offert. Die Sancti qui Paróchiæ patrónus est et custos, quò ad illíus imitatiónem magis fidéles inflammentur, id Párochus præstet, cùm frequéntior in ecclésia pópulus adest, ut ipse aut álius in suggestu res ejus sanctè admirabiliterque gestas, morum disciplínam, pietátis stúdia, ac virtútes pronúntiet. Tu autem, Dómine, etc.

## IN FESTIS BEATÆ MARIÆ VIRGINIS,

**RITU SOLEMNI CELEBRATIS,**

*quæ non habent in Breviario Canonem proprium.*

Ex Concílio Constantinopolitáno secundo œcùménico. 553. *can.* 6.

Si quis sanctam gloriósam semperque vírginem Maríam, non próprìè et verè Dei genitrícem confitétur; eo quod ipse qui ante sécula ex Patre natus est Deus Verbum, in últimis diébus ex ipsa incarnátus et natus est: talis anathéma sit.

## IN FESTIS SANCTORUM NON PATRONORUM,

**RITU SOLEMNI CELEBRATIS,**

*quæ non habent in Breviario Canonem proprium.*

Ex Concílio Tridentíno. 1563. *Sess.* 25. *De invoc. Sanctorum.*

Mandat sancta Synodus ómnibus Epíscopis, et céteris docendi munus sustinéntibus, ut fidéles diligenter ínstruant, illos qui negant, Sanctos, æternâ felicitáte in cœlo fruentes, invocandos esse; aut qui ásserunt, vel illos pro homínibus non oráre; vel eórum, ut pro nobis étiam singulis orent, invocatiónem esse idololatríam; vel pugnáre cum verbo Dei, adversaríque honóri uníus mediatóris Dei et hóminum Jesu Christi; vel stultum esse, in cœlo regnántibus voce vel mente supplicáre; ímpiè sentíre.

# LECTIONES
## INTRA OCTAVAM PATRONI VEL PATRONÆ.

### DIE SECUNDA.

#### Lectio II.

Sermo sancti Basílii Epíscopi. *Orat. in 40 Mart.*

Hi sunt qui acceptam à Deo nostram regiónem, quasi turres quædam contra adversariórum incursum munientes, refúgium éxhibent. Benefícium hoc, fratres dilectíssimi, grátiam hanc mínimè cessantem à Deo obtinémus. Parátum est hìc Christiánis auxílium. Qui áliquâ prémitur angústiâ, ad hos cónfugit; qui rursus lætátur, ad hos recurrit : hic ut à malis liberétur, ille ut duret in rebus lætis. Hæc múlier orans pro fíliis audítur, peregrinanti viro réditum incólumem, ægrotanti verò salútem implórat et óbtinet.

#### Lectio III.

O sanctum chorum! ô sacrum órdinem! ô cúneum inexpugnábilem! ô commúnes humáni géneris custódes! óptimi curárum sócii, precum ac votórum ínvicem suffragatóres! legáti apud Deum potentíssimi! astra mundi, flores Ecclesiárum, vos non terra contexit, sed cœlum excépit. Apertæ sunt vobis paradísi portæ, dignum profectò exercítibus Angelórum, Patriarchis, Prophétis et Justis ómnibus spectáculum.

### DIE TERTIA.

#### Lectio II.

Sermo sancti Augustíni Epíscopi. 280. n. 6.

Solemnitates sanctórum devotíssimè celebrémus, sóbriâ hilaritáte, castâ congregatióne, fidéli cogitatióne, fidenti prædicatióne. Non parva pars imitatiónis est, meliórum congaudére virtútibus. Illi magni, nos parvi; sed benedixit Dóminus pusillos cum magnis. Præcessérunt, præminuérunt. Si eos sequi non valémus actu, sequámur affectu : si non glóriâ, certè lætítiâ : si non méritis, votis : si non passióne, compassióne : si non excelléntiâ, connexióne. Non nobis parum videátur, quod ejus córporis membra sumus, cujus et illi quibus æquiparári non póssumus. Quia, si unum membrum pátitur, compatiuntur ómnia membra; ita, cùm glorificátur unum membrum, congaudent ómnia membra.

Lectio iii.

Gloria cápiti unde consúlitur, et superióribus mánibus, et ínfimis pédibus. Sicut ille unus ánimam suam pro nobis pósuit, ita et imitáti sunt Mártyres, et ánimas pro frátribus posuérunt. Fructus labóris ergo illórum étiam nos sumus. Mirámur eos, miserantur nos. Gratulámur eis, precantur pro nobis. Omnes eídem Dómino parémus, eumdem magistrum séquimur, eumdem príncipem comitámur, eídem cápiti subjúngimur, ad eamdem Jerúsalem téndimus, eamdem sectámur caritátem, eamdemque ampléctimur unitátem.

DIE QUARTA.

Lectio ii.

Sermo sancti Bernardi Abbátis.

*In Vigilia SS. Apostolorum Petri et Pauli.*

Tria sunt quæ in festivitátibus Sanctórum vigilanter considerare debémus: auxílium Sancti, exemplum ejus, confusiónem nostram. Auxílium ejus, quia qui potens in terra fuit, poténtior est in cœlis ante fáciem Dómini Dei sui. Si enim, dum hic víveret, misertus est peccatóribus, et orávit pro eis; nunc tantò ámpliùs, quantò vériùs agnoscit misérias nostras, orat pro nobis Patrem: quia beáta illa pátria caritátem ejus non immutávit, sed augmentávit; neque enim quia impassíbilis omníno, ídeo et incompassíbilis factus est.

Lectio iii.

Debemus étiam atténdere exemplum ejus; quia quámdiu in terris visus est, et cum homínibus conversátus est, declinávit neque ad déxteram, neque ad sinistram; sed viam régiam ténuit, donec veníret ad illum qui dicit: Ego sum via, véritas et vita. Intuémini humilitátem óperum ejus, auctoritátem verbórum ejus, et tunc vidébitis quómodo tam verbo quàm exemplo lúxerit inter hómines: quália nobis vestígia derelíquerit, ut ambulémus per ea, et non errémus in eis. Verè, juxta Prophétam, sémita justi recta est; rectus callis justi ad ambulandum.

DIE QUINTA.

Lectio ii.

De Sermóne sancti Bernardi Abbátis.

*In Vigilia SS. Apostolorum Petri et Pauli.*

Diligentiori intúitu, in festivitátibus Sanctórum, confusiónem nostram inspícimus; quia homo ille símilis nobis fuit passíbilis, ex eódem luto formátus, ex quo et nos. Quid ergo est, quod non solùm difficile, sed et impossíbile crédimus, ut faciámus ópera quæ fecit? Confundámur, fratres, et contremiscámus. Hómines isti fuérunt qui præcessérunt nos, qui tam

mirabiliter processérunt per vias vitæ, ut vix eos hómines fuisse credámus. Sic ergo et gaudére, et confundi debémus: gaudére, quia patrónos nos præmísimus; confundi, quia eos imitári non póssumus.

Lectio III.

Ita semper gáudium nostrum in hac valle lacrymárum, lacrymárum pane condíri debet; ut semper non solùm extréma, sed et prima gáudii luctus óccupet: quia etsi magna est gaudiórum matéria, sed máxima est dolórum. Verè nobis rubor confusiónis sunt, quos vix audeámus respícere, ne dicam, imitári. Orémus ergo eos, ut ipsi propítium nobis reddant amícum suum, júdicem nostrum, qui est Deus benedictus in sécula. Amen. Tu autem, Dómine.

DIE SEXTA.

Lectio II.

De Sermóne sancti Bernardi Abbátis.

*In Festo omnium Sanctorum 2. n. 1.*

Erit, præstante Dómino, triplex sermónis (de Sanctórum felicitáte) utílitas, quátenùs ágnitâ, vel ex parte áliqua, felíci retributióne Sanctórum, abundantióri deinceps sollicitúdine ipsórum inhærére vestígiis, ac ferventióri desidério ad eórum suspiráre consórtia, propensióri quoque devotióne eorumdem nos commendáre patrocíniis studeámus. Fidélis quippe sermo, et omni acceptióne dignus; ut quos solemni veneratióne proséquimur, étiam símili conversatióne sequámur. Quos beatíssimos prædicámus, ad eórum beatitúdinem totâ avìditáte currámus: quorum delectámur præcóniis, sublevémur eórum patrocíniis.

Lectio III.

Nec sanè parum fructuósa invenítur memória festíva Sanctórum, languórem, tepórem, erroremque depellens: cùm eórum intercessióne juvétur infírmitas nostra, consideratióne beatitúdinis excitétur negligéntia nostra, ignorántia quoque ipsórum erudiátur exemplis.

DIE SEPTIMA.

Lectio II.

De Sermóne sancti Cæsárii Epíscopi.

*Serm. 230 in App. S. Aug.*

Quando festivitátes cólimus, fratres caríssimi, diligenter debémus atténdere, et totis víribus laboráre, ut quod visibíliter cólitur, in nobis invisibíliter compleátur. Qui nec castitátem custódit in córpore, nec puritátem tenet in mente, quóties sanctæ solemnitátes advéniunt, in córpore vidétur habére gáudium, in corde non célebrat nisi luctum. Quale enim gáudium potest habére, in cujus ánima multis vítiis occupátâ ma-

gis diábolus probátur habitáre quàm Christus? Nos verò, fratres caríssimi, etiamsi nobis áliqua, ut solet fíeri, peccáta subrépunt, quantùm póssumus, cum Dei adjutório laborémus jejúniis, vigíliis, oratiónibus, eleemósynis mundáre sórdida; ut véniens Dóminus in nobis, nihil invéniat quod óculos suæ majestátis offendat.

Lectio iii. *Serm.* 265.

Filios et omnes famílias vestras admonéte, fratres, semper ut castè et justè ac salúbriter vivant: nec solùm eos verbis, sed étiam exemplis ad bona ópera provocáte. Ante ómnia ubicumque fuéritis, sive in domo, sive in itínere, sive in convívio, sive in consessu, verba túrpia et luxuriósa nolíte ex ore vestro proferre; sed magis vicínos et próximos vestros júgiter admonéte, ut semper quod bonum est et honestum, loqui stúdeant; ne fortè detrahendo, mala loquendo, et in sanctis festivitátibus choros ducendo, cántica luxuriósa et túrpia proferendo de lingua sua, unde debúerant Deum laudáre, inde sibi vúlnera videantur inflígere. Isti enim infelíces et míseri hómines, qui balatiónes et saltatiónes ante ipsas basílicas Sanctórum exercére nec métuunt, nec erubescunt: etsi Christiáni ad ecclésiam vénerint, pagáni de ecclésia revertuntur; quia ista consuetúdo balandi de paganórum observatióne remansit.

# INTONATIONES ET TERMINATIONES

## PSALMORUM ET CANTICORUM

### SECUNDUM OMNES CUJUSQUE MODI DIFFERENTIAS.

In hocce Breviario ad Antiphonas quisque Tonus suo numero notatur : variæ etiam cujusque Toni species, seu modi, suis litteris designantur; *completi,* majusculis; minusculis verò *incompleti.* Modus autem *completus* ille est qui in singulis Psalmi versibus desinit in legitimam Toni sui finalem; *incompletus* verò qui, non in Psalmi versibus, sed in sola Antiphona perfectè terminatur. Solæ vocales *e*, *u*, *o*, *u*, *a*, *e*, intra particulares terminationum variationes, brevitatis causâ, ponuntur : inveniuntur in his verbis, *seculorum, amen,* et quæcumque verba repræsentant. Duæ claves significant, Tonum duplici modo oculis subjici posse.

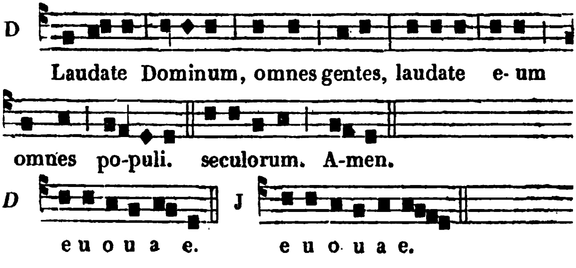
Intonationes Psalmorum servantur tantùm in primo cujusque Psalmi versu; ceteri verò versus à dominante in directum inchoantur : quod observandum est in Canticis Evangelicis, nisi organa pulsentur : tunc enim versus à Choro cantati, eodem modo inchoantur quo primus.

Ubi intonatio Canticorum Evangelicorum non specialiter notatur, eadem est ac in Psalmis.

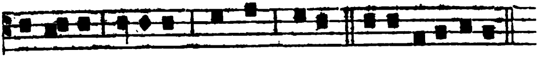
Mediatio autem in iisdem Canticis eadem semper est ad singulos versus quæ ad primum. Quia verò in primo versu Cantici *Magnificat* propter brevitatem mediatio compleri nequit, in ceteris ejus versibus ad eam recurrendum est, quæ ad *Nunc dimittis* infrà notatur.

Sed ubi Cantica Evangelica in cantu harmonico, vulgò *Faux-Bourdons,* canuntur, mediatio semper eadem est ac in Psalmis.

## PRIMUS MODUS.




f. f
e u o u a e.
g
e u o u a e.
g
e u o u a e.
a. a
e u o u a e.
A
Laudate Dominum omnes gentes, * lauda-te
e- um, omnes popu-li. Quoni- am confirmata est
super nos mi-se-ri-cordi- a ejus. Spi-ri-tu-i
sancto. Et in secula seculorum. Amen.
SECUNDUS MODUS.
D
Laudate Dominum, omnes gentes. Credidi propter
quod locutus sum. e u o u a e.
In Canticis Evangelicis.
Nunc di-mit-tis servum tu- um, Domi-
ne. Magni- ficat * a- nima. Mihi magna qui po-
tens est.

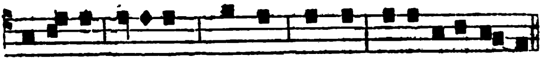
A


Lauda- te Dominum, omnes gentes. e u o u a e.

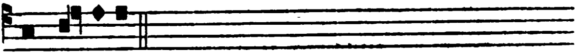
*In monosyllabis Hebræisque vocibus non declinabilibus.*


Credi-di propter quod lo-cu- tus sum.
Me- men-to, Do- mine, Da- vid.

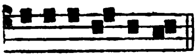
## TERTIUS MODUS.

E


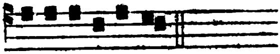
Lauda-te Dominum, omnes gentes. e u o u a e.



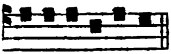
Magni- ficat.

a. *a*


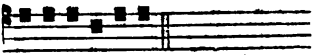
e u o u a e.

à. *d*


e u o u a e.

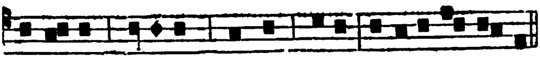
b


e u o u a e.

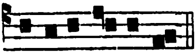
c. *c*


e u o u a e.

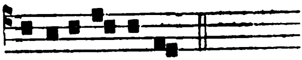
## QUARTUS MODUS.

É


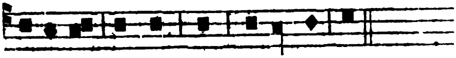
Lauda-te Dominum, omnes gentes. e u o u a e.

f. *f*


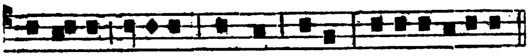
e u o u a e

D *D*


e u o u a e.

*In monosyllabis, etc.*


Credidi propter quod locu- tus sum.
Me- men- to, Do- mine, Da- vid.

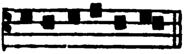
a. *a*


Lauda- te Dominum, omnes gentes. e u o u a e.

A



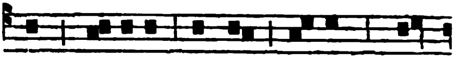

e

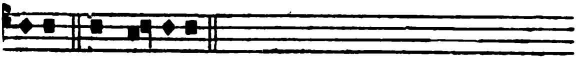



d. *d*




*In Canticis Evangelicis.*



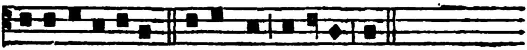




## QUINTUS MODUS.

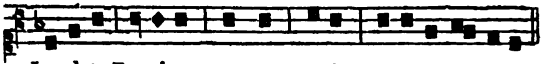
F

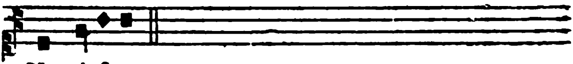



a. *a*

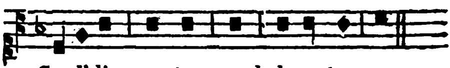



C



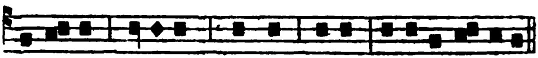




*In monosyllabis, etc.*



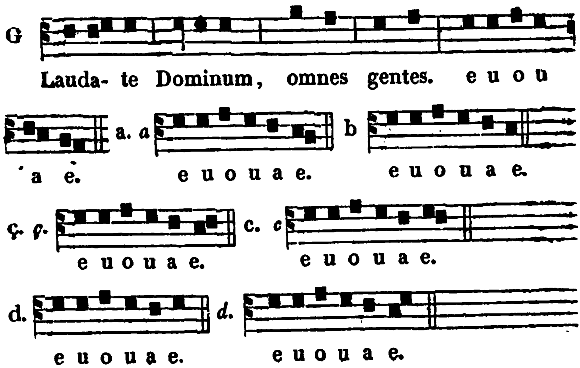

## SEXTUS MODUS.

F

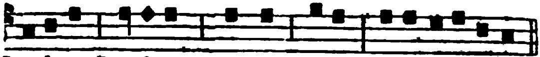





## SEPTIMUS MODUS.



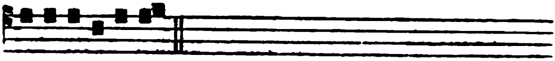
## OCTAVUS MODUS.

G 

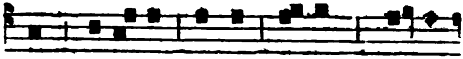
Laudate Dominum, omnes gentes. e u o u a e.

G  c

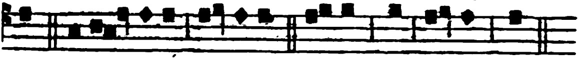
e u o u a e. e u o u a e.

d 

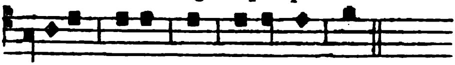
e u o u a e.

*In Canticis Evangelicis.* 

Nunc dimit-tis servum tu- um, Do-mi-

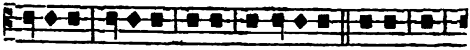


ne. Magni- ficat a- nima. Magna qui po- tens est.

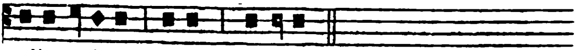
*In monosyllabis, etc.* 

Credidi propter quod locu- tus sum.
Memento, Do- mine, Da- vid.

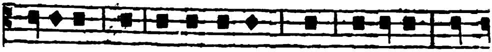
### MODUS INCHOANDI OFFICIUM.

*Celebrans.* 

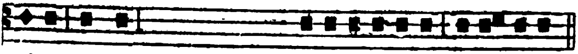
Domine, labi-a me-a ape-ri-es. De-us, in



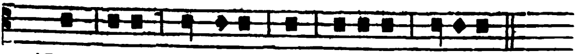
adju-tori-um me-um, intende.

*Chorus.* 

Domi-ne, ad adjuvandum me festina. Glo-



ri-a Pa-tri, etc. *recto tono,* e u o u a e. Alle- lu-ia.

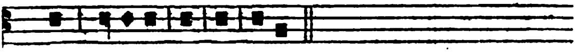


*vel* Laus tibi, Domine, Rex æternæ gloriæ.

## MODUS CANTANDI
## ABSOLUTIONES, BENEDICTIONES, ET LECTIONES.

*Celebrans.*

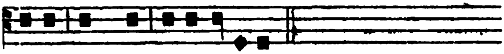


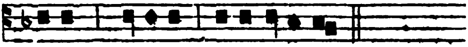

*Absolutio.*



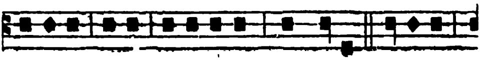

*Lector.*

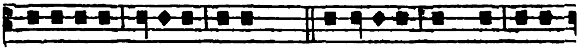


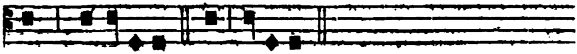

*Benedictio.*



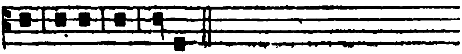

*Lectiones.*



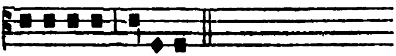



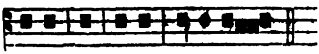

*Ad singula puncta.*

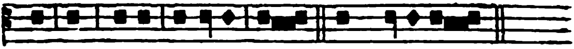



*Si verbum desinens sit dactylicum.*



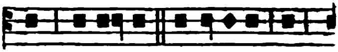

*Si punctum præcedit vox hebraica non declinabilis, vel monosyllaba.*



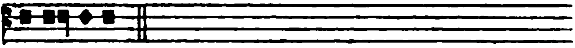


Quod in vobis locutum est. Melchisedech.

*Ad punctum interrogationis, aut admirationis.*

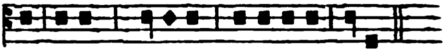


Quid clama-bo? Carissima in



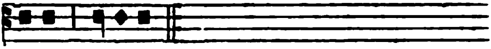
de-li- ci-is!

*Sic terminantur.*



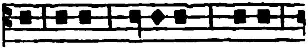
Tu autem, Domine, misere-re nostri.

*Chorus.*

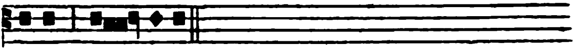


De- o grati- as.

*Lect.* Isaiæ *in Adventu, et* Jeremiæ *temp. Passionis.*



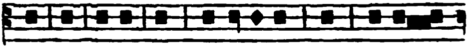
Hæc dicit Dominus De-us...
Je- ru-sa- lem....



salvi e- ri-tis.
Deum tu- um.

*Sub eodem cantu terminantur Lectiones secundi et tertii Nocturni, Feriæ IV in Cœna Domini, et bidui sequentis.*

*Item pro Defunctis.*



Et si mane me quæ-si-e-ris, non subsi-



stam. Horror inha- bi-tat.

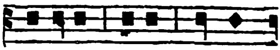
## MODUS CANTANDI CAPITULA.

*Celebrans.*



Benedictus De-us... in cari- ta- te.

*In monosyllabis, aut vocibus Hebræis non declinabilibus, ac etiam in D. Jesu nomine.*



Gaudete... enim propè

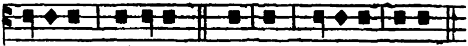


est. Melchi-sedech. Jesu. ℟. Deo grati-as.

MODUS CANTANDI ORATIONES

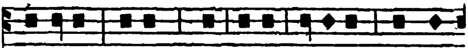
IN VESPERIS ET LAUDIBUS.

*Celebrans.*

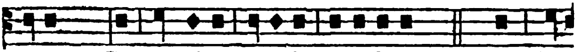


Dominus vobiscum. ℟. Et cum spiritu tu-o.

*Celebrans.*



Oremus. Deus, qui nobis...jugiter senti-

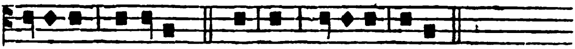


amus... Per omni- a secu-la secu-lorum. *vel* Per Chri-



stum Dominum nostrum. ℟. Amen.

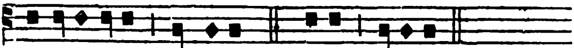
AD HORAS MINORES.



Dominus vobiscum. ℟. Et cum spiri-tu tu- o.

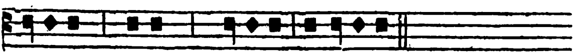


Per omni- a secu-la seculorum. ℟. Amen.

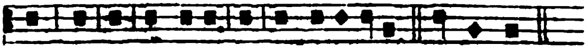


Benedicamus Domino. ℟. De- o gra- ti-as.

MODUS CANTANDI VERSUS AD PRECES HORARUM.



Kyri- e.. Christe... Kyri- e, el-e- ison.



Et ne nos inducas in ten-ta-ti-onem. usquequo.
Sed libera nos à malo.

*Sic cantantur omnes Versus, deprimendo ab* ut *in* la. *Si verò in fine Versûs adsit monosyllaba, aut vox hebraica non declinabilis, recto vocis tono terminantur, hoc modo:*

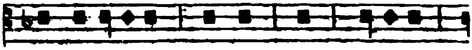


Fi-at mi-se-ri-cordi-a .... super nos :
Quem - admodum speravimus in te.

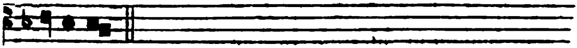
*In omni Officio pro Defunctis, Versus et Orationes semper canuntur, ut suprà notatum est pro minoribus Horis.*

## AD BENEDICTIONEM SS. SACRAMENTI.

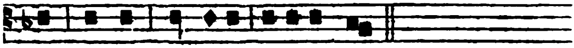
*Celebrans.*



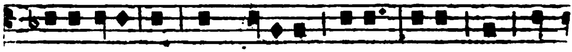
℣. Adju-to-ri-um nostrum in nomi-ne
℟. Qui fe-cit cœlum et



Domi-ni.
ter- ram.



℣. Sit nomen Domi-ni bene-di-ctum.
℟. Ex hoc nunc,... in secu-lum.



Bene-dicat vos omnipotens De-us ; Pater, et Fi-



li-us, et Spiri-tus sanctus. ℟. Amen.

FINIS.

INDEX

# INDEX PARTIS VERNÆ.